एक मात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड
जालन्धर शहर।

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरा गेट, जालन्धर शहर - 144008 (लाहौर वाले)

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर
जालन्धर शहर, फोन

मूल्य : रु० [illegible]

नकल करने वालों से सावधान

पिछले १२१ वर्षों से विश्व-विख्यात **पंचाँग दिवाकर** तथा **मुफ़ी आलम जन्त्री** (पंडित देवी दयालु ज्योतिषी) लाहौर वालों की ओर से प्रकाशित हो रही है। आज भारत का प्रत्येक प्राणी चिरकाल से, जो ज्योतिष गणित में विश्वास रखता है, बड़ी श्रद्धा और विश्वास से इसे प्रति वर्ष खरीदता है। यह भी विश्व विदित है कि इसका गणित एवं भविष्यवाणियां चिरकाल से शत प्रतिशत (१००%) सत्य निकल रही हैं। ज्योतिष विद्या को हमारे वेदांग में वेदचक्षु कहा गया है। इस की निरन्तर बढ़ रही प्रसिद्धि को देखकर बहुत से **धोखेबाज प्रकाशक**, जिन्हें कि न परमात्मा का भय है और न मृत्यु का खौफ पुस्तकों का मिलता जुलता नाम रख कर एवं हमारे मैटर को तोड़-मरोड़ कर नकली जन्त्री पंचाँग छाप कर लोगों को गुमराह एवं धोखा दे रहे हैं। अतः आपको सूचित किया जाता है कि इनके धोखे से बचें तथा पंचाँग खरीदते समय श्री देवी दयालु जी के पड़पौत्र **पं० पन्ना लाल, एम०ए० गणिताचार्य** का नाम अवश्य देख लें। पंचाँग वही असली है जिस पर पं० पन्ना लाल ज्योतिषी एम०ए० का नाम छपा है।

असली जन्म पत्री का वास्तविक आधार उसका शुद्ध एवं प्रामाणिक होता है। अतएव सही प्रामाणिक पंचाँग दिवाकर ही खरीदें।

असली पंचांग की पहचान

जिस पर हो

पं. पन्ना लाल ज्योतिषी का नाम

प्रमुख, पर्व, त्योहार-व छुट्टियां (१ जनवरी, १९९६ ई० से ७ अप्रैल, १९९७ ई० तक)

जनवरी

पर्व त्योहार	ता. मास वार
अंग्रेज़ी नव वर्ष शुरु	१ जन. सोम
पुत्रदा एकादशी	१ जन. सोम
माघ स्नान शुरु	५ जन. शुक्र
व्रत श्रीगणेश संकट चौथ	९ जन. मंग.
त्योहार लोहड़ी	१३ जन. शनि
मकर संक्रान्ति (माघी)	१४ जन. रवि
शनिवासरी मौनी अमावस	२० जन. शनि
तिल चतुर्थी	२३ जन. मंग
श्री बसन्त पंचमी	२४ जन. बुध
गणतन्त्र दिवस भारत	२६ जन. शुक्र
रथ सप्तमी, भानु सप्तमी	२६ जन. शुक्र
भीष्माष्टमी	२७ जन. शनि
शहीदी दिवस महा. गांधी	३० जन. मंग

फरवरी

पर्व त्योहार	ता. मास वार
भीष्म द्वादशी	१ फर. बृह
माघ पूर्णिमा माघ स्नान समा.	४ फर. रवि
गुरु रविदास जयंती	४ फर. रवि
फाल्गुन संक्रान्ति	१३ फर. मंग.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	१७ फर. शनि
ईदुलफितर	२१ फर. बुध
होलाष्टक शुरु	२६ फर. चंद्र

मार्च

पर्व त्योहार	ता. मास वार
होलिका दहन	४ मार्च चंद्र
होली, होलाष्टक समा.	५ मार्च मंग.
होला मेला (आ. पुर. पाओंटा)	६ मार्च बुध
चैत्र संक्रान्ति	१४ मार्च बृह
वारुणी पर्व	१७ मार्च रवि
भौमवती अमावस	१९ मार्च मंग
वि. संवत २०५२ पूर्ण	१९ मार्च मंग
वि. संवत २०५३ शुरु	२० मार्च बुध
चैत्र नवरात्रे शुरु	२० मार्च बुध
मत्स्य जयंती	२१ मार्च बृह
गणगौरी तीज	२२ मार्च शुक्र
श्री दुर्गाष्टमी	२७ मार्च, बुध
श्री राम नवमी	२८ मार्च बृह
नवरात्र समाप्त	२८ मार्च बृह
कामदा एकादशी व्रत	३० मार्च शनि

अप्रैल

पर्व त्योहार	ता. मास वार
श्री महावीर जयंती	१ अप्रै. सोम
अनंग त्रयोदशी	१ अप्रै. सोम
खग्रासचंद्रग्रहण ग्रस्तास्त	३/४ अप्रै. बुध
वैशाख स्नान शुरु	३ अप्रै. बुध
गुड फ्राईडे	५ अप्रै. शुक्र
वैशाखी (मेष संक्रान्ति)	१३ अप्रै. शनि
अक्षया तृतीया	२० अप्रै. शनि
श्री परशुराम जयंती	२० अप्रै. शनि
गंगा सप्तमी	२४/२५ अप्रै.
बगुलामुखी जयंती	२७ अप्रै. शनि
मोहिनी एका. व्रत	२९ अप्रै. चंद्र

मई

पर्व त्योहार	ता. मास वार
मई दिवस	१ मई बुध
नृसिंह चतुर्दशी	२ मई बृह
बुद्ध पूर्णिमा	३ मई शुक्र
वैशाख स्नान समाप्त	३ मई शुक्र
ज्येष्ठ संक्रान्ति	१४ मई मंग.
भावुका अमावस	१७ मई शुक्र
हिजरी सं. १४१७ शुरु	१९ मई रवि
रम्भा तीज	२० मई सोम
गंगा दशहरा (१०)	२८ मई मंग
निर्जला एकादशी	२९ मई बुध
चम्पक द्वादशी	३० मई बृह

जून

पर्व त्योहार	ता. मास वार
व्रत वट सावित्री	१ जून शनि
योगिनी एका. व्रत	११ जून मंग
आषाढ़ संक्रांति	१४ जून शुक्र
आषाढ़ अधिमास शुरू	१६ जून रवि
सूर्य दक्षिणायन में	२१ जून शुक्र
पुरुषोत्तमा एकादशी व्र.	२७ जून बृह

जुलाई

पर्व त्योहार	ता. मास वार
पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत	११ जुला. बृह
सोमवती अमावस	१५ जुला. चंद्र
आषाढ़ अधिमास समाप्त	१५ जुला. चंद्र
श्रावण संक्रांति	१६ जुला. मंग
रथ यात्रोत्सव (पुरी)	१७ जुला. बुध
कुमार षष्ठी	२१ जुला. रवि
देवशयनी एका. व्रत	२७ जुला. शनि
चातुर्मास्यादि व्रतारंभ	२७ जुला. शनि
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	३० जुला. मंग
कोकिला व्रत	३० जुला. मंग

अगस्त

पर्व त्योहार	ता. मास वार
हरियाली अमावस	१४ अग. बुध
भारत स्वतंत्रता दिवस	१५ अग. बृह
भाद्रपद संक्रान्ति	१६ अग. शुक्र
हरियाली तीज	१७ अग. शनि
मधुस्रवा, सिंधारातीज	१७ अग. शनि
वरद (गणेश) चतुर्थी	१८ अग. रवि
नाग पंचमी	१९ अग. चंद्र
कल्कि जयंती	२० अग. मंग
गो. तुलसी जयंती	२१ अग. बुध
श्री भवान्याष्टमी (मे. चिन्तपूर्णी)	२२ अग. बृह.
पवित्रा एकादशी व्रत	२५ अग. रवि
रक्षा बन्धन (श्रा. पूर्णिमा)	२८ अग. बुध
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा	२८ अग. बुध
कज्जली तीज	३१ अग. शनि
श्री गणेश बहुला चौथ	३१ अग. शनि

सितम्बर

पर्व त्योहार	ता. मास वार
चन्दन षष्ठी	२ सित. चंद्र
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा. (रात्री रोहिणी युता)	४ सित. बुध
श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव (गोकुलाष्टमी)	५ सितं. बृह.
श्री गुग्गा नवमी	६ सित. शुक्र
अजा एका. व्रत	८ सित. रवि
भौम प्रदोष व्रत	१० सित. मंग
कुशग्रहणी पिठौरी अमा.	१२ सित. बृह
हरितालिका तीज व्रत	१६ सित. चंद्र
कलंक चतुर्थी (पत्थर चौथ) (विनायक चतुर्थी)	१६ सित. चंद्र
आश्विन संक्रांति	१६ सित. चंद्र
ऋषि पंचमी	१७ सित. मंग
सूर्य षष्ठी	१९ सित. बृह
मुक्ताभरण (संतान ७ व्रत)	१९ सितं. बृह
महालक्ष्मी व्रतारंभ	२० सितं. शुक्र
दूर्वा अष्टमी	२० सितं. शुक्र
श्री चन्द्रनवमी	२१ सितं. शनि
पद्मा एकादशी व्रत	२३ सित. चंद्र
वामन द्वादशी	२४ सित. मंग
अनन्त चतुर्दशी (मेला सोढल, जालंधर)	२६ सित. बृह
प्रौष्ठपदी पूर्णिमा	२६ सित. बृह
महालय श्राद्धारम्भ	२७ सितं. शुक्र

अक्तूबर

पर्व त्योहार	ता. मास वार
महात्मा गांधी जयंती	२ अक्तू. बुध
श्री महालक्ष्मी व्रत समा.	४ अक्तू. शुक्र
इन्दिरा एकादशी	८ अक्तू. मंग
सर्वपितरि श्राद्ध	१२ अक्तू. शनि
शनिवासरी अमावास	१२ अक्तू. शनि
शरद् नवरात्रारम्भ	१३ अक्तू. रवि
कार्तिक संक्रांति	१६ अक्तू. बुध
उपांग ललिता व्रत	१७ अक्तू. बृह.
दुर्गाष्टमी मेला कांगड़ा (चामुण्डा देवी)	२० अक्तू. रवि
नवरात्र समाप्त	२१ अक्तू. चन्द्र
विजया दशमी (दशहरा)	२१ अक्तू. चंद्र
अपराजिता पूजन	२१ अक्तू. चंद्र
सरस्वती विसर्जन	२१ अक्तू. चंद्र
पापांकुशा एकादशी	२२ अक्तू. मंग
भरत मिलाप	२२ अक्तू. मंग
शरद् पूर्णिमा	२६ अक्तू. शनि
वाल्मीकि जयंती	२६ अक्तू. शनि
कार्तिक स्नान शुरु	२६ अक्तू. शनि
श्री गणेश चतुर्थी व्रत	२९ अक्तू. मंग.
(व्रत करवा चौथ)	२९ अक्तू. मंग.

नवम्बर

पर्व त्योहार	ता. मास वार
व्रत अहोई अष्टमी	३ नव. रवि
रमा एकादशी व्रत	७ नवं. बृह
धन त्रयोदशी व्रत (धनवंतरी जयंती)	८ नवं. शुक्र
नरक चतुर्दशी (श्री हनुमान जयंती)	९ नव. शनि
श्री महालक्ष्मी पूजन	१० नवं. रवि
दीपावली	१० नवं. रवि
सोमवती अमावस	११ नवं. चंद्र
अन्न कूट गोवर्धन पूजा	११ नवं. चंद्र
महावीर निर्वाण जैन	११ नवं. चंद्र
विश्वकर्मा पूजा	११ नवं. चन्द्र
भ्रातृ दूज (भाई दूज) (यम द्वितीया)	१२ नवं. मंग.
बाल दिवस	१४ नवं. बृह.
मार्गशीर्ष संक्रांति	१५ नवं. शुक्र
सूर्य षष्ठी (कार्तिकेय पू०)	१६ नवं. शनि
गोपाष्टमी	१८ नवं. चंद्र
अक्षया नवमी, कूष्मांड ९	१९ नवं. मंग
देव प्रबोधिनी एकादशी	२१ नवं. बृह.
भीष्मपंचक शुरु	२१ नवं. बृह.
तुलसी विवाह	२१ नवं. बृह
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	२१ नवं. बृह
बैकुण्ठ चौदश	२४ नव. रवि
भीष्म पंचक समाप्त	२५ नवं. चंद्र
श्री गुरु नानक जयंती	२५ नवं. चंद्र
कार्तिक स्नान समाप्त	२५ नवं. चंद्र

दिसंबर

पर्व त्योहार	ता. मास वार
महाकाल भैरवाष्टमी	३ दिस मंग
उत्पन्ना एकादशी व्रत	६ दिस. शुक्र
भौमवासरी अमावस	१० दिस. मंग
पौष संक्रांति	१५ दिसं. रवि
मोक्षदा एकादशी	२० दिस शुक्र
श्री गीता जयंती	२० दिसं. शुक्र
सूर्योत्तरायण में	२१ दिसं. शनि
अखण्ड द्वादशी	२१ दिस. शनि
श्री दत्तात्रेय जयंती	२४ दिस. मंग.
क्रिसमिस दिवस (बड़ा दिन)	२५ दिसं. बुध
मेला जोड़ प्रारम्भ	२६ दिस. बृह.

जनवरी १९९७ ई०

पर्व त्योहार	ता. मास वार
लोहड़ी पर्व	१२ जन. रवि
स्वा विवेकानन्द जयंती	१२ जन. रवि
मकर संक्रान्ति (माघी)	१३ जन. चंद्र
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	१५ जन. बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	१९ जन रवि
माघ स्नान शुरु	२३ जन बृह
गणतंत्र दिवस भारत	२६ जन. रवि
श्री गणेश संकट चौथ	२७ जन. चंद्र
अचला सप्तमी	३१ जन. शुक्र

फरवरी १९९७ ई०

पर्व त्योहार	ता. मास वार
षट्तिला एकादशी व्रत	४ फर. मंग
मौनी अमावस	७ फर. शुक्र
जुमतुलविदा	७ फर. शुक्र
बाबा लाल जयंती	९ फर. चंद्र
श्री गणेश तिल चौथ	१० फर. चंद्र
ईदुलफितर	१० फर. चंद्र
बसंत पंचमी	११ फर. मंग
फाल्गुन संक्रांति	१२ फर. बुध
रथ सप्तमी, आरोग्य (अ)	१३ फर. बृह.
भीष्म द्वादशी	१९ फर. मंग
गुरु रविदास जयंती	२२ फर. शनि
माघ स्नान समाप्त	२२ फर. शनि

मार्च १९९७ ई०

पर्व त्योहार	ता. मास वार
विजया एकादशी व्रत	५ मार्च बुध
श्री महाशिव रात्रि व्रत	७ मार्च शुक्र
चैत्र संक्रान्ति	१४ मार्च शुक्र
होलाष्टक शुरु	१६ मार्च रवि
महा विषुव दिवस	२० मार्च बृह.
गोविन्द द्वादशी	२० मार्च बृह.
होलिका दहन	२३ मार्च रवि.
होलाष्टक समाप्त	२३ मार्च रवि
होली पर्व	२४ मार्च चंद्र
धूलण्डी (धूलिका वंदन)	२४ मार्च चंद्र
होला मे. आनदपुर पाओटा	२५ मार्च मंग.
गुड फ्राईडे	२८ मार्च शुक्र

अप्रैल १९९७ ई०

पर्व त्योहार	ता. मास वार
शीतला अष्टमी	१ अप्रै. मंग.
महावारूणी पर्व	५ अप्रै. शनि
सोमवती अमावस	७ अप्रै. चंद्र
वि. संवत २०५३ पूर्ण	७ अप्रै. चंद्र

जम्मू-कश्मीर के मुख्य मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	१३ जनवरी
मेला पुरमण्डल	१७/१९ मार्च
मे. गुप्तगंगा (अखनूर)	१८ से २० मार्च
मेला क्षीर भवानी	२० से २७ मार्च
मेला बाहूफोर्ट	२७ मार्च
मेला रामबन	२८ मार्च
मेला बैशाखी (हरि प्रयाग)	१३ अप्रैल
मे. नरसिंह चौदश (रामबन)	२ मई
मे. मानसर	२५/२६ मई
मेला क्षीर भवानी	२६ मई
शुद्ध महादेव	२१ मई से प्रारम्भ
जन्म हरगोबिन्द सिंह	२ जून
मेला शहीदी दिवस	१३ जुलाई
मेला शरीक भवानी	२५ जुलाई
मेला हरिप्रयाग (बनी)	२७ जुलाई
मेला ज्वालामुखी (कश्मीर)	२९ जुलाई
मेला रामबन	१६ अगस्त

जम्मू-कश्मीर के मुख्य पर्व

पर्व त्योहार	ता. मास वार
मेला अमरनाथ यात्रा	२८ अगस्त
मेला स्वामी शंकराचार्य	२८ अगस्त
कैलाश यात्रा शुरु	१०/११ सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	१८/१९ सितं.
मेला आशापति, मे. मार्तण्ड	११/१२ अक्तू.
मेला पुरमण्डल	९ दिसम्बर

एकादशी व्रत २०५३

पर्व त्योहार	ता. मास वार
पुत्रदा एकादशी व्रत	१ जनवरी सोम
षट्तिला एकादशी व्रत	१७ जनवरी बुध
जया एकादशी व्रत	३१ जनवरी, बुध
विजया एकादशी व्रत	१५ फरवरी बृह.
आमलकी एकादशी व्रत	१ मार्च शुक्र
पापमोचनी एकादशी व्रत	१५ मार्च शुक्र
कामदा एकादशी व्रत	३० मार्च शनि
वरूथिनी एकादशी	१४ अप्रै. रवि
मोहिनी एकादशी व्रत	२९ अप्रै. चंद्र
अपरा एकादशी व्रत	१३ मई चंद्र
निर्जला एकादशी व्रत	२९ मई बुध
योगिनी एकादशी व्रत	११ जून मंग.
पुरुषोतमा एकादशी व्रत	२७ जून गुरु.
पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत	११ जुलाई गुरु
देवशयनी एकादशी व्रत	२७ जुलाई शनि
कामिका एकादशी व्रत	९ अगस्त शुक्र
पवित्रा एकादशी व्रत	२५ अगस्त रवि
अजा एकादशी व्रत	८ सितं. रवि
पदमा एकादशी व्रत	२३ सितं. चंद्र
इन्दिरा एकादशी व्रत	८ अक्तू. मंग
पापांकुशा एकादशी व्रत	२२ अक्तू. मंग
रमा एकादशी व्रत	७ नवंबर गुरु
हरिप्रबोधनी एकादशी व्रत	२१ नव. गुरु
उत्पन्ना एकादशी व्रत	६ दिस. शुक्र
मोक्षदा एकादशी व्रत	२० दिस. शुक्र
सफला एकादशी व्रत	५ जन. (९७) रवि
पुत्रदा एकादशी व्रत	१९ जन. रवि
षट्तिला एकादशी व्रत	४ फरवरी मंग
जया एकादशी व्रत	१७ फरवरी चंद्र
विजया एकादशी व्रत	५ मार्च बुध
आमलकी एकादशी व्रत	१९ मार्च बुध

व्रत श्री सत्यनारायण (पूर्णमाशी) २०५३ वि.

पर्व त्योहार	ता. मास वार
पौष पूर्णिमा व्रत	५ जनवरी शुक्र
माघ पूर्णिमा व्रत	४ फरवरी रवि
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	४ मार्च चंद्र
चैत्र पूर्णिमा व्रत	३ अप्रैल बुध
वैशाख पूर्णिमा व्रत	३ मई शुक्र
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत	१ जून शनि
अधि आषाढ़ पूर्णिमा	३० जून रवि
शुद्ध आषाढ़ पूर्णमा व्रत	३० जुलाई मंग.
श्रावण पूर्णिमा व्रत	२८ अग. बुध
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत	२६ सितं. गुरु.
आश्विन पूर्णिमा व्रत	२६ अक्तू. शनि
कार्तिक पूर्णिमा व्रत	२४ नव. रवि
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत	२४ दिस. मंग.
पौष पूर्णिमा व्रत	२३ जन. (९७) बृह.
माघ पूर्णिमा व्रत	२१ फर. शुक्र
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	२३ मार्च रवि.

जैन पर्व एवं उत्सव

पर्व	तिथि
मेरू त्रयोदशी	१८ जन.
मर्यादा महोत्सव	२६ जन.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	३/५ मार्च
ऋषभ देव जयंती	१२ मार्च
बरसी तप शुरू	१३ मार्च
ओली तप शुरू	२७ मार्च
श्री महावीर जयंती	१ अप्रैल
ओली तप समाप्त	३ अप्रैल
बरसी तप समापन	२० अप्रैल.
ज्ञान दिवस	२८ अप्रैल.
मेला चक्रेश्वरी देवी	५ से ७ जून
चातुर्मास्य व्रतादि शुरु	२९ जुला.
तेरापंथ स्थापना दिवस	२९ जुला.
पर्युषण पर्वारम्भ	१० सित.
संवत्सरी महापर्व	१७ सित.
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	२१ सित.
श्री महावीर निर्वाण	११ अक्तूबर
श्री वीर संवत शुरु	१२ नवं.
आचार्य श्री तुलसी जय	१२ नवं.
ज्ञान पंचमी	१५ नवं.
चातुर्मास्य व्रतादि समाप्त	२५ नवं.
(रथोत्सव)	२५ नवं.
मौनी एकादशी	२० दिस.

व्रत श्रीगणेश चतुर्थी (चौथ)

पर्व	तिथि
श्री गणेश संकट चौथ (माघ)	जन. मंग
श्री तिल चतुर्थी (माघ)	२३ जन. मंग.
श्री गणेश चतुर्थी (फाल्गु.)	८ फर. गु.
श्री गणेश चतुर्थी (चैत्र)	८ मार्च शु.
श्री गणेश चतुर्थी (वैशाख)	७ अप्रै. रवि.
श्री गणेश चतुर्थ (ज्येष्ठ)	६ मई चंद्र
श्री गणेश चतु. (शु. आषाढ़)	४ जून मंग.
श्री गणेश चतु. (अधि.आषा.)	३ जुला. बुध
श्री गणेश चतुर्थी (श्रावण)	२ अग. शु.
गणेश बहुला चौथ (भाद्र)	३१ अग. श.
श्री गणेश पत्थर चौथ (भा. शु.)	१६ सित. चं.
श्री गणेश चतुर्थी	३० सित. चं.
श्री गणेश चतुर्थी (कार्तिक)	२९ अक्तू. मंग.
श्री गणेश चतुर्थी (मार्ग.)	२८ नवं. गु.
श्री गणेश चतु. (पौष)	२८ दिस. श.
श्री गणेश संकट चतुर्थी (मा.)	२७ जन. च.
श्री गणेश तिल चतुर्थी (मा.)	१० फर. च.
श्री गणेश चतुर्थी (फाल्गु.)	२६ फर. बु.
श्री गणेश चौथ (चैत्र)	२७ मा. गु.

अमावस्याएँ

अमावस	तिथि
शनिवासरी मौनी अमावस	२० जन. श.
फाल्गुन अमावस	१८ फर. र.
भौमवासरी चैत्र अमावस	१९ मार्च मंग.
वैशाख अमावस	१७ अप्रै. बु.
ज्येष्ठ भावुका अमावस	१७ मई शु.
आषाढ़ अमावस	१६ जून. र.
सोमवती अधिक आ. अमा.	१५ जुला. चं.
श्रावण हरियाली अमावस	१४ अग. बु.
भाद्रपद पिठौरी अमा.	१२ सितं. गु.
शनिवासरी आश्वि. अमा.	१२ अक्तू. गु.
सोमवती कार्तिक अमा.	११ नव. चं.
भौमवासरी मार्ग. अमावस	१० दिस. मंग.
पौष अमावस	९ जन. (१९९७) गु.
मौनी अमावस	७ फर. शु.
फाल्गुन अमावस	९ मार्च र.
सोमवती चैत्र अमावस	७ अप्रै. चं.

हिमाचल प्रदेश के मुख्य पर्व १९९६

पर्व	तिथि
मेला बसंत पंचमी (बिलासपुर)	२४ जन
मे. शिवरात्रि (जिला मण्डी)	१७ फर
मे. स्वर्णाश्रम (नूरपुर)	१७ फर
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	१८ फर
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	२-५ मार्च
होला मेला (पाओंटा)	६ मार्च
मे. सुजानपुर टिहरी (हमीरपुर)	६-९ मार्च
मे. बाबा बालकनाथ (हमीरपुर)	चैत्र मासे
मे. कनिहारा (धर्मशाला)	चैत्र मासे
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	१७-२२ मार्च
मे. बाला सुन्दरी (सिरमौर)	२० मार्च-३ अप्रै
मे. नयना देवी	२०-२८ मार्च
मेला मनसा देवी	२०-२८ मार्च
मे. नलवाड़ (सुंदरनगर)	२२-२९ मार्च
मेला लाहौल (मण्डी)	२६ मार्च
मे. श्री दुर्गाष्टमी (कांगड़ा)	२७ मार्च
मे. रोहड़ (महासू)	३०-३१ मार्च
मे. मारकण्डा (बि. पुर)	१२-१५ अप्रै.
मेला कालेश्वर (देहरा)	१३ अप्रै.
मे. बिशु (हिमाचल)	बैशाख मासे
मे. सटीर (धर्मशाला)	१३ अप्रै
हिमाचल दिवस	१५ अप्रै.
मे. हुरला (कुल्लू)	१६-१७ अप्रै
मे. खनाणी (कुल्लू)	१९-२० अप्रै.
मे. माहूनाग (करसोग)	२१-२२ अप्रै.
मे. मनीकरण (कुल्लू)	२८ अप्रै.-३ मई
मे. हरिदेवी (धुमारवीं)	२८-२९ अप्रै
मे. पीपल जातर (कुल्लू)	२८-३० अप्रै
मेला स्वीटी	३० अप्रै
मे. आनी (कुल्लू)	७-९ मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	१० मई
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	८-१० मई
मे. धामरस (बिलासपुर)	१४ मई
मे. बंजार (कुल्लू)	१४-१८ मई
मे. दुगरी जातर (मनाली)	१४-१५ मई
मे. शाढ़ी जातर	१८-२३ मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	१९ मई
पशु मेला (हमीरपुर)	२० मई से
मे. शीतला देवी (सुंदरनगर)	२२-२४ मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	२४-२५ मई
मे. पीपलू (हमीरपुर)	२९ मई
मे. ग्राम पंजशाई (बि. पुर)	२९-३० मई
मे. स्थूल मढोल	१-४ जून
मे. बाड़ी (सोलन)	१४ जून
मे. अहल (हमीरपुर)	१४ जून
मे. खज्जियार (डल्हौजी)	१४ जून से
मे. नौनाही देवी (सरकाघाट)	१४ जून
मेला भुन्तर	१५-१७ जून
मे. टौणी देवी (हमीरपुर)	२३ जून
मे. त्रिलोकी (सिरमौर)	७ जुलाई
मे. ब्रैअम (मढोल)	१६ जुलाई
मे. नागनी देवी (नूरपुर)	१६ जुलाई
मे. सिद्ध बाबा शिब्बो (ज्वाली)	२१ जुलाई
मे. मिंजर (चम्बा)	२८ जुलाई
मे. चिंतपूर्णी छिन्नमस्तिका)	१५-२२ अग.
मे. संतोषी माता (लदरौर)	१६ अग
मे. नयना देवी (बिलासपुर)	२२ अग.
मे. गुग्गा नवमी (बि. पुर)	६ सितं.
मे. बड़ाल (कुल्लू)	६ सितं
गणपति उत्सव (मंडी)	१७-२६ सित.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	१६ सित
मे. नलवाड़ (चिच्चोट)	१६-२३ सित
यात्रा मनीमहेश (चम्बा)	१८ सितं से
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	२४ सितं.
मे. चामुण्डा (कांगड़ा)	१३-२१ अक्तू.
मे. रामलीला (कांगड़ा)	१३-२१ अक्तूब.
मे. बगुलामुखी (बनखंडी)	१३-२१ अक्तू.
मे. मनसा देवी	१३-२१ अक्तू.
मे. तारादेवी (शिमला)	२०-२१ अक्तू.
मे. शीतलामाता (मच्छिभवन)	२० अक्तू.
मे. विजयादशमी	२१ अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	२२-२८ अक्तू.
मे. काली बाड़ी	१०-११ नव.
मे. लावी (रामपुर, चिच्चोट)	११-१४ नवं.
मे. रेणुका (सिरमौर)	२१-२२ नवं.
मे. रुद्रानन्द नारी (ऊना)	२१-२५ नवं.
मेला भीष्म पंचक	२१-२५ नवं.
मे. जोगी पागा	२५ नव.

पंजाब-हरियाणा, यू०पी० के मुख्य मेले १९९६

मेला	तिथि
मे. लोहड़ी (पंजा. हरि. यू. पी.)	१३ जन
मे. दाऊ (चण्डीगढ़)	१३ जन.
मे. माघी व मुक्तसर	१४ जन.
मे. मौनी अमावस (यू. पी.)	२० जन
मे. बसन्त पंचमी	२४ जन
मे. महेन्द्र बाहरी (जालन्धर)	२९ जन
मे. मस्तुआणा (पंजा.)	१ फर
मे. जैसलमेर (राज.)	२-४ फर
मे. जयंती देवी (चंडीगढ़)	२-४ फर
मे. माघी पूर्णिमा (प. यू. पी.)	४ फर
मे. श्री महाशिवरात्रि	१७ फर.
मे. नीलकण्ठ (गढ़वाल)	१७ फर
मे. होलिया होलाष्टक (यू. पी.)	२६ फर-५ मार्च
मे. सावातिल्ला	३ मार्च
होला मेला (आनंदपुर)	६ मार्च
मे. रामराय (देहरादून)	१० मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	१० मार्च
मे. बीरमदास (पटियाला)	१० मार्च
मे. ऋषभदेव जयंती	१२ मार्च
मे. शीतलाष्टमी (कुराली)	१३ मार्च
मे. पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	१८ मार्च
मे. आशापूर्णी (पठानकोट)	२०-२८ मार्च
मे. बीमा (नानकसर)	२० मार्च
मे. मनसादेवी, नैनादेवी	२० मार्च
मे. माईसर खाना (भटिण्डा)	२५ मार्च
मे. दुर्गाष्टमी (ज्वालामुखी, नैनादेवी)	२७ मार्च
मे. रामनवमी	२८ मार्च
मे. कौसा देवी (चण्डीगढ़)	२-३ अप्रै.
मे. बैसाखी (पंजाब)	१३ अप्रैल
मे. रामथमन दास (फाज्रि)	१३ अप्रैल
मे. पिजौर (हरियाणा)	१७ अप्रै.
मे. गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	२५ अप्रै.
मे. भद्रकाली (शेखपुरा)	१३ मई
भण्डारा संत सम्मेलन (कांगड़ा)	१८ मई
मे. जोड़ (पंजाब)	२१ मई
मे. मुरारी देवी (सरकाघाट)	२५-२७ मई
मे. क्षीर भवानी (कश्मीर)	२६ मई
मे. गंगा दशहरा (हरिद्वार)	२८ मई
मे. बाबा रहमतशाही (बिलगा)	१४ जन. १४ जून
मे. पीर न्वाज़ अहमद (करतारपुर)	२८ जून
मे. मंढाली शरीफ	२८ जून
मे. रथयात्रा (पुरी)	१७ जुला.
मे. गुरु पूर्णिमा (पंजाब)	३० जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	३० जुला.
मे. सिंधारा तीज	१७ अग
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (मथुरा)	४/५ सितं.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला)	६ सित.
मे. गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर)	६ सित.
मे. सुधरेशाह (देहली)	१२ सित.
मे. गोसाईं आणा (कुराली)	१४ सित.
मे. वामन द्वादशी (पटियाला)	२४ सित.
मे. छपार (मलेरकोटला)	२६-२७ सितं.
मे. बाबा सोढल (जालंधर)	२६ सितं.
मे. गोइंदवाल	२७ सित.
मे. गुग्गा पीर (लुधियाना)	२७ सित.
मे. फल्गु (कुरुक्षेत्र)	१२ अक्तू.
मे. आशापूर्णी (पठानकोट)	१३-२१ अक्तू.
मे. हरयोवाल (गुरदासपुर)	२० अक्तू.
मे. दुर्गाष्टमी	२० अक्तू.
मे. दशहरा (सर्वत्र)	२१ अक्तू.
मे. बाबा बुड्ढा साहिब (अमृतसर)	२१ अक्तू.
मे. शाकुम्भरी देवी (यू. पी.)	२६ अक्तू.
दीपावली (सर्वत्र)	१० नवं.
मे. अन्नकूट (मथुरा)	११ नवं.
मे. अचलेश्वर (बटाला)	२०-२१ नव.
बाल मेला	१४ नव.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर)	२५ नवं.
मे. पुष्करराज (राज.)	२५ नवं.
मे. गढ़गंगा (यू. पी.)	२५ नव.
मे. कपालमोचन (हरियाणा)	२५ नवं.
मे. चमकौर साहिब	२२-२४ दिसं.
मे. जोड़	२६-२८ दिस.
मे. हरवल्लभ (जालन्धर)	२८-३१ दिस.

भण्डारा राधास्वामी (व्यास)

तिथि		वार
२५ फरवरी	(१३ फाल्गुन)	रवि
२६ मई	(१३ ज्येष्ठ)	रवि
१ जून	(१९ ज्येष्ठ)	शनि
२९ सितंबर	(१४ आषाढ़)	रवि
२७ अक्तूबर	(१२ कार्तिक)	रवि
२९ दिसंबर	(१५ पौष)	रवि

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

जयंती	तिथि
स्वा. विवेकानन्द जयंती	१२ जनवरी
स्वा. रामानन्दाचार्य जयंती	१३ जनवरी
बाबा लाल दयाल जयंती	२२ जनवरी
नेता श्री सुभाष चन्द्र जयंती	२३ जनवरी
लाला लाजपतराय जयंती	२८ जनवरी
गुरु रविदास जयंती	४ जनवरी
स्वा. दयानन्द जयंती	१७ फरवरी
परमहंस रामकृष्ण जयंती	२० फरवरी
चैतन्य महाप्रभु जयंती	५ मार्च
संत तुकाराम जयंती	७ मार्च
शहीदी दिवस भगत सिंह	२३ मार्च
श्री महावीर जयंती	१ अप्रैल
स्वामी वल्लभाचार्य जयंती	१४ अप्रैल
छत्रपति शिवाजी जयंती	१९ अप्रैल
श्री परशुराम जयंती	२० अप्रैल
गुरु शंकराचार्य जयंती	२३ अप्रैल
रामानुजाचार्य जयंती	२४ अप्रैल
श्री नारद जयंती	४ मई
रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ मई
महाराणा प्रताप जयंती	२० मई
संत कबीर जयंती	१ जून
लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुलाई
ऋषि वेद व्यास जयंती	३० जुलाई
शहीदी दि. उधम सिंह	३१ जुलाई
लोकमान्य तिलक (स्मरणोत्सव)	१ अगस्त
गो. संत तुलसीदास जयं.	२१ अगस्त
संत ज्ञानेश्वर जयंती	५ सितम्बर
भक्त नवल जयंती	५ सितम्बर
श्री चन्द्र जयंती	२१ सितम्बर
महात्मा गांधी जयंती	२ अक्तूबर

गुरु पर्व दस गुरु साहिबान संवत् २०५३

नाम गुरु साहिबान	अवतार दिवस	गुरयाई	ज्योति-ज्योत
श्री गुरु श्री नानकदेव	२५ नवंबर	जन्म से	७ अक्तूबर
श्री गुरु अंगददेव	१८ अप्रैल	१ अक्तूबर	२३ मार्च
श्री गुरु अमरदास	२ मई	२० मार्च	२७ सितंबर
श्री गुरु रामदास	२८ अक्तूबर	२५ सितंबर	१६ सितंबर
श्री गुरु अर्जुनदेव	१० अप्रैल	१४ सितम्बर	२१ मई
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	२ जून	१० मई	२४ मार्च
श्री गुरु हरराय साहिब	२ फर (९६) २० फर (९७)	१७ मार्च	४ नवंबर
श्री गुरु हरकिशन जी	७ अगस्त	४ नवंबर	१ अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर	८ अप्रैल	१ अप्रैल	१५ दिसंबर
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१५ जन. ९७	१३ दिसंबर	१५ नवंबर

गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाशोत्सव १३ सितंबर

दशमहाविद्या जयंती संवत् २०५३

श्री महातारा जयंती	२८ मार्च	श्री महाकाली जयंती	५ सितंबर
श्री मातंगी जयंती	२० अप्रैल	श्री भुवनेश्वरी जयंती	२४ सितंबर
श्री बगुलामुखी जयंती	२७ अप्रैल	श्री कमला जयंती	२९ अक्तूबर
श्री छिन्नमस्ता जयंती	३ मई	श्री त्रिपुर भैरवी जयंती	२४ दिसम्बर
श्री धूमावती जयंती	२६ मई	श्री ललिता जयंती	२२ फर (९७)

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल संवत् २०५३

नाम संक्रांति	ता. मास वार	प्रवेश काल (घ. मि.)	पुण्यकाल विवरण (घण्टा मिनटों में)
माघ संक्रांति	१४ जन. रवि	२२ ।२३	पुण्य आगामी दिन सूर्योदय तक
फागु संक्रांति	१३ फर. मंग	११ ।२१	पुण्य सूर्योदय से मध्यान्होत्तर तक
चैत्र संक्रांति	१४ मार्च गुरु	८ ।१२	पुण्य दुपै १४ ।२६ तक
वैशा. संक्रांति	१३ अप्रै. शनि	१६ ।४०	पुण्य प्रात: १०.२१ से प्रारम्भ
ज्येष्ठ संक्रांति	१४ मई मंग	१३ ।४२	पुण्य प्रात: १०.१८ से प्रारम्भ
आषाढ़ संक्रांति	१४ जून शुक्र	२० ।१४	पुण्य दुपै १ ।५४ के बाद
श्रावण संक्रांति	१६ जुला. मंग	७ ।२२	पुण्य प्रात: ७.१२ से साय ७.१२ तक
भादों संक्रांति	१६ अग. शुक्र	१५ ।३६	पुण्यकाल प्रात: ९.१२ से प्रा.
आश्विन संक्रांति	१६ सित. बुध	१५ ।३१	पुण्य काल प्रात: ९.०७ से प्रा.
कार्तिक संक्रांति	१६ अक्तू. बुध	२७ ।२५	पुण्य १७ अक्तूब को प्रात: ९.५० तक
मार्ग संक्रांति	१५ नव. शुक्र	२७ ।१२	पुण्य १६ नव. को मध्यान्ह पूर्व
पौष संक्रांति	१५ दिस. रवि	१७ ।४८	पुण्य प्रात: ११ ।२४ के बाद
माघ संक्रांति	१३ जन. चंद्र	२८ ।३०	पुण्य १४ जन. को मध्यान्ह से पूर्व
फागु संक्रांति	१२ फर. बुध	१७ ।३०	पुण्य प्रात: ११.६ के बाद
चैत्र संक्रांति	१४ मार्च शुक्र	१४ ।२०	पुण्य प्रात: ८.०४ से प्रारम्भ

भारत एवं प्रादेशिक सरकारों की मुख्य छुट्टियां स. १९९६-९७ ई०

क्रिश्चियन नववर्ष प्रारंभ	१ जन. सोम
लोहड़ी पर्व	१३ जन. शनि
मकर संक्रांति, पोंगल	१४ जन. रवि
बसंत पंचमी	२४ जन. बुध
गणतन्त्र दिवस	२६ जन. शुक्र
गुरु रविदास जयंती	४ फर. रवि
जुमतुलविदा	१६ फर. शुक्र
श्री महाशिवरात्रि व्रत	१७ फर. शनि
शबे कदर (J & K)	१७ फर. शनि
ईदुलफितर	२१ फर. बुध
होली पर्व	५ मार्च बुध
होला मेला (पंजाब)	६ मार्च गुरु
शहीदी दि. स. भगत सिंह (पंजाब)	मार्च शनि
श्री रामनवमी	२८ मार्च गुरु
महावीर जयंती	१ अप्रै. सोम
बैंक हालीडे	१ अप्रै. सोम
गुड फ्राईडे	५ अप्रै. शुक्र
वैशाखी	१३ अप्रै. शनि
अंबेदकर जयंती	१४ अप्रै. रवि
हिमाचल दिवस (H.P.)	१५ अप्रै. सोम
ईदुलजुहा	२९ अप्रै. सोम
शहीदी दि.गु. अर्जुनदेव (Pb.)	२१ मई मंग.
मुहर्रम	२८/२९ मई म. बु
रथयात्रा पुरी	१७ जुला. बुध
ईदे मिलाद	२९ जुला. सोम
शहीदी दि. स. ऊधमसिंह	३१ जुला. बुध
भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग. बृह
रक्षा बन्धन	२८ अग. बुध
श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णा.	५ सित. बृह
बैंक हालीडे	३० सित. सोम
ज. दि. महात्मा गांधी	२ अक्तू. बुध
विजया दशमी, दशहरा	२१ अक्तू. सोम
बाल्मीकि जयंती	२६ अक्तू. शनि
पंजाब दिवस (पंजाब)	१ नवं. शुक्र
दीपावली	१० नवं. सोम
महावीर निर्वाण दिवस	११ नवं. सोम
विश्वकर्मा दिवस	११ नवं. सोम
भाईदूज (यम द्वितीय)	१२ नवं. मंगल
श्री गुरू नानक जयंती	२५ नवं. सोम
जन्म दि. हज़रतअली	२५ नवं. सोम
शहीदी दि. गु. तेग बहादुर	१५ दिसं. रवि.
क्रिसमिस दिवस	२५ दिसं. बुध

(सन् ईसवी १९९७)

इंगलिश/नव वर्षारंभ	१ जन./बुध
लोहड़ी पर्व (Pb.)	१२ जन. रवि
मकर संक्रांति, पोंगल	१३ जन. सोम
गुरू गोबिंद सिंह जयंती	१५ जन. बुध
भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन. रवि
जुमतुलविदा	७ फर. शुक्र
ईदुलफितर	१० फर. सोम
गुरू रविदास जय.	२२ फर. शनि
श्री महाशिव रात्रि	७ मार्च शुक्र
होली	२४ मार्च सोम
गुडफ्राईडे	२८ मार्च शुक्र

उपरोक्त छुट्टियाँ सरकारी गज़ट से अवश्य मिला लें—सम्पादक

श्री दशावतार जयन्तियां

श्री मत्स्यावतार जयती	२१ मार्च	श्री बुद्धावतार जयती	३ मई
श्री रामावतार जयती	२८ मार्च	श्री कल्कि अवतार जय.	२० अग.
श्री परशुराम जयती	२० अप्रैल	श्री कृष्णावतार जय.	४ सित.
श्री नृसिंहावतार जयती	२ मई	श्री वाराहावतार जय.	१६ सित.
कूर्मावतार जयती	२ मई	श्री वामनावतार जय.	२४ सितंबर

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

अग्रसेन जयती	१३ अक्तूबर
माधवाचार्य जयती	२१ अक्तूबर
श्री धनवंतरी जयंती	८ नवम्बर
श्री हनुमान जयंती	९ नवम्बर
स्वा. रामतीर्थ जयंती	१२ नवम्बर
विश्वकर्मा जयंती	१२ नवम्बर
महा. रणजीत सिंह जयंती	१३ नवम्बर
पं. जवाहर लाल जयंती	१४ नवम्बर
जन्म दि. वीर वैरागी	२३ नवम्बर
सत्य श्री साई बाबा जयंती	२३ नवम्बर
गुरु नानक जयंती	२५ नवम्बर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसम्बर
श्री दत्तात्रेय जयंती	२४ दिसम्बर

(सन् १९९७ ई. में)

स्वा. विवेकानन्द जयती	१२ जनवरी
गुरु. गोबिन्द सिंह जयंती	१५ जनवरी
नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ जनवरी
लाला लाजपतराय जयंती	२८ जनवरी
स्वामी रामानन्दाचार्य जयंती	३१ जनवरी
बाबा लाल दयाल जयंती	९ फरवरी
गु. रविदास जयंती	२२ फरवरी
स्वा. दयानन्द जयंती	७ मार्च
परमहंस रामकृष्ण जयंती	१० मार्च

पर्व श्री पिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्री रामानन्दाचार्य जयती	२६ जनवरी
श्री होलिका दहन	४ मार्च
श्री भगवत नारायण जयंती	९ मार्च
रामनवमी पर्व	२८ मार्च
वैशाखी पर्व	१३-१५ अप्रै.
जानकी जयती	२७ अप्रैल
गंगा दशहरा	२८ मई
गुरू पूर्णिमा	३० जुलाई
तुलसी जयंती पर्व	२१ अगस्त
कृष्ण जयंती पर्व मेला	४-७ सितम्बर
वामन जयती	२४ सितम्बर

पर्व श्री पिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

विजयादशमी	२१ अक्तूबर
शरद् पूर्णिमा पर्व	२६ अक्तूबर
बाल्मीकि जयंती	२६ अक्तूबर
महन्त गु. गोबिन्ददास जय	२६ अक्तूबर
श्री हनुमान जयंती	९ नवम्बर
दीपावली पर्व	१० नवम्बर
गीता जयंती	२० दिसम्बर
बाबा लाल दयाल जयंती (ध्यानपुर व दतारपुर)	२२ जनवरी तथा ९ फरवरी (९७)

मुस्लिम त्यौहार २०५३

शबे बारात	७ जनवरी
रमज़ान	२२ जनवरी
उर्स हज़रत निजामुद्दीन	२४ जनवरी
शहादत हज़रत अली	११ फरवरी
जुमतुलविदा	१६ फरवरी
शबे कदर	१७ फरवरी
ईदुल फितर	२१ फरवरी
ईदुलजुहा	२९ अप्रैल
मुहर्रम (हि १४१७ शुरु)	१९ मई
मुहर्रम ताजिया	२८/२९ मई
चेहलुम	७ जुलाई
शहादत इमाम हसन	१५ जुलाई
आखिरी चहार	१७ जुलाई
ईदे मिलाद	२९ जुलाई
ईदे मौलाद	३ अगस्त
ग्यारवीं शरीफ	२७ अगस्त
जन्म हज़रत अली	२५ नवम्बर
शबे मिराज	९ दिसम्बर
शबे बरात	२७ दिसम्बर
रमज़ान	११ जनवरी (९७)
शहादत हज़रत अली	३१ जनवरी
शबे कदर	६ फरवरी
जुमतुलविदा	७ फरवरी
ईदुलफितर	१० फरवरी

पितृपक्ष में श्राद्ध वि. संवत् २०५३

अपने पूर्वज-पितरों के प्रति श्रद्धा भावना बनाए रखने हेतु पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, आयु एवं सुख शान्ति बनी रहती है। वि. सम्वत् २०५३ में आश्विन मास को श्राद्ध तिथियों का विवरण लिख रहे हैं—

पूर्णिमा का श्राद्ध	२६ सित. गुरु.
प्रतिपदा का श्राद्ध	२७ सित. शुक्र.
द्वितीया का श्राद्ध	२८ सित. शनि.
तृतीय का श्राद्ध	२९ सित. रवि.
चतुर्थी का श्राद्ध	३० सित. चंद्र.
पचमी का श्राद्ध	१ अक्तू. मंग.
षष्ठी का श्राद्ध	२ अक्तू. बुध
सप्तमी का श्राद्ध	३ अक्तू. गुरु.
अष्टमी का श्राद्ध	४ अक्तू. शुक्र.
नवमी का श्राद्ध	५ अक्तू. शनि.
दशमी का श्राद्ध	६ अक्तू. रवि.
एकादशी का श्राद्ध	७ अक्तू. चन्द्र.
द्वादशी का श्राद्ध	८ अक्तू. मंग.
त्रयोदशी का श्राद्ध	१० अक्तू. गुरु.
चतुर्दशी का श्राद्ध	११ अक्तू. शुक्र.
अमा, सर्वपितृ श्राद्ध	१२ अक्तू. शनि.

शनि-पीड़ा-निवारक इक्कीसा यन्त्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

विधि—इस यन्त्र को काले पत्थर के चौकोर टुकड़े पर कोयले से शनिवार को लिखें। शनि-पीड़ित व्यक्ति के सिर से पैर तक सात बार उतार कर, किसी ऐसे कूप में डाल दें। जिसका पानी शनि-पीड़ित व्यक्ति कभी न पीए।

सर्वरोग नाशक यन्त्र

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५

इस ३४ के यन्त्र को होली, दीपावली ग्रहण, वा नवरात्रों आदि में १०८ बार लिख सिद्ध कर कागज पर अष्टगंध से लिखकर रोगी को दोनों समय पानी में घोलकर पिलावें तथा एक यन्त्र उसकी ओढ़ने वाली चादर में बांध देना चाहिए। इस यन्त्र से कैसा भी पुराना रोग एवं किसी भी प्रकार का कष्ट हो शनै-शनै: समाप्त हो जाता है।

शुभकार्यों में चंद्रबल एवं ताराबल

चन्द्रबल—अपनी जन्म-राशि से १, ३, ६, ७, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्ल पक्ष में २, ५ ९वीं राशि का भी चन्द्र शुभ होता है।

ताराबल—जन्म-नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें, शेष १, २, ४, ६, ८, ० रहे तो तारा-बल प्राप्त होता है। ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा-बल नहीं मिलता। शुक्लपक्ष में चन्द्र-बल, कृष्ण पक्ष में तारा-बल लेना चाहिए।

दुष्ट-शत्रुनाशक बगुला मन्त्र

ॐ ह्लीं बगला मुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

यदि कोई दुष्ट शत्रु अन्याय पूर्वक आपको सता रहा हो अथवा अत्यन्त कष्टकारी मुकदमे या झगड़े आदि के कारण स्वयं को असहाय अनुभव करते हों, तो श्री बगलामुखी देवी के चित्र के सामने धूप-दीपादि जलाकर पीले पुष्पोंसहित उपरोक्त मन्त्र का सवा लाख की संख्या में अनुष्ठान विधिपूर्वक करें। प्रतिदिन नियमित रूप में कम से कम ३ माला का जाप श्रद्धा-भक्तिपूर्वक करने से अभीष्ट सिद्धि होती है। जप पूरा होने के पश्चात् दशमांश की संख्या में चम्पा के फूलों सहित हवन करना चाहिए।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुंडली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल-सर्प नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्राय: उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। पर्याप्त धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो काहलयोग बनता है इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रबन्ध कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत	भरणी	कृतिका	प्रथम
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रोहिणी	द्वितीया
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव	मृग	तृतीया

सूर्य नक्षत्र, चंद्र नक्षत्र, जन्म नक्षत्र अथवा नाम नक्षत्र, रोग त्रिनाड़ी चक्र में जब एक ही नाड़ी पर हो तो रोग असाध्य होता है और रोगी का मरण होता है। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय विचारणीय नहीं है। अपवाद स्वरूप, चन्द्रमा स्वोच्च, मित्र अथवा स्वराशिगत हो, तो मारक नहीं मानना चाहिए।

मंगलवार १।६।११ तिथि कृतिक नक्षत्र, बुधवार २।७।११ तिथि अश्लेषा नक्षत्र, गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघा हस्त नक्षत्र, शुक्रवार ४।९।१४ तिथि आर्द्रा धनिष्ठा नक्षत्र शनिवार ५।१०।१५ तिथि भरणी नक्षत्र इन तिथि वार और नक्षत्रों के योग में रोग प्रारम्भ हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट जानें।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?
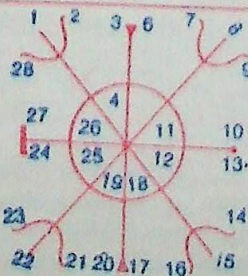
जिस दिन को मालूम करना हो कि आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ? तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार २८ नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र गोलाकार के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन भाग्योदय होगा, धन लाभ होगा। यदि गोल के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन रोग, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो,** उसे नं. १ लें। इसी क्रम में पूफा आदि २८ नक्षत्र क्रम से लिख लें।

पंचकारंभ एवं समाप्ति काल (१९९६—९७ ई०)
(जनवरी ९६ से अप्रैल १९९७ ई० तक)

पंचक नक्षत्रों के समय दक्षिण दिशा की यात्रा करना, मकान, झोंपड़ी, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, मुरदा जलाना, लकड़ी, बांस की चटाई या दीवार प्रारंभ करना आदि स्तम्भारोपण, ताम्बा, पीतल तृण-काष्ठादि का संचय करना, गृहारंभ (विशेषकर छत डालना), आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय स्वरूप ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकर होगा—

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.
२२ जन (९६)	८ ।३०	२६ जन	१६ ।०७	२४ सितंबर	१४ ।१२	२८ सित	१६ ।५५
१८ फरवरी	१९ ।४३	२२ फर	२५ ।१५	२१ अक्तूबर	२१ ।३९	२५ अक्तू	३ ।०२
१७ मार्च	५ ।०८	२१ मार्च	११ ।१७	१८ नव.	३ ।०३	२२ नव.	१० ।४८
१३ अप्रैल	१२ ।०१	१७ अप्रैल	२० ।२५	१५ दिस.	९ ।०६	१९ दिस	१६ ।३५
१० मई	१७ ।२७	१५ मई	३ ।३४	११ जन (९७)	१७ ।३०	१५ जन	२२ ।१३
६ जून	२३ ।३३	११ जून	९ ।१५	७ फर	४ ।३४	१२ फर	५ ।४९
४ जुलाई	७ ।४२	८ जुलाई	१४ ।५३	७ मार्च	१५ ।४०	११ मार्च	१५ ।५५
३१ जुलाई	१७ ।४६	४ अग.	२२ ।०१	३ अप्रै.	२५ ।०६	७ अप्रै.	२६ ।४०
२८ अगस्त	४ ।३५	१ सित.	७ ।०४				

विक्रमी संवत् २०५३ में लाभ-हानि चक्र

आगामी नव वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ व खर्च के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा में से १ कम करके जोड़ को ८ द्वारा भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि १ बचे तो, आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेगी। यदि शेष २ बचें, तो धन लाभ मध्यम् पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष ३ बचें, तो लाभ कम, खर्चा (अपव्यय) अधिक रहे। व्यर्थ भाग दौड़ अधिक रहे व घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष ४ बचें तो मानसिक तनाव शरीर कष्ट व रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हों। यदि शेष ५ बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहे। बनते कार्यों में विघ्न पड़े। यदि शेष ६ बचें, तो भाग्योन्नति व धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष ७ बचें तो व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ हो। भूमि-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि ८ अर्थात् शून्य ० बचे तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहे, मानसिक परेशानियां भी बढ़ने के योग है।

लाभ—हानि चक्र (विंशोतरी मतानुसारेण)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
खर्च	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

गंडमूल नक्षत्रों का विवरण १९९६—९७ ई.

गंडमूल नक्षत्रों में पैदा होने वाले बच्चे स्वयं अपने लिए अथवा माता-पिता की सेहत, उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ फलदायक होते है। अशुभ प्रभाव होने पर भी ऐसा देखने में आया है कि बच्चे बुद्धिमान एवं होशियार होते हैं, तथापि गंडमूल में उत्पन्न बच्चे के नक्षत्र की २७ दिन पश्चात् उसी गण्डमूलक नक्षत्र काल में किसी योग्य ब्राहाण द्वारा शान्ति करवा लेना उत्तम रहता है। यदि जन्मकाल में शान्ति न करवाई हो तो बच्चे के जन्म दिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना कल्याणकारी रहेगा।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.	ता. मास	घ. मि.
८ जन.	६ ।०४	१० जन	११ ।०३	२३ अग.	४ ।४३	२५ अग.	१ ।४३
१७ जन.	१२ ।०५	१९ जन.	६ ।५५	३१ अग.	८ ।१७	२ सित.	६ ।३७
२५ जन.	१५ ।४६	२७ जन	१७ ।२७	९ सित.	२० ।३८	१२ सित.	२ ।१६
४ फर	१२ ।१२	६ फर.	१७ ।११	१९ सित.	१० ।५८	२१ सित	८ ।५४
१३ फर	२० ।२१	१५ फर.	१६ ।३८	२७ सित.	१८ ।४६	२९ सित.	१६ ।११
२१ फर	२५ ।३४	२३ फर.	२५ ।५३	७ अक्तू.	३ ।५९	९ अक्तू.	९ ।३८
२ मार्च	१९ ।१३	४ मार्च	२३ ।३३	१६ अक्तू.	१६ ।१०	१८ अक्तू.	१४ ।२९
११ मार्च	२६ ।१६	१३ मार्च	२३ ।४०	२५ अक्तू.	४ ।१०	२७ अक्तू.	, २ ।१६
२० मार्च	११ ।४९	२२ मार्च	११ ।३५	३ नव.	११ ।५७	५ नव.	१७ ।५१
३० मार्च	३ ।११	१ अप्रैल	७ ।३७	१२ नव.	२३ ।०३	१४ नव.	२० ।२०
८ अप्रै.	७ ।५१	१० अप्रै.	५ ।०५	२१ नव.	११ ।२२	२३ नव.	१० ।२९
१६ अप्रै.	२० ।३७	१८ अप्रै.	२० ।३९	३० नव.	२० ।११	३ दिस.	२ ।१४
२६ अप्रै.	११ ।२३	२८ अप्रै.	१६ ।१९	१० दिस.	८ ।२०	१२ दिस.	४ ।३१
५ मई	१४ ।५३	७ मई	११ ।१७	१८ दिस.	१६ ।५३	२० दिस.	१६ ।४१
१४ मई	३ ।२०	१६ मई	४ ।११	२८ दिस.	३ ।४५	३० दिस.	९ ।५०
२३ मई	१९ ।१३	२५ मई	२४ ।४२	६ जन.	१८ ।५७	८ जन.	१५ ।०५
१ जून	२४ ।३५	३ जून	१९ ।२८	१४ जन.	२२ ।५७	१६ जन.	२२ ।०६
१० जून	८ ।४९	१२ जून	१० ।११	२४ जन	१० ।२८	२६ जन	१६ ।३३
२० जून	२ ।०९	२२ जून	८ ।०१	३ फर.	५ ।००	५ फर	२ ।०६
२९ जून	१० ।५१	१ जुला.	५ ।३९	११ फर	७ ।२०	१३ फर	५ ।००
७ जुला.	१४ ।४४	९ जुला.	१५ ।४०	२० फर.	१६ ।३९	२२ फर	२२ ।४६
१७ जुला.	८ ।१७	१९ जुला.	१४ ।११	२ मार्च	१२ ।३८	४ मार्च	११ ।२५
२६ जुला.	२० ।४०	२८ जुला.	१६ ।१५	१० मार्च	१८ ।०२	१२ मार्च	१४ ।२०
३ अग.	२२ ।३५	५ अग.	२२ ।१४	१९ मार्च	२२ ।५६	२१ मार्च	५ ।०४
१३ अग. १	१४ ।१६	१५ अग.	१९ ।५९	२९ मार्च	१८ ।२८	३१ मार्च	१८ ।०४
				७ अप्रैल	४ ।५१	८ अप्रै.	२४ ।१९

वि० संवत् २०५३ के मध्य विश्व में कुल छः ग्रहण लगेंगे। इनमें से तीन चन्द्र ग्रहण और तीन सूर्य ग्रहण होंगे। भारत में केवल एक ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण तथा एक ग्रस्तोदित सूर्य ग्रहण ही दिखलाई देगा।

भारत में दृष्टिगोचर होने वाले दोनों ग्रहणों का विवरण—

(१) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र ग्रहण (३/४ अप्रैल, १९९६ ई०, बुधवार)

यह ग्रहण चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, ३ अप्रैल बुधवार की रात्रि को हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशि में भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार अर्द्ध रात्रि उपरान्त रात ३ बजकर ५० मिनट से प्रारम्भ होकर भारत के अधिकांश नगरों में ४ अप्रैल को प्रातः को ७ बजकर २९ मिनट तक खग्रास रूप में लगी स्थिति में ही अस्त हो जाएगा। यद्यपि भारत के उत्तर-पश्चिम में पड़ने वाले देशों जैसे पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, सऊदी अरब, अफ्रीकादि देशों भा. स्टै. टाईम के अनुसार प्रातः ७ बजकर २९मिनट तक खग्रास चन्द्र ग्रहण के रूप में रहेगा।

भारत के अधिकांश नगरों में यह खग्रास चंद्र ग्रहण ग्रस्तास्त रूप में अर्थात् चन्द्रमा ग्रस्त हुई अवस्था में ही अस्त में ही अस्त हो जायेगा। इसी कारण, इसका नाम ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण हुआ है।
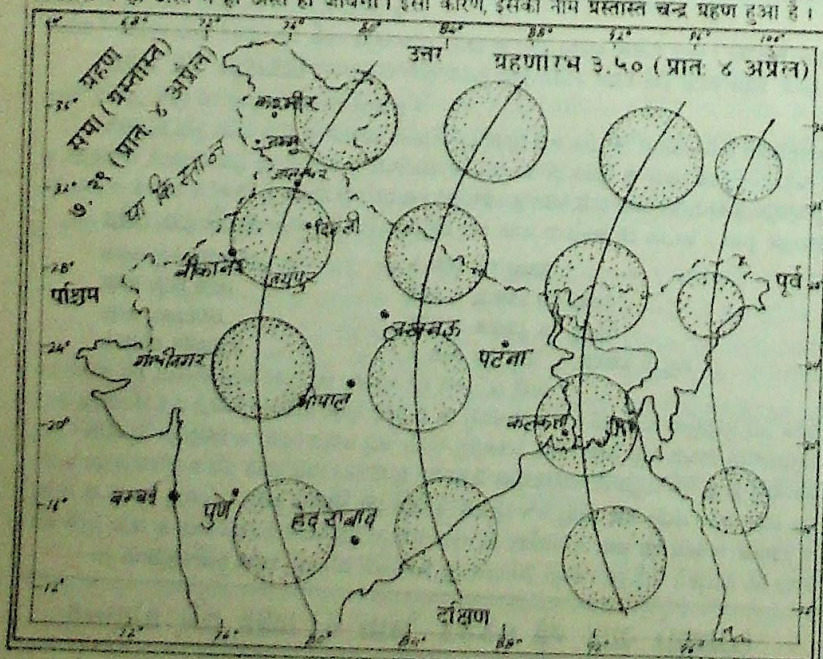
चन्द्र ग्रहण के प्रारम्भ, मध्य एवं समाप्ति काल भा. स्टै. टाइम में इस प्रकार से होगा

ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण ३/४ अप्रैल १९९६ ई० (बुधवार की रात्रि) भारतीय स्टैंडर्ड टाइम

ग्रहण का स्पर्शारम्भ	(अर्द्ध रात्रि उपरांत)	प्रातः ३ बजकर ५० मिनट
ग्रस्तास्त ग्रहण का सन्धिकाल		प्रातः ४ बजकर ५५ मिनट
ग्रहण (ग्रस्तास्त) का मध्यकाल		प्रातः ५ बजकर, ३१ मिनट
ग्रहण (ग्रस्तास्त)	का भारतीय क्षेत्र में समा. काल	प्रातः ६ बजकर २३ मिनट
चन्द्र ग्रहण का मोक्ष	(भा. स्टै. समयानुसार)	प्रातः ७ बजकर २९ मिनट
खग्रास चन्द्रग्रहण का पर्वकाल		३ घण्टा, ३९ मिनट

ग्रहण का सूतक—३ अप्रैल, ९६ बुधवार की सायं ६ बजकर ५० मिनट से प्रारम्भ हो जायेगा। ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में वृथालाप, वृथाभ्रमण, अनावश्यक भोजन, मूर्ति स्पर्श, मांस-मदिरादि का सेवन, मैथुन, झूठ-कपटादि निंद्य कार्यों का त्याग करना चाहिए। **परिस्थितिवश**, बाल, वृद्ध, रूग्ण एवं गर्भवती महिलाओं को उचित आहार लेने में दोष नहीं माना जाता। **गर्भवती** एवं नव-प्रसूता स्त्रियों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

ग्रहण काल में इष्ट देव पूजन, जप-पाठ, तर्पण मन्त्रानुष्ठान आदि शुभ कर्मों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त काल में यथाशक्ति स्नान, दान, जपादि करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

ग्रहण का राशिफल—ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र ग्रहण **हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशि** के चन्द्रमा में घटित हो रहा है। कन्या राशि एवं अन्य राशि वालों को इस ग्रहण का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा। अशुभ फल वाली राशि वालो को यह ग्रहण नहीं देखना चाहिए।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
ग्रहण फल	हानि कष्ट	शत्रु भय	कार्य सिद्धि	भाग्य उन्नति	रोग भय	रोग शोक	धन-हानि कष्ट	लाभ उन्नति	कष्ट भय	विघ्न चिंता	लाभ सुख	बन्धु चिंता

जिस राशि वाले को ग्रहण फल अशुभ हो, उसको अपने **राशि स्वामी** ग्रह तथा चन्द्रमा के बीज मंत्र का यथाशक्ति जप व दानादि से अरिष्ट की शान्ति हो जाती है। नव ग्रह सम्बन्धी औषधि स्नान भी कल्याणप्रद माना गया है।

ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण का विशेष फल—ग्रस्तास्त ग्रहण चैत्र मास में, बुधवार, हस्त नक्षत्र एवं कन्या के चन्द्रमा में घटित होगा। **ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण** का फल शुभ नहीं माना गया है। इसके फलस्वरूप कहीं छत्र भंग (राज्य परिवर्तन), प्रशासकों के मध्य युद्ध भय, महंगाई, उपयोगी वस्तुओं का अभावादि के कारण प्रजा में असंतोष व उत्तेजना पैदा हो। रूई, कपास, गेहूं, मूंग, मोठ, अरहर, अलसी, खाण्ड, गुड़, चने, चावल, ताम्बा, पीतल, सोना, जूटादि व्यापारिक एवं लाल वर्ण की वस्तुएं तेज भाव होगी। इन वस्तुओं के संग्रह से दो मास में लाभ हो।

पीत धातु महर्घत्वं सास्यान्यं विनश्यति।
कौशले छत्र भंगश्च ग्रहणे बुधवासरे॥

ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण (९ मार्च, १९९७ ई० प्रातः रविवार)

यह **ग्रस्तोदित-सूर्य ग्रहण**, फाल्गुण कृष्ण पक्ष की अमावस, रविवार की प्रातः पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा कालीन, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार **९ मार्च की प्रातः ५ बजकर ३ मिनट से प्रारम्भ होकर, ९ मार्च रविवार की प्रातः ६ बजकर ५० मिनट तक रहेगा।** इस प्रकार यह स्वल्प ग्रसित ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण होगा। भारत में यह ग्रहण अधिकांशतः ग्रस्तोदित रूप में ही दिखलाई देगा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण बंगला देश, भूटान, सिक्किम, नेपाल, बर्मा, चीन, जापान, प्रशान्तसागर हिन्द महासागर, इंडोनेशिया, हांगकांग आदि देशों में भी दिखलाई देगा। इस ग्रहण ग्रस्तोदित सूर्य ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल आदि का विवरण इस प्रकार से होगा—

ग्रस्तोदय ग्रहणारंभ	**९ मार्च की प्रातः, ५ बजकर ३ मिंट**
ग्रहण मध्यकाल	**प्रातः ५ बजकर ४५ मिनट**
ग्रहण मोक्ष काल	**प्रातः ६ बजकर ५० मिनट**
पर्वकाल (घंटा मिनटों में)	**१ घंटा ४७ मिनट**

ग्रहण का सूतक—भारत में इस **ग्रस्तोदित** सूर्य ग्रहण के सूतक का आरम्भ ८ मार्च, शनिवार की सायं ५ बजकर ३ मिनट से प्रारम्भ हो जायेगा। इस काल में बाल, वृद्ध, रुग्ण एवं गर्भवती महिलाओं के अतिरिक्त सामान्य जनों की मूर्ति-स्पर्श, वृथालाप, अनावश्यक भोजनादि के सेवन का निषेध रहेगा।

ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण काल में जप-पाठ मन्त्रानुष्ठान आदि शुभ कर्मों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त स्नान, दानादि करने का विशेष माहात्म्य होता है।

ग्रहण का राशिफल—ग्रस्तोदित सूय ग्रहण पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र एवं कुम्भ राशि कालीन लगेगा। अतएव **पूभा नक्षत्र** और **कुंभ राशि** वाले लोगों के लिए विशेष अशुभ होगा। **विभिन्न राशि** वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार है—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
ग्रहण	लाभ	कष्ट	विघ्न	लाभ	बंधु	हानि	शत्रु	कार्य	भाग्य	भय	व्यय	रोग
फल	उन्नति	भय	चिन्ता	सुख	चिन्ता	कष्ट	भय	सिद्धि	उन्नति	कष्ट	कष्ट	कष्ट

ग्रहण के अनिष्ट फल के निवारण हेतु नव ग्रह सम्बन्धी औषधि स्नान तथा राशिस्वामी ग्रह का जप व दानादि शुभ व कल्याणप्रद होता है।

सूर्य ग्रहण को नंगी आंखों से अथवा ऐनक लगाकर देखने से आंखें खराब होने का भय रहता है। गहरे काले शीशे पर नीला कपड़ा लगाकर अथवा वैल्डिंग वाले शीशे द्वारा देखने से कोई हानि नहीं। अशुभ फल वाले राशिवालों को नहीं देखना चाहिए। केवल प्रभु का स्मरण व भजन करना चाहिए।

ग्रस्तोदय ग्रहण का विशेषफल—ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण रविवार को होने से गेहुं, चावल, मूंग, गुड़, चने, चौपाद, घृत, तैलादि के संग्रह द्वारा लाभ पहुंचे। प्रजा में अशान्ति एवं राष्ट्राध्यक्षों के मध्य तनाव एव युद्ध भय रहे। कहीं छत्र-भंग (राज्य परिवर्तित) एवं उपद्रवादि की आशंका रहे।

उदितः संग्रहः सूर्यश्चन्द्रमा यदिश्च भवेत्।
राजयुद्धं प्रजा नाशं सर्वग्रस्तोऽति दुखदः॥

भारत के विभिन्न प्रदेशों और मुख्य नगरों में ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण का प्रारंभ व मोक्षकाल इस प्रकार से होगा—

शहर	ग्रस्तोदय आरंभ	मोक्षकाल घं.मि.
अगरतला	५।३५	६।२३
अलीपुर	५।५१	६।४७
आसनसोल	५।५७	६।४९
अम्बाला	६।४१	६।४९
अमृतसर	६।४८	६।५०
अयोध्या	६।१७	६।४५
अजमेर	६।४७	६।५०
आगरा	६।२३	६।४६
अबोहर	६।५१	—
इम्फाल	५।३०	६।२०
इलाहाबाद	६।१८	६।४७
इन्दौर	६।४२	६।४८
उदयपुर	६।४५	६।४९
ऊना	६।४३	६।५०
उज्जैन	६।४२	६।४८
कानपुर	६।२४	६।४६
कांगड़ा	६।४३	६।५०
कुल्लू	६।३९	६।५०
कुरुक्षेत्र	६।२७	६।४९
कलकत्ता	५।५१	६।३८
करनाल	६।४३	६।४९
ग्वालियर	६।२३	६।४६
गुड़गांव	६।३९	६।४९
गाजियाबाद	६।३७	६।४९
चण्डीगढ़	६।४०	६.५०
जालन्धर	६।४८	६।५०
जम्मू	६।४९	६।५०
जबलपुर	६।२५	६।४३

शहर	ग्रस्तोदय आरंभ	मोक्षकाल घं.मि.
जयपुर	६।४३	६।५०
दिल्ली	६।३८	६।४९
देहरादून	६।२२	६।४८
नागपुर	६।२७	६।४७
पठानकोट	६।४५	६।५०
पानीपत	६।३९	६।५०
फरीदकोट	६।४८	६।५०
पटना	६।०६	६।४७
बम्बई	६।५२	अदृश्य
बनारस	६।१५	६।४५
फिरोजपुर	६।४९	६।५०
भोपाल	६।३५	६।४८
फाजिल्का	६।५२	अदृश्य
मण्डी	६।४०	६।५०
बंगलौर	६।३१	६।४६
मथुरा	६।३५	६।४८
मोगा	६।४७	६।५०
मद्रास	६।२१	६।४७
रोहतक	६।४१	६।५०
लुधियाना	६।४५	६।५०
लखनऊ	६।२२	६.४६
श्रीनगर	६।५०	६.५०
शिमला	६।४०	६।५०
सहारनपुर	६।३९	६।५०
सोलन	६।३९	६.५०
सोनीपत	६।३८	६।४९
हरिद्वार	६।३५	६।४७
होशियारपुर	६।४४	६।५०

उदितः संग्रहः सूर्यश्चन्द्र...
राजयुद्धं प्रजा नाशं सर्वग्रस्तोऽपि दुखदः ॥

जबलपुर	६ ।२५	६ ।४३
हरिद्वार	६ ।३५	६ ।४७
होशियारपुर	६ ।४४	६ ।५०

भारत में न दिखलाई देने वाले ग्रहणों का विवरण

१. खण्ड सूर्यग्रहण—(१७ अप्रैल, १९९६ ई०) यह ग्रहण वैशाख कृष्ण पक्ष की **अमावस** १७ अप्रैल बुधवार की रात्रि को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार रात २ बजकर ४३ मिनट से प्रारम्भ होकर ५ बजकर १९ मिनट तक रहेगा। यह खण्ड ग्रहण प्रशान्त महासागर से प्रारम्भ होकर जापान, आस्ट्रेलिया, आकलैण्ड, न्यूज़ीलैंड, मंगोलिया, ग्रीनलैण्ड, चीन के पूर्वी भाग एवं उत्तरी ध्रुव स्थानों में दिखाई देगा।

भारतवर्ष में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

२. खग्रास चन्द्रग्रहण—(२७ सितंबर १९९६ ई०) यह खग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को २७ सितंबर, शुक्रवार के दिन उ.भा. नक्षत्र एवं मीन के चन्द्रमा कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार प्रातः ७ बजकर २७ मिनट से शुरू होकर ९ बजकर ५५ मिनट तक रहेगा। प्रातः ८.२३ इसका मध्यकाल होगा। यह ग्रहण एटलान्टिक समुद्र, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया का पूर्वार्द्ध, न्यूज़ीलैंड, मैक्सीको, अलास्का आदि प्रदेशों में दिखाई देगा।

भारत में अधिकांशतः यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा। भारत के कुछ पश्चिमी क्षेत्रों में यह ग्रहण ग्रस्तास्त होते हुए ही दिखाई देगा। अतएव अधिकांशतः इसके स्नान दानादि के पर्व का माहात्म्य नहीं होगा।

३. खण्ड सूर्यग्रहण—(१२ अक्तूबर, १९९६ ई०) यह ग्रहण आश्विन कृष्ण की अमावस शनिवार को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार रात्रि ७ बजकर ४५ मिनट पर लगा होगा। यह खण्ड ग्रहण का मध्यकाल (भा. स्टै. टा) होगा। यह ग्रहण उत्तर-पश्चिमी अमरीका, अलास्का, प्रशान्त महासागर, आस्ट्रेलिया, अल्जीरिया, आदि देशों तथा कुछ यूरोपीय देशों में खण्ड सूर्यग्रहण रूप में दिखाई देगा। **भारतवर्ष में इस काल अमावस का अभाव एवं रात्रि काल होने से यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा।**

४. चन्द्रग्रहण—(२४ मार्च, १९९७ ई०) यह ग्रहण फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार, २४ मार्च को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार प्रातः ८ बजकर ४५ मिनट से शुरू होकर ११ बजकर ५२ मिनट तक रहेगा। **यह ग्रहण उ.फा. नक्षत्र में घटित होगा।** यह ग्रहण अफ्रीका, ब्रिटिश द्वीप समूह, आईसलैण्ड, ग्रीनलैण्ड के दक्षिणी किनारी सहित यूरोप, अंटार्कटिका, अटलांटिक एवं प्रशान्त महासागर के विभिन्न क्षेत्रों में दिखलाई देगा। **भारत में यह ग्रहण दृश्यमान नहीं होगा।**

भारत में पूर्ण सूर्यग्रहण

२२ जनवरी १८९८ ई०, १६ फरवरी १९८० ई०, २४ अक्तूबर १९९५, ११ अगस्त १९९९ ई०, ३ सितंबर २०८१, ३ जून २११४ ई०, १४ मई २१२४ ई०, ७ जून २०३५ ई० इत्यादि।

जब हमारी घड़ियां बारह (१२) बजाती हैं

विश्व के प्रत्येक देश का मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) अलग-अलग होता है। एक ही समय में अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम में कई घण्टों का अन्तर रहता है। **उदाहरणार्थ जब भारत में दोपहर के १२ बजे होते हैं,** तो इग्लैंड में प्रातः के साढ़े छः (6½) बजे होते हैं। एवं पाकिस्तान में प्रातः के साढ़े ग्यारह (11½) बजे होते हैं। ध्यान रहे, अमेरिका इंग्लैंड आदि कई देशों में अप्रैल के प्रथम रविवार से अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक सभी घड़ियों का समय एक घण्टा आगे बढ़ा दिया जाता है। जिससे उनके मानक समयान्तर (Difference of Standand Times) में एक घण्टे का अन्तर पड़ जाता है। नीचे भिन्न भिन्न कुछ देशों के स्टै० समय और भारत के स्टै० समय का अन्तर स्पष्ट करते हैं। अमेरिका, कैनेडा, रूस आदि अति विस्तृत देशों में एक से अधिक स्टै० टाईम का निर्धारण किया जाता है।

नाम देश	राजधानी	स्टै० समय	नाम देश	राजधानी	स्टै० समय
अमेरिका	वाशिंगटन	१.३० प्रातः	भारत	नई देहली	१२ दुपैहर
अफगानिस्तान	काबुल	११ ०० प्रातः	पाकिस्तान	इस्लामाबाद	११.३० दुपै.
आस्ट्रेलिया	कैनबरा	४.३० सायं	फ्रांस	पैरिस	७.३० प्रातः
आयरलैंड	डबलिन	६.३० प्रातः	स्विटजरलैंड	जिनेवा	७.३० प्रातः
इंडोनेशिया	जकार्ता	१.३० दुपै.	जापान	टोकियो	३.३० दुपै.
इंग्लैंड	लंदन	६.३० प्रातः	चीन	पीकिंग	२.३० दुपै.
इटली	रोम	७.३० प्रातः	रूस	मास्को	९.३० प्रातः
ईरान	तैहरान	१०.०० प्रातः	सऊदी अरब	मक्का	९.३० प्रातः
ओमान	मस्कट	१०.३० प्रातः	थाईलैंड	बैंकाक	१.३० दुपै.
कीनिया	नैरोबी	९.३० प्रातः	डैनमार्क	कोपनहैगल	७.३० प्रातः
कैनेडा	ओटावा	१.३० प्रातः	रूस	मास्को	९.३० प्रातः
कुवैत	कुवैत	९.३० प्रातः	सिंगापुर	सिंगापुर	२.०० दुपै.
बंगलादेश	ढाका	१२.३० दुपै.	मलेशिया	कुआलमपुर	२.०० दुपै.
द. कोरिया	सियोल	३.३० सायं	न्यूजीलैंड	वलिंगटन	६.३० शाम
ग्रीस	एथंस	८.३० प्रातः	जर्मनी	बर्लिन	७.३० प्रातः
जाँबिया	लुसाका	७.३० प्रातः	जार्डन	अमन	७.३० प्रातः
कतर	अरब	९.३० प्रातः	फिलिपाईन	मनीला	२.३० दुपै.
बर्मा	रंगून	१२.०० दुपै.	रोमानिया	बुखारेस्ट	८.३० प्रातः

प्राचीन काल से प्रतिष्ठित इस पंचांग दिवाकर (कृत पण्डित पन्ना लाल जालन्धर) का गणित दृक् सिद्ध निरयण पद्धति पर आधारित नवीन सूक्ष्म गणित द्वारा प्रणीत है। इसमें सर्वो-पयोगी व्रत, पर्व, त्यौहार ग्रहों के उदयास्तादि का निर्णय शास्त्र-सम्मत वाक्यों पर आधारित है। तिथि, नक्षत्र, योग एवं ग्रहों की गणित अखिल भारतीपयोगी तथा भारत सरकार द्वारा स्थापित पंचांग समिति द्वारा प्रमाणित है। इस वर्ष गत वर्षों की भांति ज्योतिष सम्बन्धी अनेक नवीन विषयों का समावेश किया गया है।

शनि-साढ़ेसति, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया विचार—विक्रमी संवत् २०५३

वि० सम्वत् २०५२ में १६ फरवरी, १९९६ ई० शुक्रवार को ३४।१० घट्यादि (रात्रि ८ बजकर ५२ मिनट) पर मकर राशिस्थ चन्द्रमा कालीन **मीन राशि** में प्रविष्ट हुआ है। विक्रमी सम्वत् २०५३ के दौरान शनि **मीन राशि में ही संचार** करेगा। ४ अप्रैल से शनि मीन में उदित होगा। १८ जुलाई, ९६ को वक्री होकर शनि इसी राशि में ३ दिसम्बर से मार्गी होगा।

ध्यान रहे, राश्यन्त में, अस्तंगत अथवा वक्री अवस्था में शनि **प्रायः विपरीत फल**—अर्थात् शुभ की अपेक्षा अशुभ एवं अशुभ की अपेक्षा शुभ फल प्रदान करता है।

मीन राशि में संचार-कालीन विभिन्न राशियों को **शनि साढ़सातिं, ढैय्या एवं** शनि पाया के परिवर्तनादि का फल इस प्रकार से होगा—

कुम्भ राशि—वालों को शनि की साढ़ेसति पाँव पर उतरती हुई अवस्था में—अर्थात् अन्तिम भाग में रहेगी।

मीन राशि—वालों को शनि-साढ़सति हृदय पर चढ़ती हुई, बीच की स्थिति में होगी।

मेष राशि वालों को शनि साढ़ेसति शिर पर चढ़ती अवस्था में—अर्थात् प्रारम्भिक चरण में होगी।

शनि साढ़सति के अरिष्ट प्रभाव के कारण घरेलू उलझनें व व्यवसाय में विघ्न बाधाएँ शत्रु भय आय कम व खर्च अधिक, परिवार में कलह-क्लेश, मानसिक तनाव, धन हानि, शरीर कष्ट आदि, अशुभ फल घटित होते हैं।

सन् ई० १९९६ के दौरान **सिंह राशि** एवं **धनु राशि** वालों को **शनि की ढैय्या** का अशुभ प्रभाव चलेगा। जिसके फलस्वरूप अवांछित स्थान में परिवर्तन, वृथा यात्रा, परिवार में मतान्तर या अनावश्यक विरोध, रोग व शत्रुभय तथा धन सम्बन्धी परेशानियों का सामना रहे।

मीन राशि राशिगत शनि का मेषादि राशियों पर प्रभाव (सुवर्णादि पाया फल सहित)

मेष राशि—शनि द्वादश भावस्थ होने से आर्थिक रुकावटें, शरीर कष्ट एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव रहे। परन्तु पाया ताम्र होने से गुजारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे।

वृष राशि—वालों को एकादश शनि शुभ होगा। इस राशि पर शनि का पाया भी चाँदी है। अतएव वर्ष में विविध सुख साधनों में वृद्धि होगी। परिवार में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा। परीक्षा में सफलता होगी। वर्ष के उत्तरार्ध में गुप्त चिन्ता हो।

मिथुन राशि—वालों को दशमस्थ शनि शुभ रहेगा। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क होगा। सोची हुई योजनाओं में सफलता होगी। परन्तु शनि का पाया लोहा होने से आर्थिक एवं परिवारिक परेशानियाँ भी पैदा होंगी।

कर्क राशि—वालों को नवम भावस्थ शनि होने से सुख कम व संघर्ष अधिक रहेगा। खर्च की अधिकता रहे। परन्तु शनि का पाया ताम्बा होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के अवसर भी मिलेंगे।

सिंह राशि—वालों को अष्टम शनि अशुभ। शनि **की ढैय्या** एवं **सुवर्ण पाया** होने से व्यवसाय में विघ्न व परिवारिक परेशानियाँ बढ़ेंगी। सोची योजनाओं में असफलताएँ मिलें। कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति हो।

कन्या राशि—वालों को सप्तम शनि पूज्य होगा। व्यर्थ की दौड़-धूप एवं अपव्यय अधिक रहेगा। मानसिक तनाव व उलझनें रहें। परन्तु **शनि का पाया** चाँदी होने से आकस्मिक धन लाभ व उन्नति के अवसर भी प्राप्त होंगे।

तुला राशि— वालों को शनि षष्ठस्थ शुभ होगा। प्रयासों में आंशिक सफलता होगी। स्त्री व संतान सुख की प्राप्ति। परन्तु शनि का पाया लोहा होने से स्वास्थ्य एवं सुख की कमी तथा खर्च की अधिकता तथा बनते कामों में विघ्न हो।

वृश्चिक राशि—वालों को शनि पंचमस्थ होने से पूज्य होगा। बनते कामों में रुकावटें पैदा हों, परन्तु इस राशि को शनि का पाया तांबा होने से कार्यों में आंशिक सफलता तथा आय के साधनों में वृद्धि हो।

धनु राशि—वालों को शनि चतुर्थस्थ होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। परिवार सम्बन्धी चिन्ता, शत्रुभय एवं आर्थिक तंगी का सामना रहे। पाया चान्दी होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मकर राशि—वालों को तृतीयस्थ शनि शुभ होगा। लाभोन्नति व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। परिवारिक सुख में भी वृद्धि हो। परन्तु शनि का पाया सुवर्ण होने से निकट बन्धुओं से वैर विरोध व धन हानि के संकेत हैं।

कुम्भ राशि—वालों को शनि द्वितीयस्थ होने से शनि पूज्य रहेगा। **शनि साढ़ेसति** का प्रभाव भी होगा। शनि का पाया लौह है। अत्यन्त कठिन संघर्ष के पश्चात् कार्यों में कुछ (आंशिक) सफलता मिलेगी। मानसिक तनाव व अशान्ति बढ़ेगी। धन लाभ सीमित रहे।

मीन राशि—वालों को जन्मस्थ शनि पूज्य होगा। परिवारिक सुख में विघ्न पैदा होंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से मानसिक तनाव, धन हानि व खर्च अधिक होंगे।

शनि के अनिष्ट फल—शनि के लिए शनि बीज मंत्र या वैदिक मंत्र का २३ हज़ार विधिपूर्वक जाप करना फिर दशमांश भाव का हवन करना चाहिए। **शनिवार के दिन** व्रत सप्तधान्यादि अनाज का दान, मछलियों को आटा डालना, उड़द, कृष्ण वस्त्र, तिल, तैल, काली गाय, जूते आदि का दान करना श्री हनुमान जी की उपासना व छाया पात्र करवाने से शनि के अनिष्ट फल का निवारण हो जाता है। इसके अतिरिक्त किसी शुभ मुहूर्त में नीलम धारण करना तथा शनि-यन्त्र से भी लाभ होता है।

हमारे कार्यालय में विधिपूर्वक तैयारशुदा शनि यंत्र मिलते हैं, जो आप १२५ दक्षिणा मनीआर्डर द्वारा भेजकर मंगवा सकते हैं। डाक खर्च १५ रुपये।

शनि का वैदिक मंत्र—"ॐ शन्नो देवी रभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिस्रवन्तु नः।" ॐ शनैश्चराय नमः।

गुरू का शुभाशुभ गोचर फल

गतवर्ष ७ दिसंबर, १९९५ ई० , गुरूवार को गुरु प्रातः साढ़े सात बजे धनु राशि में प्रविष्ट हुआ था। आगामी वर्ष २६ दिसंबर, १९९६ ई० तक गुरू धनु राशि में ही संचार करेगा। तदुपरान्त २७ दिसंबर, १९९६, शुक्रवार को प्रातः ७ बजकर १ मिनट पर मकर राशि में प्रवेश करेगा। तदनन्तर संवत् के अन्त (७ अप्रैल, १९९७ ई०) तक मकर राशि में ही संचार करेगा। धनु राशि एवं मकर राशि में संचार के समय मेषादि बारह राशियों पर शुभाशुभ फल निम्नलिखित रूप में होगा।

संवत् २०५३ में ५ मई से ४ सितंबर के मध्य गुरू वक्री तथा ८ जनवरी (९७) से २ फरवरी (९७) तक गुरु अस्त रहेगा। ध्यान रहें, वक्री, अस्त, अत्याचार एवं नीचादि अवस्था में गुरू कुछ राशियों को प्रायः अशुभ फल प्रदान करता है।

"वक्रातिचारे सुरराज मन्त्री यत्रागतस्तं तत्र अशुभफलं ददाति।"

धनु राशिगत गुरू का गोचर फल (२६ दिसं. १९९६ तक)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
स्थान	नवम्	अष्टम	सप्तम	षष्ट	पंचम	चतुर्थ	तृतीय	द्वितीय	प्रथम	द्वादश	एकादश	दशम
शुभ-अशुभ फल	भाग्य उन्नति आय के साधन बढ़े शत्रु नाश	शरीर कष्ट, लाभ कम, खर्च अधिक रहें।	लाभ मध्यम, खर्च अधिक तनाव रहे।	रोग व शत्रु भय खर्च अधिक	धन लाभ मध्यम विद्या व संतान मिले	उलझनें बढ़ें लाभ अल्प खर्च अधिक	लाभ कम खर्च अधिक पुरुषार्थ में वृद्धि	सुख-साधनों में वृद्धि लाभ एवं पदोन्नति	आराम कम, संघर्ष अधिक तनाव, फिजूल खर्चीं	आय कम व खर्च अधिक, घरेलू उलझनों से तनाव	धन लाभ व खुशी के साधनों में वृद्धि होगी	आराम कम संघर्ष अधिक, कलह कलेश से तनाव रहे।

मकर राशिगत गुरू का गोचरफल (२७ दिसं. १९९६ से मकर में)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
स्थान	दशम	नवम्	अष्टम	सप्तम	षष्ठ	पंचम	चतुर्थ	तृतीय	द्वितीय	प्रथम	द्वादश	एकादश
शुभ-अशुभ फल	आराम कम, संघर्ष अधिक, कलह कलेश से तनाव रहे	भाग्य उन्नति, आय के साधन बढ़ें, शत्रु नाश	शरीर कष्ट, लाभ कम, खर्च अधिक रहे	लाभ मध्यम, खर्च अधिक तनाव रहे	रोग व शत्रु भय रहे, खर्च अधिक	धन लाभ मध्यम, विद्या व संतान प्राप्ति	उलझनें बढ़ें, लाभ अल्प, खर्च अधिक	लाभ कम खर्च अधिक पुरुषार्थ में वृद्धि	सुख साधनों में वृद्धि लाभ एवं पदोन्नति	आराम कम संघर्ष अधिक तनाव फिजूल खर्ची	आय कम व खर्च अधिक घरेलू उलझनों से तनाव	धन लाभ व खुशी के साधनों में वृद्धि होगी

गुरू के अशुभ—फल की शान्ति के लिए गुरूवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं आदि का दान इत्यादि तथा गुरू के बीज मन्त्र अथवा गुरू गायत्री मंत्र का जाप १९००० की संख्या में विधिपूर्वक करना चाहिए। अथ बीज मन्त्र—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।"

गुरू गायत्री मन्त्र—

ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

राहु व केतु का शुभाशुभ गोचर फल

गतवर्ष ६ दिसंबर, १९९५ ई० बुधवार को प्रातः ९ बजकर ८ मिनट पर राहु ने कन्या राशि में तथा केतु ने मीन राशि में प्रवेश किया था। आगामी सम्पूर्ण वर्ष अर्थात् २० मार्च (९६) से ७ अप्रैल, १९९७ तक दोनों छाया ग्रह इन्हीं राशियों में संचरित होते रहेंगे।

कन्या राशिस्थ राहु व मीन राशिस्थ केतु का गोचर फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
राहु शुभाशुभ फल	आय के साधनों में वृद्धि, पदोन्नति हो	आय कम खर्च अधिक व्यवसाय में विघ्न बाधाएं	खर्च अधिक रहे, कलह आदि से मन में तनाव व अशांति	पराक्रम में वृद्धि, धन लाभ अच्छा रहे	धन हानि, किसी मित्र द्वारा धोखा मिले	व्यवसाय में विघ्न बाधाएं, तनाव व उलझनें	वृथा भ्रमण शरीर कष्ट खर्च की अधिकता रहे	प्रयासों में सफलता आय के साधनों में वृद्धि हो	लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त शुभ समाचार मिले	घरेलू व कारोबार सम्बन्धी उलझनें हों, धन लाभ कम	फिजूल खर्ची अधिक, शरीर कष्ट, चिंता हो	शरीर कष्ट चोटादि का भय अपव्यय हो
केतु शुभाशुभ फल	रोग-शोक व शत्रु भय फिजूल खर्ची हो	सुख साधनों में वृद्धि, धन लाभ व उन्नति	बिगड़े कामों में सुधार कोई मंगल कार्य हो	सवारी से चोटादि भय, कार्यों में विघ्न	रोग व शत्रु भय धन-हानि	स्त्री व परिवार बारे चिन्ता विद्या में विघ्न	निर्वाह योग्य धन लाभ कार्यों में सफलता	व्यर्थ की दौड़धूप अधिक उलझनें बढ़ें	गृह-कलह व धन की तंगी के कारण अशांति	आशाओं में सफलता बिगड़े कामों में सुधार	कोशिश करने पर भी लाभ कम व संघर्ष अधिक रहे।	रोग भय कार्यों में विघ्न बाधाएं व तनाव

ध्यान रहे, राहु-केतु जिन राशि वालों को शुभ फली होते हैं, उन्हें व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ, मुकद्दमें में जीत, लाटरी निकलना, प्रिय-बंधु मिलाप, भाग्योन्नति आदि सुख प्राप्त होते हैं। जिस राशिवालों को अशुभफली हो, उन्हें व्यर्थ की दौड़धूप, धन का अपव्यय, गृहकलह, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, शत्रुभय, तनावादि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

शेष पृष्ठ 105 पर देखें।

सर्वार्थ सिद्ध, अमृतसिद्ध, रविपुष्य, त्रिपुष्करादि योगा : वि. संवत् २०५३

किसी महत्वपूर्ण कार्यविशेष हेतु शीघ्रता में कोई सुनिश्चित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो तो आगे दिए गए **सर्वार्थ सिद्ध योग, अमृत सिद्ध योग, रविपुष्य, गुरुपुष्य, द्विपुष्करादि** योगों में सम्बद्ध शुभ कार्यों का आरम्भ करके अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि वैदिक विवाह, मुण्डन, गृहराम्भ, गृह प्रवेश, वधु प्रवेश आदि शुभ कार्यों में निर्धारित मुहूर्तों को ही यथासम्भव ग्रहण करना चाहिए।

सर्वार्थ सिद्ध योग—समझौता (Contract) करना, किसी विशिष्ट परीक्षा, कम्पीटीशन (Competition), प्रतिष्ठित पद, विभाग, चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, भूमि, वस्त्राभूषणादि का सौदा करना, नवीन कार्यारम्भ करना आदि विशेष रूप में प्रशस्त माने जाते हैं।

ध्यान रहे मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र के समय गृह प्रवेश, शनिवार रोहिणी नक्षत्र कालीन यात्रा में तथा गुरुवार को पुष्य नक्षत्र कालीन विवाह में विशेष रूप से वर्जित माने गये हैं—अर्थात् सम्बद्ध वारों एवं नक्षत्रों में सर्वार्थ सिद्ध योग होने पर भी गृह प्रवेश, यात्रा, विवाहादि शुभ कार्य विशेषतया न करें।

अमृतसिद्ध योग—प्रेम विवाह करना, यात्रा करना, किसी विशेष देवता का सकाम अनुष्ठान आरम्भ करना तथा किसी प्रकार के शुभ कार्यारम्भ हेतु।

रविपुष्य योग—यंत्र, मंत्र, तंत्रादि के प्रयोग आरम्भ करना, जड़ी-बूटी द्वारा विशेष औषधि तैयार करना, रोग शांति हेतु औषधि प्रयोग एवं तांत्रिक प्रयोगों के लिए।

गुरु पुष्य योग—किसी विशेष धार्मिक अनुष्ठान में, गुरु द्वारा मंत्र आदि दीक्षा एवं विद्या ग्रहण करना, व्यापारिक क्षेत्र में धन, भूमि, जायदाद आदि के लेन देन, विशिष्ट विद्या ग्रहण आदि में प्रशस्त है।

शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र का समावेश हो जाने से **उत्पात योग** होता है। यह सर्वप्रकार के शुभ कार्यों में वर्जित माना गया है। संवत २०५३ के सर्वार्थ सिद्ध योगों का प्रारम्भ व समाप्ति काल दिया जा रहा है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.
२१	मार्च	सूर्योदय	२२	मार्च	११।३५	७	जुलाई	सूर्योदय	७	जुलाई	१४।४४	२९	सितबर	सूर्योदय	२९	सितबर	१६।११	२६	दिसंबर	सूर्योदय	२७	दिसबर	सूर्योदय
२५	मार्च	सूर्योदय	२६	मार्च	सूर्योदय	९	जुलाई	सूर्योदय	९	जुलाई	१५।४०	१	अक्तूबर	सूर्योदय	३	अक्तूबर	सूर्योदय	१	जन. (९७)	१५।४२	२२	जन. (९७)	सूर्योदय
२८	मार्च	सूर्योदय	२९	मार्च	सूर्योदय	१०	जुलाई	१७।०२	११	जुलाई	सूर्योदय	४	अक्तूबर	२२।१२	५	अक्तूबर	सूर्योदय	४	जनवरी	सूर्योदय	४	जनवरी	२०।०५
३	अप्रैल	१०।०१	४	अप्रैल	सूर्योदय	१६	जुलाई	५।१८	१६	जुलाई	सूर्योदय	६	अक्तूबर	सूर्योदय	६	अक्तूबर	२७।५९	६	जनववी	सूर्योदय	६	जनवरी	१८।५७
६	अप्रैल	सूर्योदय	६	अप्रैल	९।४७	२१	जुलाई	सूर्योदय	२२	जुलाई	सूर्योदय	८	अक्तूबर	सूर्योदय	८	अक्तूबर	६।५५	१०	जनवरी	९।३८	११	जनवरी	६।४७
८	अप्रैल	सूर्योदय	८	अप्रैल	७।५१	२५	जुलाई	२१।५७	२६	जुलाई	२६।४०	१६	अक्तूबर	सूर्योदय	१६	अक्तूबर	१६।१०	१४	जनवरी	सूर्योदय	१४	जनववी	२२।५७
१२	अप्रैल	सूर्योदय	१२	अप्रैल	२४।४१	२८	जुलाई	सूर्योदय	२८	जुलाई	१६।१५	२०	अक्तूबर	सूर्योदय	२०	अक्तूबर	११।५३	१६	जनवरी	सूर्योदय	१६	जनवरी	२२।०६
१६	अप्रैल	सूर्योदय	१६	अप्रैल	२०।३७	४	अगस्त	२२।०१	५	अगस्त	सूर्योदय	२१	अक्तूबर	सूर्योदय	२१	अक्तूबर	१०।३६	१८	जनवरी	२३।४३	१९	जनवरी	सूर्योदय
१८	अप्रैल	सूर्योदय	१८	अप्रैल	२०।३९	६	अगस्त	२३।११	८	अगस्त	सूर्योदय	२५	अक्तूबर	४।१०	२६	अक्तूबर	सूर्योदय	२०	जनवरी	सूर्योदय	२१	जनवरी	३।००
२०	अप्रैल	२२।४२	२१	अप्रैल	सूर्योदय	१२	अगस्त	११।१४	१३	अगस्त	सूर्योदय	२८	अक्तूबर	२६।१०	२९	अक्तूबर	सूर्योदय	२३	जनवरी	सूर्योदय	२४	जनवरी	सूर्योदय
२२	अप्रैल	सूर्योदय	२२	अप्रैल	२६।५६	१३	अगस्त	१४।१६	१४	अगस्त	सूर्योदय	३०	अक्तूबर	सूर्योदय	३१	अक्तूबर	४।२४	२९	जनवरी	सूर्योदय	२९	जनवरी	२५।१२
२५	अप्रैल	सूर्योदय	२६	अप्रैल	सूर्योदय	१८	अगस्त	सूर्योदय	१८	अगस्त	२७।७	१	नवंबर	६।२८	२	नवंबर	सूर्योदय	७	फरवरी	सूर्योदय	७	फरवरी	१८।१२
१	मई	सूर्योदय	१	मई	१९।२१	२२	अगस्त	५।१४	२३	अगस्त	४।४३	३	नवबर	सूर्योदय	३	नवबर	११।५७	११	फरवरी	सूर्योदय	११	फरवरी	७।२०
१०	मई	सूर्योदय	१०	मई	६।०३	२५	अगस्त	२३।२६	२६	अगस्त	सूर्योदय	९	नवबर	२३।५९	१२	नवबर	सूर्योदय	१५	फरवरी	सूर्योदय	१६	फरवरी	६।५८
१५	मई	३।३४	१५	मई	सूर्योदय	२६	अगस्त	२०।४८	२७	अगस्त	सूर्योदय	२१	नवंबर	११।२२	२३	नवं.	सूर्योदय	१७	फरवरी	सूर्योदय	१७	फरवरी	८।४५
१८	मई	६।३७	१९	मई	सूर्योदय	१	सितबर	७।०४	२	सितंबर	सूर्योदय	२५	नवं.	१०।५३	२६	नवं.	सूर्योदय	२०	फरवरी	सूर्योदय	२०	फरवरी	१६।३९
२०	मई	सूर्योदय	२०	मई	१०।४६	३	सितबर	६।५२	५	सितंबर	सूर्योदय	२७	नवंबर	सूर्योदय	२७	नवंबर	१३।०१	२३	फरवरी	२५।४५	२४	फरवरी	सूर्योदय
२३	मई	सूर्योदय	२३	मई	१९।१३	८	सितबर	१७।४१	९	सितंबर	२०।३८	२८	नवबर	१४।५४	२९	नवबर	१७।२४	२६	फरवरी	सूर्योदय	२६	फरवरी	७।१२
२६	मई	२६।४९	२७	मई	सूर्योदय	१०	सितबर	सूर्योदय	१०	सितंबर	२३।३३	७	दिसबर	१०।०४	८	दिसबर	सूर्योदय	९	मार्च	२०।३४	१०	मार्च	सूर्योदय
२	जून	२२।०२	३	जून	सूर्योदय	१५	सितबर	सूर्योदय	१५	सितंबर	८।३०	९	दिसबर	९।३५	१०	दिसंबर	सूर्योदय	११	मार्च	१५।५५	१२	मार्च	सूर्योदय
९	जून	८।४३	१०	जून	सूर्योदय	१८	सितंबर	१०।५२	१९	सितबर	१०।५८	१३	दिसबर	२४।०४	१४	दिसंबर	२१।५९	१५	मार्च	सूर्योदय	१५	मार्च	१४।०१
११	जून	९।१५	१२	जून	सूर्योदय	२२	सितबर	७।२३	२३	सितंबर	५।२८	१७	दिसंबर	१७।३६	१८	दिसंबर	सूर्योदय	२३	मार्च	८।०५	२४	मार्च	सूर्योदय
[illegible]	जून	सूर्योदय	[illegible]	जून	१५।१६	२३	सितबर	सूर्योदय	२४	सितंबर	३।१९	१९	दिसंबर	१६।३५	२०	दिसंबर	१६।४१	२८	मार्च	१७।५१	२९	मार्च	सूर्योदय
२३	जून	१०।३२	२४	जून	सूर्योदय	२७	सितबर	१८।४६	२८	सितबर	सूर्योदय	२३	दिसबर	सूर्योदय	२४	दिसबर	सूर्योदय	३०	मार्च	१८।१८	३१	मार्च	सूर्योदय
३०	जून	८।२७	१	जुलाई	सूर्योदय													६	अप्रैल	७।१५	७	अप्रैल	४।५१

अमृतसिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.
२५	मार्च	१६ ।०३	२६	मार्च	सूर्योदय
२८	मार्च	२४ ।२५	२९	मार्च	सूर्योदय
२०	अप्रैल	२२ ।८२	२१	अप्रैल	सूर्योदय
२२	अप्रैल	सूर्योदय	२२	अप्रैल	२६ ।५६
२५	अप्रैल	१८ ।३१	२६	अप्रैल	सूर्योदय
१५	मई	३ ।३४	१५	मई	सूर्योदय
१८	मई	६ ।३७	१९	मई	सूर्योदय
२०	मई	सूर्योदय	२०	मई	१० ।४६
२३	मई	सूर्योदय	२३	मई	१९ ।१३
११	जून	९ ।१५	१२	जून	सूर्योदय
१५	जून	सूर्योदय	१५	जून	१५ ।१६
९	जुलाई	सूर्योदय	९	जुलाई	१५ ।४०
२१	जुलाई	१९ ।११	२२	जुलाई	सूर्योदय
१८	अगस्त	सूर्योदय	१८	अगस्त	२७ ।०७
२२	अगस्त	५ ।१४	२२	अगस्त	सूर्योदय
१५	सितंबर	सूर्योदय	१५	सितंबर	८ ।३०
१८	सितंबर	१० ।५२	१९	सितंबर	सूर्योदय
२७	सितंबर	१८ ।४६	२८	सितंबर	सूर्योदय
१६	अक्तूबर	सूर्योदय	१६	अक्तूबर	१६ ।१०
२५	अक्तूबर	सूर्योदय	२६	अक्तूबर	३ ।०२
२२	नवंबर	सूर्योदय	२२	नवंबर	१० ।४८
२३	दिसंबर	१९ ।२६	२४	दिसंबर	सूर्योदय
२६	दिसंबर	२५ ।०३	२७	दिसंबर	सूर्योदय
१८	जन. (९७)	२३ ।४३	१९	जन (९७)	सूर्योदय
२०	जनवरी	सूर्योदय	२०	जनवरी	२७ ।००
२३	जनवरी	७ ।४०	२४	जनवरी	सूर्योदय
१२	फरवरी	५ ।४९	१२	फरवरी	सूर्योदय
१५	फरवरी	सूर्योदय	१६	फरवरी	६ ।५८
१७	फरवरी	सूर्योदय	१७	फरवरी	८ ।४५
२०	फरवरी	सूर्योदय	२०	फरवरी	१६ ।३९
११	मार्च	१५ ।५५	१२	मार्च	सूर्योदय
१५	मार्च	सूर्योदय	१५	मार्च	१४ ।०१

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्करादि योग १९९५-९६ ई०

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तु खरीदने के लिए विशेष मुहूर्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ जैसे ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, सुवर्ण-चांदी के आभूषण, कार-ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि किसी जीव की हानि हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। सम्बन्धित नक्षत्र व उसके स्वामी की पूजा एवं दानादि कर देने से अनिष्ट के भय का निवारण हो सकता है।

नीचे १९९५-९६ ईसवी में आने वाले द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग दिए गए हैं।

द्विपुष्कर योग १९९६-९७ ई०

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.
२१	जनवरी	२१ ।५२	२२	जनवरी	सूर्योदय
१६	मार्च	१८ ।०५	१६	मार्च	२३ ।३४
२६	मार्च	सूर्योदय	२६	मार्च	१८ ।३३
१९	मई	८ ।३१	२०	मई	सूर्योदय
२३	जुलाई	सूर्योदय	२३	जुलाई	११ ।१७
२४	दिसंबर	सूर्योदय	२४	सितंबर	१७ ।१७
१७	नवंबर	१५ ।४३	१७	नवंबर	१९ ।४४
२६	नवंबर	११ ।४२	२७	नवंबर	सूर्योदय
७	दिसंबर	सूर्योदय	७	दिसंबर	१० ।०४
१९	जन. (९७)	२५ ।१०	२०	जन. (९७)	सूर्योदय
१५	मार्च	१४ ।०१	१५	मार्च	१७ ।१०
२५	मार्च	१३ ।०८	२६	मार्च	सूर्योदय

त्रिपुष्कर योग १९९६-९७ ई०

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.
२	जन.	सूर्योदय	२	जन.	१५ ।०९
११	फरवरी	२१ ।५८	११	फरवरी	२६ ।४०
२०	फरवरी	सूर्योदय	२०	फरवरी	२३ ।४३
२४	फरवरी	२७ ।१३	२४	फर.	२२ ।३२
३०	अप्रैल	सूर्योदय	३०	अप्रैल	१९ ।२९
१८	जून	सूर्योदय	१८	जून	११ ।१२
२३	जून	१० ।३२	२३	जून	२२ ।१३
२	जुलाई	५ ।३९	२	जुला.	२५ ।५०
६	जुला.	१४ ।१६	६	जुला.	१५ ।१७
१४	सितंबर	सूर्योदय	१४	सित.	६ ।४७
२	नवंबर	सूर्योदय	२	नव.	९ ।०४
२१	दिसं.	१७ ।२६	२१	दिस.	२३ ।५९
३१	दिस.	१६ ।०४	१	जन. ९७	सूर्योदय
१८	फर.	११ ।०६	१९	फर.	८ ।२२
१	मार्च	सूर्योदय	१	मार्च	१२ ।१३

रवि पुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घ. मि.	ता.	मास	घ. मि.
७	जन. ९६	सूर्योदय	८	फरवरी	६ ।०४
४	फर.	सूर्योदय	४	फर.	१२ ।०३
८	सितं.	१७ ।४१	९	सितं.	सूर्योदय
६	अक्तूबर	सूर्योदय	७	अक्तू.	३ ।५९
३	नवंबर	सूर्योदय	३	नवं.	११ ।५७

गुरु पुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता.	मास	घं. मि.	ता.	मास	घं. मि.
२५	अप्रैल	८ ।३१	२६	अप्रैल	सूर्योदय
२३	मई	सूर्योदय	२३	मई	१९ ।१३
२५	दिसंबर	२५ ।०३	२६	दिसं.	सूर्योदय
२३	जन. (९७)	७ ।४०	२४	जन. (९७)	सूर्योदय

उपसम्पादक—पं. विवेक शर्मा

गुर्राफल

आगामी वर्षा हिजरी सन् (१४९७) का आरम्भ १९ मई रविवार द्वितीया तिथि को रोहिणी नक्षत्र में होगा। इस प्रकार इस्लामी मतानुसार आगामी वर्ष का बादशाह (राजा) सूर्य होगा इसके फलस्वरूप आगामी वर्ष ईराक, इरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मलेशिया, मिस्र, बंगलादेश, सोमालिया, बोस्निया आदि इस्लामी देशों एवं भारत, श्रीलंका, नेपाल, बर्मा, हांगकांग आदि राष्ट्रों में राजनैतिक परिवर्तन घटित होंगे। विभिन्न देश अत्याधुनिक हथियारों की दौड़ में आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। इन देशों में सयासी टकराव, विरोध, उपद्रव, राजनैतिक हत्याएं व विस्फोटक घटनाएं होंगी सूर्य-चन्द्र पर शनि की दृष्टि होने से पाक, बंगलादेश आदि इस्लामी देशों में मज़हबी तनाव व हिंसक घटनाएं अधिक हों, अतिशय गर्मी, बाढ़ादि प्रकोप से जान व माल की हानि हो। सीमाओं पर फौजी नकलो हरकत बढ़ेगी तथा युद्धोन्माद बढ़ेगा।

शास्त्र ज्ञान

विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः ॥१५५॥

ज्ञान से ब्राह्मणों का, बल से क्षत्रियों का, धन-धान्य से वैश्यों का और जन्म से शूद्रों का बड़प्पन होता है। केवल सिर के बाल पक जाने से ही कोई वृद्ध नहीं होता है। जिसने वेद-वेदांग को पढ़ा है वह युवा होते हुए भी वृद्ध होता है यह देवताओं ने कहा। —मनुस्मृति

उपसम्पादक—पं. विवेक शर्मा

सायन संक्रांति प्रवेश एवं पुण्यकाल २०५३ वि.

मेषादि सायन संक्रांति प्रवेश का पुण्यकाल भी निरयण संक्रान्ति, सूर्य चन्द्रादि ग्रहणकाल, अक्षया तीज, दीपावली, भौमवासरी अमावस, महावारुणी पर्व, शिवरात्रि आदि पर्वों की भांति मन्त्र आदि अनुष्ठान तथा सिद्धि आदि कार्यों के लिए सायन संक्रांति मुहूर्त विशेष रूप से ग्रहणीय एवं पुण्यप्रद माने जाते हैं। यथा—

तथाऽयनांशा खरसाहताश्च स्पष्टार्क गत्या विहता दिनाद्यैः।
मेषादितः प्राक चलसंक्रमाः स्युर्दिने जापादौ बहुपुण्य दास्ते ॥ —मु. चिंतामणि

सायन संक्रान्ति संवत् २०५३ वि.

प्रवेश दिन	राशि	(घं. मिं.)	पुण्यकाल (घण्टा मिनट)
२० जनवरी	कुंभ	२४।१४	सायं ६।१४ से २१ की प्रातः ६।१४ तक
१९ फरवरी	मीन	१४।१८	प्रातः ८।१८ से रात्रि ८।१८ तक
२० मार्च	मेष	१३।३०	प्रातः ७।३० से रात्रि ८।३० तक
१९ अप्रैल	वृष	२४।५४	सायं ६।५४ से २० की प्रातः ६।५४ तक
२० मई	मिथुन	२४।२४	सायं ६।२४ से २१ की प्रातः ६।२४ तक
२१ जून	कर्क	८।३०	२० की रात्रि २।३० से दुपै. २।३० तक
२२ जुलाई	सिंह	१९।२४	दुपै. १।२४ से रात्रि २५।२४ तक
२२ अगस्त	कन्या	२६।२४	रात्रि ८।२४ से २३ की प्रातः ८।२४ तक
२२ सितंबर	तुला	२३।४२	सायं ५।४२ से २३ की प्रातः ५।४२ तक
२३ अक्तूबर	वृश्चिक	८।४५	२२ की रात्रि २।४५ से दुपै. २।४५ तक
२१ नवंबर	धनु.	२९।५४	रात्रि ११।५४ से २२ की दुपै. ११।५४ तक
२१ दिसंबर	मकर	१९।१५	दुपै. १।१५ से रात्रि २५।१५ तक
१९ जन. (१७)	कुंभ	२९।४२	रात्रि ११।४२ से २० की दुपै. ११।४२ तक
१८ फरवरी	मीन	२०।०८	दुपै. २।०८ से रात्रि २६।०८ तक
२० मार्च	मेष	१९।१८	दुपै. १।१८ से रात्रि २५।१८ तक

यन्त्र-मन्त्र-तंत्रों द्वारा इष्ट सिद्धि

मंत्र तीर्थे द्विजे दैवज्ञे भेषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धि र्भवति तादृशी ॥

अर्थात् मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, वैद्य एवं गुरुजन के सम्बन्ध में जिस व्यक्ति की जैसी भावना होती है, उसे तदनुसार ही फल प्राप्ति होती है। प्राचीनकाल में जो क्लिष्ट कार्य भौतिक साधनों द्वारा सफल नहीं होता था, उसे हमारे सिद्ध मनीषी मंत्रों, तन्त्र अथवा यन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लिया करते थे। श्रद्धापूर्वक मन्त्र यन्त्रादि का अनुष्ठान करने से ही लाभ होता है। श्रद्धा के बिना किया हुआ तप, हवन एवं जो भी कर्म किया जाता है, वह निष्फली होती है। मन्त्र-यन्त्रों के लिए शुभ मुहूर्त भारतीय शास्त्रों ने सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को ही लाभदायक बताया है। अनुष्ठान के मध्य भोग, विलास, माँस-मदिरादि से परहेज़ रखें।

श्री लक्ष्मी-विंशांक यन्त्र (बीसा यंत्र)

ईशान कोण — पूर्व — अग्नि कोण

५	१२	३
१३	१ ६ / ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा / ९ ४	७
२ (वायव्य कोण)	८	१० (नैऋत्य कोण)

दक्षिण

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है। श्री लक्ष्मी का यन्त्र होने से नवरात्रों में अथवा अन्य शुभ (द्विपुष्कर, गुरुपुष्य, रविपुष्य योगों) मुहूर्तों में ताम्रपत्र या भोजपत्र पर अष्टगन्ध या लाल चन्दन से रचना कर उसे लाल आसन पर प्रतिष्ठित करें और लाल चन्दन, लाल पुष्प, धूप दीपादि से उसकी पूजा करके मन्त्र का जाप ५१ हज़ार से सवा लाख तक करें। सामान्यतः प्रचलित मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्री महालक्ष्मै नमः"

इस मन्त्र के लिए मूँगा की माला श्रेष्ठ मानी गई है। ध्यान रहे, किसी भी यन्त्र की पूजा के समय, यदि उपलब्ध हो तो उस देवता की मूर्ति यन्त्र समीप स्थापित कर लेना चाहिए। दैनिक पूजा में भी इस मंत्र की ३ या ५ माला का जाप किया जाए, तो बहुत लाभ होता है। ध्यान रहे, इस यन्त्र की साधना में साधक हो यथासम्भव केसरिया रंग की वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

०८	०१	३४	३९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

जिस स्त्री की कोई सन्तान न हो, उसे रविवार को सर्पाक्षी के फूलों के पत्तों से युक्त डाली लाकर एक वर्ण की गाय के दूध में कुंवारी कन्या के हाथ से पिसवा कर एक कर ले। ऋतुमति होने पर चौथे से छठे दिन तक प्रतिदिन एक-एक तोला की मात्रा में इसका सेवन करें। सेवन से पूर्व निम्न मंत्र को १०८ बार जाप करें—

ॐ नमो भगवते देवाय।
ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

तदन्तर, इस मन्त्र के साथ ही भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यह यन्त्र लिखकर तावीज़ में भरकर गले या कमर में बाँधने से बाँझ स्त्री को पुत्र प्राप्ति होती है।

अर्थात् मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, वै... की जैसी भावना होती है, उसे तदनुसार ही फल प्राप्ति होती है। प्राचीनकाल में जो क्लिष्ट कार्य भौतिक साधनों द्वारा सफल नहीं होता था, उसे हमारे सिद्ध मनीषी मंत्रों, तन्त्र अथवा यन्त्रों

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

तदन्तर, इस मन्त्र के साथ ही भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यह यन्त्र लिखकर तावीज़ में भरकर गले या कमर में बाँधने से बाँझ स्त्री को पुत्र प्राप्ति होती है।

व्यापार बढ़ाने का यन्त्र

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही से, अनार की कलम द्वारा अङ्कित करना चाहिए। दीपावली की रात्रि में यह साधना सर्वाधिक लाभकारी होती है। इसके पश्चात् धूप-दीप से पूजा करके "ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं० महालक्ष्मै नमः" इस मन्त्र की ११ माला जप करें। जप के समय यन्त्र के सम्मुख घी का अखण्ड-दीपक जलता रहे। बाद में इस यन्त्र को दुकान या प्रतिष्ठान में स्थापित कर दें और प्रतिदिन धूप-दीपादि से पूजन करें। इससे व्यापार में वृद्धि होगी और लक्ष्मी कृपा होगी।

विघ्न निवारक यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

रविवार, अमृत सिद्धि/रविपुष्य/गुरुपुष्य योग में प्रातःकाल स्नान करके अनार की कलम और हल्दी की स्याही से भोजपत्र पर इस यन्त्र की रचना करनी चाहिए। इस बत्तीसा यन्त्र की रचना कर धूप-दीपादि से पूजा करें और इस मन्त्र का ११०० बार जप करें—'ह्रीं हंस' ॥ जप पूरा होने पर १०८ आहुतियों से हवन करके पाँच बालकों को भोजन कराएँ। तदनन्तर यन्त्र को किसी ताबीज़ या कपड़े में रखकर दाहिनी भुजा पर बाँध लें। उद्भुत प्रभाव शक्ति वाला यह बत्तीसा, यन्त्र सब प्रकार के विघ्नों का शमन करता है।

विद्या प्राप्ति यन्त्र

७३	११	२	८
७	३	७८	७६
९०	७४	९	१
४	६	८५	७९

किसी शुभ मुहूर्त में द्वितीया तिथि को चाँदी अथवा फूल (गिलट) की थाली में केशर की स्याही और अनार की कलम से इस यन्त्र को लिखें। यन्त्र बन जाने पर धूप-दीप आदि से उसकी पूजा करें तथा उसी थाली में भोजन करें। भोजन परोसते समय यन्त्र धोया न जाकर बना रहना चाहिए। भोजन पश्चात् थाली धोयें। इस प्रकार १४ दिन तक नियमित रूप से थाली में यन्त्र की रचना, पूजा और उसी में भोजन करते रहें। इस प्रयोग से चिन्तन और स्मरण शक्ति बढ़ती है। मनोबल में वृद्धि होकर विद्या-बुद्धि का विकास होता है।

मंत्र—"ॐ भूर्भुवः स्वः ....प्रचोदयात् ॥" (गायत्री मंत्र)

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र (सम्पुट युक्त)
(मृत्युतुल्य कठिन रोगों में तथा आयु वृद्धिकारक अचूक मंत्र)

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः, ॐ सः जूं ह्रौं ॐ ॥

(मंत्र महोदधि एवं कल्याण अंङ्क से उद्धृत)

यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए। जप समाप्ति पर शिवजी की स्तुति (शिव सहस्रनाम) भी करनी चाहिए।

यह रोग निवारण का अचूक विधान माना जाता है। अनेक महापुरुषों द्वारा अनुभूत है कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करके अभीष्ट लाभ की सिद्धि कर सकता है।

मनपसन्द पति प्राप्ति के लिए मंत्र

ॐ कात्यायनी महामाये महायोगिनी अधीश्वरी,
नन्दगोपसुते देवि पति मे कुरु ते नमः ॥

जिस लड़की के विवाह कार्य में बार-बार विघ्न पड़ते हों, उसको इस मन्त्र का अनुष्ठान पौष मास की संक्रान्ति से आरंभ करना चाहिए अथवा अन्य शुभ मूहूर्त जैसे गुरुपुष्य योग, रविपुष्य योग, अक्षया तीज, दीपावली, बसन्त आदि शुभ योगों में आरम्भ करें। प्रतिदिन तीन माला करें। सवा लाख जप का विधान है। हविष्यान्न का भोजन करें। मनोवाँछित लाभ होगा।

मोहनी (सम्मोहन) मन्त्र

"ॐ क्लीं क्लीं ऊँ ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (...........अभीष्ट व्यक्ति का नाम............) क्लीं क्लीं मोहनम् कुरु कुरु स्वाहा।"

किसी शुभ मुहूर्त में, पीले आसन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख स्थिति में श्री दुर्गा माता की विधिवत पूजा उपरान्त इस मन्त्र का जप प्रारम्भ करें। पीले वस्त्र ही धारण करें। पूजा से पूर्व ताम्र कलश (गड़वी) स्थापित कर उस पर आम के पत्ते तथा गंगाजल मिलाकर भरना चाहिए। मन्त्र की जप संख्या १२ लाख है और इसे २० दिनों में पूरा करना पड़ता है। २१वें दिन हवन और दान करने से साधक को सम्मोहन शक्ति प्राप्त होती है और वह अभीष्ट (स्त्री/पुरुष) को सम्मोहन कर सकता है।

सब कामनाएं पूर्ण हों

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

इसका सवा लाख जप करने से सब कामनाएँ पूर्ण होती है। जप विधि **'श्री दुर्गासप्तमी'** में पढ़े।

सन्तान प्राप्ति के लिए मंत्र

"ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।"

जिस दम्पत्ति को संतान न होती हो, उन्हें इस मन्त्र का एक लाख जाप करना चाहिए। कम से कम एक माला प्रतिदिन करें। पृथ्वी पर सोयें, झूठ, शराब, कपट से बचें। सात्विक भोजन करें। बाल न कटवाएँ। एक लाख जप होने पर दशमांश जप का हवन तिल, शहदादि द्वारा करके ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान एवं भोजन करवाएँ।

मुकद्दमा जीतने का मन्त्र

ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु पक्ष/जज का नाम) जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।"

इस मन्त्र को सिद्ध करके, विवाद के समय २१ बार मन में बोलने पर व्यक्ति को मुकद्दमे/विवाद में जीत अवश्य मिले।

पति वशीकरण मन्त्र

"ॐ नमो महायक्षिणी ममपतिं वश्यं आनय कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र को १००८ बार जाप कर कपूर, चन्दन, तुलसीपत्र को गोदुग्ध में घिसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति प्रसन्न रहता है।

मनपसन्द पत्नी के लिए मन्त्र

पत्नीं मनोरमां देहि मनो वृत्तानुसारिणीम्।
तारणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥

इक्कीस दिन तक प्रात: स्नानोपरांत भगवती देवी अथवा लक्ष्मी की प्रतिमा के आगे धूप दीपादि जलाकर लाल पुष्प चढ़ावें तथा नित्य १०८ बार मन्त्र का पाठ करने से मनपसन्द कन्या से विवाह हो जाता है।

कर्णपिशाचनी सिद्धि मन्त्र

ॐ नमो देवि भगवते त्रिलोचनं त्रिपुरं महादवी,
कर्णपिशाचनी मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा॥

किसी पवित्र स्थान पर एक लाख मंत्र का जाप ११ से १४ दिन के भीतर करें। पूजन के समय ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा सत्यभाषण करते हुए भूमि पर सोवें। स्वयं पकाया हुआ भोजन ही ग्रहण करें। साधनाकाल में एक स्थान पर ही निवास करें। जपोपरान्त दशमांश पाठ का हवन करे। कर्णपिशाचिनी सिद्ध हो जाएगी।

घर से रूठकर गये हुए को बुलाने का मन्त्र

"ॐ नमो आली कालिका, काकुडी का, अमुखा/अमुखी आकर्षय—आकर्षय, बड़े वेग आकर्षय, जिण वाटे जाई सोई वाट खीलूं, ॐ श्री ह्रीं आकर्षय-आकर्षय स्वाहा।"

पताशे या शक्कर से इस मन्त्र की दस हज़ार आहुति देने पर अभीष्ट पुरुष या पशु आकर्षित होकर (यदि जीवित है) तो घर लौट आता है।

"अथ नवग्रह स्तोत्रम"

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।
प्रियंगु कालिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥
नरनारिनृपाणां च भवेद् दुः स्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूतो न संशयः॥

इस नवग्रह स्तोत का प्रतिदिन प्रात: काल एवं सन्ध्या काल में पाठ करने से ग्रह, नक्षत्र, चोर व अग्नि आदि से उत्पन्न होने वाली सब प्रकार की बाधाओं एवं कष्टों से शान्ति मिलती है।

इक्कीस दिन तक प्रातः स्नानोपरांत भगवती देवी अथवा लक्ष्मी की प्रतिमा के आगे धूप दीपादि जलाकर लाल पुष्प चढ़ावें तथा नित्य १०८ बार मंत्र का पाठ करने से मनपसंद ... से विवाह हो जाता है।

... काल एवं सन्ध्या काल में पाठ करने से ग्रह, नक्षत्र, चोर व अग्नि आदि से उत्पन्न होने वाली सब प्रकार की बाधाओं एवं कष्टों से शान्ति मिलती है।

वि० सम्वत् २०५३ मध्ये राजा-मंत्री आदि का फल

नया शुभ विक्रमी संवत २०५३ बुधवार को तदनुसार २० मार्च प्रविष्टे ७ चैत्र से प्रारम्भ होगा। इसके मध्य अन्य विशिष्ट संवतों का क्रम इस प्रकार से होगा—

सृष्टि से गत वर्ष १९५५८,८५०९७ तन्मध्ये भुक्त **कलियुग** ५०९७ एवं भोग्य कालि ४२६९०७ वर्ष **श्रीकृष्ण** जन्म संवत् ५२३१-३२ महावीर निर्वाण संवत् २५२२-२३ **श्री बुद्ध** संवत् २५३९-४० काश्मीर का सप्तर्षि संवत् ५०७२, **शाकी** १९१८ **हिजरी** (मुस्लिम) संवत् १४१६-१७, फसली १४०३-०४, **नानकशाही** ५२७-२८ सन् ईस्वी १९९६-९७ एवं भारत **स्वतन्त्र दिवस** १५ अगस्त को ५०वां वर्ष प्रारम्भ होगा। **पण्डित पन्नालाल** गणितकर्ता प्रपौत्र पं० देवी दयालु ज्योतिषाचार्येण प्रणीत इयं पचांग दिवाकर बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि संवत्सरों के मध्य २३वां विरोधी नाम का सम्वत्सर रहेगा।

विरोधी नाम नए सम्वत्सर का फल—

विरोधी संवत्सरे भूपाः परस्पर विरोधिनः। भूरि भूतियुता धूमि भूरिवारि समायुता॥
शीतलादि विकारःस्यात् बालानां तस्कराजनाः। अल्प क्षीरास्तथा गावो विरोधश्च विरोधिनि॥
जायते मानुषे कष्टं विरोधिनि न संशयः॥

अर्थात् विरोधी नामक सम्वत् के आगमन पर प्रशासकों में परस्पर वैर-विरोध अधिक रहे। पृथ्वी पर प्रचुरमात्रा में धन-धान्य एवं सुख-साधनों की वृद्धि हो। जल आपूर्ति के साधनों में भी विस्तार हो।

इस संवत्सर का स्वामी रुद्र देवता है। संवत् में बालकों को शीतला आदि विकार अधिक हों। चोरी ठगी की घटनाएं बहुत अधिक हों। गायों में दूध की कमी रहे और **मनुष्यों में परस्पर वैर-विरोध की भावना अधिक रहे। सामान्य जन अनेक प्रकार के कष्टों से पीड़ित हों॥**

चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ, इन तीन महीनों में अनाजादि के भाव तेज रहेंगे। आषाढ़ और श्रावण में वर्षा अधिक रहेगी। भाद्रपद में खण्ड वृष्टि, कहीं अग्निभय और प्राकृतिक उत्पाद होंगे।

कहीं राष्ट्राध्यक्षों में टकराव एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे। आश्विन-कार्तिक में जनोपयोगी सब पदार्थ बहुत महंगे होंगे। कहीं सूखा या क्लिष्ट रोग का भय होगा। मार्ग और पौषादि महीनों में सामान्य पदार्थों एवं अनाजादि के मूल्यों में तेजी से प्रजा पीड़ित होगी।

सम्वत् का निवास—सर्व वस्तु समर्घ स्यात् प्रचुरा वृष्टि मालाकार गृहेऽब्दके"—संवत (समय) का वास "माली" के घर में होने से अनाज एवं अन्य वस्तुओं के भाव-तेज़ होंगे। वर्षा अत्यधिक होगी। यद्यपि धान्य, रूई-पटसन, गन्ना, तृण, शाकादि की पैदावार बढ़ेगी।

संवत (समय) का वाहन गीदड़ (सियाण) होने से **केन्द्र दक्षिणोत्तर प्रान्तों** में कहीं राज्य **परिवर्तन**, विग्रह, तोड़फोड़ एवं हिंसा की घटनाएं होंगी।

रोहिणी का वास समुद्र पर होने के कारण समुद्रतट पर वर्षा अतिशय मात्रा में होगी। समुद्रे तु **महावृष्टि** ॥ पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम वर्षा होगी।

समय के विश्वा ८ है जिसका फल अशुभ एवं अनिष्टकर होता है।

नव मेघों में वायु नामक मेघ का फल—वायु नामक मेघ होने से, उस वर्ष उपयोगी वर्षा की कमी रहे। धान्य की फसल की हानि हो। अनेक जनोपयोगी वस्तुओं की कमी से लोग पीड़ित होंगे।

द्वादश नागों में वृष नामक नाग राजा हो, तो उस वर्ष में असमय वर्षा हो, गेहूं आदि अनाज की पैदावार कम हो तथा टिड्डी दल, सूखा, तीव्र आन्धि, ओलावृष्टि, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों द्वारा जन, धन एवं कृषि हानि का भय होगा। चतुर्मेघों में आवर्त्त नाम मेघ होने से **खण्ड वृष्टि** अर्थात् कहीं कम, कहीं अधिक वर्षा होने के योग बनते हैं।

अधिक मास आषाढ़ का फल—

द्वयाषाढे व्यथा किंचित् खण्डवृष्टिः क्वचित्पुनः ॥

कहीं अल्प वृष्टि एवं कहीं अत्यधिक वर्षा के कारण उपयोगी वस्तुओं की कमी एवं महंगाई में वृद्धि होगी। लोगों में क्लिष्ट व पेचीदा रोगों की वृद्धि हो। शासकों में परस्पर विरोध अधिक रहेगा। प्रजा में असंतोष व अशान्ति रहे।

(१) वर्ष के राजा बुध का फल—

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्य विवाहं मंगलम्।
प्रकुर्वते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धन धान्य संकुलम्॥

वर्ष का राजा बुध हो, तो पृथ्वी पर वर्षा अधिक हो, घर घर में विवाहादि मंगल कार्य एवं उत्सव हों। सामान्य लोगों की स्वास्थ्य वृद्धि हों एवं उनमें दान दया की भावना में वृद्धि हो तथा लोगों में धन-धान्य के बाहुल्य से समृद्धि बढ़ेगी।

(२) मन्त्री शनि का फल—

रवि सुते यदि मंत्रिसमागते पार्थिवा विनय संरहिता बहुदुखदा।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्॥

अर्थात्—वर्ष का मंत्री शनि हो तो प्रशासकों के अत्यधिक कठोर व्यवहार के कारण प्रजा में दुख एवं असंतोष व्याप्त रहे। कुछ भागों में वर्षा का अभाव (या कमी) हो। साधारण मनुष्यों में धन एवं सुख साधनों की कमी एवं उनमें असंतोष की भावना व्याप्त रहे।

(३) सस्येश मंगल का फल—

प्रथम धान्यपतौ धरणीसुते गज-तुरंग-खरोष्ट्र-गवामपि।
प्रभवदो बहु रोग—घनो जलं न सम सौख्यकरं तुष-धान्यहृत्॥

सस्येश (चौमासीय फसलों के स्वामी) मंगल होने से हाथी, घोड़े, गाय, बैल, भैंस, गधे एवं ऊंटादि पशुओं में अधिक रोग फैलने का भय हो। अनुकूल वर्षा की कमी रहे। जौ, गेहूं, चावल आदि तुष धान्य की फसलों को हानि पहुंचे।

(४) धान्येश सूर्य का फल—

पश्चात् धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा नहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम्॥

धान्यपति (शीतकालीन फसलों के स्वामी) सूर्य होने से शीतकालीन पैदा होने वाली फसलें जैसे मूंग, मोठ आदि दालें, मक्की, बाजरा, गन्ना, कपास, धान्यादि महंगे भाव एवं कमी होगी। राज्याध्यक्षों में परस्पर टकराव एवं वैमनस्य हो। अत्यधिक ऊष्णता के कारण ज्वरादि प्रकोप अधिक हों। जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी।

(५) मेघेश शुक्र का फल—

भृगुसुतो जलदस्यपति र्यदा जलमुचो जलदादि विशोभनाः ।
धन निधान युता द्विजपालक नृपतयो जनता सुखदायकाः ॥

मेघ (वर्षादि) का स्वामी शुक्र हो तो उस वर्ष भूमि पर लाभकारी समुचित (अच्छी) वर्षा होगी। विद्वान लोगों की प्रतिष्ठा करने वाले शासक समृद्ध, सम्पन्न एवं प्रभावशाली होंगे। प्रजा में सुख के साधनों में वृद्धि होगी।

(६) रसेश बुध का फल—रसों को स्वामी बुध हो तो उस वर्ष में वर्षा प्रचुर हो तथा गेहूं, चावल, चने, मक्की, धान्य गन्ना, सरसों आदि की पैदावार अच्छी होगी। देश में सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

(७) नीरसेश चन्द्र का फल—

नीरसेश (धातुओं) का स्वामी चन्द है। सफेद रंग की धातुएं जैसे मोती, चाँदी, स्टील, प्लाटिनम तथा रूई, कपास, दूध, पनीर, वस्त्रादि तेज़ भाव होंगी।

(८) फलेश शुक्र का फल—फल फूलादि का स्वामी शुक्र होने से वर्ष में कोमल घास शाक फल फूलादि के पेड़ पौधे अधिक लगेंगे। प्रशासकों को विशेष भोग्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। पण्डित लोग वेद पाठ परायण एवं धर्म-कर्मादि कृत्यों में प्रवृत्त होंगे।

(९) धनेश चन्द्र का फल—

धनेश (कोशपति) चन्द्रमा हो तो उस वर्ष विविध वस्तुओं के क्रय-विक्रय से देश में धन का प्रसार अधिक हो। वस्त्रों, चावलों, सुगन्धित पदार्थों, घी, तेलादि रसायनों के व्यापार में विशेष लाभ रहे। अवसरवादिता के कारण प्रशासक लाभान्वित हों।

(१०) दुर्गेश शुक्र का फल—

दुर्ग (सेना) का स्वामी शुक्र होने से विशिष्ट धनी वर्ग तथा प्रशासकों को सुख के साधनों की (विशेष रूप में) प्राप्ति हो। देश-विदेश के व्यापार में वृद्धि हो। शासकों में पारस्परिक सम्बन्ध बढ़ें। क्षेत्रीय दूरियां कम होंगी।

वर्ष के चार स्तम्भ विचार—

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग लगभग १२ प्रतिशत है जो कि अत्यल्प है। फलस्वरूप कुछ प्रदेशों में अनुकूल एवं पर्याप्त वर्षा न होने के संकेत हैं। असामयिक वर्षा का प्रभाव फसलों पर भी होगा। कहीं पेय-जल की कमी हो, और कहीं भूमि के भीतर का जल-स्तर अपने सामान्य स्तर से नीचे हो जायेगा।

(२) तृण-स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग लगभग ३१ प्रतिशत % होने से तृण, घास फूस, हरा चारा की पैदावार पर्याप्त मात्रा में नहीं होगी। कहीं मवेशी पालकों को पशुचारे के सम्बन्ध में अत्यन्त महंगाई व कठिनाई का सामना रहे।

(३) वायु स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का अभाव है, अतएव वायु स्तम्भ टूट गया है। फलस्वरूप कहीं विपरीत वायु वेग (आंधियों) एवं प्रतिकूल मेघ संचार में खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। कहीं अति वृष्टि, कहीं अनावृष्टि होगी।

(४) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रति. को पुनर्वसु नक्षत्र का स्पर्श केवल २८.४ प्रतिशत % है। गेहूं धान्य, मक्की, कपासादि की पैदावार में कमी होगी। मोटे अनाजों के संग्रह से व्यापारी लाभान्वित रहेंगे।

वर्षादि के विश्वा मान संवत् २०५३

वर्षा ५	वृद्धि १५	आलस्य ३	मैथुन १५	पुण्य १५	जन्म ५	अग्निशांत ७	तोता १५	वृष्टि ११
धान्य ९	क्षय १५	उद्यम ११	रसोत्पत्ति ९	व्याधि ११	उपद्रव ९	उद्पिज ३	मूषक ११	अनावृष्टि ९
तृण १७	विग्रह ११	शान्ति ७	निष्पत्ति १३	व्यानाश ५	स्वास्थ्य १३	जरायुज ३	सोना १७	संवत् ८
शीत ९	क्षुधा ३	क्रोध १३	उत्साह ११	आचार १	चोरभय १	अण्डज ३	तांबा ११	
ऊष्ण ११	तृषा ७	दंभ ५	उग्र १७	अनाचार ३	चोरनाश ९	स्वेदज ३	स्वचक्र ५	
वायु १३	निद्रा १७	लोभ ३	पाप १३	मृत्यु १५	अग्नि ५	टिड्डी १७	परचक्र ३	

आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली का फल

विक्रमी संवत् २०५३ में सूर्य देव आर्द्रा नक्षत्र में अधिक आषाढ़ शुक्ल पंचमी तिथि, शुक्रवार प्रविष्टे ८ आषाढ़ (२१ जून) को आश्लेषा नक्षत्र कालीन एवं ३५ ।५३ घट्यादि (रात्रि ७ ।४८ घं. मि) पर धनु लग्न में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्रा प्रवेश इष्ट ३५ ।५३ (२१ जून)

धनु लग्न गत गुरू की स्थिति शुभ है तथा उसकी पंचम, सप्तम व नवम भावों पर शुभ दृष्टियां होने से अनेक प्रदेशों में समुचित एवं व्यापक वर्षा होने के संकेत हैं। अनाज, धान्यादि की पैदावार में वृद्धि तथा विद्वान् लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धनु लग्न में आर्द्रा प्रवेश का फल इस प्रकार से लिखा है—

धनुर्लग्ने तु उत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ॥ इत्यादि

—अर्थात् उत्तर, पूर्व में सुख हो, मध्य प्रदेशों प्रबल वर्षा दुर्भिक्षादि तथा रोगादि का भय हो। उत्तर, पश्चिम में ५ मास में घृत तैलादि तेज भाव हों, चौपायों को रोग पीड़ादि से कष्ट हो। आर्द्रा प्रवेश कालीन मघा नक्षत्र एवं वज्र योग होने से तथा चन्द्रमा पर मंगल की प्रतिरोध दृष्टि पड़ने से कहीं उपयोगी वर्षा की कमी तथा कहीं कंद मूल, फल फूल व अनाज आदि की कमी होगी कहीं खड़ी फसलों को प्रतिकूल वर्षा (बाढ़ादि) के कारण भारी हानि होने के संकेत मिलते हैं। यथा—

रौद्रं विशति चेत् भानुः पितृ में चन्द्र संयुते।
अल्प वृष्टि सदा ज्ञेया कंद मूलादिकाल्पता॥

वज्र योग होने से कहीं शासकों के मध्य कलह एवं टकराव की स्थिति बने।

वज्राभिदानयोगे चेत्तपनो रौद्रगो भवेत्।
तर्हि भूपालकलहः क्वचित् स्याज्जलवर्षणम्॥

है। गेहूं धान्य, मक्की, कपासादि की पैदावार में कमी होगी। मोटे अनाजों के संग्रह से व्यापारी लाभान्वित रहेंगे।

...मध्य कलह एवं टकराव की स्थिति बने।
वज्राभिदानयोग चेत्तपनो रौद्रगो भवेत्।
तर्हि भूपालकलहः क्वचित् स्याज्जलवर्षणम्॥

व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा तेज़ी के हालात सन् ई० १९९६

व्यापारी वर्ग के लाभार्थ गोचर ग्रहों की संचार गत्यानुसार विभिन्न समय पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) सम्बन्धी भावों के उतार-चढ़ाव का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है। ध्यान रहे, व्यापारियों को अपनी ग्रह स्थिति (शुभाशुभ दशाऽन्तरदशा ज्ञान) एवं अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार विभिन्न जिन्सों का क्रय-विक्रय करना उचित होगा। जिससे समुचित लाभ प्राप्त हो सके और हानि की आशंका कम हो जाए। हमारे ज्योतिष कार्यालय से दो मास का **"आर्थिक भविष्य"** बनवाने की फीस ३५१ रुपये होगी। पर **भविष्यफल** के निर्माण हेतु अपने जन्म का सही समय, स्थान, सन्, मास इत्यादि का पूर्ण ब्यौरा तथा दक्षिणा (फीस) पेशगी बज़रिया मनीआर्डर द्वारा भेजनी अनिवार्य होगी। वी. पी. पी. नहीं भेजी जाती। **पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी,** अड्डा होशियारपुर जालन्धर फोन : 57959.

जनवरी—ता. १ जन. को बुध व यूरेनस के मध्य अंशात्मक युति होने से गेहूं, चना, खल-बिनौले, रूई, चान्दी, सोना, ताम्बा, गुड़, चीनी, घृत एवं रिफाईड तेल, अलसी व अनादि में तेज़ी होगी। ता. २ मंगलवार से गुरू धनु राशि में उदित होने से रूई एवं सर्व प्रकार के धान्य, चावल, मूंगफली की पैदावार में वृद्धि होकर मूल्यों में घटा-बढ़ी होगी। ता. ४ को शुक्र धनिष्ठा में तथा ५ को बुध श्रवण में आने से सोना चाँदी रुई, कपास, चना, चावल, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा बाजरा, उड़द, गुड़, अलसी, सरसों, खल-बिनौला, पशुचारा के भावों में तेजी होगी। ता. १० को बुध मकर में वक्री हो रहा है, इसी दिन शुक्र कुंभ राशि में प्रविष्ट होगा। जिससे खाण्ड गुड़ शक्कर, खल-बिनौला, घी, तिल, तैल, सरसों, अरण्डी में तेजी होगी। रूई व चाँदी में घटाबढ़ी होगी। गेहूं, चने, धान्यादि अनाजों में मन्दी का वातावरण होगा। **करियाना मार्कीट की स्थिति अनिश्चित होगी। सोच समझकर सौदा करें॥** ता. ११ को सूर्य उषा में आकर गेहूं, चने, चीनी, चावल, तिल, उड़द, खल, बिनौले, मूंग, मसूर, तेल, सरसों, अलसी, गुड़, लोहा, तांबा एवं चाँदी में तेजी करेगा। ता. १२ से बुध वक्री अवस्था में पश्चिम में अस्त होने से चाँदी में तेज़ी तथा रूई कपासादि में घटाबढ़ी होगी ता. १३ को **श्रवण के मंगल में वायदा मार्कीट की स्थिति अचानक बदल सकती है।** सावधानी बरतें।

ता. १४ जन. रविवार को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा। माघ संक्रांति १५ मुहूर्ति है। फलस्वरूप घी, तिल, तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, गुड़, रूई, खल बिनौले, कपास एवं चाँदी, सोना, ताम्बा आदि धातुओं में तेज़ी का रूख बनेगा। १५ को शुक्र शतभिषा में आने से करियाना वस्तुओं में तेज़ी की लाईन बनी रहेगी। ता. २० को **शनिवासरी अमावस** होने से खल बिनौले, लाख व अनाज के भावों में तेज़ी तथा रूई, कपास में घटा बढ़ी होगी। ता. २२ को **वक्री बुध धन राशि** में आने से रूई, कपास व चाँदी के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी के योग हैं। ता. २४ को सूर्य श्रवण में आने से तथा बुध पूर्वोदयी होने से गेहूं, जौ, चना, गुड़, लाल मिर्च, घी, बिनौले, ताम्बा, सोना चान्दी, लौंग, इलायची, सुपारी, पटसन में तेज़ी की चमक बनेगी। ता. २६ को शुक्र पूभा में रूई तेल, मुंगफली, खल व पशुचारा में तेज़ी करेगा। ता. ३० को बुध मार्गी होने से गेहूं, चने, चावल, मक्की, तैलादि में तेज़ी तथा रुई में घटा बढ़ी होगी। इसी दिन धनिष्ठा के मंगल में चाँदी, सोना, तांबा, पीतल आदि सर्व प्रकार की धातुओं में तेज़ी होगी।

फरवरी—मासारंभ में २ फर. को कुम्भ राशि में **शुक्र-शनि** के मध्य **अंशात्मक** युति होने से गुड़, घी, सर्वप्रकार के तिलहन, चीनी, चावल, गेहूं आदि अनाज तेज़ भाव होंगे। ता. ३ को शुक्र मीन राशि में केतु के साथ योग करेगा। गेहूं, खल, बिनौले, रूई, कपास व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। माघ मास में पाँच शनि एवं पाँच रविवार होने से गेहूं, चावल, चने एवं करियाना मार्कीट में तेज़ी का माहौल रहेगा। ता. ४ को बुध उषा में तथा ता. ५ को गुरू पूषा में आने से सोना, चान्दी, रूई व मक्की में उतार-चढ़ाव पैदा होंगे। ता. ६. को सूर्य धनिष्ठा एवं शुक्र उभा. में आने से रूई, कपास, गेहूं, चावल, चाँदी, सोना, पीतल के भावों में तेज़ी हो तथा ता. ७ को मंगल कुंभ राशि में आने से गेहूँ, चने, धान्यादि सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। रूई व चाँदी में घटा-बढ़ी होगी थोक मार्कीट का रूख तेजी में चलेगा।

भूसुतः कुम्भ राशिस्थे सर्वधान्य महर्घता।
एवं प्रजायते हि अर्घं लोकमध्ये निर्भयता"

ता. ८ से बुध मकर राशि में सोना, चाँदी, ताम्बा आदि धातुओं में तेज़ीकारक होगा। घी, गुड़, शक्कर चीनी, सर्व प्रकार की दालें, पशुचारा (खलादि) तेज भाव रहेंगी।

ता. १३ को सूर्य कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर व मंगल के साथ योग करेगा। जिससे सर्व प्रकार की करियाना वस्तुएं तेज़ी पकड़ेंगी, विशेषकर मूंग, उड़द, काली मिर्च, जीरा, लौंग, इलायची, मटर, लाख, जूटादि में तेज़ी बनेगी। ता. १६ से मंगल शतभिषा एवं शनि मीन राशि में आने से गुड़, चीनी, चावल, पशुचारा, चौपाय, सर्व प्रकार के तेल, चाँदी, लौहादि धातुओं में तेज़ी होगी। ता. १९ से सूर्य शतभिषा में आने से सरसों, तिल, तैल, रूई, हल्दी, पटसनादि के भावों में मज़बूती आएगी। चाँदी व सोना में घटा-बढ़ी होगी। ता. २२ **से गुरू पूषा के** द्वितीय चरण में आने से गेहूँ, मक्का, धान्य, जौ, बाजरादि में उतार-चढ़ाव रहेगा। हाजिर एवं वायदा मार्कीट की स्थिति कुछ डांवाडोल रहेगी। ता. २८ से बुध धनिष्ठा में आकर चावल, चाँदी, रूई, पशुचारा (खल-बिनौले आदि) चौपाय व चाँदी में तेज़ी कारक होगा। तिल तैलादि में भी **मज़बूती बनेगी।** ता. २९ को शुक्र **मेष राशि में प्रविष्ट** होगा तथा इसी दिन **शनि मीन में अस्त होने** से गेहूं चने, चावल, रूई, कपास तथा सोयाबीन, सूरजमुखी अलसी आदि के भावों में तेज़ी के झटके लगेंगे। चाँदी, सोना, पीतल में भी चमक पैदा होगी। मार्कीट का रूख देखकर सौदा करें अथवा ताज़ा मशवरा हासिल करें।

मार्च— मार्च के प्रथम सप्ताह गेहूं, चने, चावल, मक्की, जौं, रूई, कपास व चाँदी के भावों में तेजी का रूख होगा। परन्तु शेयरों के भावों में मन्दी का वातावरण बनेगा। ता. ३ को बुध **कुंभ राशि में सूर्य व मंगल** के साथ सम्बन्ध करेगा। घी, सरसों, तिल व तैल, चीनी, गुड़ के भावों में तेज़ी तथा अलसी, रूई कपासादि में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। ता. ४/५ मार्च को सूर्य मंगल की अंश-कलात्मक युति भी सर्व प्रकार की करियाना मार्कीट में तेज़ी की सूचक है। ता. ७ को बुद्ध शतभिषा में आने से रूई, कपास, घी, चावल, चीनी सरसों व चाँदी में तेज़ी बनी रहेगी। ता. ९ से ११ के दरम्यान तेज़ी की खामोशी बनी रहेगी। पुनः ता. १२ को शुक्र भरणी में उड़द, अलसी, तिल, तेल, घी, तिलहन सरसों में कुछ मन्दीकारक होगा परन्तु ता. १३ बुधास्त होने से गेहूं, चने, चावल व रूई में मामूली घटा बढ़ी के बाद तेज़ी होगी।

ता. १४ **को चैत्र संक्रांति** वीरवार को होने से उड़द, मटर मूंग, काली मिर्च, हल्दी, सोना, रूई व चीनी में तेजी के साथ अलसी, तैल, गेहूं चने, उड़द व मूंग व लकड़ी के भावों में तेज़ी होगी। ता. १५ को शनि उभा. में आने से लकड़ी, लोहा, तांबा, पीतल, जिस्तादि धातुओं के भाव तेज़ होंगे। ता. १६ से **मंगल मीन राशि** में प्रविष्ट होकर सूर्य, शनि एवं केतु के साथ सम्बन्ध करेगा। मीन राशि पर **चार ग्रही**

योग बनना तथा १८ ता. को सूर्य शनि की अंशात्मक युति होने से सर्व प्रकार की धातुएँ तथा करियाना मार्कीट में सप्ताहान्त तक तेज़ी बनी रहेगी। राजनीतिक अस्थिरता होगी। ता. १९ को मंगलवासरी अमावस होने से रूई, कपास, चाँदी एवं अलसी के भावों में घटा-बढ़ी होगी।

ता. २१ को मंगल उभा. में तथा बुध मीन राशि में आने से सोना, चांदी, ताम्बा, रूई, गेहूं चना आदि में तेज़ी तथा २२ को बुध उभा में आने से तथा शनि-मंगल की युति से खल, बिनौले, मूंगफली, तिल, तैल, सूरजमुखी के भावों में तेज़ी के झटके लगेंगे।

ता. २५ को शुक्र कृतिका में आने से गेहूँ जौ, चावल आदि के भावों में मज़बूती बनेगी। २८ को शुक्र वृष में तथा २९ को बुध रेवती में आकर चाँदी, गुड़, चीनी, रूई, कपास, तिल, तैल, घी आदि में घटा-बढ़ी तथा गेहूं, लाल चंदन, मजीठ, ताम्बा आदि के भावो एवं वायदा व्यापार में तेज़ी करेगा।

रूख देखकर सौदा करें अथवा ताजा मशवरा हासिल करें।

अप्रैल—मासारंभ में मीन राशि पर अभी पंचग्रही योग बना हुआ है। प्रथम सप्ताह के दौरान गेहूं, चने, तिल, तैल, चावल धान्यादि के भावों में मज़बूती बनी रहेगी। ता. ३/४ अप्रै. की मध्य रात्रि को **ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण** लगने से मार्कीट में तेज़ी का बोलबाला बना रहेगा। सोना, ताम्बा, पीतल, चांदी, लोहा आदि धातुओं में विशेष तेज़ी का रूख होगा। ता. ४ को शनि का **मीन राशि में** उदय होने से भी सर्व प्रकार की धातुओं एवं वायदा बाज़ार में तेज़ी होगी। ता. ५ बुध मेष में तथा मंगल रेवती में आने से गेहूँ, जौं, अलसी, सरसों, तिल, तैल व रूई में घटा-बढ़ी के बाद पुनः तेजी बनेगी। ता. ६ को सूर्य-राहु की अंशात्मक युति तेजीकारक होगी। किसी विशिष्ट प्रधान नेता के लिए अरिष्टकर होगी। ता. ७ को शुक्र रोहिणी में आकर अलसी, सरसों, घी, तेल, गुड़, चीनी, जौं व सोने में मन्दी का माहौल करेगा। ता. ९ को बुध पश्चिम दिशा से उदित होगा जिससे चावल, धान्य, गेहूं, तेल, बिनौले, खल, अरण्डी, मूंगफली एवं रूई व चाँदी में तेज़ी बनेगी। ता. ११ को बुध भरणी नक्षत्र में आने से भी गेहूँ, चावल आदि अनाज में तेज़ी होगी। ता. १३ को **सूर्य अश्विनी नक्ष. एवं मेष** राशि में आने से अलसी, सरसों, जूट, तिल, तैल, गुड़ चीनी, मूंगफली, खल एवं बारदाना तथा तांबा, पीतल, सोना, चाँदी आदि धातुओं के भावों में तेज़ी आएगी।

ता. १५ को मंगल -केतु में अंशात्मक युति सोना, लकड़ी, पटसन, गुड़, गेहूँ, पीतल, तांबा, केशरादि लाल वर्ण की वस्तुओं मे तेज़कारक होगी। ता. २० को बुध कृतिका में आने से रूई, कपास, चीनी व चावल के भाव तेज़ तथा चाँदी में घटा-बढ़ी होगी। २३ ता. बुध वृष में तथा शुक्र मृग में आने से गेहूँ, जौं, चने, मूंग, ज्वार के भावों में मन्दी का रूझान हो परन्तु ता. २४ को मंगल अश्विनी (१) मेष में प्रविष्ट होने से रूई, कपास, चाँदी एवं चने, ज्वार मंसूर, गेहूं, जूटादि में पुनः मज़बूती बनेगी। ता. २७ से सूर्य भरणी में आने से पीतल, सोना, चाँदी, ताँबा, गेहूँ, तेल मूंगफली, सोयाबीन तथा चावल, जौं, चने, मंसूर हल्दी, सरसों, खल, बिनौले के भाव तेज़ होंगे।

मई—मास के पूर्वार्द्ध भाग में सूर्य-मंगल पर गुरू की शुभ पांचवीं दृष्टि रहेगी। साथ ही वैशाख मास में पाँच गुरूवार व ५ शुक्र पड़ना अनाजादि की पैदावार में विशेष वृद्धि होने के संकेत हैं। ता. ४ को बुध वृष में वक्री होगा। इसी दिन शुक्र मिथुन में प्रविष्ट होने से गेहूँ, जौ, चने, खाण्ड, तिल, तैल, गुडादि पदार्थ घटा बढ़ी के बाद तेज़ भाव होंगे। ता. ५ से **गुरू धनु** राशि में वक्री होने से गेहूँ, चने, गुड़, घी में मन्दी का रूझान होगा। ता. ६ से बुध वक्री अवस्था में अस्त होने से अनाज व रूई में घटाबढ़ी परंतु सोना, चाँदी, ताम्बा में, तेज़ी बनेगी ता. १० को सूर्य कृतिका में आने से सोना, चाँदी, पीतल, सीसा, स्टील, अलसी, गेहूँ, चना, चीनी, कपास आदि में पुनः तेज़ी की लाईन बनेगी। ता. १२ को मंगल भरणी में आने से उड़द, तिल, तैल, कपास, गुड़, चावल, गेहूँ, धान्यादि में तेज़ी होगी।

ता. १४ को **ज्येष्ठ संक्रांति** मंगलवार को ३० महूर्ति होने से रूई खल बिनौला, मूंगफली, लकड़ी, तिल, तैल, अलसी, मूंग, उड़द, मसूर, मकई, जूट, पटसन, पनीर आदि दुग्ध पदार्थ, गेहूँ, चने, चीनी, मजीठ आदि पदार्थ तथा जिस्त, पीतल, ताम्रादि धातुएँ तेज़ भाव होंगी। ता. १६ को वक्री बुध मेष में आने से तिल, तेल, रूई व चाँदी के भावों में घटा-बढ़ी होगी परन्तु खलादि पशुचारा, चावल, गेहूं में बढ़ौतरी होगी। ता. १८ शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रूई, मूंगफली, गेहूं, चावल, चान्दी में तेज़ी होगी। ता. २० को **शुक्र मिथुन** में वक्री होने से रूई चान्दी जिस्त, अभ्रक, लाख, चने, गेहूँ के भाव तेज़ होंगे। ता. २३ से **बुध मेष राशि में** उदित होने से अलसी व चान्दी एवं सोने के भावों में उतार चढ़ाव होंगे। २४ को सूर्य रोहिणी में आने से अलसी, सरसों, सूरजमुखी, तिल, तैल, सरसों, चीनी, रूई, कपास आदि के भावों में तेज़ी होगी। ता. २८ से बुध मार्गी होने से शेयरों के भाव तथा रूई, तिल, तेल, घी आदि मंदे तथा गेहूं, चने, चांदी तेज भाव होंगे। ता. ३० से मंगल कृतिका में आने से रूई, कपास चाँदी, चावल मूंग, चने, मसूर आदि सर्व प्रकार की मुख्य करियाना वस्तुएँ तेज भाव होंगी। पहिले से खरीद करना लाभप्रद रहेगा।

जून—ता. १ को बुध कृतिका में आने से रूई, सूत, कपास, पटसन एवं अनाजों के भावों में तेज़ी हो, परंतु चाँदी में घटा-बढ़ी होगी। ता. ४ को मंगल वृष में तथा वक्री शुक्र भी वृष में प्रविष्ट होने से सोना, चाँदी, तांबा, रूई, कपास, लाल वस्त्र सर्व प्रकार के तिल तैलादि में तेजी का रूझान रहेगा। घी, गुड़, चीनी व खाण्डसारी में मन्दी का माहौल होगा। ता. ७ को शुक्रास्त पश्चिम में होने से रुई, अलसी, अरण्डी, गुड़ व चीनी में घटा बढ़ी परन्तु चान्दी व अनाज के मूल्य तेज होंगे। सूर्य मृग में तथा बुध वृष में आने से उड़द, मूंग, मोठ, चने, बाजरा, सन, सूत, नारियल व अन्य दुग्ध पदार्थ, तेज भाव होंगे। १० को वक्री शुक्र मृग में आने से गेहूं, जौ, चना, ज्वार बाजरा, गुड़ व चीनी में घटा-बढ़ी होगी। इसी दिन सूर्य शुक्र की युति मार्कीट में अस्थिरता पैदा करेगी।

ता. १४ को सूर्य मिथुन राशि में तेल, तैल, चांदी, सोना, लोहा, तांबा, मूंग, उड़द,चना, चावलादि के भावों में तेजीकारक होगा। इसी दिन शुक्र उदय होने से रूई व कपास में भी तेज़ी परंतु अनाज के भावों में घटा-बढ़ी होगी। ता. १६ को रविवारी अमावस आगामी सप्ताह में तेजी की सूचक है। ता. १७ को बुध एवं मंगल रोहिणी में प्रविष्ट होने से चावल, चने, गेहूँ आदि अनाज तथा तैलादि में तेजी होगी। ता. २१ से **सूर्य आर्द्रा** में आने से रूई, कपास, खल-बिनौले, पशुचारा, अलसी, अरण्डी, मूंगफली, सरसों आदि में मामूली घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. २५ से बुध मृगशिर में आकर अनाज, चने, गुड़, चीनी, खांडसारी, तोरिया, अलसी में मन्दी का रूझान करेगा। ता. २९ को बुध मिथुन में आने से सोना, चाँदी, रूई, गेहूं, सरसों में घटा-बढ़ी हो परन्तु ता. ३० से बुध पूर्वाऽस्त होने से गेहूँ चने चावलादि अनाज तथा रूई व पशुचारा व चौपाय तेज़ भाव होंगे।

जुलाई—ता. १ को शनि उभा. के चतुर्थ चरण में तथा ता. २ से बुध आर्द्रा में प्रवेश करेगा। जिससे गेहूं, तिल, तैल, उड़द, जौं, चने, मूंग, मोठ गुड़ व हरा चारा के भावों में मन्दी का माहौल बनेगा। इसी दिन शुक्र वृष में मार्गी होने से चान्दी व सोना व चावलों के भाव तेज़ होंगे। गुड़ व शक्कर के संग्रह से २ मास बाद लाभ की संभावना होगी। ता. ५ से सूर्य पुनर्वसु में आने से सोना चाँदी रूई, कपास, खल बिनौले, तिल मूंगफली, ज्वार, बाजरा, अलसी सरसों, उड़द आदि में तेज़ी का रूख बनेगा। ता. ६ को मंगल मृग में आने से रूई, कपास व चाँदी में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी आएगी। ता. ८/९ को बुध पुनर्वसु में प्रविष्ट होने से रूई, पटसन सूत व गुड़ चीनी के बाज़ार में अनिश्चितता छाई रहेगी। ता. १३ से बुध कर्क राशि में आने से गुड़, चीनी, शक्कर व घी वनस्पति के भावों में घटा बढ़ी रहेगी। गेहूं, जौ, चनों के भावों में समता रहेगी। चाँदी में तेज़ी का रूख होगा। ता. १५ को बुध पुष्य में आने से

चान्दी व रूई में घटा बढ़ी तथा मोती, जवाहरात, माणक, पुखराज एवं ऊनी धागे तेज होंगे।

में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. ५ को मंगल पुष्य में आने से सोना, चाँदी, जिस्त, रूई व कपास

चान्दी व रूई में घटा बढ़ी तथा मोती, जवाहरात, माणक, पुखराज एवं ऊनी धागे तेज़ होंगे।

१६ को सूर्य कर्क में तथा मंगल मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। जिससे रूई, चाँदी कपास, चाँदी चीनी, सोना, तांबा, गुड़, शक्कर, मजीठ, गेहूँ, चने, चावल, मक्की, के भावों में मज़बूती (तेजी) बनेगी। ता. १८ से **शनि मीन** राशि में **वक्री** होगा। जिससे रूई, कपास व सोने के भावों में कमी होगी, परन्तु गेहूँ, चावल, चने, अलसी, सरसों, तम्बाकू लकड़ी, चांदी व लोहे के भावों में तेज़ी होगी। ता. १९ को सूर्य पुष्य में आने से गेहूं, जौ, चने, चावल, गुड़, चीनी, रूई, सोना चान्दी व पीतलादि धातुएँ तेज भाव होंगी। ता. २० को शुक्र मृग तथा २१ को बुध आश्ले. में आने से ज्वार, बाजरा, मूंग, जौ, चने, गेहूं व धान्य में मन्दे की लहर चलगी। ता. २३ से बुध का उदय पश्चिम दिशा से होने से घी, तिल, तेल, खल-बिनौले, अरण्डी, सरसों एवं चान्दी के भावों में तेज़ी होगी। ता. २४ से वक्री गुरू पूफा (१) में प्रविष्ट होकर तथा ता. २६ से मंगल आर्द्रा में आने से गेहूं, सोना, चावल, चने, आदि अनाजों में मन्दी का वातावरण बनेगा। सोच विचार कर खरीद करना लाभप्रद होगा। ता. २८ से बुध मघा एवं सिंह में प्रविष्ट होने से गेहूं, चने, ज्वार, बाजरा, मटर, सोयाबीन, सूरजमुखी, अरण्डी व अलसी के तेलों में तेज़ी आएगी। ता. ३० से शुक्र मिथुन राशि में आने से रूई, कपास, जूट व पटसन के भावों में तेज़ी होगी॥

अगस्त—मासारंभ में ही **गुरू-शुक्र का समसप्तक योग** होने से राजनीतिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में अनिश्चितता छाई रहेगी। ता. २ सूर्य आश्ले. नक्षत्र में आने से गेहूं, चना, तेल, मूंगफली, लाल चन्दन, उड़द, काली मिर्च, इलायची, खल बिनौले, चौपाय, एवं पशुचारा के भावों में तथा ताम्बा, पीतल, जिस्त, सोना व लौहादि धातुओं में भी तेज़ी होगी। ता. ६ से बुध पूफा में तथा ता. ७ को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूं, चने, मक्की, व धान्य में मन्दे का वातावरण बनेगा। ता. १३ से राहु हस्त के द्वितीय तथा केतु उभा के चतुर्थ चरण में आने से सरसों, अरण्डी, अलसी, एवं अन्य वनस्पति के तैलों, एवं रूई चांदी व कनक में तेज़ी का रूख बनेगा।

ता. १६ से सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह में प्रवेश करेगा जिससे तिल, तैल, घी, गुड़, चीनी शक्कर, खाण्डसारी, अरण्डी, सरसों तोरिया, जूट, पटसन (रूई) एवं लाल वर्ण की वस्तुएँ जैसे सोना, पीतल, ताम्बा आदि तेज़ भाव होंगी। ता. १७ को बुध उफा में आने से गेहूँ, जौ, चने, मटर, मकई, बाजरा में मन्दी का रूख बनेगा। परन्तु ता. १९ से **बुध कन्या** में आने से गेहूँ, चावल, चने, व रूई व चान्दी, गुड़, चीनी व हल्दी आदि के मूल्यों में पुनः सुधार होगा। ता. २३ से शुक्र पुनर्वसु में गेहूं, धान्य, खल बिनौले, गर्म, मसाले, मूंगफली, अरण्डी, सरसों वनस्पति आदि तैलों में तेज़ी होगी। चाँदी, रूई व सोना में घटा-बढ़ी होगी। मार्कीट का रूख अस्थिर रहेगा। सोच विचार कर सौदा करें। ता. २७ को पंचक का आरम्भ मंगलवार को हुआ है जिससे सर्व प्रकार की व्यापारिक वस्तुओं (वायदा एवं हाजिर) में तेज़ी, बनेगी। ता. ३० को सूर्य पूफा में गेहूँ, जौ, चना चावल, मोंठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, चीनी, तिल, तैल, घृत, खल बिनौला आदि में अच्छी तेज़ी के झटके लगेंगे। ता. ३१ से मंगल कर्क में आने से सर्व प्रकार के माल पंसारी अनाज गुड़ शक्करादि, चौपाय तेज़ भाव होंगे। रूई, कपास व चाँदी में घटा बढ़ी होगी।

सितम्बर—ता. १ को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करेगा जिससे गेहूं, चने, व गुड़, चीनी, चावल, रसादि पदार्थ अलसी, सरसों तिल, तेल, घृत, रूई बारदाना मूंग उड़द, धान्यादि तेज़ भाव होंगे।

दैत्यगुरू यदा कर्के रसानां वै महर्घता।
सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥

ता. ४ को शुक्र पुष्य में आकर रूई, सन, सूत, रेशमी व ऊनी धागों, गेहूं, चने, चावल, मटर, धान्यादि में एवं तिलहन, मूंगफली, खल-बिनौला आदि में तेज़ी होगी। इसी दिन गुरू मार्गी होने से चावल, चाँदी में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. ५ को मंगल पुष्य में आने से सोना, चाँदी, जिस्त, रूई व कपास के भावों में उतार-चढ़ाव होंगे। ता. ११ को बुध पश्चिम में अस्त होगा तथा ता. १३ से सूर्य उफा. में आने से गेहूं चने, चावल, मकई, ज्वार, अलसी, सोना, चाँदी, लोहा, सीसा, घी, तिल, तैल, कपास, मकई, रूई, उड़द, चाँदी एवं सोने में तेज़ी का वातावरण बनेगा। ता. १४ को चन्द्रदर्शन शनिवार को होगा।

रूई, सूत, सर्व प्रकार के ऊनी व सूती वस्त्र, सरसों, अलसी, गेहूं, मूंगफली, सोना, चान्दी व चावलों के मूल्यों में तेज़ी होगी।

ता. १६ से सूर्य कन्या राशि में आने से रूई, तिलहन, मजीठ, नारियल, पटसन, सर्व प्रकार के तेल, पीतल, सोना, ताम्बा, व अन्य लाल रंग की वस्तुएं तेज भाव होंगी। चान्दी व शेयरों में मन्दी का रूख होगा। ता. १८ को वक्री बुध सिंह में आने से रुई, सनसूत, चीनी शक्कर में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. १९ को सप्तमी का क्षय होने से करियाना बाज़ार में तेज़ी की लाईन बनी रहेगी। ता. २४ को बुध पूर्व में उदय होने से अनाज तथा रुई के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी आएगी। गेहूं, जौं, चने, लाल मिर्च, एवं घी के भावों में मज़बूती बनेगी। ता. २६ को सूर्य हस्त एवं मंगल आश्लेषा नक्षत्र में होने से सप्ताह के भीतर ही गेहूं, जौं, कपास, गुड़, खांड, हल्दी, ज्वार के भावों में तेज़ी आएगी परन्तु रूई, चाँदी के भावों में घटाबढ़ी होगी। अधिक **लाभ की आशा न करते हुए शीघ्र सौदा काट कर लाभ लें।** ता. २७ को बुध मार्गी होने से गेहूं, चने, अलसी, बिनौले, मूंगफली, तिल, तैल, वनस्पति, चौपायादि तेज़भाव होंगे। ता. २८ से **शुक्र सिंह** राशि में आने से गेहूं, चने, गुड़, जूट, पटसन, सोना, पीतल, तांबादि लाल वर्ण की वस्तुएं तेज़ होंगी। ता. ३० को सूर्य-राहु की अंशात्मक युति चावल, धान्य, मकई, कनकादि अनाज तथा घी, किशमिश गर्म मसालों में तेज़ी कारक होगी।

अक्तूबर—ता. १ के आरंभ में बुध उफा. में आने से गेहूं, जौ, चने, मटर, तिल, तैल, खल-बिनौले उड़द, खाण्ड, शक्करादि में तेज़ी होगी। रूई, कपास में घटा-बढ़ी होगी। ता. ४ को बुध कन्या में आने से सोना, तांबा, चान्दी गेहूं, मक्की, चावल, चीनी, शक्कर, मूंग, उड़द खाद्य तैलादि के भावों में तेज़ी की लाईन एक सप्ताह तक रहेगी। ता. १० से सूर्य चित्रा में व शुक्र पूफा में आने से गेहूँ, गुड़ शक्कर चीनी, सरसों, अलसी, मूंगफली चावल, खल बिनौले, रूई कपास, सोना, चाँदी व ताम्बा में तेज़ी का माहौल बनेगा। ता. ११ को बुध हस्त में आने से अनाज के भावों में घटा बढ़ी होगी। ता. १३ को बुध-राहु की अंशात्मक युति करियाना मार्कीट में तेज़ी पैदा करेगी। ता. १४ को बुध पूर्व दिशा में अस्त होने से गेहूं, चने, चावल, व चाँदी के भावों में तेज़ी होगी। रूई-सोना में घटा-बढ़ी होगी।

ता. १६ को सूर्य तुला राशि में प्रविष्ट होगा। कार्तिक संक्रान्ति बुधवार को १५ मुहूर्ति होने से तिल, रिफाईड तैल, गेहूं, चने, चावल, मूंग, लाल चन्दन, केसर, हल्दी, उड़द, ऊनी वस्त्र, गर्म मसाले, किशमिश, अरण्डी, अलसी, खली बिनौले आदि किरयाना मार्कीट में तेजी का बोल बाला रहेगा। ता. १९ को बुध चित्रा में आने से माल पंसारी में तेज़ी की लाईन बनी रहेगी परन्तु रूई, सन सूत में मामूली घटा बढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. २१ से शुक्र उफा में आने से गेहूं, चने, जौं, मटर, काली मिर्च में तेज़ी होगी। ता. २३ को सूर्य स्वाती में तथा बुध तुला में आने से चीनी शक्कर, लाख, सुपारी, गुग्गल, रूई-कपास में तेजी के झटके लगेंगे। ता. २४ से शुक्र कन्या में आने से गेहूँ, चावल (धान्य), खल बिनौले आदि पशुचारा में तेज़ी बनेगी। ता. २७ से बुध भी स्वाती में आने से सर्व प्रकार के अनाज तेज़ होंगे। हाज़िर एवं वायदा बाज़ार में तेज़ी की मज़बूती बनी रहेगी॥

नवंबर—ता. १ से शुक्र, हस्त नक्षत्र में आने से गेहूं, चने, जौं, चीनी, गुड़, हल्दी, काली मिर्च, छोटी इलायची, रिफाईड आयल, तैल, सरसों अरण्डी, अलसी, घी, मूंगफली में तेज़ी का रूख बना रहेगा। ता. २ को सूर्य बुध में तथा ता. ३ को शुक्र राहु के मध्य अंशात्मक युति करियाना मार्कीट में तेज़ी कारक

शेष पृष्ठ 44 पर देखें।

सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः । अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः । आदौ गणपति नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम् । चन्द्रमिश्र तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं ल.वपुरे शुभे प्रपितामहम् । स्मरन् भक्तया लोकहिताय सुख सम्पत्ति हेतवे । विरोधी नामक विक्रमे नव सम्वत्सरे शुभे विशत्योत्तरशतं वर्षाणि (१२१) वर्ष प्रवेशे पन्नालालपण्डितमहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, कुर्वे पंचांग दिवाकरम् जालन्धर नगरे ।

यश्चैत्र शुक्लप्रतिपदे धीमान् श्रृणोति वार्षीय फलं पवित्रं भवेद् धनाढ्यो बहुसस्यं भोग जह्याच्च पीड़ा तनुजां च वार्षिकीम् ।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को नवीन सम्वत्सर का प्रारम्भ होता है । इस दिन धर्मपरायण लोगों द्वारा श्री गणेश जी के मंगल चिन्ह से अंकित ध्वज को अपने-अपने घरों पर लगाना चाहिए । तोरणादि से अपने घरों को सजावें । उस दिन मंगल स्नान कर अपने इष्ट देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें । पुरुष, स्त्रियाँ, शिशु आदि वस्त्राभूषणादि परिधान धारण कर उत्सव मनावें तथा ज्योतिषी जी अथवा विद्वान ब्राह्मण का सत्कार करके उनसे नए संवत्सर का फल श्रवण करें । पंचागस्थ श्री गणेश जी और ब्राह्मण, ज्योतिषी आदि की पूजा कर उन्हें मिष्ठान्न युक्त भोजन करवा कर उन्हें नववर्ष का पंचांग, वस्त्र, फल मिठाई आदि दक्षिण सहित यथाशक्ति देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करके सारा दिन भजन-कीर्तन, जप-पाठ, सत्संग श्रवणादि सत्कर्मों एवं मंगल कार्यों में व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष सुखपूर्वक एवं आनन्दमय बीतता है ।

इसी दिन प्रातःकालीन कटु नीम की कोमल पत्तियाँ और पुष्प लेकर, उनमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, अजवायन, जीरा और शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनावें कुछ इमली भी मिला कर ग्रहण करने से वर्ष पर्यन्त अनेक रक्त विकारादि गुप्त क्लिष्ट का भय नहीं रहता है ।

सृष्टिक्रम और चतुर्युगों का वर्णन

श्री मद्भागवत के अनुसार सृष्टि (समस्त जगत) की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण ब्रह्मा ही है । एक सृष्टि की समयावधि को कल्प कहते है । ब्रह्मा के एक दिन के बराबर एक कल्प तथा ३६० कल्पों में ब्रह्मा का एक वर्ष होता है । ऐसे ही ३६००० कल्पों में ब्रह्मा की आयु का प्रमाण होता है । भारतीय परम्परानुसार सतयुग आदि चार युगों का १ महायुग और एक हजार महायुगों का एक कल्प होता है । तथा ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर कहलाता है । ब्रह्मा के एक दिन में १४ मनवंतर होते हैं । उन में से १ स्वायंभुव २ स्वारोचिष ३ उत्तम, ४ तामसे, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छः मन्वंतर बीत चुके हैं । अब सातवाँ वैवस्वत नामक मन्वंतर चल रहा है, उसमें भी २७ महायुग गत होकर २८ वें महायुग के तीन युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो गए है और अब यह कलियुग प्रारम्भ हो चुका है ।

ज्योतिष सिद्धान्तानुसार ४३,२०,०००००० सौर वर्षों का १ कल्प ४३,२०,००० सौर वर्षों का एक महायुग होता है । तथा प्रत्येक महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग—इन चारों युगों का अनुक्रम चलता है । अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से **'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवा कर अध्ययन करें ।**

सुतभाव प्रकाश

चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को हुई । इसकी आयु १७२८००० वर्ष की है । इसमें मत्स्य, कूर्म्म, वाराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वराह जी ने जलोद्धार किया, कूर्म्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया । इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे, शाप और वरदान देने में समर्थ थे । क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे । वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे । शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे । समय पर वर्षा होती थी फसल अच्छी होती थी । स्त्रियां पद्मिनी पतिव्रता थी, गौवें दूध अधिक देती थीं । मनुष्य की परमायु १००००० वर्ष बाल्यावस्था १०००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी । पुण्य २० विश्वे पाप का नाम तक भी न था । सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था । सूर्य ग्रहण २०००० चन्द्र ग्रहण २००० थे ।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी । इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए । श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया । श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था । श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया । मनुष्य की परमायु १०००० वर्ष और बाल्यावस्था १००० वर्ष थी । पुण्य १५ विश्वे, पाल ५ विश्वे था । पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नयून तपोनिष्ट त्यागी थे । वे शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं । सुवर्ण का सिक्का था । सूर्य ग्रहण २०००० और चन्द्र ग्रहण ३०००० थे । तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था ।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु ८६,४००० वर्ष थी । इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया । पुरुष की परमायु १००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी । पुरुष का देहमान ७ हाथ था । ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे । अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे । चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था । कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था । पुण्य १० विश्वे था । सूर्य ग्रहण २४००० चन्द्र ग्रहण ३६००० थे । स्त्रियाँ शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थीं ।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु ४३२००० वर्ष है । इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार है, उनका काम धर्म का उद्धार करना है । मनुष्य की परमायु १२० वर्ष बाल्यावस्था १० वर्ष है । पुरुष का देहमान ३ ॥ हाथ है । पुण्य ५ विश्वे पाप १५ विश्वे है, गंगा तीर्थ प्रधान है । इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा । सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जाएंगे । ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख, तप, यज्ञादि धर्म कर्म से विमुख, शाप देने में असमर्थ होंगे । क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे । वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे । धूर्त विद्या की पूजा होगी । सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६००० होंगे । संवत् २०५१ में कलियुग के ५०९५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४२६९०५ वर्ष रहे हैं । कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा । कलियुग में नीच लोगों की पूजा अधिक होगी । अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी । व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी । पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे । पिता कन्या को बेचेंगे । स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे । लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे । संतान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा । धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा । श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी । शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा । स्त्रियां शंखिनी होंगी ।

निकलेगा ? कष्ट से पुत्र-प्राप्ति योग, गर्भपात के योग व लक्षण, पंचम भाव पर सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि-फल इत्यादि का सूक्ष्म वर्णन किया गया है। नवीन संशोधित संस्करण [illegible]

मंगवाने का पता—जनरल बुक डिपो जालन्धर।

...प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियां शंखिनी होंगी।

राशि	स्वामी ग्र०	शुभ अशुभ	स्त्री, पु० संज्ञा	सम-विषम	जाति	क्रूर	लक्षण	स्वभाव	अवस्था	वर्ण	गुण	तत्त्व	बली समय	अंग स्वामी	स्थान	सजल निर्जल	दिशा	उदयी उदयकाल पृष्ठोदय
मेष	मंगल	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चंचल	चर	युवा	लाल	रज	अग्नि	रात्रि	शिर	पर्वत	निर्जल	पूर्व	पृष्टोदय
वृष	शुक्र	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शान्त	स्थिर	युवा	गोरा	तम	भूमि	,,	मुख-गला	जमीन	,,	दक्षिण	शीर्षोदय
मिथुन	बुध	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	च+शां	द्विस्वभाव	बाल	हरा	सत	वायु	,,	गला-बाहु	जंगल	,,	पश्चिम	पृष्टोदय
कर्क	चन्द्र	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बाल	गोरा	रज	जल	,,	हृदय	जल	सजल	उत्तर	
सिंह	सूर्य	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	शांत	स्थिर	वृद्ध	लाल	तम	अग्नि	दिन	पेट	पर्वत	निर्जल	पूर्व	,,
कन्या	बुध	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	च+शां	द्विस्वभाव	बाल	चित्र	सत	भूमि	,,	कमर	जमीन	,,	दक्षिण	,,
तुला	शुक्र	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चंचल	चर	युवा	नीला	रज	वायु	,,	नाभि	जंगल	सजल	पश्चिम	,,
वृश्चिक	मंगल	अशुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	मनहरा	तम	जल	,,	गुप्तांग	जल	सजल	उत्तर	पृष्टोदय
धन	गुरु	शुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	च+शां	द्विस्वभाव	बाल	पीला	सत	अग्नि	रात्रि	जंघा	पर्वत	निर्जल	पूर्व	,,
मकर	शनि	अशुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	वृद्ध	भूरा	रज	भूमि	,,	घुटने	जमीन	सजल	दक्षिण	शीर्षोदय
कुम्भ	शनि	अशुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	शांत	स्थिर	वृद्ध	काला	तम	वायु	दिन	पिंडली	जंगल	सजल	पश्चिम	उभयोदय
मीन	गुरु	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	च+शां	द्विस्वभाव	वृद्ध	कर्कट	सत	जल	रात्रि	पाँव दोनों	जल	सजल	उत्तर	शीर्षोदय

ग्रह—गुणस्वभाव चक्र

ग्रह	स्वगृह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	स्वभाव	वर्ण	रूप	अधिकार	शारीरिक भाग	शरीर के	धातु अंतर्भाग	जाति	आप्तवर्ग तत्त्व	स्त्री मूल	पुरुष	विद्या	क्रूरादि	दिशा	बलाबल समय	भाग्योदय काल
रवि	सिंह	सिंह	सत्व	स्थिर	लाल	गोल	सिर से	आत्मा	सुवर्ण	अस्थि	क्षत्रिय	अग्नि	पिता	पुरुष	राजविद्या	क्रूर	पूर्व	दिन	२२–२४
चन्द्र	कर्क	वृष	सत्व	चंचल	श्वेत	सुन्दर	गले से हृदय	मन	चाँदी	रुधिर	वैश्य	जल	माता	स्त्री	ज्योतिष	क्षीणशुभ	वायव्य	रात्रि	२४–२५
मंगल	वृश्चि०	मेष	तम	उग्र	लाल	कृश	पेट से	बल	तांबा	मज्जा	क्षत्रिय	अग्नि	भाई-	पुरुष	सेना	क्रूर	दक्षिण	रात्रि	२८–३२
बुध	कन्या	कन्या	रज	मिश्र	हरा	चौकोर	हाथ पाँव	वाणी	कांस्य	त्वचा	वैश्य	पृथ्वी	बन्धु मित्र नपुंसक	क्लीव	गणित	मिश्रित	उत्तर	सर्वकाल	३२–३६
गुरु	मीन	धन	सत्व	स्थिर क्षिप्र	पीला	स्थूल	कमर से जंघा	साज		चर्बी	ब्राह्मण	आकाश	सन्तान	पुरुष	वेदांत-शास्त्र विद्या	शुभ	ईशान	दिन	१५–२२
शुक्र	वृष	तुला	रज	मृदु	सफेद	तेजस्वी	शिश्न से वक्षन	काम	चाँदी	वीर्य	ब्राह्मण	जल	स्त्री	स्त्री	गायन वादन	शुभ	आग्नेय	दिन मध्यान्त	२६–२८
शनि	मकर	कुम्भ	तम	स्थिर	काला	आलसीपि	घुटना	दुःख		स्नायु	शूद्र	वायु	नौकर	क्लीव	व्यापार	क्रूर	पश्चिम	रात्रि	३६–४२
राहु	कन्या	कर्क	तम	तीक्ष्ण	धूम्र	मलीन	०	दुःख	सीसा	वायु	अन्त्यज	—	आजी		गारुडी	अशुभ	नैर्ऋत्या	रात्रि	२४–५०
केतु	मीन	मकर	तम	तीक्ष्ण	मिश्र	मलीन	०	दुःख	तांबा	स्नायु	नीच	—	आजी		तन्त्रमंत्र	अशुभ	—		४८–५४

सूर्य भगवान को अर्घ्य देने का मंत्र

सूर्य भगवान को हाथों की अंजलि में जल पुष्प एवं अक्षत लेकर गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करके जल में या जल से धुले हुए स्थान पर अर्घ्य प्रदान करें। ओं भूर्भुवः स्वः, ब्रह्म रूपिणे सूर्यनारायणाय नमः।। अर्घ्य देते समय अपने दोनों हाथों को अपने सिर से थोड़ा ऊपर रखें। तर्जनी व अंगूठे को परस्पर न सटने दें।

सूर्य अर्घ्य मन्त्र—

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरः।।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवनार्थ समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	ताँबा	सोना	लालगाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चाँदी	सोना	श्वेत बैल	मिसरी	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	ताँबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	ल.कनेर पु.	लाल वस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ.२।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरा वस्त्र	अनेक फल	हाथीदाँ	कपूर	९०००	सू.उ.५घ.	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरु	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले रंगपु.	पीत वस्त्र	पीला फल	धर्मग्र.	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चाँदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेद वस्त्र	सफेदचंदन	दही	सुगन्धि द्र.	१६०००	सू.उ.	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	काला वस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	कालाघोड़ा	ताम्र पत्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नील वस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौंसः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लहसुनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	कृष्णपुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मघा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुफल	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेत वस्त्र	हाथीदांत	मुंयेशं	ग्रह अनु.	मुंयेशयथा	प्रातः	मन्धास्वामी मन्त्र	

विशेष–ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दानके साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिये। सप्तधान्य–गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौ, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पञ्चगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदुग्ध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सुरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारु	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मुत्थरां	तिलपत्र
केशर	गजमद	मोठनी	शहद	शहद	मूली बीज़	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खश	शंख	जटामांसी.	सुवर्ण	गूलर	मैनशिला	खश	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	सीप गंगाजल	मोलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	तिलपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिंगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	इत्यादि	नवीनपत्ते	गंगाजल	गांदमिश्रित	—	—
मि गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल				

ग्रहों के परमोच्च-नीचांशादि चक्र

ग्रह विभिन्न राशियों के गुण-स्वभाव एवं अंशों के अनुसार ही जातक को शुभाशुभ फल प्रदान करते है। प्रत्येक ग्रह राशियों के विशेष अंशों पर उच्च, नीच एवं मूलत्रिकोण होता है। फलादेश के लिए इनका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

ग्रह	राशि उच्चांश	नीच राश्यंश	मूल त्रिकोण राश्यंश
सूर्य	मेष १० अंश	तुला १० अंश	सिंह २० अंश प्रथम
चन्द्र	वृष ३ अंश (प्रथ.)	वृश्चिक ३ अंश	वृष २७ अंश अंतिम
मंगल	मकर २८ अंश	कर्क २८ अंश	मेष (१२ अंश प्रथम)
बुध	कन्या १५ अंश	मीन १५ अंश	कन्या (१५ से २० अंश)
गुरु	कर्क ५ अंश	मकर ५ अंश	धन (प्रथम १० अंश)
शुक्र	मीन २७ अंश	कन्या २७ अंश	तुला (प्रथम १५ अंश)
शनि	तुला २० अंश	मेष २० अंश	कुम्भ (प्रथम २० अंश)
राहु	मिथुन १५ अंश	धन १५ अंश	कुम्भ (१० अंश)
केतु	धन १५ अंश	मिथुन १५ अंश	सिंह १० अंश

त्रिखल जन्मफल

यदि तीन कन्याओं के बाद लड़के का जन्म हो या तीन लड़कों के बाद कन्या का जन्म हो तो त्रिखला नाम का दोष होता है। त्रिखला दोष कारण माता, पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है।

सर्व ग्रह दोष निवारण हेतु औषधिस्नान

यदि ग्रह विशेष के अनुसार दोषोपशान्ति के उपाय न बन पड़े, तो निम्नलिखित औषधियों को जल में मिश्रित करने से समस्त ग्रह जनित दोषों का निवारण होता है।

"यथा सिद्धौषधैरोगान्नश्येगुर्मन्त्रतो यदम्। तथा स्नान विधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।"

स्नान द्रव्याणि–लाजवन्ती, (छुईमुई) कूट, खिरहटी माल कंगनी, बन सरसों, देवदारू, हल्दी लोदा, शरपुंखा, जटामांसी, देवदारू, हल्दी, शिलाजीत, चन्दन, खिल्ला, वच, चम्पा, नागर मोथा इत्यादि औषधियों से युक्त तीर्थोदक (जल) के स्नान से पीड़ित ग्रहशान्त हो जाते हैं।

ग्रहों का कारकत्व विचार

कारक ग्रहों के बलवान होने से उन ग्रहों से सम्बन्धित पदार्थ भी बली होते हैं तथा उनका पूर्ण मिलता है। और कारक ग्रह के निर्बली होने से उस विषयक सुख की हानि होती है।

आत्मादयो गगनैर्बलिभिः बलवत्तराः। दुर्बले दुर्बलाश्चैया विपरीतं शनेः स्मृतम्॥ (सारावली)

सूर्य–पिता, आत्मा, राजा, प्रताप, आरोग्यता, नेत्र, पर्वत, शासनकार्य, लाल वस्त्र, सुवर्ण, गेहूँ आदि।

चंद्र–माता, मन, बुद्धि, स्त्री, धन, चाँदी, मोती, चावल, कपास, सौंदर्यादि।

मंगल–पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, सेना, शत्रु, अग्नि, क्रोध, पुत्र, ताम्र, मूंगा, गुड़ादि।

बुध–वाणी (वाक्शक्ति), बुद्धि-विद्या, मातुलपक्ष, बंधुबांधत, गणित, शिल्प, ज्योतिष, चाची, मामी, मौसी, पन्ना रत्न आदि।

गुरु–विद्या, बुद्धि-विवेक, ज्ञान, पुत्र, शास्त्र-धर्म, बड़ा भाई, सुवर्ण, ब्राह्मण, मंत्री, पतिसुख, पुखराज, पितामह आदि।

शुक्र–स्त्री, वाहन, वीर्य, आभूषण, काम सुख, कलात्मक रूचियां, संगीत, चांदी, हीरा, रत्न,

शनि–आयु, मृत्युकारण, सेवक, दुख-रोगादि, शिल्प, तिल-तैल, नीलमादि।

राहु–गुप्त धन, लाटरी, भूत-बाधा, पलायनता, तस्करी, गोमेध आदि।

केतु–गुप्त शक्ति, कठिन कार्य, दुख, धूम्र, रंग, चर्म रोग, वर्ण, तंत्र विद्या, कृष्ण वस्त्र, कम्बलादि पदार्थों का कारक।

नोट–अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारी ज्योतिष तत्त्व नामक पुस्तक अध्ययन करे

शुक्र	मीन २७ अंश	कन्या २७ अंश	तुला (प्रथम १५ अंश)		
शनि	तुला २० अंश	मेष २० अंश	कुम्भ (प्रथम २० अंश)	आदि कष्ट होते हैं विफल शांति करें	कार्य, दुख, धूम्र, रंग, चर्म रोग, वर्ण, तंत्र विद्या, कृष्ण वस्त्र, कम्बलादि पदार्थों का कारक।
राहु	मिथुन १५ अंश	धनु १५ अंश	कुम्भ (१० अंश)	तो शुभ होता है।	नोट—अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारी ज्योतिष तत्त्व नामक पुस्तक अध्ययन करें
केतु	धनु १५ अंश	मिथुन १५ अंश	सिंह १० अंश		

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग)

लेखक—पं० विवेक शर्मा ज्योतिषी (B.A., L.L.B.)

भूगर्भ से उत्पन्न होने वाले रत्नों (पत्थरों) का प्रभाव मनुष्य जीवन पर अवश्य पड़ता है। इसका उपयोग विज्ञान द्वारा भी समर्थित है। **वाराहमिहिर,** अगस्त्य आदि ज्योतिष आचार्यों ने भी ग्रह रत्नों के महत्व को मान्यता प्रदान की है। उनके अनुसार नवग्रहों की किरणों के प्रभावस्वरूप ही रत्नों की उत्पति तथा उनके वर्णादि तत्वों की संरचना होती है। शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती** है। सही एवं उपयुक्त रत्न (नग) के चुनाव **प्राचीन साहित्य में चौरासी (८४) प्रकार के पत्थरों** एवं रत्नों का वर्णन मिलता है। नवग्रहों से सम्बन्धित नव रत्नों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य पद्मराग, लोहित, हिन्दी में माणक, **मानिक,** लाल, **अंग्रेज़ी** में रूबी तथा फारसी उर्दू में याकूत कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

वर्ण भेद के आधार पर माणिक्य सिंधूरी, लाल कमल के वर्ण जैसा, शिगंरफ वर्ण, वीरबहूटी अथवा लाख एवं सेलों जैसे वर्ण का हो सकता है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है॥ (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा (४) असली माणक कमल की कली पर रख देने से कली खिल उठती है। (५) यदि **चाँदी की थाली** में सोनचा के साथ माणिक्य रख कर सामने किया जाये तो चाँदी की थाली तथा उसमें रखे सभी मोती लाल रंग के दिखाई देने लगेंगे। (६) दुपैहर में साफ रूई पर धूप में रखने में रुई को आग लग जाए। अतएव असली एवं शुद्ध माणिक स्निग्ध, चिकना, कान्तियुक्त, पानीदार, भारीपन लिए तथा कनेर पुष्प जैसे लाल वर्ण का होना चाहिए।

दोषपूर्ण मानक—काले अथवा दूधिया रंग से युक्त, आड़ी, तिरछी, रेखाओं, धूएं जैसे रंग से युक्त, त्रिपुन, गड्ढे आदि चिह्नों से युक्त **माणिक दोषपूर्ण होगा।** ऐसा नग धारण करना **हानिकारक होगा।**

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा रविपुष्य **योग में सोने अथवा ताम्बे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५, ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम** से होना चाहिए।

सूर्य बीज मंत्र—ओं, ह्रां ह्रीं, ह्रौं, सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मंत्र की ३ माला का पाठ, हवन, एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धि कारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है। अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, मुक्तक, मुक्ता, इन्दुरत्न, चन्द्रमणि, शुक्तिज इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती **उर्दू-फारसी** में मुखारिद एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है। प्राचीन मान्यतानुसार मोती ९ प्रकार के माने जाते हैं। गजमुक्ता, सर्पमुक्ता, मीन मुक्ता, शुक्ति मुक्ता, शंख मुक्ता, सीप मुक्ता आदि। अधिकांशतः गज-सर्पादि मुक्ता दुर्लभ होते हैं। सीप मुक्ता (मोती) उपलब्ध होते हैं, जोकि सीप में स्वाती नक्षत्र कालीन गिरी वर्षा जल की बूंदों से निर्मित होती है—ऐसी मान्यता है। स्याम, बंगाल फारस (बसरे) की खाड़ी से निकलने वाले मोती उत्तम कोटि के माने जाते हैं।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

आकाश, वायु, जलादि तत्वों के आधार पर मोती के रूप-रंगादि में अन्तर आ जाता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। (३) धान की भूसी को हथेली में मोती को रखकर खूब मलें। यदि असली मोती होगा, तो उसकी चमक बढ़ जाएगी। नकली होने पर टूटकर चूरा हो जाएगा। (४) कुछ देसी घी में असली मोती रखने से घी पिघलने लगता है। सुच्चा मोती के अभाव में चन्द्रकान्त **मणि अथवा सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग अनेक रोगों को दूर करने के लिए किया जाता है। विशेषकर मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप उदर-विकार, पथरी, दन्तरोगादि में।

दोषयुक्त मोती—दोषयुक्त मोती धारण करने से लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावना हो जाती है। काले धब्बे से युक्त, रेखायुक्त, लहरदार, खण्डित, त्रिकोण, रक्त चिन्ह युक्त अथवा चपटा मोती दोष युक्त माना जाता है।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व ताण्डुलादि मे डुबोते हुए '**ओं श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**' के बीजमंत्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरांत चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का अनामिका या कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त मे धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि या लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में प्रवाल, विद्रुम, अंगारकमणि रक्तांग, **फारसी** में मिरज़ान, तथा **अंग्रेज़ी** में कोरल (Coral) कहते हैं। मूंगा मुख्यतः लाल, सिन्धूरी, हिंगुल एवं गेरूआ वर्ण का होता है। रंग भेद अनुसार गुलाबी अथवा सफेद वर्ण का मूंगा भी पाया जाता है।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी एवं शिगरफ से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है। (३) असली मूंगे को यदि धुनी हुई रूई के ऊपर तेज धूप में रख दिया जाए, तो थोड़ी देर में रूई को आग लग जाती है।

खण्डित, छिद्र युक्त, काले-सफेद धब्बों से युक्त मूंगा पहनने से लाभ की अपेक्षा हानि की आशंका हो जाती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र, एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा पिष्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा, या धनिष्ठा नक्षत्र एवं मेष, मकर या वृश्चिक के चन्द्रमा कालीन सोने या ताम्बे की अंगूठी में जड़वा कर, बीज मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १०, या १२ रात्रि के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मंत्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, अश्मगर्भ, सौपर्णि हरितमणि, फारसी में ज़मरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व [illegible]

हल्के और गहरे रंग भेदानुसार मखमली घास या नीम की पत्ती जैसे रंग जैसा, तोते के पंख समान रंग जैसा अथवा मयूर पंख जैसे वर्ण सा हो सकता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) असली पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आंखों को शीतलता प्रदान करता है। (३) सान पर चढ़ाने से उसकी चमक बढ़ जाती है। (४) श्वेत वस्त्र पर धूप में रखने पर वस्त्र रंग बिरंगा दिखाई देगा।

छोटे-छोटे काले धब्बों से युक्त, खण्डित, रेशेदार या छोटी-छोटी टूटी-धारियों से युक्त पन्ना दोष युक्त एवं हानिकारक होता है।

गुण—'**पन्ना**' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि** धन एवं **व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्य कारक** भी है। चिकित्सा के लिए इसे भस्म या पिष्टी के रूप में वैद्यों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। **गर्भिणी स्त्री की कमर पर बांधने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।** यह रत्न जादू टोने, **रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग,** दमा, गुर्दे **के विकार, पण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली मे बुधग्रह के बीजमंत्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मंत्र—ओं ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरू-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरू (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, पीतस्फटिक, पीतमणि, **हिन्दी में पुखराज,** उर्दू-फारसी में ज़र्द-याकूत व अंग्रेजी में टोपाज़ (Topaz) कहते हैं।

पुखराज का रंग प्रायः पीला होता है। हलके और गहरे वर्ण भेदानुसार यह (i) नींबू के छिलके जैसे वर्ण का, (ii) सोने के रंग जैसा (iii) केशर अथवा हल्दी जैसे रंग का हो सकता।

पहचान विधि—जो **पुखराज** स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे,** पारदर्शी, **प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

यह मुख्यतः बर्मा, ब्राज़ील, अमरीका, श्रीलंका एवं भारत में उड़ीसा, बंगाल, ब्रह्मपुत्र, राजस्थान में पाया जाता है।

चमकहीन, श्वेत बिन्दुओं से, काले धब्बों वाला व खण्डित पुखराज हानिकारक होता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) कसौटि पर घिसने से और अधिक चमक उठता है। (iii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा॥ इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र संतान कारक, एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख** की **बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—पुखराज भस्म एवं पिष्टी के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। इसको वैद्य के [illegible]

[illegible] शुक्र के बीज मंत्र (ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का १६

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में मरकतमणि, अश्मगर्भ, सौपर्णि हरितमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व

[illegible] बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु की वृद्धि होती है। वैवाहिक सुख, पुत्र संतान कारक, एवं धर्म-कर्म में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के विवाहसुख की बाधा को दूर करने में सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—पुखराज भस्म एवं पिष्टी के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि,** पित्त-ज्वरादि में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगा जल, पीले, पुष्पों से एवं "ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः" के बीज मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके धारण करना चाहिए। मंत्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में, या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्र नक्षत्र में एवं व कर्क, धनु या मीन के चन्द्रमा कालीन शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

पुखराज के उपरत्न—जो लोग अधिक महंगा पुखराज न पहन सकते हों, वह उसकी बदल में उपरत्न धारण कर सकते हैं। **सोनैला, सोनल, केसरी** आदि पुखराज के उपरत्न माने जाते हैं। कु. में चन्द्र-शुक्र का योग हो तो सफेद रंग का पुखराज पहनना शुभ रहता है।

पुखराज का प्रभाव ४ वर्ष, ३ मास, १८ दिन तक रहता है।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व "हीरा" है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हीरक, इन्द्रमणि कुलिश, आदि, हिन्दी में हीरा, फारसी में अल्मास, तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है। **कोटिभेद** से हीरा ८ प्रकार का माना गया है। हंसपति (अत्यंत सफेद), कमलासन, वनस्पति, नीलकण्ठ (वज्रनील), श्यामल, पीत हीरा आदि।

पहचान—अत्यंत चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी, एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) **हीरा गर्म** पिघले हुए घी में डाल दिया जाए तो घी तुरन्त जमने लगता है। (ii) धूप में यदि हीरा रख दिया जाय तो उसमें से इन्द्र धनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (iii) गर्म दूध में यदि हीरा डाल दिया ये तो दूध ठण्डा होने लगता है। (iv) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (v) अंधेरे में जुगनू की भांति चमकता है। (v) असली हीरे के नीचे अंगुली रखने से यह वह दिखाई न देगी।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि,** धन-लक्ष्मी **व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं संतान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। वैवाहिक सुख में भी वृद्धि कारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि औषधि का सेवन वैद्य के परामार्शानुसार करना चाहिए।

दोषयुक्त—हीरा धारण करने से लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावना होती है। चमकहीन (सुन्न), गड्ढेदार, लाल या काले अथवा पीले बिन्दु से युक्त रेखायुक्त या खण्डित हीरा दोषयुक्त माना जाता है।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी,** पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र एवं **शुक्र, वृष, तुला या मीन राशिगत हो तो,** एक रति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मंत्र (ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत, वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए॥

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ राशि वालों को लाभप्रदायक रहता है।**

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** भाषा में इसे नील, नीलमणि, इन्द्रनील, हिन्दी में नीलम, उर्दू-फारसी में याकूत एवं कबूद तथा अंग्रेजी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

नीलम का रंग नीलकमल के समान तथा इंद्र धनुष के बीच के रंग के समान होता है। मुख्यतः दो प्रकार का होता है।

१. **जलनील**—अर्थात् भीतर से श्वेत तथा बाहर चहुं ओर से नीलिमा लिए कुछ हल्का होगा।

२. **इन्द्रनील**—जिस नीलम के भीतर श्याम आभा तथा बाहर नीली आभा लिए कुछ भारीपन लिए होगा।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त, एवं पारदर्शी होगा।

छोटे-छोटे काले, लाल या श्वेत बिन्दु या धब्बों (Blots) से युक्त, क्रॉस, रेखायुक्त चमकहीन एवं विखण्डित नीलम दोषपूर्ण एवं अशुभ माना जाता है।

परीक्षा—(i) असली **नीलम को गाय के दूध में** डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से **नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी। (iv)** असली नीलम के पास **यदि तिनके को रखा जाए, तो वह उससे चिपक जाता है।**

गुण—नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

नीलम शनि साढ़ेसत्ति के अनिष्ट प्रभाव का भी निवारण करता है।

ध्यान रहे बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूल न बैठे तो भारी नुकसान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, नेत्र रोग, मस्तिष्क विकार, कुष्ट रोग मूत्राक्षय सम्बंधी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७ ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि, या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मंत्र ॐ प्रां० प्रीं० प्रौं० सः शनये नमः** मंत्र से २३००० **की संख्या में अभिमंत्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकान (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है। गोमेद अनेक रंगों में प्राप्य है परन्तु उत्तम गोमेद चिकनापन, अच्छी चमक, उज्जवलता लिए ऊपर लिखे रंग जैसा ही होता है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा। (२) असली गोमेद को लकड़ी के बुरादे से घिसाने पर उसकी चमक में वृद्धि होगी, जबकि रत्न की चमक नष्ट हो जाएगी

दोषपूर्ण गोमेद—पीले कांच खण्ड सा दिखाई देने वाला, दूर से स्वच्छ गोमूत्र सा प्रतीत न होने वाला, दोषपूर्ण गोमेद धारण नहीं करना चाहिए।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमंत्र का पाठ हवन, एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुंडली में राहु १, ४, ५, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अंधेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, स्वच्छ, औसत से कुछ अधिक वज़नी वह वैदूर्य ही उत्तम होता है। रत्न के मध्य सूत के समान श्वेत रेखा जितनी सीधी व चमकदार हो, लहसनिया उतना ही श्रेष्ठ होता है। इसे सूत्रमणि भी कहते हैं।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

यदि लहसनिया में छेद/खड्डा, श्वेत बिन्दु तथा पांच या इससे अधिक धारियां मिलें, वह हानिकारक होता है। ऐसा लहसनिया लाभ के स्थान पर हानि कर सकता है।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगुठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्रां स्रीं, स्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूम्रवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। संतान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक ३५ रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य ९० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में, एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा

धन स्थान का स्वामी आठवें भार में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

अंग्रेज़ी वर्णमाला के अक्षर   अंक निर्धारण

इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

यदि लहसनिया में छेद/खड्डा, श्वेत बिन्दु तथा पांच या इससे अधिक धारियां मिलें, वह हानिकारक होता है। ऐसा लहसनिया लाभ के स्थान पर हानि कर सकता है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

अंकों के अनुसार १९९६ ई० का वर्ष फल

मूल अंकों के अनुसार आगामी वर्ष का वर्षफल इस प्रकार से जानें

१. अपनी जन्म-तारीख का अंक निकालें।
२. अपने जन्म-वर्ष एवं मास का मूल अंक निकालें।
३. अपने जन्मवार का अंक तथा
४. जिस वर्ष का वर्षफल निकालना हो उसका मूल अंक।

सात ग्रहों एवं सप्तवारों के मूल अंक इस प्रकार से निर्धारित किए गए हैं—

नाम ग्रह	वार		निर्धारित अंक
सूर्य	रविवार	(Sunday)	= १
चन्द्र	सोमवार	(Monday)	= २
मंगल	मंगलवार	(Tuesday)	= ९
बुध	बुधवार	(Wednesday)	= ५
गुरु	वीरवार	(Thursday)	= ३
शुक्र	शुक्रवार	(Friday)	= ६
शनि	शनिवार	(Saturday)	= ७

१९९६ ई० में अंकों के आधार पर शुभाशुभ जानना

उदाहरण—

मान लीजिए किसी जातक का जन्म २ अक्तूबर १९७४ बुधवार को हुआ है तो जातक का १९९६ ई० का वर्षफल इस प्रकार से होगा।

२-१०-१९७४, (बुधवार)
= २ + १ + ० + १ + ९ + ७ + ४ + ५ (बुध)
= ३ + २१ + ५
= ३ + २ + १ + ५
जन्म तारीख अनुसार = ६ + ५ = ११ = २
सन् ई० १९९६ का मूलांक = १ + ९ + ९ + ६ = २५
= २ + ५ = ७

अब जन्म तारीख वार तथा सन् ई० १९९६ के मूलांकों को जमा करें

२ + ७ = ९

इस प्रकार मूलांक ९ के अनुसार अपना भविष्यफल जानें।

नोट—जिन लोगों के पास यदि अपनी जन्म तारीख, वार आदि न हो तो वह अपने नाम अक्षर के अनुसार मूल अंक निकाल सकते हैं। सामान्यतः अंग्रेज़ी अक्षरों के आधार पर ही मूल अंकों का निर्धारण किया जाता है। जैसे—

अंग्रेज़ी वर्णमाला के अक्षर	अंक निर्धारण
A, I, J, Q, Y	1
B, K, R	2
C, G, L, S	3
D, M, T	4
E, H, N, X	5
U, V, W	6
O, Z	7
F, P	8

इस प्रणाली से मूल अंक बनाना सरल हो जाता है, जैसे कि PANKAJ SHARMA

P = 8			S = 3	
A = 1			H = 5	
N = 5			A = 1	
K = 2			R = 2	
A = 1			M = 4	
J = 1			A = 1	
18			16	

इन प्राथमिक अंकों को पुनः जोड़ा जाए—

$$18 + 16 = 34 = 3 + 4 = 7$$

इस प्रकार PANKAJ SHARMA का मूलांक (नामांक) ७ हुआ। इसी अंक के आधार पर अपने मूलांक का फल ज्ञात करें।

नोट—यदि नाम राशि और जन्म तारीख तथा वार आदि के द्वारा प्राप्त मूलांक भिन्न-भिन्न पड़ता है तो फल संयुक्त रूप से ग्रहण करना चाहिए।

विभिन्न मूलांक वालों के लिए वर्ष १९९६ ई०

मूलांक १—इसका प्रतिनिधि ग्रह सूर्य है। इस अंक पर १५ फरवरी तक शनि की दृष्टि होगी तथा १६ फरवरी से शनि साढ़सति का प्रभाव भी शुरू होगा। आगामी वर्ष इस अंक वालों के लिए विशेष महत्वपूर्ण घटनाएं उत्पन्न करेगा। यद्यपि मानसिक तनाव भी रहेगा परन्तु स्त्री वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी। विद्या में भाग्यवर्द्धक वर्ष होगा। माता पिता से विशेष धन और सुखों की प्राप्ति होगी।

मूलांक २—इसका प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा है। वर्ष के आरम्भ में शुभ ग्रह योग के कारण शुभ समाचार मिलेंगे। व्यापार नौकरी में तरक्की और धन लाभ होगा। माता-पिता से धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और वाहन सुख प्राप्त होगा। सन्तान सुख और भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। १ अगस्त से कोई शुभ समाचार प्राप्त होंगे। २४ अक्तूबर से विघ्न-बाधाओं का सामना होगा।

मूलांक ३—इसका प्रतिनिधि ग्रह गुरु है। वर्ष आरम्भ में गुरु की स्थिति शुभ होने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। विद्या में सफलता और व्यवसाय में लाभ व उन्नति के साधन बनेंगे। जीवन साथी का सुख भी प्राप्त होने के योग हैं। ४ मई से गुरु वक्री होने से कार्यों में बाधाएं पड़ने का योग है। ४ सितम्बर से गुरु मार्गी होने से गृह में कोई मंगल कार्य होगा।

मूलांक ४—इसके प्रतिनिधि ग्रह राहु एवं सूर्य हैं। अनेक उलझनों एवं कठिनाइयों के बावजूद वर्ष में मध्यम रूप से आय होती रहेगी परन्तु धन की फिजूल खर्ची व आलस्य में वृद्धि होगी। २४ अप्रैल से ३ जून तक मंगल की इस अंक पर चौथी अशुभ दृष्टि होने से विशेष संघर्षपूर्ण स्थितियां रहेंगी। परन्तु ५ जून से हालात में सुधार के योग होंगे। जुलाई से अक्तूबर तक हालात मध्यम परन्तु २५ नवंबर से वर्ष के अन्त तक शुभ समय होगा।

मूलांक ५—इसका प्रतिनिधि ग्रह बुध है। सामान्यता वर्षफल शुभ रहेगा। शुभ कार्यों पर व्यय अधिक होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु साल के शुरु से १५ फरवरी तक इस अंक पर शनि की दृष्टि रहने से आशा अनुकूल लाभ नहीं हो सकेगा तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। १६ फरवरी से इस अंक वालों पर शनि की ढैय्या शुरू होगी। जिससे मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझने बढ़ेंगी।

मूलांक ६—इस अंक का प्रतीकात्मक ग्रह शुक्र है। इस अंक पर राहु वर्ष भर संचार करेगा। परन्तु ३ फरवरी से ३० अप्रैल तक शुक्र की स्थिति शुभ होने से ग्रह में कोई मंगल कार्य होगा, बिगड़े कार्य बनेंगे। मनोरंजन और विलास आदि कार्यों पर खर्च होगा। ७ जून से शुक्र अस्त होने से आय कम व खर्च अधिक होगा बनते कार्यों में विघ्न होगा। अगस्त से अक्तूबर तक हालात कुछ सुधरेगें। मूल अंक ४ व ५ वाले से सावधानी बरते, इनसे धोखा होने के योग हैं।

मूलांक ७—इसका प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। वर्ष के प्रारम्भ में मंगल की स्थिति शुभ होने से आय के साधनों में विस्तार होगा। व्यवसाय अथवा सर्विस में पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विद्या में सफलता के योग हैं। ३१ अगस्त से मंगल नीच राशि में आने से घरेलू उलझनें व परेशानियां पैदा होंगीं। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। १९ अक्टूबर से कुछ सुधार के योग बनेंगे।

मूलांक ८—इसका प्रतिनिधि ग्रह शनि है। इस अंक पर १५ फरवरी तक शनि का दृष्टि रहेगी। परन्तु २४ अप्रैल से मंगल की भी विशेष दृष्टि पड़ेगा। अत्यधिक संघर्ष के बाद कार्यों में सफलता और विजय होगी। धन और सुख साधनों में वृद्धि होगी। माता-पिता व मित्रगण से धन मिलने के योग हैं। विदेशी मित्र का आगमन होगा। सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। प्रेमिका का सुखद मिलन होगा।

मूलांक ९—इस मूलांक का प्रतिनिधि ग्रह भी मंगल है। इस अंक पर गुरु की शुभ दृष्टि वर्ष भर रहेगी। जिससे वर्ष के पूर्वार्ध (पहिले) भाग में भाग्य-उन्नति, धन लाभ व सफलता के योग हैं। कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। प्रियजनों से मुलाकात होगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। ३१ अगस्त से १८ अक्तूबर तक मंगल की स्थिति अशुभ होने से व्यवसाय में उथल-पुथल रहेगी। अधिक दौड़-धूप करने पर सफलता मिलेगी।

जल ग्रहण करते समय

तदनन्दर 'ॐ अमृतोपस्तरणामसि स्वाहा' इस मंत्र से आचमन करके नीचे लिखे हुए पाँच मन्त्रों से क्रमशः एक-एक मंत्र पढते हुए एक-एक अन्न ग्रास मुंह में डालें—

मूलांक को शुभ वार, मास व भाग्यशाली वर्ष

मूलांक १ को रविवार, गुरूवार, जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अक्तूबर महीनों की १, १०, १९ एवं २८ तारीखें शुभ होंगी। तथा जीवन का १, १०, १९, २०, ३७, ४६, ५५, ६४, ७६ और ७२वां वर्ष भाग्यशाली होगा।

मूलांक २ वाले व्यक्ति को सोमवार, बुधवार और फरवरी, अप्रैल, अग. एवं नवंबर मास की २, ४, ८, ११, १६, २०, २२, २६, २९, ३१ (अग.) तारीखें शुभ होंगी। तथा उनके लिए जीवन के २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५८, ६५, ७४, ८३, ९२ शुभ फलदायक होंगे।

मूलांक ३ वाले व्यक्ति को मंगल व शुक्रवार और मार्च, मई, जून, जुलाई, सितं. और दिसम्बर मास की ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २६, ३० तारीखों तथा जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५, ८४ एवं ९३वाँ वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होगा।

मूलांक ४ वाले व्यक्ति को सोमवार, बुधवार तथा फरवरी, अप्रैल एवं अगस्त महीने की २, ४, ८, १३, १६, २०, २२ एवं २६, तारीखें तथा जीवन के ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६, ८५, ९४वाँ वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होगा।

मूलांक ५ वाले व्यक्ति को गुरूवार, शनिवार तथा जनवरी, मार्च, अगस्त व अक्तूबर मास की ५, १०, १४, १९, २३, २५, २८ तारीखें तथा जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६, ९५वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होंगे।

मूलांक ६ वाले व्यक्ति को शुक्रवार व मंगलवार, अप्रैल, जून, जुलाई, सितंबर महीनों की ६, ९, १५, १८, २४ तारीखें तथा जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९, ७८, ८८७ एवं ९६वां वर्ष महत्वपूर्ण होगा।

मूलांक ७ वाले व्यक्ति सोमवार, वीरवार शनिवार तथा जन, मार्च, मई, जुलाई की ७, १४, १६, २५, २८ तथा जीवन के ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७०, ७९ व ८८वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा।

मूलांक ८ वाले व्यक्ति को सोमवार, बुधवार, तथा फर. अप्रै. व अग. की ४, ७, १६, १७, २६ तारीखें तथा जीवन के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५६, ६२, ७१, ८७ व ८९वाँ वर्ष शुभ व महत्वपूर्ण होंगे।

मूलांक ९ वाले व्यक्ति को मंगल, शुक्रवार एवं मार्च, जून, सितं. की ९, १२, १८, २४, २७ तारीखें तथा जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ एवं ९०वाँ वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होंगे।

भोजन ग्रहण करने का मंत्र

(१) ॐ प्राणाय स्वाहा (२) ॐ अपानाय स्वाहा (३) ॐ व्यानाय स्वाहा (४) ॐ समानाय स्वाहा (५) ॐ उदानाय स्वाहा। इसके बाद पुनः आचमन करके यथाविधि भोजन करे। दोनों पैर, दोनों हाथ और मुंह धोकर पूर्व की ओर मुख करके मौन भाव से भोजन करें। जिसके माता-पिता जीवित हों वह दक्षिण की ओर मुख करके भोजन न करे। भोजन करते समय बाएं हाथ से अन्न का स्पर्श न करे और चरण, मस्तक तथा अस्पृश्य स्थानों को भी न छुए। भोजन के समय दोनों पाँव यथासम्भव घुटनों के भीतर रखे।

तदनन्दर 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इस ... से क्रमशः एक-एक मंत्र पढते हुए एक-एक अन्न ग्रास मुंह में डालें—

... दक्षिण की ओर मुख करके भोजन न करें। भोजन करते समय बाएं हाथ से अन्न का स्पर्श न करें और ... छुए। भोजन के समय दोनों पाँव यथासम्भव घुटनों के भीतर रखे।

बारह राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश सन् १९९६ ईसवी

आगे बारह राशियों का वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थिति अनुसार लिख रहे है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक विशेष फलादेश जानने के लिए शुद्ध जन्मपत्री होना आवश्यक है। वैज्ञानिक ढंग से जन्मपत्री/वर्षफल बनवाने के लिए जातक\जातिका का नाम, व्यवसाय जन्म समय, स्थान, मास, वर्ष आदि का विवरण भेजना चाहिए। विशेष घटनाओं सहित वर्षफल की फीस डाक व्यय सहित १७१ रुपये तथा बड़ी जन्मपत्री की फीस ३०१ रुपये होगी। जन्मपत्री मिलान की फीस १३१ रुपये है। मिलान हेतु फीस लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली, जन्म समय, तारीखादि के विवरण सहित भेजें। परिश्रम की फीस एडवांस मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करें—पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

मेष राशि (Aries)—चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

गोचर फल—वर्षारंभ से १५ फरवरी तक शनि की नीच एवं गुरु की शुभ दृष्टि होगी। १६ फर. से वर्षान्त तक शनि की साढ़सति इस राशि पर रहेगी। २४ अप्रैल से ३ जून तक मंगल इस राशि पर शुभ। ३१ अगस्त से ८ अक्तू. तक मंगल नीच राशि (कर्क) में रहेगा। मेष राशि को आगामी वर्ष मध्यम फल (mixed) प्रदायक रहेगा। वर्षारंभ में कोई मंगल कार्य होगा। शनि के प्रभाव स्वरूप मानसिक तनाव, घरेलू तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों का भी सामना रहे। गुरु की शुभ दृष्टि के कारण कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य सुख एवं आमदनी के साधन बनते रहेंगे।

जनवरी—मास में राशिस्वामी मंगल की उच्च स्थिति एवं गुरू की शुभ दृष्टि रहने से मासारंभ में गृह में कोई मंगल कार्य होगा। बिगड़े कामों में सुधार, प्रियजनों से मुलाकात एवं किसी शुभकार्य पर व्यय होगा।

फरवरी—मास में अत्यधिक परिश्रम करने पर निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। सवारी, भूमि आदि का सुख प्राप्त होगा। शनि की दृष्टि एवं मंगल अस्त होने से आशानुकूल लाभ प्राप्त न हो पाएगा।

मार्च—घरेलू एवं व्यावसायिक उलझनें बढ़ेंगी। मन में उचाटता पैदा हो। व्यर्थ की भागदौड़ बढ़ेगी। खर्च भी बढ़चढ़ कर हो। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग में मानसिक तनाव एवं परिवार सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। २४ अप्रै. से मंगल की स्थिति शुभ होने से पदोन्नति एवं धन लाभ के योग बनेंगे।

मई—किसी श्रेष्ठ एवं उच्चाधिकारी से सम्पर्क बढ़ेगा। नए कार्य की योजना बनेगी। धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। परिवार में कोई खुशी प्राप्त होगी।

जून—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आंखों में कष्ट का भय है।

जुलाई—किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पूर्व में किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। परिवार में खुशी के अवसर प्राप्त होंगे। सुख के साधन बढ़ेंगे।

अगस्त—अत्यन्त कठिनाइयों के बावजूद गुजारे योग्य धन प्राप्ति के साधन मिलते रहेंगे। दीर्घ लम्बी यात्रा की योजना बनेगी। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात होगी।

सितंबर—राशिपति मंगल नीच राशि में संचार करने से पारिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। मानसिक तनाव एवं धन का अपव्यय अधिक रहे। बनते कामों में अड़चनें पैदा हों।

अक्तूबर—के प्रथम सप्ताह तक कार्य व्यवसाय में विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। १० अक्तू. से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परिवार में स्त्री एवं संतान सम्बन्धी शुभ समाचार मिले।

नवंबर—कार्य व्यवसाय में अत्यन्त कठिन परिश्रम द्वारा धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। किसी निकट बन्धु से मनमुटाव या अनबन का भय। मासांत में अकस्मात् यात्रा के योग है

दिसंबर—पूर्वार्द्ध भाग में कोई शुभ समाचार मिले। भाग्योन्नति हो। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. १२ से मंगल कन्या राशि में आने से स्वास्थ्य में गड़बड़ हो। बनते कार्यों में विघ्न पैदा हों।

वृष राशि (Taurus)—इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो

वर्षफल—३ फर. से २८ फर. तक राशिपति शुक्र मीन राशि में (उच्च), २८ मार्च से ३ मई तक तथा ४ जून से २९ जुलाई तक शुक्र वृष राशिस्थ, २४ अक्तू. से १७ नवं. तक नीच राशिस्थ (कन्या) में रहेगा।

वृष राशि वालों को आगामी वर्ष भाग्योन्नति कारक तथा धन लाभदायक रहेगा। गत वर्ष के अनेक बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। घर में कोई मंगल कार्य होगा। शनि की दृष्टि होने से मानसिक तनाव व खर्च भी अधिक रहेगा।
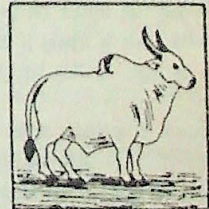
जनवरी—मासारम्भ में राशिपति शुक्र की स्थिति दशम भाव में शुभ होने से आय के साधनों में वृद्धि होगा। कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। स्त्री सुख अथवा पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी।

फरवरी—इस मास में शुक्र उच्च राशिस्थ होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। कोई शुभ समाचार मिले।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार मध्यम एवं धन लाभ सामान्य होगा। परिश्रम करने पर भी आशानुकूल सफलता प्राप्त न हो सके। घरेलू उलझनों के कारण मन व्यथित रहे।

अप्रैल—शुक्र स्वराशिगत रहने से कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होने के योग है। पदोन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

मई—पूर्वार्द्ध भाग में भूमि, वाहन अथवा व्यवसाय में खर्च की मात्रा बढ़ेगी। पदोन्नति एवं मान-सम्मान में वृद्धि होगी। उतरार्द्ध भाग में किसी निकट बंधु से विरोध पैदा हो।

जून—शुक्र वक्री होकर पुनः इसी राशि में संचार होगा। धन लाभ के साथ-साथ कुछ उलझनें एवं विलासादि कार्यों पर व्यय अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी।

जुलाई—शुक्र वृष में मार्गी होने से कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन, स्त्री एवं संतानादि सुखों की प्राप्ति होगी। विद्या में सफलता तथा मनोवाँछित योजना में लाभ की आशा बनेगी।

अगस्त—में अत्यधिक परिश्रम करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। फिजूल खर्ची अधिक रहेगी। भाई बन्धुओं में व्यर्थ (नाहक) विरोध पैदा होगा।

सितम्बर—में उलझनों के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। सोची योजनाओं में आंशिक लाभ प्राप्त होगा।

अक्तूबर—प्रयास करने पर निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। लम्बी यात्रा के अवसर भी मिलेंगे। किसी श्रेष्ठ मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनें।

नवंबर—मास के पूर्वार्द्ध भाग में शुक्र नीच राशि होने से व्यवसाय में विघ्न बाधाएं उत्पन्न हों। अपने नज़दीकी लोग भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. १८ से शुक्र तुला में होने से कोई बिगड़ा काम बनें।

दिसंबर—पूर्वार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। धर्म-कर्म में प्रवृत्ति बढ़ेगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य हानि एवं बनते कार्यों में विघ्न पैदा हो।

मिथुन राशि (Gemini)—क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, की, ह

गोचर फल—मिथुन राशि पर गुरू की शुभ दृष्टि २४ दिसंबर तक रहेगी। २२ जन. से ७ फर. तक, तथा ५ अप्रैल से ७ जून तक एवं १९ अग. से १० सित. के मध्य बुध की स्थिति शुभ। आगामी वर्ष अनेक कठिन समस्याओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। भूमि, जायदाद सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा दानादि करना शुभ होगा।

जनवरी—मासारम्भ में उलझनों एवं अड़चनों के बावजूद आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु राशि स्वामी बुध अष्टम भावस्थ होने से स्वास्थ्य विकार एवं विघ्न पैदा होंगे।

फरवरी—मास के आरंभ भाग में धन लाभ एवं कोई शुभ समाचार मिलेगा। किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में उदर विकार एवं शरीर कष्ट का भय होगा।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग का फल शुभ रहेगा। किसी मित्र की सहायता से रुका हुआ कार्य बनेगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पायेगा।

अप्रैल—व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। पदोन्नति एवं धन लाभ के योग है। स्त्री एवं संतान की ओर से खुशी प्राप्त हो।

मई—अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। कारोबार में विघ्न व बाधाएं उत्पन्न हों। भाई-बहिनों के सुख में कमी हो। मासांत में भूमि, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति हो।

जून—प्रथम सप्ताह में आय-व्यय सामान्य रहेगा। ७ जून से राशिपति बुध वृष में रहने से आय की मात्रा कम परन्तु विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ के कामों में समय व्यतीत हो।

जुलाई—पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं सुख की प्राप्ति, स्त्री व सन्तान सुख, विद्या में सफलता और आमोद-प्रमोद आदि साधनों में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में मानसिक तनाव एवं शरीर कष्ट हो।

अगस्त—किसी नवीन कार्य की योजना बने, व्यवसाय में उन्नति व धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। विद्या में सफलता। स्त्री एवं सन्तान की ओर से प्रसन्नता मिले। मासान्त में चोट का भय होगा।

सितंबर—पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय में उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। निकट सहयोगी से कपट पूर्ण धोखा मिले, आर्थिक समस्याओं जटिल होंगी। उत्तरार्द्ध भाग में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

अक्तूबर—मास के पूर्वार्द्ध में आमदनी में कमी खर्च में वृद्धि रहेगी, व्यर्थ की भाग दौड़ में फिजूल खर्ची बढ़ेगी। मासान्त में वांछित फल घटित होंगे। किसी प्रिय जन से मुलाकात होगी।

नवंबर—इस मास का पूर्वार्द्ध भाग शुभ रहेगा। पुरुषार्थ करने पर मंगल कार्य पर धन का व्यय होगा। उत्तरार्द्ध भाग में अत्याधिक संघर्ष करने पर भी आशानुकूल लाभ नहीं मिल पायेगा।

दिसंबर—मास के पूर्वार्द्ध भाग में कार्य क्षेत्र में व्यस्ततायें बढ़ेंगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी स्त्री एवं परिवार सम्बन्धी सुखों में वृद्धि, अकस्मात् धन प्राप्ति के भी योग हैं। वृथा यात्रा में परेशानी रहेगी। चौकस रहें।

कर्क राशि (Cancer)—हि, हु, हे, हो, डा, डि, डु, डे, डो

गोचर फल—इस राशि पर वर्षारंभ से ६ फर. तक मंगल की नीच दृष्टि पड़ेगी, २४ अप्रै. से ३ जून तक मंगल की दृष्टि तथा ३१ अगस्त से १८ अक्तूबर तक इस राशि पर मंगल संचार करेगा। ग्रहयोग के अनुसार कर्क राशि को वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से गुजरेगा। दुर्घटना से चोटादि का भय। अक्तूबर के बाद की समयावधि लगभग शुभप्राय होगी।

जनवरी—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से गुज़रना पड़ेगा। खर्च की अधिकता से मानसिक तनाव एवं क्रोध की भावना अधिक होगी। उत्तरार्द्ध में यात्रा के योग हैं।

फरवरी—प्रयत्न करने पर भी हर कार्य में सफलता नही मिलेगी। मंगल की नीच दृष्टि के कारण वाहनादि से चोट लगने का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

मार्च—इस मास धन लाभ अल्प रहे व फिज़ूल खर्ची बढ़ेगी। अनेक बाधाओं के बावजूद कामकाज में प्रगति होगी। गुप्त चिंता का भय है।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग में धन हानि एवं किसी उच्च अधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहे। बनते कामों में रुकावटें पैदा हों। उत्तरार्द्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा।

मई—मंगल की दृष्टि के कारण मास में अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहे, व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिज़ूल खर्ची बढ़ेगी। अकस्मात् सफर पड़ने के योग हैं। किसी निकट बन्धु से मनमनुटाव पैदा हो।

जून—कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा।

जुलाई—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होंगी। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। शरीर अवस्थ। ता. ५, १२, १८, २५ अशुभ होंगी।

अगस्त—उलझनों के होने पर भी साहस एवं पराक्रम की वृद्धि होगी। आर्थिक क्षेत्र में उन्नति उत्तरार्द्ध में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। ता० ३, ५, १२, १९, २६ अशुभ होंगी।

सितम्बर—इस मास मंगल इस राशि पर अशुभ स्थिति में संचार करेगा। धन लाभ अल्प रहेगा। मानसिक तनाव तथा घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। चोटादि का भय है, सावधान रहें।

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में इस राशि पर मंगल नीच राशिगत रहने से आय कम तथा खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ की दौड़धूप रहेगी। उत्तरार्द्ध भाग में गृह में कोई शुभ कार्य सम्पन्न हो।

नवंबर—इस मास में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। कार्य क्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्पर्क पैदा होंगे। अधिकांश समय मनोरंजक कार्यों में गुजरे।

दिसंबर—किसी प्रिय मित्र की सहायता से कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। धर्म-कर्म की ओर विशेष रुचि रहेगी। मासांत में अचानक खर्च में वृद्धि होगी।

सिंह राशि (Leo)—म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे

गोचरफल—इस राशि पर गुरू की शुभ दृष्टि २६ दिसंबर तक तथा शनि की अशुभ दृष्टि १५ फरवरी ९६ तक रहेगी। १६ फर. से शनि की अढैय्या वर्ष भर रहेगी। वर्ष मध्यम फली रहेगी। प्रारम्भिक डेढ़ मास, आषाढ़ (जून-जुलाई) एवं कार्तिक मासों में बनते कामों में अड़चनें पैदा हों। संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहें। वैशाख, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं माघ मास शुभफली होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें।

जनवरी—कार्य-व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। घर में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होगा। भाई बन्धुओं एवं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

फरवरी—इस मास का फल मिश्रित होगा। धन लाभ के साथ-साथ खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। घरेलू एवं कारोबारी उलझनों के कारण मन अशान्त रहे। व्यर्थ कलह से बचें।

मार्च—मासफल मध्यम है। पूर्वार्द्ध भाग में गुजारे लायक आमदनी के साधन बनते रहेंगे। परन्तु उत्तरार्द्ध भाग में अचानक धन-हानि एवं घरेलू उलझनों के कारण परेशानियां हों।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग में कोई गुप्त चिन्ता रहे। अपव्यय हो। उत्तरार्द्ध में व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। स्थानान्तरण एवं पदोन्नति के भी योग हैं। विद्यार्थियों के लिए संघर्षपूर्ण समय होगा।

मई—मानसिक तनाव व उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ काम पर खर्च भी होगा। सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले।

जून—बनते कामों में रुकावटें पैदा हों। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहे। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। दुर्घटना आदि के प्रति विशेष सावधानी बरतें। ता. ११, १३, १९, २७ अशुभ होंगी।

जुलाई—स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेज़ी रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। विरोधी हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी।

अगस्त—किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी परन्तु आय के साधन सीमित रहेंगे। अत्यधिक संघर्ष करने पर भी गुजारे लायक ही धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। भाई बहिनों का सुख मध्यम रहे।

सितम्बर—कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोज़गार के लिए दौड़धूप अधिक हो। किसी प्रियजन की सहायता से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। पदोन्नति एवं मान सम्मान में वृद्धि होगी। विद्यार्थियों को आशा के अनुरूप सफलता मिलेगी।

अक्तूबर—सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक होगा। मासान्त में स्थिति में सुधार की आशा है।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता होगी। मासान्त में रुके हुये कार्यों में सुधार, आय कम खर्च अधिक, राज्य की ओर से मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

दिसम्बर—यह मास अत्यन्त शुभफलदायक होगा। पदोन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृहस्थ जीवन सुखद हो। अधूरे काम पूर्ण होंगे। उच्चाधिकारियों से मेल-जोल बढ़ेगा। अचानक यात्रा।

कन्या राशि (Vigro)—टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

गोचरफल—वर्षफल मध्यमफलीं होगा। राहु की स्थिति वर्षभर इस राशि पर बनी रहेगी। परन्तु मित्र क्षेत्री होने से अचानक धन लाभ के अवसर मिलेंगे। १६ फर. ९६ के उपरांत शनि की दृष्टि भी रहेगी, जिससे संघर्ष अधिक तथा मानसिक तनाव एवं घरेलू व व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी।

जनवरी—विघ्न बाधाओं के बावजूद गुजारे लायक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। स्त्री सुख एव घर-परिवार की ओर से खुशी का समाचार मिलेगा।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में बनते कामों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। १६ फर. से शनि की दृष्टि रहने के कारण प्रयास करने पर बिगड़े कार्य बनेंगे। व्यवसाय में आंशिक लाभ होने के योग हैं।

मार्च—बुध की स्थिति शुभ होने से बिगड़े काम बनेंगे। आमदन व धन लाभ के साधन बढ़ेंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित होगा। मासांत में स्त्री व संतान की ओर से कुछ चिन्ता पैदा होगी।

अप्रैल—मासारम्भ में बुध नीच राशिगत होने से आय मध्यम व खर्च की मात्रा अधिक होगी। स्वास्थ्य में विकार व बनते कामों में विघ्न बाधाओं का सामना रहे। मासान्त में बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

मई—मासारम्भ में बुध वक्री हुआ है जिससे कठिन समस्याओं के बावजूद गुजारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा।

जून—भूमि जायदाद अथवा सवारी आदि सुख प्राप्त होने के योग हैं, किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा हुआ काम बनेगा, अकस्मात् धन लाभ होगा। नवीन कार्य की योजना बनें।

जुलाई—स्वास्थ्य में सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री व संतान की और से शुभ समाचार मिले। विगत किए कार्यों में सफलता प्राप्त हो। प्रिय बन्धु से मुलाकात हो। मासांत में कुछ घरेलू उलझनें हों।

अगस्त—पूर्वार्द्ध में अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहे, व्यर्थ की भाग दौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिज़ूल खर्चा बढ़ेगी। अकस्मात् धन लाभ के योग हैं।

सितंबर—मास के पूर्वार्द्ध में राशिपति बुध उच्चस्थ रहेगा जिससे स्वास्थ्य लाभ व बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा। सोची हुई योजना में सफलता प्राप्ति के योग हैं। धन लाभ व सवारी आदि सुख के योग हैं।

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में धन हानि एवं किसी उच्च अधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहे। बनते कामों में रूकावट पैदा हों। उत्तरार्द्ध भाग में स्थिति में सुधार होगा।

नवंबर—मासारंभ में ही बुध शुभ स्थिति में है। जिससे विघ्न बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। उत्तरार्द्ध भाग में मानसिक तनाव व उत्तेजना अधिक रहे।

दिसंबर—धन लाभ अल्प रहे। आलस्य में वृद्धि हो। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च अधिक रहे। व्यर्थ यात्रा के कारण परेशानी का सामना हो। मासांत में स्त्री सुख एवं शुभ समाचार मिले।

तुला राशि (Libra)—र, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

गोचरफल—३ फर. से २८ फर. तक राशिपति शुक्र उच्च राशि (मीनस्थ) में, २८ मार्च से ३ मई तक शुक्र स्व-राशिगत। २० मई से १ जुला. तक शुक्र वक्री होगा। २४ अक्तू. से १७ नवं. तक शुक्र नीच राशिस्थ (कन्या) में होगा। वर्षफल उत्तम फल देने वाला होगा। ग्रहयोग के अनुसार वर्ष में अनेक उतार-चढ़ावों के बावजूद सफलता के योग हैं।

जनवरी—ग्रहयोग के अनुसार इस मास किसी शुभ कार्य पर व्यय होगा। भूमि, वाहनादि पर खर्च के भी योग हैं। आय सीमित पर खर्च अधिक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए मास फल शुभ होगा।

फरवरी—इस मास शुक्र उच्च राशिस्थ परन्तु केतु युक्त होने से विघ्न बाधाओं के बावजूद धन-लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय बन्धु से सम्पर्क होगा।

मार्च—इस मास आय सामान्य रहे, परन्तु खर्च आशा के विपरीत बढ़-चढ़कर हो। घरेलू उलझनों के कारण मानसिक तनाव रहे। बनते कामों में विघ्न पैदा हों। विद्यार्थी वर्ग को यह मास संघर्षपूर्ण होगा।

अप्रैल—अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय हो। वाहन का सुख प्राप्त हो। नए कार्य की योजना बने। मासान्त में किसी निकट भाई-बन्धु से विरोध पैदा हो। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें।

मई—पूर्वार्द्ध भाग में निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। उत्साह में वृद्धि एवं उद्योग में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन लाभ अल्प रहे तथा फिज़ूल खर्ची बढ़ेगी। ता० ३, ७, १५, २३, २७ अशुभ रहने को योग हैं।

जून—इस मास में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में से गुज़रना पड़े। व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न हों। घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में विशेष सावधानी बरतें। ता० ७, ११, १८, २३ अशुभ रहेंगी।

जुलाई—व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो सके। मन परेशान अधिक रहे। शत्रु प्रबल रहें। इस मास की ता० ३, ८, ११, १६ अशुभ रहेंगी।

अगस्त—व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बने, अकस्मात् शरीर कष्ट व खर्च बढ़े। रोग भय। बनते कार्योंमें बाधाएं उत्पन्न हों। अपने पर भी पराय जैसा व्यवहार करें। ता० ७,८,१४,१८,२०,२१ अशुभ रहेंगी।

सितंबर—किसी मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बने। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो, परन्तु खर्च की भी अधिकता रहे। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। मासान्त में किसी दुर्घटना के कारण शरीर कष्ट हो।

अक्तूबर—मासारम्भ में पदोन्नति अथवा धन लाभ के योग हैं। भूमि-वाहनादि का सुख प्राप्त हो। किसी प्रिय जन से मुलाकात हो। परिवार में कोई मंगल कार्य हो। ता० २४ से शुक्र कन्या में होने से व्यर्थ यात्रा होने के योग हैं। स्वास्थ्य हानि अथवा चोरादि का भय है।

नवंबर—कार्य व्यवसाय में व्यवस्ताएं बढ़ेंगी। परन्तु अत्यन्त भाग दौड़ करने पर भी अधिक लाभ न मिल पायेगा। फिज़ूल खर्ची बढ़ेगी। १८ नवंबर के बाद वाहनादि बहुमूल्य वस्तु पर खर्च होगा। कुछ बिगड़े काम सुधरेंगे।

दिसंबर—शुक्र की स्थिति शुभ रहने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होगी। स्त्री/पति सुख एवं भूमि, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। मासान्त में किसी मंगल कार्य पर व्यय होने के योग हैं।
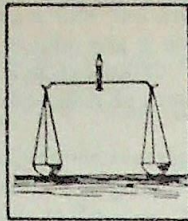
वृश्चिक राशि (Scorpio) तो, न, नु, ने, नी, यो, या, यी, यु

गोचरफल—वर्षारम्भ से ६ फर. तक राशिपति मंगल उच्च राशिस्थ (मकर) में रहेगा, १५ फरवरी तक शनि की अशुभ दृष्टि इस राशि पर पड़ेगी। २४ अप्रै. से ३ जून तक तथा १९ अक्तू. से १६ दिसं. तक मंगल की शुभ दृष्टि पड़ेगी। वर्ष में विघ्न-बाधाओं के बावजूद अकस्मात् लाभ प्राप्ति के योग हैं। संतान, सवारी एवं भूमि-जायदाद सम्बन्धी सुखों की प्राप्ति होगी।

जनवरी—व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, धन लाभ व पदोन्नति के योग हैं। परिवार में कोई शुभ समाचार मिलेगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। भौमास्त होने से सिर पीड़ा एवं मानसिक तनाव भी होगा।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में मिश्रित प्रभाव रहेंगे। आय के साथ-साथ खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेगा। घरेलू व व्यवसायिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में शुभ फल घटित होंगे। निर्वाह योग्य धनागम होगा।

मार्च—कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। स्त्री व संतान के सम्बन्ध में कोई शुभ समाचार मिलेगा। किसी नवीन उद्योग की योजना बनेंगी। विद्यार्थी वर्ग को यह मास संघर्षपूर्ण होगा।

अप्रैल—आय कम व खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ में समय व्यतीत होगा। मासांत में धन-लाभ अथवा पदान्नति के अवसर प्राप्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा।

मई—पूर्वार्द्ध भाग में उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धन-लाभ की प्राप्ति होगी। शुभ कार्यों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ मानसिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा।

जून—इस मास में कुछ बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी प्रिय बन्धु को शरीर कष्ट होगा। व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। निर्वाह योग्य धन लाभ होता रहेगा। तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे।

जुलाई—व्यवसाय में संघर्ष अधिक होगा। परिवार में मनमुटाव व बन्धुओं से टकराव के हालात पैदा होंगे। आय कम और खर्च अधिक रहे। उत्तरार्द्ध भाग में कोई मंगल कार्य हो। भूमि जायदाद अथवा सवारी सुख प्राप्त होगा।

अगस्त—कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी श्रेष्ठ अफसर से सम्पर्क पैदा होंगे। स्त्री वं संतान की ओर से कोई खुशी का समाचार मिलेगा।

सितंबर—मास के शुरू से ही राशिपति मंगल नीच राशि (कर्क) में होगा। अत्यधिक संघर्ष करने पर भी आशानुकूल लाभ नहीं मिल पाएगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या में पूर्ण सफलता न मिल पाएगी। परिवार में मनमुटाव एवं कोई दुःखद घटना घटे।

अक्तूबर—बनते कामों में रूकावटें पैदा हों। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहे। स्वास्थ्द में विकार उत्पन्न हो, दुर्घटना आदि के प्रति विशेष सावधानी बरतें। उत्तरार्द्ध भाग में शुभ-फल होंगे।

नवंबर—स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेजी रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। विरोधी हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी।

दिसम्बर—किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु आय के साधन सीमित रहेंगे। अत्यधिक संघर्ष करने पर भी धन लाभ अल्प रहेगा। किसी निकटस्थ सहयोगी से धोखा मिलने के योग हैं। श्री हनुमान उपासना कल्याणप्रद रहेगा।

दिसंबर—शुक्र की स्थिति शुभ रहने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होगी। स्त्री/पति सुख एवं भूमि, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। मासान्त में किसी मंगल कार्य पर व्यय होने के योग हैं।

संघर्ष करने पर भी धन लाभ अल्प रहेगा। किसी निकटस्थ सहयोगी से धोखा मिलने के योग हैं। श्री हनुमान उपासना कल्याणप्रद रहेगा।

धनु राशि (Sagittarius)—ये, यो, भा, भि, भु, ध, फ, ढ, भे

गोचरफल—वर्षारम्भ से २६ दिसम्बर तक गुरू इसी राशि में संचार करेगा। १६ फरवरी से इस राशि को शनि की ढैय्या शुरू। गतवर्ष की अपेक्षा आगामी वर्ष शुभफली एव लाभदायक होगा। यद्यपि शनि की ढैय्या को कारण व्यवसायिक एवं घरेलू उलझनों तथा मानसिक तनाव का भी सामना रहेगा।

जनवरी—मासारंभ से ही इस राशि पर भाग्येश सूर्य व राशिपति गुरू का योग बना हुआ है जिससे इस मास लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। बिगड़े कार्यों मे सुधार होगा। परिवार में कोई मंगल कार्य होगा।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च भी हो तथा सुख या साधनों में वृद्धि होगी। उत्तरार्ध भाग से शनि की ढैय्या के कारण घरेलू उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी।

मार्च—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। परन्तु खर्च अधिक रहेगा। भाई बंधुओं का सहयोग पूरा नहीं मिल पाएगा। अत्यधिक संघर्ष करने पर भी धन लाभ अल्प रहेगा।

अप्रैल—सर्विस अथवा व्यवसाय में उन्नति व लाभ के योग हैं। परन्तु लाभ सीमित मात्रा में रहेगा खर्च भी बढ़चढ़ कर रहेगा। स्त्री/पति सुख की प्राप्ति होगी। बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

मई—कारोबार मध्यम रहेगा। विघ्न बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति होगी। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क होगा। जटिल समस्याओं के हल होने से राहत एवं मानसिक तनाव कम होगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी।

जून—किसी प्रिय बन्धु से विरोध पैदा होगा, दौड़-धूप तथा अकस्मात् यात्रा के आसार हैं। नए कार्य में हानि हो सकती है। किसी विशेष कारण से धन-प्राप्ति में विघ्न उत्पन्न होंगे। शारीरिक कष्ट व मानसिक तनाव रहे। नशादि से बचें।

जुलाई—मासारम्भ में शारीरिक कष्ट, उदर-विकार से बहुत परेशानी होगी। उलझनें व समस्याएं उभरती-सिमटती रहेंगी। अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से गुज़रना पड़ेगा। किसी से व्यर्थ वाद-विवाद ना करें तथा यात्रा के समय सावधानी बरतें।

अगस्त—शनि का ढैय्या के कारण बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होगा तथा मन उदासीन रहेगा। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार हो सकती है। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होगी। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

सितम्बर—विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अधिक व्यय से मानसिक तनाव रहेगा। सामान्य लाभ, साहस और उत्साह की कमी से आशानुकूल लाभ नही मिलेगा। घर-गृहस्थी में उतार-चढ़ाव रहेगा। मानसिक तनाव से बचें।

अक्तूबर—धन लाभ साधारण रूप से हो, परन्तु धन का व्यय विलासादि पदार्थों पर अधिक हो। व्यर्थ-यात्रा की परेशानी भी उठानी पड़े। स्वास्थ्य में गड़बड़ उत्पन्न हो। तिथि ६, ८, १३, १५, २१, २७, अशुभ रहेंगी। सावधानी बरतें।

नवम्बर—स्वास्थ्य में सुधार व धन लाभ ठीक रहे। नए कार्य की योजना बने। प्रिय बन्धु से मिलाप हो। स्त्री व सन्तान की ओर से कोई शुभ समाचार मिलेगा। तिथि ३, २२, २४, ३१, अशुभ।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त संघर्षमयी परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ेगा। निर्वाह योग्य धन लाभ होता चला जाएगा। किसी से नाहक रूप से तकरार की स्थिति पैदा होगी। फिजूल खर्ची बढ़े। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ शुभफली रहेगा।

मकर राशि (Capricorn)—भो, ज, जि, खि, खे, खो, ग, गी।

गोचर फल—वर्षारम्भ से १५ फरवरी तक शनि की साढ़सति इस राशि वालों को रहेगी। १६ जुलाई से १८ अक्तूबर ९६ तक मंगल की उच्च दृष्टि रहेगी। राशिपति शनि १६ फर० से वर्षान्त तक मीन राशि में संचार करेगा। ग्रह योग के अनुसार विविध परेशानियों व घरेलू उलझनों के बावजूद आगामी वर्ष भाग्योन्नति कारक रहेगा।

जनवरी—वर्षारम्भ से ही मकर राशि पर मं, शु एवं बुध ग्रहों का संचार है। अनेक उलझनों के बावजूद आय के साधन बने रहेंगे। उच्च-अधिकारियों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। गृह में कोई मंगल उत्सव होगा।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। प्रिय मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा तथा स्त्री/पति सुख की प्राप्ति होगी। उत्तरार्ध में अकस्मात् धन हानि एवं गुप्त शत्रु भय होगा।

मार्च—संघर्षमय परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परिवार में मन मुटाव का वातावरण रहेगा। मासान्त में स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें। शत्रुओं के कारण कोई बड़ा कार्य रुक सकता है। मित्रों के सहयोग से किसी समस्या का समाधान होगा।

अप्रैल—इस माह में पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होगी। बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। खर्चों की अधिकता से मानसिक परेशानी होगी। धैर्यपूर्वक परिश्रम करने से स्थिति में सुधार होगा। ता० ११, १५, १९, २३, २८, २९ शुभ रहेगी।

मई—आलस्य का माहौल रहेगा। आशा के अनुरूप खर्चों की अधिकता होगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म रहेगा। किसी से मिला हुआ आश्वासन पूर्ण होगा। विद्या में सफलता एवं कोई मंगल कार्य होगा। मास के उत्तरार्द्ध भाग में निराशावादी विचार मन में उभरेंगे।

जून—कार्य क्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के कुछ अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु घरेलू उलझनों के कारण लाभ प्राप्त नहीं होगा। शरीर कष्ट एवं चिंता बढ़ेगी। उत्तरार्द्ध भाग में किसी प्रियजन से मुलाकात होगी।

जुलाई—मास के पूर्वार्द्ध भाग में स्वास्थ्य में हानि। लाभ कम खर्च अधिक रहे। कोई बिगड़ा काम बनेगा। धन लाभ हो। साझेदारी के कार्यों में हानि, प्रिय बन्धु अथवा पत्नी से मन मुटाव हो, अधिक क्रोध से बचें। ता० ३, ६, १७, २४ अशुभ हैं।

अगस्त—व्यवसाय में आंशिक लाभ, स्वास्थ्य में कुछ सुधार हो। विद्या अथवा सन्तान की ओर से कोई शुभ समाचार मिले। किसी नवीन कार्य की योजना बनें। ता० १७, १९, २३, २५, २९ अशुभ हैं।

सितम्बर—मास के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू उलझन के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो।

अक्तूबर—किसी मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बने। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो, परन्तु खर्च की भी अधिकता रहे। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। मासान्त में किसी दुर्घटना आदि के कारण शरीर कष्ट हो। ता० ३, ७, ८, ११, १९, २३, २७ अशुभ होंगी।

नवम्बर—व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य ही धन की प्राप्ति हो सके। मन परेशान अधिक रहे। शत्रु प्रबल रहें। इस मास की ३, ८, ११, १६, ता. अशुभ होंगी।

दिसम्बर—व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बने, अकस्मात् शरीर कष्ट व खर्च बढ़े। रोग भय। बनते कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न हों। अपने पर भी पराय जैसा व्यवहार करें। ता० ७, ८, १४, १८, २०, २९ अशुभ हों। शिव उपासना व शनिस्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।
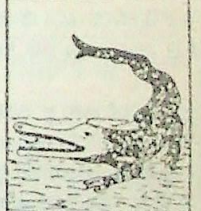
कुम्भ राशि (Aguarius)—गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द

गोचर फल—वर्षारम्भ से १६ फरवरी तक राशि-स्वामी शनि इसी राशि में संचार करेगा। जिससे गतवर्ष के कुछ बिगड़े कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। १६ फर० से वर्षान्त तक शनि मीन राशि में संचार करेगा परन्तु कुंभ राशि पर शनि साढ़सति का प्रभाव अभी रहेगा। फलस्वरूप वर्ष में लाभ व उन्नति के बावजूद विभिन्न आर्थिक समस्याओं का सामना रहेगा। मानसिक तनाव, दुर्घटनादि एवं गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

जनवरी—ग्रह योगानुसार इस मास भाग्य में उन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कोई रूका हुआ कार्य बनेगा। ग्रह में कोई मंगल कार्य होगा। भूमि, स्त्री, संतान, सवारी आदि पर खर्च होगा।

फरवरी—प्रथम सप्ताह पुरुषार्थ में वृद्धि तथा निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। ७ फरवरी से इस राशि पर शनि-मंगल का योग बनने से दुर्घटना द्वारा चोटादि लगने का भय है। सावधानी बरतें। क्रोध व उत्तेजना से बचें।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ मध्यम रहेगा। कार्य-व्यवसाय में आंशिक सफलता प्राप्ति के योग हैं। उत्तरार्ध में शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक होगा। धन का नुकसान होने के संकेत हैं।

अप्रैल—मासारम्भ में व्यवसाय एवं घरेलू उलझनें अधिक रहेंगी। परिवारिक समस्या के कारण मन में अशान्ति रहें। बनते कामों में बिगाड़ पैदा हों। ता० २४ के बाद हालात में सुधार के योग हैं।

मई—अकस्मात धन प्राप्ति के योग हैं। विलासादि कार्यों पर धन व्यय हो। वाहन सुख प्राप्त हो। नए कार्यों की योजना बने। मासान्त में किसी निकट भाई-बन्धु से विरोद पैदा हो। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

जून—इस मास में धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। उत्साह में वृद्धि एवं उद्योग में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन लाभ अल्प रहे तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी।

जुलाई—मास के पूर्वार्द्ध भाग में कार्य क्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी, स्त्री एवं परिवार सम्बन्ध सुखों में वृद्धि। अकस्मात् धन प्राप्ति के भी योग हैं। वृथा यात्रा हो।

अगस्त—पूर्वार्द्ध का अधिकांश भाग शुभ फली रहेगा। व्यवसाय में लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर व्यय होगा। मासांत में अपव्यय, रक्त विकार शरीर कष्टादि अशुभ फल होंगे।

सितम्बर—स्वास्थ्य सुधार व धन लाभ ठीक-ठाक रहे। प्रिय बन्धु से मिलाप हो। नए कार्य की योजना बने। स्त्री अथवा सन्तान की तरफ से कोई शुभ समाचार मिलेगा। गृह में कोई शुभ मंगल कार्य होने के योग हैं।

अक्तूबर—मास के आरम्भ में कोई शुभ समाचार मिलेगा। मान-सम्मान में वृद्धि एवं धन लाभ हो। कोई रूका कार्य बनेगा। मित्रों का सहयोग तथा स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी कोई शुभ संदेश प्राप्त हो।

नवम्बर—अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय हो। वाहन का सुख प्राप्त हो। नए कार्य की योजना बने। मासान्त में किसी निकट भाई बन्धु से विरोध पैदा होने के संकेत है।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। उत्साह में वृद्धि एवं उद्योग में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन लाभ अल्प रहे तथा फिजूल खर्ची बढ़े तथा आलस्य में वृद्धि हो।

शिव उपासना, शनि यन्त्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद रहेगा।

मीन राशि (Pisces) दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

गोचर फल—इस राशि पर केतु वर्षभर संचार करेगा। १६ फर० से शनि भी इसी राशि में संचार करेगा। शनि साढ़सति का अरिष्ट प्रभाव भी रहेगा। वर्ष में अनेक संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। शरीर कष्ट व दिमागी परेशानियों का सामना रहे। गुरू की शुभ राशि स्थिति के कारण वर्ष मध्य में धन लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।
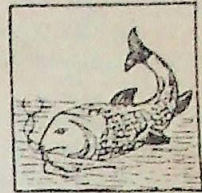
जनवरी—पुरुषार्थ में वृद्धि व धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। भूमि संतान, सवारी आदि सम्बधी शुभ समाचार प्राप्त होगा। उतरार्द्ध भाग में अकस्मात् अपव्यय होगा।

फरवरी—३ फर से शुक्र इस राशि पर उच्च स्थिति में संचार करेगा। जिससे इस मास कोई रूका हुआ कार्य बनेगा। घर में कोई मंगल कार्य होगा। पदोन्नति व धन प्राप्ति के साधन बनेंगे।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुजारे लायक धन लाभ के अवसर मिलेगे परन्तु १६ मार्च से इस राशि पर शनि-मंगल का योग होने से कोई विषम घरेलू समस्या पैदा हो। शरीर कष्ट भी रहे।

अप्रैल—मासारम्भ से ही इस राशि पर शनि, मंगल एवं केतु ग्रह संचार कर रहे हैं, जिससे अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलु उलझनो के कारम मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो।

मई—व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य ही धन की प्राप्ति हो सके। मन परेशान अधिक रहे। शत्रु प्रबल रहें। इस मास की ३, ८, ११, १६, ता० अशुभ होंगी।

जून—व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बने, अकस्मात् शरीर कष्ट व खर्च बढ़े। रोग भय। बनते कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न हों। अपने पर भी पराय जैसा व्यवहार करें। ता० ७, ८, १४, १८, अशुभ होंगी।

जुलाई—मास के पूर्वार्द्ध भाग में स्वास्थ्य में हानि। लाभ कम खर्च अधिक रहे। कोई बिगड़ा काम बनेगा। धल लाभ हो। साँझेदारी के कार्यों में हानि, प्रिय बन्धु अथवा पत्नी से मन मुटाव हो, अधिक क्रोध से बचें। ता० ३, ६, १७, २४, अशुभ।

अगस्त—व्यवसाय में आंशिक लाभ, स्वास्थ्य में कुछ सुधार हो। विद्या अथवा सन्तान की ओर से कोई शुभ समाचार मिले। किसी नवीन कार्य की योजना बनें। ता० १७, १९, २३, २५, २९ अशुभ हैं।

सितम्बर—मास के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू उलझन के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो।

अक्तूबर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम, तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। किसी के साथ लेने-देन के मामले पर विवाद उत्पन्न हो। स्त्री व सन्तान की ओर से चिन्ता हो। स्वास्थ्य में गड़बड़ रहे।

नवम्बर—मास के पूर्व भाग में धन लाभ उत्तम, सरकार की ओर से मान-इज्जत एवं पदोन्नति। कार्यों में सफलता एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो। उत्तरार्द्ध भाग में बनते कार्यों में विघ्न तथा गृह में कलेश हो।

दिसम्बर—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक रहे। किसी मित्र द्वारा विश्वासघात हो। मास के उत्तरार्द्ध भाग में परिस्थितियों में सुधार हो, कोई शुभ समाचार प्राप्त हो। ता. ३, ७, ९, १३, १४ अशुभ।

श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ विधिवत् करना कल्याणकारी रहेगा।

खर्चों बढ़े तथा आलस्य में वृद्धि हो।
शिव उपासना, शनि चन्त्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद रहेगा।

श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ विधिवत् करना कल्याणकारी रहेगा।

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०५३ विक्रमी

- ⇒ विरोधी नामक संवत् तथा राजा बुध एवं मंत्री शनि के फलस्वरूप आगामी वर्ष राजनैतिक उथल-पुथल एवं मन्त्रीमंडल में विशेषतया परिवर्तन के योग
- ⇒ राजनेताओं में परस्पर वैर-विरोध व वैमनस्य की भावनाएँ रहें।
- ⇒ राष्ट्रीय एवं विदेशी (अन्तर्राष्ट्रीय) व्यापार में विशेष वृद्धि तथा धन प्रसार होने से सुख-साधनों में विस्तार होगा।
- ⇒ रूई, कपास, वस्त्र उद्योग, लाख, चाय, लोहा, कम्पयूटर-उद्योग, चाँदी, मोती, जवाहरात-अभूषण, अगरबत्ती सौंदर्य प्रसाधनों के निर्यात् में विशेष वृद्धि होगी। सम्वत् में आरम्भ में पंचग्रही योग होने से भारत, पाकिस्तान, बोस्निया, श्रीलंका, बंगला देश, हागकांग, ईराक आदि देशों में उपद्रव कहीं सत्ता परिवर्तन, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं।
- ⇒ भारत के ४७वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली के अनुसार वर्ष १९९६ ई०. के प्रथम ३ मास सत्तारूढ़ केन्द्रीय सरकार के लिए अग्नि परीक्षा पूर्ण होंगे। केन्द्रिय मन्त्री मण्डल में परिवर्तन के प्रबल योग॥ कहीं राज्य परिवर्तन के भी योग हैं।
- ⇒ गेहूँ, धान, लौहा, पीतल, ताँबा, अल्यूनियम एवं पैट्रोलियम पदार्थ महँगे होंगे। दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि से सामान्य प्रजा में क्षोभ एवं असंतोष फैलेगा।
- ⇒ केन्द्र में गठबन्धन सरकार बनने के प्रबल योग हैं।
- ⇒ राजनीति के रंगमच में भारतीय जनता पार्टी का प्रभुत्व बढ़ेगा।
- ⇒ १८ जुलाई के पश्चात् शनि मीन राशि में वक्री होने से पाँच मंगलवार होना, सूर्य-राहु व शुक्र-राहु का योग होने से कहीं छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) तथा बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन-धन की हानी के योग हैं।

संवत् २०५३ (ई० १९९६-९७) में विश्व पर आकाशी कौंसिल का प्रभाव

यह ब्रह्माण्ड ईश्वरीय गुणों की भान्ति अत्यन्त विशाल, असीम, अनन्त एवं अनादि है। इसमें संचरणशील ग्रह, नक्षत्र, तारादि आकाशीय पिण्डों की अथाह विराटता एवं अनन्तता के समक्ष मनुष्य मन की कल्पना की उड़ान भी अत्यन्त अल्प एवं सीमित अनुभव होती है। सहस्रों वर्ष पूर्व मानव ने जब अत्याधुनिक कास्मिक यंत्रों की कल्पना भी नहीं की थी तभी दिव्य दृष्टि प्राप्त हमारे ऋषियों ने 'या पिण्डे, सा ब्रह्माण्डे' के सार्वभौम सिद्धान्तानुसार पिण्ड और ब्रह्माण्ड मे, नर-नारायण मे, व्यष्टि और समष्टि में, एवं च प्रकृति और पुरुष में तादात्म्य स्थापित करते हुए, अन्तर्चक्षुओं द्वारा समस्त संचरणशील ग्रहों-नक्षत्रों की गतियों एवं पृथ्वी पर समस्त प्राणियों पर उनके प्रभाव का सूक्ष्म निरीक्षण कर लिया था। ऋग्वेद, अर्थवेद, सामवेद, यजुर्वेद आदि वैदिक ग्रंथों में सूर्यादि ग्रहों, नक्षत्रों तथा सूर्य-चन्द्रादि ग्रहणों के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। वैदिक काल में कल्प, छान्देग्य आदि शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र को मूर्धन्य स्थान प्राप्त था। इसे अन्य शास्त्रों में वेद-चक्षु की संज्ञा प्रदान प्रदान की गई है। इस शास्त्र के बिना कोई श्रुति-स्मार्तादि सम्मत कार्य सिद्ध नहीं माना जाता है। वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिषशास्त्रम कल्मषम्। विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तां च न सिद्धयन्ति।

गतवर्षीय पंचांग दिवाकर की कुछ चामत्कारिक भविष्यवाणियाँ

परम पिता परमात्मा की अपार कृपा से आपके प्रिय प्रकाशन "पंचांग दिवाकर" तथा "मुफीद आलम जन्त्री" एवं पंजाबी तिथि पत्रिका को प्रकाशित होते हुए आगामी वर्ष १२१ वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग के प्रवर्तक विश्व विख्यात पं० देवी दयालु जी (लाहौर) से लेकर आज की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई—वह सुविज्ञ पाठकगणों में छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में हमारी पचांग एवं अन्य प्रकाशनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर ही कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक 'हमारे टाईटल से मिलता-जुलता टाईटल नाम व टाईटल रखकर तथा हमारे प्रकाशनों की विषय-सामग्री को कांट-छांट कर छापते हैं इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा कर रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है

कि वह असली व प्रामाणिक **पँचांग दिवाकर** तिथि पत्तरिका पंजाबी व मुफीद आलम मंजी खरीदते समय मुख्य पृष्ठ पर **पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. का** नाम अवश्य पढ़ लिया करें। अन्यथा धोखा होने की सम्भावना होगी।

ईश्वर की कृपा से हमारी गतवर्षों की पंचांगों व जंत्रियों मे उल्लिखित अधिकांश भविष्यवाणियां ठीक निकलती आ रही हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां लिख रहे हैं—

भारतवर्ष का स्वतंत्र होना, कश्मीर पर भारतीय सेना का अधिकार, आधिपत्य, बंगलादेश के रूप में **पाकिस्तान का विभाजन होना, अरब-इसरायल का युद्ध**, कांग्रेस (ई.) की पराजय, **जनता पार्टी** का अस्तित्व में आना तथा टूटना, भुट्टो सरकार का अन्त, अफगानिस्तान, ईरानादि मे शासन परिवर्तन तथा पुनः कांग्रेस पार्टी का आना (देखें) पचांग संवत् २०३६), ईरान-ईराक युद्ध (२०३९), पंजाब में उग्रवादी घटनाएं और मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन (२०४०), प्रधानमंत्री **श्रीमती इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (२०४१)**, **हरियाणा में** भजन लाल का गिरना (२०४३), पंजाब-हरियाणा मे हिंसक घटनाएं (२०४४) तथा **विक्रमी सम्वत् ४०४५ के पंचांग में पाक राष्ट्पति जिया उल हक की मृत्यु के बारे में पृष्ठ ३३ (कालम II)** पर स्पष्टत पढ़ें। संवत् २०४६ में पंचांग दिवाकर मे पृष्ठ ३३ पर **पंजाब** में जून-जुलाई के बाद **हिंसक घटनाओं** की वृद्धि होना, **संवत् २०४७** (सन् ई० १९९०-९१) के पंचांग में पृष्ठ ३० **कालम II** पर जनवरी ९० में षडग्रही शूल नामक योग होने से पूर्वी देशों जैसे बर्मा, जापान, भारत, पाकिस्तान आदि देशों में अप्रत्याशित रूप से राजनैतिक परिवर्तन होना" चुनावों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, जम्मु-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, इत्यादि मुख्य प्रदेशों में सत्तारूढ़ पार्टी (कांग्रेस ई) के वर्चस्व को भारी ठेस पहुंचना" पृष्ठ **(कालम I)** संवत् २०४८ (१९९१-९२ ई) के पंचांग (पृष्ठ ३२ कालम २) में किसी **मूर्धन्य नेता की मृत्यु (जैसा कि भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री गांधी** का निधन होना) और वर्ष के **पूर्वार्द्ध** में भारत देश के नेतृत्व में परिवर्तन होना (पृष्ठ ३४ कालम १), भारत में विदेशी मुद्रा का संकट एवं मध्यावधि चुनाव होना (पृष्ठ ३५ कालम २) तथा संवत् २०४९) के पंचांग में **पाक, बंगला देश, ईरान, लैबनान आदि मुस्लिम देशों में आन्तरिक** फिसाद, दंगे एवं विस्फोटक घटनाएं। पृष्ठ ३२ एवं ३३ का। **(I) पंजाब में चुनाव प्रक्रिया बहाल होना (देखें पृष्ठ ३४)**।

संवत **२०५० के पंचांग पृष्ठ** २७ पर "**भारत पाकिस्तान, ग्रीस, रूस आदि देशों में क्रान्तिकारी परिवर्तन** के योग। उपद्रव, विस्फोट, एवं हिंसक घटनाएं होना, कुछ देशों **में राजनैतिक संकट उत्पन्न होना।** तथा कहीं परिवर्तन होना। **पृष्ठ २७-२८ (जैसा कि पाकिस्तान, रूस, व भारत के अनेक प्रदेशों में हुआ)।**

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, **महाराष्ट्र हिमाचल, राजस्थानी** प्रदेशों में राज्य सत्ता परिवर्तन होना तथा **कहीं भूकम्प, भूस्खलन, बाढ़ादि** एवं **भूचाल** आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण सहस्रों असहाय लोगों **की जीवन** लीला समाप्त होना (पृष्ठ २९) **संवत् २०५१ के पचाँग में पृष्ठ ३२।३३ पर कश्मीर, असम, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों में हिंसक घटनाएं होना, बाढ़ादि प्राकृत प्रकोपों हानि होना तथा अनेक अवरोधों के बावजूद वर्तमान राव सरकार अपने शासन कार्य की अवधि पूरी करना। तथा भाजपा गा देश की दूसरी लोकप्रिय पार्टी के रूप में उभरना (पृष्ठ कालम II)**

सम्वत् २०५२ (ई० १९९६) के पृष्ठ ३७ पर वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में **पाकिस्तान, भारत, लैबनान, हैती,** बंगला देश, श्रीलंका आदि देशों में आतंकवादी, **हिंसा एवं विस्फोट की घटनाएं** होना, विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ कांग्रेस ई० की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुंचाना। **आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात, भुवनेश्वर, आदि प्रदेशों में सत्तारूढ कांग्रेस (ई०) को पराजय का मुंह देखना पड़ेगा** (पृष्ठ ३८) **तथा उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पं बंगाल, हरियाणा, पंजाब आदि में राजनैतिक संकट तथा कहीं**

राज्य परिवर्तन होने के योग हैं (पृष्ठ ३१) ६ जुला. से ७ अग. तक शनि, मंगल में सम—सप्तक **योग होने से किसी राज्य विशेष में सत्ता परिवर्तन होना** (उत्तर प्रदेश) तथा अगस्त से अक्तु. के मध्य बाढ़, तूफान एवं रेल-यानादि दुर्घटना से जन व धन का विनाश होना (पृष्ठ ३१ कालम II)। पंजाब राज्य के अन्तर्गत पृष्ठ ४० का I पर स्पष्ट पढ़ें—**कि राज्य के प्रधान नेता के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग (१ अप्रैल से सितंबर तक)** अशुभ होगा। **कश्मीर में विशिष्ट जनों की हत्याएं एवं विस्फोटक** घटनाओं (पृष्ठ ४०) इत्यादि अनेक भविष्यवाणियां अपनी यथार्थता की स्वयं सिद्ध प्रमाण हैं, अस्तु—

नव वर्ष प्रवेश कुण्डली और विश्व के हालात

नववर्ष प्रवेश कुं० २४।१०

६ रा. | ४ | ७ | ५ | ३ | ८ प्लू. | २ | ९ गु. | ११ बु. | १ शु. | १० | १२ के. सु.च.मं.श.

विक्रमी सम्वत, २०५३ का शुभारम्भ चैत्र कृष्ण अमावस मंगलवार नववर्ष प्रवेश १९ मार्च (प्रविष्टे ६ चैत्र को) २४।१० घटनादि पर अर्थात् शाम ४ बजकर १६ मिनट पर **सिंह लग्न** में नववर्ष का प्रवेश होगा। वर्ष लग्नपति सूर्य अष्टमभाव में मंगल, शनि, चन्द्र, केतु आदि ग्रहों के साथ **पंचग्रही योग** बना रहा है। अस्तगत शनि की विशेष दृष्टि दशम भाव पर पड़ी है। ग्रह योग के अनुसार प्रजा में कष्ट, छत्र भंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं प्राकृतिक आपदाएँ आदि अशुभ फल घटित होंगे। विशेषकर मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, व मकर राशियों के अन्तर्गत पड़ने वाले राष्ट्रों जैसे फिलिस्तीन, हांगकांग, इराक, पाकिस्तान, भारत, बोस्निया, क्यूबा, श्रीलंका, बंगलादेश आदि देशों मे कहीं **शासन में परिवर्तन,** राजनीतिक हत्याएँ, उपद्रव आदि, अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होंगी।

पंचग्रही योग का फल

रवि केतुश्चैकराशि भौम, शनैश्चराः। राज्य भंग प्रजा कष्ट छत्र भंगो भवेद् ध्रुवम्॥

दक्षिण दिशा में उपद्रव, राजनीतिक अस्थिरता व धान्य चावलादि में तेजी। पश्चिम में लौह, पीतल, ताम्बा आदि धातुओं व फल-सब्जियों आदि के मूल्य तेज होंगे। उत्तरी क्षेत्रों में महावृष्टि बाढ़ादि से क्षति हो।

लग्न भाव पर गुरू की शुभ दृष्टि पड़ने से राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण में अस्थिरता के बावजूद अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति होने के योग हैं। **परन्तु लग्नपति सूर्य अष्टम में होने से देश के प्रधान नेता के लिए शुभ नहीं।**

जगत् लग्न कुण्डली और विश्व के हालात

जगत् लग्न (वर्षेश) कुण्डली वि० संवत २०५३ में वैशाख कृष्ण एकादशी तिथि १३ अप्रैल शनिवार को धनिष्ठा नक्षत्र में कुंभ के चंद्रमा कालीन २६।४२ घटनादि (सायं ४ बजकर ४७ मिनट) पर कन्या लग्न में प्रारम्भ होगी।

लग्न भाव पर मंगल-शनि की संयुक्त अशुभ दृष्टियां पड रही है। लग्नेश बुध अष्टम भावस्थ सूर्य युक्त है। यद्यपि उन पर गुरू की विशेष पंचम दृष्टि योगकारक है। मकर राशि यूरेनस नेप्चून ग्रहों

से तथा मिथुन, कन्या, तुला कुंभ, मीन राशियां भी पापाक्रांत हैं। फलस्वरूप इन राशियों के अन्तर्गत पड़ने वाले देश जैसे पूर्व पश्चिम अमरीका, क्यूबा, अरब देश पाकिस्तान, बंगला देश, ईराक, तिब्बत, भारत,

संवत २०५३ में **शनि मीन राशि में ही संचार करेगा तथा उसकी दृष्टि उत्तरी गोलार्द्ध के क्षेत्रों** पर अधिकांशतः रहेगा। अतएव **विश्व के उत्तरी भाग पर पड़ने वाले देशों में कहीं समुद्री तूफान,**

से तथा मिथुन, कन्या, तुला कुंभ, मीन राशियां भी पापाक्रांत हैं। फलस्वरूप इन राशियों के अन्तर्गत पड़ने वाले देश जैसे पूर्व पश्चिम अफ्रीका, क्यूबा, अरब देश, पाकिस्तान, बंगला देश, ईराक, तिब्बत, भारत, अफगानिस्तान आदि देशों में राजनैतिक उथल-पुथल उपद्रव कहीं **सत्ता परिवर्तन, भूकम्प, बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं** का भय रहेगा। **पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका, नेपाल, बोस्निया, बंगला देश आदि देशों में राजनैतिक** गतिरोध पैदा होने के योग हैं। कहीं **छत्र भंग, सत्ता परिवर्तन एवं प्रधान पद** रिक्त होने के भी संकेत मिलते हैं। चैत्र, वैशाख, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, व कार्तिक, मासों में उपरोक्त देशों में अप्रत्याशित घटनाएं घटित होंगी। देश के प्रधान नेताओं के लिए संकटपूर्ण स्थिति होगी।

जगत् लग्न द्वारा स्वयं का शुभारम्भ विचार—जन्म कुण्डली में अपनी जन्म अथवा प्रसिद्ध राशि जिस २ भाव राशि पर पड़े। वैसा ही फल जानें। जगत-कुण्डली के बारह भावों को **१२ मास समझ** कर उन में स्थित शुभ या क्रूर ग्रहों की स्थिति अनुसार शुभाशुभ फल जानें। लग्न से तनु आदि द्वादश भाव वैशाखादि से प्रारंभ करके तदनुसार १२ महीनों का शुभाशुभ फलादेश जानें। यदि आपकी राशि जगत लग्न में अशुभ ग्रहों से संयुक्त हो तो अथवा अशुभ ग्रहों से दृष्ट लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में पड़ती हो, तो आगामी वर्ष शोक, गुप्तशत्रुभय, फिजूलखर्ची, धन हानि या आय कम रहती है. उपाय के तौर पर **वैशाख संक्रांति** के दिन अपने इष्ट देव का अधिकतम संख्या जप-पाठादि करना, अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र दक्षिणा आदि का दान **कल्याणकारी रहता है।**

ग्रहों की आकाशी कौंसिल का भारत एवं विश्व पर प्रभाव

वि० सम्वत २०५३ में ग्रहपरिषद् (आकाशी कौंसिल) के **दस अधिकारों में से सात अधिकार शुभ ग्रहों को और तीन अधिकार क्रूर** ग्रहों को प्राप्त हुए हैं।

राजा एवं रसों का स्वामी शुभ किंतु (नपुसंक) ग्रह **बुध** बना है। मंत्री का अधिकार क्रूर ग्रह शनि को मिला है। **सस्येश** (ग्रीष्म फसलों का स्वामी) मंगल व **धान्यपति** सूर्य हैं। वर्षा, फलों एवं सेना के अधिकार **सौम्य ग्रह** शुक्र को तथा धातुओं व कोण के अधिकार शुभ ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त हुए हैं। **बुध शनि एवं चंद्र शुक्रादि ग्रहों के प्रभावरूप अन्तर्राष्ट्रीय एवं विदेशी व्यापार में विशेष उन्नति होगी। विशिष्ट वर्ग के लोगों में सुख-साधनों में विस्तार होगा।** रूई, कपास, वस्त्र-उद्योग, चाय, लोहा, चाँदी, मोती, जवाहरात-आभूषण के व्यापार ने विशेष प्रगति होगी।

सस्येश मंगल एवं **धान्येश** सूर्य के कारण गेहूं, चावल, मूंग, मोंठ, कपास, धान्यादि कृषि को हानि पहुंचने के संकेत हैं। अनाजादि के मूल्यों में विशेष वृद्धि के योग हैं। मंत्री शनि तथा शुक्र-चंद्र के कारण लोग आडम्बरपूर्ण विलासमय (जीवन यापन) करने तथा शराब, मांसादि तामसिक पदार्थों के प्रयोग करने की ओर अधिक प्रवृत्त होंगे।

सम्वत में **आषाढ़ अधि मास** तथा **विरोधी** नामक संवत होने से प्रशासकों में वैमनस्य एवं वैर विरोध की भावना अधिक रहे जिससे सामान्य प्रजा को **जीवनोपयोगी वस्तुओं की कमी के कारण दुख व क्षोभ** का सामना करना पड़े। असामयिक एवं कहीं **अति वर्षा बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से प्रजा को काफी, धन, जन, एवं सम्पत्ति आदि की क्षति होने के योग हैं।** कहीं अनावृष्टि अथवा अतिवृष्टि, बाढ़, भूस्खलन आदि के कारण खड़ी फसलों को नुकसान होने का अन्देशा है।

संवत २०५३ में शनि मीन राशि में ही संचार करेगा तथा उसकी दृष्टि उत्तरी गोलार्द्ध के क्षेत्रों पर अधिकांशतः रहेगी। अतएव विश्व के **उत्तरी भाग पर पड़ने वाले देशों में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प, राजनैतिक संकट, सत्ता परिवर्तन** चौपायों की हानि, दुर्भिक्ष अथवा अनाजादि की कमी हो उ० अमरीका में भूकम्प (भूचालादि) का भय होगा—

> पृथ्वी वैकम्प मात्रं प्रचलति पवनः नगलोकः (अमेरिका)
> सप्तद्वीपेषु सिन्धोगिरिविरगहने सर्ववृक्षादि हानिः ॥
> नाशः पृथ्वी पतीनां जनपदविलयों यान्ति मेघाः प्रणाशं।
> चक्रावर्तः समस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्य पुत्रे ॥

ग्रहगोचर और विश्व के हालात

सम्वत २०५३ के आरम्भ में ही मीन राशि पर सूर्य, मंगल, शनि, केतु आदि **क्रूर ग्रहों** का **पंचग्रही** योग बना हुआ है। कन्या राशि पर भी इन ग्रहों की अशुभ दृष्टियां पड़ रही हैं। जिससे कन्या, तुला, वृष, मिथुन, सिंह, मकर, व कुंभ राशि वाले देशों जैसे, चीन, अफगानिस्तान, श्रीलंका, क्यूबा, बोस्निया, भारत, पाकिस्तान, ईराक, नेपाल आदि देशों के राजनैतिक वातावरण में परिवर्तन होगा। कहीं उपद्रव, विद्रोह, हिंसक व विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं—

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। पलावयन्ति मही सर्वा रूधिरेन जलेन वा ॥

अनेक देशों में उपद्रव एवं युद्ध के समाचार एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। ता. २२ मार्च को **मंगल-शनि** के मध्य अंशात्मक युति, ६ अप्रैल को **सूर्य व केतु** के मध्य तथा १५ अप्रैल० को **मंगल-केतु** के मध्य अंशात्मक युति होने से इस समयावधि में भारत, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सोमालिया, ईरान आदि देशों में कहीं राजनीतिक गतिरोध, हिंसक जन-आंदोलन उपद्रव कहीं किसी प्रधान व नेता का पद रिक्त होगा। केन्द्रीय शासन में परिवर्तन के प्रबल योग हैं। इन देशों का राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा।

४ मई से ४ जून तक गुरू-शुक्र के मध्य **समसप्तक योग** रहेगा तथा ५ मई से गुरू वक्री होगा और उस पर शनि की विशेष दृष्टि बराबर बनी रहेगी। इस अवधि में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर अनेक विरोधी देश भी बाह्य तौर पर निकट आएंगे और कुछ देशों के मध्य पारस्परिक राजनीतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ेंगे। परन्तु आन्तरिक तौर पर अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक हथियारों का संग्रह करने की तैयारी में लगे रहेंगे। **ज्येष्ठ मास में पांच शनिवार** पड़ने से उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ने वाले देशों में कहीं राजनैतिक टकराव, अग्निकाण्ड, विस्फोट, भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय होगा। पूर्वोत्तर देशों में कहीं शासन परिवर्तन होगा।

१६ जून से **आषाढ़ अधिमास का प्रारंभ होगा।** इन दिनों मंगल-शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। जिसे भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, फिलस्तीन, सीरिया, बोस्निया, लेबनान, रूवांडा, ईराक आदि मुस्लिम देशों में अराजकता, हिंसा एवं अशान्ति फैलेगी। १८ जुला. से **शनि मीन राशि में वक्री** होने से **जुलाई-अगस्त** में पाकिस्तान, भारत, सीरिया, आदि देशों में राजनैतिक उतार-चढ़ाव, नेताओं में पारस्परिक विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। शनि वक्रे च दुर्भिक्षं **राजा युद्ध परस्परम् ॥**

बंगला देश व भारत में अतिवर्षा के कारण बाढ़, भूस्खलन प्राकृतिक प्रकोप रहेगा।

१६ सितम्बर से १५ अक्तूबर तक कन्या राशि में **सूर्य-राहु** का योग तथा शनि-सूर्य के मध्य **समसप्तक** होगा जिससे ग्रीस, टर्की,पाकिस्तान, ईराक, लेबनान, बोस्निया, बंगला देश, नार्वे, अफगानिस्तान, भारत, बर्लो-या, श्रीलंका आदि देशों में कहीं आन्तरिक जातीय टकराव, उपद्रव एवं हिंसक घटनाओं का कुचक्र चलेगा। बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी हानि होने के योग हैं।

३० सित. को **सूर्य-राहु की एवं ३ नवं को शुक्र-राहु की अंशात्मक युति होना तथा १७ दिसं से २३ मार्च ९७ के मध्य मंगल-राहु** का योग होने से श्रीलंका, पाकिस्तान, भारत आदि देशों में युद्ध जैसी स्थिति बनेगी। सीमाओं पर सैनिक टकराव, युद्ध के समाचार मिलेंगे। राजनैतिक सम्बन्ध कटु एवं तनावपूर्ण होंगे॥

विभिन्न विकासशील देशों में अत्याधुनिक हथियारों को संग्रह करने की दौड़ लगी रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विस्तार के कारण विश्व के अनेक देशों के मध्य सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्बन्ध स्थापित होंगे। बुध और शुक्र के कारण महिलाओं की प्रतिष्ठा एवं उत्थान के लिए विश्व स्तर पर महत्व दिया जाएगा।

विश्व के कुछ प्रमुख देश

अमरीका (America) – इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। नव वर्ष प्रवेश एवं जगत लग्न कुं. में इस राशि की स्थिति अच्छी है परन्तु राशिपति बुध अष्टमस्थ होने से इस देश की आन्तरिक समस्याओं तथा राजनैतिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। मानवाधिकार संरक्षण की आड़ तथा अपने राजनैतिक गुटों जैसे NATO, (CEATO) के द्वारा विभिन्न यूरोपीय तथा छोटे विकासशील देशों (जैसे बोस्निया, सर्बीया, हर्जोगोविना, सोमालिया) के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करेगा। चीन, ईराक, उत्तरी कोरिया व रूस के साथ सम्बन्धों में तनाव रहेगा। पाकिस्तान को आंशिक रूप से सैनिक या गुप्त सहायता देगा तथा भारत के साथ आर्थिक समझौते होंगे। इस प्रकार दोगली नीति अपनाएगा। **उत्तरी अमरीका में भूकम्पादि का भय होगा।**

रूस–जगत् लग्न कु. में इसकी प्रभाव राशि कुम्भ शुभ स्थिति में है। आर्थिक उदारीकरण को बढ़ावा मिलेगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर रूस का प्रभुत्व बढ़ेगा। अमरीका की हिटलरशाही नीतियों का जमकर विरोध करेगा। राशि स्वामी शनि का केतु के साथ संयोग रहने से आन्तरिक गुटबन्दी एवं राजनैतिक अस्थिरता बनी रहेगी।

पाकिस्तान--प्रभाव राशि कन्या है। जगत् लग्न कन्या में राहु वर्षभर संचार तथा बुध अष्टमस्थ होने से वर्तमान सत्ता सरकार को गम्भीर राजनैतिक संकट का सामना करना पड़ेगा। पाक में गृह युद्ध जैसी स्थिति बनेगी। सिन्ध व बलूचीस्तान में दंगे, टकराव, विस्फोटक घटनाओं से पाकिस्तानी वर्तमान सरकार की प्रतिष्ठा को भी गहरा धक्का लगेगा। १६ सितंबर से १५ अक्त. तक इसकी राशि पर सूर्य-राहु का योग रहने से मुहाजिर कौमी मूवमेण्ट विशेष जोर पकड़ेगी। जनांदोलन, उपद्रव, अग्निकांड राजनीतिक हत्याएं एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक रहेंगी। कश्मीर समस्या पर भारत के साथ टकराव की नीति जारी रखेगा। उत्तरार्द्ध भाग में बेनजीर सरकार को गंभीर राजनैतिक संकट का सामना करना पड़ेगा। कहीं राजनैतिक दुर्घटना एवं बाढ़ादि प्रकोपों से भारी हानि हो।

गोचर-ग्रह और भारतवर्ष संवत् 2053

कुंडली स्वतन्त्र भारत (१५ अगस्त, १९४७ ई०)

स्व० भारत का 49वां वर्ष ई० १९९५-९६ वर्षेष्ट ३।३५

गणतन्त्र दिवस, '४७वां वर्ष २६ जन० १९९६ ई०

स्वतन्त्र भारत के 49वें वर्ष का आरम्भ (15 अग० 1995 ई०) सिंह लग्न में हो चुका है। वर्ष लग्नेश सूर्य का बारहवें भाव में **मुंथेश शुक्र** के साथ होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है; क्योंकि मुंथा दशम भाव स्थिति प्रशासनिक अधिकारी वर्ग एवं संसद् का भी प्रतिनिधित्व करता है। वर्ष-लग्नेश सूर्य पर यद्यपि गुरू की शुभ दृष्टि पड रही है, परन्तु वर्ष लग्न पर शानि की सप्तम दृष्टि पड़ना तथा मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग बनना सत्तारूढ केन्द्रीय सरकार के लिए शुभ नहीं। सत्तारूढ कांग्रेस (ई०) पार्टी से अलग हुए कुछ अपनी पार्टी के लोग ही वर्तमान केन्द्रीय सरकार को गिराने की चेष्टा करेंगे, परन्तु सफल नहीं हो पाएँगे। तथा वर्तमान सरकार अपने शासन की कार्यावधि का समय पूरा करने में सफल होगी। **यद्यपि सप्तम भाव में स्वगृही शनि की स्थिति सशक्त प्रतिद्वन्दी (Opposition) पार्टी से टकराव होने का संकेत करती है। द्वादशभावस्थ सूर्य यद्यपि वर्ष ई० 1996 के पूर्वार्द्ध भाग में केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के प्रबल योग पाए जाते हैं।** द्वितीय भाव में कन्या राशि का मंगल होने से आर्थिक उदारीकरण की नीतियों में आशानुकूल सफलता प्राप्त नहीं होगी।

नव गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी 1996 ई०) के 47वें वर्ष की कुण्डली में धनु लग्न उदित हुआ है। लग्न भाव में स्वराशिगत गुरू केन्द्रस्थित होकर पंचमभावस्थ चन्द्रमा को तथा योजना एवं विकास (नवम) भाव को शुभ दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप देश की विकासशील योजनाओं एवं राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेष वृद्धि होगी। परन्तु भारत की प्रभाव राशि (मकर) पर सूर्य, मंगल, यूरेनस, नैपचून तथा मुंथा एक साथ होने से विदेशी पूंजी व आय के साधनों में विस्तार होगा। यद्यपि निर्यात में वृद्धि होगी परन्तु मनोरंजन कार्य योजनाओं में अपव्यय भी बढ़ेगा। अधिकांशतः बढ़ते विकास कार्यक्रमों का लाभ विशेष वर्गों तक ही सीमित रहेगा। सामान्य प्रजा दैनिक उपभोग की वस्तुओं की प्राप्ति के लिए संघर्षशील रहेगी। उन्हें आशातीत मंहगाई, भ्रष्टाचार एवं बेरोज़गारी आदि की विकट समस्याओं से जूझना पड़ेगा। चतुर्थ भाव पर केतु की स्थिति सामान्य लोगों में सरकार के प्रति असंतोष व क्रोध को प्रकट करती है। दशम भाव में राहु होने से संकेत मिलते है कि 26 जन. 96 के ***पश्चात् तीन मास की समयावधि सत्तारूढ़ केन्द्रीय सरकार के लिए अग्नि परीक्षा की अवधि होगी।*** सत्तारूढ़ कांग्रेस (ई०) पार्टी को राजनैतिक क्षेत्र में प्रबल चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली में भारत की प्रभाव राशि मकर ... भाव में है ... पर ...

16 जून से 15 जुलाई तक आषाढ़ अधिमास रहेगा। 30 जुला. तक आषाढ़ मास में पाँच मंगलवार पड़ने से भारत के पश्चिमी उत्तर एवं पूर्वी प्रदेशों जैसे महाराष्ट्र, असम, प. बंगाल, कर्नाटक हिमाचल, कश्मीर

नववर्ष प्रवेश कुण्डली में भारत की प्रभाव राशि मकर छठे भाव में है, उस पर यूरेनस-नेपच्यून ग्रह संचार कर रहे हैं। राशिपति शनि अष्टम भाव में सूर्य-मंगलादि ग्रहों के साथ **पंचग्रही योग** बना रहा है। जिससे सामाजिक, **राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध** एवं तनावपूर्ण रहेगा। लोकसभा के चुनावों के अन्तर्गत विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के मध्य नए समीकरण (गठजोड़) बनेंगे। कश्मीर, असम, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, प० बंगाल, हरियाणा, महाराष्ट्रादि में उपद्रव, जनांदोलन एवं हिंसा की घटनाएं घटित होंगी।

सम्वत् 2053 में लोकसभा चुनाव और भारतवर्ष

सम्वत् के आरम्भ से ही भारत में लोकसभा के चुनावों की सरगर्मियां प्रारम्भ हो चुकी होंगी। संवतारम्भ में **पंचग्रही योग** होना, 17 मार्च को सूर्य-शनि एवं 22 मार्च को शनि-मंगल के मध्य अंशात्मक युति, **3 अप्रैल को ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण, 6 अप्रैल को सूर्य-केतु** तथा **15 अप्रैल** को मंगल-केतु के मध्य अंशात्मक युतियां होना—केन्द्रीय शासन में परिवर्तन के प्रबल योग मिलते हैं। भारत के प्रधान नेता के लिए **मार्च-अप्रैल** के महीने विशेष अशुभ प्रमाणित होंगे।

जन्म कु० श्री नरसिम्हां राव

वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव की यथासंभव उपलब्ध जन्म कुण्डली के अनुसार उनको आजकल **राहु की महादशा के मध्य में राहु की अंतर्दशा** (भुक्ति) चल रही है, जोकि 25 अगस्त 1996 ई० तक रहेगी।

राहु दशा का फल शुभ कहा गया है—

बन्धव्याधिस्तथा रोगः पीड़ा भवति दारुणा। स्थानच्युतिः कुभोज्यं च राहुः स्वोपदशां गतः॥

इसके अतिरिक्त गोचरवश राहु 6 दिसम्बर, 95 के पश्चात् लग्न भाव (कन्या) में संचार करेगा तथा 16 फरवरी से शनि श्री राव की जन्मराशि में संचार करते हुए शनिसाढ़सति का विशेष प्रभाव करेगा। प्रस्तुत ग्रह विवेचन से लक्षित होता है कि किसी दैवी शक्ति के चमत्कार वश ही वर्तमान सत्तारूढ़ होने में सक्षम हो सकेगी। **कुछ प्रदेशों में कांग्रेस (ई०) पार्टी की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचेगी। तथा कुछ स्थानों पर अप्रत्याशित रूप से सफलताएँ भी प्राप्त होंगी।** विघटनकारी तत्त्वों के कारण अपनी ही पार्टी के कुछ सदस्यों द्वारा इस पार्टी की प्रभुसत्ता को हानि पहुँचेगी। चुनावों में भा.ज.पा. (भारतीय जनता पार्टी) देश में सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी। तथा देश के अनेक प्रान्तों में जैसे मध्य प्रदेश, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान आदि प्रदेशों में भी इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। **केन्द्र में एक नवीन गठबन्धन सरकार का गठन होगा।**

4 मई से 4 जून तक गुरु शुक्र के मध्य **समसप्तक** योग रहेगा तथा ज्येष्ठ मास में पाँच शनिवार पड़ेंगे जिससे देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में कहीं भूकम्प, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप का भय होगा। कहीं अग्निकाण्ड, उपद्रव अथवा छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) के योग बनते हैं। गेहूँ, धान, तिल, तेल, लोहा, पीतल, चाँदी आदि धातुएँ तथा **पेट्रोलियम** पदार्थ महँगे होंगे।

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणीः।
ईशान देश भंगश्च वह्निना दाहो धान्य महर्घता॥

काश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार, असम, पंजाबादि प्रदेशों में राजनैतिक हालात क्लिष्ट होंगे जो केन्द्रीय सरकार के लिए गम्भीर चुनौतियां पैदा करेंगे।

16 जून से 15 जुलाई तक आषाढ़ अधिमास रहेगा। 30 जुला. तक आषाढ़ मास में पाँच मंगलवार पड़ने से भारत के पश्चिमी उत्तर एवं पूर्वी प्रदेशों जैसे महाराष्ट्र, असम, प. बंगाल, कर्नाटक हिमाचल, कश्मीर आदि प्रदेशों में विपुल वर्षा, बाढ़ एवं भूस्खल आदि प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होने के संकेत हैं। कहीं पर उपद्रव, हिंसादि के समाचार मिलेंगे। **कहीं छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) के भी योग हैं।**

ता. 18 जुला. से शनि मीन राशि में वक्री होगा जिससे कुछ **पार्टी अध्यक्षों के मध्य विरोध एवं टकराव के हालात** पैदा होंगे।

मीने शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्

कहीं अनाजादि की कमी के कारण प्रजा में दुःख एवं असंतोष फैलेगा। राजनैतिक वातावरण अनिश्चित बनेगा। **काश्मीर समस्या को लेकर पाकिस्तान के साथ युद्ध जैसे हालात बनेंगे।**

श्रावण मास में (31 जुला. से 28 अग. तक) पुनः **पाँच मंगलवार** पड़ना कश्मीर, आन्ध्र प्रदेश, असम आदि प्रदेशों में हिंसा की घटनाएं बढ़ेंगी। कहीं उपद्रव, अत्यधिक मंहगाई के विरुद्ध जनांदोलन व असंतोष बढ़ेगा। बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी क्षति के योग होंगे।

16 सित. से 15 अक्तू. के मध्य कन्या राशि पर **सूर्य-राहु** का योग बनने से केन्द्रीय सत्तारूढ़ सरकार में विशेष उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। कहीं **छत्र भंग** (राज्य परिवर्तन), हिंसक घटनाएं बढ़ेंगी। कहीं प्रधान नेता का पद रिक्त होगा।

3 नवंबर को **शुक्र-राहु** की अंशात्मक युति होना तथा **कार्तिक मास** (27 अक्तू. से 25 नवं.) के मध्य **पाँच रविवार** पड़ने से इस काल में भारत के राजनैतिक क्षेत्र में अनिश्चितता के हालात बनाए रखेगा।

17 दिस. से 23 मार्च 97 के बीच **मंगल-राहु** का योग बनने से कहीं राज्य परिवर्तन, नेताओं में परस्पर विरोध, टकराव व हिंसक घटनाओं का सूचक है।

राहुरंगारकश्च राशिव्यक्षगतौयदा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥

आर्थिक उदारीकरण की नीतियों का लाभ अल्प-सीमित कुछ विशिष्ट वर्ग के लोगों को ही प्राप्त हो जायेगा। मुद्रा-स्फीति की दर और अधिक बढ़ेगी। राजनैतिक अस्थिरता एवं अनिश्चितता के कारण भारत की विकास योजनाओं को गहरा धक्का पहुँचेगा। दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं में कमी तथा सभी वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि के कारण सामान्य लोगों का जीवन-यापन कठिन हो जाएगा। लोगों में आक्रोश व असंतोष अधिक रहेगा। गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में केन्द्रगत गुरू के कारण बाह्य देशों में भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

भारत के कुछ प्रमुख प्रदेश

हिमाचल प्रदेश—प्रभाव राशि मीन है। ४७वीं गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभावराशि पर केतु संचार कर रहा है एवं उस पर मंगल की विशेष केन्द्रिय दृष्टि पड़ रही है। १६ फर. ९६ से शनि भी इसी राशि में संचार करेगा। परन्तु राशिपति गुरु की लग्न भाव में स्थिति शुभ है। फलस्वरूप, सत्तारूढ़ राज्य सरकार को अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहेगा। प्रादेशिक कांग्रेस पार्टी अन्तःकलह एवं गुटबन्दी का शिकार होगी। प्रदेश में विपक्षी पार्टी भा. ज. पा. की स्थिति बेहतर होगी।

विद्युत् जलापूर्ति, फलों, बागबानी, सेबादि फलों, वन विभाग (वृक्षारोहण), मधुमक्खी एवं मुर्गी पालन, ऊनीवस्त्र, हस्तशिल्प, लघु कुटीर, शिक्षा, पर्यटन जड़ी-बूटी आदि उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सरकार विशेष योजनाएं बनाएगी। परन्तु प्राकृतिक अवरोधों के फलस्वरूप उनमें वांछित सफलता प्राप्त नहीं हो पायेगी। दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार एवं अराजकता के

कारण सामान्य जनाक्रोश बढ़ेगा। १८ जुला से शनि मीन राशि में वक्री होने से राजनैतिक अस्थिरता बनेगी तथा भूस्खलन, भूकम्प, दुर्घटना, अतिवर्षा से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप से कृषि, धन व जन हानि के योग है।

पंजाब—इसकी प्रसिद्ध राशि कन्या तथा प्रभाव राशि मीन मानी जाती है। गतवर्ष की पंचांग के पृष्ठ ४० पर ग्रहयोगानुसार चेतावनी स्वरूप स्पष्ट संकेत लिखा गया कि संवत् २०५२ का पूर्वार्द्ध भाग राज्य के प्रधान नेता के लिए अरिष्टकर होगा। परन्तु दैव (ईश्वर) की इच्छा के सामने मनुष्य के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं। आगामी वर्ष इसकी प्रभाव राशि पर शनि-केतु का संचार प्रायः वर्ष भर बना रहेगा। जिससे सत्तारूढ़ राज्य सरकार को कुछ गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। कृषि, स्पोर्टस, दूर संचार, रबड़-उद्योग, हौजरी, खाण्डसारी, व अन्य तकनीकि उद्योगों के विकास के लिए विशेष प्रयास किये जाएंगे। अतिशय एवं प्रतिकूल वर्षा के कारण गेहूं धानादि की फसलों को नुकसान पहुँचाने का भय है बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से राज्य के विकास कार्यों में गतिरोध पैदा होंगे।

जम्मू-कश्मीर—इसकी प्रभावराशि तुला है। स्वतंत्र भारत के ४९वें वर्ष की कु. में इस राशि पर राहु संचार कर रहा है। परन्तु गणतन्त्र दिवस ४७ के वर्ष की कुण्डली में इसकी राशि की स्थिति अपेक्षाकृत शुभ है। ग्रहयोग के अनुसार वर्ष के पूर्वार्द्धभाग में राष्ट्र विरोधी विघटकारी तत्त्व राज्य में विशेष रूप से विध्वंसक एवं विस्फोटक गतिविधियां करने की कुचेष्टाएं करते रहेंगे। विशिष्ट लोगों की हत्याएं, अपहरण, लूटमारादि के कारण राज्य के शान्ति प्रिय निवासी प्रत्यक्ष प्रतिरोध करेंगे। पाक समर्थित विभिन्न अवरोधों के बावजूद भारत सरकार लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया में सफलता प्राप्त कर लेगी। प्रशासन व्यवस्था में कुछ सुधारों के कारण राज्य में ऊनी वस्त्रों, सेबादि फलों, जंगलात व अन्य हस्त शिल्पादि उद्योगों में वृद्धि के आसार बनेंगे।

हरियाणा प्रदेश—नव गणतंत्र दिवस कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि मिथुन पर गुरू व बुध की संयुक्त दृष्टियां पड रही है। आर्थिक विकास की योजनाओं के अन्तर्गत अनेक नवीन उद्योगों की स्थापना की जायेगी। विपक्षी दलों के प्रबल विरोध के कारण सत्तारूढ़ सरकार को गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण राज्य के विकास की प्रक्रिया को गहरा धक्का लगेगा।

उत्तर प्रदेश—४७वें गणतंत्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि धनु पर लग्नेश व सप्तमेश ग्रहों (गुरू-बुध) का विचित्र योग बना हुआ है। चन्द्रमा पर शनि की अशुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार राज्य में भाजपा व बसपा की संयुक्त सरकार का गठजोड़ अधिक देर तक नहीं चल पाएगा। किन्हीं विशिष्ट मतभेदों के कारण सत्तारूढ़ गठबन्धन सरकार की प्रतिष्ठा को गहरा झटका लगेगा। राज्य में विद्युत् पेय जल समस्या, महंगाई बेराज़गारी, निरक्षरता भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का समाधान नहीं हो सकेगा। बाढ़ादि के कारण कृषि व अन्य लघु उद्योगों को भारी क्षति पहुंचेगी। राजनैतिक स्थिति अनिश्चित व अस्थिर बनी रहेगी। जनसाधारण में बेचैनी व असंतोष अधिक रहेगा।

दिल्ली—ग्रहस्थिति के अनुसार वर्तमान राज्य सरकार के लिए आगामी वर्ष चुनौतीयों से भरा वर्ष होगा। पेय जल, विद्युत्, प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या व आवासादि की मौलिक समस्याएँ यथापूर्व क्लिष्ट बनी रहेंगी। बाढ़ादि कारणों से विस्थापितों की समस्या राज्य सरकार के लिए उलझन पूर्ण होगी। इसके नेतृत्व को पार्टी में परिव्याप्त कुछ विसंगतियों का सामना रहेगा।

उपरोक्त भविष्य फल अपनी अकिंचित् मत्यनुसार लिपिबद्ध किया गया है, वास्तव में सर्वज्ञ भविष्यवेत्ता तो स्वयं विधाता (परमात्मा) है—

फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः को वक्तः तारतम्यस्य तमेकं वेधसम् विना॥

निवेदक—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्त्ता, दिवाकर, तिथि पत्रि का व मुफीद आलम जंत्री जालंधर।

PH. 57959

होगी। ता. ५ को सूर्य विशाखा में आने से तिल तैल, अरण्डी, जौ, चावल, गेहूं, मसूर, अलसी, लकड़ी, कोयला व मुंगफली के भावों में तेज़ी होगी। चाँदी, सोना, ताम्बा, लोहादि धातुएं भी तेज़भाव होंगी। ता. ७ से गुरु पूषा के तीसरे चरण में आने से रूई, कपास, जूट, व पटसन में तेज़ी के उछाले होंगे। घी, तैल (सर्व प्रकार), ऊनी वस्त्र मूंगफली, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी का रूख बना रहेगा। ता. १० को बुध वृश्चिक में आने से गेहूं मकई, धान्य, घी, तैलादि में एक सप्ताह के भीतर मन्द की लहर चलेगी परन्तु भाव में विशेष अंतर नहीं होगा। रूई चांदी, सोना, पशुचारा व चौपायों में तेज़ी का रूख बनेगा। ता. ११ को सोमवती अमावस्या होने से रूई व चाँदी, श्वेत वस्त्र व दुग्ध पदार्थों में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. १२ को मंगल पूफा में तथा शुक्र चित्रा में आने से तिल तैल, अलसी, मूंगफली आदि में तेज़ी होगी॥

ता. १५ से सूर्य वृश्चिक राशि में आने से रूई, कपास, सन सूत, सोना, चांदी, ताम्बा के वस्त्रों में तेज़ी होगी। ता. १९ को सूर्य अनुराधा में तथा ता. २१ से बुध ज्येष्ठा में आने से गेहूं, अलसी, सरसों, तिलहन, चाँदी, चावल, चने, खाण्ड, गुड़ादि में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो। सोने में मन्दी का वातावरण हो। ता. २३ से शुक्र स्वाती में आने से चीनी चावल, गुड़, गर्म, मसाले, किशमिश, काजू, आदि सूखे मेवाजात, खल, बिनौले, ऊनी वस्त्र एवं मूंगफली में तेज़ी हो, परन्तु मक्की चना, जौ, गेहूं में मन्दे की लहर चलेगी। ता. २५ को पश्चिम से बुधोदय होने से करियाना मार्कीट में पुनः चमक पैदा हो जाएगी। ता. ३० से बुध धनु राशि में रूई, कपास, चांदी आदि में घटा-बढ़ी के बाद मूल्य पुनः तेज़ होंगे।

दिसम्बर—ता. २ से सूर्य ज्येष्ठा में आने से चावल, रूई, अलसी, सरसों, मूंगफली अरण्डी, गुग्गल, गुड़ चीनी, काली मिर्च व माल पंसारी के मूल्यों में तेज़ी बनी रहेगी। ता. ३ से शनि मीन राशि में मार्गी होने से तिल, रिफाईड, तैल, हींग, सरसों, घी, गुड़ में पुनः तेज़ी का रूख बनेगा। ता. ४ को शुक्र विशाखा में रूई, सन, सूत, धान्यों में मन्दी का वातावरण करेगा। अन्य जिन्सों में भी अनिश्चित स्थिति बनेगी। ता. ९ दिसं. तक थोक मार्कीट की स्थिति डांवांडोल व संदिग्ध रहेगी। ता. १० को भौमवासरी अमावस के बाद करियाना मार्कीट में चमक पैदा होगी। ता. १२ से वृश्चिक के शुक्र में रूई, शक्कर, चाँदी व अनाज व तिलों के भावों में कमी बेशी होगी।

ता. १५ को धनु संक्रान्ति रविवार को पड़ने से तिल, तैल, सरसों, अलसी, गन्ना, गुड़, चने, गेहूं, खल, बिनौले, सुवर्ण, चाँदी, ताम्बा आदि धातुओं में तेज़ी का वातावरण बनेगा। ता. १७ को मंगल कन्या में तथा राहु उफा (४) में आने से गेहूं, चने, घृत, गुड़, तेल रिफाईड तथा अन्य खाद्य तेल, अलसी, ताम्बा पीतल, सोनादि लाल वर्ण की वस्तुएं तेज़ भाव होंगी। रूई व चाँदी में भी तेज़ी बनेगी। मार्गशीर्ष में पाँच मंगलवार पड़ने से राजनीतिक व सामाजिक हालात अनिश्चित रहेंगे। फलस्वरूप वायदा व हाज़िर व्यापार की हालत में भी डांवाडोल रहेगी।

ता. २४ को बुध धनु में वक्री होने से खाण्ड, बिनौले, तिल, तैल, घी, गुड़ शक्कर, रूई, कपास में तेज़ी का रूख होगा। ता. २५ को शुक्र ज्येष्ठा में ज्वार, बाजरा, मक्की, गेहूँ, सोना व चाँदी में घटा-बढ़ी करेगा। परन्तु ता. २७ से वक्री बुध पश्चिम-अस्त होने से चाँदी में विशेष तेजी होने के संकेत है। ता. २८ से सूर्य पूषा में आने से घी, गुड़, चीनी, तिल, तैल, बिनौले खल, गेहूं, चने, चाँदी, चावल, हल्दी, पटसन, लकड़ी व ऊनी धागों में तेज़ी होगी।

तेज़ी-मन्दी के ताज़ा मशवरा हासिल करने के लिए स्वयं मिलें अथवा ३५१) रुपये भेज कर ताजा रिपोर्ट (द्विमासिक) मंगवा सकते हैं।

—निवेदक

पण्डित पन्नालाल ज्योतिष मार्तण्ड
अड्डा होशियारपुर जालंधर. फो. ५७९२९

मार्गादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि घण्टा मिंटो में (१ जन. ९६ से ७ अप्रैल ९७ तक)

सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि घण्टा मिंटों में (१ जन. ९६ से ७ अप्रैल ९७ तक)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मि.
१४ जनवरी	मकर	२२ ।२३
१३ फर.	कुम्भ	११ ।२१
१४ मार्च	मीन	८ ।१२
१३ अप्रैल	मेष	१६ ।४७
१४ मई	वृष	१३ ।४२
१४ जून	मिथुन	२० ।१८
१६ जुला.	कर्क	७ ।१२
१६ अगस्त	सिंह	१५ ।३६
१६ सितंबर	कन्या	१५ ।३१
१६ अक्तू.	तुला	२७ ।२५
१५ नवंबर	वृश्चि.	२७ ।१२
१५ दिसंबर	धनु	१७ ।४८
१३ जन.(९७)	मकर	२८ ।३०
१२ फर.	कुंभ	१७ ।३०
१४ मार्च	मीन	१४ ।२४

मंगल राशि प्रवेश (वर्षारंभ में मकर में)

ता. मास	राशि	घं. मि.
७ फरवरी	कुंभे	२१ ।०३
१६ मार्च	मीन	२१ ।५८
२४ अप्रैल	मेष	१८ ।५१
४ जून	वृष	५ ।३८
१६ जुला.	मिथुन	२१ ।०४
३१ अगस्त	कर्क	६ ।३९
१९ अक्तू.	सिंह	१४ ।००
१७ दिस.	कन्या	१७ ।०३
५ फर. (९७)	वक्री	१५ ।३१
२४ मार्च	सिंह	२६ ।५५

बुध राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मि.
१० जन. वक्री (मकर में)		१३ ।१०
२२ जन.	धनु	१३ ।१५
३० जन.	मार्गी	१५ ।०३
८ फर.	मकर	२८ ।२५
३ मार्च	कुंभ	१९ ।२०
२१ मार्च	मीन	७ ।५४

बुध राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मि.
५ अप्रैल	मेष	७ ।०१
२३ अप्रैल	वृष	२१ ।१०
४ मई	वक्री	९ ।२५
१६ मई	मेष	१० ।३२
२८ मई	मार्गी	९ ।२७
७ जून	वृष	१६ ।०७
२९ जून	मिथुन	१० ।२०
१३ जुला.	कर्क	१६ ।२९
२८ जुला.	सिंह	२८ ।२९
१९ अग.	कन्या	१२ ।४२
४ सित.	वक्री	८ ।१५
१८ सित.	सिंह	२० ।१७
२७ सित.	मार्गी	८ ।२५
४ अक्तू.	कन्या	१८ ।०२
२३ अक्तू.	तुला	१४ ।२०
१० नवं.	वृश्चि.	२२ ।५९
३० नवं.	धनु	१३ ।४७
२४ दिस.	वक्री	८ ।२०
१३ जन. (९७)	मार्गी	८ ।५०
४ फर.	मकर	२५ ।२९
२४ फर.	कुम्भ	१८ ।२९
१३ मार्च	मीन	६ ।२५
२८ मार्च	मेष	१९ ।५८

गुरु राशि प्रवेश (वर्षारंभ में धनु राशि में)

ता. मास	राशि	घं. मि.
५ मई	वक्री	१० ।२८
४ सित.	मार्गी	११ ।४०
२७ दिस.	मकरे	७ ।०१

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मि.
१० जन	कुंभे	८ ।१७
३ फर.	मीने	२७ ।००
२९ फर.	मेष	१९ ।४३
२८ मार्च	वृष	१४ ।०८
४ मई	मिथुने	८ ।४९

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मि.
२० मई	वक्री	११ ।२५
४ जून	वृष	१५ ।४०
२ जुला.	मार्गी	१५ ।३२
३० जुला.	मिथुने	१५ ।५२
१ सित.	कर्क	१३ ।०४
२८ सित.	सिंह	२३ ।२६
२४ अक्तू.	कन्या	१३ ।४०
१८ नवं.	तुला	६ ।२७
१२ दिस.	वृश्चिके	११ ।५१
५ जन.(९७)	धनु	१२ ।२८
२९ जन.	मकर	११ ।४०
२२ फर.	कुंभे	१० ।४६
१८ मार्च	मीन	११ ।५०
१० अप्रैल.	मेष	१५ ।३६

शनि राशि प्रवेश

१६ फरवरी (९६) को मीन राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्ष भर शनि मीन राशि में ही संचार करेगा ॥

ता. मास	राशि	घं. मि.
१८ जुला. (मीने)	वक्री	१२ ।३७
३ दिस. (मीने)	मार्गी	८ ।४५

राहु-केतु

राहु वर्षारंभ से संवत के अंत तक कन्या राशि में तथा केतु वर्षारंभ से संवत के अंत तक मीन राशि में संचार करेगा।

यूरेनस (Uranus)

वर्ष भर मकर राशि में संचार करेगा। १० मई को वक्री होकर १० अक्तूबर से इसी राशि में मार्गी होगा।

नैपच्यून (Neptune)

वर्ष भर मकर राशि में ही संचार करेगा ३० अप्रैल को वक्री को वक्र। होकर ८ अक्तूबर से इसी राशि में मार्गी होगा।

प्लूटो (Pluto)

आगामी वर्ष भर वृश्चिक राशि में ही संचार करेगा। ७ मार्च को वक्री होगा और १३ अगस्त से इसी राशि में मार्गी होगा।

ग्रहों का उदय अस्त

मंगल

वर्षारम्भ से मंगल मकर राशि में अस्त है। १३ मई ९६ से उदय १५ ।३७

बुधास्तोदय

ता. मास	
१२ जन.	पश्चिमेऽस्त
२४ जन.	पूर्वोदयः
१३ मार्च	पूर्वेऽस्तः
९ अप्रैल	पश्चिमोदयः
६ मई	पश्चिमेऽस्तः
२३ मई	पूर्वोदयः
३० जून	पूर्वेऽस्तः
२३ जुला.	पश्चिमोदयः
११ सित.	पश्चिमेऽस्तः
२४ सित.	पूर्वोदयः
१४ अक्तू.	पूर्वेऽस्तः
२५ नवं.	पश्चिमोदयः
२७ दिस.	पश्चिमेऽस्तः
७ जन.(९७)	पूर्वोदयः
२३ फर.	पूर्वेऽस्तः
२५ मार्च	पश्चिमोदयः

गुरू अस्तोदयः

ता. मास		घं. मि.
८ जन. (९७)	अस्त	१४ ।५६
२ फरवरी	उदय	१७ ।३२

शुक्रास्तोदय

ता. मास	राशि	घं. मि.
७ जून	अस्त.	२३ ।१०
१४ जून	उदय	२१ ।१५
२१ फर. (९७)	अस्त	१० ।१५

संवत के अंत तक अस्त रहेगा।

शनि अस्तोदय

ता. मास		घं. मि.
२९ फर. को	अस्त	३ ।१०
४ अप्रैल	उदय	७ ।५०
१३ मार्च ९७	अस्त	१९ ।१५
७ मार्च		१० ।२७

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२० मार्च	उ.भा.	२
२४ मार्च	उ.भा.	३
२७ मार्च	उ.भा.	४
३० मार्च	रेवती	१
३ अप्रैल	रेवती	२
६ अप्रैल	रेवती	३
१० अप्रैल	रेवती	४
१३ अप्रैल	अश्वि	(१) मेषे
१६ अप्रैल	अश्वि	२
२० अप्रैल	अश्वि	३
२३ अप्रैल	अश्वि	४
२७ अप्रैल	भरणी	१
३० अप्रैल	भरणी	२
४ मई	भरणी	३
७ मई	भरणी	४
१० मई	कृतिका	१
१४ मई	कृतिका	(२) वृषे
१७ मई	कृतिका	३
२१ मई	कृतिका	४
२४ मई	रोहिणी	१
२८ मई	रोहिणी	२
३१ मई	रोहिणी	३
४ जून	रोहिणी	४

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
७ जून	मृगे	१
११ जून	मृगे	२
१४ जून	मृगे	(३) मिथुने
१८ जून	मृगे	४
२१ जून	आर्द्रा	१
२५ जून	आर्द्रा	२
२८ जून	आर्द्रा	३
२ जुलाई	आर्द्रा	४
५ जुलाई	पुर्न	१
९ जुलाई	पुर्न	२
१२ जुलाई	पुर्न	३
१६ जुलाई	पुर्न	(४) कर्के
१९ जुलाई	पुष्य	१
२३ जुलाई	पुष्य	२
२६ जुलाई	पुष्य	३
३० जुलाई	पुष्य	४
२ अगस्त	अश्ले	१
६ अगस्त	अश्ले	२
९ अगस्त	अश्ले	३
१३ अगस्त	अश्ले	४
१६ अगस्त	मघा	(१) सिंहे
१९ अगस्त	मघा	२
२३ अगस्त	मघा	३
२६ अगस्त	मघा	४
३० अगस्त	पू.फा.	१
२ सितंबर	पू.फा.	१
६ सितबर	पू.फा.	३
९ सितबर	पू.फा.	४
१३ सितबर	उ.फा.	१
१६ सितबर	उ.फा.	(२) कन्ये
१९ सितंबर	उ.फा.	३
२३ सितबर	उ.फा.	४
२६ सितंबर	हस्ते	१
३० सितंबर	हस्ते	२
३ अक्तूबर	हस्ते	३
६ अक्तूबर	हस्ते	४

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१० अक्तूबर	चित्रा	१
१३ अक्तूबर	चित्रा	२
१६ अक्तूबर	चित्रा	(३) तुले
२० अक्तूबर	चित्रा	४
२३ अक्तूबर	स्वाती	१
२७ अक्तूबर	स्वाती	२
३० अक्तूबर	स्वाती	३
२ नवम्बर	स्वाती	३
५ नवम्बर	विशाखा	१
९ नवम्बर	विशाखा	२
१२ नवम्बर	विशाखा	३
१५ नवम्बर	विशा(४) वृश्चि.	
१९ नवम्बर	अनु	१
२२ नवम्बर	अनु	२
२५ नवम्बर	अनु	३
२९ नवम्बर	अनु	४
२ दिसम्बर	ज्येष्ठा	१
५ दिसम्बर	ज्येष्ठा	२
८ दिसम्बर	ज्येष्ठा	३
१२ दिसम्बर	ज्येष्ठा	४
१५ दिसम्बर	मूले	(१) धनुषि
१८ दिसम्बर	मूले	२
२२ दिसम्बर	मूले	३
२५ दिसंबर	मूले	४
२८ दिसंबर	पू.षा.	१
३१ दिसम्बर	पू.षा.	२
४ जन. (९७)	पू.षा	३
७ जनवरी	पू.षा.	४
१० जनवरी	उ.षा.	१
१३ जनवरी	उ.षा.	(२) मकरे
१७ जनवरी	उ.षा.	३
२० जनवरी	उ.षा.	४
२३ जनवरी	श्रवण	१
२७ जनवरी	श्रवण	२
३० जनवरी	श्रवण	३
२ फरवरी	श्रवण	४

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
५ फरवरी	धनिष्ठा	१
८ फरवरी	धनिष्ठा	२
१२ फरवरी	धनि (३)	कुम्भे
१५ फरवरी	धनिष्ठा	४
१९ फरवरी	शते	१
२२ फरवरी	शते	२
२५ फरवरी	शते	३
१ मार्च	शते	४
४ मार्च	पू.भा.	१
७ मार्च	पू.भा.	२
११ मार्च	पू.भा.	३
१४ मार्च	पू.भा. (४)	मीने
१७ मार्च	उ.भा.	१
२१ मार्च	उ.भा.	२
२४ मार्च	उ.भा.	३
२७ मार्च	उ.भा.	४
३१ मार्च	रेवती	१
३ अप्रैल	रेवती	२
६ अप्रैल	रेवती	३

मंगल नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२५ मार्च	उ.भा.	२
२९ मार्च	उ.भा.	३
२ अप्रैल	उ.भा.	४
५ अप्रैल	रेवती	१
११ अप्रैल	रेवती	२
१५ अप्रैल	रेवती	३
२० अप्रैल	रेवती	४
२४ अप्रैल	अश्वि (१)	मेष
२९ अप्रैल	अश्वि	२
३ मई	अश्वि	३
७ मई	अश्वि	४
१२ मई	भरणी	१
१६ मई	भरणी	२
२१ मई	भरणी	३
२५ मई	भरणी	४
३० मई	कृत्तिका	१
४ जून	कृति (२)	वृषे

मंगल नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१३ जून	कृति	४
१७ जून	रोहणी	१
२२ जून	रोहणी	२
२७ जून	रोहणी	३
२ जुलाई	रोहणी	४
६ जुलाई	मृगे	१
११ जुलाई	मृगे	२
१६ जुलाई	मृगे (३)	मिथुन
२१ जुलाई	मृगे	४
२६ जुलाई	आर्द्रा	१
३१ जुलाई	आर्द्रा	२
५ अगस्त	आर्द्रा	३
१० अगस्त	आर्द्रा	४
१५ अगस्त	पुर्न	१
२० अगस्त	पुर्न	२
२५ अगस्त	पुर्न	३
३१ अगस्त	पुर्न (४)	कर्के
५ सितबर	पुष्ये	१
१० सितबर	पुष्य	२
१६ सितबर	पुष्य	३
२१ सितबर	पुष्य	४
२६ सितबर	अश्ले	१
२ अक्तूबर	अश्ले	२
८ अक्तूबर	अश्ले	३
१३ अक्तूबर	अश्ले	४
१८ अक्तूबर	मघा (१)	सिंह
२५ अक्तूबर	मघा	२
३१ अक्तूबर	मघा	३
६ नवंबर	मघा	४
१२ नवंबर	पू.फा.	१
१८ नवंबर	पू.फा.	२
२५ नवंबर	पू.फा.	३
२ दिसंबर	पू.फा.	४
९ दिसंबर	उ.फा.	१
१७ दिसंबर	उ.फा. (२)	कन्या
२६ दिसंबर	उ.फा.	३
४ जन. ९७	उ.फा.	४
१७ जनवरी	[illegible]	१
५ फरवरी	को	वक्री

मगल नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
७ मार्च	उ.फा.	३
१६ मार्च	उ.फा.	४
२४ मार्च	उ.फा. (१)	सिंहे
३ अप्रैल	पू.फा.	४

बुध नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२१ मार्च	पू.भा. (४)	मीने
२२ मार्च	उ.भा.	१
२४ मार्च	उ.भा.	२
२६ मार्च	उ.भा.	३
२८ मार्च	उ.भा.	४
२९ मार्च	रेव.	१
३१ मार्च	रेव.	२
१ अप्रैल	रेव	३
३ अप्रैल	रेव	४
५ अप्रैल	अश्वि. (१)	मेष
६ अप्रैल	अश्वि.	२
८ अप्रैल	अश्वि.	३
१० अप्रैल	अश्वि.	४
११ अप्रैल	भरणी	१
१३ अप्रैल	भरणी	२
१५ अप्रैल	भरणी	३
१८ अप्रैल	भरणी	४
२० अप्रैल	कृति	१
२३ अप्रैल	कृति (२)	वृषे
२८ अप्रैल	कृति	३
४ मई	बुध	वक्री
१० मई	कृति	२
१६ मई	कृति (१)	मेषे
२३ मई	भरणी	(४)
२८ मई	बुध	मार्गी
१ जून	कृति	१
७ जून	कृति (२)	वृषे
११ जून	कृति	३
१४ जून	कृति	४
१७ जून	रोहणी	१
१९ जून	रोहणी	२
२१ जून	रोहणी	३
२३ जून	रोहणी	४

बुध नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२७ जून	मृगे	२
२९ जून	मृगे	३
१ जुलाई	मृगे	४
२ जुलाई	आर्द्रा	१
४ जुलाई	आर्द्रा	२
५ जुलाई	आर्द्रा	३
७ जुलाई	आर्द्रा	४
८ जुलाई	पुर्न	१
१० जुलाई	पुर्न	२
११ जुलाई	पुर्न	३
१३ जुलाई	पुर्न (४)	कर्के
१५ जुलाई	पुष्ये	१
१६ जुलाई	पुष्ये	२
१८ जुलाई	पुष्ये	३
१९ जुलाई	पुष्ये	४
२१ जुलाई	अश्ले	१
२३ जुलाई	अश्ले	२
२५ जुलाई	अश्ले	३
२७ जुलाई	अश्ले	४
२८ जुलाई	मघा (१)	सिंहे
३० जुलाई	मघा	२
२ अगस्त	मघा	३
४ अगस्त	मघा	४
६ अगस्त	पू.फा.	१
८ अगस्त	पू.फा.	२
११ अगस्त	पू.फा.	३
१३ अगस्त	पू.फा.	४
१६ अगस्त	उ.फा.	१
१९ अगस्त	उ.फा. २	कन्या
२२ अगस्त	उ.फा.	३
२६ अगस्त	उ.फा.	४
४ सितंबर	बुध	वक्री
११ सितंबर	उ.फा.	३
१८ सितंबर	उ.फा. (१)	सिंहे
२२ सितंबर	पू.फा.	४
२७ सितंबर	से	मार्गी
३० सितंबर	उ.फा.	१
३ अक्तूबर	उ.फा. (२)	कन्या

बुध नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
९ अक्तूबर	उ.फा.	४
११ अक्तूबर	हस्ते	१
१३ अक्तूबर	हस्ते	२
१५ अक्तूबर	हस्ते	३
१७ अक्तूबर	हस्ते	४
१९ अक्तूबर	चित्रा	१
२१ अक्तूबर	चित्रा	२
२३ अक्तूबर	चित्रा (३)	तुले
२७ अक्तूबर	स्वाती	१
२९ अक्तूबर	स्वाती	२
३१ अक्तूबर	स्वाती	३
२ नवंबर	स्वाती	४
४ नवंबर	विशाखा	१
६ नवंबर	विशाखा	२
८ नवंबर	विशाखा	३
१० नवंबर	विशा. (४)	वृश्चि
१२ नवंबर	अनुराधा	१
१५ नवंबर	अनुराधा	२
१७ नवंबर	अनुराधा	३
१९ नवंबर	अनुराधा	४
२१ नवंबर	ज्येष्ठा	१
२३ नवंबर	ज्येष्ठा	२
२५ नवंबर	ज्येष्ठा	३
२८ नवंबर	ज्येष्ठा	४
३० नवंबर	मूले (१)	धनुषि
२ दिसंबर	मूले	२
४ दिसंबर	मूले	३
७ दिसंबर	मूले	४
९ दिसंबर	पू.षा.	१
१२ दिसंबर	पू.षा.	२
१५ दिसंबर	पू.षा.	३
१८ दिसंबर	पू.षा.	४
२४ दिसंबर	से	वक्री
२८ दिसंबर	पू.षा.	३
३१ दिसंबर	पू.षा.	२
२ जन. (९७)	पू.षा.	१
५ जनवरी	मूले	४

बुध नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१३ दिसंबर	से	मार्गी
१६ दिसंबर	मूले	४
२१ जनवरी	पू.षा.	१
२४ जनवरी	पू.षा.	२
२८ जनवरी	पू.षा.	३
३० जनवरी	पू.षा.	४
२ फरवरी	उ.षा.	१
४ फरवरी	उषा (२)	मकरे
७ फरवरी	उ.षा.	३
९ फरवरी	उ.षा.	४
११ फरवरी	श्रवण	१
१४ फरवरी	श्रवण	२
१६ फरवरी	श्रवण	३
१८ फरवरी	श्रवण	४
२० फरवरी	धनि	१
२२ फरवरी	धनि	२
२४ फरवरी	धनि (३)	कुंभ
२६ फरवरी	धनि	४
२८ फरवरी	शते	१
२ मार्च	शते	२
४ मार्च	शते	३
६ मार्च	शते	४
७ मार्च	पू.भा.	१
९ मार्च	पू.भा.	२
११ मार्च	पू.भा.	३
१३ मार्च	पू.भा. (४)	मीन
१४ मार्च	उ.भा.	१
१६ मार्च	उ.भा.	२
१८ मार्च	उ.भा.	३
१९ मार्च	उ.भा.	४
२१ मार्च	रेव.	१
२३ मार्च	रेव	२
२४ मार्च	रेव	३
२६ मार्च	रेव.	४
२८ मार्च	अश्वि (१)	मेष
३० मार्च	अश्वि	२
१ अप्रैल	अश्वि	३

गुरू नक्षत्र प्रवेश (धनु राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१४ मार्च	पू.षा.	३
१६ अप्रैल	पू.षा.	४
५ मई	को	वक्री
२२ मई	पू.षा.	३
२६ जून	पू.षा.	२
२४ जुला.	पू.षा.	१
४ सित.	से	मार्गी
५ अक्तू.	पू.षा.	२
७ नवं.	पू.षा.	३
२५ नवं.	पू.षा.	४
११ दिसं.	उ.षा.	१
२६ दिसं.	उ.षा. (२)	मकरे
९ जन. ९७	उ.षा.	३
२३ जन. ९७	उ.षा.	४
६ फर.	श्रवणे	१
२१ फर.	श्रवणे	२
८ मार्च	श्रवणे	३
२५ मार्च	श्रवणे	४
१३ अप्रै.	धनि.	१

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२१ मार्च	भरणी	४
२५ मार्च	कृतिका	१
२८ मार्च	कृति (२)	वृषे
३१ मार्च	कृतिका	३
४ अप्रैल	कृतिका	४
७ अप्रैल	रोहिणी	१
११ अप्रैल	रोहिणी	२
१५ अप्रैल	रोहिणी	३
१९ अप्रैल	रोहिणी	४
२३ अप्रैल	मृगशिर	१
२८ अप्रैल	मृगशिर	२
४ मई	मृग (३)	मिथुने
१२ मई	मृगशिर	४
२० मई	से	वक्री
२७ मई	मृगशिर	३
४ जून	मृग (२)	वृषे

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१५ जून	रोहिणी	४
२२ जून	रोहिणी	३
२ जुलाई	से	मार्गी
१२ जुलाई	रोहिणी	४
२० जुलाई	मृगशिर	१
२५ जुलाई	मृगशिर	२
३० जुलाई	मृग	(३) मिथुने
३ अगस्त	मृगशिर	४
७ अगस्त	आर्द्रा	१
११ अगस्त	आर्द्रा	२
१५ अगस्त	आर्द्रा	३
१८ अगस्त	आर्द्रा	४
२२ अगस्त	पुनर्वसु	१
२५ अगस्त	पुनर्वसु	२
२९ अगस्त	पुनर्वसु	३
१ सितंबर	पुन	(४) कर्के
४ सितंबर	पुष्य	१
७ सितंबर	पुष्य	२
१० सितंबर	पुष्य	३
१३ सितंबर	पुष्य	४
१६ सितंबर	आश्लेषा	१
१९ सितंबर	आश्लेषा	२
२२ सितंबर	आश्लेषा	३
२५ सितंबर	आश्लेषा	४
२८ सितंबर	मघा	(१) सिंहे
१ अक्तूबर	मघा	२
४ अक्तूबर	मघा	३
७ अक्तूबर	मघा	४
१० अक्तूबर	पू. फा.	१
१३ अक्तूबर	पू.फा.	२
१५ अक्तूबर	पू.फा.	३
१८ अक्तूबर	पू.फा.	४
२१ अक्तूबर	उ.फा	१
२४ अक्तूबर	उ.फा	(२) कन्ये
२७ अक्तूबर	उ.फा.	३
२९ अक्तूबर	उ.फा	४
१ नवंबर	हस्त	१
४ नवंबर	हस्त	२
७ नवंबर	हस्त	३

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
९ नवंबर	हस्त	४
१२ नवंबर	चित्रा	१
१५ नवंबर	चित्रा	२
१८ नवंबर	चित्रा	(३) तुला
२० नवंबर	चित्रा	४
२३ नवंबर	स्वाती	१
२६ नवंबर	स्वाती	२
२८ नवंबर	स्वाती	३
१ दिसंबर	स्वाती	४
४ दिसंबर	विशाखा	१
६ दिसंबर	विशाखा	२
९ दिसंबर	विशाखा	३
१२ दिसंबर	वि ४ वृश्चिके	
१४ दिसंबर	अनुराधा	१
१७ दिसंबर	अनुराधा	२
२० दिसंबर	अनुराधा	३
२२ दिसंबर	अनुराधा	४
२५ दिसंबर	ज्येष्ठा	२
२८ दिसंबर	ज्येष्ठा	३
२ जन.(९७)	ज्येष्ठा	४
५ जनवरी	मूले	(१) धनुषि
८ जनवरी	मूले	२
१० जनवरी	मूले	३
१३ जनवरी	मूले	४
१५ जनवरी	पू.षा.	१
१८ जनवरी	पू.षा.	२
२१ जनवरी	पू.षा.	३
२५ जनवरी	पू.षा.	४
२६ जनवरी	उ.षा.	१
२९ जनवरी	उ.षा.	(२) मकरे
३१ जनवरी	उ.षा.	३
३ फरवरी	उ.षा.	४
८ फरवरी	श्रवण	२
११ फरवरी	श्रवण	३
१४ फरवरी	श्रवण	४
१६ फरवरी	धनिष्ठा	१
१९ फरवरी	धनिष्ठा	२
२२ फरवरी	धनि	(३) कुंभे
२५ फरवरी	धनिष्ठा	४
२७ फरवरी	शतभिषा	१

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२ मार्च	शतभिषा	२
५ मार्च	शतभिषा	३
७ मार्च	शतभिषा	४
१० मार्च	पू.भा.	१
१२ मार्च	पू.भा.	२
१५ मार्च	पू.भा.	३
१८ मार्च	पू.भा.	(४) मीने
२० मार्च	उ.भा.	१
२३ मार्च	उ.भा.	२
२६ मार्च	उ.भा.	३
२९ मार्च	उ.भा.	४
३१ मार्च	रेवती	१
३ अप्रैल	रेवती	२
६ अप्रैल	रेवती	३
८ अप्रैल	रेवती	४
११ अप्रैल	अश्वि	(१) मेषे

शनि नक्षत्र प्रवेश
(मीन राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
११ अप्रैल	उ.भा.	२
११ मई	उ.भा.	३
१ जुलाई	उ.भा.	४
१८ जुलाई	से	वक्री
५ अगस्त	उ.भा.	३
२८ सितंबर	उ.भा.	२
३ दिसंबर	से	मार्गी
३ फर.(९७)	उ.भा.	३
५ मार्च	उ.भा.	४
१ अप्रैल	रेवती	१

राहु नक्षत्र प्रवेश
(कन्या राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
७ फरवरी	चित्रा	१
९ अप्रैल	हस्ते	४
१२ जून	हस्ते	३
१३ अगस्त	हस्ते	२
१५ अक्तूबर	हस्ते	१
१७ दिसंबर	उ.फा.	४
१८ फर.(९७)	उ.फा.	३

केतु नक्षत्र प्रवेश
(मीन राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
७ फरवरी	रेवती	३
९ अप्रैल	रेवती	२
१२ जून	रेवती	१
१३ अगस्त	उ.भा.	४
१५ अक्तूबर	उ.भा.	३
१७ दिसंबर	उ.भा.	२
१८ फर.(९७)	उ.भा.	१

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश
(मकर राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
२० जनवरी	उ.षा.	४
२६ मार्च	श्रवण	१
१० मई	से	वक्री
२२ जून	उ.षा.	
१० अक्तू.	से	मार्गी
१० जन.(९७)	श्रव	१
१२ मार्च	श्रवण	२

नेपच्यून नक्षत्र प्रवेश
(मकर राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
१२ मार्च	उ.षा.	३
३० अप्रैल	से	वक्री
१८ जून	उ.षा.	२
८ अक्तू.	से	मार्गी
९ जन.(९७)	उ.षा.	३

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश
(वृश्चिक राशि में)

ता. मास	नक्षत्र	घं. मि.
७ मार्च	को	वक्री
१६ जुला.	अनु	१
१३ अग.	से	मार्गी
२ सित.	अनु	२
१४ दिसं	अनु	३

प्रसिद्ध लाल किताब—के अनुसार वर्षफल बनाने की सरल विधि तथा प्रसिद्ध उपायों के लिए पढ़ें—**वर्षफल चन्द्रिका** भा. टी. मूल्य ४५

ज्योतिष के कुछ प्रसिद्ध योग

लाटरी योग

जब लग्नाधिपति ग्रह किसी अन्य मित्र ग्रह या योगकारक ग्रह के साथ दूसरे, पंचम, ग्यारहवें तथा नवें भावों में राहु अथवा केतु ग्रहों के साथ मित्र क्षेत्री सम्बन्ध बना रहा हो तो लाटरी द्वारा अथवा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनते हैं।

संतान सुख विचार

लग्नेश जब गोचरवश (i) पंचमेश के साथ योग करे, (ii) अपनी उच्चराशि में आवे या (iii) अपनी स्वराशि में आवे तब पुत्र प्राप्ति की संभावना बनती है। यदि लग्नेश गोचरवश पंचम भाव में आवे या पंचमेश ग्रह के साथ सम्बन्ध (स्थान, दृष्टि आदि द्वारा) स्थापित करे तो उस वर्ष संतान सुख होता है।

विवाह सुख दिशा विचार

पुरुष की कुण्डली में देखें कि (i) सप्तम भाव में कौन-सी राशि है, (ii) सप्तमेश किस राशि में है। (iii) शुक्र किस राशि में है। इन तीनों राशियों में से किसी एक की राशि की दिशा में विवाह होगा। अर्थात् उस दिशा में रहने वाली लड़की से विवाह होगा। लग्नेश जिस राशि या नवांश में हो उससे त्रिकोण राशि में जब गोचर वश शुक्र वा सप्तमेश आता है तब विवाह होता है।

भाग्योदय काल

सप्तमेश या शुक्र ३।६।७।१०।११वें स्थान में हो तो विवाह के बाद भाग्योदय होता है। भाग्येश रवि हो तो २२वें वर्ष में, चद्र हो तो २४वें वर्ष में, मंगल हो तो २८वें वर्ष में, बुध हो तो ३२वें वर्ष में, गुरु हो तो १६वें वर्ष में, शुक्र हो तो २५वें वर्ष में, शनि हो तो ३६वें वर्ष में और राहु हो तो ४२वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

वर्ष में विदेश यात्रा योग

१. वर्ष लग्न कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ एव सप्तम भावों में यदि चर राशियां आ जाएं तथा इन भावों के साथ शुभ ग्रह सम्बन्ध करते हों, तो उस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बनते हैं।

२. जन्म कुण्डली का सप्तमेश ग्रह यदि वर्ष में मुंथेश व वर्षेश होकर १० या सप्तम में आ जाए तो वर्ष में शुभ विदेश यात्रा होती है। अथवा वर्ष में स्वगृही मुंथा से सप्तम भावस्थ उच्च राशिस्थ होवे तो विदेश यात्रा होगी।

३. लग्नेश यदि द्वितीयेश अथवा पंचमेश ग्रह के साथ नवम भाव में चर राशिस्थ हो तथा चन्द्रमा भी चर राशिगत हो तो विदेश में विशेष भाग्योदय होता है।

कम्पीटीशन में सफलता के योग

१. वर्ष कुण्डली के पंचम भाव में चन्द्र-गुरु अथवा चन्द्र-शुक्र का योग हो अथवा गुरु/शुक्र द्वारा दृष्ट तथा पंचमेश की शुभ दृष्टि भी पंचम भाव पर हो तो परीक्षा या कम्पीटीशन (प्रतियोगिता) में असफलता प्राप्त होगी। यदि पंचम में पाप ग्रहों का योग अथवा दृष्टि हो तो परीक्षा में सफलता होगी।

२. दूसरे भाव में मुंथा हो और मुंथेश पंचम भाव में शुभ होकर स्थित हो तो परीक्षा या प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी।

३. जन्म कुण्डली का पंचमेश ग्रह यदि वर्ष में पंचम अथवा नवम भाव में शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट हो तो प्रतियोगिता अथवा परीक्षा में सफलता प्रदान करता है। अथवा नवम भाव में गुरु हो और मुंथा भी शुभ ग्रह में हो तो सफलता होगी।

सन्देहशील व्रत पर्व निर्णय संवत् २०५३

१. गंगा सप्तमी— वैशाख शुक्ला सप्तमी को श्री गंगा जी का विधिवत पूजन करने का विधान है। शास्त्रानुसार मध्यान्ह व्यापिनी सप्तमी को श्री गंगा पूजन का माहात्म्य माना गया है। यदि दोनों दिन मध्यान्हव्यापिनी हो तो पहिली मध्यान्ह सप्तमी को विशेष **पुण्यप्रदा** एवं ग्राह्य माना गया है। प्रस्तुत वर्ष २४ और २५ अप्रैल दोनों को **सप्तमी मध्यान्ह व्यापिनी** है, तदनुसार पूर्वतः मध्यान्हव्यापिनी **सप्तमी (२४ अप्रैल) को ही श्री गंगा पूजन का विशेष माहात्म्य** होगा।

वैशाखशुक्ल सप्तम्यां गंगोत्पत्तिस्तस्यां मध्याह्नव्यापिनी गंगापूजनं कार्यम्॥ दिनद्वये तद्व्याप्तौ पूर्वा॥ धर्मसिन्धु

२. कुमारषष्ठी—२१ जुलाई ९६ रविवार को पूर्वाविद्धा आषाढ़ शुक्ल तिथि को ग्राह्य मानी जाएगी—

कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्च चतुर्दशी। एताः पूर्वयुताः कार्या तिथ्यन्ते पारणं भवेत्॥

३. श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत—इस वर्ष भाद्र. कृष्ण जन्माष्टमी बुधवार (४ सितबंर, ९६) को अर्ध रात्रि व्यापिनी, रोहिणी नक्षत्र एवं **बुधवार** के संयोग से व्रत जपादि की दृष्टि से अत्यन्त पुण्यप्रदा होगी। **श्री कृष्ण जन्म** (जयन्ती योग) में पूर्व विद्धा अष्टमी की ग्राह्यता के सम्बन्ध में निर्णयामृत में लिखा है—

जयन्त्यां पूर्वविद्धायामुपवासं समाचरेत्। तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते व व्रती कुर्वीत पारणमिति

व्रत पारणादि का उत्सव नवमी युता तिथि (५ अक्तू.) को होगा।

सप्तमी संयुताष्टम्यां निशीथे रोहिणी यदि।

भविता साष्टमी पुण्या यावच्चन्द्र दिवाकराविति॥ —**अग्निपुराण**

५ अक्तूबर, **गुरुवार को अष्टमी**, नवमी तिथि युता एवं रोहिणी नक्षत्र युक्ता (प्रातः ९:४२ तक) होगी॥ मथुरा, गोकुलादि में सम्भवतः इसी उदय कालिक तिथि का समायोजन होगा। **पद्मपुराण** में नवमी युता अष्टमी को ही ग्रहण करने को निर्देश दिया है—

नवम्यां सैव ग्राह्या स्यात् सप्तमी संयुता नहि इत्यादि॥

भारत सरकार के गज़ट में श्री कृष्ण जन्माष्टमी की छुट्टी की घोषणा प्रायः **श्री कृष्ण जन्म भूमि मथुरा** में घोषित तिथि द्वारा ही अनुसरण किया जाता है।

४. पूर्णिमा का श्राद्ध—भाद्रपद पूर्णिमा का श्राद्ध गुरूवार २६ सितबंर को होगा। क्योंकि इसी दिन पूर्णिमा मध्यान्ह, एवं सूर्यास्त व्यापिनी होने से श्राद्ध तर्पणादि कार्य में ग्राह्य होगी। यथा—

देवाकार्ये तिथि ज्ञेया यस्यामस्तमितो रविः। —याज्ञवल्क्य

प्रतिपदा का श्राद्ध उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार ही मध्यान्ह एवं प्रदोष व्यापिनी प्रतिपद [illegible]

५. द्वादशी का श्राद्ध—इस वर्ष आश्विन कृष्ण द्वादशी मंगलवार (८ अक्तू. ९६) तथा बुधवार (९ अक्तू. ९६)—दोनों दिन मध्यान्ह एवं अपरान्ह व्यापिनी हैं। जिससे एकोदिष्ट और पार्वण श्राद्ध इन दोनों दिन पड़ते हैं। परन्तु शास्त्राज्ञानुसार **द्वादशी का श्राद्ध मंगलवार, ८ अक्तूबर** ९६ को ही किया जायेगा, क्योंकि द्वादशी तिथि इसी दिन सूर्यास्त व्यापिनी है। शास्त्र वचनानुसार यदि दोनों दिन अपराहन्ह व्यापिनी हो, तो पूर्व दिन वाली तिथि ही श्राद्ध कर्म हेतु ग्रहण की जाए, क्योंकि वह तिथि सूर्यास्त फल में भी विद्यमान होगी, उस तिथि में किए गए पिण्डदान, तर्णणादि पितर विशेष रूप से स्वीकार करते हैं।—

देवकार्ये तिथि ज्ञेया यस्याम्युदितो रविः।

पितृ कार्यतिथि ज्ञेय यस्यामस्तमितो रविः (वृहद् याज्ञवल्काय)

उपरोक्त वचनानुसार द्वादशी का श्राद्ध ८ अक्तूबर, १९९६ मंगलवार को ही ग्राह्य होगा।

६. होलिका दहन—होलिका दहन फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को सायंकाल में प्रदोष व्यापी **भद्रारहित** काल में होना चाहिए। यदि परिस्थितिवश भद्रा परिव्याप्त रहे, तो भद्रामुखकाल को छोड़ कर होलिका दहन कर सकते हैं। वि. संवत् २०५३ में रविवार २३ मार्च, १९९६ ई० को सायं ५.५५ से रात्रि ७ बजकर ५५ तक भद्रामुख काल रहेगा। **अतएव रात्रि ७.५५ के पश्चात् होलिका दहन कर सकते हैं।**

संकट नाशक श्री गणेश स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेत् नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्
लम्बोदर पंचमं च षष्ठ विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।"
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपति द्वादशं तु गजाननम्"।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेत् नरः
न च विघ्नभयं तस्य सर्व सिद्धि करं प्रभो ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।
जपेद गणपति स्तोत्रं षड्भि मासै फलं लभेत्।

विक्रमी सं २०५३, चैत्र शुक्ल प्रथ. शाकः १९१८, सन ई० १९९६ (२० मार्च से ३ अप्रैल तक) हिजरी १४१६ मुस्लि, उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्य उदयास्त जालन्धर

दवाकार्य तिथि ज्ञेया यस्यामस्तमितो रविः।
प्रतिपदा का श्राद्ध उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार ही मध्यान्ह एवं प्रदोष व्यापिनी प्रतिपद

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।
जपेद् गणपति स्तोत्रं षड्भि मासै फलं लभेत्।

विक्रमी सं २०५३, चैत्र शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन ई० १९९६ (२० मार्च से ३ अप्रैल तक) हिजरी १४१६ मुस्लि, उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्य उदयास्त जालन्धर

दि मा घड़ी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	फाल्गुन	शव्वाल	मार्च	चैत्र	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत पर्व त्यौहार, ग्रह संचारादि — सूर्योत्तरायणे बसंत ऋतु उत्तर गोलार्ध ब्रह्म योग (क्षय) ५८ ।०८ (२० मार्च)	नि. रा.	सू. अ	स्प क	ष्ट वि	सू घं	उ. मि	सू घं	अ. मि
२९ ।५७	१	बुध	१९	४०	१४	२७	उभा	१३	०५	शुक	२	०१	ब	१९	४०	३०	२९	२०	७	मीने	चैत्र नवरात्र व विरोधी नाम सवंत्सर शुरू, घटस्थापन, चंद्र दर्शनम् B	११	०५	५४	२१	६	३५	६	३४
३० ।००	२	बृह	१६	५३	१३	११	रेव	११	४८	ऐंद्र	५२	१५	कौ	१७	५३	चैत्र	जि	२१	८	मेषे ११ ।४८	पंचक समाप्त ११ ।४८, मीने बुधः ३ ।१७, मत्स्य जयं., स सि. योग A	११	०६	५३	५४	६	३५	६	३५
३० ।०५	३	शुक्र	१५	५०	१२	५३	अश्वि	१२	३५	वै	४१	२५	ग	१५	५०	२	२	२२	९	मेषे	भद्रा ४६ ।१२ से प्रा०, गणगौरी तीज, स. सि; उभा १ बुधः ४६ ।३०	११	०७	५३	२५	६	३४	६	३६
३० ।१०	४	शनि	१६	३३	१३	०९	भर	१४	३५	वि	४८	०३	वि	१६	३३	३	३	२३	१०	वृषे ३० ।३४	भद्रा १६ ।३३ तक A शक संवत १९१८ प्रा. १ जिल्काद	११	०८	५१	५५	६	३२	६	३६
३० ।१७	५	रवि	१८	५५	१४	०४	कृति	१८	३३	प्री	४७	४३	बा	१८	५५	४	४	२४	११	वृषे	श्री लक्ष्मी पंचमी B उभा(१) भौमः ५५ ।५२ सायने सूर्य मेष में १७ ।१८	११	०९	५२	२०	६	३१	६	३८
३० ।२५	६	चंद्र	२३	०३	१५	४२	रोह	२३	५५	आ	४८	३५	तै	२३	०३	५	५	२५	१२	मिथु ५७ ।०४	स्कन्द षष्ठी, कृतिका (१) शुक्रः ५ ।०३, स. सि. योगः	११	१०	५१	४६	६	२९	६	३९
३० ।२८	७	मंग	२८	१०	१७	४३	मृग	३०	१३	सौ	५०	२३	व	२८	१०	६	६	२६	१३	मिथुने	भद्रा २८ ।१० से प्रारम्भ, द्विपुष्कर योगः	११	११	५१	०६	६	२८	६	३९
३० ।३३	८	बुध	३४	१४	२०	०७	आर्द्रा	३७	३३	शो	५२	३३	वि	१	१२	७	७	२७	१४	मिथुने	भद्रा २ ।१२ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला मनसा देवी, कांगड़ा	११	१२	५०	२७	६	२७	६	४०
३० ।३५	९	बृह	४०	४३	२२	४२	पुन	४४	५८	अ.	५४	५३	बा	७	२९	८	८	२८	१५	कर्के २८ ।०७	श्री राम नवमी, नवरात्र समा, वृषे शुक्रः १९ ।१५, स. सि. योगः	११	१३	४९	४४	६	२६	६	४०
३० ।४२	१०	शुक्र	४१	५०	२३	०८	पुष्य	५१	५८	सु.	५६	३५	तै	११	१७	९	९	२९	१६	कर्के	रेवती (१) बुधः ३१ ।५०	११	१४	४९	००	६	२४	६	४१
३० ।४५	११	शनि	४६	५५	२५	०९	श्ले	५८	०८	धृ	५५	२३	व	१४	२३	१०	१०	३०	१७	सिं ५८ ।०८	भद्रा १४ ।२३ से ४६ ।५५ तक, कामदा एका. व्रत, रेवत्यां (१) K	११	१५	४८	१४	६	२३	६	४१
३० ।५०	१२	रवि	५५	१३	२८	२७	मघा	६०	००	शूल	५७	५८	ब	२१	०४	११	११	३१	१८	सिंहे	गंडमूलादि विचार, K सूर्यः ५२ ।२३ गंडमूलादि	११	१६	४७	२५	६	२२	६	४२
३० ।५७	१३	चंद्र	५७	४०	२९	२४	मघा	३	१३	गंड	५७	२०	कौ	२६	२७	१२	१२	अप्रै.	१९	सिंहे	श्री महावीर जंयती, अनंग त्र्योदशी, सोम प्रदोष व्रत, *	११	१७	४६	३६	६	२०	६	४३
३१ ।०२	१४	मंग	५७	१३	२९	१२	पूफा	६	५३	वृ	५५	३५	ग	२७	२७	१३	१३	२	२०	कं २२ ।२९	भद्रा ५७ ।१३ से प्रारंभः * गं मू. प्रातः ७ ।३७ तक	११	१८	४५	४३	६	१९	६	४४
३१ ।०५	१५	बुध	५८	२३	२९	३९	उफा	९	१८	ध्रु	५२	३८	वि	२७	४८	१४	१४	३	२१	कन्यायां	भद्रा २७ ।४८ तक, पूर्णिमा स्नानदान, वैशा. स्नान शुरू, प्रस्तास्त D	११	१९	४४	४८	६	१८	६	४४

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्प० प्रातः ५.३० बजे २७ मार्च

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्प० प्रातः साढे पाँच ३ अप्रैल

D चन्द्रग्रहण, श्री हनुमान जयं. (द. भारत) स. सि. योगः १० बजे से प्रारम्भ

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	११	११	८	०	११	५	११
१२	१२	०८	११	२१	२८	०४	२४	२४
४८	०५	०१	२८	३५	३७	४८	०४	०४
०७	५७	०६	५०	१८	४६	४६	१३	१३
५९ २१	७१३ २१	४६ ४१	१२४ ३	६ ४२	६० ४१	७ ३	३ ११	३ ११
उभा	आ.	उभा	उभा	पूषा	कृति	उभा	चित्र	रेव
३	२	२	३	३	१	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

कु. अष्टमी सूर्योदय २७ मार्च

भाव	ग्रह
१२	सू. मं. के. श. बु.
१	शु.
२	
३	चं.
४	
५	
६	रा.
७	
८	
९	गु.
१०	
११	

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	११	११	८	१	११	५	११
१९	०७	१३	२५	२२	०५	०५	२३	२३
४२	३३	२७	४५	१९	३३	३९	४१	४१
५०	२७	१७	१९	२९	२२	४३	५७	५७
५९ ०६	७८४ २	४६ ३०	१२२ ५२	५ ३७	५७ ५३	७ ३	३ ११	३ ११
रेव	उफा	उभा	रेव	पूषा	कृति	उभा	चित्र	रेव
१	४	४	३	३	३	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
०	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

कु. पूर्णिमा सूर्योदय ३ अप्रैल

भाव	ग्रह
१२	सू. बु. के. मं. श.
१	
२	शु.
३	
४	
५	
६	रा. चं.
७	
८	
९	गु.
१०	
११	

चैत्र शुक्ल पक्षफल

"विरोधी" नामक नया संवत्सर प्रारंभ होगा। संकल्पादि शुभ कार्यों में इसी का प्रयोग करें। आगामी वर्ष का राजा बुध एवं मन्त्री शनि रहेगा। वर्ष प्रवेश कुंडली में पंचग्रही योग अशुभ है। राज नेताओं में तथा लोगों में परस्पर वैर-विरोध एवं वैमनस्य अधिक रहेगा। वर्ष में राजनैतिक उथल-पुथल व परिवर्तन घटित होगें। धन प्रसार एवं सुख साधनों में भी वृद्धि होगी, परन्तु सामान्य प्रजा विविध कष्टों से पीड़ित रहे। चोरी, ठगी व हिंसा की वारदातें अधिक होगी।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक पवित्र ज्योति जलाकर भगवान् श्री विष्णु, गणपति, श्री दुर्गादि देवों की श्रद्धापूर्वक पूजार्चन एवं दानादि करने से वर्षभर स्वास्थ्य, सुख एवं समृद्धि बनी रहती है। (श्री दुर्गाष्टमी पर मनसादेवी, नैना देवी एवं चिन्तपूर्णी आदि स्थलों पर भव्य मेलों का आयोजन होता है।) व्यापारिक भविष्य—द्वितीया तिथि से तृतीया (२२ मार्च) को मीन राशि पर शनि-मंगल की अंशात्मक युति होने से तथा इसी राशि पर पंचग्रही योग बनने से राजनैतिक व सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध एवं तनावपूर्ण होगा। हाज़िर एवं वायदा व्यापार में विशेषकर गेहूँ, चने, चावल, तिल, मूंगफली, खल-बिनौले, केशर चाँदी, तांबा पीतल, लकड़ी आदि में तेजी के उछाले आएंगे। नवमी को शुक्र वृष में आने से चांदी, रुई, चीनी में घटाबढ़ी होगी। दशमी से रेवती के बुध में चने, जूट, तांबा, पीपल, गेहूँ व लाल रंग की वस्तुओं में तेज़ी होगी। वायदा व्यापार में भी तेज़ी की लाईन चलेगी। आकाश लक्षण—पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. सवंत् २०५३, वैशाख कृष्ण पक्ष शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (ता. ४ अप्रैल से १७ अप्रैल तक) सूर्यस्पष्ट (सूर्योदय कालिक) सूर्य उदयास्त जालन्धर

दिन मा. घटीपल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	मूला (क्षय) ९ अप्रैल ५७ ।१८, सिद्ध ११ अप्रैल ५६ ।२३ — सूर्योत्तरायणे बसंत ऋतु —उत्तर गोलार्ध	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सू. घ.	उ. मि.	सू. घ.	अ. मि.
३१ ।१०	१	बृह	५६	४०	२८	५७	हस्त	१०	१८	व्या	४८	४५	बा	२७	३२	१५	१५	४	२२	तुले ४० ।०९	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा, शन्युदयः ३ ।५३	११	२०	४३	५२	६	१७	६	४५
३१ ।१३	२	शुक्र	५३	५३	२७	४९	चित्रा	१०	००	हर्ष	४३	५३	तै	२५	१७	१६	१६	५	२३	तुलायां	अश्वि (१) बुध मेष में १ ।५३, रेवत्यां १ भौमः ४९ ।१८, गुड फ्राईडे	११	२१	४२	५४	६	१६	६	४५
३१ ।२०	३	शनि	५०	२३	२६	१९	स्वा	८	५३	वज्र	३८	१५	व	२२	०३	१७	१७	६	२४	वृश्चि ५२ ।२१	भद्रा २२ ।०३ से ५० ।१३ तक, स. सि. योग ९ ।४७ बजे तक	११	२२	४१	५१	६	१४	६	४६
३१ ।२५	४	रवि	४५	५३	२४	३४	विशा	६	५०	सि	३२	१३	ब	१८	०३	१८	१८	७	२५	वृश्चिके	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, रोहिणी (१) शुक्रः ३९ ।५	११	२३	४०	४९	६	१३	६	४७
३१ ।२८	५	चंद्र	४१	२३	२२	४५	अनु	४	०८	व्य	२५	१०	कौ	१३	३८	१९	१९	८	२६	वृश्चिके	स. सि. योगः प्रातः ७ ।५१ घं. मि. तक, गंडमूलादि ६.५१ के उप०	११	२४	३९	४५	६	१२	६	४७
३१ ।३५	६	मंग	३५	४८	२०	२९	ज्ये	०	५८	वर	१८	१५	ग	८	३६	२०	२०	९	२७	धनु ० ।५८	भद्रा ३५ ।४८ से शुरू, पश्चिमोदयः गुरुः १० ।२०, हस्ते ४ राहु, रेव (२) A	११	२५	३८	३७	६	१०	६	४८
३१ ।४०	७	बुध	३१	५५	१८	५५	पूषा	५३	४३	परि	१०	५८	वि	३	५२	२१	२१	१०	२८	धनुषि	भद्रा ३ ।५२ तक A केतुः ५३ ।१७ ग. मूं.	११	२६	३७	२९	६	०९	६	४९
३१ ।४३	८	बृह	२४	४३	१६	०१	उषा	५०	०३	शिव	३	४१	कौ	२४	४३	२२	२२	११	२९	मकरे ७ ।४८	उभायां (२) शनि १८ ।२३, भर (१) बुधः ५० ।४८	११	२७	३६	२०	६	०८	६	४९
३१ ।४९	९	शुक्र	१९	१०	१३	४७	श्रव	४६	२५	सा	४९	०५	ग	१९	१०	२३	२३	१२	३०	मकरे	भद्रा ४६ ।२९ से शुरू, सर्वार्थ सिद्ध योगः	११	२८	३५	०९	६	०७	६	५०
३१ ।५३	१०	शनि	१३	४८	११	३७	धनि	४३	०८	शुभ	४२	१५	वि	१३	४८	२४	२४	१३	वैश	कुं १४ ।४७	भद्रा १३ ।४८ तक, अश्वि १ मेषे सूर्यः २६ ।४२, वैशाख संक्रां ३० मुहूर्ति B	११	२९	३३	५५	६	०६	६	५१
३१ ।५८	११	रवि	८	४०	९	३३	शत	४०	४३	शु.	३५	३८	बा	८	४०	२५	२५	१४	२	कुम्भे	वरूथिनी एकादशी व्रतम् B पंचकारंभ १४ ।४७ पुण्य C	०	००	३२	४०	६	०५	६	५२
३२ ।०३	१२	चंद्र	४	२०	१७	४८	पूभा	३७	५८	ब्रह्म	२९	३०	तै	४	२०	२६	२६	१५	३	मी २३ ।३९	सोम प्रदोष व्रत C संक्रा. १० ।३७ उप.	०	०१	३१	२१	६	०४	६	५३
३२ ।०५	१३	मंग	०	३८	६	१८	उभा	३६	२५	ऐंद्र	२३	५०	व	०	३८	२७	२७	१६	४	मीने	भद्रा ० ।३८ से २९ ।०७ तक, पूषा (४) गुरुः २६ ।००, स. सि. योगः	०	०२	३०	०४	६	०३	६	५३
अवम	१४	मंग	५७	३५	२९	०५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	चतुर्दशी तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२ ।१२	३०	बुध	५५	४५	२८	१९	रेव	३६	००	वैधृ	११	०८	वि	२६	४०	२८	२८	१७	५	मेषे ३६ ।००	पंचक समाप्त ३६ ।००, अमावस स्नान दानादौ, मेला पिंजौर (कालका) गं.मु.	०	०३	२८	४४	६	०१	६	५४

गुरौ अष्टम्या ग्रहस्प. प्रातः साढ़े पाँच ११ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	०	८	१	११	५	११
२७	२७	१९	११	२२	१३	०६	२३	२३
३४	४७	३८	४३	५९	०२	३७	१६	१६
४७	३५	०९	०३	१३	३२	४१	३३	३३
५८ ५९	८५३ ३	४६ १०	११६ २५	४ ०३	५३ ०५	७ १	३ ११	३ ११
रेव	उषा	रेव	अश्वि	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
४	१	१	४	३	१	१	४	२
-	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	मा	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सूर्योदय ११ अप्रैल

१ बु. | १२ सू. श. मं. के. | ११ | २ शु. | १० | ३ | ९ गु. चं. | ४ | ६ रा. | ८ | ५ | ७

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्प. प्रातः साढ़े पाँच १७ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	११	०	८	१	११	५	११
३	२१	२४	२१	२३	१८	०७	२२	२२
२७	४०	१४	५२	२२	१२	१९	५८	५८
२८	२९	३१	३३	५३	४२	५२	२८	२८
५८ ४१	८०२ ८	४५ ५४	८६ ३२	३ ०१	४१ ९	७ १	३ ११	३ ११
अश्वि	रेव	रेव	भर	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
२	२	३	३	४	३	२	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमा. सू. उ. १७ अप्रैल

२ शु. | १ सू. बु. | चं. के. श. मं. १२ | ११ | ३ | ४ | १० | ९ गु. | ५ | ७ | श. ६ | ८

वैशाख कृष्ण पक्ष

पक्ष के आरम्भ से मीन राशि पर चतुर्ग्रही योग बना हुआ है। कहीं राजनैतिक गतिरोध, अस्थिरता, हिंसक घटनाएं, तोड़फोड़ व उपद्रव की घटनाएं होने के संकेत मिलते हैं।

> एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
> प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।

तृतीया तिथि, शनिवार को सूर्य-केतु तथा ता. १५ अप्रैल को मंगल-केतु की अंशात्मक युति होने से किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ एवं सत्ता में परिवर्तन के संकेत है।

व्यापारिक रुख—प्रतिपदा को शनि का उदय हुआ है तथा द्वितीया को बुध मेष राशि में प्रविष्ट होने से गेहूं, चने, जौ, अलसी, सरसों तिल, तैल व रुई में घटा-बढ़ी के पश्चात् तेजी होगी। षष्ठी मंगलवार को बुध पश्चिम से उदित होने से गेहूं, चावल, खल-बिनौले, मूंगफली, लकड़ी, सोना, ताम्बा, चान्दी व रूई के मूल्यों में तेजी के योग है। दशमी तिथि, को वैशाख संक्रान्ति शनिवार को पड़ती है। गेहूं, जौ, चने, चावलादि धान्य रूई एवं अलसी, अरण्डी, तिलहन, तैल, खल बिनौले, सोना, पीतल, तांबा आदि धातुएं, लाख, केशर, मोम, हाथी दान्तादि पदार्थ तेजभाव होंगे। **संक्रांति फल**—मेष, वृष, मिथुन, सिंह, धन, मकर, कुंभ, मीन राशि वालों को **वैशाख संक्रान्ति** का फल शुभ रहेगा। **आकाश लक्षण**—अप्रैल की ५, ६, १०, १२, १५, १७ ता. को महाराष्ट्र (बंबई), आन्ध्र प्रदेश, तथा देश के पूर्वोत्तर भागों में तेज हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं।

फाल्गुन विस्तार—[illegible] तिथि को बादल वाले हों, तो अनाज का संग्रह करना लाभदायक होगा। [विवाह मुहूर्त—इस पक्ष में विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।]

विक्रमी संवत् २०५३, वैशाख शुक्ल पक्ष, शाक: १९१८, सन् ई. १९९६ (१८ अप्रैल से ३ मई तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घड़ी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पुर्व. त्यौहार, ग्रहसंचार आदि व्यतिपात योग (क्षय) ५९ ।३५ (३ मई) सूर्योत्तरायणे ग्रीष्मऋतु —उत्तर गोलार्धे	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.
३२ ।१७	१	बृह	५५	०८	२८	०३	अश्वि	३६	३८	वि	१५	२३	कि	२५	२७	२९	२९	१८	६	मेषे	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा स. सि. योग:, गं. मूल	०	०४	२७	३३	६	००	६	५५
३२ ।२३	२	शुक्र	५५	५०	२८	१९	भर	३८	३५	प्री	१२	२८	बा	२५	२९	३०	३०	१९	७	वृ. ५४ ।२५	सायने सूर्य वृष में ४७ ।२०, चन्द्रदर्शन, शिवाजी जयंती, ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ	०	०५	२५	५९	५	५९	६	५६
३२ ।२७	३	शनि	५७	५३	२९	०७	कृति	४१	५०	आ	१०	३८	तै	२६	५२	३१	जि.	२०	८	वृषे	श्री परशुराम जयं. अक्षया तीज., स. सि. यो, कृति १ बुध ३१ ।२३. मुस्लि A	०	०६	२४	३४	५	५८	६	५७
३२ ।३३	४	रवि	६०	००	पूरा	दिन	रोह	४६	३८	सौ	१०	००	व	२९	४३	वैश.	२	२१	९	वृषे	भद्रा २९ ।४३ से शुरू, शक वैशाख शुरु A १ जिल्हेजा, अगस्त्य अस्त	०	०७	२३	०६	५	५७	६	५७
३२ ।३५	४	चंद्र	१	३३	६	३३	मृग	५२	३०	शो	१०	२३	वि	१	३३	२	३	२२	१०	मि १९ ।३४	भद्रा १ ।३३ तक, स. सि. योग:	०	०८	२१	३७	५	५६	६	५८
३२ ।४०	५	मंग	६	०८	८	२२	आर्द्रा	५९	१३	अति	११	४५	बा	६	०८	३	४	२३	११	मिथुने	बुध वृष राशि में ३८ ।०८, मृगे १ शुक्र: ३४ ।१०, गुरू शंकराचार्य जयंती	०	०९	२०	०५	५	५५	६	५९
३२ ।४३	६	बुध	११	४३	१०	३५	पुनं	६०	००	सु	१३	३५	तै	११	४३	४	५	२४	१२	क ४९ ।४५	अश्वि (१) मंगल मेष में ३२ ।२३, रामानुजाचार्य जयं, गंगा सप्तमी पूजन	०	१०	१८	३०	५	५४	६	५९
३२ ।४७	७	बृह	१७	४३	१२	५८	पुनं	६	३५	धृ	१५	४७	व	१७	४३	५	६	२५	१३	कर्के	भद्रा १७ ।४३ से ५० ।४८ तक, श्री गंगा सप्तमी, स. सि. योग:	०	११	१६	५४	५	५३	७	००
३२ ।५०	८	शुक्र	२३	५३	१५	२५	पुष्य	१३	४१	शू.	१७	५५	ब	२३	५२	६	७	२६	१४	कर्के	गंडमूलादि विचार ११.१३ के बाद (घंटा मिट)	०	१२	१५	१७	५	५२	७	००
३२ ।५५	९	शनि	२९	१०	१७	३१	श्ले.	२०	३५	गंड	१९	३८	कौ	२९	१०	७	८	२७	१५	सिं २० ।३५	श्री बगुलामुखी जयं., सीता नवमी, भरणी (१) सूर्य: ६ ।३३ गं. मू.	०	१३	१३	३७	५	५१	७	०१
३३ ।००	१०	रवि	३२	५८	१९	०१	मघा	२६	१३	वृ	२०	३०	तै	१	०४	८	९	२८	१६	सिंहे	गंड मूलादि सायं ४ ।१९ तक (घं. मिट)	०	१४	११	५८	५	५०	७	०२
३३ ।०५	११	चंद्र	३५	३०	२०	०१	पूफा	३०	२८	ध्रु	२०	१५	व	४	१४	९	१०	२९	१७	क ४६ ।२५	भद्रा ४ ।१४ से ३५ ।३० तक, मोहिनी एकादशी व्रतम्	०	१५	१०	१२	५	४९	७	०३
३३ ।०८	१२	मंग	३६	२३	२०	२१	उफा	३४	१३	व्या	१८	४०	ब	५	५७	१०	११	३०	१८	कन्यायां	त्रिपुष्कर योग सूर्योदयात्	०	१६	०८	२८	५	४८	७	०३
३३ ।१३	१३	बुध	३५	२५	१९	५७	हस्त	३३	५५	हर्ष	१५	५३	कौ	५	५४	११	१२	मई	१९	कन्यायां	प्रदोष व्रतं, स. सि. योग:, मई दिवस	०	१७	०६	४४	५	४७	७	०४
३३ ।१८	१४	बृह	३२	४८	१८	५३	चित्रा	३३	०५	व	११	३८	ग	४	०७	१२	१३	२	२०	तुले ३ ।३०	भद्रा ३२ ।४८ से शुरू, श्री नृसिंह चौदश, कूर्म जयंती	०	१८	०४	५५	५	४६	७	०५
३३ ।२०	१५	शुक्र	२८	५०	१७	१७	स्वा	३०	५३	सि	६	०८	वि	०	४९	१३	१४	३	२१	तुलायां	भद्रा ० ।४९ तक, वैशाख बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयंती, वैशाख स्नान समाप्त	०	१९	०३	०५	५	४५	७	०५

शुक्र. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: साढ़े ५ बजे २६ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	१	८	१	११	५	११
१२	१३	०१	०१	२३	२५	०८	२२	२२
१४	४४	०६	५७	४३	०२	२०	२९	२९
२५	३४	३९	४३	४७	२८	४७	५०	५०
५८ ३३	७१७ ८	४५ २५	४२ ९	१ ३४	४० ५३	६ २६	३ ११	३ ११
अश्वि	पुष्य	अश्वि	कृ.	पूफा	मृग	उभा	हस्त	रेव
४	४	१	२	४	१	३	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सूर्योदय २६ अप्रै.

२ बु. शु. | १ सू. मं. | के. श. १२ | ३ | ११ | ४ चं. | १० | ५ | ७ | ९ गु. | ६ रा. | ८

शुक्र. पूर्णीमायां ग्रह स्प. प्रात: साढ़े ५ बजे ३ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	०	१	८	१	११	५	११
१९	१२	०६	०४	२३	२९	०९	२२	२२
०२	३९	२३	४८	५०	२३	०६	०७	०७
२८	२७	२८	२५	३३	२५	१०	३३	३३
५८ १०	८३० ५४	४५ ०२	१ २	० १०	३२ २२	६ २५	३ १०	३ १०
भर	स्वा	अश्वि	कृति	पूफा	मृग	उभा	हस्त	रेव
२	२	२	३	४	२	२	४	२
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सूर्योदय ३ मई

२ शु. बु. | १ सू. मं. | के. श. १२ | ३ | ११ | ४ | १० | ५ | ७ चं. | ९ गु. | ६ रा. | ८

वैशाख शुक्ल पक्ष

वैशाख शुक्ल तृतीया (ता. २० अप्रै.) को अक्षया तृतीया को किए गए जप, पाठ, स्नान-दान, तर्पणादि का विशेष माहात्म्य एवं फल होता है अर्थात् अनंतगुणा फल होता है । इसी दिन की सायंकाल तिथि में श्री परशुराम जयंती का आयोजन होता है । गंगा सप्तमी—मध्यान्ह व्यापिनी वै. शु. सप्तमी को श्री गंगा जन्मोत्सव होता है । इस दिन (२४ अप्रैल) को मध्यान्ह काले पुष्प, नारियल, ताण्डुलादि सहित श्री गंगा पूजन करना चाहिए । नृसिंह चतुर्दशी को भगवान श्री विष्णु की पूजा श्री नृसिंह अवतार के रूप में की जाती है । वैशाख मास में पाँच गुरूवार एवं पाँच शुक्रवार होने से इस मास अनाजादि की अच्छी फसल एवं सुभिक्ष के संकेत हैं । प्रजा में समृद्धि एवं सुख-साधनों में वृद्धि के संकेत हैं—शुक्रस्य पंचवारास्युयंत्र मासे निरन्तरम् । प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तम प्रवर्तते ॥

व्यापारिक रुख—तृतीया ति. से बुध कृतिका में आने से रूई, कपास, पटसन, चीनी, चने व चावलों में तेजी के योग बनेंगे तथा चांदी व सोने में मामूली घटा-बढ़ी के बाद पुन: तेजी होगी । ता. २३ को बुध वृष में आने से गेहूं, चने, जौ, चावल, मटर, रुई, कपास, तिल-तेलादि में तेजी होगी । ता. २४ से मंगल मेष राशि में आने से लाल रंग की वस्तुएं तेज भाव तथा सर्व प्रकार के धान्य मन्दे होंगे । प्रशासकों में पारस्परिक तनाव व विरोध पैदा हों । भूमि पुत्रों यदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम् । प्रवलानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेत् नृप: ॥

आकाश लक्षण—पक्ष में भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ रुक-रुक कर वर्षा के योग हैं ।

विवाह मुहूर्त—अप्रैल की २०-२१ (रोहिणी), २१-२२ (मृगे), २७-२८ (मघा), मई की १-२ (चित्रा), २ (स्वा)

विक्रमी संवत् २०५३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (ता. ४ से १७ मई तक) सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घड़ी पल	तिथि	वार	घ.	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	[illegible]	[illegible]	ई.	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
३३।२५	१	शनि	२३	१८	१५	०३	विशा	२७	२५	वर	५१	३५	को	२३	१८	१४	१५	४	२२	वृश्चि १३।१७
३३।३०	२	रवि	१६	५३	१२	२८	अनु	२२	५५	परि	४४	०३	ग	१६	५३	१५	१६	५	२३	वृश्चिके
३३।३३	३	चंद्र	११	०८	१०	०९	ज्ये	१८	५३	शि	३५	५५	वि	११	०८	१६	१७	६	२४	धनु १८।५३
३३।३८	४	मंग	४	०८	७	२०	मूला	१४	००	सि	२७	३५	बा	४	०८	१७	१८	७	२५	धनुषि
अवम	५	मंग	५७	२५	२८	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
३३।४०	६	बुध	५१	००	२६	०५	पूषा	९	०८	सा	१९	३३	ग	२४	१३	१८	१९	८	२६	मक २३।०३
३३।४३	७	वृह	४५	१५	२३	४६	उषा	४	४८	शु	११	४५	वि	१८	०८	१९	२०	९	२७	मकरे
३३।४८	८	शुक्र	३९	५८	२१	३८	श्रव	१	००	शु	४	२५	बा	१२	३७	२०	२१	१०	२८	कुं २१।३०
३३।५३	९	शनि	३५	४०	१९	५४	शत	५५	५०	ऐं	५१	५०	तै	७	४९	२१	२२	११	२९	कुंभे
३३।५५	१०	रवि	३३	१०	१८	५४	पूभा	५४	३८	वै	४६	३८	व	४	२५	२२	२३	१२	३०	मी ३९।५६
३३।५८	११	चंद्र	३०	४३	१७	५४	उभा	५४	१८	वि	४२	१३	ब	१	५७	२३	२४	१३	३१	मीने
३४।०३	१२	मंग	२७	३३	१६	४७	रेव	५४	५५	प्री	३८	३३	तै	२७	३३	२४	२५	१४	ज्ये	मेषे ५४।५५
३४।०५	१३	बुध	२५	०८	१६	२७	अश्वि	५६	२८	आ	३५	३७	व	२७	०८	२५	२६	१५	२	मेषे
३४।०८	१४	वृह	२७	२३	१६	३२	भर	५९	००	सौ	३२	५७	श	२७	२३	२६	२७	१६	३	मेषे
३४।१०	३०	शुक्र	२९	१८	१७	१७	कृति	६०	००	शो	३१	५८	ना	२९	१५	२७	२८	१७	४	वृषे १४।५५

तिथि	धनिष्ठा (क्षय) ५८।०० (१० मई) ब्रह्म योग ५७।४५ (१० मई) — सूर्योत्तरायणे ग्रीष्म ऋतु —उत्तरगोलार्धे	नि. रा.	सू. अ	स्प. क	इ. वि	सू. घं	उ. मि	सू. घं	अ. मि
१	**शुक्र मिथुन राशि में ७।४३, बुध वक्री ९।१३**, नारद जयंती	०	२०	०१	१२	५	४६	७	०६
२	भद्रा ४४।०२ से शुरू, **गुरू वक्री ५।१४**, गं. मू. १४.५३ उपरांत	०	२०	५९	१८	५	४३	७	०७
३	भद्रा ११।०८ तक, **श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बुधास्त पश्चिमे ३०।५०**	०	२१	५७	२१	५	४२	७	०७
४	गंडमूलादि विचार ११।१७ (घं. मि) तक, टैगोर जंयती	०	२२	५५	२२	५	४१	७	८
५	**पंचमी तिथि का क्षय** ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	भद्रा ५१।०० से शुरू	०	२३	५३	१९	५	४१	७	९
७	भद्रा १८।०८ तक	०	२४	५१	१५	५	४०	७	९
८	**पंचकारम्भः** २९।३०, कृतिका (१) सूर्यः ५२।५०, स. सि योगः	०	२५	४९	०९	५	३९	७	१०
९	उभा (३) शनि ४८।००	०	२६	४७	०२	५	३८	७	११
१०	भ. ४।२५ से ३३।१० तक, भर (१) भौमः २०।०३	०	२७	४४	५३	५	३८	७	१२
११	**अपरा एकादशी व्रत** (भद्रकाली एकादशी),	०	२८	४२	४६	५	३७	७	१३
१२	**ज्येष्ठ संक्रांति** २०।१५ मुहूर्ति ३०, **पंचक समा** ५४।५५ D	०	२९	४०	३५	५	३६	७	१३
१३	भद्रा २७।०८ से ५७।१६ तक, स. सि. यो., गं. मू. D भौम प्रदोष व्रत E	१	००	३८	२६	५	३६	७	१४
१४	वक्री बुध मेष में १२।२३ E पुण्य संक्रांति ४।१५ उप. प्रारम्भ	१	०१	३६	१४	५	३५	७	१४
३०	**भावुका अमावस**, वट सावित्री व्रत (अमा. पक्षे) पितृतर्पण स्नानदानादि	१	०२	३४	०२	५	३४	७	१४

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः साढे पाँच १० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	०	१	८	२	११	५	११
२५	२३	११	०३	२३	०२	०९	२१	२१
४८	०१	३७	२४	४८	३४	४८	४५	४५
४९	२७	३६	३८	२०	२१	१९	१७	१७
५७ ५४	८४२ १६	४४ [illegible]	२८ ५५	० ५७	२१ ६	६ १८	३ १०	३ १०
भर	श्रव	अश्वि	कृ.	पूषा	मृग	उभा	हस्त	रेव
४	४	४	३	४	३	२	४	२
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १० मई

- १ — सू. मं.
- २ — बु.
- ३ — शु.
- ४
- ५
- ६ — रा.
- ७
- ८
- ९ — गु.
- १० — चं.
- ११
- १२ — श. के.

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः साढे पाँच १७ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ	शु.	श.	रा.	के.
१	०	०	०	८	२	११	५	११
२	२६	१६	२९	२३	०४	१०	२१	२१
३३	५०	४८	३१	३६	१६	२८	२३	२३
५२	२७	५१	३५	०७	३८	४१	०२	०२
[illegible]	७५४ ५६	४४ ११	३४ ६	२ १५	७ ०२	५ ३८	३ ११	३ ११
कृति	कृति	भर	कृति	पूषा	मृग	उभा	हस्त	रेव
२	१	२	१	४	४	३	४	२
०	मा.	मा.	व	व.	मा.	मा.	व.	व.
०	अ	अ	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कु. अमावस सू. उ. १७ मई

- १ — बु. मं. चं.
- २ — सू.
- ३ — शु.
- ४
- ५
- ६ — रा.
- ७
- ८
- ९ — गु.
- १०
- ११
- १२ — श. के.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

(ता. ४ मई) प्रतिपदा को शुक्र मिथुन राशि में प्रविष्ट होने से जौं, चने, चावल, गेहूँ, तिल, तैल, चीनी, खाण्डसारी, खल-बिनौले, तेजभाव होंगे—.

> मिथुने च यदा शुक्र महर्घत्वं च जायते।
> यव गोधूम, चणकाः शालिश्चैव विशेषतः ॥

अलसी, घृत, गुड़, सरसों व अरण्डी में घटा-बढ़ी होगी। द्वितीया से गुरू धनु राशि में वक्री होगा जिससे सर्व प्रकार के अनाज, धान्य, रूई व कपास में तेजी होगी।

> धनु राशि गतो जीवः करोति वक्रता यदा।
> अचिरणैव कालेन सर्वधान्य समर्घता ॥

अष्टमी को सूर्य कृतिका में आने से सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, लौहादि धातुओं में तेजी कारक होगा। परन्तु गुड़, घी, खाण्डसारी में मन्दी बनेगी। द्वादशी को ज्येष्ठ संक्रान्ति मंगलवार को ३० मुहूर्ति है जिससे रूई, कपास, खल बिनौले, पशुचारा, काली मिर्च, लकड़ी, कोयला, तिल, तैल, अलसी, जूट, पटसन एवं ताम्बा, पीतलादि धातुएं तेज भाव होंगी, यह संक्रांति वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु व कुंभ राशि वालों को शुभ लाभदायक रहेगी। इस पक्ष में गुरू-शुक्र के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से प्रशासन वर्ग के प्रति सामान्य प्रजा में असंतोष, एवं गतिरोध पैदा होगा।

आकाश लक्षण—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में तेज आन्धियों एवं तूफानादि के कारण खड़ी फसलों को क्षति पहुंचने के योग है।

विवाह मुहूर्त—६-७ मई (मूले), ८ मई (उषा), ९ मई (श्रवण), १० मई (धनि)

विक्रमी संवत् २०५३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (१८ मई से १ जून तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

विक्रमी संवत् २०५३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, शाक: १९१८, सन् ई० १९९६ (१८ मई से १ जून तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घड़ी पल	तिथि	वार	घ.	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पर्व, त्यौहार, ग्रहसंचारादि — सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्मऋतु —उत्तरगोलार्धे
३४।२३	१	शनि	३१	५५	२८	२०	कृति	२	३८	अति	३१	२५	कि	०	३७	२८	२९	१८	५	वृषे	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, स. सि. योग, चंद्रदर्शनम्
३४।१८	२	रवि	३५	३०	१९	४५	रोह	७	२५	सु	३१	३७	बा	३	४३	२९	मो	१९	६	मि. ४०।१४	१ मोहर्रम, हिजरी १४१७ प्रा. द्रिपुष्कर योग: A सूर्य: ४७।०८
३४।२०	३	चंद्र	४०	००	२१	३३	मृग	१३	०३	धृ	३३	१०	तै	७	४५	३०	२	२०	७	मिथुने	शुक्र वक्री, स. सि. यो., रंभा तीज, प्रताप जंयती, मिथुने सायन A
३४।२३	४	मंग	४५	२८	२३	४३	आर्द्रा	१९	३५	शूल	३५	२१	ब	१२	४४	३१	३	२१	८	मिथुने	भद्रा १२।४४ से ४५।२८ तक, शहीद दिवस. गु. अर्जुन देव जी
३४।२८	५	बुध	५१	२३	२६	०४	पुन	२६	५०	गंड	३७	२८	ब	१८	२६	ज्ये	४	२२	९	क १०।०१	पूषा (३) वक्री गुरू ४८।३८, शाक: ज्येष्ठारम्भ:, मंगल उदय २९।१०
३४।३०	६	बृह	५७	१८	२८	२६	पुष्य	३४	१५	वृद्धि	४०	०७	कौ	२४	२१	२	५	२३	१०	कर्के	पूर्वोदय: बुध: ३३।०५, स. सि. योग:, भरण्यां ४ वक्री बुध:
३४।३३	७	शुक्र	६०	००	पूरा	दिन	श्ले	४१	२८	ध्रु	४२	२७	ग	३०	१३	३	६	२४	११	सि ४१।२८	रोहणी (१) सूर्य: ४३।२८, गंडमूलादि विचार
३४।३५	७	शनि	३	०८	६	४५	मघा	४८	००	व्या	४३	५२	व	३	०८	४	७	२५	१२	सिंहे	भद्रा ३।०८ से ३५।३३ तक, गंडमूलादि २४.४२ (घं. मि.) तक
३४।३८	८	रवि	७	५८	८	४०	पूफा	५३	२०	हर्ष	४४	२१	ब	७	५८	५	८	२६	१३	सिंहे	मेला क्षीर भवानी (कश्मीर), धूमावती जयंती, स. सि. यो.
३४।४०	९	चंद्र	११	१३	९	५८	उफा	५७	०३	वज्र	४३	३५	कौ	११	१३	६	९	२७	१४	क ९।१६	
३४।४३	१०	मंग	१२	५०	१०	३७	हस्त	५९	३०	सि	४१	१३	ग	१२	५०	७	१०	२८	१५	कन्यायां	भद्रा ४२।३७ से शुरू, बुध मार्गी, श्री गंगा दशमी, मोहर्रम (ताज़िया)
३४।४५	११	बुध	१२	२३	१०	२६	चित्रा	५८	३०	व्य	३६	२४	वि	१२	२३	८	११	२९	१६	तु २९।००	भद्रा १२।२३ तक, निर्जला एकादशी व्रत
३४।४८	१२	बृह	९	५५	९	२६	स्वा	५६	४५	वर	३१	२९	बा	९	५५	९	१२	३०	१७	तुलायां	कृतिका (१) भौम: २५।१७, प्रदोष व्रत, चंपक द्वादशी
३४।५०	१३	शुक्र	५	२०	७	३६	विशा	५२	२८	परि	२४	३७	तै	५	२०	१०	१३	३१	१८	बृ ३८।३२	भद्रा ५९।१५ से प्रारंभ
अवम	१४	शुक्र	५९	१५	२९	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी तिथि का क्षय ० ० ० ० ०
३४।५१	१५	शनि	५२	०३	२६	१७	अनु	४७	४८	शि	१६	२७	वि	२५	३९	११	१४	जून	१९	वृश्चिके	भद्रा २५।३९ तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, कबीर जयंती, कृति (१) बुध: D

D २७।५८, वट सवित्री व्रत (पूर्णिमा पक्षे)

नि. रा.	सू. अ.	स्प क	इ वि	सू. घं	उ. मि	सू. घं	अ. मि
१	०३	३१	५१	५	३४	७	१५
१	०४	२९	३७	५	३३	७	१६
१	०५	२७	२२	५	३३	७	१७
१	०६	२५	०६	५	३२	७	१७
१	०७	२२	४९	५	३१	७	१८
१	०८	२०	३२	५	३१	७	१९
१	०९	१८	१२	५	३०	७	१९
१	१०	१५	५३	५	३०	७	२०
१	११	१३	३०	५	२९	७	२०
१	१२	११	०७	५	२९	७	२१
१	१३	०८	४२	५	२९	७	२२
१	१४	०६	१६	५	२९	७	२३
१	१५	०३	४६	''	२८	७	२३
१	१६	०१	१७	५	२८	७	२४
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१६	५८	४७	५	२८	७	२४

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रात: साढ़े पाँच २६ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	०	८	२	११	५	११
११	१५	२३	२५	२३	०३	११	२०	२०
१३	४५	२६	५८	०७	५०	१६	५४	५४
३२	१९	१६	२९	३४	२९	२९	२४	२४
५७ ३०	७३८ ६	४३ ५६	६ ६	४ ०३	१६ ०८	४ ५८	३ ११	३ ११
रोह	पूफ	भर	भर	पूषा	मृग	उभा	हस्त	रेव
१	१	४	४	३	४	३	४	२
०	मा.	मा.	व	व	व.	मा.	व.	व.
०	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कु. अष्टमी सू. उ. २६ मई

शु. ३ | २ सू. | बु. मं. १ | के. | १२ श. | ४ | ५ चं. | ११ | ६ रा. | ८ | ७ | ९ गु. | १०

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: साढ़े पाँच १ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	०	०	८	२	११	५	११
१६	०५	२७	२६	२२	०१	११	२०	२०
५८	०९	४९	२९	४२	४५	४३	३५	३५
५२	३७	०३	४७	२५	१३	४३	१९	१९
५७ २९	८७६ ५८	४३ ७७	२१ ३८	४ ३२	२८ ५०	४ ३६	३ ११	३ ११
रोह	अनु	कृति	भर	पूषा	मृग	उभा	हस्त	रेव
३	१	१	४	३	२	३	४	२
०	मा	मा	मा	व	व.	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. १ जून

३ शु. | २ सू. | बु. १ मं. | के. | १२. श. | ४ | ५ | ११ | ६ रा. | ८ चं. | ७ | ९ गु | १०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

इस पक्ष में दशमी के दिन श्री गंगा की "ऊं नम: शिवाय नारायणाय दशहराय गंगायै नमो नम: " इस मंत्र द्वारा चंदन, पुष्प, नारियल, धूपादि सहित गंगा पूजा करनी चाहिए । निर्जला एकादशी को स्वयं निराहार रहकर प्रात: स्नान, पूजनादि के पश्चात् ऋतुफल जैसे आम, खरबूजे, पंखा, गुड़ शक्कर, भरा हुआ घड़ा दान करना और लस्सी-शरबत आदि के पियाऊ लगाने का विशेष महत्व होता है । **व्यापारिक रूख**—इस पक्ष के आरम्भ में तृतीया को शुक्र मिथुन राशि में वक्री हुआ है, जिससे सर्व प्रकार अनाज, चने, चावल, धान्य, घृत, तिल, तैल, रूई, कपास, उड़द, मूंग व चांदी के भावों में तेजी आएगी । **यदादैत्य गुरूश्चैव राशि वक्रं चरिष्यति । धान्यार्घं च क्षयं कुर्यादु घृत तैल महर्घता ॥** ता. २३ को बुध मेष राशि में उदित होने से अरण्डी, अलसी, तोरिया व सरसों एवं सोना, चान्दी में घटाबढ़ी होगी । ता. ३० से मंगल कृतिका में आने से रूई, कपास, चावल, खल-बिनौले, मूंग, चने, मसूर एवं सर्व प्रकार की करियाना वस्तुएं तेज भाव रहेंगी । ज्येष्ठ मास (चांद्र) में पांच शनिवार होने से इस मास अनाज के मूल्यों में तेजी बनी रहेगी । लोगों में विचित्र रोग, पीड़ा, उपद्रव, विस्फोटक हिंसक घटनाएं, राजनैतिक टकराव, अग्निकाण्ड, भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहे । ईशान (पूर्वोत्तर) में कहीं शासन परिवर्तन हो ॥ **शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी: । ईशानदेश भंगश्च वह्णि दाहो धान्य महर्घता ।** **आकाश लक्षण**—भारत के पूर्वी एवं पश्चिमोत्तर प्रदेशों में भीषण गर्मी तथा तेज गर्म हवाएं चलेंगी ।

शकुन विचार—ज्ये. शुक्ल सप्तमी को बादल गरजे या दक्षिणी वायु चले तो खल वनस्पति आदि के संग्रह से लाभ हो ।

विवाह मुहूर्त—१८ मई (रोहि.), १९-२० मई (मृगे), २४-२५ मई (मघा), २९-३० मई (चित्रा, स्वा.)

वि. सवंत् २०५३, प्र. शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई. १९९६ (२ जून से १६ जून तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त, जालन्धर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	शुभ (योग) ४९ ।५७ (क्षय) (३ जून) आयु (योग) ५७ ।४५ (९ जून) सूर्योत्तरायणे ग्रीष्म ऋतु उत्तर गोलार्धे	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ग्र. वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घ.	अ. मि.
३४ ।५३	१	रवि	४३	५८	२३	०२	ज्ये.	४१	२८	सि	७	१३	बा	१८	०१	१२	१५	२	२०	ध ४१ ।२८	शुद्ध आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा, गंडमूलादि	१	१७	५६	४४	५	२७	७	२४
३४ ।५५	२	चंद्र	३५	२०	१९	३५	मूला	३५	०३	सा	१	४५	तै	९	३९	१३	१६	३	२१	धनुषि	गंडमूलादि सायं ७ ।२८ तक	१	१८	५३	४२	५	२७	७	२५
३४ ।५८	३	मंग	२७	०३	१६	१६	पूषा	२८	४०	शु	३९	०३	व	१	१२	१४	१७	४	२२	म ४२ ।०९	भद्रा १ ।१२ से २७ ।०३ तक, मंगल वृष में ०० ।२८, वक्री शुक्र वृष A	१	१९	५१	०१	५	२७	७	२६
३४ ।५९	४	बुध	१८	४८	१२	५८	उषा	२२	३८	ब	३०	११	बा	१८	४८	१५	१८	५	२३	मकरे	A में २५ ।३३, गणेश ४ व्रत, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ	१	२०	४८	३५	५	२७	७	२६
३५ ।००	५	बृह	११	२५	१०	०१	श्रव	१७	२३	ऐंद्र	२१	३७	तै	११	२५	१६	१९	६	२४	कु ४५ ।१४	पंचकारम्भः ४५ ।१४	१	२१	४६	००	५	२७	७	२७
३५ ।०१	६	शुक्र	५	०५	७	२९	धनि	१३	०५	वै	१३	४७	व	५	०५	१७	२०	७	२५	कुंभे	भद्रा ५ ।०५ से ३२ ।३७ तक, वृषे बुधः २६ ।४०, शुक्रास्त पश्चि. २ ।१० B	१	२२	४३	२४	५	२७	७	२७
३५ ।०३	७	शनि	०	०८	५	२९	शत	१०	१३	वि	७	४२	ब	०	०८	१८	२१	८	२६	मी ५३ ।१४	B मृगशिरे (१) सूर्यः ३८ ।१७	१	२३	४०	४५	५	२६	७	२७
अवम	८	शनि	५६	२३	२७	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३५ ।०५	९	रवि	५४	०५	२७	०४	पूभा	८	३५	प्री	२	३१	तै	२५	१४	१९	२२	९	२७	मीने	सर्वार्थ सिद्ध योगः प्रातः ८ ।५३ बजे से प्रा. — शुक्रास्त पश्चिमे ७ जून	१	२४	३८	०८	५	२६	७	२८
३५ ।०६	१०	चंद्र	५३	३०	२६	५०	उभा	८	२८	सौ	५५	३९	व	२३	४८	२०	२३	१०	२८	मीने	भद्रा २३ ।४८ से ५३ ।३० तक, मृगे (१) शुक्र १ ।३०	१	२५	३५	३१	५	२६	७	२८
३५ ।०७	११	मंग	५३	०८	२६	४१	रेव	९	३३	शो	५३	१७	ब	२३	१९	२१	२४	११	२९	मे ९ ।३३	पंचक समाप्त ९ ।३३, योगिनी एकादशी व्रत, स. सि. यो, गं मू.	१	२६	३२	५६	५	२६	७	२९
३५ ।०८	१२	बुध	५४	३३	२७	१५	अश्वि	११	५३	अति	५१	४४	कौ	२३	५१	२२	२५	१२	३०	मेषे	हस्ते (३) राहु, रेवः (१) केतुः ६ ।२५, गंडमूलादि — शुक्रोदय पूर्वे १५ जून	१	२७	३०	१६	५	२६	७	२९
३५ ।०८	१३	बृह	५६	५३	२८	११	भर	१५	१३	सुक	५१	१३	ग	२५	४३	२३	२६	१३	३१	वृ ३१ ।१७	भद्रा ५६ ।५३ से शुरू, प्रदोष व्रत	१	२८	२७	३६	५	२६	७	२९
३५ ।१०	१४	शुक्र	६०	००	पूरा दिन		कृति	१९	२८	धृ	५१	१७	वि	२८	३३	२४	२७	१४	आ	वृषे	भद्रा २८ ।३३ तक, आषाढ़ संक्राति ३७ ।१०, मुहू. ४५, पुण्य बाद दोपहर	१	२९	२४	५५	५	२६	७	३०
३५ ।१०	१४	शनि	०	१३	५	३१	रोह	२४	३५	शूल	५२	०१	श	०	१३	२५	२८	१५	२	मि ५७ ।३३	रोहिण्यां ४ व. शुक्र ७ ।३७, शनिवारी अमा, शुक्रोदय पूर्वे ३९ ।१०, स. सि. योग	२	००	२२	१३	५	२६	७	३०
३५ ।११	३०	रवि	४	१३	७	०७	मृग	३०	३०	गंड	५३	२३	ना	४	१३	२६	२९	१६	३	मिथुने	अमावस स्नान दानादि, आषाढ़ अधिक मासारम्भ	२	०१	११	३१	५	२६	७	३०

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच (८ जून)

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	१	८	१	११	५	११
२३	१७	०२	०	२२	२७	१२	२०	२०
४०	४२	५३	२५	०३	५५	१३	१३	१३
५५	१९	२३	३७	५२	२८	२९	०३	०३
५७ २३	८२३ २८	४३ १७	४९ ५८	६ ७	३६ ४२	४ ४	३ ११	३ ११
मृगे	शत	कृ.	कृ.	पूषा.	मृग	उभा	हस्त	रेव
१	४	२	२	३	२	३	४	२
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ८ जून

२ बु. सू. मं. शु.
३
१
४
१२ के. शं.
५
११ चं.
६ रा.
८
७
९ गु.
१०

रवौ अमावस्यां ग्रह स्पष्ट. प्रातः साढ़े पाँच बजे (१६ जून)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	१	८	१	११	५	११
१	०	०८	०८	२१	२३	१२	१९	१९
१९	३३	३७	४३	१३	००	४१	४७	४७
४१	३२	४५	४०	५३	१७	५२	३६	३६
५७ १७	७२४ ५५	४२ ४९	७६ २६	६ २३	३२ ५५	३ २७	३ ११	३ ११
मृगे	मृग	कृति	कृति	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
३	३	४	४	३	४	३	३	१
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. १६ जून

३ सू. चं.
४
२ शु. बु. मं.
५
१
६ रा.
१२ के. श.
७
९ गु.
११
८
१०

प्र. आषाढ़ कृष्ण पक्ष

आषाढ़ मास में भगवान विष्णु की प्रीति के लिए विधिपूर्वक छाता, जूता, लवण, आम, खरबूजे, बर्तन, वस्त्र एवं दक्षिणा सहित किसी सुपात्र को भोजन करवाना तथा स्वयं नियमपूर्वक एक समय भोजन करने से बहुत धन-धान्य एवं पुत्रों की प्राप्ति होती है। व्रत में बार-बार पानी पीना, पान खान, दिन में सोना अथवा मैथुन, कपटादि निद्य कार्यों से व्रत के शुभ फल नष्ट हो जाते हैं।

व्यापारिक रुख—पक्षारंभ से तृतीया को मंगल वृष राशि में आने से गेहूं, चावल, चने एवं सर्व प्रकार के धान्य, रूई, कपास, वस्त्रादि तेज भाव होंगे।

लालचंदन, नारियल, कुमकुम, सिंधूर, सुपारी व तांबा, इलायची, काली मिर्च व सुगन्धित वस्तुओं के भाव तेज़ होंगे। षष्ठी से **शुक्रास्त होने** से रूई, कपास, अलसी, खाण्ड व गुड़ में घटा बढ़ी हो। ता. ७ से बुध वृष में आने से मूंग, मोंठ, चने, बाजरा, उड़द चावल, चांदी में तेजी होगी। दशमी तिथि को सूर्य-शुक्र की अंशात्मक युति राजनैतिक क्षेत्र में उथल पुथल एवं अनिश्चितता के हालात पैदा करेगी। वायदा मार्केट भी अस्थिर रहेगी। चतु. तिथि (१४ जून) आषाढ़ संक्रांति को शुक्र पूर्वोदित है। तिल, तेल, चाँदी, तांबा, पीतल, उड़द, चने, चावल, रूई कपास व अनाज के भावों में मामूली घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी।

आकाश लक्षण—दक्षिण-पूर्वी भारत में तेज बौछारों के साथ मानसून की वर्षा आरंभ हो जायेगी।

विवाह मुहूर्त—१ जून (अनु) रा. ल. ११. २ जून ल. ११
३ जून (मूला) दि. ल. ५

विक्रमी संवत् २०५३, अधिक आषाढ़ शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई. १९९६ (१७ जून से १ जुलाई तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त, जालन्धर

आकाश लक्षण—दक्षिण-पूर्वी भारत में तेज बौछारों के साथ मानसून की वर्षा आरंभ हो जायेगी।

विक्रमी संवत् २०५३, अधिक आषाढ़ शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई. १९९६ (१७ जून से १ जुलाई तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त, जालन्धर

दि मा. घटी पल	तिथि	वार	घ.	पल	घ.	मि.	नक्षत्र	घ	प	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्रवि.	मोहर्रम	जून	आषाढ़	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	पूषा (क्षय) ५२।४८ (१ जुला) परिघ (क्षय) ५७।४८ (२५ जून) — सूर्य उत्तर-दक्षिणायने, ग्रीष्मऋतु —उत्तरगोलार्धे	नि. रा.	सू. अ	स्प क.	ष्ट वि.	सू. घ	उ. मि	सू. घं.	अ. मि.
३५।११	१	चंद्र	८	५८	९	०१	आर्द्रा	३७	०८	वृ	५५	१३	ब	८	५८	२७	३०	१७	४	मिथुने	रोहिण्यां १ भौमः ५४।५३, चंद्रदर्शनं, रोहिणी १ बुध ००।०५	२	०२	१६	४८	५	२६	७	३०
३५।१२	२	मंग	१४	२५	११	१२	पुर्न	४४	१८	ध्रु	५७	३७	कौ	१४	२५	२८	सफ	१८	५	कर्क २७।३०	१ सफर (मुस्लिम), त्रिपुष्कर योग सू. उ. से प्रारम्भ	२	०३	१४	०५	५	२६	७	३१
३५।१२	३	बुध	२०	२८	१३	३८	पुष्य	५१	०५	व्या	६०	००	ग	२०	२८	२९	२	१९	६	कर्के	भद्रा ५३।३२ से प्रा.	२	०४	११	२१	५	२७	७	३२
३५।१२	४	बृह	२६	३५	१६	०५	श्ले	५९	१३	व्या	१	२५	वि	२६	३५	३०	३	२०	७	सिं ५९।१३	भद्रा २६।३५, गंडमूलादि अगले दिन तक	२	०५	०८	३६	५	२७	७	३२
३५।१३	५	शुक्र	३२	३८	१८	३०	मघा	६०	००	हर्ष	२	३१	बा	३२	३८	३१	४	२१	८	सिंहे	आर्द्रा (१) सूर्यः ३५।५३, सायन सूर्य कर्क में ७।३८, गंडमूल, सूर्य A	२	०६	०५	५४	५	२७	७	३२
३५।१२	६	शनि	३७	५३	२०	३६	मघा	६	२५	व	३	४३	कौ	५	१६	आ.	५	२२	९	सिंहे	शक आषाढ़ शुरू, गं. मू ८.१ तक A दक्षिणायने वर्षाऋतु प्रारंभ	२	०७	०३	०८	५	२७	७	३२
३५।१२	७	रवि	४१	५५	२२	१३	पूफा	१२	४३	सि	४	१७	ग	९	५४	२	६	२३	१०	क २८।५७	भद्रा ४१।५५ से प्रा. स. सि. योग, त्रिपुष्करश्च	२	०८	००	२३	५	२७	७	३२
३५।११	८	चंद्र	४४	३३	२३	१७	उफा	१७	३८	व्य	३	१७	वि	१३	१४	३	७	२४	११	कन्यायां	भद्रा १३।१४ तक	२	०८	५७	३६	५	२८	७	३२
३५।११	९	मंग	४५	१०	२३	३२	हस्त	२०	४३	वर	१	२३	बा	१४	५२	४	८	२५	१२	तुं ५१।१४	मृगे (१) बुधः ३६।२०	२	०९	५४	४९	५	२८	७	३२
३५।१०	१०	बुध	४३	४८	२३	००	चित्रा	२१	४५	शि	५५	४७	तै	१४	२१	५	९	२६	१३	तुलायां	पूषा (२) वक्री गुरुः २०।३	२	१०	५२	०१	५	२९	७	३३
३५।१०	११	बृह	४०	१५	२१	३५	स्वा	२०	५५	सि	५२	४३	व	१२	०२	६	१०	२७	१४	तुलायां	भद्रा १२।०२ से ४०।१५ तक, पुरूषोत्तमा एकादशी व्रतम्	२	११	४९	१३	५	२९	७	३३
३५।१०	१२	शुक्र	३४	४३	१९	२२	विशा	१८	१३	सा	४५	१७	ब	७	२९	७	११	२८	१५	वृश्चि ३।५४		२	१२	४६	२४	५	२९	७	३३
३५।१०	१३	शनि	२७	३३	१६	३०	अनु	१३	२५	शु	३६	२९	कौ	१	०८	८	१२	२९	१६	वृश्चिके	मिथुने बुधः १२।०८ B स. सि. योगः, गं. मुलादि	२	१३	४३	३८	५	२९	७	३३
३५।०९	१४	रवि	१९	१०	१३	१०	ज्ये	७	२३	शु	२६	४१	व	१९	१०	९	१३	३०	१७	धनु ७।२३	भद्रा १९।१० से ४४।३४ तक, बुधास्त पूर्वे ७।१७ व्रत पूर्णमाशी B	२	१४	४०	४९	५	३०	७	३३
३५।०८	१५	चंद्र	९	५८	९	२१	मूला	०	२३	ब्र	१६	२३	ब	९	५८	१०	१४	जु.	१८	धनुषि	अधि-आषाढ़ पूर्णिमा, उभा (४) शनि २४।५७ एक जुला. १९९६ प्रारभं	२	१५	३८	०२	५	३०	७	३३

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच (२४ जून)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	१	८	१	११	५	११
८	०६	१४	२०	२०	१९	१३	१९	१९
५७	२२	१७	३३	१५	१९	०४	२२	२२
४१	२९	२७	२९	३५	३५	४७	१०	१०
५७ १३	७५२ २४	४२ १९	१०३ ०५	७ १५	१९ ११	२ ६	३ ११	३ ११
आ	उफ	रोह	रोह	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
१	३	२	४	३	३	३	३	१
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	३	३	३	३	३	३	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २४ जून

- ३ सू.
- २ शु. बु. मं.
- १
- ४
- ५
- ६ चं. रा.
- १२ श. के.
- ७
- ९ गु.
- ११
- ८
- १०

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्प. प्रातः ५ बज कर ३० मिन्ट (१ जुलाई)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
२	८	१	२	८	१	११	५	११
१५	१३	१९	०३	१९	१७	१३	१८	१८
३८	१४	१२	३२	२३	५९	१३	५९	५९
०२	२९	३२	३१	५१	३७	२३	५४	५४
५७ ११	९१४ ६	४१ ५४	१२० ५४	२३	१ १५	१ ३०	३ ११	३ ११
आ	मूले	रोहि	मृग	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
०	४	३	४	२	३	३	३	१
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	३	३	अ	३	३	३	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. १ जुलाई

- ३ सू. बु.
- २ शु. मं.
- १
- ४
- ५
- ६ रा.
- १२ के. श.
- ७
- ९ गु. चं.
- ११
- ८
- १०

अधि-आषाढ़ शुक्ल पक्ष

इस पक्ष से आषाढ़ अधि मास का प्रारम्भ होगा। इस मास में प्रतिदिन चन्दन, पुष्प, नैवेद्य, फल, धूप दीप, यज्ञोपवीत, सुपारी सहित भगवान् श्री विष्णु की विधिवत् पूजा करने का विधान है। कुछ प्रदेशों में बिल्व पत्र, धतूरा, तण्डुल, पुष्प चंदनादि सहित भगवान शिव पूजन का प्रचलन है। अधि मास में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन, तीर्थ यज्ञादि शुभ काम एवं नैमित्तिक कर्मों के सम्पादन का निषेध माना जाता है। अधि-मास में अपने इष्ट देवताओं को कांस्य पात्र में गुड़-घृतादि द्वारा निर्मित तैंतीस (३३) माल पूड़ों का भोग लगाकर किसी ब्राह्मण को भोजन, वस्त्रों, फल एवं दक्षिणा सहित दान करने का विशेष महात्म्य होता है॥

व्यापार—प्रतिपदा सोमवार को मंगल एवं बुध रोहिणी नक्षत्र में आने से गेहूं, चावल, चने, मक्की, खल-बिनौले, अलसी, अरण्डी में तेजी होगी। इसी दिन चन्द्र दर्शन होने से रुई, कपास, सोना व रंगों में तेजी होगी परन्तु चांदी में घटा बढ़ी के योग है। ता. २१ को सूर्य आर्द्रा में आने से रुई, कपास, खल-बिनौले, मूंग, लकड़ी, पशुचारा, मूंगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। ता. २९ को बुध मिथुन में आकर ३० ता. को अस्त होगा। सोना, चांदी, सरसों, गेहूं, पशुचारा, चावल, धान्यादि में तथा चौपायों में तेजी होगी। ता. २९ को ही मंगल-शुक्र में अंशात्मक युति होने से टी.वी. इत्यादि इलैक्ट्रानिक, वाहनादि के कलपुर्जे तेज भाव होंगे। राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध अनिश्चित होगा। कहीं राजनीतिक टकराव एवं उपद्रव होने का भय हो। **शकुन**—पंचमी को बुंदा बांदी हो तो आगामी मानसून वर्षा विपुल होगी।

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग है।

विवाह मुहूर्त—आषाढ़ अधिमास होने के कारण पक्ष में विवाह मुहूर्त नही होंगे।

विक्रमी संवत् २०५३, अधिक आषाढ़ कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् १९९६ ई० (२ जुलाई से १५ जुलाई तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालंधर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ.	पल	घ.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	आषाढ़	सफर	जुलाई	आषाढ़	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	पर्व, त्यौहार, ग्रह संचारादि वैधृति (क्षय) ५६।१० (२ जुलाई) — सूर्य दक्षिणायने वर्षा ऋतु उत्तर गोलार्ध	नि. रा.	सू. अं	स्प. क	ष्ट. वि	सू. घं	उ. मि	सू. घं	अ. मि.
३५।०७	१	मंग	०	२३	५	३९	उषा	४५	२०	ऐंद्र	६	२१	कौ	०	२३	११	१५	२	१९	मक ५।५६	आर्द्रा (१) बुधः ३२।३०, शुक्र मार्गी २२।०५, त्रिपुष्कर योग A	२	१६	३५	१३	५	३०	७	३३
अवम	२	मंग	५०	५०	२५	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ० A प्रातः (५:३९) से	०	०	०	०	०	०	०	०
३५।०५	३	बुध	४१	५३	२२	१६	श्रव	३८	२५	वि	४५	३२	व	१६	२२	१२	१६	३	२०	मकरे	भद्रा १६।२२ से ४१।५३ तक	२	१७	३२	२६	५	३१	७	३३
३५।०३	४	बृह	३३	४५	१९	०२	धनि	३२	२५	प्री	३६	४१	ब	७	४९	१३	१७	४	२१	कुंभ ५।२५	पंचक शुरू ५।२५ (७।४२ घं. मि.)	२	१८	२९	३७	५	३२	७	३३
३५।०३	५	शुक्र	२६	४०	१६	१२	शत	२७	३३	आ	२८	३५	कौ	०	१३	१४	१८	५	२२	कुम्भे	पुनर्वसु (१) सूर्यः ३४।५५	२	१९	२६	४८	५	३२	७	३३
३५।०२	६	शनि	२१	५०	१४	१६	पूभा	२४	२३	सौ	२१	४३	व	२१	५०	१५	१९	६	२३	मीन १०।११	भद्रा २१।५० से ५०।०२ तक, मृगे (१) भौमः ५५।५८, त्रिपुष्कर B	२	२०	२४	०२	५	३२	७	३३
३५।००	७	रवि	१८	१३	१२	५०	उभा	२२	५८	शो	१६	२३	ब	१८	१३	१६	२०	७	२४	मीने	स. सि. योगः सूर्योदय से प्रारंभ B यो (१४.१६) से	२	२१	२१	१५	५	३३	७	३३
३४।५८	८	चंद्र	१६	४०	१२	१३	रेव	२३	२०	अति	१२	२०	कौ	१६	४०	१७	२१	८	२५	मेष २३।२०	पंचक समाप्त २३।२०, पुर्न (१) बुधः ४८।३५, गंडमूलादि	२	२२	१८	२६	५	३३	७	३२
३४।५६	९	मंग	१६	३०	१२	१२	अश्वि	२५	१५	सु	९	३८	ग	१६	३०	१८	२२	९	२६	मेषे	भद्रा ४७।१७ से शुरु, स. सि. योग सू. उ. से प्रा. गं. मू.	२	२३	१५	४०	५	३४	७	३२
३४।५४	१०	बुध	१८	०३	१२	४७	भर	२८	४०	धृ	८	१७	वि	१८	०३	१९	२३	१०	२७	वृषे ४४।४९	भद्रा १८।०३ तक, स. सि. यो. सांय ५।०२ से प्रारंभ	२	२४	१२	५२	५	३४	७	३२
३४।५३	११	बृह	२०	५०	१३	५५	कृति	३३	१५	शू	८	०३	बा	२०	५०	२०	२४	११	२८	वृषे	पुरूषोत्तमा एकादशी व्रतम्	२	२५	१०	०७	५	३५	७	३२
३४।५०	१२	शुक्र	२४	५३	१५	३२	रोह	३८	५०	गं	८	४३	तै	२४	५३	२१	२५	१२	२९	वृषे		२	२६	०७	१९	५	३५	७	३१
३४।४८	१३	शनि	२९	२८	१७	२३	मृग	४५	०८	वृ	९	५३	व	२९	२८	२२	२६	१३	३०	मि ११।५९	भद्रा २९।२८ से शुरू, कर्के बुधः २७।१३	२	२७	०४	३३	५	३६	७	३१
३४।४६	१४	रवि	३४	४८	१९	३२	आर्द्रा	५१	५५	धु	११	२७	वि	२	०८	२३	२७	१४	३१	मिथुने	भद्रा २।०८ पर समाप्त	२	२८	०१	४८	५	३७	७	३१
३४।४३	३०	चंद्र	४०	२८	२१	४८	पुर्न	५९	१३	व्या	१३	२४	च	७	३८	२४	२८	१५	३२	क ४२।२४	सोमवती अमावस स्नान दानादि, पुष्ये बुधः १०।५३, अधिक मास समाप्त	२	२९	५९	०१	५	३७	७	३०

चन्द्रे अष्टम्या ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच (८ जुलाई)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	८	१	११	५	११
२२	२४	२४	१८	१८	१८	१३	१८	१८
१८	५३	०४	१४	३०	३४	२९	३७	३७
१९	१८	११	३९	२७	३२	२१	३८	३८
५७ १२	७८३ ७	४१ २५	१२१ ५८	७ ३१	१३ ५३	१ २	३ ११	३ ११
पुर्न	रेव	मृग	आ.	पूषा	रोह	उभा	हस्त	रेव
१	३	१	४	२	३	४	३	१
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ८ जुलाई

४ | २ शु. मं. | ३ सू. बु. | १ | ५ | ६ रा. | १२ श. के. चं. | ७ | ९ गु. | ११ | ८ | १०

चन्द्रे अमावस्यां ग्रह स्पष्ट. प्रातः साढ़े पाँच (१५ जुलाई)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
२	२	१	३	८	१	११	५	११
२८	२१	२८	०३	१७	२०	१३	१८	१८
५८	३३	५२	१५	३६	४९	३४	१५	१५
४४	२५	२८	३२	३६	२८	४७	२२	२२
५७ १३	७१४ ४	४० ५७	१२५ २	७ २१	२६ ०१	० २८	३ ११	३ ११
पुर्न	पुर्न	मृग	पुर्न	पूषा	रोहि	उभा	हस्त	रेव
३	१	२	४	२	४	४	३	१
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. १५ जुलाई

४ बु. | २ शु. मं. | ३ सू. चं. | १ | ५ | ६ रा. | १२ के. श. | ७ | ९ गु. | ११ | ८ | १०

अधि-आषाढ़ कृष्ण पक्ष

इस पक्ष की द्वितीया को बुध आर्द्रा में प्रवेश करने से गेहूं, चने, धान्य, तिल्हन, तेल, उड़द, मूंग, मोठ, पशुचारा, अलसी के भावों में घटाबढ़ी होगी। इसी दिन शुक्र वृष में मार्गी होने से सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहादि धातुएं तेज भाव होंगी। पंचमी तिथि से सूर्य पुनर्वसु में आने से रुई, कपास, खल-बिनौले, तिल, मूंगफली, तेल, अलसी, सरसों, उड़द एवं गाय, भैंस, घोड़े आदि चौपायों के भावों में तेजी बनेगी। त्रयोदशी तिथि से बुध कर्क में प्रविष्ट होने से गुड़, चीनी, शक्कर, घी, जौं, बाजरा, मक्की, धान्यादि एवं रुई, कपास में घटाबढ़ी होगी। वायदा बाजार एवं हाजिर माल की स्थिति अनिश्चित रहेगी सोच समझ कर सौदा तय करें अथवा ताजा मशवरा हासिल करें॥

लोक भविष्य—आषाढ़ मास में **पांच सोमवार** तथा **पांच मंगलवार** पड़ने से इस मास का फल मिश्रित रहेगा। पांच सोमवार होने से गेहूँ धान्यादि के बाजार में मन्दी का वातावरण रहेगा। परन्तु पांच मंगलवार होने से किसी प्रधान नेता के आकस्मिक निधन के योग हैं। शासक वर्ग के लिए अशुभ होंगे। कहीं उपद्रव, हिंसा व युद्ध के समाचार मिलेंगे। अथवा कहीं राज्य परिवर्तन (छत्र भंग) होने के संकेत हैं।

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र-भंगस्तदा भवेत्॥ **आकाश लक्षण**—भारत के मध्य पूर्वी एवं पश्चिमोत्तर भागों में कहीं विपुल वर्षा तो कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

शकुन—अधि-आषाढ़ कृष्ण अष्टमी को वर्षा हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत है।

विवाह मुहूर्त—आषाढ़ अधि-मास होने के कारण विवाहादि शुभ मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

विक्रमी संवत् २०५३, शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् १९९६ (१६ जुलाई से ३० जुलाई तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

विक्रमी संवत् २०५३, श्रावण शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (१५ अग. से २८ अगस्त तक)

उदयकालिक नित्य सूर्यस्पष्ट: सूर्योदयास्त जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने वर्षा शरदऋतु उत्तर गोलार्ध

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	श्राव प्र	रवि	अगस्त	श्राव	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पर्व, ग्रह संचारादि	नि रा	सू अ	स्प क	इ वि	सू घं	उ मि	सू घं	अ मि.
																					सौभाग्य (क्षय) ५३।३७ (२६ अग.)								
३२।५७	१	बृह	३३	४३	१५	२५	मघा	३५	०८	परि	३१	१३	ब	२३	४३	२४	२९	१५	३१	सिंहे	भारत स्वतंत्रता दिवस, पुर्न (१) भौमः ३२।२५, चंद्रदर्शन, नक्त व्रतारम्भ ग. मु.	३	२८	३९	११	५	५६	७	०७
३२।५३	२	शुक्र	२८	५३	१७	३०	पूफा	४१	३८	शि	४०	३१	कौ	२८	५३	२५	रवि	१६	भा	कं. ५८।०६	मघायां १ सिंहे सूर्यः २४।०८, भाद्रपद संक्राः ३० मु. पुण्य संक्रां A	३	२९	३६	५२	५	५७	७	०६
३२।५०	३	शनि	३३	१८	१९	१६	उफा	४७	२८	सि	४१	२२	तै	१	०६	२६	२	१७	२	कन्यायां	मधुस्रवा हरियाली तीज, सिंघारा ३ A ८।०८ के बाद उभा १ L	४	००	३४	३३	५	५७	७	०५
३२।४५	४	रवि	३६	३८	२०	३७	हस्त	५२	५३	सा	४०	४७	व	४	५८	२७	३	१८	३	कन्यायां	भद्रा ४।५८ से ३६।३८ तक, वरद चतुर्थी, स. सि. योग	४	०१	३२	१८	५	५८	७	०४
३२।४३	५	चंद्र	३८	४०	२१	३०	चित्रा	५५	४५	शु	४१	१५	व	७	४४	२८	४	१९	४	तुले २४।११	बुध कन्या राशि में १६।५०, नाग पंचमी	४	०२	३०	०१	५	५८	७	०३
३२।३७	६	मंग	३९	३८	२१	५०	स्वा	५७	४३	शुक	३८	२२	कौ	९	१४	२९	५	२०	५	तुलायां	कल्की जयंती L बुधः १७।१३ रबिउल्सानी (मुस्लिम)	४	०३	२७	४७	५	५९	७	०२
३२।३५	७	बुध	३८	५८	२१	३४	विशा	५८	०८	ब्रह्म	३५	२३	ग	९	३८	३०	६	२१	६	वृ ४३।०२	भद्रा ३८।५८ से प्रारंभ, गो. स्वामी तुलसी जयंती	४	०४	२५	३२	५	५९	७	०१
३२।३०	८	बृह	३६	२५	२०	३४	अनु	५६	४८	ऐंद्र	३१	१७	वि	७	४२	३१	७	२२	७	वृश्चिके	भद्रा ७।४२ तक, श्री भवान्यष्टमी, मेला चिंतपूर्णी, नैना देवी, सायन सूर्य B	४	०५	२३	२०	६	००	७	००
३२।२७	९	शुक्र	३२	००	१८	४९	ज्ये	५३	४५	वै	२५	३९	बा	४	१३	भा	८	२३	८	ध. ५३।४५	शक भाद्रपद शुरू, ग. मूलादि B कन्या में ५१।००, पुर्न (१) C	४	०६	२१	११	६	०१	७	००
३२।२०	१०	शनि	२५	५३	१६	२३	मूला	४९	१३	वि	१९	१४	ग	२५	५३	२	९	२४	९	धनु	भद्रा ५२।२६ से शुरू, गंडमूलादि C शुक्रः २१।४० शरदऋतु प्रा.	४	०७	१९	०३	६	०२	६	५८
३२।१७	११	रवि	१८	५८	१३	३७	पूषा	४३	२०	प्री	११	३१	वि	१८	५८	३	१०	२५	१०	मक. ५६।४३	भद्रा १८।५८ तक, पवित्रा एकादशी व्रत, त्रिपुष्कर योग.	४	०८	१६	५५	६	०२	६	५७
३२।१२	१२	चंद्र	१०	४५	१०	२१	उषा	३६	५३	आ.	२	२३	बा	१०	४५	४	११	२६	११	मकरे	सोम प्रदोष व्रत, स. सि. यो. २०।४८ घं. मि. से.	४	०९	१४	५२	६	०३	६	५६
३२।०७	१३	मंग	१	३५	६	४२	श्रव	२९	४८	शो	४३	२८	तै	१	३५	५	१२	२७	१२	कुं. ५६।१८	भद्रा ५२।२५ से शुरू, पंचकारम्भः ५६।१८ (२८ घं. ३५ मि)	४	१०	१२	५०	६	०४	६	५५
अवम	१४	मंग	५२	२५	२७	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२।०५	१५	बुध	४३	२३	२३	२५	धनि	२२	४८	अति	३२	५०	वि	१७	५३	६	१३	२८	१३	कुंभे	भद्रा १७।५३ (१३.१४ घं. मि.) तक, व्रत श्रा. पूर्णिमा, रक्षाबन्धन भद्रा P के बाद, ऋषि तर्पण, गायत्री जयं, यात्रा श्री अमरनाथ (कश्मीर)	४	११	१०	४७	६	०४	६	५४

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच बजे २२ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	५	८	२	११	५	११
५	०३	२४	०२	१४	१९	१२	१६	१६
२२	२९	११	४१	१४	३७	३८	१४	१४
०८	२३	३८	२५	४४	२९	४०	३०	३०
५७ ४८	८१८ १६	३८ ४८	५५ १३	२ २१	५८ ५४	२ ५७	३ ११	३ ११
मघा	अनु	पुर्न	उफा	पूषा	आ.	उभा	हस्त	उभा
३	१	२	२	१	४	३	२	४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २२ अगस्त

६ बु. रा. | ५ सू. | ४ | ३ शु. मं. | ७ | २ | ८ चं. | ९ गु. | ११ | १ | १० | १२ श. के.

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच बजे २८ अगस्त

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
४	१०	२	५	८	३	११	५	११
११	००	२८	०७	१४	२५	१३	१५	१५
९	३४	०३	२२	०४	३५	१७	५५	५५
२५	४९	१७	२५	१५	३०	५४	२५	२५
५७ ५८	१०५ ५६	३८ २१	३ ४८	१ ०६	६०	३ २५	३ ११	३ ११
मघा	धनि	पुर्न	उफा	पूफा	पुर्न	उभा	हस्त	उभा
४	३	३	४	१	२	३	३	४
०	मा	मा	मा:	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २८ अगस्त

रा. बु. ६ | ५ सू. | ४ | ३ शु. मं. | ७ | ८ | २ | ९ गु. | ११ चं. | १ | १० | १२ श. के.

श्रावण शुक्ल पक्ष

श्रा शुक्ल पक्ष में सिंधारा तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने-अपने पीहर लौटकर हाथों में मेंहदी रचाकर एवं विभिन्न पकवान पका कर श्रावण के झूले झूलती हुई मलहारें गाती है। नागपंचमी को नागपूजा करने से सर्पादि का भय नहीं रहता। अष्टमी को जि० कांगड़ा में माता चितपूर्णी का पावन मेला मनाया जाता है। पूर्णिमा को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक 'रक्षा बन्धन' का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन श्री अमरनाथ (कश्मीर) में स्थित पवित्र गुफा में शिवलिंग के दर्शन करके श्रद्धालु जन कृतार्थ होते है। व्यापारिक रूख—द्वितीया (ता. १६ अग) को भाद्रपद संक्रान्ति ३० मुहूर्ति घोरा नामक शूद्रों अर्थात् निम्न जाति के लोगों को लाभप्रदायक होगी। संक्रान्ति से गेहूं, चने, तिल्ल, तेल, घी, गुड, चीनी, खाण्डसारी, अरण्डी, सरसों, तोरिया, जूट, पटसन, सूरजमुखी, काली एवं लाल वर्ण की वस्तुएं—सोना, पीतल, तांबा आदि के भाव तेज होंगे। ता. १९ से बुध कन्या राशि में आने से गेहूं, चावल, चने, गुड़, चीनी, हल्दी, चांदी व सोने के भावों में तेजी बरकरार रहेगी। ता. २३ को शुक्र पुनर्वसु में आने से सर्व प्रकार के धान्य, खल-बिनौले, गर्म मसाले, मूंगफली, वनस्पति आदि तेलों में तेजी हो। रुई व चांदी में घटा बढ़ी के बाद तेजी होगी। इस मास में पांच मंगलवार एवं ५ बुधवार होने से राजनीतिक वातावरण अनिश्चित होगा। वायदा बाजार की स्थिति भी अस्थिर रहेगी।

आकाश लक्षण—पक्ष में उत्तर-पश्चिमी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग है।

शकुन—श्रा. शु. सप्तमी को बूंदा बांदी हो तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

विवाह मुहूर्त—१७ अग. (उफा), १९ अग. (चित्रा, स्वा), २० अग. (स्वा) २१ अग (अनु), २५, २६ अग. (उषा), २७ अग. (धनि)

विक्रमी संवत् २०५३, श्रावण कृष्ण पक्ष, शाक: १९१८ सन् ई. १९९६ (३१ जुलाई से १४ अगस्त तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ.	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	श्रावण प्र.	राष्ट्रीय मि.	जुलाई	[illegible]	चंद्र रा प्रवेश घड़ी पल	धनिष्ठा (नक्षत्र) ५६ ।२० (क्षय) (३१ जुलाई) सूर्य दक्षिणायने वर्षाऋतु शोभन ५५ ।१५ १ अगस्त —उत्तरगोलार्ध	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.
३३ ।५५	१	बुध	१६	०८	१२	११	श्रव	३	३३	आ	१३	२४	कौ	१६	०८	९	१४	३१	१६	कुंभे २९ ।५७	पंचक शरू २९ ।५७ (१७.४६ घं. मि.), श्रा. कृ. प्रतिपदा	३	१४	१६	०३	५	४७	७	२१
३३ ।५३	२	बृह	७	००	८	३५	शत	५०	०८	सौ	३	११	ग	७	००	१०	१५	अग.	१७	कुम्भे	भद्रा ३२ ।५८ से ५८ ।५५ तक, १ अगस्त १९९६ ई., तिलक जयंती	३	१५	१३	२८	५	४७	७	२०
अवम	३	बृह	५८	५५	२९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	तृतीया तिथि का क्षय ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३ ।५०	४	शुक्र	५१	५८	२६	३५	पूभा	४५	१३	अति	४५	४९	व	२५	२७	११	१६	२	१८	मीने ३१ ।२७	आश्ले (१) सूर्य ३० ।५५. श्री गणेश चतुर्थी व्रत	३	१६	१०	५५	५	४८	७	२०
३३ ।४५	५	शनि	४६	५५	२४	३५	उभा	४१	५५	सु	३८	२३	कौ	१९	२७	१२	१७	३	१९	माने	नाग पचंमी (मरूस्थले)	३	१७	०८	२४	५	४९	७	१९
३३ ।४३	६	रवि	४३	४०	२३	१७	रेव	४०	३०	धृ	३२	२९	ग	१५	१८	१३	१८	४	२०	मे ४० ।३०	भद्रा ४३ ।४० से शुरू, पंचक समाप्त ४० ।३०, गं० मूलादि	३	१८	०५	५१	५	४९	७	१८
३३ ।४०	७	चंद्र	४२	३८	२२	५३	अश्वि	४१	००	शूल	२८	२३	वि	१२	०९	१४	१९	५	२१	मेषे	भद्रा १२ ।०९ तक, उभा (३) व. शनि १४ ।०७, शीतला ७ गं. मूलादि	३	१९	०३	१९	५	५०	७	१८
३३ ।३६	८	मंग	४३	१८	२३	०९	भर	४३	२३	गंड	३१	५२	बा	१२	५८	१५	२०	६	२२	वृषे ५९ ।२८	पूफायां १ बुध: १६ ।२३	३	२०	००	५०	५	५०	७	१७
३३ ।३३	९	बुध	४५	४८	२४	१०	कृति	४७	४३	वृ	२५	११	तै	१४	३३	१६	२१	७	२३	वृषे	आर्द्रा (१) शुक्र: ४८ ।५३	३	२०	५८	२३	५	५१	७	१६
३३ ।२९	१०	बृह	४९	३०	२५	४०	रोह	५२	३८	ध्रु	२५	४७	व	१७	३९	१७	२२	८	२४	वृषे	भद्रा १७ ।३९ से ४९ ।३० तक,	३	२१	५५	५६	५	५२	७	२५
३३ ।२५	११	शुक्र	५४	२८	२७	३९	मृग	५८	५५	व्या	२६	३१	व	२१	५९	१८	२३	९	२५	मि २५ ।४७	कामिका एकादशी व्रत	३	२२	५३	२८	५	५२	७	१४
३३ ।२०	१२	शनि	५९	५६	२९	५२	आर्द्रा	६०	००	हर्ष	२७	२९	कौ	२७	१३	१९	२४	१०	२६	मिथुने		३	२३	५१	०४	५	५३	७	१३
३३ ।१६	१३	रवि	६०	००	पूरादिन		आर्द्रा	५	३०	वज्र	३१	२७	ग	३२	५८	२०	२५	११	२७	क ५६ ।२३	प्रदोष व्रत	३	२४	४८	४०	५	५४	७	१२
३३ ।१२	१३	चंद्र	५	५८	८	१७	पुर्न	१३	२०	सि	३२	४८	व	५	५८	२१	२६	१२	२८	कर्के	भद्रा ५ ।५८ से ३८ ।५९ तक, स. सि. योग: ११ ।१४ से प्रा.	३	२५	४६	१५	५	५४	७	११
३३ ।०६	१४	मंग	१२	००	१०	४३	पुष्य	२०	५३	व्य	३५	११	श	१२	००	२२	२७	१३	२९	कर्के	हस्ते (२) राहु, उभा (४) केतु: ५८ ।००, अमा. पितृ आदि कार्येषु, स. सि. यो	३	२६	४३	५३	५	५५	७	१०
३३ ।०२	३०	बुध	१७	५८	१३	०५	श्ले	२८	१०	व	३७	३३	ना	१७	५८	२३	२८	१४	३०	सिं २८ ।१०	हरियाली अमावस स्नान दानादौ, गंडमूलादि	३	२७	४१	३०	५	५५	७	०८

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: साढ़े पाँच ६ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	४	८	२	११	५	११
२०	१७	१३	१२	१५	०७	१३	१७	१७
००	१८	४१	५४	१६	०८	१८	०५	०५
०२	-३	२०	३८	२१	२४	३१	२३	२३
५९ ३०	७६५ १	३२ ४९	८९ ०१	५ ०३	५० ३	१ ५८	३ १०	३ १०
श्ले	भर	आ.	मघा	पूषा	मृग	उभा	हस्त	रेव
२	२	३	४	१	४	३	३	१
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ६ अगस्त

५ बु. | मं ३ शु. | ६ रा. | ४ सू. | २ | ७ | १ चं. | के १२ श. | ८ | १० | ९ गु. | ११

बुधे अमा. ग्रह स्पष्ट प्रात: साढ़े पाँच १४ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
३	३	२	४	८	२	११	५	११
२७	२४	१८	२३	१४	१२	१३	१६	१६
४०	१३	५८	५३	४०	०६	०१	३९	३९
३०	४६	४९	१९	२३	४३	२५	५७	५७
५७ ३८	७१४ ९	३९ २१	७३ ०६	३ ४०	५३ ४२	२ ४२	३ ११	३ ११
श्ले	श्ले	आ.	पूफा	पूषा	आर्द्रा	उभा	हस्त	उभा
४	३	४	४	१	२	३	२	४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. १४ अगस्त

५ बु. | शु. ३. मं. | ६ रा. | ४ सू. चं. | २ | ७ | १ | श. | ८ | १० | १२ के. | ९ गु. | ११

श्रावण कृष्ण पक्ष

श्रावण मास में प्रति सोमवार को व्रत रखकर दूध, दही, घृत, शहद, वस्त्र, मूली, नारियल, घड़ा, चन्दन, जनेऊ, सुपारी, फल, बिल्वपत्र, पुष्पादि द्वारा शिव मन्दिर में शिवपार्वती की पूजा व्रतादि करने से सर्व प्रकार के धन, धान्य, पुत्रादि कामनाओं की पूर्ति होती है। हरियाली अमावस को गंगा आदि तीर्थ पर स्नान, दानादि करने का विशेष महात्म्य होता है।

व्यापारिक रुख—तृतीया तिथि (ता. २ अग.) को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट होने से गेहूँ, चना, तिलहन, अरण्डी, सरसों, मूंगफली, काली मिर्च, इलायची, उड़द, मूंग, खल-बिनौले, गाय-भैंसादि चौपाया एवं पशुचारा के भावों में तथा ताम्बा, पीतल, जिस्त, सोना, लौहादि धातुओं के मूल्यों में तेजी का वातावरण बनेगा। नवमी तिथि में शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ, धान्य, गुड़, चीनी, ज्वार, बाजरा आदि में मन्दी का रुख बनेगा। परन्तु भौमवासरी चतुर्दशी (ता. १३) से तिलहन, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, बिनौला आदि सर्वप्रकार के तेलों में तेजी की लाईन बनेगी। चांदी, ताम्बा, व रुई में भी चमक बनी रहेगी। पक्ष में गुरु-शुक्र के मध्य दृष्टि होने से कश्मीर समस्या को लेकर भारत व पाक के मध्य तनाव एवं सैनिक टकराव होने का वातावरण बनेगा।

आकाश लक्षण—अगस्त मास की ३, ४, ६, ८, १२ व १४ ता. को उ. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक वर्षा के योग हैं।

विवाह मुहूर्त—३१ जुलाई (दि. ल. ७, रा. १), ५ अग. दि. ल. ७

विक्रमी संवत् २०५३, श्रावण शुक्ल पक्ष, शाक: १९१८ सन् ई. १९९६ (१५ अग. से २८ अगस्त तक) उदयकालिक नित्य सूर्यस्पष्ट: सूर्योदयास्त जालन्धर

विक्रमी संवत् २०५३, श्रावण शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (१५ अग. से २८ अगस्त तक)

उदयकालिक नित्य सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने वर्षा शरदऋतु उत्तर गोलार्ध

दि.मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	राष्ट्रीय	मुस्लिम	अगस्त	प्रविष्टे	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पर्व, ग्रह संचारादि — सौभाग्य (क्षय) ५३।३७ (२६ अग.)
३२।५७	१	बृह	२३	४३	१५	२६	मघा	३६	०८	परि	३९	१३	ब	२३	४३	२४	२९	१५	३१	सिंहे	भारत स्वतंत्रता दिवस, पुर्न(१) भौमः ३२।२५, चंद्रदर्शन, नक्त व्रतारम्भ गं. मु.
३२।५३	२	शुक्र	२८	५३	१७	३०	पूफा	४१	३८	शि	४०	३१	कौ	२८	५३	२५	रबि	१६	भा	कं. ५८।०६	मघायां १ सिंहे सूर्यः २४।०८, भाद्रपद संक्राः ३० मु. पुण्य संक्रां A
३२।५०	३	शनि	३३	१८	१९	१६	उफा	४७	२८	सि	४१	२२	तै	१	०६	२६	२	१७	२	कन्यायां	मधुस्त्रवा हरियाली तीज, सिंघारा ३ A ८।०८ के बाद उभा १ L
३२।४५	४	रवि	३६	३८	२०	३७	हस्त	५२	५३	सा	४०	४७	व	४	५८	२७	३	१८	३	कन्यायां	भद्रा ४।५८ से ३६।३८ तक, वरद चतुर्थी, स. सि. योगः
३२।४३	५	चंद्र	३८	५०	२१	३०	चित्रा	५५	४५	शु	४१	१५	व	७	४४	२८	४	१९	४	तुले २४।११	बुध कन्या राशि में १६।५०, नाग पंचमी
३२।३७	६	मंग	३९	३८	२१	५०	स्वा	५७	४३	शुक्ल	३८	२२	कौ	९	१४	२९	५	२०	५	तुलायां	कल्की जयंती L. बुधः १७।१३ रबिउलसानी (मुस्लिम)
३२।३५	७	बुध	३८	५८	२१	३४	विशा	५८	०८	ब्रह्म	३५	२३	ग	९	१८	३०	६	२१	६	वृ ४३।०२	भद्रा ३८।५८ से प्रारंभ, गो. स्वामी तुलसी जयंती
३२।३०	८	बृह	३६	२५	२०	३६	अनु	५६	४८	ऐंद्र	३१	१७	वि	७	४२	३१	७	२२	७	वृश्चिके	भद्रा ७।४२ तक, श्री भवान्यष्टमी, मेला चिंतपूर्णी, नैना देवी, सायन सूर्य B
३२।२७	९	शुक्र	३२	००	१८	४९	ज्ये	५३	४०	वै	२५	३९	बा	४	१३	भा	८	२३	८	ध. ५३।४५	शाक भाद्रपद शुरू, गं. मूलादि B कन्या में ५१।००, पुर्न(१) C
३२।२०	१०	शनि	२५	४३	१६	२३	मूला	४९	१३	वि	१९	१४	ग	२५	४३	२	९	२४	९	धनु	भद्रा ५२।२६ से शुरू, गंडमूलादि C शुक्रः २१।४० शरदऋतु प्रा.
३२।१७	११	रवि	१८	५८	१३	३७	पूषा	४३	२०	प्री	११	२१	वि	१८	५८	३	१०	२५	१०	मक. ५६।४३	भद्रा १८।५८ तक, पवित्रा एकादशी व्रत, त्रिपुष्कर योग.
३२।१२	१२	चंद्र	१०	४५	१०	२१	उषा	३६	५३	आ	२	२३	बा	१०	४५	४	११	२६	११	मकरे	सोम प्रदोष व्रत, स. सि. यो. २०।४८ घं. मि. से.
३२।०७	१३	मंग	१	३५	६	४२	श्रव	२९	४८	शो	४३	२८	तै	१	३५	५	१२	२७	१२	कुं. ५६।१८	भद्रा ५२।२५ से शुरू, पंचकारम्भः ५६।१८ (२८ घं. ३५ मि)
अवम	१४	मंग	५२	२५	२७	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ०
३२।०५	१५	बुध	४३	२३	२३	२५	धनि	२२	४८	अति	३२	५०	वि	१७	५३	६	१३	२८	१३	कुम्भे	भद्रा १७।५३ (१३. १४ घं. मि.) तक, व्रत श्रा. पूर्णिमा, रक्षाबन्धन भद्रा P

P के बाद, ऋषि तर्पण, गायत्री जयं, यात्रा श्री अमरनाथ (कश्मीर)

नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.
३	२८	३९	११	५	५६	७	०७
३	२९	३६	५२	५	५७	७	०६
४	००	३४	३३	५	५७	७	०५
४	०१	३२	१८	५	५८	७	०४
४	०२	३०	०१	५	५८	७	०३
४	०३	२७	४७	५	५९	७	०२
४	०४	२५	३२	५	५९	७	०१
४	०५	२३	२०	६	००	७	००
४	०६	२१	११	६	०१	७	००
४	०७	१९	०३	६	०२	६	५८
४	०८	१६	५५	६	०२	६	५७
४	०९	१४	५२	६	०३	६	५६
४	१०	१२	५०	६	०४	६	५५
०	०	०	०	०	०	०	०
४	११	१०	४७	६	०४	६	५४

गुरो अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच बजे २२ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	५	८	२	११	५	११
५	०३	२४	०२	१४	१९	१२	१६	१६
२२	२९	११	४१	१४	३७	३८	१४	१४
०८	२७	३८	२५	४४	२९	४०	३०	३०
५७ ४८	८१८ १६	३८ ४८	५५ १२	३ २१	५८ ५४	३ ५७	३ ११	३ ११
मघा	अनु	पुर्न	उफा	पूषा	आ.	उभा	हस्त	उभा
२	१	२	२	१	४	३	२	४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २२ अगस्त

६ बु. रा.
४
३ शु. मं.
७
५ सू.
८ चं.
२
९ गु.
११
१
१०
१२ श. के.

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच बजे २८ अगस्त

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
४	१०	३	५	८	२	११	५	११
११	००	२८	०७	१४	२५	१२	१५	१५
९	३४	०३	२२	०४	३५	१७	५५	५५
२५	४९	१७	२५	१५	३०	५४	२५	२५
५७ ५८	८०५ २६	३८ २१	३ ४८	१ ०६	६० २	३ २५	३ ११	३ ११
मघा	धनि	पुर्न	उफा	पूषा	पुर्न	उभा	हस्त	उभा
४	३	३	४	१	२	३	२	४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २८ अगस्त

रा. बु. ६
४
३ शु. मं.
७
५ सू.
८
२
९ गु.
११ चं.
१
१०
१२ शं. के.

श्रावण शुक्ल पक्ष

श्रा शुक्ल पक्ष में सिंघारा तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने-अपने पीहर लौटकर हाथों में मेंहदी रचाकर एवं विभिन्न पकवान पका कर श्रावण के झूले झूलती हुई मलहारें गाती है। नागपंचमी को नागपूजा करने से सर्पादि का भय नहीं रहता। अष्टमी को जि० कांगड़ा में माता चिंतपूर्णी का पावन मेला मनाया जाता है। पूर्णिमा को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक 'रक्षा बन्धन' का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन श्री अमरनाथ(कश्मीर) में स्थित पवित्र गुफा में शिवलिंग के दर्शन करके श्रद्धालु जन कृतार्थ होते है। व्यापारिक रूख—द्वितीया (ता. १६ अग.) को भाद्रपद संक्रान्ति ३० मुहूर्ति घोरा नामक शूद्रों अर्थात् निम्न जाति के लोगों को लाभप्रदायक होगी। संक्रान्ति से गेहूं, चने, तिल, तेल, घी, गुड़, चीनी, खाण्डसारी, अरण्डी, सरसों, तोरिया, जूट, पटसन, सूरजमुखी, काली एवं लाल वर्ण की वस्तुएं—सोना, पीतल, तांबा आदि के भाव तेज होंगे। ता. १९ से बुध कन्या राशि में आने से गेहूं, चावल, चने, गुड़, चीनी, हल्दी, चांदी व सोने के भावों में तेजी बरकरार रहेगी। ता. २३ को शुक्र पुनर्वसु में आने से सर्व प्रकार के धान्य, खल-बिनौले, गर्म मसाले, मूंगफली, वनस्पति आदि तेलों में तेजी हो। रुई व चांदी में घटा बढ़ी के बाद तेजी होगी। इस मास में पांच मंगलवार एवं ५ बुधवार होने से राजनीतिक वातावरण अनिश्चित होगा। वायदा बाजार की स्थिति भी अस्थिर रहेगी।

आकाश लक्षण—पक्ष में उत्तर-पश्चिमी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग है।

शकुन—श्रा. शु. सप्तमी को बूंदा बांदी हो तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

विवाह मुहूर्त—१७ अग. (उफा), १९ अग. (चित्रा, स्वा), २० अग. (स्वा) २१ अग (अनु), २५, २६ अग. (उषा), २७ अग. (धनि)

वि. संवत् २०५३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (ता. २९ अगस्त से १२ सितम्बर तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि.मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पर्व ग्रह, संचार (३१ अग.) गंड योग (क्षय) ५५ ।२४ — सूर्य दक्षिणायने शरदऋतुः उत्तर गोलार्धे	नि. ग	सू. अ	स्प. क	ग्र. वि	सू. घ	उ. मि	सू. घ	अ. मि
३१ ।००	१	वृह	३५	००	२०	०५	शत.	१६	०३	सुक	२०	२७	बा	९	१२	७	१४	२९	१४	मीने ५६ ।३७	भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा	४	१२	०८	४३	६	०५	६	५३
३१ ।५५	२	शुक्र	२७	३०	१३	०५	पूभा	१०	०८	धृ	११	०५	तै	१	१५	८	१४	३०	१५	मीने	भद्रा ५४ ।१८ से शुरू, पूफायां (१) सूर्यः १३ ।४० A कज्जली ३	४	१३	०६	४७	६	०५	६	५१
३१ ।५०	३	शनि	२१	०५	१४	३२	उभा	५	२८	शू.	१	४३	वि	२१	०५	९	१६	३१	१६	मीने	भद्रा २१ ।०५ तक, मंगल कर्क में १ ।२३ गणेश बहुला चौथ, गं. मूल A	४	१४	०४	५२	६	०६	६	५०
३१ ।४५	४	रवि	१६	२८	१२	४२	रेवती	२	२३	वृ	४९	१३	बा	१६	२८	१०	१७	सित.	१७	मेषे २ ।२३	पंचक समा. २ ।२३, कर्के शुक्रः १७ ।२३, स. सि. योग, गं. मूलादि	४	१५	०२	५५	६	०७	६	४९
३१ ।४०	५	चंद्र	१३	५८	११	४३	अश्वि	१	१३	धु	४५	१७	तै	१३	५८	११	१८	२	१८	मेषे	चन्दन (चन्द्र) षष्ठी, हल षष्ठी (च. उ. व्या.)	४	१६	०१	०२	६	८	६	४८
३१ ।३५	६	मंग	१३	२३	११	२९	भरणी	१	५०	व्या	४२	५१	व	१३	२३	१२	१९	३	१९	वृषे १७ ।२८	भद्रा १३ ।२३ से ४४ ।०२ तक, स. सि. यो., त्रिपुष्करक्ष, अगस्त्य उदय	४	१६	५९	११	६	८	६	४७
३१ ।३०	७	बुध	१४	४०	१२	०१	कृति	४	२३	हर्ष	४२	२५	ब	१४	४०	१३	२०	४	२०	वृषे	गुरू मार्गी, व्रत श्री कृष्ण जन्माष्टमी (रोह. युता), पुष्ये १ शुक्र २९ ।१४ B	४	१७	५७	२०	६	९	६	४५
३१ ।२८	८	वृह	१७	४०	१३	१३	रोहि	८	५३	व	४२	३१	कौ	१७	४०	१४	२१	५	२१	मि. ४१ ।४४	पुष्ये (१) भौम १६ ।२३, कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, गोकुल अष्टमी मथुरा	४	१८	५५	३४	६	९	६	४४
३१ ।२३	९	शुक्र	२२	२८	१५	०९	मृग	१४	३५	सि	४४	११	ग	२२	२८	१५	२२	६	२२	मिथुने	भद्रा ५५ ।०९ से शुरू, श्री गुग्गा नवमी	४	१९	५३	५०	६	१०	६	४३
३१ ।१८	१०	शनि	२७	५०	१७	१९	आर्द्रा	२१	२३	व्य	४६	२९	वि	२७	५०	१६	२३	७	२३	मिथुने	भद्रा २७ ।५० तक B बुध वक्री स. सि. योगः	४	२०	५२	०५	६	११	६	४२
३१ ।१५	११	रवि	३४	०५	१९	४९	पुनं	२८	४५	व	४८	५७	ब	०	५८	१७	२४	८	२४	कर्के ११ ।५५	अजा एकादशी व्रत, रवि पुष्य योग २८ ।४५ उप.	४	२१	५०	२३	६	११	६	४१
३१ ।१०	१२	चंद्र	४०	१३	२२	१७	पुष्य	३६	०५	प	५१	३५	कौ	७	०१	१८	२५	९	२५	कर्के	वत्स द्वादशी	४	२२	४८	४३	६	१२	६	४०
३१ ।०७	१३	मंग	४६	०५	२४	३८	श्ले	४३	२३	शि	५४	०७	ग	१३	०९	१९	२६	१०	२६	सिं ४३ ।२३	भद्रा ४६ ।०५ से शुरू, भौम प्रदोष व्रत, स. सि. योग गं. मू.	४	२३	४७	००	६	१२	६	३८
३१ ।००	१४	बुध	५१	३५	२६	५१	मघा	५०	०८	सि	५५	२७	वि	१८	५०	२०	२७	११	२७	सिंहे	भद्रा १८ ।५० तक, बुधास्त पश्चिमे, २८ ।३० गं. मूलादि रात २ ।१७ तक	४	२४	४५	२३	६	१३	६	३७
३० ।५५	३०	वृह	५६	०५	२८	३९	पूफा	५६	१५	सा	५६	२५	च	२३	५०	२१	२८	१२	२८	सिंहे	कुशाग्रहणी पिठौरी अमावस, उफा (१) सूर्यः ५७ ।४७ मेला सुधरेशाह C	४	२५	४३	४६	६	१३	६	३५

गुरो अष्टम्या ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच ५ सितम्बर

गुरो अमा. ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच १२ सितंम्बर

C देहली, 'उ हूं फट' इह मंत्रेण कुशोत्पाटनम्

कु. अष्टमी सू. उ. ५ सितंम्बर

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	५	८	३	११	५	११
१८	२१	०३	०९	१४	०३	११	१५	१५
५४	१३	०८	३८	००	५०	४६	२९	२९
००	२३	३६	३४	३३	३८	३६	५८	५८
५८ ३३	७३१ ६	३० ५४	१ ५४	० ९	६३ ५४	३ ५१	३ १०	३ १०
पूफा	रोह	पुनं	उफा	पूषा	पुष्य	उभा	हस्त	उभा
२	४	४	४	१	१	३	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली: ६ रा. बु. | ५ सू. | ४ शु. मं. | ७ | ३ | ८ | २ चं. | ९ गु. | ११ | १ | १० | १२ के. श.

कु. अमावस सू. उ. १२ सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
४	४	३	५	८	३	११	५	११
२५	१४	०७	०६	१४	११	११	१५	१५
४२	५७	३२	३०	०७	२०	१६	०७	०७
०१	२३	३४	३२	२६	१५	२८	४२	४२
५८ २३	७२० ४	३७ २७	५१ २०	१ ५३	६५ १४	४ १५	३ ११	३ ११
पूफा	पूफा	पुष्य	उफा	पूषा	पुष्य	उभा	हस्त	उभा
४	१	२	३	१	२	३	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली: ६ बु. रा. | ५ सू. चं. | ४ मं. शु. | ७ | ३ | ८ | २ | ९ गु. | ११ | १ | १० | १२ श. के.

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

सर्व प्रकार के अरिष्ट शांति हेतु बहुला चौथ का व्रत रखते हैं। चन्दन षष्ठी का व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां संतान एवं परिवार की रक्षा की कामना से रखती हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतोत्सव अर्ध-रात्रि एवं रोहणी नक्षत्र योग में बुधवार, ४ सितम्बर को होगा जबकि उदय-कालिक जन्माष्टमी गुरुवार, ५ सितम्बर को मनाई जाएगी। मथुरा आदि प्रदेशों में श्री कृष्ण-जन्माष्टमी का महोत्सव इसी दिन मनाया जाएगा। जन्माष्टमी के दिन 'ॐ नमो भगवते, वासुदेवाय नमः" मंत्र का पाठ करते हुए भगवान् श्री कृष्ण के बालरूप का ध्यान करते हुए महोत्सव मनाना चाहिए।

व्यापारिक भविष्य—द्वितीया को सूर्य पूफा. नक्षत्र में आने से तिल, तेल, घृत चीनी, खल-बिनौले चीनी, घी आदि में अच्छी तेजी बनेगी। तृतीया से मंगल कर्क में प्रविष्ट होने से सर्व प्रकार के माल पसारी, धान्य, चौपायें में तेजी का रुख रहेगा। भूमि पुत्रो यदा कर्के सर्वधान्य महर्घता। महिषीक्षु महर्घं च जायते नात्र संशयः॥ चतुर्थी को कर्क राशि का शुक्र होने से भी गेहूं, चने, चावल, अलसी, सरसों, बारदाना तेज भाव होंगे। सप्तमी को गुरु मार्गी एवं शुक्र पुष्य में आने से रुई, रेशमी एवं ऊनी धागों, तिलहन, मूंगफली, खल-बिनौला में तेजी होगी। षष्ठी तिथि (३ सित.) को कर्क राशि में मंगल शुक्र की युति खल-बिनौले, लाल चन्दन, नारियल, ताम्बा पीतल आदि लाल वर्ण की वस्तुओं में तेजी कारक होगी। थोक मार्किट का रुख भी तेजी की ओर रहेगा। राजनीतिक अनिश्चितता के कारण मार्किट का रुख अस्थिर रहेगा॥ आकाश लक्षण—उत्तरी भारत के अनेक क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग हैं। शकुन—भा. कृ. ८ को रोहिणी योग में वर्षा होना सुभिक्ष के संकेत हैं।

विवाह मुहूर्त—३१ अग. (रेवती) ४ सित. (रोहिणी) ५ सित. (मृगे) ६ सित. (मृगे)

वि० संवत् २०५३, भाद्र-शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (१३ सितं. से २७ सितं. तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

चंद्र रा. प्रवेश ... सूर्य दक्षिणायने शरद ऋतु ... नि. ग | सू. अ | स्प. क | ग्र. वि | सू. घं | उ. मि | सू. घं | अ. मि

क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग हैं। शकुन--भा कृ. ८ को रोहिणी योग में वर्षा होना ... संकेत है।

वि० संवत् २०५३, भाद्र-शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (१३ सितं. से २७ सितं. तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि मा घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
३० ।५०	१	शुक्र	५९	४५	३०	०८	उफा	६०	००	शुभ	५६	३४	कि	२७	५५	२२	२९	१३	२९	कं. १२ ।३२
३० ।४५	२	शनि	६०	००	पूर्णदिन		उफा	१	२३	शुक्ल	५६	१३	बा	३१	०९	२३	३०	१४	३०	कन्यायां
३० ।४३	२	रवि	२	३३	७	१६	हस्त	५	३८	ब्रह्म	५४	४७	कौ	२	३३	२४	जमा	१५	३१	तु ३७ ।११
३० ।३८	३	चंद्र	४	१०	७	५६	चित्रा	८	४३	ऐंद्र	५३	१९	ग	४	१०	२५	२	१६	आ	तुलायां
३० ।३३	४	मंग	४	४८	८	११	स्वा.	१०	४६	वैधृ	४१	०२	वि	४	४८	२६	३	१७	२	वृ ५६ ।१८
३० ।२७	५	बुध	३	५०	७	४९	विशा	११	२८	वि	४६	२०	बा	३	५०	२७	४	१८	३	वृश्चिके
३० ।२३	६	बृह	१	५५	७	०३	अनु	११	४३	प्री	४१	२९	तै	१	५५	२८	५	१९	४	वृश्चिके
अवम	७	बृह	५८	४०	२९	४५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३० ।१७	८	शुक्र	५८	०८	२९	२७	ज्ये.	९	२०	आ	३५	५२	वि	२६	२४	२९	६	२०	५	धनु ९ ।२०
३० ।१०	९	शनि	४८	३३	२५	४६	मूला	६	२८	सौ	२९	४३	बा	२१	२१	३०	७	२१	६	धनु
३० ।०३	१०	रवि	४२	००	२३	०४	पूषा.	२	३८	शो	२३	३७	तै	१५	१७	३१	८	२२	७	म १६ ।२६
३० ।००	११	चंद्र	३४	४८	२०	३५	श्रव	५२	२८	अ	१५	४२	व	८	२४	आ	९	२३	८	मकरे
२९ ।५७	१२	मंग	२७	२०	१७	१७	धनि	४६	४५	सु	६	३५	व	१	०४	२	१०	२४	९	कुं १९ ।३७
२९ ।५३	१३	बुध	१९	३३	१४	१०	शत	४१	०३	शू.	४७	३४	तै	१९	३३	३	११	२५	१०	कुंभे
२९ ।५०	१४	बृह	१२	००	११	०९	पूभा	३५	४०	ग	३८	०७	व	१२	००	४	१२	२६	११	मी २२ ।०१
२९ ।४५	१५	शुक्र	५	०३	८	२३	उभा	३१	००	वृ	२८	११	व	५	०३	५	१३	२७	१२	मीने

उघा. ५७ ।५० (क्षय) २२ सितं.
धृति ५७ ।४८ (क्षय) २४ सितं.

सूर्य दक्षिणायने शरद् ऋतु —उत्तर दक्षिण गोलार्ध

- भाद्र शुक्ल प्रतिपदा • पुण्य संक्रां. ७ ।०८ उपरांत
- चन्द्रदर्शनं, त्रिपुष्कर योग B तीज, अश्ले(१) शुक्र: ५० ।३५ •
- १ जमादिलावल मु० स सि.यो. A कलंक चतु. (पत्थर चौथ) हरितालिका B
- भद्रा ३४ ।२९ से शु०, आश्विन संक्रांति २३ ।०८ मुहूर्ति १५ गणेश चौथ A
- भद्रा ४ ।४८ तक, ऋषि पंचमी, संवत्सरी पर्व
- वक्री बुध सिंह में ३५ ।००, स. सि. योग
- भद्रा ५८ ।४० से शुरू, सूर्य षष्ठी व्रत, गंडमूलादि १०.५८ से प्रा०
- सप्तमी तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ० ० ०
- भद्रा २६ ।२४ तक, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ, राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, गं. मू.
- श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्र०) गं० मूलादि ८.५४ बजे तक
- सायन सूर्य तुला में ४३ ।२५, सूर्य दक्षिण गोलार्धे, विषुव दिवस, स. सि. यो.
- भद्रा ८ ।२४ से ३४ ।४८ तक, पद्मा एकादशी व्रत स. सि. यो.
- पंचकारम्भ: १९ ।३७, वामन द्वादशी, पूर्वोदय बुध: २३ ।१०
- D हस्ते(१) सूर्य: ३६ ।२५, आश्ले(१) भौम: ४४ ।५७ E
- भद्रा १२ ।०० से ३८ ।३१ तक, अनंत चौदश व्रत, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा व्रत D
- भाद्रपद पूर्णिमा पितृ पक्ष शुरू, प्रतिपदा का श्राद्ध, बुध मार्गी ५ ।१८
- E मेला बाबा सोढल जालन्धर व मेला छपार

नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.
४	२६	४२	११	६	१४	६	३४
४	२७	४०	३७	६	१५	६	३३
४	२८	३८	५५	६	१५	६	३२
४	२९	३७	२५	६	१६	६	३१
५	००	३५	५८	६	१६	६	२९
५	०१	३४	३४	६	१७	६	२७
५	०२	३३	०९	६	१७	६	२६
०	०	०	०	०	०	०	०
५	०३	३१	४८	६	१८	६	२५
५	०४	३०	२७	६	१९	६	२३
५	०५	२९	१०	६	२०	६	२१
५	०६	२७	५४	६	२०	६	२०
५	०७	२६	४१	६	२१	६	२०
५	०८	२५	३०	६	२१	६	१८
५	०९	२४	२०	६	२१	६	१७
५	१०	२३	१३	६	२२	६	१६

गुरौ सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच २० सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	३	४	८	३	११	५	११
३	२७	१२	२८	१४	२०	१०	१४	१४
२९	२२	३१	३९	२५	०८	४०	४२	४२
५१	२८	३९	३२	३३	१७	११	१४	१४
५८ ३९	८१९ ३	३७ ०१	५४ ०१	३ १८	६३ ८	४ २३	३ ११	३ ११
उफा	ज्ये	पुष्य	उफा	पूषा	श्ले	उभा	हस्त	उभा
३	४	३	१	१	२	३	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २० सित.

६ सू. रा. | ५ बु. | ४ शु. मं. | ७ | ८ चं. | ९ गु. | ३ | १२ श. के. | १० | ११ | १ | २

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच, २७ सित.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	३	४	८	३	११	५	११
१०	०८	१६	२५	१४	२८	१०	१४	१४
२१	४४	४७	१२	५२	००	०८	१९	१९
०६	३८	५१	५३	०१	११	१७	५८	५८
५८ ५३	८३५ ४	३६ २७	९ २१	४ ३३	६८ १२	४ २४	३ ११	३ ११
हस्ते	उभा	श्ले	पूफा	पूषा	उभा	उभा	हस्त	उभा
१	३	१	४	१	४	३	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २७ सित.

६ सू. रा. | ५ बु. | ४ शु. मं. | ७ | ८ | ९ गु. | ३ | १२ के. श. चं. | १० | ११ | १ | २

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल

श्री गणेश चतुर्थी (पत्थर, चौथ) का व्रत श्री गणेश जी को मीठे पुओं व पीले लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। इस दिन चन्द्रदर्शन करना निषिद्ध माना जाता है। संतान प्राप्ति हेतु एवं संतान की दीर्घायु की कामना से संतान सप्तमी का व्रत विधिपूर्वक किया जाता है। अनंत चतुर्दशी को हल्दी से रंगे कच्चे सूत की डोरी व मीठे पुओं एवं पीले पुष्पों सहित भगवान श्री विष्णु की पूजा करने से धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। पूर्णिमा का श्राद्ध २६ गुरुवार मध्याह्न काल में होगा।

सामान्य व व्यापारिक भविष्य--द्वितीया (१४ सित०) को चन्द्रदर्शन शनिवार को होने से रुई, सूत, मूंगफली, सोना, चावलों के मूल्यों में तेज़ी होगी। तृतीया (१६ सित०) को सूर्य कन्या में आने से रुई, तिलहन, नारियल, पीतल व लाल रंग की वस्तुएं तेज़ भाव होंगी। चांदी व शेयरों में मंदा रहेगा। १७ सित० को सूर्य-बुध में अंशात्मक युति होने से देश के कुछ भागों में साम्प्रदायिक दंगे होंगे। पंचमी को वक्री बुध सिंह में आने से रुई, सन, सूत, चीनी-शक्कर में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी होगी। चतुर्दशी (ता. २६) को सूर्य हस्त व मंगल आश्लेषा में आने से सप्ताह के भीतर ही गेहूं, जौ, कपास, गुड़, हल्दी के भावों में तेज़ी आयगी। व्यापारी तुरन्त लाभ लें। अनाज-चीनी आदि की कमी के कारण कहीं अराजकता एवं दुर्भिक्ष हो, वस्तुएं तेज़ भाव होंगी। आकाश लक्षण--वर्षा की कमी ही रहेगी तथा जलवायु में अधिक परिवर्तन न होगा।

शकुन--यदि भाद्र शुक्ल तृतीया को वर्षा हो तो अच्छी फसल एवं निकट दिनों में विपुल वर्षा के संकेत हैं। विवाह मुहूर्त--१३ सित. (उफा) १७ सित. (स्वा) १८-१९ सित. (अनु) २०-२१ सित. (मूले) २२, २३ (श्रवण), २४ सित. (अभि)

विक्रमी संवत् २०५३, आश्विन कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (२८ सितं. से १२ अक्तूबर तक) उदयकालिक नित्य सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालंधर

दि मा घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	पल	घ.	मि	नक्षत्र	घ	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
अक्षय	१	शुक्र	५८	५८	२९	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२७	०	० ० ०
२९।४३	२	शनि	५६	४५	२८	०४	रेव	२६	२३	ध्रुव	२०	२१	तै	२७	३७	६	१४	२८	१३	मेषे २६।२३
२९।३५	३	रवि	५०	५३	२६	४४	अश्वि	२४	३०	व्या	१३	५३	व	२३	४९	७	१५	२९	१४	मेषे
२९।३०	४	चंद्र	४९	१५	२६	०६	भर	२४	३८	हर्ष	८	२३	ब	२०	०४	८	१७	३०	१५	वृ ३९।५५
२९।२४	५	मंग	४९	३३	२६	१४	कृति	२५	४५	वज्र	४	५१	कौ	१९	२४	९	१७	अ.	१६	वृषे
२९।२०	६	बुध	५१	४८	२७	०८	रोहि	२८	४५	सि	२	२७	ग	२०	४१	१०	१८	२	१७	वृषे
२९।१५	७	बृह	५५	४०	२८	४२	मृग	३३	२०	व्य	२	११	वि	२३	४४	११	१९	३	१८	मि १।०३
२९।१२	८	शुक्र	६०	००	पूरा	दि	आर्द्रा	३९	२५	वर	२	४९	बा	२८	०९	१२	२०	४	१९	मिथुने
२९।०५	८	शनि	०	३८	६	४२	पुन	४६	२३	प	४	२८	कौ	०	३८	१३	२१	५	२०	क २९।३९
२९।०३	९	रवि	६	३५	९	०५	पुष्य	५३	५०	शिव	६	२५	ग	६	३५	१४	२२	६	२१	कर्के
२८।५८	१०	चंद्र	१२	५०	११	३६	श्ले	६०	००	सि	९	०३	वि	१२	५०	१५	२३	७	२२	कर्के
२८।५३	११	मंग	१८	५३	१४	०२	श्ले	१	०५	सा	११	१७	बा	१८	५३	१६	२४	८	२३	सि. १।०५
२८।५०	१२	बुध	२४	२०	१६	१३	मघा	७	५३	शुभ	१३	०३	तै	२४	२०	१७	२५	९	२४	सिंहे
२८।४३	१३	बृह	२८	४३	१७	५९	पूफा	१३	४३	शु	१४	१०	व	२८	४३	१८	२६	१०	२५	क ३०।४१
२८।३८	१४	शुक्र	३१	२५	१९	०५	उफा	२१	३३	ब्र	१४	०२	वि	०	०४	१९	२७	११	२६	कन्यायां
२८।३३	३०	शनि	३२	५८	१९	४३	हस्त	२१	४५	ऐ	१३	२१	च	२	१२	२०	२८	१२	२७	तुले ५२।५२

तिथि	पर्व, त्यौहार, ग्रह संचारादि — सूर्य दक्षिणायने, शरद् ऋतु दक्षिण गोलार्ध	नि. रा	सू. अं	स्प. क	इ. वि	सू. घं	उ. मि	सू. घं	अ. मि
१	प्रथमा तिथि का क्षय ० ० A उभा(२) व० शनि ४८ ।५० गं. मूलादि	०	०	०	०	०	०	०	०
२	पंचक समाप्त २६ ।२३, मघा(१) सिंहे शुक्रः ४२ ।४०, श्राद्ध द्वितीया A	५	११	२२	०७	६	२२	६	१५
३	भद्रा २३ ।४९ से ५० ।५३ तक, तृतीया का श्राद्ध . सि. सि. यो. गं. मूलादि	५	१२	२१	०२	६	२३	६	१३
४	श्री गणेश चतुर्थी, चतुर्थी का श्राद्ध, उफा(१) बुध ५३ ।४५	५	१३	२०	०१	६	२४	६	१२
५	पंचमी का श्राद्ध, स. सि. योग., ता १ अक्तूबर १९९६ ई०	५	१४	१९	०३	६	२५	६	१०
६	भद्रा ५१ ।४८ से शुरू, षष्ठी का श्राद्ध, महात्मा गांधी जंयती, स. सि. यो.	५	१५	१८	०६	६	२५	६	०९
७	भद्रा २३ ।४४ तक, सप्तमी का श्राद्ध	५	१६	१७	१२	६	२६	६	०८
८	बुध कन्या में २९ ।००, श्री महालक्ष्मी व्रत.समा. श्राद्ध अष्टमी	५	१७	१६	१७	६	२६	६	०७
८	मातृ नवमी, सौभाग्यवतीना श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध	५	१८	१५	२६	६	२७	६	०५
९	भद्रा ३९ ।४३ से शुरू, दशमी का श्राद्ध, स. सि. योग:	५	१९	१४	३५	६	२७	६	०४
१०	भद्रा १२ ।५० तक, एकादशी का श्राद्ध, गंड मूलादि	५	२०	१३	४९	६	२८	६	०३
११	इन्दिरा एकादशी व्रतं, सन्यासीनां श्राद्ध, श्रा० ११ द्वादशी का श्राद्ध	५	२१	१३	०२	६	२९	६	०२
१२	गं. मूलादि ६ ।५५ तक C पूफायां१ शुक्र १४ ।१०	५	२२	१२	२०	६	२९	६	०१
१३	भद्रा २८ ।४३ से शुरू, चित्रा (१) सूर्यः ८ ।२०, त्र्योदशी का श्राद्ध C	५	२३	११	४०	६	३०	५	५९
१४	भद्रा ० ।०४ तक, हस्ते बुधः ३१ ।१५, शस्त्रविषादि से मृतों का श्राद्ध	५	२४	११	०२	६	३१	५	५८
३०	शनिवासरी अमा., सर्वपितृ श्राद्ध, स्नानदान, पितृतर्पणादि	५	२५	१०	२७	६	३२	५	५७

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच ५ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	५	८	४	११	५	११
१८	२३	२१	००	१५	०७	०९	१३	१३
१३	४१	३४	३२	३२	११	३०	५४	५४
०६	३१	२५	२९	३४	५१	४१	३१	३१
५९ १	७१२ ५७	३५ २७	३५ ०८	५ ३९	६८ १३	४ २५	३ ११	३ ११
ह	पुन	श्ले	उफ	पूषा	मघा	उभा	हस्त	उभा
३	२	२	२	१	३	२	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ५ अक्तूबर

(कुण्डली: ७ | ५ शु. | ६ रा. सू. बु. | ८ | ४ मं. | ९ गु. | ३ चं. | १० | के. १२ श. | २ | ११ | १)

शनौ अमा. ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच १२ अक्तूबर

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
५	५	३	५	८	४	११	५	११
२५	१८	२५	१०	१६	१५	०८	१३	१३
०७	१३	४१	४२	१५	२१	५९	३२	३२
५५	२४	४२	२७	१०	४१	४३	२४	२४
५९ २३	७६५ २	३५ १३	९९ ०२	६ ५१	७० ४९	४ ३१	३ ११	३ ११
चित्रा	हस्ते	श्ले	हस्त	पूषा	पूफा	उभा	हस्त	उभा
१	३	३	१	१	१	२	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. १२ अक्तूबर

(कुण्डली: ७ | ५ शु. | ६ बु. सू. चं. रा. | ८ | ४ मं. | ९ गु. | ३ | १० | के. १२ श. | २ | ११ | १)

आश्विन कृष्ण पक्षफल

पितृपक्ष में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार तिल, जौ, चावल, कुशा, गंगाजल सहित जलांज्जली एवं दानादि करने से पितर संतृप्त रहते हैं तथा घर में सुख शान्ति बनी रहती है। इससे श्राद्धकर्ता को आयु, स्वास्थ्य, धन, ज्ञान, स्वर्ग-मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है—"आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः।" अग्नि पुराण। जो कोई व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह पाप का भागी होकर दुःखों से पीडित रहता है। दिवंगत की निधन तिथि का ज्ञान न होने पर मध्याह्न व्यापिनी अमावस्या को सर्वपितरि श्राद्धादि कर्म करने चाहिएं। **व्यापारिक व सामान्य भविष्य**— पक्षारंभ में ही प्रतिपदा का क्षय तथा द्वितीया को शुक्र सिंह राशि में आने से गेहूँ, चने, गुड़, जूट, पटसन, सोना, तांबादि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज़ होगी। चतुर्थी (ता. ३०) को सूर्य-राहु की अंशात्मक युति घी, किशमिश गर्म मसालों में तेजीकारक होगी। सरकार को आंतरिक उपद्रव एवं हिंसा को शान्त करने के लिए बल का प्रयोग करना पड़ेगा। ४ अक्तू० को बुध कन्या में आने से सोना, तांबा, चाँदी, गेहूँ, मक्की, चावल, चीनी, खाद्य तैलादि के भावों में तेज़ी की लाईन एक सप्ताह तक चलेगी। त्रयोदशी (ता. १०) से सूर्य चित्रा व शुक्र पूफा में आने से गेहूँ, गुड़-शक्कर, चीनी, सरसों, अलसी, मूँफली, चावल, खल-बिनौले व तांबे में तेज़ी का माहौल बनेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में मौसम प्रायः अनिश्चित रहेगा। कहीं रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग है। **शकुन**—नवमी (५ अक्तू.) को यदि बादल चाल बने तो सर्व प्रकार के पशुचारा में तेजी होगी।

विवाह मुहूर्त—पितृ पक्ष होने के कारण इस पक्ष मे विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

बि. संवत् २०५३, आश्विन शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (१३ अक्तू. से २६ अक्तू. तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने, शरदऋतु — दक्षिण गोलार्ध | नि. रा | सू. अ | स्प. क | इ. वि | सु. घं | उ. मि | सु. घं | अ. मि

कर खण्ड वर्षा के योग है। शकुन—नवमी (५ अक्तू.) ... में तेजी होगी। | विवाह मुहूर्त—पितृ पक्ष होने के कारण इस पक्ष में विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

वि. संवत् २०५३, आश्विन शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (१३ अक्तू. से २६ अक्तू. तक)

दि.मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
२८।३८	१	रवि	३३	१८	१९	५२	चित्रा	२३	५८	वै	१०	५०	कि	३	०८	२१	२९	१३	२८	तुलाया
२८।३३	२	चंद्र	३२	३८	१९	३६	स्वा	२५	००	वि	८	०५	बा	२	५८	२२	३०	१४	२९	तुलायां
२८।२८	३	मंग	३०	४३	१८	५१	विशा	२५	०३	प्री	७	१८	तै	१	४१	२३	जमा	१५	३०	वृ १०।०२
२८।२३	४	बुध	२७	५८	१७	४६	अनु	२३	५८	आ	३	०३	वि	२७	५८	२४	२	१६	का	वृश्चिके
२८।१०	५	बृह	२४	३५	१६	२५	ज्ये	२२	१३	शो	५०	२०	बा	२४	३५	२५	३	१७	२	ध २२।१३
२८।०५	६	शुक्र	२०	१८	१४	४३	मूला	१९	४३	अति	४३	०३	तै	२०	१८	२६	४	१८	३	धनु
२८।००	७	शनि	१५	१८	१२	४४	पूषा	१६	३५	सु	३६	५५	व	१५	१८	२७	५	१९	४	म ३०।४४
२७।५८	८	रवि	१०	००	१०	३७	उषा	१३	१०	धृ	४५	०५	ब	१०	००	२८	६	२०	५	मकरे
२७।५३	९	चंद्र	४	१५	८	२०	श्रव	९	५५	शूल	२२	५५	कौ	४	१५	२९	७	२१	६	कुं. ३७।३२
अवम	१०	चंद्र	५८	२८	३०	०१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२७।४८	११	मंग	५२	३३	२७	४०	धनि	५	०८	गंड	१४	५०	व	२५	३१	३०	८	२२	७	कुम्भे
२७।४३	१२	बुध	४६	५०	२५	२४	शत	९	०५	वृ	६	५८	ब	१९	४२	का	९	२३	८	मी ४३।११
२७।४०	१३	बृह	४१	२५	२३	१४	उभा	५३	४५	व्या	५१	२८	कौ	१४	०८	२	१०	२४	९	मीने
२७।३५	१४	शुक्र	३६	३८	२१	२०	रेव	५०	५३	हर्ष	४४	००	ग	९	०२	३	११	२५	१०	मे ५०।५३
२७।३०	१५	शनि	३२	३०	१९	४२	अश्वि	४८	५५	वज्र	३७	०८	वि	४	३४	४	१२	२६	११	मेषे

पूर्वाभाद्रपद (क्षय) ५७।१३ (२३ अक्तू.) सूर्य दक्षिणायने, शरदऋतुः—दक्षिण गोलार्ध
सोभा. (क्षय) ५४।४० (१६ अक्तू.) ध्रुव ५८।१५,

शरद् नवरात्रारंभ, घटस्थापनं, मातामह श्राद्ध
पूर्वेऽस्तं बुधः ३।२७, चन्द्रदर्शनम् F केतु (५१।००) जमा. उल्सा.
भद्रा ५९।२१ से शुरु, पूषा (२) गुरू ३०।३०, हस्ते (१) राहु, उभा (३) F
भद्रा २७।५८ तक, सूर्य तुला में ५२।०५, कार्तिक संक्रांति १५ मुहूर्ति D
उपांग ललिता व्र., गं. मूलादि D पुण्य पर दिने मध्यान्ह पूर्व
भद्रा १५।१८ से ४२।३९ तक, चित्रा (१) बुधः २५।२८ सिंहे भौमः १८।२८
श्री दुर्गाष्टमी, मेला चामुंडा, कांगड़ा, मनसा देवी स. सि. यो.
पंचक शुरु ३७।३२, नवरात्र समा. विजया दशमी (दशहरा), सरस्वती S
S विसर्जन, अपराजिता पूजन, उफायां शुक्रः ३०।५, स. सि. यो.
भद्रा २५।३१ से ५२।३३ तक, पापांकुशा एका. व्रत, भरत मिलाप
स्वाती (१) सूर्यः ३४।१८, बुध तुला में ११।१०, सायने सूर्य वृश्चिके V
शुक्र कन्या में १७।३०, प्रदोष व्रतम्
भद्रा ३६।३८ से शुरु, पंचक समा. ५०।५३, स. सि. यो., गं. मूलादि
भद्रा ४।३४ तक, शरद् पूर्णिमा, श्री बालमीक जयं, कार्तिक स्नान शुरु, C
C ओली समा. (जैन) गं. मूलादि V राशि में ५।१३, शक कार्तिक आरंभः, हेमंतऋतु प्रारंभ

उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

नि. रा.	सू. अं	स्प. क	ष्ट. वि	सू. घं	उ. मि	सू. घं	अ. मि
५	२६	०९	५२	६	३३	५	५६
५	२७	०९	१७	६	३३	५	५४
५	२८	०८	४७	६	३४	५	५३
५	२९	०८	१८	६	३५	५	५२
६	००	०७	४९	६	३५	५	५१
६	०१	०७	२५	६	३६	५	५०
६	०२	०७	०३	६	३७	५	४९
६	०३	०६	४१	६	३७	५	४८
६	०४	०६	२३	६	३८	५	४७
०	०	०	०	०	०	०	०
६	०५	०६	०७	६	३९	५	४६
६	०६	०५	५३	६	४०	५	४५
६	०७	०५	३८	६	४०	५	४४
६	०८	०५	२७	६	४१	५	४३
६	०९	०५	१९	६	४२	५	४२

रवौ अष्टम्या ग्रह स्पष्ट प्रातः ५।३०, २० अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	५	८	४	११	५	११
०३	०६	००	२४	१७	२४	०८	१३	१३
०३	१६	२२	१४	१४	४९	२५	०६	०६
५५	२७	३३	१५	५९	२७	३२	५७	५७
५९ ३९	८४७ ५९	३४ ५३	१०१ १४	७ ५९	७१ ४	४ ५	३ ११	३ ११
चि.	उषा	मघा	चि.	पूषा	पूफा	उभा	हस्त	उभा
४	३	१	१	३	४	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २० अक्तूबर

८ | ७ सू. | ६ बु. रा. | ५ शु. मं. | ९ गु. | १० चं. | ४ | ११ | १ | ३ | १२ श. के. | २

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५।३० २६ अक्तूबर

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
६	०	४	६	८	५	११	५	११
०९	०१	०३	०४	१८	०१	०८	१२	१२
०२	२९	४७	२७	०४	५९	०२	४७	४७
१९	२९	४४	३१	४०	२८	०३	५१	५१
५९ ५१	८४० ५२	३३ ४७	१०० ५८	८ ४७	७१ ५६	३ १४	३ ११	३ ११
स्वा	अश्वि	मघा	चित्रा	पूषा	उफा	उभा	हस्त	उभा
१	१	३	४	२	३	२	२	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २६ अक्तूबर

८ | ७ सू. बु. | ६ शु. रा. | ५ मं. | ९ गु. | १० | ४ | ११ | १ चं. | ३ | १२ के. श. | २

आश्विन शुक्ल पक्षफल

प्रतिपदा को घटस्थापन, वरुण पूजा व षोडशोपचार सहित श्रीदुर्गा पूजन करें। पूजा मंत्र "ॐ जयंती महाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा, शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥ आगच्छ वरदे देवी ! दैत्य दर्पनिषूदिनी।" पूजा, गृहाण, सुमुखि, नमस्ते शंकरप्रिये।" पूजनोपरान्त होम करें तथा प्रतिदिन अखण्ड दीप जला कर नवरात्रों तक नित्य कुमारी पूजन करके दुर्गा पूजा करनी चाहिए। विजया दशमी २१ अक्तूबर को अपराह्न काल श्रीरामचन्द्र जी की पूजा—उपासना करनी चाहिए। शरद् पूर्णिमा की रात्रि को खीर, घृत, दुग्धादि पदार्थ छिटकती चांदनी में सुरक्षित रखकर दूसरे दिन प्रातः सेवन करने से असाध्य रोगों की शान्ति होती है। **व्यापारिक एवं सामान्य भविष्य**—प्रतिपदा को बुध-राहु की अंशात्मक युति करियाना मार्कीट में अस्थिरता पैदा करेगी। राजनीतिक वातावरण में भी अनिश्चितता के कारण सामान्य प्रजा जनों एवं प्रशासकवर्ग में तनाव एवं टकराव के योग बनेंगे। चतुर्थी (ता. १६) को कार्तिक संक्रान्ति बुधवार को १५ मुहूर्ति होने से तिल, रिफाईड-तेल, गेहूँ, चने, चावल, मूँग, लाल चन्दन, केशर, हल्दी, खल-बिनौले आदि किरयाना मार्कीट में तेज़ी का बोलबाला रहेगा। २३ अक्तू. को सूर्य स्वाती तथा बुध तुला में आने से चीनी, शक्कर, लाख, सुपारी, रुई-कपास में तेज़ी के झटके लगेंगे। त्रयोदशी (२४ अक्तू.) को शुक्र कन्या में आने से गेहूँ, चावल (धान्य), खल-बिनौले आदि पशुचारा में तेज़ी बनेगी। शुक्र-शनि के मध्य समसप्तक योग बना है जिसके कारण जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा, आसाम, आन्ध्र प्रदेश, बिहार आदि प्रदेशों में उपद्रव, तनाव व हिंसक घटनाएं होने के योग हैं।

विवाह मुहूर्त—अक्तू. की १३-१४ (स्वाती), १७-१८ (मूले), १९-२० (उषा), २१-२२ (धनि), २५-२६ (अश्वि)

वि. सवंत् २०५३, कार्तिक कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (२७ अक्तूबर से ११ नवंबर तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि.मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	व्रत, पर्व-त्यौहार, ग्रह संचारादि — सूर्य दक्षिणायने हेमंतऋतु —दक्षिण गोलार्ध	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि	सू. घ	उ. मि	सू. घं	अ. मि
२७।२५	१	रवि	२९	३३	१८	३२	भर	४८	०३	सि	३१	५०	बा	०	५२	५	१३	२७	१२	मेषेन्दु	स्वात्यां बुधः १५ ।५३, कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा	६	१०	०५	१२	६	४३	५	४१
२७।२३	२	चंद्र	२८	०३	१७	५६	कृति	४८	३८	व्य	२७	३०	ग	२८	०३	६	१४	२८	१३	वृषे ३ ।१२	भद्रा ५८ ।०६ से शुरू	६	११	०५	०५	६	४३	५	४०
२७।१८	३	मंग	२८	०८	१७	५९	रोहि	५०	४५	वर	२४	१३	वि	२८	०८	७	१५	२९	१४	वृषे	भद्रा २८ ।०८ तक, श्री गणेश चतुर्थी (व्रत करवा चौथ) चन्द्रोदय A	६	१२	०५	०३	६	४४	५	३९
२७।१३	४	बुध	२९	३५	१८	३५	मृग	५४	०८	परि	२२	५०	बा	२९	३५	८	१६	३०	१५	मि २२ ।२७	स. सि. योगः सू. उ. से A रात्रि लगभग ८ ।२९ पर	६	१३	०५	०२	६	४५	५	३८
२७।०८	५	बृह	३२	५८	१९	५७	आर्द्रा	५९	१५	शिव	२२	२०	कौ	१	१७	९	१७	३१	१६	मिथुने		६	१४	०५	०४	६	४६	५	३७
२७।०३	६	शुक्र	३७	४०	२१	५१	पुन	६०	००	सि	२३	५०	ग	५	१९	१०	१८	नवं	१७	क. ४९ ।०९	भद्रा ३७ ।४० से शुरु, हस्ते (१) शुक्रः ३५ ।३७	६	१५	०५	०७	६	४७	५	३६
२७।००	७	शनि	४३	२५	२४	०९	पुन	५	४३	सा	२५	०८	वि	१०	३३	११	१९	२	१८	कर्के	भद्रा १० ।३३ तक	६	१६	०५	१०	६	४७	५	३५
२६।५८	८	रवि	४९	४०	२६	४०	पुष्य	१२	५३	शु	२७	१३	बा	१६	३३	१२	२०	३	१९	कर्के	व्रत अहोई अष्टमी, राधाष्टमी (मथुरा), स. सि. यो.	६	१७	०५	१८	६	४८	५	३५
२६।५३	९	चंद्र	५५	५३	२९	१०	श्ले	२०	२३	शुक्ल	२९	३३	तै	२२	४७	१३	२१	४	२०	सिं २० ।२३	विशा (१) बुधः २३ ।३८, गंडमूलादि	६	१८	०५	२७	६	४९	५	३४
२६।४८	१०	मंग	६०	००	पूरा	दिन	मघा	२७	३३	ब्रह्म	३१	२५	व	२८	४१	१४	२२	५	२१	सिंहे	भद्रा २८ ।४१ से शुरु, विशा (१) सूर्यः ५४ ।१०, गं. मू. १७ ।५१ तक	६	१९	०५	३९	६	५०	५	३३
२६।४५	१०	बुध	१	२८	७	२५	पूफा	३३	४८	ऐं	३२	४०	वि	१	३८	१५	२३	६	२२	क ४९ ।५२	भद्रा १ ।२८ पर समाप्त	६	२०	०५	५०	६	५०	५	३२
२६।४३	११	बृह	५	५३	९	१२	उफा	३८	४५	वै	३३	००	बा	५	५३	१६	२४	७	२३	कन्यायां	पूषा (३) गुरू २ ।०८, रमा एकादशी व्रत,	६	२१	०६	०४	६	५१	५	३२
२६।३८	१२	शुक्र	८	५३	१०	२५	हस्त	४२	०५	विष	३२	०५	तै	८	५३	१७	२५	८	२४	कन्यायां	प्रदोष व्रत, धन त्र्योदशी, धनवन्तरी जयं, यमाय दीपदानं	६	२२	०६	१९	६	५२	५	३१
२६।३५	१३	शनि	१०	०३	१०	५३	चित्रा	४३	४८	प्री	२९	४३	व	१०	०३	१८	२६	९	२५	तुले १२ ।५७	भद्रा १० ।०३ से ३९ ।४४ तक, नरक चौदश, श्री हनुमान जयंती	६	२३	०६	३४	६	५२	५	३०
२६।३३	१४	रवि	९	२५	१०	३८	स्वा	४४	०३	आ	२६	२३	श	९	२५	१९	२७	१०	२६	तुलायां	वृश्चिके बुधः ४० ।१८, महालक्ष्मी पूजन, दीवाली पर्व	६	२४	०६	५१	६	५२	५	२९
२६।३०	३०	चंद्र	७	१८	९	४८	विशा	४२	४५	सौ	२१	३०	ना	७	१८	२०	२८	११	२७	वृ २८ ।०४	सोमवती अमा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा बलि पूजा च, विश्वकर्मा पूजन C	६	२५	०७	१२	६	५३	५	२९

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३०, ३ नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	४	६	८	५	११	५	११
१७	१३	०८	२७	१९	११	०७	१२	१२
०२	२९	१४	४०	१९	३८	३५	२२	२२
०३	३१	३७	४३	१८	३१	०७	२४	२४
६० ००	७१५ ३	३२ ११	९५ ४५	९ ४२	७२ ५२	२ ४४	३ ११	३ ११
स्वा	पुष्य	मघा	स्वा	पूषा	हस्त	उभा	हस्त	उभा
४	४	३	४	२	१	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ३ नवं.

- ७ सू. बु.
- ८
- ९ गु.
- १०
- ११
- १२ श. के.
- १
- २
- ३
- ४ चं.
- ५ मं.
- ६ रा. शु

चंद्रे अमावास्यां ग्रह स्पष्ट. प्रातः ५ ।३०, ११ नवंबर C श्री महावीर निर्वाण (जैन)

सू.	चं.	म.	बु.	बृ	शु.	श.	रा	के
६	६	४	७	८	५	११	५	११
२५	२२	१२	००	२०	२१	०७	११	११
०३	४९	३३	२५	४१	२२	१४	५६	५६
४५	२७	५४	३५	२०	११	३१	५७	५७
६० २१	८०२ ४	३१ २९	९३ ५७	१० ५१	७४ १६	२ १६	३ ११	३ ११
विशा	विशा	मघा	विशा	पूषा	हस्त	उभा	हस्त	उभा
२	१	४	४	३	४	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमा. सू. उ. ११ नवं.

- ७ सू. चं.
- ८ बु.
- ९ गु.
- १०
- ११
- १२ श. के.
- १
- २
- ३
- ४
- ५ मं.
- ६ रा. शु

कार्तिक कृष्ण पक्षफल

करवा चौथ का व्रत पतिव्रता स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं दस करवें दान करके व गणेश चौथ की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देकर पति को प्रणाम करने के पश्चात् भोजन करती है। अहोई अष्टमी का व्रत, पूजन भी संतान व पति की रक्षा हेतु किया जाता है। त्रयोदशी को धनन्वतरी का जन्मोत्सव, औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय किया जाता है। १० नवः को श्री महालक्ष्मी का पूजन व दीपमाला का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, अनुष्ठानादि का अनेक गुणा अधिक फल प्राप्त होता है। ११ नव. को अन्नकूट व गोवर्धन पूजा के दिन श्रीकृष्ण मन्दिर में विविध प्रकार के खाद्यान्न एवं व्यंजनों का भोग लगाया जाता है। व्यापारिक एवं सामान्य भविष्य—प्रतिपदा को बुध स्वाती नक्षत्र में प्रविष्ट होने से गेहूं, चने, चावल एवं सर्व प्रकार धान्यादि तेज़ होंगे। वायदा बाजार में भी तेजी के योग हैं। तिल, तैल, वनस्पति, पशुचारा, खल-बिनौले, मैदादि खाद्यान्न तेज़ भाव होंगे। षष्ठी को शुक्र हस्त में आने से सर्व प्रकार के खाद्यान्न गेहूं, चीनी, गुड़, मूंगफली, कालीमिर्च, रिफाईंड तेल, अलसी, घी, आदि में तेज़ी होगी। अष्टमी (३ नव.) को शुक्र-राहु के मध्य अंशात्मक युति रूई, कपास, सोना, चाँदी, ताम्बा व पीतल के भावों में विशेष तेज़ी कारक होगी। दशमी से सूर्य विशाखा में आकर सर्व प्रकार तैल (अरण्डी, मूंगफली, सूरजमुखी, अलसी, सरसों आदि), चावल, जौ, शक्कर, लकड़ी, कोयला तथा चाँदी, सुवर्ण, ताम्बा, लौहादि धातुएँ तेज भाव होंगी। आकाश लक्षण—इस पक्ष में मौसम प्रायः अनिश्चित रहेगा। शकुन—त्रयोदशी को हस्त नक्षत्र के योग में बुधा चांदी होना सुभिक्ष के संकेत हैं। [illegible]

वि. संवत् २०५३, कार्तिक शुक्ल पक्ष, [illegible] सन् ई. १९९६ (१२ नवं. से २५ नवं. तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

वि. संवत् २०५३, कार्तिक शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई. १९९६ (१२ नवं. से २५ नवं. तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	कार्तिक	जमादि	नवं	कार्तिक	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	धृति ५५ ।१८ (क्षय) (१४ नवं) सिद्ध ५८ ।३५ (क्षय) (२१ नवं) — सूर्य दक्षिणायने हेमंत ऋतुः —दक्षिण गोलार्ध	नि. रा.	सू. अ	स्प क	इ वि	सू घ	उ. मि	सू घ	अ मि
२६ ।२५	१	मंग	३	५०	८	२६	अनु	४०	२३	शो	१४	४८	ब	३	५०	२१	२९	१२	२८	वृश्चिके	भ्रातृ दूज (भाई दूज), यम द्वितीया, चंद्रदर्शनं, चित्रा १ शुक्रः ३२ ।१७ A	६	२६	०७	३६	६	५४	५	२८
अवम	२	मंग	५९	२५	३०	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया तिथि का क्षय A पूफा १ भौमः ५ ।२७, अनु १ बुध ४७ ।३५	०	०	०	०	०	०	०	०
२६ ।२३	३	बुध	५४	२०	२८	३१	ज्ये	३७	१३	अ	८	१५	तै	२६	५३	२२	रज	१३	२९	ध ३७ ।१३	गंड मूलादि विचार, १ रज्जब (मुस्लिम)	६	२७	०८	०१	६	५५	५	२८
२६ ।१८	४	गुरु	४८	४०	२६	२४	मूला	३३	३०	सु	१	१३	व	२१	३०	२३	२	१४	३०	धनु	भद्रा २१ ।३० से ४८ ।४० तक, गं. मू. रात्रि ८ ।२० तक	६	२८	०८	२८	६	५६	५	२७
२६ ।१३	५	शुक्र	४२	५५	२४	०८	पूषा	२९	३०	शु	४६	४८	ब	१५	४८	२४	३	१५	मार्ग	म ४३ ।३१	सूर्य वृश्चिक में ५० ।३५, मार्ग. संक्रां. ४५ मुहू. पुण्य संक्रां अगले दिन प्रातः	६	२९	०८	५६	६	५८	५	२७
२६ ।०८	६	शनि	३७	१५	२१	५३	उषा	२५	३५	गं	३१	२०	कौ	१०	०५	२५	४	१६	२	मकरे	सूर्य षष्ठी, कार्तिकेय पूजा	७	००	०९	२१	६	५९	५	२६
२६ ।०३	७	रवि	३१	५०	१९	४८	श्रव	२१	४८	वृ	३१	५३	ग	४	३३	२६	५	१७	३	कुं. ५० ।०७	भ. ३१ ।५० से ५९ ।१५ तक, पंचक शुरू ५० ।०७, शुक्र तुला में ५८ ।३७	७	०१	१०	०२	७	००	५	२५
२६ ।००	८	चंद्र	२६	४०	१७	४१	धनि	१८	२५	ध्रु	२४	४०	ब	२६	४०	२७	६	१८	४	कुंभे	गोपाष्टमी G व्रतादि समा, सायन सूर्य धनु में ५६ ।२७	७	०२	१०	३५	७	०१	५	२५
२५ ।५६	९	मंग	२१	५५	१५	४८	शत	१५	२३	व्या	१८	०८	कौ	२१	५५	२८	७	१९	५	मी ५८ ।२४	अनु १ सूर्यः ८ ।१५, अक्षया नवमी, कुष्मांड ९	७	०३	११	१०	७	०२	५	२४
२५ ।५३	१०	बुध	१७	५०	१४	११	पूभा	१२	४५	हर्ष	११	००	ग	१७	५०	२९	८	२०	६	मीने	भद्रा ४५ ।५४ से शुरू B भीष्म पंचक शुरू, तुलसी विवाह चातुर्मास्य G	७	०४	११	४५	७	०३	५	२४
२५ ।५१	११	गुरु	१३	५८	१२	३८	उभा	१०	४८	व	४	३०	वि	१३	५८	३०	९	२१	७	मीने	भद्रा १३ ।५८ तक, ज्ये (१) बुधः २५ ।२८, देव प्रबोधिनी एका. व्रत, B	७	०५	१२	२०	७	०३	५	२४
२५ ।४८	१२	शुक्र	११	००	११	२८	रेव	९	२०	व्य	५३	२३	बा	११	००	मा	१०	२२	८	मेषे ९ ।२०	पंचक समा. ०९ ।२० प्रदोष व्रत, स. सि. यो. गंडमूलादि	७	०६	१२	५८	७	०४	५	२३
२५ ।४५	१३	शनि	८	४३	१०	३४	अश्वि	८	३०	व	४८	४०	तै	८	४३	२	११	२३	९	मेषे	स्वाती १ शुक्रः २२ ।४७, बैकुण्ठ चौदश, सत्य साईं बाबा जयंती	७	०७	१३	३८	७	०५	५	२३
२५ ।४३	१४	रवि	६	५०	९	५०	भर	८	२५	परि	४४	२५	व	६	५०	३	१२	२४	१०	वृ २३ ।४०	भद्रा ६ ।५० से ३६ ।३८ तक, व्रत पूर्णमाशी	७	०८	१४	२०	७	०६	५	२३
२५ ।४०	१५	चंद्र	६	२५	९	४१	कृति	९	२५	शि	४१	३०	ब	६	२५	४	१३	२५	११	वृषे	कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरू नानक जयंती, भीष्म पंचक समा, स. सि. N	७	०९	१५	०४	७	०७	५	२३

चंद्रे पूर्णिमायां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३० बजे, २५ नवं N योग पूषा (४) गुरुः बुधोदय पश्चि. ६ ।४८, मेला पुष्कर राज व मे. रामतीर्थः कार्तिक स्नान सम्पूर्ति

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे, १८ नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	४	७	८	५	११	५	११
०२	०१	१६	११	२१	२९	०७	११	११
०६	२९	१२	१९	५८	५७	००	३४	३४
४८	३५	१७	२५	०१	०९	२३	४१	४१
६० ३२	८८४ १	३१ १४	९२ ०२	११ १०	७४ १	० ५७	३ १०	३ १०
वि	धनि	पूफा	अनु	पूषा	चित्रा	उभा	हस्त	उभा
४	३	१	३	३	२	३	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १८ नवं.

९ गु. | ८ सू. बु. | ७ शु. | ६ रा. | १० | ११ चं. | ५ मं. | १२ के. श. | १ | २ | ३ | ४

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	४	७	८	६	११	५	११
०९	०७	१९	२२	२३	०८	०६	११	११
१०	०५	४४	००	१८	३५	५०	१२	१२
५९	२७	२६	२९	४९	४३	५८	३५	३५
३० ४२	७७६ ७	३९ ४१	९० ०६	११ ५५	७३ ५८	० ४५	३ ११	३ ११
अनु	कृति	पूफा	ज्ये	पूषा	स्वा	शत	हस्त	उभा
३	४	२	२	३	१	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २५ नवं.

९ गु. | ८ सू. बु. | ७ शु. | ६ रा. | १० | ११ | ५ मं. | १२ के. श. | १ | २ चं. | ३ | ४

कार्तिक शुक्ल पक्षफल

कार्तिक शु. द्वितीया को भाई दूज के दिन भाई-बहन नदी आदि तीर्थ पर स्नान करके यम पूजनोपरान्त बहिन अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे तिलक लगाकर चावल, खिचड़ी आदि विविध पकवानों सहित भोजन करवाती है। फिर भाई अपनी बहिन को वस्त्राभूषणादि उपहार प्रदान करता है। हरिप्रबोधिनी एकादशी को श्रीविष्णु पूजा तुलसी विवाहादि पर्व मनाया जाता है। इसी दिन संन्यासियों के चातुर्मास्यादि व्रत नियमों आदि की समाप्ति तथा भीष्मपंचक व्रतादि का प्रारम्भ होकर कार्तिक पूर्णिमा को सम्पूर्ति होगी।

व्यापारिक भविष्य—प्रतिपदा को मंगल पूफा नक्षत्र एवं शुक्र चित्रा में आने से तिल, तैल, सरसों, अलसी, सोयाबीन, अरण्डी, मूंगफली, चाँदी व सोने में तेज़ी का वातावरण रहेगा। पंचमी तिथि (१५ नव) शुक्रवार को **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** ४५ मुहूर्ति है। रूई, कपास, सन-सूत, चाँदी, ताम्बा व ऊनी वस्त्रों, गर्म मसाला, मेवाजात, उड़द, मूंगफली व सर्व प्रकार के तैलादि, पशुधारा व चौपाय तेज भाव होंगे। **राशिफल** यह संक्रांति मेष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व कुंभ राशि को लाभप्रद रहेगी। कार्तिक मास में पांच रविवार एवं पांच सोमवार पड़ने का फल मध्यम होगा। देश में कहीं उपद्रव, छत्र भंग (राज्य परिवर्तन) व राजनीतिक परिवर्तन के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—पूर्वार्द्ध भाग में कहीं बादल चाल व खण्डवर्षा होने के योग हैं।

विवाह मुहूर्त—१२ नव, (अनु.), १३ नवं (मूले), १६ नवं (उषा), १६, १७ नवं (श्रवणे), १७, १८ नवं (धनिष्ठा)

वि० संवत् २०५३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (२६ नवं. से १० दिसं० तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त, जालंधर

दि मा घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	ज्येष्ठा नक्षत्र (क्षय) ५८ ।१० (१० दिसंबर को) — सूर्य दक्षिणायने, हेमन्त ऋतुः दक्षिण गोलार्धे
२५ ।३८	१	मंग	७	००	९	५६	रोहि	११	२५	सि	३९	५८	कौ	७	००	५	१४	२६	१२	मि ४३ ।०३	मार्गशीर्ष प्रतिपदा
२५ ।३३	२	बुध	८	४५	१०	३९	मृग	१४	४०	सा	३९	१०	ग	८	४५	८	१५	२७	१३	मिथुने	भद्रा ४० ।२३ से शुरू, स० सि. योग :
२५ ।३०	३	बृह	१२	००	११	५८	आर्द्रा	१९	२०	शु	३९	१३	वि	१२	००	७	१६	२८	१४	मिथुने	भद्रा १२ ।०० तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, स. सि. यो. १४ ।५४ से प्रा.
२५ ।२९	४	शुक्र	१६	३८	१३	४९	पुनं	२५	३५	शु	४१	००	बा	१६	३८	८	१७	२९	१५	क ९ ।०१	स. सि. योगः १७ ।२४ (घं. मि.) तक
२५ ।२८	५	शनि	२२	२०	१६	०७	पुष्य	३२	३०	ब्रह्म	४२	५०	तै	२२	२०	१०	१८	३०	१६	कर्के	मूले(१) बुध धनु में १६ ।३०
२५ ।२६	६	रवि	२८	४८	१८	४३	श्ले.	३९	५८	ऐं	४५	०३	व	२८	४८	११	१९	दि.	१७	सिं ३९ ।५८	भद्रा २८ ।४८ से शुरु, गंडमूलादि विचार
२५ ।२५	७	चंद्र	३५	२५	२१	२३	मघा	४७	३३	वै	४७	०५	वि	२	०७	१२	२०	२	१८	सिंहे	भद्रा २ ।०७ तक, ज्ये. (१) सूर्यः १८ ।५८, गं. मू. २६-१४ तक
२५ ।२३	८	मंग	४१	३५	२३	५१	पूफा	५४	३८	वि	४८	४५	बा	८	३०	१३	२१	३	१९	सिंहे	शनि मार्गी ३ ।५०, महाकाल भैरवाष्टमी
२५ ।२२	९	बुध	४६	३३	२५	५१	उफा	६०	००	प्री	४९	३८	तै	१४	०४	१४	२२	४	२०	क ११ ।०५	विशाखा(१) शुक्रः ११ ।०८
२५ ।२०	१०	बृह	४९	५५	२७	१३	उफा	०	२५	आ	४९	३०	व	१८	१४	१५	२३	५	२१	कन्यायां	भद्रा १८ ।१४ से ४९ ।५५ तक
२५ ।१८	११	शुक्र	५१	२०	२७	४८	हस्त	४	४५	सौ	४८	०३	ब	२०	३८	१६	२४	६	२२	तु ३५ ।५३	उत्पन्ना एकादशी व्रत B मेला पुरमण्डल देविका स्नान ,स. सि.योग.
२५ ।१५	१२	शनि	५०	४०	२७	३२	चित्रा	७	००	शो	४५	०५	कौ	२१	००	१७	२५	७	२३	तुलायां	स. सि. योगः प्रातः १० ।०४ बजे से प्रारंभ
२५ ।१४	१३	शनि	४८	०३	२६	३०	स्वा	७	१५	अति	४०	१८	ग	१९	२२	१८	२६	८	२४	वृ ५१ ।०६	भद्रा ४८ ।०३ से शुरू, प्रदोष व्रत
२५ ।१३	१३	रवि	४८	०३	२६	३०	स्वा	७	१५	अति	४०	१८	ग	१९	२२	१८	२६	८	२४	वृश्चिके	भद्रा १५ ।५२ तक, उफा (१) भौमः ३९ ।१०, पूषायां बुध ३७ ।१३ B
२५ ।१०	१४	चंद्र	४३	४०	२४	१६	वि.	५	४३	सु	३४	१८	वि	१५	५२	१८	२७	९	२५	वृश्चिके	भौमवासरी अमा० स्नानदानादि, उषा (१) गुरु ५९ ।५०, गंडमूलादि
२५ ।०९	१५	मंग	३७	५०	२२	२७	अनु.	२	३३	धृ	२७	२०	च	१०	४५	१९	२८	१०	२६	धृ ५८ ।१०	

नि. रा	सू. अं	स्प. क.	वि	सू. उ. घ	मि	सू. अ. घ	मि
७	१०	१५	४९	७	०८	५	२३
७	११	१६	३५	७	०९	५	२२
७	१२	१७	२३	७	१०	५	२२
७	१३	१८	११	७	१०	५	२२
७	१४	१९	००	७	११	५	२२
७	१५	१९	५२	७	१२	५	२२
७	१६	२०	४४	७	१३	५	२२
७	१७	२१	३६	७	१३	५	२२
७	१८	२२	३१	७	१४	५	२२
७	१९	२३	२६	७	१५	५	२२
७	२०	२४	२०	७	१६	५	२२
७	२१	२५	२८	७	१६	५	२२
७	२२	२६	२६	७	१७	५	२२
७	२३	२७	१६	७	१८	५	२२
७	२४	२८	१७	७	१९	५	२२

भौमे अष्टम्या ग्रह स्प. प्रातः ५/३० बजे, ३ दिसं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	४	८	८	६	११	५	११
१७	१४	२३	०३	२४	१८	०६	१०	१०
१७	५८	३५	५८	५६	२९	४७	४६	४६
१५	०९	१५	३६	३१	१७	२७	५८	५८
६० ५२	७०९ ५४	२८ २२	८३ ५२	१२ ३३	० ०४	० ०४	३ ११	३ ११
ज्ये.	पूफ	पूफ	मूल	पूषा	स्वा	उभा	हस्त	उभा
१	१	४	२	४	४	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ.	उ	उ	उ	उ०	उ०	अ.	अ

कु. अष्टमी सू. उ. ३ दिसं.

गु. ९ बु.
७ शु.
१०
८ सू.
६ रा.
११
५ चं. मं.
के. १२ श.
२
४
१
३

भौमे अमावस्या ग्रह स्प. प्रातः ५/३० बजे, १० दिसं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.	रा	के
७	७	४	८	८	६	११	५	११
२४	१५	२६	१३	२६	२७	०६	१०	१०
२३	००	४७	४४	२६	११	५०	२४	२४
४०	०५	२१	२५	०२	१०	१५	४२	४२
६० ५९	८६१ ४	२७ २०	७७ ५३	१३ ०१	७४ ३७	० ३३	३ ११	३ ११
ज्ये.	अनु	उफा	पूषा	पूषा	विश	उभा	हस्त	उभा
३	४	१	१	४	३	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ.	अ.

कु. अमावस सू. उ. १० दिसं.

बु. ९ गु.
७ शु.
१०
८ सू. चं.
६ रा.
११
५ मं.
के. १२ श.
२
४
१
३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल

इस पक्ष की अष्टमी को शिव मन्दिर में जाकर श्री महाकाल भैरव के रूप में भगवान् शंकर की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष महात्म्य कहा गया है। चतुर्दशी व अमावस्या को जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है।

व्यापारिक एवं सामान्य भविष्य—पंचमी (३० नवं.) को बुध धनु में आने से चांदी, रुई, कपास, में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी होगी। सप्तमी (२ दिसं.) को सूर्य ज्येष्ठा में जाने से चावल, रुई, गुड़, चीनी, काली मिर्च व माल पंसारी के मूल्यों में तेज़ी बनी रहेगी। ३ दिस. को शनि मार्गी होने से तिल, रिफाईंड तेल, सरसों, घी, गुड़ में पुनः तेज़ी का रुख बनेगा। ९ दिसं. तक थोक मार्कीट की स्थिति डावांडोल व संदिग्ध रहेगी। ता. १० को भौमवासरी अमावस के बाद करियाना मार्कीट में तेज़ी पैदा होगी। इस मास में पाँच मंगलवार होना अशुभ है। यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वीछत्रभंगस्तदा भवेत्॥ अर्थात् शासक (सत्ताधारी पार्टी) वर्ग को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़े, दंगें-उपद्रव, हिंसा का वारदातें अधिक होंगी। अनाज जैसे गेहूँ, चावल, चने तथा सोना, चांदी आदि महंगे होंगे।

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत में मौसम प्रायः शुष्क रहेगा। शकुन—एकादशी तिथि हस्त नक्षत्र के योग में यदि बादल चाल रहे तो सुभिक्ष के संकेत है।

विवाह मुहूर्त—नवं. २६, २७ (मृगे), दिसं १-२ (मघा), ३-४ (उफा), ६-७ (चित्रा), ७ दिस. (स्वा)

वि. संवत् २०५३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, [illegible] (११ दिसं. से २४ दिसं० तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

वि. संवत् २०५३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९६ (११ दिसं. से २४ दिसं० तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	मार्ग. प्र.	रज्जब	दिसंबर	मार्गं.	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
२५ ।०८	१	बुध	३१	०५	१९	४६	मूला	५२	५८	शुल	१८	०३	किं	४	२८	२०	२९	११	२७	धनुषि
२५ ।०६	२	बृह	२४	००	१६	५७	पूषा	४७	२०	गं	९	२५	कौ	२४	००	२१	३०	१२	२८	धनुषि
२५ ।०४	३	शुक्र	१६	२३	१३	५४	उषा	४१	४८	वृ	०	३०	ग	१६	२३	२२	शव	१३	२९	म ०० ।५७
२५ ।०३	४	शनि	९	०३	१०	५९	श्रव	३६	३३	व्या	४२	४३	वि	९	०३	२३	२	१४	३०	मकरे
२५ ।०३	५	रवि	२	१०	८	१५	धनि	३१	५८	हर्ष	३४	५०	बा	२	१०	२४	३	१५	पौष	कुं ४ ।१८
अवम	६	रवि	५६	१५	२९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०
२५ ।०३	७	चंद्र	५१	२०	२७	५५	शत	२८	१५	व	२७	१०	ग	२३	४८	२५	४	१६	२	कुंभे
२५ ।०२	८	मंग	४७	२०	२६	२०	पूभा	२५	३०	सि	२०	००	वि	१९	२०	२६	५	१७	३	मी ११ ।११
२५ ।०२	९	बुध	४४	२५	२५	१०	उभा	२३	४३	व्य	१३	३८	बा	१५	५३	२७	६	१८	४	मीने
२५ ।०१	१०	बृह	४२	२३	२४	२२	रेव	२२	५५	व	७	५०	तै	१३	२४	२८	७	१९	५	मे २२ ।५५
२५ ।००	११	शुक्र	४१	२८	२४	०१	अश्वि	२३	०८	परि	३	२३	व	११	५६	२९	८	२०	६	मेषे
२५ ।००	१२	शनि	४१	२३	२३	५९	भर	२५	००	शि	०	४३	ब	११	२६	३०	९	२१	७	वृ ४० ।०८
२५ ।०१	१३	रवि	४२	१०	२४	१९	कृति	२५	३३	सा	५३	२५	कौ	११	४७	पौष	१०	२२	८	वृषे
२५ ।०१	१४	चंद्र	४४	०३	२५	०४	रोहि	३०	००	शु	५२	५०	ग	१३	०७	२	११	२३	९	वृषे
२५ ।०२	१५	मंग	४६	५५	२६	१३	मृग	३३	१३	शुभ	५२	०३	वि	१५	२९	३	१२	२४	१०	मि १ ।३६

ध्रुव ५२ ।२० (क्षय) (१३ दिसं) सूर्य दक्षिणायने,—उत्तर हेमंतऋतुः
सिद्ध ५२ ।२८ (क्षय) (२१ दिसं) —दक्षिण गोलार्धे

- मार्गशीर्ष प्रतिपदा, गंडमूलादि २८ ।३१ घं. मि. तक
- वृश्चिके शुक्रः ११ ।१५, चन्द्र दर्शनम्
- भद्रा ४२ ।४३ से शुरू, १ शव्वान (मुस्लिम)
- भद्रा ९ ।०३ पर समा, अनु. १ शुक्रः ५१ ।०३, स. सि. यो.
- मूले (१) सूर्य धनु में २६ ।०३ पौष संक्रां ३० मुहूर्ति. पंचक प्रारंभ D
- षष्ठी तिथि का क्षय. ० ० ० D ४ ।१८, पुण्य सं. २० ।०३ उप.
- भद्रा ५६ ।१५ से शुरू, मित्र सप्तमी
- भद्रा १९ ।२० तक, मंगल कन्या में २४ ।१०, उफा ४ राहुः उभा २ केतुः S
- गं. मू. सायं १६ ।५३ उप. (स्टै. टाईम) S ३८ ।४३, श्री दुर्गा ८
- पंचक समाप्त २२ ।५५, स. सि. योगः सायं ४ ।३५ बजे से प्रारम्भः
- भद्रा ११ ।५६ से ४१ ।२८ तक, मोक्षदा एका. व्रत, गीता जंयती, स. सि. यो.
- अखण्ड द्वादशी, सायन सूर्य मकर २९ ।५३, सूर्योत्तरायणे, शिशिरऋतु प्रारंभ
- A अन्नपूर्णा जयंती
- भद्रा ४४ ।०३ से शुरू, पिशाच मोचन श्राद्ध, स. सि. योग
- भद्रा १५ ।२९ तक, मार्गी पूर्णिमा, बुध वक्री, श्री दत्तात्रेय जयंती A

नि. रा.	सू. अं.	स्प. क.	प्र. वि.	सू. घ.	उ. मि.	सू. घ.	अ. मि.
७	२५	२९	१६	७	२०	५	३३
७	२६	३०	१८	७	२१	५	३३
७	२७	३१	२१	७	२१	५	३३
७	२८	३२	२५	७	२२	५	३३
७	२९	३३	३१	७	२३	५	३४
०	०	०	०	०	०	०	०
८	००	३४	३६	७	२३	५	२४
८	०१	३५	४३	७	२४	५	२४
८	०२	३६	४८	७	२४	५	२५
८	०३	३७	५७	७	२५	५	२६
८	०४	३९	०३	७	२६	५	२६
८	०५	४०	०९	७	२६	५	२६
८	०६	४१	१७	७	२७	५	२७
८	०७	४२	२३	७	२७	५	२७
८	०८	४३	३३	७	२७	५	२८

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, १७ दिसं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	४	८	८	७	११	५	११
०१	२६	२९	२१	२७	०५	०६	१०	१०
३०	३३	४८	५१	५८	५४	५७	०२	०२
५४	१५	३७	२९	१२	५०	५४	२६	२६
६१ ०५	८४१ ३	२४ २०	५३ ४	१३ २१	७४ ३३	१ ४५	१ ११	३ ११
मू १	पूभ २	उफ १	पूषा ३	उषा १	अनु १	शत १	हस्त १	उभा ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १७ दिस.

१० | ८ शु. | ९ गु. सू. बु. | ७ | ११ चं. | के. १२ श. | ६ रा. | ५ मं. | १ | ३ | २ | ४

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, २४ दिसं.

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	५	८	८	७	११	५	११
०८	२८	०३	२५	२९	१४	०७	०९	०९
३८	४६	३४	२५	३१	३९	११	४०	४०
३६	१७	२३	५१	५९	२२	०३	१०	१०
६१ ०७	७८३ ११	२२ ०९	८ १	१३ ३५	७३ ५७	२ २०	३ ११	३ ११
मूल ३	मृगे ३	उफा २	पूषा ४	उषा १	अनु ४	उभा २	उफा ४	उभा २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २४ दिस.

१० | शु. ८ | गु. ९ सू. बु. | ७ | ११ | के. १२ श. | रा. ६ मं. | ५ | १ | ३ | २ चं. | ४

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल

इस पक्ष में मोक्षदा एकादशी का विधिपूर्वक व्रत रखने से तथा विष्णु निमित्त दान पूजनादि करने से अनेक पाप कर्मों की निवृत्ति एवं मोक्षादि पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन गीता जयंती को श्री मद्भगवतगीता का पूजन, स्वाध्याय एवं शोभायात्रा करने का विशेष महात्म्य है। मार्गपूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंश-अवतार भगवान् दत्तात्रेय की बालरूप की पूजा की जाती है।

व्यापारिक एवं सामान्य भविष्य—द्वितीया (ता. १२) को वृश्चिक के शुक्र में आने से रुई, शक्कर, चांदी, अनाज व तिलों के भावों में कमी बेशी होगी। पंचमी (ता. १५) को धनु संक्रान्ति रविवार को पड़ने से तिल, तैल, सरसों, अलसी, गन्ना, गुड़, चने, खल-बिनौले, सुवर्ण, ताम्बा आदि धातुओं में तेज़ी का वातावरण बनेगा। वृष, कर्क, सिंह, धनु, मीन राशि वालों के लिए यह संक्रान्ति लाभदायक एवं शुभकारी रहेगी। १७ दिस. को मंगल कन्या में तथा राहु उफा (४) में आने से गेहूँ, चने, घृत, गुड़, तेल रिफाईंड तथा अन्य खाद्य तेल अलसी, सोनादि लाल वर्ण की वस्तुएं तेज़ भाव होगी। २४ दिस. को बुध धनु में वक्री होने से खाण्ड, बिनौले, तिल, तैल, घी, गुड़, शक्कर में तेज़ी का रुख रहेगा। इस पक्ष में सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि होने से जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा, बिहार, म० प्र०, उ० प्र०, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में लूटपाट, अपहरण, हिंसा, बम-विस्फोट आदि दुर्घटनाएँ होगी। आकाश लक्षण—उतरी पश्चिमी भागों में कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

विवाह मुहूर्त—दिसं. ११ (मूले), दिसं. १२, १३ (उषायां)

वि. संवत् २०५३, पौष कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई० १९९६-९७ (२५ दिसं से ९ जनवरी ९७ तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालंधर

दि मा घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि.	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्र वि	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	(५ जनवरी को) शुल ५४ ।४५ (क्षय) योग — सूर्यत्तरायणे शिशिरऋतुः दक्षिण गोलार्ध	नि रा	सू अ	स्प क	ष्ट वि	सू घं	उ. मि	सू घं	अ मि
२५ ।०२	१	बुध	५०	५०	२७	४७	आर्द्रा	३८	०५	ब्र	५२	०५	बा	१८	५३	४	१३	२५	११	मिथुने	ज्येष्ठा (१) शुक्रः ३३ ।००, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चयन)	८	०९	४४	४०	७	२७	५	२८
२५ ।०३	२	बृह	५५	३८	२९	४३	पुन	४३	५८	ऐं	५४	१८	तै	२३	१४	५	१४	२६	१२	क २७ ।३०	सर्वार्थ सिद्ध योगः सूर्य उ. से. मेला जोड़ प्रारंभ	८	१०	४५	५०	७	२८	५	२९
२५ ।०३	३	शुक्र	६०	००	पूरा	दिन	पुष्य	५०	४३	वै	५५	५८	व	२८	३२	६	१५	२७	१३	कर्के	भद्रा २८ ।३२ से शुरू, बुधास्त पश्चिम ३८ ।२८ मकरे गुरूः १ ।१५	८	११	४६	५८	७	२८	५	२९
२५ ।०३	३	शनि	१	२५	८	०३	श्ले	५८	०५	वि	५८	३०	वि	१	२५	७	१६	२८	१४	सिं ५८ ।०५	भद्रा १ ।२५ तक, पूषा (१) सूर्यः ३१ ।१०, श्री गणेश चतु. व्रत, गंडमूलादि	८	१२	५८	०९	७	२९	५	३०
२५ ।०४	४	रवि	७	३०	१०	४१	मघा	६०	००	प्री	६०	००	बा	७	३०	८	१७	२९	१५	सिंहे	गंडमूलादि विचार	८	१३	४९	१७	७	२९	५	३१
२५ ।०५	५	चंद्र	१४	३८	१३	२२	मघा	५	५३	प्री	०	४५	तै	१४	३८	९	१८	३०	१६	सिंहे	गंडमूलादि प्रातः ९ ।५० तक	८	१४	५०	२६	७	२९	५	३१
२५ ।०६	६	मंग	२१	२५	१६	०४	पूफा	१३	३३	आ	२	५८	व	२१	२५	१०	१९	३१	१७	कं ३० ।१७	भद्रा २१ ।२५ से ५४ ।२२ तक, सन ई० १९९६ सम्पूर्ण	८	१५	५१	३८	७	३०	५	३२
२५ ।०७	७	बुध	२७	१८	१८	२५	उफा	२०	३०	सौ	४	३५	ब	२७	१८	११	२०	जन	१८	कन्यायां	१ जनवरी, १९९७ ई० प्रारम्भ	८	१६	५२	४७	७	३०	५	३३
२५ ।०८	८	बृह	३१	३३	२०	०७	हस्त	२६	१०	शो	५	१०	कौ	३१	३३	१२	२१	२	१९	तु ५७ ।५५	पूषायां १ बुधः ५१ ।०५, रुक्मणी अष्टमी, कालाष्टमी	८	१७	५३	५६	७	३०	५	३३
२५ ।०९	९	शुक्र	३३	५३	२१	०४	चित्रा	२९	४०	अति	४	४८	तै	२	४३	१३	२२	३	२०	तुलायां		८	१८	५५	०८	७	३१	५	३४
२५ ।१०	१०	शनि	३४	०३	२१	०८	स्वा.	३१	२५	सु	२	५८	व	३	५८	१४	२३	४	२१	तुलायां	भद्रा ३ ।५८ से ३४ ।०३ तक, स. सि. यो., श्री पार्श्वनाथ जंयती	८	१९	५६	१७	७	३१	५	३५
२५ ।१३	११	रवि	३२	०३	२०	२०	विशा	३१	०३	धृ	०	१०	ब	३	०३	१५	२४	५	२२	वृ १६ ।०८	मूले (१) धनुषि शुक्रः १२ ।३३, सफला एका. व्रत, गुरुवार्षक्यारंभ	८	२०	५७	२६	७	३१	५	३६
२५ ।१५	१२	चंद्र	२७	५५	१८	४१	अनु	२८	३५	गं	४७	४५	तै	२७	५५	१६	२५	६	२३	वृश्चिके	सर्वार्थ सिद्ध योगः श्री बोधायनाचार्य जयंती — गुरू अस्त ८ जनवरी	८	२१	५८	३५	७	३१	५	३७
२५ ।१८	१३	मंग	२१	५८	१६	१८	ज्ये	२४	२५	वृ	३९	४५	व	२१	५८	१७	२६	७	२४	ध २४ ।२५	भद्रा २१ ।५८ से ४८ ।२१ तक, पूर्वोदय बुध २५ ।४३, गं. मू.	८	२२	५९	४४	७	३१	५	३८
२५ ।१९	१४	बुध	१४	४३	१३	२४	मूला	१८	५५	ध्रु	३०	१३	श	१४	४३	१८	२७	८	२५	धनुषि	गंडमूलादि १५ ।५ तक, गुर्वस्तं पश्चिमे	८	२४	००	५२	७	३१	५	३८
२५ ।२०	३०	बृह	६	१०	९	५९	पूषा	१२	२३	व्या	२०	२०	ना	६	१०	१९	२८	९	२६	म २५ ।३७	पौष अमावस स्नान दानादौ, उषा (३) गुरू २५ ।१५	८	२५	०२	००	७	३१	५	३९

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, २ जनवरी.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	५	८	९	७	११	५	११
१७	१६	०५	१७	०१	२५	०७	०९	०९
४८	५८	४४	५६	३४	५३	३३	११	११
५१	२६	१७	३७	१३	०८	५३	३२	३२
६१ ०१	७४८ ५१	६१ ०६	८१ ५८	१३ ५३	७५ १४	३ १६	३ ११	३ ११
पूषा	हस्त	उफा	पूषा	उषा	ज्ये	उभा	उफा	उभा
२	३	३	२	२	३	२	४	२
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २ जनवरी

९ सू. बु.
१० गु.
८ शु.
११
७
१२ के. श.
६ मं. रा. चं.
१
३
५
२
४

गुरौ अमावस्यां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, ९ जनवरी.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	५	८	९	८	११	५	११
२४	२२	०७	१०	०३	०४	०७	०८	०८
५६	२०	५१	१७	१२	३८	५८	४९	४९
५२	२८	२८	३७	४९	१७	२६	१६	१६
६१ ०८	९०४ ४७	१७ ०४	३१ १८	१४ १४	७५ १६	३ ३१	३ ११	३ ११
पूषा	पूषा	उफा	मूला	उषा	मूला	उभा	उफा	उभा
४	३	४	४	२	२	२	४	२
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. ९ जनवरी

९ शु. सू. चं. बु.
१० गु.
८
११
७
१२ के. श.
६ रा. मं.
१
३
५
२
४

पौष कृष्ण पक्षफल

२५ दिसम्बर को क्रिसमिस का पर्व सारे विश्व में बड़े उत्त्लास के साथ मनाया जाता है। पौष मास में ईधन, गर्म वस्त्र, मौसमी फलों का दान करने का विशेष महात्मय होता है। सफला एकादशी का व्रत विधिपूर्वक करने से दुर्बुद्धि, पाप तथा सर्व प्रकार के पापों का विनाश होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा करने के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा आदि का दान करने का विशेष माहात्मय होता है।

व्यापारिक भविष्य—प्रतिपदा को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से रुई, कपास, ज्वार, बाजरा, मक्की, सोना व चांदी के भावों में घटाबढ़ी होगी। परन्तु तृतीया से गुरू मकर में आने से रुई व चांदी में तेज़ी कारक होगी। गेहूं, चने, चावलादि सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। चतुर्थी को सूर्य पूषा नक्षत्र में आने से गेहूं, गुड़, खाण्ड, चने, चीनी, तिल, तैल, खल बिनौले, चावल, हल्दी, लकड़ी, ऊनी धागे, मेवाजात व चाँदी तेज़ भाव रहेंगे। एकादशी (५ जन) से शुक्र धनु राशि में प्रविष्ट होने से गेहूँ, जौ, चने, धान्यादि अनाजों में तेज़ी होगी। सोना, ताम्बा चांदी आदि वस्तुएं भी तेज़ होंगी। गुरु-शुक्र का योग होने से असमय पर वर्षा, कृषि की हानि एवं कहीं युद्ध का वातावरण बनें। कश्मीर आदि पश्चिमोत्तर भागों में उपद्रव व विस्फोटों से जन व धन हानि हो। कहीं पेयजल की कमी रहे। आकाश लक्षण—देश के उत्तरी पश्चिमी भागों में शीत का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं ओलावृष्टि के कारण कृषि को हानि होगी।

विवाह मुहूर्त—इस पक्ष में विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

वि. संवत् २०५३, पौष शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९७ (१० जनवरी से २३ जनवरी तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

सूर्योत्तरायणे शिशिरऋतु | नि | सू | स्प | ष्ट | सू | उ | सू | अ

वि. संवत् २०५३, पौष शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९७ (१० जनवरी से २३ जनवरी तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि मा घड़ी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	राष्ट्रीय	मुस्लिम	जनवरी	प्रविष्टे	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	श्रवण (क्षय) ५८ ।१० (१० जन) सिद्ध (क्षय) ५३ ।३५ (११ जन) — सूर्योत्तरायणे शिशिरऋतु —दक्षिण गोलार्धे
अवम	१	बृह	५७	१५	३०	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा तिथि का क्षय
२५ ।२३	२	शुक्र	४८	२३	२६	५२	उषा	५	१८	हर्ष	९	०८	बा	२५	४१	२०	२२	१०	२७	मकरे	उषा (१) सूर्यः ३६ ।०८, स. सि. योगः चंद्र दर्शनम्
२५ ।२५	३	शनि	३९	५५	२३	२९	धनि	५१	४५	व	०	१५	तै	१४	०९	२१	रम	११	२८	कुंभ २४ ।५८	पंचकारम्भः २४ ।५८, रमज़ान १ (मुस्लिम)
२५ ।२६	४	रवि	३२	०५	२०	२१	शत	४६	०८	व्य	४०	०२	व	६	००	२२	२	१२	२९	कुंभे	भद्रा ६ ।०० से ३२ ।०५ तक, त्यौ. लोहड़ी उत्सव (दिल्ली, पंजाब, हि. प्र.)
२५ ।२८	५	चंद्र	२५	२८	१७	४२	पूभा	४१	४०	वर	३१	५५	बा	२५	२८	२३	३	१३	मा	मी २७ ।४७	मकरे सूर्यः ५२ ।२८ माघ संक्रा ४५ मुहूर्ति, बुध मार्गी, पुण्य संक्रान्ति C
२५ ।३३	६	मंग	२०	१३	१५	३५	उभा	३८	३८	परि	२४	४३	तै	१०	१३	२४	४	१४	२	मीने	स. सि. योगः सू. उ. से — C अगले दिन मध्यान्ह से पूर्व
२५ ।३५	७	बुध	१६	२३	१४	०३	रेव	३६	४८	शि	१८	०३	व	१६	२३	२५	५	१५	३	मेषे ३६ ।४८	भद्रा १६ ।२३ से ४५ ।१७ तक, पंचक समा ३६ ।४८, गु. गोबिंद सिंह B
२५ ।३८	८	बृह	१४	१०	१३	१०	अश्वि	३६	३०	सि	१२	५८	व	१४	१०	२६	६	१६	४	मेषे	स. सि. योगः, गंडमूलादि — B जन्म दिन, पूषा(१) शुक्रः ५१ ।१ गं. मू.
२५ ।४०	९	शुक्र	१३	२०	१२	५०	भर	३७	५८	सा	९	३३	कौ	१३	२०	२७	७	१७	५	वृ ५३ ।३७	हस्ते (१) भौमः ४२ ।१३
२५ ।४५	१०	शनि	१४	००	१३	०५	कृति	४०	३५	शु	६	३५	ग	१४	००	२८	८	१८	६	वृषे	भद्रा ४४ ।५७ से शुरू
२५ ।५०	११	रवि	१५	५३	१३	५०	रोहि	४४	१३	शु	४	५५	वि	१५	५३	२९	९	१९	७	वृषे	भद्रा १५ ।५३ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, सायन सूर्य कुंभे में ५५ ।३३
२५ ।५३	१२	चंद्र	१८	४८	१५	००	मृग	४८	४८	ब्रह्म	४	३०	बा	१८	४८	३०	१०	२०	८	मि १६ ।३१	सोम प्रदोष व्रत, स. सि. योगः
२५ ।५५	१३	मंग	२२	३५	१६	३१	आर्द्रा	५४	२०	ऐं	४	४३	तै	२२	३५	मा	११	२१	९	मिथुने	पूषायां १ बुधः २२ ।१३, शक माघारम्भः
२५ ।५८	१४	बुध	२७	३३	१८	२९	पुन	६०	००	वै	५	२५	व	२७	३३	२	१२	२२	१०	क ४३ ।५७	भद्रा २७ ।३३ से शुरू
२६ ।००	१५	बृह	३३	०५	२०	४२	पुन	०	३०	विष	६	५८	वि	०	१९	३	१३	२३	११	कर्के	भद्रा ० ।१९ तक, पौष पूर्णिमा, माघ स्नान शुरू, श्रवणे (१) सूर्य ४२ ।०० F

F उषा (४) गुरू ३५ ।५३, स. सि. योगः, गुरू पुष्य योगश्च

नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	प्र. वि.	सू. घं.	उ. मि.	सू. घं.	अ. मि.
०	०	०	०	०	०	०	०
८	२६	०३	०८	७	३१	५	४०
८	२७	०४	१६	७	३१	५	४१
८	२८	०५	२४	७	३१	५	४१
८	२९	०६	३१	७	३१	५	४२
९	००	०७	३८	७	३०	५	४३
९	०१	०८	४५	७	३०	५	४४
९	०२	०९	५१	७	३०	५	४५
९	०३	१०	५७	७	३०	५	४६
९	०४	१२	०२	७	२९	५	४७
९	०५	१३	०६	७	२९	५	४९
९	०६	१४	०९	७	२९	५	५०
९	०७	१५	१३	७	२९	५	५१
९	०८	१६	१४	७	२८	५	५१
९	०९	१७	१५	७	२८	५	५२

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, १६ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	५	८	९	८	११	५	११
०२	०४	०९	०९	०४	१३	०८	०८	०८
०४	०७	३७	४७	५१	२४	२६	२७	२७
४६	१७	२१	३१	३१	४९	५७	००	००
६१ ०६	७१९ ०१	१३ ०८	२० ११	१४ ०६	७५ ८	४ १७	३ ११	३ ११
उषा	अ.	उफा	मू.	उषा	पूषा	उभा	उफा	उभा
२	२	४	३	३	१	२	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १६ जनवरी

११ | ९ बु. शु. | १० सू. गु. | के. १२ श. | ८ | १ चं. | ७ | २ | ४ | मं. ६ रा. | ३ | ५

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्प. प्रातः ५ ।३०, २३ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	५	८	९	८	११	५	११
०९	०२	१०	१४	०६	२२	०८	०८	०८
१२	१६	५६	४४	३०	१०	५८	०४	०४
१६	३४	४३	२९	२९	२३	२०	४४	४४
६१ ०२	७१७ ४	९ ०६	५८ ०३	१४ ०३	७५ ५	५ १२	३ ११	३ ११
उषा	पुन	हस्त	पूषा	उषा	पूषा	उभा	उफा	उभा
४	४	१	१	३	३	२	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २३ जनवरी

११ | शु. ९ बु. | १० सू. गु. | के. १२ श. | ८ | १ | ७ | २ | ४ चं. | रा. ६ मं. | ३ | ५

पौष शुक्ल पक्षफल

इस पक्ष में माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर में सर्वत्र लोहड़ी त्यौहार रात्रि को ईंधन जलाकर व अग्नि-पूजा करके मनाया जाता है। मकर-संक्रान्ति को तेल-अभ्यङ्ग करके स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन करना, तिल दान, तिल-पदार्थों का भोजन तथा विधिपूर्वक सूर्य भगवान् की पूजा की जाती है। इस दिन लोग खिचड़ी, तिल के लड्डुओं, घृत, नमक, क्षीर, फलादि पदार्थों का दान करते हैं। पौ. शु. सप्तमी को गु. गोबिन्द-सिंह जी का पुण्य जन्म दिन होता है। पुत्रदा एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करने से इच्छानुकूल पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा से माघ स्नान के महात्म्य का शुभारंभ हो जाता है।

व्यापारिक रुख—प्रतिपदा का क्षय हुआ है तथा द्वितीया को सूर्य उषा नक्षत्र में प्रविष्ट होने से गेहूँ, गुड़, चीनी, शक्कर, चना, चावल, उड़द, तिल, तेल, मूंग, चमड़ा, सरसों, अलसी, मोंठ, मसूर, खल बिनौले, पशुचारा, लोहा, सीसा, चाँदी तेज भाव होंगे। चतुर्थी (१३ जन.) को मंगल-राहु की अंशात्मक युति होने से कहीं अनावृष्टि हो तो कहीं हिमपात, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों जन, धन व फसलों को हानि पहुँचने का भय है— "राहुरंगारकश्चैक राशि नरक्षगतो तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते ॥" कहीं सत्ता परिवर्तन (छत्र भंग) के भी योग हैं। पंचमी (ता. १३ जन.) सोमवार को सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होने से घृत—तैल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, तिल, पशुचारा, चने व बारदाना में तेज़ी का रुख होगा। अष्टमी से मंगल हस्त में आकर गेहूं, चना, मटर, ज्वार, बाजरा, मक्की, रिफाईंड तेल व मूंगफली में तेज़ी करेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**—पौष शु. ५ को बूंदाबांदी होना अच्छी फसल के चिन्ह हैं।

विवाह मुहूर्त—गुर्वस्त होने के कारण पक्ष में विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

वि. सम्वत् २०५३, माघ कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई. १९९७ (२४ जनवरी से ७ फरवरी तक) सूर्योदयकालिक नित्य सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	मास प्र.	राष्ट्रीय	अंग्रेजी	मास प्र.	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	हर्ष योग (क्षय) ५२ ।५५ (४ फरवरी को) सूर्योत्तरायणे शिशिर ऋतुः दक्षिण गोलार्ध	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. त्रि	सू. घ	उ. मि	सू. घं	अ. मि
२६ ।०३	१	शुक्र	३९	१३	२३	०९	पुष्य	७	३०	प्री	८	३३	बा	६	०९	४	१४	२४	१२	कर्के	माघ कृष्ण प्रतिपदा, गंडमूल १०.२८ बजे उपरांत	९	१०	१८	१७	७	२८	५	५३
२६ ।०५	२	शनि	४५	५३	२५	४८	श्ले	१५	००	आ	१०	२५	तै	१२	३३	५	१५	२५	१३	सि १५ ।००	गंडमूलादि विचार	९	११	१९	१७	७	२७	५	५३
२६ ।०८	३	रवि	५२	३५	२८	२९	मघा	२२	४५	सौ	११	१५	व	१९	१४	६	१६	२६	१४	सिंहे	भद्रा १९ ।१४ से ५२ ।३५ तक, भारत गणतंत्र दिवस, उषा (१) शुक्रः A	९	१२	२०	१६	७	२७	५	५४
२६ ।१०	४	चंद्र	५९	१०	३१	०७	पूफा	३१	१५	शो	१३	४०	ब	२५	५३	७	१७	२७	१५	क ४७ ।५४	व्रत श्री गणेश संकट चतुर्थी च. उ. रात्रि लगभग ९ ।१६ पर	९	१३	२१	१५	७	२७	५	५५
२६ ।१५	५	मंग	६०	००	पूरा	दिन	उफा	३७	५०	अति	१७	४५	कौ	३२	१२	८	१८	२८	१६	कन्यायां	A ३० ।३८ गंडमूलादि	९	१४	२२	१२	७	२६	५	५६
२६ ।१८	५	बुध	५	१३	९	३१	हस्त	४४	२५	सु	१७	०८	तै	५	१३	९	१९	२९	१७	कन्यायां	शुक्र मकर राशि में १० ।३५, स सि. योगः	९	१५	२३	०७	७	२६	५	५७
२६ ।२०	६	बृह	१०	१५	११	३१	चित्रा	४९	४३	धृ	१८	३०	व	१०	१५	१०	२०	३०	१८	तु १७ ।०४	भद्रा १० ।१५ से ४१ ।५६ तक	९	१६	२४	०३	७	२५	५	५८
२६ ।२५	७	शुक्र	१३	३८	१२	५२	स्वा	५२	४८	शू	१८	००	ब	१३	३८	११	२१	३१	१९	तुलायां	रामानन्दाचार्य जयंती, अचला सप्तमी	९	१७	२४	५८	७	२५	५	५९
२६ ।३०	८	शनि	१४	४५	१३	१८	विशा	५४	३८	गं	१६	०८	कौ	१४	४५	१२	२२	फर	२०	वृ ३९ ।१०	१ फरवरी १९९७ प्रारम्भ — गुरू उदित ३ फरवरी	९	१८	२५	४९	७	२४	६	००
२६ ।३३	९	रवि	१४	२०	१३	०८	अनु	५४	००	वृ	१३	०५	ग	१४	२०	१३	२३	२	२१	वृश्चिके	भद्रा ४२ ।५१ से शुरू, उषायां १ बुधः १५ ।२३	९	१९	२६	४२	७	२४	६	०१
२६ ।३५	१०	चंद्र	११	२३	११	५६	ज्ये	५१	१८	ध्रु	७	३०	वि	११	२३	१४	२४	३	२२	ध ५१ ।१८	भद्रा ११ ।२३ तक, उभा (३) शनिः १९ ।४३, गंड मूलादि गुरोदय ३ ।११	९	२०	२७	३२	७	२३	६	०१
२६ ।३८	११	मंग	६	२८	९	५८	मूला	४६	४८	व्य	१	००	बा	६	२८	१५	२५	४	२३	धनुषि	बुध मकर में ४५ ।१५, षटतिला एकादशी व्रत, गंड मूलादि	९	२१	२८	२०	७	२३	६	०२
अवम	१२	मंग	५९	३८	३१	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वादशी तिथि का क्षय ० ० ० K गुरू बाल्यत्व समाप्त	०	०	०	०	०	०	०	०
२६ ।४३	१३	बुध	५१	३८	२८	०१	पूषा	४०	५०	व	४२	३३	ग	२५	३८	१६	२६	५	२४	म ५४ ।०६	भद्रा ५१ ।३८ से शुरू, धनि (१) सूर्यः ५० ।१३, मंगल वक्री २० ।२३ K	९	२२	२९	०७	७	२२	६	०३
२६ ।४८	१४	बृह	४२	३०	२४	१२	उषा	३३	५३	सि	३३	२३	वि	१७	०४	१७	२७	६	२५	मकरे	भद्रा १७ ।०४ तक, श्रवणे (१) गुरू ५० ।५७, श्रवणे शुक्रः ९ ।२८	९	२३	२९	५२	७	२१	६	०४
२६ ।५३	३०	शुक्र	३३	१८	२०	३९	श्रव	२७	१०	व्य	२२	२८	च	७	५४	१८	२८	७	२६	कु. ५३ ।०५	मौनी अमावस, स्नानदानादि, पंचक शुरू ५३ ।०५ स. सि. योगः	९	२४	३०	३७	७	२०	६	०५

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३०, १ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	५	८	९	९	११	५	११
१८	२०	११	२४	०८	०३	०९	०७	०७
२१	३१	५६	५६	३७	२७	४६	३५	३५
००	२८	१०	३७	१५	३०	२५	०६	०६
६० ५३	७७८ १	३ १०	७६ ५४	१३ ५६	७५ ३	६ :	३ ११	३ ११
श्रव	विश	हस	पूषा	उषा	उषा	उभा	उफा	उभा
३	१	१	४	४	३	२	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १ फरवरी

११ | १० सू. गु. शु | ९ बु. | के. १२ श. | ८ | १ | ७ चं. | २ | ४ | ६ मं. रा. | ३ | ५

शुक्रे अमावस्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० ७ फरवरी

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	९	५	९	९	९	११	५	११
२४	१५	१२	०२	१०	१०	१०	०७	०७
२६	२६	०५	५९	०१	५७	२१	१६	१६
००	२१	१८	२७	०२	३०	३०	०१	०१
६० ४६	११७ २	० ३५	८३ ५१	१३ ५१	७४ ५८	६ २३	३ ११	३ ११
धनि	श्रव	हस्त	उषा	श्रव	श्रव	उभा	उफा	उभा
१	२	१	२	१	१	३	४	२
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. ७ फर

११ | १० बु. सू. गु. चं. शु. | ९ | के. १२ श. | ८ | १ | ७ | २ | ४ | रा. ६ मं. | ३ | ५

माघ कृष्ण पक्षफल

सर्व प्रकार के अरिष्टों के निवारण हेतु श्री गणेश संकट चौथ का व्रत विधिपूर्वक रखना चाहिए। षटतिला एकादशी को तिल युक्त पंचामृत द्वारा भगवान् विष्णु को स्नान करवा कर विष्णु पूजन करें। तदुपरान्त तिल मिश्रित पदार्थों का भोग लगाकर, ब्रह्म भोजन के पश्चात् स्वयं ग्रहण करें। मौनी अमावस शुक्रवार एवं मकर राशि संयुक्त होने के कारण अत्यन्त पुण्य फलप्रदा होगी।

व्यापारिक रुख—मा. कृ. तृतीया को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, तिल, अलसी एवं सोना, चांदी, तांबा, अनाज एवं रुई के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेज़ी आएगी। पंचमी ति० (२१ जन.) से शुक्र मकर राशि में आने से रूई, सन-सूत, गेहूँ, चना, ज्वार-बाजरा, धान्यादि एवं खल बिनौले, अफीम, गुड़, चीनी, घृत, तैलादि स्निग्ध पदार्थ तेज़ भाव होंगे। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचाने का भय होगा—मकरे च यदा शुक्र सर्वधान्य विनाश कृत। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र किंचित् संशयः ॥ नवमी (२ फर.) से मकर राशि में गुरु का उदय होने से रूई व चांदी में तेज़ी होगी जबकि गेहूँ, धान्यादि की पैदावार अच्छी होगी। एका. (मंगलवार) को बुध मकर राशि में आने से सोना, चांदी, पीतल, ताम्बा, जिस्तादि धातुएँ तेज़ भाव होंगी। ता. ५ (फर०) त्रयोदशी से मंगल वक्री होने से अलसी, चाँदी, रूई, मूंग, छोटी इलायची, पटसन, ताम्बा पीतल—सोना आदि लाल रंग की वस्तुएं तेज़ भाव होगी ता. ६ को गुरू-शुक्र के मध्य अंशात्मक युति होने से राजनीतिक टकराव तथा सीमाओं पर सैनिक झड़पें होने के योग हैं। गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरं युद्धं तदा भवेत ॥ आकाश-लक्षण—इस पक्ष में जम्मु-कश्मीर, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा के उत्तरी क्षेत्रों में शीत लहर व खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०५३, माघ शुक्ल पक्ष, ... तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त, जालन्धर

वि. संवत् २०५३, माघ शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८ सन् ई० १९९७ (८ फरवरी से २२ फरवरी तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त, जालन्धर

दि.मा. घड़ी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	माघ	रमजान	फरवरी	माघ	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	रेवती ५६ ।२० (क्षय) ११ फरवरी, शिव ५१ ।३ (क्षय) ९ फरवरी — सूर्योत्तरायणे शिशिरऋतु दक्षिण गोलार्ध	नि. रा.	सू. अ	स्प. क	इष्ट वि	सू. घ	उ. मि	सू. घ	अ. मि.
२६ ।५८	१	शनि	२३	४८	१६	५०	धनि	१९	००	व	१०	०५	ब	२३	४८	१९	२९	८	२७	कुंभे	माघ शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्र दर्शनम्	९	२५	३१	२०	७	१९	६	०६
२७ ।०३	२	रवि	१४	४८	१३	१३	शत	११	५०	परि	०	४८	कौ	१४	४८	२०	शव	९	२८	मी ५२ ।०१	बाबा लाल जयंती, १ शव्वाल (मुस्लिम)	९	२६	३२	०५	७	१८	६	०७
२७ ।०५	३	चंद्र	६	३०	९	५४	पूभा	५	२५	सि	४१	०८	ग	६	३०	२१	२	१०	२९	मीने	भद्रा ३२ ।५९ से ५९ ।२८ तक, श्री गणेश तिल चतुर्थी	९	२७	३२	४९	७	१८	६	०८
अवम	४	चंद्र	५९	२८	३१	०५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी तिथि का क्षय A बुधः ४६ ।० स. सि. योग गंडमूलादि	०	०	०	०	०	०	०	०
२७ ।०८	५	मंग	५४	००	२८	५३	उभा	०	०८	सा	३२	५५	ब	२६	४४	२२	३	११	३०	मे ५६ ।२०	पंचक समाप्त ५६ ।२०, बसंत पंचमी (श्री ५) सरस्वती जयंतीश्रवणे (१) A	९	२८	३३	२९	७	१७	६	०८
२७ ।१३	६	बुध	५०	१०	२७	२०	अश्वि	५४	२०	शुभ	२६	४०	कौ	२२	०५	२३	४	१२	फा	मेषे	कुम्भे सूर्यः २५ ।३५ फाल्गुन संक्रां. ३० मुहू. पुण्य ९ ।३५ उप गंडमूलादि	९	२९	३४	०९	७	१६	६	०९
२७ ।१८	७	बृह	४८	२३	२६	३६	भर	५४	१५	शु	२१	४५	ग	१९	१७	२४	५	१३	२	मेषे	भद्रा ४८ ।२३ से शुरू, रथ सप्तमी, भानु ७, आरोग्य सप्तमी	१०	००	३४	४७	७	१५	६	१०
२७ ।२३	८	शुक्र	४८	२०	२६	३४	कृति	५५	५३	ब्रह्म	१७	५३	वि	१८	२२	२५	६	१४	३	वृ ९ ।४०	भद्रा १८ ।२२ तक, भीष्माष्टमी	१०	०१	३५	२४	७	१४	६	११
२७ ।२८	९	शनि	४९	५८	२७	१८	रोहि	५९	२३	ऐं	१६	२०	बा	१९	०९	२६	७	१५	४	वृषे	स. सि. योगः सू. उ. से	१०	०२	३५	५९	७	१३	६	१२
२७ ।३३	१०	रवि	५३	१०	२८	२८	मृग	६०	००	वै	१५	४३	तै	२१	३४	२७	८	१६	५	मि ३१ ।३९	धनि (१) शुक्रः ४९ ।२०	१०	०३	३६	३१	७	१२	६	१३
२७ ।३८	११	चंद्र	५७	३५	३०	१३	मृग	३	५५	वि	१६	१५	व	२५	२३	२८	९	१७	६	मिथुने	भद्रा २५ ।२३ से ५७ ।३५ तक, जया एकादशी व्रत स. सि. यो.	१०	०४	३७	०१	७	११	६	१४
२७ ।४३	१२	मंग	६०	००	पूर्ण	दिन	आर्द्रा	९	५०	प्री	१६	३३	ब	३०	११	२९	१०	१८	७	क ५९ ।५२	भीष्म द्वादशी, उफा ३ राहुः, उभा १ केतुः १५ ।३३, सा. मीने सूर्यः ३२ ।२५	१०	०५	३७	२९	७	१०	६	१५
२७ ।४८	१२	बुध	३	०३	८	२२	पुन	१६	३३	आ	१८	५३	बा	३	०३	३०	११	१९	८	कर्के	शते (१) सूर्यः २ ।००	१०	०६	३७	५७	७	०९	६	१६
२७ ।५३	१३	बृह	९	०३	१०	४५	पुष्य	२३	४३	सौ	२०	५३	तै	९	०३	फा	१२	२०	९	कर्के	धनि (१) बुधः २४ ।२३, स. सि. योगः B ७ ।५३, व्रत पूर्णमाशी	१०	०७	३८	२५	७	०८	६	१७
२७ ।५५	१४	शुक्र	१५	३३	१३	२०	श्ले	३१	४८	शो	२३	१०	व	१५	३३	२	१३	२१	१०	सिं ३१ ।४८	भद्रा १५ ।३३ से ४८ ।५१ तक, श्रवणे (२) गुरू २५ ।१३, शुक्रास्त पूर्वे B	१०	०८	३८	५१	७	०७	६	१७
२८ ।००	१५	शनि	२२	१०	१५	५८	मघा	३९	१०	अ	२५	३२	ब	२२	१०	३	१४	२२	११	सिंहे	कुंभे शुक्रः ९ ।१०, माघी पूर्णिमा, गु. रविदास जयंती माघ स्नान समा.	१०	०९	३९	१५	७	०६	६	१८

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच १४ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	५	९	९	९	११	५	११
०१	२६	११	१३	११	१९	११	०६	०६
३१	५९	४१	१२	३७	४२	०५	५३	५३
००	१३	४३	३८	५३	१५	२०	४५	४५
६० ३७	००३ २	५ ५५	९१ ०४	१३ ४६	७५ ४	६ ४८	३ ११	३ ११
धनि	कृ.	हस्त	श्रव	श्रव	श्रव	उभा	उफा	उभा
३	१	१	१	१	३	३	४	२
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १४ फरवरी: १२ के. श. | शु. गु. १० | ११ सू. | ९ चं. | ८ | २ | ८ | ३ | ५ | ७ | ४ | मं. रा. ६

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच २२ फरवरी

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	५	९	९	९	११	५	११
०९	०४	१०	२५	१३	२९	११	०६	०६
३५	५१	२७	४८	२६	४३	५६	२८	२८
१४	२५	४६	१७	३२	२७	२९	१८	१८
६० २५	७०९ ५९	१२ ०५	९८ ३१	१३ ०३	७४ ४६	७ २	३ ११	३ ११
शत	मघा	हस्त	धनि	श्रव	धनि	उभा	उफा	उभा
१	२	१	१	२	२	३	३	१
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २२ फरवरी: के. १२ श. | शु. १० गु. बु. | ११ सू. | १ | ९ | २ | ८ | ३ | ५ चं. | ७ | ४ | मं. रा. ६

माघ शुक्ल पक्षफल

इस पक्ष में तिल चतुर्थी को श्री गणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल व गुड़ के लड्डुओं सहित करने का विधान है। बसन्त पंचमी को भगवान् श्री विष्णु व लक्ष्मी की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे पकवान एवं चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। रथ सप्तमी को सूर्य भगवान की स्तुति अर्चना करने से मनुष्य की चिरायु एवं अरोग्यता बनी रहती है। माघी पूर्णिमा को माघ स्नान की सम्पूर्ति होगी। इसी दिन गंगा आदि तीर्थों पर स्नान, दानादि की विशेष माहात्म्य होता है।

व्यापारिक रुख—द्वितीया का चन्द्रदर्शन शनिवार (८ फर) को होगा, जिससे रूई, कपास, ऊनी वस्त्र, गेहूं, सोना, चांदी, सरसों, खल बिनौले, मूंगफली व तेलों में अच्छी तेजी होने के संकेत हैं। पंचमी (११ फर) से बुध श्रवण में आने से गुड़, चीनी अलसी, अरण्डी, सूरजमुखी, चना, चावल, रूई व चन्दी के बावों में तेजी के योग बनेंगे। षष्ठी (१२ फर) से सूर्य कुम्भ राशि में प्रविष्ट होने से गेहूं, चने, धान्य, बाजरा, अलसी, सरसों एवं अरण्डी के भावों में मन्दी का वातावरण तथा चांदी रूई एवं घी, तिल, तैलादि में तेजी रहेगी। दशमी (ता. १६) से शुक्र धनिष्टा में ने से गेहूं का धान्य के भावों में कमी पेशी होगी। ता. १९ को सूर्य शतभिषा में तथा २० को बुध धनिष्टा में आने से तिल, तैल खण्ड, हल्दी व रूई में तेजी होगी। ता. २१ को पूर्व में शुक्रास्त होने से अनाज, चने व चांदी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी होगी। माघ मास में पाँच शनिवार पड़ने से कहीं सत्ता में परिवर्तन, उपद्रव, अग्निकाण्ड, भूकम्प, एवं दुर्भिक्ष के संकेत हैं।

विवाह मुहूर्त—१४-१५ फर (रोहणी), १६ फर (मृगशिरे)

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०५३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष, शाकः १९१८, सन् ई० १९९७ (२३ फरवरी से ९ मार्च तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट, सूर्योदयास्त जालन्धर

दि. मा. घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घ	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	श्रवण ५५।३० (क्षय) (६ मार्च) वरीयान ५३।४८ (क्षय) (५ मार्च) सूर्योत्तरायणे शिशिर ऋतु —दक्षिण गोलार्धे	नि. रा.	सू. अ	स्प. क	इ. वि	सू. घ	उ. मि	सू. घ	अ. मि
२८।०५	१	रवि.	२८	४३	१८	३४	पूफा	४६	४०	सु	२६	५०	कौ	२८	४३	४	१५	२३	१२	सिंह	बुधास्त, पूर्व दिशायां ४।३५	१०	१०	३९	३८	७	०५	६	१९
२८।०८	२	चंद्र	३४	५३	२१	०१	उफा	५३	५५	धृ	२९	२५	तै	१	४८	५	१६	२४	१३	कन्ये ३।२९	उफायां (४) वक्री भौम: ००।३, बुध कुंभ में २८।३३	१०	११	३९	५८	७	०४	६	१९
२८।१३	३	मंग	४०	३५	२३	१७	हस्त	६०	००	शू	३०	२५	व	७	४४	६	१७	२५	१४	कन्यायां	भद्रा ७।४४ से ४०।३५ तक	१०	१२	४०	१७	७	०३	६	२०
२८।१८	४	बुध	४५	१३	२५	०७	हस्त	०	२५	गं	३१	०३	ब	१२	५४	७	१८	२६	१५	तुले ३३।१२	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, स. सि. योग:	१०	१३	४०	३३	७	०२	६	२१
२८।२३	५	बृह	४८	४०	२६	२९	चित्रा	५	५८	वृ	३०	५५	कौ	१६	५७	८	१९	२७	१६	तुलायां	शते १ शुक्र: २९।२८	१०	१४	४०	४८	७	०१	६	२२
२८।२८	६	शुक	५०	४०	२७	१६	स्वा.	१०	१८	ध्रु	२९	४०	ग	१९	४०	९	२०	२८	१७	वृ ५७।२५	भद्रा ५०।४० से शुरु शते (१) बुध: २२।४३	१०	१५	४१	५९	७	००	६	२३
२८।३३	७	शनि	५१	०३	२७	२३	विशा	१३	०८	व्या	२७	४३	वि	२०	५२	१०	२१	मा.	१८	वृश्चिके	भद्रा २०।५२ तक, १ मार्च १९९७ प्रारंभ	१०	१६	४१	०७	६	५८	६	२३
२८।३८	८	रवि	४८	४०	२६	२५	अनु.	१४	१३	ह	२३	३५	बा	१९	५२	११	२२	२.	१९	वृश्चिके	कालाष्टमी, जानकी जयंती, गंडमूलादि १२।३८ ५	१०	१७	४१	१५	६	५७	६	२४
२८।४३	९	चंद्र	४६	०५	२५	२२	ज्ये.	१३	३३	व	१९	३०	तै	१७	२३	१२	२३	३	२०	धनु १३।३३	गंडमूलादि विचार	१०	१८	४१	२३	६	५६	६	२५
२८।४५	१०	मंग	४१	००	२३	११	मूला	११	१५	सि	१२	२८	व	१३	३२	१३	२४	४	२१	धनुषि	भद्रा १३।३३ से ४१।०० तक, पूभा (१) सूर्य: १८।३३, गं. मू. ११।२५ या	१०	१९	४१	२८	६	५५	६	२५
२८।५०	११	बुध	३४	३०	२०	४२	पूषा	७	१५	व्य	४	५८	व	८	०२	१४	२५	५	२२	म २०।५७	उभा (४) शनि: ४५।४५, विजया एकादशी व्रतम्	१०	२०	४१	३२	६	५४	६	२६
२८।५८	१२	बृह	२६	५३	१७	३७	उषा	२	०३	परि	४६	१०	कौ	०	४२	१५	२६	६	२३	मकरे	C २२।०२, पूभां बुध: ४५।४३	१०	२१	४१	३२	६	५२	६	२७
२९।००	१३	शुक्र	२०	४०	१४	०७	धनि	४८	३३	शि	३५	५५	व	२०	४०	१६	२७	७	२४	कुं २२।०२	भद्रा २०।४० से ४८।२५ तक श्री महाशिवरात्री व्रत, पंचक शुरू C	१०	२२	४१	३३	६	५१	६	२७
२९।०५	१४	शनि	९	०५	१०	२८	शत	४१	२०	सि	२४	५५	श	९	०५	१८	२८	८	२५	कुंभे	श्रवणे (३) गुरु ४४।१५, अमा तर्पणादि कार्येषु	१०	२३	४१	३३	६	५०	६	२८
२९।१०	३०	रवि	०	०५	६	५१	पूभा	३४	२३	सा	१५	१५	ना	०	०५	१८	२९	९	२६	मी २१।०७	अमावस स्नान दानादि स. सि. योग रात ८।३४ से प्रारम्भ	१०	२४	४१	३०	६	४९	६	२९

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रातः ५।३० बजे २ मार्च

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	५	१०	९	१०	११	५	११
१७	१२	२८	०९	१५	०२	१२	०६	०६
३७	४१	२५	२३	११	४२	५२	०२	०२
३८	२३	२८	३५	३८	३०	३१	५२	५२
६० १०	८०३ ६	१८ ११	१००३ ०२	१३ ०१	७४ ५९	० १५	३ २१	३ २१
शत	अनु	उफा	शत	श्रव	शत	उभा	उभा	उभा
४	३	४	१	२	१	३	३	१
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. २ मार्च

१२ श. के. | ११ शु. सू. बु. | १० गु. | ९ | १ | २ | ८ चं. | ३ | ५ | ७ | ४ | मं. रा. ६

रवौ अमा. ग्रह स्प. प्रातः ५।३० बजे ९ मार्च

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	१०	५	१०	९	१०	११	५	११
२४	२३	०६	२२	१६	१८	१३	०५	०५
३८	५३	०६	१३	४२	२७	४२	४१	४१
१३	१६	३१	४४	२२	२५	३४	३६	३६
५९ ५८	९०३ ७	२२ ०३	११३ ४८	१२ ०७	७४ ४५	७ ३०	३ ११	३ ११
पूभा	पूभा	उफा	पूभा	श्रव	शत	उभा	उफा	उभा
२	२	३	१	३	४	४	३	१
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कु. अमावस सू. उ. ९ मार्च

१२ के. श. | ११ सू. चं. शु. बु. | १० गु. | ९ | १ | २ | ८ | ३ | ५ | ७ | ४ | ६ मं. रा.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

चतुर्दशी को श्री महाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर-व्रत रखने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों से स्नान के पश्चात् व्रत धारण कर रात्रि में भगवान् शिव शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजा सामग्री में बिल्वपत्र, कनेर, पुष्प, धतूरा रखने चाहिएं। पूजन के उपरान्त शिवरात्रि कथा एवं शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के बाद स्वयं भोजन करें।

व्यापारिक रुख—प्रतिपदा को बुध मकर राशि में पूर्व दिशा में अस्त होने से गेहूं, चने, चावल, मक्की आदि सर्व प्रकार के अनाज तेजभाव होंगे। द्वितीया को वक्री मंगल उफा में तथा बुध कुंभ राशि में प्रविष्ट होने से गुड़, चीनी, घी, सरसों, तिल, अलसी, रूई, कपास, खल-बिनौले एवं चौपायों के भावों में तेजी होगी। चांदी व सुवर्ण में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। षष्ठी (२८ फर.) से बुध शत में प्रविष्ट होने से सरसों, तिल, तैल, चीनी, हल्दी, रूई, मक्की, कपास, चने, चावल एवं उड़द के भावों में तेजी का रुख होगा। अष्टमी (२ मार्च) को बुध शुक्र के मध्य अंशात्मक युति करियाना वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनाए रखेगी। ४ मार्च से सूर्य पू.भा. में आने से सोना, चांदी, तांबा, सीसा, पीतल आदि धातुएं तथा रूई, कपास, गेहूं, चने, उड़द, मक्की, गुड़, तिल-तैल, चावल चीनी आदि में तेजी बनेगी। ५ मार्च को शनि उ.भा. के ४ चरण में आने से केसर, लाल चन्दन, चांदी लोहादि, खल बिनौले, मूंगफली, पशुचारा के भावों में तेजी बनेगी। ता. ८ को गुरु श्रवण (३) में आने से गुड़ चीनी चांदी, सोना व अनाजों में मन्दी का वातावरण करेगा। फाल्गुण में ५ रविवार होने से राजनीतिक वातावरण अस्थिर होगा। कहीं शासन परिवर्तन एवं उपद्रव होने के योग हैं। आकाश लक्षण—पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में खण्ड वर्षा तथा तेज हवाएं चलने के योग हैं।

शुक्रास्त होने के कारण पक्ष में विवाह मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

वि. संवत् २०५३, फाल्गुन शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८-१९, सन् ई० १९९७ (१० मार्च से २४ मार्च तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

सूर्योत्तरायणे शिशिर ऋतुः | नि. | सू. | स्प. | इ. | सू. | उ. | सू. | अ. | चंद्र रा. प्रवेश

वि. संवत् २०५३, फाल्गुन शुक्ल पक्ष, शाकः १९१८-१९, सन् ई० १९९७ (१० मार्च से २४ मार्च तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि मा घटी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	फाल्गुन	शव्वाल	मार्च	फाल्गुन	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल
अवम	१	रवि	५१	०५	२७	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०
२९ ।१३	२	चंद्र	४३	१५	२४	०६	उभा	२८	०५	शु	३	४३	बा	१७	१०	१९	३०	१०	२७	मीने
२९ ।१८	३	मंग	३६	२०	२१	१९	रेव	२२	५०	ब्र	४७	०८	तै	९	४८	२०	ज़ि	११	२८	मेषे २२ ।५०
२९ ।२३	४	बुध	३०	४८	१९	०४	अश्वि	१८	५८	ऐ	४०	२८	व	३	३४	२१	२	१२	२९	मेषे
२९ ।२८	५	बृह	२७	२०	१७	४०	भर	१६	४३	वै	३५	३३	बा	२७	२०	२२	३	१३	३०	वृषे ३१ ।४१
२९ ।३०	६	शुक्र	२५	४५	१७	०१	कृति	१६	३३	वि	३१	४३	तै	२५	४५	२३	४	१४	चैत्र	वृषे
२९ ।३५	७	शनि	२६	१३	१६	१०	रोहि	१८	२०	प्री	३०	२८	व	२६	१३	२४	५	१५	२	मि ५० ।०४
२९ ।४०	८	रवि	२८	३८	१८	०७	मृग	२१	४४	आ	३०	२३	ब	२८	३८	२५	६	१६	३	मिथुने
२९ ।४५	९	चंद्र	३२	४८	१९	४६	आर्द्रा	२७	०८	सौ	३०	५८	बा	०	४३	२६	७	१७	४	मिथुने
२९ ।४८	१०	मंग	३८	०८	२१	५३	पुन	३३	३३	शो	३३	२८	तै	५	५८	२७	८	१८	५	क १६ ।५७
२९ ।५३	११	बुध	४४	२३	२४	२१	पुष्य	४०	५०	अ	३४	३८	व	११	१६	२८	९	१९	६	कर्के
२९ ।५६	१२	बृह	५०	५८	२६	५८	श्ले	४८	३५	सु	३६	४५	ब	१७	४१	२९	१०	२०	७	सिं ४८ ।३५
३० ।००	१३	शुक्र	५७	२५	२९	३२	मघा	५६	१५	धृ	३७	५३	कौ	२४	१२	३०	११	२१	८	सिंहे
३० ।०५	१४	शनि	६०	००	पूर्णादिन		पूफा	६०	००	शू	३९	५५	ग	३०	३९	चै	१२	२२	९	सिंहे
३० ।१०	१४	रवि	३	५३	८	०४	पूफा	३	५५	ग	४१	३५	व	३	५३	२	१३	२३	१०	क २० ।३६
३० ।१७	१५	चंद्र	९	२८	१०	१७	उफा	१०	३८	वृ	४३	१३	ब	९	२८	३	१४	२४	११	कन्यायां

दि मा घटी पल	शुक्ल ५५ ।२८ (क्षय) (१० मार्च) सूर्योत्तरायणे शिशिर ऋतुः दक्षिण – उत्तर गोलार्धे	नि. रा	सू. अ	स्प क	इ वि	सू घं	उ. मि	सू घं	अ. मि
अवम	प्रतिपदा तिथि का क्षय ० ० ० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९ ।१३	पूभां (१) शुक्रः ११ ।१३, चन्द्रदर्शन, परमहंस रामकृष्ण जयंती	१०	२५	४१	२६	६	४८	६	२९
२९ ।१८	पंचक समाप्त २२ ।५०, ज़िल्काद १ मुस्लि, स. सि. यो. १५ ।५५ उ.	१०	२६	४१	२०	६	४७	६	३०
२९ ।२३	भद्रा ३ ।३४ से ३० ।४८ तक, बुध मीन में ५९ ।१०, गंडमूलादि	१०	२७	४१	१०	६	४५	६	३०
२९ ।२८	शन्यस्तं पश्चिमे ३१ ।१८	१०	२८	४१	०१	६	४४	६	३१
२९ ।३०	मीने सूर्यः १९ ।१४ चैत्र संक्रान्ति ४५ मुहूर्ति पुण्य ३ ।१४ के बाद D	१०	२९	४०	४७	६	४३	६	३१
२९ ।३५	भद्रा २६ ।१३ से ५७ ।२६ तक D उभा १ बुध ४० ।२८	११	००	४०	३३	६	४१	६	३१
२९ ।४०	होलाष्टक प्रारम्भः, अन्नपूर्णाष्टमी	११	०१	४०	१८	६	४०	६	३२
२९ ।४५	उभायां (१) सूर्यः ४० ।१३	११	०२	३९	५९	६	३९	६	३३
२९ ।४८	शुक्र मीन राशि में १३ ।०० C चैतन्य महाप्रभु, धूलिका वन्दनं बन्धन	११	०३	३९	४०	६	३८	६	३३
२९ ।५३	भद्रा ११ ।१६ से ४४ ।२३ तक, आमलकी एकादशी व्रत	११	०४	३९	१६	६	३७	६	३४
२९ ।५६	उभा (१) शुक्रः ५३ ।५, सायन सूर्य मेष में ३१ ।४८ महा विषुव दिवस A	११	०५	३८	५३	६	३५	६	३४
३० ।००	रेवती (१) बुधः २३ ।५८ प्रदोष A बसंत ऋतु प्रा, सूर्य उत्तरगोलार्धे गं. मू.	११	०६	३८	२७	६	३५	६	३५
३० ।०५	शक चैत्रारंभ, शक सं. १९१९ शुरू	११	०७	३७	५९	६	३४	६	३६
३० ।१०	भद्रा ३ ।५३ से ३६ ।४० तक, व्रत पूर्णिमा, होलिका दहनं भद्रोत्तरे, B	११	०८	३७	३०	६	३२	६	३६
३० ।१७	होली पर्व, फाल्गुण पूर्णिमा, वक्री मंगल सिंह में ५१ ।३३, जन्म दिन C	११	०९	३६	५६	६	३१	६	३८

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्प प्रातः साढ़े पाँच १६ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	५	११	९	१०	११	५	११
०१	०१	०३	०५	१८	२७	१४	०५	०५
३७	३३	२७	५०	०८	११	३३	१९	१९
२३	२५	४५	३८	४३	२८	२१	२०	२०
५९ ३५	७३३ ५३	२३ ०२	११९ ०४	११ ४२	७५ ३	७ ३१	३ ११	३ ११
पूभ ४	मृगे ३	उफा ३	उभ १	श्रव ३	पूभा ३	उभा ४	उफा ३	उभा १
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ

कु. अष्टमी सू. उ. १६ मार्च

१ ११ शु.
के. सू. श. बु. १२
२ १० गु.
३ चं. ९
मं. ६ रा.
४ ८
५ ७

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्प. साढ़े पाँच २४ मार्च B स. सि. यो. होलाष्टक समा.

सू.	चं.	मं.	गु.	वृ	शु.	श.	रा.	के.
११	५	५	११	९	११	११	५	११
०९	०७	००	२१	१९	०७	१५	०४	०४
३४	२२	२०	३८	४२	०८	३२	५३	५३
२७	१९	१७	३१	४५	२८	३७	५३	५३
५९ २९	७२४ ५६	२२ ४९	११३ ५८	१० ४८	७३ ४५	७ ४२	३ ११	३ ११
उभा २	उफा ४	उफा २	रेव २	श्रव ३	उभा २	उभा ४	उफा ३	उभा १
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ

कु. पूर्णिमा सू. उ. २४ मार्च

१ ११
के. शु. सू. श. १२ बु.
२ १० गु.
३ ९
६ रा. मं. चं.
४ ८
५ ७

फाल्गुण शुक्ल पक्ष

फा० शुक्लाष्टमी से होलाष्टक शुरू होंगे। शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। आमलकी एकादशी के दिन आंवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए अथवा आंवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन कर लेना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आंवला खाना तथा दान देना उत्तमोत्तम होता है। होलिका दहन भद्रा मुख के बाद करना प्रशस्त होगा, इसी दिन रात्रि को होलाष्टक समाप्त होंगे। २४ मार्च, सोमवार को होली का शुभ, एवं गुलालमय एवं मंगलकारी त्योहार होगा। व्यापारिक रुख—प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है तथा द्वितीया से शुक्र पू.भा. नक्षत्र में आने से धान्य, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्की के भावों में मन्दी का रूख बनेगा। इसी दिन को चन्द्रदर्शन होने से रूई कपास, बिनौले-खलादि में तेज होगी। १२ मार्च से बुध मीन में गेहूं, जौं, चने, रूई आदि में घटाबढ़ी वा खल बिनौले, मूंगफली, चौपायों के भावों में तेजी करेगा। १३ मार्च, से शनि मीन राशि में अस्त हो रहा है। केशर, कस्तूरी, चंदन, छोटी इलायची, काली मिर्चादि सुगन्धित द्रव्य, सर्वधान्य अनाजादि वस्तुएं तेज भाव होंगी। सोना, रूई, कपास व अरण्डी में मन्दा हो। षष्ठी (१३ मार्च) को सूर्य मीन राशि में आने से तिल, तेल, अलसी, सरसों, शक्कर, रूई में तेजी होगी। चान्दी में घटाबढ़ी होगी। दशमी (१८ मार्च) से शुक्र मीन में आने से गेहूँ, खल-बिनौला, रूई, कपास, सूत, आदि के भावों में घटाबढ़ी होगी। ता. २० को शुक्र उ.भा. में एवं ता. २१ को बुध रेवती में आने से करियाना मार्किट की स्थिति अस्थिर बनेगी। इस पक्ष में शनि अस्त होने एवं मीन राशि पर पंचग्रही योग होने से राजनीतिक हालात अस्थिर एवं असमंजसपूर्ण होंगे। कहीं प्रमुख नेता का निधन अथवा कहीं सत्ता परिवर्तन के योग हैं। शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ आकाश लक्षण—भारत के उत्तर पश्चिम भागों में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०५३, चैत्र कृष्ण पक्ष, शाकः १९१९ सन् ई. १९९७ (२५ मार्च से ७ अप्रैल ९७ तक) उदयकालिक सूर्यस्पष्ट सूर्योदयास्त जालन्धर

दि मा घड़ी पल	तिथि	वार	घ	पल	घं	मि	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र रा. प्रवेश घड़ी पल	पर्व, त्यौहार व ग्रह संचारादि सूर्योत्तरायणे, बसंत ऋतु: ६ अप्रैल उभा (क्षय) ५६ ।३३, साध्य ५९ ।३७ (३ अप्रैल) उत्तर गोलार्धे	नि. रा.	सु. अ.	स्प क.	ए वि	सू घं	उ. मि	सू घं	अ. मि
३० ।२५	१	मंग	१४	१५	१२	११	हस्त	१६	३८	ध्रुव	४५	३८	कौ	१४	१५	४	१५	२५	१२	तुले ४९ ।०९	होला मेला, आनन्दपुर व पांओटा साहिब, श्रवणे (४) गुरू २७ ।३३ A	११	१०	३६	२३	६	२९	६	३९
३० ।२८	२	बुध	१८	००	१३	४०	चित्रा	२१	४०	व्या	४५	११	ग	१८	००	५	१६	२६	१३	तुलायां	भद्रा ४९ ।२२ से शुरू, संत तुकाराम जंयती A बुधोदय: ० ।४५, बसंतोत्सव	११	११	३५	४५	६	२८	६	३९
३० ।३३	३	बृह	२०	४५	१४	४५	स्वा	२५	४०	हर्ष	४४	३१	वि	२०	४५	६	१७	२७	१४	तुलायां	भद्रा २० ।४५ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत	११	१२	३५	०८	६	२७	६	४०
३० ।३५	४	शुक्र	२२	१५	१५	२०	विशा	२८	३३	वज्र	४२	०३	बा	२२	१५	७	१८	२८	१५	वृ १२ ।५०	अश्वि (१) मेषे बुध: ३३ ।५०, गुड फ्राईडे	११	१३	३४	२७	६	२६	६	४०
३० ।४२	५	शनि	२२	२५	१५	२२	अनु	३०	१०	सिद्ध	३९	१७	तै	२२	२५	८	१९	२९	१६	वृश्चिके	रंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)	११	१४	३३	४५	६	२४	६	४१
३० ।४५	६	रवि	२१	२८	१४	५८	ज्ये	२९	४८	व्य	३४	२९	व	२१	२८	९	२०	३०	१७	धनु २९ ।४८	भद्रा २१ ।२८ से ५० ।१९ तक, गंडमूलादि	११	१५	३३	०१	६	२३	६	४१
३० ।५०	७	चंद्र	१९	१०	१४	०२	मूला	२८	१५	वर	२९	२७	ब	१९	१०	१०	२१	३१	१८	धनुषि	रेवत्यां (१) सूर्य: ७ ।५०, रेवत्यां शुक्र: ३७ ।१०, मे. शीतला ७, गडमूलादि	११	१६	३२	१४	६	२२	६	४२
३० ।५७	८	मंग	१५	०८	१२	२३	पूषा	२७	२५	परि	२१	३५	कौ	१५	०८	११	२२	अप्रै	१९	म ४१ ।३४	१ अप्रैल ई० १९९७ प्रारंभ, रेवती (१) शनि ४२ ।५५ शीतला अष्टमी	११	१७	३१	२७	६	२०	६	४३
३१ ।०२	९	बुध	१०	०५	१०	२१	उषा	२४	०३	शिव	१५	३२	ग	१०	०५	१२	२३	२	२०	मकरे	भद्रा ३४ ।४७ से प्रारम्भ	११	१८	३०	३६	६	१९	६	४४
३१ ।०५	१०	बृह	७	१०	९	१०	श्रव	१९	३५	सिद्ध	७	२३	वि	७	१०	१३	२४	३	२१	कुं ४७ ।००	पंचक शुरू ४७ ।००, पापमोचनी एका. स्मा०, पूफा ४ वक्री भौम: C	११	१९	२९	४२	६	१८	६	४४
अवम	११	बृह	५७	०३	२९	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	एकादशी तिथि का क्षय ० ० ० ० C २८ ।५०, भद्रा ७ ।१० तक	०	०	०	०	०	०	०	०
३१ ।१०	१२	शुक्र	४९	२५	२६	०३	धनि	१४	२५	शुभ	४९	४७	कौ	२३	१४	१४	२५	४	२२	कुंभे	पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	११	२०	२८	४७	६	१७	६	४५
३१ ।१३	१३	शनि	४१	२८	२२	५१	शत	८	३५	शुक्ल	३९	५१	ग	१५	२७	१५	२६	५	२३	मी ४९ ।०४	भद्रा ४१ ।२८ से शुरु, महावारूणी पर्व, शनि प्रदोष व्रत	११	२१	२७	४९	६	१६	६	४५
३१ ।२०	१४	रवि	३३	३३	१९	३९	पूभा	२	३३	ब्रह्म	२९	४३	वि	७	३१	१६	२७	६	२४	मीने	भद्रा ७ ।३१ तक, मेला पृथूदक पिहोवा तीर्थ, स. सि.योग	११	२२	२६	४७	६	१४	६	४६
३१ ।२५	३०	चंद्र	२५	५०	१६	३३	रेव	५१	०८	ऐंद्र	२०	२६	ना	२५	५०	१७	२८	७	२५	मे ५१ ।०८	सोमवती अमावस, स्नानदानादि, पंचक समा. ५९ ।०८, वि सवंत २०५३	११	२३	२५	४६	६	१३	६	४७

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्प. प्रात: साढ़े पाँच १ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	४	०	९	११	११	५	११
२७	१९	२७	०५	२१	१७	१६	०४	०४
२९	४८	२९	२१	११	०६	३४	२८	२८
२३	२१	१३	२३	३३	५५	३०	२७	२७
५९ १२	७९ ५७	१९ ०२	८५ ०२	११ ०८	७३ ४८	७ ४८	३ ११	३ ११
रेव १	पूष २	उफ १	अश्वि २	श्रव ४	रेव १	उभा ४	उफा ३	उभा १
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ

कु. ८ सू. उ. १ अप्रैल

१२ श. सू. शु. के.
बु. १
११
२
१० गु.
३
९ चं.
४
६ रा.
८
५ मं.
७

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्प. प्रात: साढ़े पाँच ७ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
११	११	४	०	९	११	११	५	११
२३	१७	२५	१२	२२	२४	१७	०४	०४
२४	०४	४१	२२	१३	३१	१९	०९	०९
००	३१	३७	५३	४९	३०	१०	२२	२२
५८ ५९	८७८ ४६	१५ ०६	४९ ०५	१० १३	७३ ५८	७ ३६	३ ११	३ ११
रेव ३	रेव १	पूफा ४	अश्वि ४	श्रव ४	रेव ३	रेव १	उफा ३	उभा १
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ

कु. अमा. सू. उ. ७ अप्रैल

१२ सू. शु. के. चं. श.
१ बु.
११
२
१० गु.
३
९
४
६ रा.
८
५ मं.
७

चैत्र कृष्ण पक्षफल

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को होला मेला का पर्व पंजाब, हिमाचल प्रदेश में (होली के दूसरे दिन) मनाया जाता है। इस पक्ष में पापमोचनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करने से अनिष्ट पाप फलों से मुक्ति प्राप्त होती है। वारूणी पर्व पर तीर्थादि स्थल पर स्नान दानादि का विशेष महत्त्व होता है। चतुर्दशी को पिहोवा (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

व्यापारिक रुख—पक्षारंभ में प्रतिपदा, मंगलवार को बुध पश्चिम में उदय हो रहा है तथा गुरु श्रवण (४) में प्रविष्ट होगा। जिससे चावल, चने, धान्य, घी, तैल, खल-बिनौला, अरण्डी, सरसों, सोयाबीन, पशुचारा, चीनी, गुड़ादि वस्तुओं तथा सोना, पीतल, ताम्बा व चांदी आदि धातुओं के भाव मजबूती पकड़ेंगे। चतुर्थी (२८ मार्च) को बुध मेष राशि में आने से तेल, तिलहन सरसों, चीनी, घृत एवं गुड़ के भावों में मन्दी का रूख बनेगा। ३१ मार्च से सूर्य एवं शुक्र-दोनों रेवती में आकर अंशात्मक युति करेंगे। अलसी, सरसों, अरण्डी, मुंगफली, तिल, तैल, रूई, चावल, लाख, गेहूं, जौं, चना आदि में मामूली घटावढ़ी होकर १ अप्रैल को शनि रेवती में आने से भावों में पुनः तेजी बनेगी। ३ अप्रै. से वक्री मंगल पू.फा. के ४ चरण में आने से तिल, तैल, सरसों, अलसी, मुंगफली, पशुचारा, खल बिनौले आदि तथा ताम्बा चांदी, सोना में तेजी की चमक बनी रहेगी। इस पक्ष में मीन राशि पर चतुर्ग्रही योग बनने से हाजिर एवं वायदा मार्कीट में उतार चढ़ाव के बावजूद तेजी का माहौल बना रहेगा। राजनीतिक वातावरण भी अनिश्चित एवं डावांडोल रहेगा। कहीं प्रधान नेता का निधन एवं सत्ता परिवर्तन के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ वर्षा की बौछारें पड़ने के योग हैं।

तिथि, नक्षत्र, चन्द्र एवं सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में

ता० मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घं. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
चैत्र शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२० मार्च से ३ अप्रैल तक)									* ब्रह्म २९ ।५०

तिथि, नक्षत्र, चन्द्र एवं सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में

विगत अनेक वर्षों से पंचांग-दिवाकर के पाठकों के लाभार्थ तिथि-नक्षत्रों के समाप्तिकाल तथा सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों के संचार घण्टा-मिन्टों (भा. स्टै. टाईम) में दिए जा रहे हैं। पक्ष वाले पृष्ठों पर घटी पलों के साथ घंटे-मिनट देने से छपाई अत्यन्त बारीक होने के कारण वयोवृद्ध पण्डितों को पढ़ने में अत्यन्त असुविधा रहती थी। इसी कारण प्रस्तुत पृष्ठों मे तिथ्यादि का समाप्तिकाल तथा चंद्रादि संचार घंटों मिनटों में अलग से दिया जा रहा है। यद्यपि चिरकाल से पंचांग पद्धति में तिथि नक्षत्रों आदि के समाप्ति काल घड़ी पलों में लिखे जाने की परिपाटी रही है। इन तिथ्यादि घड़ी पलों का सम्बन्ध स्थानीय सूर्योदय से रहता है, जबकि आजकल **जंत्री-पंचांगों में लिखे गए तिथि, नक्षत्र एवं ग्रहों आदि का सम्बन्ध भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से होता है।** स्टैण्डर्ड टाईम एवं घण्टा-मिनटों में दिया गया तिथि-नक्षत्रों ग्रहों आदि आकाशीय पिण्डों का काल **भूकेन्द्रीय होने के कारण भारत के किसी प्रदेश (स्थल) के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं होगी।** जबकि घड़ी-पलों में लिखे तिथ्यादि काल स्थानीय सूर्योदय से संबंधित होते है तथा उनमें अभीष्ट देशीय संस्कार करने की आवश्यकता होती है। अतएव भारत के सभी नगरों के लिए **उपयोगी तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रहसंचार भद्रा** आदि का समय घण्टा-मिन्टों एवं स्टैण्डर्ड टाईम में अलग से दिया जा रहा है। आशा है पाठकवृंद लाभान्वित होंगे। इस सम्बन्ध में उदाहरण सहित **कुछ आवश्यक निर्देश लिख रहे हैं**—

(१) प्रतिदिन सूर्योदय के पश्चात् तिथि, नक्षत्रादि के समाप्ति काल के घण्टों को ६, ७, ८ आदि लिखा गया है जबकि दोपहर १२ बजे के पश्चात् के समय को क्रमशः १३, १४, १५ लिखते हुए रात्रि १२ बजे को २४ के अंकों द्वारा प्रकट किया गया है तथा रात्रि १२ बजे के पश्चात् सूर्योदय तक के समय को घं-मिन्ट को क्रमशः २५, २६, २७, २८, ३० आदि अंकों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। **ध्यान रहे, ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार स्थानीय सूर्योदय से पहले तिथि, नक्षत्रादि के समाप्ति काल की गणना पिछले (गत दिन) से ही की जाती है तथा वारादि की गणना सूर्योदय काल से मानी जाती है।**

(२) जैसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (१) अप्रैल शनिवार के आगे १४ ।२७ घं. मिंट लिखा है, इसका तात्पर्य हुआ कि प्रतिपदा तिथि २० मार्च को दोपहर २ बजकर २७ मिनट तक होगी, तथा उ.भा. नक्षत्र ११ ।४९ घं. मि. अर्थात् प्रातः ११ बजकर ४९ मिनट तक रहेगा तथा शुक्ल योग ७ ।२३ अर्थात् प्रातः ७ बजकर २३ मिनट तक शुक्ल योग रहेगा।

(३) चन्द्र संचार, भद्रा एवं सूर्यादि ग्रहों का प्रवेश काल भा. स्टैण्डर्ड टाईम घण्टे-मिन्टों में लिखा गया है। जैसे, २३ मार्च के आगे वृषेन्दु १८ ।४५ लिखा है अर्थात् चन्द्रमा २३ मार्च शाम ६ बजकर ४५ मिन्ट पर वृष राशि में प्रविष्ट होगा।

(४) इसी भान्ति ग्रह राशि प्रवेश, भद्रा, पंचक एवं ग्रहों का उदय-अस्तादि भी भा. स्टै. टाईम में लिखा गया है। जिस तिथि, नक्षत्र, योगादि के आगे "पूर्ण दिन" लिखा है। वह तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि होगी अर्थात् उक्त तिथि, नक्षत्र का मान सूर्योदय से लेकर आगामी सूर्योदय तक रहेगा। जबकि तिथि क्षय एवं नक्षत्र क्षय में एक ही दिन में दो तिथियों, वार अथवा नक्षत्रों का समावेश रहता है।

उदाहरणार्थ—जैसे ९ अप्रैल के आगे नक्षत्र की पंक्ति के नीचे ज्ये. नक्षत्र ६ ।३३ तथा उसी कोष्टक में मूला २९ ।०५ लिखा हुआ है। क्योंकि मूला नक्षत्र ९ अप्रैल के सूर्योदय (६ ।१० घंटा मिंट) से पहिले ही २९ ।०५ पर (अर्थात् १० अप्रैल की प्रातः को ५ बजकर ०५ मिनट पर) समाप्त हो जाने से मूला नक्षत्र क्षय माना जायेगा। इसी प्रकार अन्य तिथि, नक्षत्रादि का भोग्य काल जानें।

चैत्र शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२० मार्च से ३ अप्रैल तक)

ता० मार्च १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घं. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * ब्रह्म २९ ।५०
२०	१	बु	१४ ।२७	उ.भा	११ ।४९	शु *	७ ।२३	मीने	मंगल उ. भा. में २८ ।५६, सायने सूर्य मेष में
२१	२	गु	१३ ।१९	रे	११ ।१७	ऐ,	२७ ।२१	मे ११ ।१७	पंचक समा. ११ ।१७, बुधमीनमें ७ ।५४,+
२२	३	शु	१२ ।५३	अ	११ ।३५	वै	२६ ।२०	मेषे	भ. २५ ।३२ से प्रा, स. सि. योग ११ ।३५ तक
२३	४	श.	१३ ।०१	भ	१२ ।२१	वि	२५ ।४५	वृ १८ ।४५	भ. १३ ।०१ तक
२४	५	र	१४ ।०४	कृ	१३ ।५५	प्री	२५ ।३६	वृषे	+ शक संवत् १९१८ प्रारम्भ
२५	६	चं.	१५ ।४२	रो	१६ ।०३	आ	२५ ।५५	मि २९ ।१८	शुक्र कृतिका में ८ ।३०
२६	७	मं.	१७ ।४३	मृग	१८ ।३३	सौ	२६ ।३७	मिथुने	भद्रा १७ ।४३ से प्रारम्भ
२७	८	बु	२० ।०७	आ	२१ ।२८	शो	२७ ।२८	मिथुने	भद्रा ७ ।२५ तक, श्री दुर्गाष्टमी
२८	९	गु	२२ ।४२	पुर्न	२४ ।२५	अ	२८ ।२३	क १७ ।४१	शुक्र वृष में १४ ।०७, श्री रामनवमी
२९	१०	शु	२३ ।०८	पुर्न	२७ ।११	सु	२९ ।०२	कर्के	बुध रेवती में ११ ।०८
३०	११	श.	२५ ।०९	श्ले	६ ।५७	धृ	२९ ।३२	सि २९ ।३८	भ १२ ।८ से २५ ।०९ तक, सूर्यरेव में २७ ।२०
३१	१२	र	२८ ।२७	मघा	पूरा दिन	शू	२९ ।३४	सिंहे	
अप्रै.	१३	च.	२९ ।२४	मघा	७ ।३७	ग	२९ ।१६	सिंहे	श्री महावीर जयन्ती
२	१४	मं.	२९ ।१२	पू.फा	९ ।०४	वृ	२८ ।३३	क १५ ।१९	भद्रा २९ ।१२ से प्रा०
३	१५	बु.	२९ ।३९	उ.फा.	१० ।०१	ध्रु	२७ ।२१	कन्या	खग्रास चन्द्रग्रहण, पूर्णिमा

वैशाख कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (४ अप्रैल से १७ अप्रैल तक)

ता० अप्रै.	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में)
४	१	गु.	२८ ।५७	ह	१० ।२४	व्या	२५ ।४७	तु २२ ।२१	शनि उदय ७ ।५९ A २६ ।०३ गुड फ्राइडे
५	२	शु	२७ ।४९	चि	१० ।१६	ह	२३ ।४९	तुला	बुध अश्वि (१) मेषे ७ ।०१, मंगल रेव में A
६	३	श	२६ ।१९	स्वा	९ ।४७	व	२१ ।३२	वृ २७ ।१०	भ. १५ ।०३ से २६ ।१९ तक,
७	४	र	२४ ।३४	वि	८ ।५७	सि	१९ ।०५	वृश्चिक	शुक्र रोहिणी में २१ ।५१
८	५	चं.	२२ ।४५	अ	७ ।५१	व्य	१६ ।१६	वृश्चिक	स. सि. योग ७ ।५१ तक,
९	६	म.	२० ।२९	ज्ये. मू.	६ ।३३ २९ ।०५	व	१३ ।२८	ध ६ ।३३	भ. २० ।२९ से प्रा. बुधोदय पश्चि. १० ।१४, हस्ते ४ राहु, रेव (२) केतु २७ ।१९
१०	७	बु	१८ ।५५	पू. षा	२७ ।३८	प	१० ।३२	धनु	भ. ७ ।४२ तक,
११	८	गु.	१६ ।०१	उ.षा.	२६ ।०९	शि सि	७ ।३६ २८ ।४१	म ९ ।१५	शनि उ. भा. (२) में १३ ।२९, बुध भरणी में २६ ।२७
१२	९	शु.	१३ ।४७	श्र	२४ ।४१	सा	२५ ।४६	मकर	भ. २४ ।४३ से प्रारम्भ
१३	१०	श.	११ ।३७	ध	२३ ।२१	शुभ	२३ ।००	कु १२ ।०१	भ. ११ ।३७ तक, सूर्य अश्वि (१) मेषमें B
१४	११	र	९ ।३५	श	२२ ।२२	शु	२० ।२०	कुंभ	B. १६ ।४७, पंचक प्रा० १२ ।०१
१५	१२	च.	७ ।४८	पू.भा.	२१ ।१५	ब्र	१७ ।५२	मी १५ ।३२	सोम प्रदोष व्रत
०	१३	मं.	६ ।१८	उ.भा.	२० ।३७	ऐं	१५ ।३५	मीन	भ. ६ ।१८ से १७ ।४२, गुरुपूषा (४) में १६ ।२७
१६	१४	मं.	२९ ।०५	०	००	०	००	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ० ० ०
१७	३०	बु.	२८ ।२०	रेव	२० ।२५	वै	१३ ।४०	मे २० ।२५	पंचक समाप्त २० ।२५

आश्रम द्वारा M.O. द्वारा भेजें

ता०	वैशाख शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१८ अप्रैल से ३ मई तक)								
अप्रै. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * व्यतीपात २९ ।३५
१८	१	गु.	२८ ।०३	अश्वि	२० ।३९	वि	१२ ।०९	मेष	स. सि. यो०
१९	२	शु.	२८ ।१९	भर	२१ ।२७	प्री	१० ।५८	वृ २७ ।४५	सायन सूर्य वृष में २४ ।५४, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ
२०	३	श.	२९ ।०७	कृति	२२ ।४२	आ	१० ।१३	वृष	बुध कृतिका में १८ ।३९
२१	४	र	पूरा दिन	रो	२४ ।३६	सौ	९ ।५७	वृष	भ १७ ।५० से प्रा०, शक वैशाख शुरु
२२	४	च.	६ ।३३	मृ	२६ ।५६	शो	१० ।०५	मि. १३ ।४७	भ० ६ ।३३ तक
२३	५	मं.	८ ।२२	आ	२९ ।३६	अ	१० ।३७	मिथुन	बुध वृषे २१ ।१०, शुक्र मृग.(१) में १९ ।४१
२४	६	बु	१० ।३५	पुनं	पूरा दिन	सु	११ ।२०	क २५ ।४८	मंगल अश्वि (१) मेष में १८ ।५१
२५	७	गु	१२ ।५८	पुनं	८ ।३१	धृ	१२ ।१२	कर्के	भ १२ ।५८ से २६ ।१२ तक, स. सि. यो.
२६	८	शु	१५ ।२५	पुष्य	११ ।२३	शू	१३ ।०२	कर्के	गंडमूल ११ ।२३ के बाद
२७	९	श	१७ ।३१	श्ले	१४ ।०५	ग	१३ ।४२	सि १४ ।०५	सूर्य भरणी में ८ ।२८, बगुलामुखी जयं
२८	१०	र	१९ ।०१	मघा	१६ ।१९	वृ	१४ ।०२	सिंह	गंडमूल साय ४ ।१९ तक
२९	११	च.	२० ।०१	पू.फा.	१८ ।००	ध्रु	१३ ।५५	क २४ ।२३	भ० ७ ।३१ से २० ।०१ तक
३०	१२	मं.	२० ।२१	उ.फा.	१९ ।२९	व्या	१३ ।३६	कन्या	त्रिपुष्कर योग सू० उ०
मई	१३	बु	१९ ।५७	हस्त	१९ ।२१	ह	१२ ।०८	कन्या	
२	१४	गु	१८ ।५३	चित्रा	१९ ।००	व	१० ।२५	तु ७ ।१०	भ० १८ ।५३ से प्रा०, नृसिंह चौदश
३	१५	शु.	१७ ।१९	स्वा.	१८ ।०६	सि •	८ ।१२	तुला	भ० ६ ।०५ तक, वैशाख बुद्ध पूर्णिमा

ता०	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष वि. संवत् २०५३ (४ मई से १७ मई तक)								
मई	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में)
४	१	श.	१५ ।०३	विशा	१६ ।४२	व	२६ ।२२	वृ ११ ।०३	शुक्र मिथुन में ८ ।४९, बुध वक्री ९ ।२५
५	२	र	१२ ।२८	अनु	१४ ।५३	प	२३ ।२०	वृश्चिक	भ० २३ ।१९ से शुरु, गुरु वक्री १० ।२८, A
६	३	च	१० ।०९	ज्ये	१३ ।१५	शि	२० ।०४	ध १३ ।१५	भ० १० ।०९ तक, बुध अस्त पश्चिमे १८ ।०२
७	४	म.	७ ।२०	मूला	११ ।१७	मि	१६ ।४३	धनु	गंडमूल विचार ११ ।१७ तक
०	५	म.	२८ ।३९	०	० ०	०	०	०	पचमी का क्षय ० A गं० मू० १४ ।५३ से
८	६	बु	२६ ।०५	पू.षा.	९ ।२०	सा	१३ ।३०	म १४ ।५४	भ० २६ ।०५ से शुरु
९	७	गु.	२३ ।४६	उ.षा.	७ ।३५	शु	१० ।२२	मकर	भ० १२ ।५५ तक
१०	८	शु	२१ ।५१	श्रव धनि	६ ।०३ २८ ।५१	शु ब्र	७ ।२५ २८ ।४५	कु १७ ।२७	पंचक प्रा० १७ ।२७, सूर्य कृतिका में २६ ।४७
११	९	श	२० ।१२	शत	२७ ।५८	ऐं	२६ ।२२	कुंभ	शनि उ० भा० (३) में २४ ।५०
१२	१०	र	१८ ।५४	पू.भा.	२७ ।२९	वै	२४ ।१७	मी २१ ।३६	भ. ७ ।२४ से १८ ।५४, मंग. भरणी १२ ।३९
१३	११	च	१७ ।५४	उभा	२७ ।२०	वि	२२ ।३०	मीन	
१४	१२	म	१६ ।४७	रे	२७ ।३४	प्री	२१ ।०१	मे २७ ।३४	सूर्य वृष में १३ ।४२, पंचक समाप्त २७ ।३४
१५	१३	बु	१६ ।२७	अश्वि	२८ ।११	आ	१९ ।५१	मेष	भद्रा १६ ।२७ से २८ ।३० तक
१६	१४	गु	१६ ।३२	भर	२९ ।११	सौ	१८ ।४६	मेष	वक्री बुध मेष में १० ।३२
१७	१०	म	[illegible]	कृत्ति	पूरा दिन	शो	[illegible]	वृ ११ ।३२	

ता०	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१८ मई से १ जून तक)								
मई १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
१८	१	श.	१८ ।२०	कृति	६ ।३७	अति	१८ ।०८	वृष	स० सि. योग
१९	२	र	१९ ।४५	रो	८ ।३१	सु	१८ ।१२	मि २१ ।३९	
२०	३	च.	२१ ।३३	मृग	१० ।४६	धृ	१८ ।४९	मिथुन	A २४ ।२४
२१	४	म.	२३ ।४३	आ	१३ ।२२	शू	१९ ।५२	मिथुन	शुक्र वक्री ११ ।२५, सायन सूर्य मिथुन A
२२	५	बु	२६ ।०४	पुन	१६ ।१५	गं.	२० ।३०	मिथुन	भ० १० ।३८ से २३ ।४३ तक
२३	६	गु.	२८ ।२६	पु	१९ ।१३	वृ	२१ ।३४	क ९ ।३१	वक्री गुरु पू० षा० (३) में २४ ।५८ B
२४	७	शु.	पूरा दिन	श्ले.	२२ ।०५	ध्रु	२२ ।२९	कर्क	बुधोदय पूर्व १८ ।४५, भरण्या ४ व. बुध:
२५	७	श.	६ ।४५	म	२४ ।४२	व्या	२३ ।०३	सि २२ ।०५	सूर्य रोहिणी में २२ ।५३
२६	८	र	८ ।४०	पू.फा.	२६ ।४९	ह	२३ ।१३	सिंह	भ० ६ ।४५ से १९ ।४३ तक
२७	९	चं.	९ ।५८	उ.फा.	२८ ।१८	व	२४ ।०९	सिंह	स० सि० योग
२८	१०	म.	१० ।३७	ह	२९ ।१७	सि	२१ ।५८	क ९ ।११	B मंगल उदय १७ ।११
२९	११	बु.	१० ।२६	चि	२८ ।५३	व्य	२० ।०३	कन्या	भ० २२ ।३२ से शुरु, बुध मार्गी ९ ।२७
३०	१२	गु.	९ ।२६	स्वा	२८ ।००	व	१८ ।०४	तु १७ ।०५	भ० १० ।२६ तक, निर्जला एकादशी
३१	१३	शु.	७ ।३६	वि	२६ ।२७	प	१५ ।१९	तुला	मंगल कृतिका में १५ ।३५
०	१४	शु.	२९ ।१०	० ०	०	०	०	वृ २० ।५३	भ० २९ ।१० से शुरु
जून	१५	श.	२६ ।१८	अनु	२४ ।३५	शि	१२ ।०३	० ०	चतुर्दशी का क्षय ० ० ०
								वृश्चिक	भ० १५ ।४४ तक, बुध कृतिका में १६ ।३९

ता०	प्र० शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष वि. संवत् २०५३ (२ जून से १६ जून तक)								
जून	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं. मि.	चंद्र संचार	(घं. मिटों में) *शुभ २५ ।२६, आयु २८ ।३२
२	१	र	२३ ।०२	ज्ये.	२२ ।०२	सि	८ ।२०	ध २२ ।०२	A ५ ।३८ वक्री शुक्र वृषे १५ ।४०
३	२	चं.	१९ ।३५	मू.	१९ ।२८	सा *	९ ।०९	धनु	गंडमूल सायं ७ ।२८ तक
४	३	मं.	१६ ।१६	पू.षा.	१६ ।५५	शु	२१ ।०४	म २२ ।१९	भ० ५ ।५६ से १६ ।१६ तक, मंगल वृषे A
५	४	बु	१२ ।५८	उ.षा.	१४ ।३०	ब	१७ ।३१	मकर	
६	५	गु	१० ।०१	श्र	१२ ।२४	ऐं	१४ ।०६	कुं २३ ।३३	पंचक शुरु २३ ।३३
७	६	शु.	७ ।२९	ध	१० ।४१	वै	१० ।५८	कुंभ	भ. ७ ।२९ से १८ ।३० तक, बुध वृष में B
८	७	श.	५ ।२९	श	९ ।३१	वि	८ ।३१	मी २७ ।०२	B १६ ।२० शुक्र अस्त पश्चि. २३ ।१० +
०	८	श.	२७ ।५९	०	० ०	०	०	० ०	अष्टमी का क्षय + मृगे सूर्य: २० ।४६
९	९	र	२७ ।०४	पू.भा.	८ ।५३	प्री	६ ।२६	मीन	स. सि. यो. C व० शुक्र मृगशिर में ६ ।२
१०	१०	चं	२६ ।५०	उ.भा.	८ ।४९	सौ	२७ ।४२	मीन	भ० १४ ।५७ से २६ ।५० तक, C
११	११	म.	२६ ।४१	रे	९ ।१५	शो	२६ ।४५	मे ९ ।१५	पंचक समाप्त ९ ।१५
१२	१२	बु	२७ ।१५	अश्वि	१० ।११	अ	२६ ।०८	मेष	हस्ते (३) राहु रेव (१) केतु ८ ।००
१३	१३	गु.	२८ ।११	भ	११ ।३१	सु	२५ ।५५	वृ १७ ।५७	भद्रा २८ ।११ से शुरु
१४	१४	शु.	पूरा दिन	कृ	१३ ।१३	धृ	२५ ।५७	वृष	भ० १६ ।०१, सूर्य मिथुन (आषाढ़ सं.) D
१५	१४	श.	५ ।३१	रोहि	१५ ।१६	शू	२६ ।१४	मि २८ ।२७	वक्री शुक्र रोहिणी (४) में ८ ।२९

ता०	अधिक आषाढ़ शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१७ जून से १ जुलाई तक)								
जून १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश

ता०	शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१६ जुलाई से ३० जुलाई तक)								
जुला.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घं. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * ऐंद्र २७ ।५९

ता०	अधिक आषाढ़ शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (१७ जून से १ जुलाई तक)								
जून १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घं मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं मि	चंद्र संचार घं मि	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * परिघ २८ ।३५
१७	१	च.	९ ।०१	आ	२० ।१७	वृ	२७ ।३१	मिथुन	मंग रोहिणी में २७ ।२३, बुध रोहिणी में ५ ।२८
१८	२	म.	११ ।१२	पुन	२३ ।०९	ध्रु	२८ ।२९	क १६ ।२६	
१९	३	बु.	१३ ।३८	पु	२६ ।०१	व्या	पूरा दिन	कर्क	भ० २६ ।५२ से शुरु
२०	४	गु.	१६ ।०५	श्ले.	२९ ।०८	व्या	६ ।०१	सि २९ ।८	भ. १६ ।०५ तक,
२१	५	शु.	१८ ।३०	मघा	पूरा दिन	ह	६ ।३१	सिंह	सूर्य आर्द्रा में १९ ।४८, सायन सूर्य कर्क में A
२२	६	श.	२० ।३६	मघा	८ ।०१	व	६ ।५६	सिंह	A ८ ।३० सूर्य दक्षिणायने, वर्षा ऋतु प्रा.
२३	७	र.	२२ ।१३	पू.फा.	१० ।३२	सि	७ ।१०	क १७ ।०२	भ० २२ ।१३ से शुरु
२४	८	च.	२३ ।१७	उ.फा.	१२ ।३१	व्य	६ ।४७	कन्या	भ० १० ।४६ तक
२५	९	म.	२३ ।३२	हस्त	१३ ।४५	व०	५ ।५१	तु २५ ।५८	बुध मृग (१) में २० ।००
२६	१०	बु.	२३ ।००	चि	१४ ।११	शि	२७ ।४८	तुला	वक्री गुरु पू. षा. (२) में १३ ।३०
२७	११	गु.	२१ ।३५	स्वा.	१३ ।५१	सि	२६ ।३४	तुला	भ० १० ।१८ से २१ ।३५ तक
२८	१२	शु.	१९ ।२२	वि	१२ ।४६	सा	२३ ।३६	वृ ७ ।०२	
२९	१३	श.	१६ ।३०	अ	१० ।५१	शु	२० ।०५	वृश्चिक	बुध मिथुन रा. में १० ।२०
३०	१४	र.	१३ ।१०	ज्ये	८ ।२७	शु	१६ ।१०	ध ८ ।२७	भ १३ ।१० से २३ ।२० तक, बुधास्त ८ ।२५
जुला. १	१५	च.	९ ।२९	मूला पू.षा.	५ ।३९ २६ ।३७	ब्र	१२ ।०३	धनु	शनि उ० भा० (४) में १५ ।२९

ता०	अधिक आषाढ़ कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२ जुलाई से १५ जुलाई तक)								
जुला.	तिथि	वार	घं मि	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं मि	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में) * वै २७ ।५९
२	१	म.	५ ।३९	उ.षा.	२३ ।३८	ऐं०	८ ।०२	म ७ ।५२	बुध आर्द्रा (१) में १८ ।३०, शुक्र मार्गी १५ ।३२
०	२	०	२५ ।५०	०	०	०	०	०	द्वितीया का क्षय
३	३	बु	२२ ।१६	श्र	२० ।५३	वि	२३ ।४४	मकर	भ० १२ ।०४ से २२ ।१६ तक
४	४	गु	१९ ।०२	ध	१८ ।३०	प्री	२० ।१२	कु ७ ।४२	पंचक शुरु ७ ।४२
५	५	शु	१६ ।१२	श	१६ ।३३	आ	१६ ।५८	कुंभ	सूर्य पुनर्वसु में १९ ।३०
६	६	श.	१४ ।१६	पू.भा.	१५ ।१७	सौ	१४ ।१३	मी ९ ।३६	भ. १४ ।१६ से २५ ।३३, मंग मृग में २७ ।५५
७	७	र	१२ ।५०	उ.भा.	१४ ।४७	शो	१२ ।०६	मीन	
८	८	च.	१२ ।१३	रे	१४ ।५३	अ	१० ।२९	मे १४ ।५३	पंचक समा. १४ ।५३, बुध पुनर्वसु २४ ।५९
९	९	म.	१२ ।१२	अश्वि	१५ ।४०	सु	८ ।२५	मेष	भ० २४ ।२९ से प्रा०
१०	१०	बु.	१२ ।४७	भ	१७ ।०२	धृ	८ ।५३	वृ २३ ।३०	भ. १२ ।४७ तक, स.सि.यो. सायं ५ ।०२ से प्रा.
११	११	गु.	१३ ।५५	कृ	१८ ।५३	शू.	८ ।४८	वृष	
१२	१२	शु.	१५ ।३२	रो	२१ ।०७	ग	९ ।०४	वृष	
१३	१३	श.	१७ ।२३	मृग	२३ ।३१	वृ	९ ।३३	मि १० ।२४	भ० १७ ।२३ से शु. कर्क बुध १६ ।२९
१४	१४	र.	१९ ।३२	आर्द्रा	२६ ।२३	ध्रु	१० ।१५	मिथुन	भ० ६ ।२९ पर समाप्त
१५	१५	च	२१ ।४७	पुर्न	२९ ।१८	व्या	१० ।५९	क २२ ।३५	बुध पुष्य (१) में ९ ।५८, सोमवती अमावस

ता०	शुद्ध आषाढ़ शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (१६ जुलाई से ३० जुलाई तक)								
जुला. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घं मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं मि	चंद्र संचार घं. मि	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * ऐंद्र २७ ।५९
१६	१	म.	२४ ।१३	पुष्य	पूरा दिन	ह	११ ।५०	कर्क	सूर्य कर्क में ७ ।१२, मंगल मिथुन में २९ ।४
१७	२	बु.	२६ ।३८	पुष्य	८ ।१७	व	१२ ।४६	कर्क	
१८	३	गु.	२९ ।०१	श्ले	११ ।१७	सि	१३ ।४६	सि ११ ।१७	शनि वक्री ८ ।३७
१९	४	शु.	पूरा दिन	म	१४ ।११	व्य	१४ ।३८	सिंह	भ० १८ ।०८ से शुरु, सूर्य पुष्य में १९ ।०२
२०	४	श.	७ ।१५	पू.फा.	१६ ।५२	वर	१५ ।०७	क २३ ।२६	भ० ७ ।१५ तक, शुक्र मृगशिर में ८ ।०८
२१	५	र.	९ ।०७	उ.फा.	१९ ।११	परि	१५ ।३२	कन्या	बुध आश्लेषा में २१ ।१८
२२	६	च.	१० ।३२	ह	२० ।५७	शि	१५ ।३२	कन्या	सायने सूर्य सिंह में ६ ।४९
२३	७	म.	११ ।१७	चि	२२ ।०४	सि	१५ ।०४	तु ९ ।२७	भ. ११ ।१७ से २३ ।१७ तक, बुधोदय A
२४	८	बु.	११ ।१६	स्वा.	२२ ।२४	सा	१३ ।५९	तुला	वक्री गुरु पू० षा० (१) में ७ ।४८
२५	९	गु.	१० ।२६	वि	२१ ।५७	शु	१२ ।२३	वृ १६ ।०४	A पश्चि. ७ ।४२
२६	१०	शु.	८ ।४८	अनु	२० ।४०	शु.	१० ।०३	वृश्चिक	भ० १९ ।३५ से शुरु, मंगल आर्द्रा में १७ ।३५
२७	११	श.	६ ।२५	ज्ये.	१८ ।४२	ब्र.०	६ ।४१	ध १८ ।४२	भ० ६ ।२५ तक
०	१२	श.	२९ ।२६	०	०	०	०	०	द्वादशी का क्षय ० ० ०
२८	१३	र.	२३ ।५४	मूला	१६ ।१५	वै	२४ ।०५	धनु	बुध मघा (१) सिंह में २८ ।२९
२९	१४	च.	२० ।०४	पू.षा.	१३ ।२३	वि	१९ ।५७	म १८ ।३७	भ० २० ।०४ से शुरु
३०	१५	म.	१६ ।०८	उ.षा.	१० ।१९	प्री	१५ ।३०	मकर	भ० ६ ।०६ तक, शुक्र मिथुन में १५ ।५२

ता०	श्रावण कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (३१ जुलाई से १४ अगस्त तक)								
जुला.	तिथि	वार	घं मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घं. मिन. में) * शोभ २७ ।५३
३१	१	बु	१२ ।१३	श्र ध	७ ।१२ २८ ।१९	आ	२० ।०९	कु १७ ।४६	पंचक शुरु १७ ।४६
अग. १	२	गु	८ ।३५	श	२५ ।५०	सौ	७ ।०३	कुंभ	भ० १८ ।५८ से २९ ।२१ तक
०	३	गु.	२९ ।२१	०	०	०	०	० ०	तृतीया का क्षय
२	४	शु	२६ ।३५	पू.भा.	२३ ।५३	अति	२४ ।०८	मी १८ ।२३	सूर्य आश्लेषा में १८ ।१०
३	५	श.	२४ ।३५	उ.भा.	२२ ।३५	सुक	२१ ।१०	मीन	
४	६	र.	२३ ।१७	रे.	२२ ।०१	धृ	१८ ।४९	मे २२ ।०१	भद्रा २३ ।१७ से शुरु, पंचक समा० २२ ।०१
५	७	च.	२२ ।५३	अ	२२ ।१४	शू	१७ ।११	मेष	भ. १० ।४२, व० शनि उ. भा. (३) में ११ ।२९
६	८	म.	२३ ।०९	भ	२३ ।११	गंड	१८ ।३५	वृ २९ ।३७	बुध पू. फा. (१) १२ ।२३
७	९	बु	२४ ।१०	कृ	२४ ।५६	वृ	१५ ।५९	वृष	शुक्र आर्द्रा में २५ ।३९
८	१०	गु	२५ ।४०	रो	२६ ।५५	ध्रु	१६ ।११	वृष	भ० १२ ।५६ से २५ ।४० तक
९	११	शु.	२७ ।३९	मृ.	२९ ।२६	व्या	१६ ।२८	मि १६ ।११	
१०	१२	श.	२९ ।५२	आ	पूरा दिन	हर्ष	१६ ।५३	मिथुन	
११	१३	र.	पूरा दिन	आ	८ ।१६	वज्र	१८ ।२९	क २८ ।२७	
१२	१३	च.	८ ।१७	पुर्न	११ ।१४	सि	१९ ।०१	कर्क	भ० ८ ।१७ से २१ ।३० तक
१३	१४	म.	१० ।४३	पुष्य	१४ ।१६	व्य	१९ ।५९	कर्क	हस्ते (२) राहु उ.भा. (४) केतु २९ ।०७
१४	३०	बु.	१३ ।०६	श्ले.	१७ ।११	व	२० ।५६	सि १७ ।११	हरियाली अमावस

ता०	श्रावण शुक्ल पक्ष वि. संवत २०५३ (१५ अगस्त से २८ अगस्त तक)								
अग. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि	चंद्र संचार घं. मि	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *सौभाग्य २७ ।३०
१५	१	गु.	१५ ।२५	मघा	१९ ।५९	परि	२१ ।३७	सिंह	मंगल पुनर्वसु में १८ ।५४
१६	२	शु.	१७ ।३०	पू.फा.	२२ ।३६	शि	२२ ।०९	क २९ ।११	सूर्य मघा (१) सिंह में १५ ।३६, बुध A
१७	३	श.	१९ ।१६	उ.फा.	२४ ।५६	सि	२२ ।३०	कन्या	A उ. फा. में १२ ।५०
१८	४	र	२० ।३७	ह	२७ ।०७	सा	२२ ।१७	कन्या	भ ७ ।५७ से २० ।३७ तक
१९	५	च.	२१ ।३०	चि	२८ ।१६	शु	२२ ।३२	तु १५ ।४२	बुध कन्या में १२ ।४२
२०	६	मं.	२१ ।५०	स्वा.	२९ ।०४	शुक	२१ ।३०	तुला	
२१	७	बु.	२१ ।३४	वि	२९ ।१४	ब्रह्म	२० ।०८	वृ २३ ।१२	भ २० ।२७ से शुरु
२२	८	गु.	२० ।३४	अनु	२८ ।४३	ऐं	१८ ।३१	वृश्चिक	भ९ ।०५ तक, सा० सूर्य कन्या में २६ ।२५,B
२३	९	शु.	१८ ।४९	ज्ये.	२७ ।३१	वै	१६ ।१७	ध २७ ।३१	शक भाद्रपद शुरु
२४	१०	श.	१६ ।२३	मूला	२५ ।४३	वि	१३ ।४४	धनु	भ० २७ ।०० से शुरु
२५	११	र	१३ ।३७	पू. षा.	२३ ।२६	प्री	१० ।३४	म २८ ।४३	भ १३ ।३७ तक
२६	१२	च.	१० ।२१	उ.षा.	२० ।४८	आ*	७ ।००	मकर	B शुक्र पुन में १४ ।३४, शरद् ऋतु शु.
२७	१३	मं.	६ ।४२	श्र	१७ ।५९	शो	२३ ।२७	कुं २८ ।३५	भ० २७ ।०१ से शुरु, पंचक शुरु २८ ।३५
०	१४	०	२७ ।०१	०	०	०	०	० ०	चतुर्दशी का क्षय
२८	१५	बु.	२३ ।२५	ध	१५ ।११	अति	१९ ।१२	कुंभ	भ० १३ ।१४ तक, रक्षाबन्धन

ता०	भाद्रपद कृष्ण पक्ष वि. संवत् २०५३ (२९ अगस्त से १२ सितंबर तक)								
अग.	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रहसंचार (घण्टा मिनटों में) *गंड २८ ।१६
२९	१	गु.	२० ।०५	शत.	१२ ।३०	सु	१४ ।१६	मी २८ ।४४	
३०	२	शु.	१७ ।०५	पू. भा.	१० ।०८	धृ	१० ।३१	मीन	भ० २७ ।४८ से शुरु, सूर्य पू. फा. में ११ ।३३
३१	३	श.	१४ ।३२	उ. भा.	८ ।१७	शू.*	६ ।४७	मीन	भ० १४ ।३२ तक, मंगल कर्क में ६ ।३९
सितं	४	र	१२ ।४२	रे.	७ ।०४	वृ	२५ ।४८	मे ७ ।०४	पंचक समा ७ ।४, शुक्र कर्क में १३ ।०४
२	५	चं.	११ ।४३	अश्वि	६ ।३७	ध्रु	२४ ।१५	मेष	
३	६	म.	११ ।२९	भ.	६ ।५२	व्या	२३ ।१६	वृ १३ ।०७	भ० ११ ।२९ से २३ ।४५ तक
४	७	बु.	१२ ।०१	कृ.	७ ।५४	हर्ष	२३ ।०७	वृष	गुरुमार्गी ११ ।४०, शुक्र पुष्य में १७ ।५१,C
५	८	गु.	१३ ।१३	रो.	९ ।४२	व	२३ ।१३	मि २२ ।५१	मंगल पुष्य में १२ ।४२ C बुध वक्री
६	९	शु.	१५ ।०९	मृग.	१२ ।००	सि	२३ ।५०	मिथुन	भ० २८ ।१४ से शुरु
७	१०	श.	१७ ।१९	आ.	१४ ।४८	व्य	२४ ।४७	मिथुन	भ० १७ ।१९ तक
८	११	र.	१९ ।४९	पुनं.	१७ ।४१	व	२५ ।४६	क १० ।५७	
९	१२	च.	२२ ।१७	पु.	२० ।३८	प	२६ ।५०	कर्क	
१०	१३	म.	२४ ।३८	श्ले.	२३ ।३३	शि	२७ ।५१	सि २३ ।३३	भ० २४ ।३८ से शुरु
११	१४	बु.	२६ ।५१	मघा	२६ ।१६	सि	२८ ।२४	सिंह	भ० १३ ।४५ तक, बुध अस्त पश्चिमे १७ ।३९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिंह	सूर्य [illegible]

ता०	भाद्रपद शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (१३ सितंबर से २७ सितंबर तक)								
सितं. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घं. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *उपा २९ ।२८, + धृति २९ ।२८
१३	१	शु.	३० ।०८	उ.फा.	पूरा दिन	शु.	२८ ।५२	क ११ ।१५	
१४	२	श.	पूरा दिन	उ.फा.	६ ।४७	शुक	२८ ।४४	कन्या	
१५	२	र	७ ।१६	ह.	८ ।३०	ब्रह्म	२८ ।१०	तु २१ ।०७	A शुक्र आश्लेषा में २६ ।२९
१६	३	चं.	७ ।५६	चित्रा.	९ ।४५	ऐं	२७ ।३६	तुला	भ० २० ।०४ से शुरु, सूर्य कन्या में १५ ।३१ A
१७	४	मं.	८ ।११	स्वा.	१० ।३५	वै	२२ ।४१	वृ २८ ।४७	भ० ८ ।११ तक
१८	५	बु.	७ ।४९	वि.	१० ।५२	वि	२४ ।४९	वृश्चिक	वक्री बुध सिंह में २८ ।२९
१९	६	वृ	७ ।०३	अ.	१० ।५८	प्री	२२ ।५३	वृश्चिक	भ० २९ ।४५ से शुरु
०	७	वृ	२९ ।४५	०	० ०	०	०	० ०	सप्तमी का क्षय
२०	८	शु.	२७ ।५७	ज्ये.	१० ।०२	आ	२० ।३९	ध १० ।०२	भद्रा १६ ।५२ से २० ।१५ तक
२१	९	श.	२५ ।४४	मू.	८ ।५४	सौ	१८ ।१२	धनु	
२२	१०	र	२३ ।०८	पू.षा*	७ ।२३	शो	१५ ।४७	म १२ ।५४	सायन सूर्य तुलायां २३ ।४२, सू. दक्षिण गोलार्द्ध
२३	११	च.	२० ।१५	श्र.	२७ ।१९	अ	१२ ।३७	मकर	भ० ९ ।४२ तक
२४	१२	मं.	१७ ।१७	ध.	२५ ।०३	सु+	८ ।५९	कुं १४ ।१२	पंचक शुरु १४ ।१२, बुधोदय पूर्वे १५ ।३७
२५	१३	बु.	१४ ।१०	श.	२२ ।४६	शू.	२५ ।२३	कुंभ	B २० ।५६ मंगल आश्लेषा में २४ ।२०
२६	१४	गु.	११ ।०९	पू. भा.	२० ।३७	गं	२१ ।३६	मी १५ ।०९	भ० ११ ।०९ से २१ ।४५ तक, सूर्य हस्त में B
२७	१५	शु.	८ ।२३	उ. भा.	१८ ।४६	वृ	१७ ।३८	मीन	बुध मार्गी ८ ।२५, प्रतिपदा का श्राद्ध

ता०	आश्विन कृष्ण पक्ष वि. संवत् २०५३ (२७ सितंबर से १२ अक्तूबर तक)								
सितं.	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में)
२७	१	शु.	२९ ।५७	०*	०	०	० ०	० ०	प्रतिपदा का क्षय
२८	२	श.	२८ ।०४	रेव	१६ ।५५	ध्रु	१४ ।३०	मे १६ ।५५	पंचक समा० २६ ।२३, शुक्र मघा (१) सिंहे C
२९	३	र	२६ ।४४	अ.	१६ ।११	व्या	११ ।५६	मेष	भ० १५ ।५५ से २६ ।४४ तक
३०	४	च.	२६ ।०६	भ.	१६ ।१५	हर्ष	९ ।४५	वृ २२ ।२२	बुध उ. फा. (१) में २१ ।३०
अक्तू.	५	मं.	२६ ।१४	कृ.	१६ ।४३	व	८ ।२१	वृष	C २३ ।२६, उभा (२) व शनि २५ ।५८
२	६	बु.	२७ ।०८	रो.	१७ ।५५	सि	७ ।२४	वृष	भ० २७ ।०८ से शुरु
३	७	गु.	२८ ।४२	मृ.	१९ ।४६	व्य	७ ।१८	मि ६ ।५१	भद्रा १५ ।५६ तक
४	८	शु.	पूरा दिन	आ.	२२ ।१२	वर	७ ।३४	मिथुन	बुध कन्या में [illegible] ।०२
५	८	श.	६ ।४२	पुर्न.	२५ ।००	परि	८ ।१४	क १८ ।१९	
६	९	र	९ ।०५	पुष्य	२७ ।५९	शि	९ ।०१	कर्क	भद्रा २२ ।३० से शुरु
७	१०	च	११ ।३६	श्ले.	पूरा दिन	सि	१० ।०५	कर्क	भद्रा ११ ।३६ तक
८	११	मं.	१४ ।०२	श्ले.	६ ।५५	सा	११ ।००	सि ६ ।५५	
९	१२	बु.	१६ ।१३	मघा	९ ।३८	शु	११ ।४२	सिंह	D शुक्र पू. फा. में १२ ।१०
१०	१३	गु.	१७ ।५९	पू.फा.	११ ।५९	शुव	१२ ।१०	क १८ ।४६	भ० १७ ।५९ से शुरु, सूर्य चित्रा में ९ ।५०, D
११	१४	शु.	१९ ।०५	उ.फा.	१५ ।०८	ब्रह्म	१२ ।०८	कन्या	भ० ६ ।३३ तक, बुध हस्त में १९ ।०

ता०	आश्विन शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१३ अक्तूबर से २६ अक्तूबर तक)

ता०	कार्तिक शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (१२ नवंबर से २५ नवंबर तक)

ता०	आश्विन शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (१३ अक्तूबर से २६ अक्तूबर तक)								
अक्तू. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि	चंद्र संचार घ. मि	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *सौभाग्य २८ ।२७
१३	१	र	१९ ।५२	चित्रा.	१६ ।०८	वै	१० ।५३	तुला	
१४	२	च	१९ ।३६	स्वा.	१६ ।३३	वि	९ ।४७	तुला	बुधास्त पूर्वे ७ ।५६
१५	३	मं	१८ ।५१	वि.	१६ ।३५	प्री	९ ।२१	वृ १० ।३५	भ० ३० ।१८ से शुरु,पू.षा(२)गुरु१८ ।४९,A
१६	४	बु	१७ ।४६	अ.	१६ ।१०	आ*	७ ।४८	वृश्चिक	भ० १७ ।४६ तक,सूर्य तुला में २७ ।२५,
१७	५	गु	१६ ।२५	ज्ये.	१५ ।२८	शो	२६ ।४३	ध १५ ।२८	A हस्ते १ राहु उ.भा.(३) केतु २६ ।५८
१८	६	शु	१४ ।४३	मूला.	१४ ।२९	अ	२३ ।४९	धनु	
१९	७	श.	१२ ।४४	पू. षा.	१३ ।१५	सु	२१ ।२३	म १८ ।५५	भ.१२ ।४४से२३ ।४१,बुधचित्रामें१६ ।४८
२०	८	र.	१० ।३७	उ. षा.	११ ।५३	धृ	१८ ।३९	मकर	
२१	९	च.	८ ।२०	श्र.	१० ।३६	शू	१५ ।४८	कु २१ ।३९	पंचक शुरु२१ ।३९,शुक्र उ.फा.में१८ ।४० B
०	१०	च.	३० ।०१	०	०	०	०	०	दशमी का क्षय ० B दशहरा
२२	११	म.	२७ ।४०	ध.	८ ।४२	ग	१२ ।३५	कुंभ	भ० १६ ।५१ से, २७ ।४० तक
२३	१२	बु	२५ ।२६	शत पू.भा.	७ ।०६ २९ ।३३	वृ ध्रु	९ ।२७ २९ ।५८	मी २३ ।५६	सूर्य स्वाती में २० ।२३,बुध तुला में १४ ।२० सायने सूर्य वृश्चिके ८ ।४५,हेमन्त ऋतु
२४	१३	गु	२३ ।१४	उ.भा.	२८ ।१०	व्या	२७ ।४५	मीन	शुक्र कन्या में १३ ।४०
२५	१४	शु	२१ ।२०	रे.	२७ ।०२	ह	२४ ।१७	मे २७ ।०२	भ०२१ ।२० से शुरु,पंचक समाप्त२७ ।०२
२६	१५	श.	१९ ।४२	अश्वि	२६ ।१६	व	२१ ।३३	मेष	भ० ०८ ।३२ तक, श्री वाल्मीकि जय०

ता०	कार्तिक कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२७ अक्तूबर से ११ अक्तूबर तक)								
अक्तू.	तिथि	वार	घ मि	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में)
२७	१	र.	१८ ।३२	भर	२५ ।५६	मि	१९ ।२७	मेष	बुध स्वाती में १३ ।०४
२८	२	च.	१७ ।५६	कृ.	२६ ।१०	व्य	१७ ।४३	वृ ८ ।००	भ० २९ ।५७ से शुरु
२९	३	म.	१७ ।५९	रो.	२७ ।०२	व	१६ ।२५	वृष	भ०१७ ।५९,गणेश४(चंद्रोदय८ ।२९पर)
३०	४	बु	१८ ।३५	मृग.	२८ ।२४	परि	१५ ।५३	मि १५ ।४४	
३१	५	गु	१९ ।५७	आ.	३० ।२८	शि	१५ ।४२	मिथुन	
नव.	६	शु	२१ ।५१	पुन	पूरा दिन	सि	१६ ।१९	क २६ ।२७	भ० २१ ।५१ से शुरु, शुक्र हस्त में २१ ।०२
२	७	श.	२४ ।०७	पुन	९ ।०४	सा	१६ ।५०	कर्क	भ० ११ ।०० तक
३	८	र	२६ ।४०	पु.	११ ।५७	शु	१७ ।४१	कर्क	व्रत अहोई अष्टमी
४	९	च.	२९ ।१०	श्ले.	१४ ।५८	शु	१८ ।३८	सि १४ ।५८	बुध विशाखा में १६ ।१६
५	१०	म.	पूरा दिन	म.	१७ ।५१	ब्र	१९ ।२४	सिंह	भ०१८ ।१८ से शु, सूर्य विशाखा में २८ ।३०
६	१०	बु	७ ।२५	पू.फा.	२० ।२१	ऐ	१९ ।५४	क २६ ।४७	भ ७ ।२५ तक
७	११	गु	९ ।१२	उ.फा.	२२ ।२१	वै	२० ।०३	कन्या	गुरु पू. षा (३) में ७ ।४२
८	१२	शु	१० ।२५	हस्त	२३ ।४२	वि	१९ ।४२	कन्या	
९	१३	श.	१० ।५३	चि.	२४ ।२३	प्री	१८ ।४५	तु १२ ।०३	भ० १० ।५३ से २२ ।४६ तक
१०	१४	र	१० ।३८	स्वा.	२४ ।२१	आ	१७ ।२५	तुला	बुध वृश्चिक में २२ ।५१, दीवाली
११	३०	च.	९ ।४८	विशा	२३ ।५१	सौ	१५ ।२१	वृ १८ ।०७	सोमवती अमावस, विश्वकर्मा पूजन

ता०	कार्तिक शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (१२ नवंबर से २५ नवंबर तक)								
नवं. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश * धृति २९ ।०३
१२	१	मं.	८ ।२६	अनु	२३ ।०३	शो	१२ ।४९	वृश्चिक	शुक्र चित्रा में १९ ।४९, मंगल पूफाया A
०	२	म.	३० ।४०	०	० ०	०	० ०	० ०	द्वितीया का क्षय
१३	३	बु.	२८ ।३९	ज्ये०	२१ ।४८	अ	१० ।१३	ध २१ ।४८	A ९ ।०५, बुध अनुराधा में २५ ।५६
१४	४	गु	२६ ।२४	मू.	२० ।२०	सु*	७ ।२५	धनु	भ० १५ ।३२ से २६ ।२४
१५	५	शु	२४ ।०८	पू. षा.	१८ ।४६	शू	२५ ।४१	म २४ ।२२	सूर्य वृश्चिक में २७ ।१२
१६	६	श.	२१ ।५३	उ. षा.	१७ ।१३	ग	२२ ।४३	मकर	
१७	७	र	१९ ।४४	श्र.	१५ ।४३	वृ	१९ ।४५	कुं २७ ।०३	भ.१९ ।४४ से शु. पंचक प्रा० २७ ।०३
१८	८	च.	१७ ।४१	ध.	१४ ।२३	धु	१६ ।५३	कुंभ	शुक्र तुला में ६ ।२७, भद्रा ६ ।४२ तक
१९	९	म.	१५ ।४८	श.	१३ ।११	व्या	१४ ।१७	मी ३० ।२४	सूर्य अनुराधा में १० ।२०
२०	१०	बु	१४ ।११	पू.भा.	१२ ।०९	ह	११ ।१७	मीन	भ० २५ ।२४ से शुरु
२१	११	गु	१२ ।३८	उ.भा.	११ ।२२	व सि	८ ।५१ ३० ।२९	मीन	भ० १२ ।३८ तक, बुध ज्ये० में १७ ।१४, सायने सूर्य धनु में २९ ।५४
२२	१२	शु	११ ।२८	रे.	१० ।४८	व्य	२८ ।२५	मे १० ।४८	पंचक समाप्त १० ।४८
२३	१३	श.	१० ।३४	अ.	१० ।२९	व	२६ ।३३	मेष	शुक्र स्वाती १६ ।१२
२४	१४	र.	९ ।५०	भ.	१० ।२८	परि	२४ ।५२	वृ १६ ।३४	भ० ९ ।५० से २१ ।४५ तक
२५	१५	च.	९ ।४१	कृ	१० ।५३	शि	२३ ।४३	वृष	गुरुपू.षा(४)में७ ।५३,बुधोदयपश्चिमे९ ।५०

ता०	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२६ नवंबर से १० दिसंबर तक)								
नवं.	तिथि	वार	घ. मि	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घं. मि. में) *ज्येष्ठा ३० ।३५
२६	१	म.	९ ।५६	रो.	११ ।४२	सि	२३ ।०७	मि २४ ।२१	
२७	२	बु	१० ।३९	मृ.	१३ ।०१	सा	२२ ।४९	मिथुन	भ. २३ ।१८ से शुरु
२८	३	गु.	११ ।५८	आ.	१४ ।५४	शुभ	२२ ।५१	मिथुन	भ. ११ ।५८ से तक
२९	४	शु.	१३ ।४९	पुन	१७ ।२४	शुक्ल	२३ ।३४	क १० ।४६	स. सि. योग १७ ।२४ तक
३०	५	श.	१६ ।०७	पु.	२० ।११	ब्रह्म	२४ ।१९	कर्क	बुध मूले (१) धनु में १३ ।४७
दिसं.	६	र.	१८ ।४३	श्ले.	२३ ।११	ऐं	२५ ।१३	सि २३ ।११	भ. १८ ।४३ से शुरु
२	७	च.	२१ ।२३	म.	२६ ।१४	वै	२६ ।०३	सिंह	भ ८ ।०४ तक, सूर्य ज्येष्ठ में १४ ।४८
३	८	म.	२३ ।५१	पू.फा.	२९ ।०४	वि	२६ ।४२	सिंह	शनि मार्गी ८ ।४५
४	९	बु	२५ ।५१	उ.फा.	पूरा दिन	प्री	२७ ।०५	क ११ ।४०	शुक्र विशाखा में ११ ।४१
५	१०	गु	२७ ।१३	उ.फा.	७ ।२५	आ	२७ ।०३	कन्या	भ० १४ ।३३ से २७ ।१३ तक
६	११	शु.	२७ ।४८	ह.	९ ।१०	सौ	२६ ।२९	तु २१ ।३७	B २२ ।५८, बुध पूषाया में २२ ।११
७	१२	श.	२७ ।३२	चि.	१० ।०४	शो	२५ ।१८	तुला	स. सि. योग १० ।०४ मे प्रा.
८	१३	र	२६ ।३०	स्वा.	१० ।११	अति	२३ ।२४	वृ २७ ।४३	भ० २६ ।३० से शुरु
९	१४	च.	२४ ।४६	विशा	९ ।३५	सु	२१ ।०१	वृश्चिक	भ. १३ ।३९ तक, मंगल उ. फा. (१) में B
१०	३०	म.	२२ ।२७	अनु*	८ ।२०	धृ	१८ ।०३	ध ३० ।३५	गुरु उ. षा. (१) में ३१ ।१५

ता०	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष वि. संवत् २०५३ (११ दिसंबर से २४ दिसंबर तक)								
दिसं. १९९६	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *ध्रुव २८।१७
११	१	बु.	१९।४६	मूला	२८।३१	शू	१४।४५	धनु	
१२	२	गु	१६।५७	पू. षा.	२६।१७	गंड	११।१९	धनु	शुक्र वृश्चिक में ११।५१
१३	३	शु.	१२।५४	उ. षा.	२४।०६	वृद्धि	७।३३	म ७।४४	भद्रा २४।२६ से शुरु
१४	४	श.	१०।५९	श्र.	२१।५१	ध्रुव	२४।२७	मकर	भ. १०।५९ तक, शुक्र अनुराधा में २७।४७
१५	५	र.	८।१५	धनि	२०।१०	ह	२१।१९	कुं ९।०६	सूर्यमूले(१) धनुः१७।४८ पंच.शु.९।०६
०	६	र	२९।५३	०	००	०	०	००	षष्ठी का क्षय ० ० ०
१६	७	चं.	२७।५५	श.	१८।४१	व	१८।१५	कुंभ	भ. २७।५५ से शु.
१७	८	मं.	२६।२०	पू. भा.	१७।३६	सि	१५।२४	मी ११।५२	भ. १५।०८ तक, मंगल कन्या में १७।०३ A
१८	९	बु.	२५।१०	उ. भा.	१६।५३	व्य	१२।५१	मीन	A उ. फा. ४ राहु उ. भा. २ केतु २२।५३
१९	१०	गु.	२४।२२	रे.	१६।३५	व	१०।३३	मे १६।३५	पंचक समाप्त १६।३५
२०	११	शु.	२४।०१	अ.	१६।४१	प	८।४७	मेष	भ. १२।१२ से २४।०१ तक
२१	१२	श.	२३।५९	भ.	१७।२६	शि	७।४३	वृ २३।२९	सायन सूर्य मकर में १९।१५ सूर्यनारायणे B
२२	१३	र.	२४।१९	कृ.	१७।४०	सा	२८।४९	वृष	B शिशिर ऋतु प्रा.
२३	१४	चं.	२५।०४	रो.	१९।२६	शु	२८।३५	वृष	भ. २५।०४ से शुरु
२४	१५	मं.	२६।१३	मृग	२०।४४	शु	२८।१३	मि ८।०५	भ. १३।३९ तक, बुध वक्री ८।२०

ता०	पौष कृष्ण पक्ष वि. संवत् २०५३ (२५ दिसंबर से ९ जनवरी (१९९७) तक)								
दिसं.	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घण्टा मिनटों में)
२५	१	बु.	२७।४७	आर्द्रा	२२।४१	ब्र	२८।१७	मिथुन	शुक्र ज्येष्ठा में २०।३९
२६	२	गु	२९।४३	पुनं	२५।०३	ऐं	२९।११	क १८।२८	स. सि. योग सू. उ. से
२७	३	शु.	पूरा दिन	पु.	२७।४५	वै	२९।५१	कर्क	
२८	३	श.	८।०३	श्ले.	३०।४३	वि	३०।५३	सि ३०।४३	भ. १८।५३ से शु., बुधास्त पश्चि. २२।५१ +
२९	४	र	१०।४१	मघा	पूरा दिन	प्री	पूरा दिन	सिंह	भ. ८।०३ तक, सूर्य पू. षा. में ११।५७
३०	५	चं	१३।२२	मघा	९।५०	प्री	७।४७	सिंह	+ मकरे गुरु ७।०१
३१	६	मं	१६।०४	पू. फा.	१२।५५	आ	८।४१	क १९।३७	गंडमूल प्रातः ९।५० तक
जन.	७	बु	१८।२५	उ. फा.	१५।४२	सौ	९।२०	कन्या	भ. १६।०४ से २९।१५ तक
२	८	गु	२०।०७	हस्त	१७।५८	शो	९।३४	तु ३०।४०	
३	९	शु	२१।०४	चि.	१९।२३	अ	९।२६	तुला	बुध पू. षा. में २७।५६
४	१०	श.	२१।०८	स्वा.	२०।०५	सु	८।४२	तुला	
५	११	र	२०।२०	विशा	१९।५६	धृ शू	७।३५ २९।२३	वृ १३।५८	भ. ९।०६ से २१।०८ तक मूले (१) धनुषि शुक्र १२।२८, मूले ४ व बुध १५।३८
६	१२	चं	१८।४१	अनु	१८।५७	ग	२६।३७	वृश्चिक	
७	१३	मं	१६।१८	ज्ये.	१७।१३	वृ	२३।२५	ध १७।१७	भ. १६।१८ से २६।५१, बुधोदय पूर्व १७।४८
८	१४	बु	१३।२४	मूला	१५।०५	ध्रु	१९।३६	धनु	गंडमूलादि १५।०५ तक गुरु अस्त १४।५६
९	३०	गु	९।४१	पू. षा.	१२।२८	व्या	१५।३१	म २७।४६	गुरु उषा (३) में २७।३७

ता०	पौष शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (९ जनवरी से २३ जनवरी तक)								
जन. १९९७	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *सिद्धि (क्षय) २९।२१
९	१	०	३०।२५	०	०	०	०	००	प्रतिपदा का क्षय
१०	२	शु	२६।५२	उ. षा. श्र.	९।३८ ३०।४९	ह	११।१०	मकर	सूर्य उ. षा. में २१।५८
११	३	श.	२३।२९	ध.	२८।१३	वज्र०	७।३७	कुं १७।३०	पंचक शुरु १७।३०
१२	४	र	२०।२१	श.	२५।५८	व्य	२३।३२	कुंभ	भ० ९।३५ से २०।२१ तक
१३	५	चं.	१७।४२	पू. भा.	२४।११	वर	२०।१७	मी १८।३८	सूर्य मकर में २८।३०, बुध मार्गी ८।५०
१४	६	मं.	१५।३५	उ. भा.	२२।५७	परि	१७।२३	मीन	A २२।१३ शुक्रः पूषायां २७।५८
१५	७	बु	१४।०३	रे.	२२।१३	शि	१४।४३	मे २२।१३	भ. १४।३ से २५।३७ तक, पंचक समा. A
१६	८	गु.	१३।१०	अ.	२२।०६	सि	१२।४१	मेष	गंडमूल २२।०६ तक
१७	९	शु.	१२।५०	भ.	२२।४९	सा	११।१९	वृ ९।५७	मंगल हस्त में २४।२३
१८	१०	श.	१३।०५	कृ.	२३।४३	शुभ	१०।०७	वृष	भ. २५।२८ से शुरु
१९	११	र	१३।५०	रो.	२५।१०	शु	९।२७	वृष	भ. १३।५० तक, सायन सूर्य कुंभ में २९।४२
२०	१२	चं.	१५।००	मृ.	२७।००	ब्र	९।१७	मि १४।०५	
२१	१३	मं.	१६।३१	आ.	२९।१३	ऐं	९।२२	मिथुन	बुध पू. षा. (१) में १६।२२
२२	१४	बु.	१८।२९	पुनं	पूरा दिन	वै	९।३८	क २५।०३	भ. १८।२९ से शुरु B (४) गुरु २१।४९
२३	१५	गु.	२०।४२	पुनं	७।४०	वि	१०।१५	कर्क	भ. ७।३६ तक, सूर्य श्रवण में २४।१६, उ.षा. B

ता०	माघ कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२४ जनवरी से ७ फरवरी तक)								
जन.	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मिं.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घं मिनटों में) *हर्ष २८।३३
२४	१	शु.	२३।०९	पु.	१०।२८	प्री	१०।५३	कर्क	गंडमूल १०।२८ से प्रा०
२५	२	श.	२५।४८	श्ले.	१३।२७	आ	११।३७	सि १३।२७	
२६	३	र	२८।२९	म.	१६।३३	सौ	११।५७	सिंह	भ. १५।०९ से २८।२९, शुक्र उषा में १९।४२
२७	४	चं.	३१।०७	पू. फा.	१९।५७	शो	१२।५५	क २६।३७	श्री गणेश ४ (चंद्रोदय रात्रि ९।१६ पर)
२८	५	मं.	पूरा दिन	उ. फा.	२२।३४	अ	१४।३२	कन्या	
२९	५	बु.	९।३१	ह.	२५।१२	सु	१४।१७	कन्या	शुक्र मकर में ११।४०
३०	६	गु.	११।३१	चि.	२७।१८	धृ	१४।४९	तु १४।१५	भ. ११।३१ से २४।११ तक
३१	७	शु.	१२।५२	स्वा.	२८।३२	शू	१४।३७	तुला	
फर.	८	श.	१३।१८	वि.	२९।१५	ग	१३।५१	वृ २३।०४	
२	९	र	१३।०८	अनु	२९।००	वृ	१२।३८	वृश्चिक	C बुध उ. षा. में १३।३३
३	१०	चं	११।५६	ज्ये	२७।५४	ध्रु	१०।२३	ध २७।५४	भ. २४।३२ से प्रा., गुरोदय १७।३२, C
४	११	मं.	९।५८	मू.	२६।०६	व्या०	७।४७	धनु	भ. ११।५६ तक, शनि उ. भा. (३) में १५।१६
०	१२	मं.	३१।१४	०	०	०	०	०	बुध मकर में २५।२९
५	१३	बु.	२८।०१	पू. षा.	२३।४२	ह	२४।२३	म २९।००	द्वादशी का क्षय D मंगल वक्री १५।३१
६	१४	गु.	२४।२९	उ. षा.	२०।५४	सि	२०।४२	मकर	भ. २८।०१ से प्रा., सूर्य धनिष्ठा में २७।२७ D
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गुरु श्रवण में २७।४४ शुक्र श्रवण में ११।०६

ता०	माघ शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (८ फरवरी ...

फाल्गुन शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (९ मार्च से २४ मार्च तक)

माघ शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (८ फरवरी से २२ फरवरी तक)

फर. १९९७	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चंद्र संचार घ. मि.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *शिव २७ ।४३
८	१	श.	१६ ।५०	धनि	१४ ।५५	वर	११ ।२१	कुंभ	
९	२	र.	१३ ।१३	शत	१२ ।०२	परि॰	७ ।३७	मी २८ ।६	
१०	३	च.	९ ।५४	पू. भा.	९ ।२८	सि	२३ ।४५	मीन	भद्रा २० ।३० से ३१ ।०५ तक
०	४	चं.	३१ ।०५	०	०	०	०	०	चतुर्थी का क्षय
११	५	मं.	२८ ।५३	उ.भा. रेव.	७ ।२० २१ ।४९	सा	२० ।२७	मे २१ ।४९	पंचक समाप्त २१ ।४९, बुध श्रवण में २५ ।४१
१२	६	बु.	२७ ।२०	अ.	२१ ।००	शु	१७ ।५६	मेष	सूर्य कुम्भ में १७ ।३०
१३	७	गु.	२६ ।३६	भ.	२८ ।५७	शु	१५ ।५७	मेष	भ. २६ ।३६ से शुरु
१४	८	शु.	२६ ।३४	कृ.	२९ ।३५	ब्र	१४ ।२३	वृ ११ ।०६	भद्रा १४ ।३५ तक
१५	९	श.	२७ ।१२	रो.	३० ।५८	ऐं	१३ ।४५	वृष	
१६	१०	र.	२८ ।२८	मृ.	पूरा दिन	वै	१३ ।२९	मि १९ ।५२	शुक्र धनि. (१) में २६ ।५६
१७	११	चं.	३० ।१३	मृ.	८ ।४५	वि	१३ ।४१	मिथुन	भ. १७ ।२० से ३० ।१३ तक
१८	१२	मं.	पूरा दिन	आ	११ ।०६	प्रीति	१३ ।४७	क ३१ ।०७	उ.फा ३ राहु, उ.भा १ केतु १३ ।२३, सा. सूर्य A
१९	१२	बु.	८ ।२२	पुर्न	१३ ।५६	आ	१४ ।४२	कर्क	सूर्य शतभिषा में ७ ।५७ A मीने २० ।०८
२०	१३	गु.	१० ।४५	पु.	१६ ।३९	सौ	१५ ।२९	कर्क	बुध धनिष्ठा में १६ ।५३
२१	१४	शु.	१३ ।२०	श्ले.	१९ ।४२	शो	१६ ।२३	सि १९ ।५०	भ. १३ ।२० से २६ ।३९ तक, श्रवणे(२) गुरु B
२२	१५	श.	१५ ।५८	मघा	२२ ।४६	अ	१७ ।१९	सिंह	शु. कुंभे १० ।४६, B १७ ।१२ शुक्रा. १० ।१५

फाल्गुन कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२३ फरवरी से ९ मार्च तक)

फर.	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घ. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घं. मिटों में) *वर २८ ।२५
२३	१	र.	१८ ।३४	पू.फा.	२५ ।३५	सु	१७ ।४९	सिंह	बुधास्त पूर्व ८ ।५५
२४	२	च.	२१ ।०१	उ.फा.	२८ ।३८	धृति	१८ ।५०	क ८ ।२८	बुध. कुंभे १८ ।२९, उफा (४) मंग. ७ ।०५
२५	३	मं.	२३ ।१७	ह	पूरा दिन	शू	१९ ।१३	कन्या	भ. १० ।०९ से २३ ।१७ तक
२६	४	बु.	२५ ।०७	ह.	७ ।१२	गंड	१९ ।२७	तु २० ।१९	
२७	५	गु.	२६ ।२१	चि	९ ।२४	वृ	१९ ।२३	तुला	शुक्र शतभिषा में १८ ।४८
२८	६	शु.	२७ ।१६	स्वा.	११ ।०७	ध्रु	१८ ।५२	वृ २९ ।५८	भ. २७ ।१६ से शुरु, बुध शत(१) में १६ ।०५
मार्च	७	श.	२७ ।२३	वि	१२ ।१३	व्या	१८ ।०३	वृश्चिक	भ. १५ ।१९ तक
२	८	र.	२६ ।२५	अ.	१२ ।३८	ह	१६ ।२३	वृश्चिक	गंडमूलादि १२ ।३८ तक
३	९	च.	२५ ।२१	ज्ये.	१२ ।२१	व	१४ ।४४	ध १२ ।२१	
४	१०	मं.	२३ ।२९	मू.	११ ।२५	सि	११ ।५२	धनु	भ १२ ।२० से २३ ।१९, सूर्य पू.भा. में १२ ।२०
५	११	बु.	२० ।४२	पू. षा.	९ ।४८	व्य॰	८ ।४३	म १५ ।१७	शनि. उ. भा. (४) में २५ ।१२
६	१२	गु.	१७ ।३७	उ.षा. श्र.	७ ।४१ २९ ।०४	व	२५ ।२०	मकर	C ५ ।५० बुध पू. भा. में २५ ।०८
७	१३	शु.	१४ ।०७	ध.	२६ ।१६	शि	२१ ।१३	कु १५ ।४०	भ १४ ।७ से २६ ।१३ तक, पंचक शुरु C
८	१४	श.	१० ।२८	शत.	२३ ।२२	सि	१६ ।४८	कुंभ	गुरु श्रवण में (३) में २४ ।३२
९	३०	र.	६ ।५१	पू. भा.	२० ।३४	सा	१२ ।५५	मी १५ ।१६	स. सि. यो रात्रि ८ ।३४ से प्रा.

फाल्गुन शुक्ल पक्ष, वि. संवत् २०५३ (९ मार्च से २४ मार्च तक)

मार्च १९९७	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि	चंद्र संचार घ. मि	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश *शुक्ल २८ ।५९
९	१	र	२७ ।१५	० ०	०	०	० ०	० ०	प्रतिपदा का क्षय
१०	२	चं.	२४ ।०६	उ.भा.	१८ ।०२	शुभ	८ ।१७	मीन	शुक्र पू. भा. (१) में ११ ।१७
११	३	म.	२१ ।१९	रे.	१५ ।५५	ब्र	२५ ।३८	मे १५ ।५५	पंचक समाप्त १५ ।५५
१२	४	बु.	१९ ।०४	अ.	१४ ।२०	ऐं	२२ ।५६	मेष	भ. ८ ।११ से १९ ।४ तक, बुध मीनें ३० ।२५
१३	५	गु.	१७ ।४०	भ.	१३ ।२५	वै	२० ।५७	वृ १९ ।२४	शनि अस्त पश्चिमे १९ ।१५
१४	६	शु.	१७ ।०१	कृ.	१३ ।२०	वि	१९ ।२४	वृष	सूर्य मीने १४ ।२५, बुध उ. भा. में २३ ।०६
१५	७	श.	१७ ।१०	रो.	१४ ।०१	प्री	१८ ।४८	मि २६ ।४३	भ. १७ ।१० से २९ ।३९ तक
१६	८	र.	१८ ।०७	मृ.	१५ ।२३	आ	१८ ।४९	मिथुन	होलाष्टक शुरु
१७	९	चं.	१९ ।४६	आ.	१७ ।३०	सौ	१९ ।०२	मिथुन	सूर्य उ. भा. (१) में २२ ।४४
१८	१०	म.	२१ ।५३	पुर्न	२० ।०३	शो	१९ ।५७	क १३ ।२५	शुक्र मीन रा. में ११ ।५०
१९	११	बु	२४ ।२१	पु.	२२ ।५६	अ	२० ।२४	कर्क	भ. ११ ।०७ से २४ ।२१ तक
२०	१२	गु.	२६ ।५८	श्ले.	२६ ।०१	सु	२१ ।१७	सि २६ ।०१	शुक्र उ. भा. में २७ ।४९, सा. सूर्य मेष में A
२१	१३	शु.	२९ ।३२	म.	२९ ।०४	धृ	२१ ।४४	सिंह	बुध रेवती में १६ ।१०
२२	१४	श.	पूरा दिन	पू.फा.	पूरा दिन	शू	२२ ।३२	सिंह	A १९ ।१८ बसंत ऋतु प्रा.
२३	१४	र.	८ ।०४	पू.फा.	८ ।०५	ग	२३ ।१०	क १४ ।४६	भ ८ ।०४ से २१ ।१२ तक, स. सि. योग
२४	१५	च.	१० ।१७	उ.फा.	१० ।४५	वृ	२३ ।४८	कन्या	मंगल सिंह में २७ ।०८, होली पर्व

चैत्र कृष्ण पक्ष, वि. संवत् २०५३ (२५ मार्च से ७ अप्रैल तक)

मार्च	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	योग	घं. मि.	चंद्र संचार	ग्रह संचार (घं मिन. में) *साध्य ३० ।०९
२५	१	मं.	१२ ।११	हस्त	१३ ।०८	धृ	२४ ।४४	तु २६ ।०९	गुरु श्रवण में १७ ।३०, बुधोदय ६ ।४७
२६	२	बु.	१३ ।४०	चि.	१५ ।०८	व्या	२४ ।३२	तुला	भ. २६ ।१३ से शुरु
२७	३	गु.	१४ ।४५	स्वा.	१६ ।४३	ह	२४ ।१५	तुला	भ. १४ ।४५ तक
२८	४	शु.	१५ ।२०	वि.	१७ ।५१	व	२३ ।१५	वृ ११ ।३४	बुध अश्वि (१) मेष में १९ ।५८
२९	५	श.	१५ ।२२	अ.	१८ ।२८	सि	२२ ।०७	वृश्चिक	
३०	६	र.	१४ ।५८	ज्ये.	१८ ।१८	व्य	२० ।११	ध १८ ।१८	भ. १४ ।५८ से २६ ।३१ तक
३१	७	च.	१४ ।०२	मूल	१८ ।०४	व	१८ ।०१	धनु	सूर्य रेवती में ९ ।३०, शुक्र रेवती में २१ ।१४
अप्रै.	८	मं.	१२ ।३३	पू. षा.	१७ ।१८	प	१४ ।५८	म २२ ।५८	शनि रेवती में २३ ।३०
२	९	बु.	१० ।२१	उ. षा.	१५ ।५६	शि	१२ ।३२	मकर	भ. २० ।१४ से शुरु
३	१०	गु.	९ ।१०	श्रव	१४ ।०८	सि	९ ।१५	कु २५ ।०६	भ. ९ ।१० तक, पंचक शुरु २५ ।०६
०	११	गु.	२१ ।०७	०	० ०	०	० ०	० ०	एकादशी का क्षय ० ० ०
४	१२	शु.	२६ ।०३	धनि	१२ ।०३	शु	२६ ।१२	कुंभ	
५	१३	श.	२२ ।५१	शत	९ ।४२	शु	२२ ।१२	मी २५ ।५४	भद्रा २२ ।५१ से शुरु
६	१४	र.	१९ ।३९	पू.भा उ.भा.	७ ।१५ २८ ।५१	ब्र	१८ ।०७	मीन	भद्रा ९ ।१४ तक
७	३०	च.	१६ ।३३	रेव	२६ ।४०	ऐं	१४ ।२३	मे २६ ।४०	पंचक समाप्त २६ ।४०, सोमवती अमावस्या

प्रातः साढ़े पाँच (५।३० घ. मि.) से किसी अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पाँच के ग्रह स्पष्टों से अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी तालिका द्वारा समुचित संस्कार करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण :—मान लीजिए आपको २९ जून १९९० रात्रि १२ बजे का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है। इसके लिए ३० जून प्रातः ५/३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ५/३० घंटे की गति घटायेंगे। ३० जून के सू. स्पष्ट में से २९ जून का स्पष्ट घटा देने से हमें २४ घण्टे की गति पता चलेगी जोकि ५७'/१४" कलादि मिली। तालिका में देखने से हमें ५७ कला के सामने ५ घण्टे के नीचे हमें 11'-52" मिले इसमें ३० मिनट की गति 1'—11" कलादि जमा कर देने से हमें 13'-3" कलादि योग प्राप्त हुआ। अब १४" विकला (५७/१४") के संस्कार समीपस्थ १५ कला के (5-30 घंटे) संस्कार ३ विकला जमा कर देने से हमें 13'—6" कलादि साढ़े पाँच घण्टे की गति प्राप्त हुई इसको ३० जून साढ़े पाँच के सूर्य स्पष्ट (२।१४।१३।२६) में से घटा देने से रात्रि १२ बजे का सूर्य स्पष्ट २।१४।०० राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाल सकते हैं। ग्रह स्पष्ट सम्बन्धी विस्तारपूर्वक और अधिक जानकारी के लिए हमारी पुस्तक "ज्योतिष तत्त्व" हमारे ज्योतिष कार्यालय से मंगवा कर पढ़ें।

—शुभ चिन्तक पं० पन्ना लाल ज्यो० जालन्धर।

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दैनिक गति (२४ घण्टे)	गति (३० मिट)	गति (१ घंटा)	गति (२ घंटे)	गति (३ घंटे)	गति (४ घंटे)	गति (५ घंटे)	गति (६ घंटे)	गति (७ घंटे)	दैनिक गति (२४ घण्टे)	गति (३० मिट)	गति (१ घंटा)	गति (२ घंटे)	गति (३ घंटे)	गति (४ घंटे)	गति (५ घंटे)	गति (६ घंटे)	गति (७ घंटे)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0'-04"	0-07"	0'.15"	0.22"	0.30"	0.37"	0.45"	0.52"	61'	1.16"	2.32"	5.05"	7.37"	10.10"	12.42"	15.15"	17.47"
5'	0.06"	0.12"	0.25"	0.37"	0.50"	1.02"	1.15"	1.27"	63'	1.19"	2.37"	5.15"	7.52"	10.30"	13.07"	15.45"	18.22"
7'	0.09"	0.17	0.35"	0.52"	1.10"	1.27"	1.45"	2.02"	65'	1.21"	2.42"	5.25"	8.07"	10.50"	13.32"	16.15"	18.57"
9'	0.11"	0.22"	0.45"	1.07"	1.30"	1.52"	2.15"	2.37"	67'	1.24"	2.47"	5.35"	8.22"	11.10"	13.57"	16.45"	19.25"
11'	0.14"	0.27"	0.55"	1.22"	1.50"	2.17"	2.39"	3.12"	69'	1.26"	2.52"	5.45"	8.37"	11.30"	14.22"	17.15"	20.07"
13'	0.16"	0.32"	1.05"	1.37"	2.10"	2.42"	3.15"	3.47"	71'	1.29"	2.57"	5.55"	8.52"	11.50"	14.57"	17.45"	20.42
15'	0.19"	0.37"	1.15"	1.52"	2.30"	3.37"	3.45"	4.22"	73'	1.31"	3.02"	6.05"	9.07"	12.10"	15.12"	18.15"	21.17"
17'	0.21"	0.42"	1.25"	2.07"	2.50"	3.32"	4.15"	4.57"	75'	1.34"	3.07"	6.15"	9.22"	12.30"	15.37"	18.45"	21.52"
19'	0.24"	0.47"	1.35"	2.22"	3.10"	3.57"	4.45"	5.32"	77'	1.36"	3.12"	6.25"	9.37"	12.50"	16.02"	19.15"	22.27"
21'	0.26"	0.52"	1.45"	2.37"	3.00"	4.22"	5.15"	6.07"	79'	1.39"	3.17"	6.35"	9.52"	13.10"	16.27"	19.45"	23.02"
23'	0.29"	0.57"	1.55"	2.52"	3.50"	4.47"	5.45"	6.42"	81'	1.41"	3.22"	6.45"	10.07"	13.30"	16.52"	20.15"	23.37"
25'	0.31"	1.02"	2.05"	3.07"	4.10"	5.12"	6.15"	7.17"	83'	1.44"	3.27"	6.55"	10.22"	13.50"	17.17"	20.45"	24.12"
27'	0.34	0.07"	2.15"	3.32"	4.30"	5.37"	6.45"	7.52"	85'	1.46"	3.32"	7.05"	10.37"	14.10"	17.42"	21.15"	24.17"
29'	0.36"	1.12"	2.25"	3.37"	4.50"	6.02"	7.15"	8.27"	87'	1.49"	3.37"	7.15"	10.52"	14.30"	18.07"	21.45"	25.22"
31'	0.39"	1.17"	2.35"	3.52"	5.10"	6.27"	7.45"	9.02"	89'	1.51"	3.42"	7.25"	11.07"	14.50"	18.32"	22.15"	25.57"
33'	0.41"	1.22"	2.45"	4.07"	5.30"	6.52"	8.15"	9.37"	90'	1.52"	3.45"	7.30"	11.15"	15.00"	18.45"	22.30"	25.57"
35'	0.44"	1.27"	2.55"	4.22"	5.50"	7.17"	8.45"	10.12"	92'	1.55"	3.50"	7.40"	11.30"	15.20"	19.10"	23.00"	26.50"
37'	0.46"	1.32"	3.05"	4.37"	6.10"	7.42"	9.15"	10.47"	94'	1.57"	3.55"	7.50"	11.45"	15.40"	19.35"	23.30"	27.25"
39'	0.49"	1.37"	3.15"	4.52"	6.30"	8.07"	9.45"	11.22"	96'	2.00"	4.00"	8.00"	12.00"	16.00"	20.00"	24.00"	28.00"
41'	0.51"	1.42"	3.25"	5.07"	6.50"	8.32"	10.15"	11.57"	98'	2,02"	4.05"	8.10"	12.15"	16.20"	20.25"	24.30"	28.30"
43'	0.54"	1.47"	3.35"	5.22"	7.10"	8.57"	10.45"	12.32"	99'	2.04"	4.07"	8.15"	12.22"	16.30"	20.37"	24.45"	28.52'
45'	0.56"	1.52"	3.45"	3.70"	7.30"	9.22"	11.15"	13.07"	100'	2.05"	4.10"	8.20"	12.30"	16.40"	20.50"	25.00"	29.10"
47'	0.59"	1.57"	3.55"	5.52"	7.50"	9.47"	11.45"	13.42"	102'	2.07"	4.15"	8.30"	12.45"	17.00"	21.15"	25.30"	29.45"
49'	1.01"	2.02"	4.05"	6.07"	8.10"	10.12"	12.15"	14.12"	104'	2.10"	4.20"	8.40"	13.00	17.20"	21.00"	26.00"	30.20"
51'	1.04"	2.07"	4.15"	6.22"	8.30"	10.37"	12.45"	14.49"	106'	2.12"	4.25"	8.50"	13.5"	17.40"	22.05"	26.30"	30.55"
53'	1.06"	2.12"	4.25"	6.37"	8.50"	11.02"	13.15"	15.27"	108'	2.15"	4.30"	9.00"	13.30"	18.00"	22.30"	27.00"	31.30"
55'	1.09"	2.17"	4.35"	6.52"	9.10"	11.27"	13.45"	16.02"	110'	2.17"	4.35"	9.10"	13.45"	18.20"	22.55"	27.35"	32.05"
57'	1.11"	2.22"	4.45"	7.07"	9.30"	11.52"	14.15"	16.37"	112'	2.20"	4.40	9.20"	14.00	18.40"	23.20"	28.00"	32.40"
58'	1.12"	2.25"	4.50"	7.15"	9.40"	12.05"	14.30"	16.55"	114'	2.22"	4.45"	9.30"	14.15"	19.00"	23.45"	28.30"	33.15"
59'	1.14"	2.27"	4.55"	7.27"	9.50"	12.17"	14.45"	17.12"	116'	2.25"	4.50"	9.40"	14.30"	19.20"	24.10"	29.00"	33.50'
60'	1.15'	2.30"	5.00"	7.30"	10.00"	12.30"	15.00"	17.30"	118'	2.27"	4.55"	9.50"	14.45"	19.40"	24.35"	29.30"	34.25"

दैनिक सूक्ष्म निरयण ग्रहस्पष्टाः प्रातः साढ़े पाँच बजे (प्रातः ५ घंटे ३० मिंट) भा० स्टै० वि० संवत् २०५३ (सन् १९९६-९७ ई०)

नीचे लिखे दृक्तुल्य सूक्ष्म ग्रह भारतीय स्टै. टाईम के अनुसार प्रातः ५ बजकर ३० मिनट के स्पष्ट हैं। सूर्य से राहु पर्यन्त ग्रहस्पष्ट की स्थिति विकला पर्यन्त दी गई है। जबकि यूरेनस नैपच्यून की स्थिति कला पर्यन्त है। ग्रह स्पष्टों में अंकित प्रथम अंक गत राशि का द्योतक होता है, जबकि द्वितीय अंक अंश का द्योतक है। उदाहरणार्थ, १ अप्रैल १९९६ के आगे लिखे सूर्य स्पष्ट में ११।१७।४४।३२ लिखा है। इसका तात्पर्य हुआ कि १ अप्रैल १९९६ प्रातः ५ घंटे ३० मिंट पर सूर्य ११ राशि को पार करके मीन राशि के १७ अंश, ४४ कला एवं ३२ विकला पर संचार कर रहा है। जिस दिन के ग्रह-स्पष्ट करने हों, उससे आगामी दिवस के ग्रह-स्पष्ट में से अभीष्ट दिन के स्पष्ट घटा देने से, ग्रह विशेष की दैनिक गति निकल आती है। तात्कालिक अर्थात् अपने इष्ट काल के स्पष्ट ग्रह ज्ञात करने के लिए प्रत्येक ग्रह की २४ घंटे की कलात्मक दैनिक गति निकाल लें, फिर त्रैराशिक विधि द्वारा प्रति घण्टा की गति निकाल कर अपने अभीष्ट काल के ग्रह-स्पष्ट जान लें। पंचांग में प्रत्येक ग्रह की २४ घण्टे की गति से १-२ घण्टे की तथा ३० मिन्ट की गति की तालिका पाठकों की सुविधा हेतु गत पृष्ठ पर दी गई है। राहु स्पष्ट में ६ राशि जमा कर देने से केतु ग्रह-स्पष्ट निकल आएगा, अतएव केतु स्पष्ट अलग से नहीं दिया गया। दैनिक चन्द्रोदय अस्त भी लिखे हैं। निवेदक—पं० पन्ना लाल ज्यो०, गणितकर्ता।

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २० मार्च से १० अप्रैल, ९६ तक) अयनांश १ अप्रैल (२३° ।४८′ ।२३″) चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
२०	११	०५	५१	३९	११	१३	००	२३	११	०२	३४	३१	१०	२७	५६	२६	८	२०	४६	३४
२१	११	०६	५१	१५	११	२६	४२	२७	११	०३	२१	०६	१०	२९	४८	३७	८	२०	५३	३८
२२	११	०७	५०	४९	०	१०	०२	२८	११	०४	०७	४३	११	०१	४२	३५	८	२१	००	४३
२३	११	०८	५०	२१	०	२३	०१	३९	११	०४	५४	२२	११	०३	३७	३९	८	२१	०७	५९
२४	११	०९	४९	५१	१	०५	४०	२१	११	०५	४१	०३	११	०५	३२	४३	८	२१	१५	१२
२५	११	१०	४९	१९	१	१७	५८	०४	११	०६	२७	४५	११	०७	२९	४७	८	२१	२२	२०
२६	११	११	४८	४४	२	००	०६	०९	११	०७	१४	२४	११	०९	२८	४१	८	२१	२९	२३
२७	११	१२	४८	०७	२	१२	०५	५७	११	०८	०१	०६	११	११	२८	५०	८	२१	३५	१८
२८	११	१३	४७	२८	२	२३	५१	१८	११	०८	४७	४७	११	१३	२८	५३	८	२१	४२	५९
२९	११	१४	४६	४७	३	०५	५२	१५	११	०९	३४	२६	११	१५	३०	४१	८	२१	४९	२९
३०	११	१५	४६	०४	३	१७	५०	२४	११	१०	२१	०३	११	१७	३२	३९	८	२१	५५	४८
३१	११	१६	४५	१९	३	२९	५६	२५	११	११	०७	३८	११	१९	३४	३१	८	२२	०१	५५
अप्रै.	११	१७	४४	३२	४	१२	१४	२१	११	११	५४	१२	११	२१	३७	२०	८	२२	०७	५६
२	११	१८	४३	४२	४	२४	३६	१९	११	१२	४०	४५	११	२३	४१	१७	८	२२	१३	४७
३	११	१९	४२	५०	५	०७	३३	२७	११	१३	२७	१७	११	२५	४५	११	८	२२	१९	२९
४	११	२०	४१	५६	५	२०	३७	२१	११	१४	१३	४७	११	२७	४८	११	८	२२	२५	०६
५	११	२१	४१	०१	६	०३	५७	५४	११	१५	००	१५	११	२९	५२	१५	८	२२	३०	३५
६	११	२२	४०	०३	६	१७	३२	२५	११	१५	४६	४०	०	०१	५५	१३	८	२२	३५	५४
७	११	२३	३९	०३	७	०१	२०	१२	११	१६	३३	०३	०	०३	५६	२८	८	२२	४०	५७
८	११	२४	३८	०२	७	१५	१७	२९	११	१७	१९	२४	०	०५	५६	२७	८	२२	४५	५२
९	११	२५	३६	५९	७	२९	२३	११	११	१८	०५	४१	०	०७	५४	२५	८	२२	५०	३५
१०	११	२६	३५	५४	८	१३	३४	४३	११	१८	५१	५६	०	०९	५०	१४	८	२२	५५	०२

शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	मार्च
०	२१	२०	४३	११	०३	५६	३९	५	२४	२६	२९	०	०८-	६	५१	११	४९	२०
०	२२	२३	५०	११	०४	०३	४८	५	२४	२३	१८	०	१९	७	४३	२०	३६	२१
०	२३	२६	५९	११	०४	११	१३	५	२४	२०	०७	०	४१	८	३५	२१	२८	२२
०	२४	३०	०१	११	०४	१९	३९	५	२४	१६	५६	१	०४	९	२०	२२	१३	२३
०	२५	३२	३७	११	०४	२६	५१	५	२४	१३	४६	१	२७	१०	०२	२२	५५	२४
०	२६	३४	४९	११	०४	३४	१५	५	२४	१०	३५	१	५१	१०	५३	२३	४६	२५
०	२७	२६	१३	११	०४	४१	३७	५	२४	०७	२४	२	१४	११	३२	००	२५	२६
०	२८	३७	४६	११	०४	४८	४६	५	२४	०४	१३	२	३७	१२	०७	१	०१	२७
०	२९	३८	२७	११	०४	५५	४९	५	२४	०१	०२	३	०१	१२	५६	१	५४	२८
१	००	३८	२९	११	०५	०२	५६	५	२३	५७	५१	३	२४	१३	४१	२	३९	२९
१	०१	३८	१९	११	०५	१०	१७	५	२३	५४	४०	३	४८	१४	३०	३	२८	३०
१	०२	३७	२४	११	०५	१७	३८	५	२३	५१	३०	४	११	१५	१६	४	१४	३१
१	०३	३६	२७	११	०५	२५	१३	५	२३	४८	१९	४	३४	१६	३१	५	०२	अप्रै.
१	०४	३५	०२	११	०५	३२	३७	५	२३	४५	०८	४	५८	१७	४१	५	५७	२
१	०५	३३	२२	११	०५	३९	४३	५	२३	४१	५७	५	२०	१८	४३	६	४४	३
१	०६	३१	१५	११	०५	४६	४६	५	२३	३८	४६	५	४३	१९	२५	७	४०	४
१	०७	२८	४२	११	०५	५४	२३	५	२३	३५	३६	६	०५	२०	३१	८	३८	५
१	०८	२५	४५	११	०६	०२	२०	५	२३	३२	२५	६	२८	२१	२५	९	३५	६
१	०९	२१	५८	११	०६	०९	२९	५	२३	२९	१४	६	५१	२२	२२	१०	२९	७
१	१०	१७	४३	११	०६	१६	३२	५	२३	२६	०३	७	१३	२३	०५	११	२५	८
१	११	१३	१५	११	०६	२३	३३	५	२३	२२	५२	७	३६	२३	५३	१२	२४	९
१	१२	०८	२९	११	०६	३०	३९	५	२३	१९	४३	७	५८	उ.न.		१३	२०	१०

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० ११ अप्रैल से १३ मई, ९६ तक)

अयनांश १ मई (२३° ।४८' ।२७'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
अप्रै.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रै.
११	११	२७	३४	४७	८	२७	४७	३५	११	१९	३८	०९	०	११	४३	०३	८	२२	५९	१३	१	१३	०२	३२	११	०६	३७	४१	५	२३	१६	३३	८	२१	१	०१	१४	०७	११
१२	११	२८	३३	३८	९	१२	००	३८	११	२०	२४	१९	०	१३	३३	२८	८	२३	०३	२०	१	१३	५५	३७	११	०६	४४	४२	५	२३	१३	२२	८	४४	१	५६	१४	५३	१२
१३	११	२९	३२	२७	९	२६	११	२७	११	२१	१०	२६	०	१५	२१	१६	८	२३	०७	२३	१	१४	४७	३९	११	०६	५१	४४	५	२३	१०	११	९	०५	२	४७	१५	११	१३
१४	०	००	३१	१४	१०	१०	१७	२९	११	२१	५६	३१	०	१७	०४	३१	८	२३	११	२०	१	१५	३९	२९	११	०६	५८	४५	५	२३	०७	००	९	२६	३	४०	१६	१२	१४
१५	०	०१	३०	००	१०	२४	१५	२१	११	२२	४२	३४	०	१८	४४	३१	८	२३	१५	०२	१	१६	३१	०८	११	०७	०५	४७	५	२३	०४	४९	९	४५	४	३७	१७	०९	१५
१६	०	०२	२८	४५	११	०८	०४	३८	११	२३	२८	३४	०	२०	२०	२८	८	२३	१८	३३	१	१७	२२	०१	११	०७	१२	५०	५	२३	०१	३८	१०	०९	५	२२	१७	४४	१६
१७	०	०३	२७	२८	११	२१	४०	२९	११	२४	१४	३१	०	२१	५२	३३	८	२३	२२	५३	१	१८	१२	४२	११	०७	१९	५२	५	२२	५८	२८	१०	२९	६	०८	१८	४१	१७
१८	०	०४	२६	०९	०	०५	०२	३७	११	२५	००	२५	०	२३	१९	०५	८	२३	२५	५८	१	१९	०१	५१	११	०७	२६	५३	५	२२	५५	१७	१०	५०	६	५६	१९	३३	१८
१९	०	०५	२४	४८	०	१८	०८	२९	११	२५	४६	१६	०	२४	४२	१७	८	२३	२८	५०	१	१९	४९	५३	११	०७	३४	१८	५	२२	५२	०६	११	१२	७	४९	२०	२८	१९
२०	०	०६	२३	२५	१	००	५८	१५	११	२६	३२	०४	०	२५	५९	५३	८	२३	३१	२९	१	२०	३७	४१	११	०७	४१	२३	५	२२	४८	५५	११	३२	८	४१	२१	१०	२०
२१	०	०७	२२	००	१	१३	३२	३२	११	२७	१७	४८	०	२७	१२	५४	८	२३	३३	४७	१	२१	२४	३१	११	०७	४७	५१	५	२२	४५	४४	११	५३	९	३५	२२	४८	२१
२२	०	०८	२०	३३	१	२५	५१	३७	११	२८	०३	२९	०	२८	१९	५८	८	२३	३६	०२	१	२२	०९	३४	११	०७	५४	४८	५	२२	४२	३३	१२	१४	१०	२९	२३	१२	२२
२३	०	०९	१९	०४	२	०७	५८	१५	११	२८	४९	०६	०	२९	२२	[illegible]		२३	३८	११	१	२२	५४	१७	११	०८	०१	४५	५	२२	३९	२२	१२	३३	११	२६	२३	५१	२३
२४	०	१०	१७	३३	२	१९	५७	३८	११	२९	३४	४०	१	००	१९	४८		२३	४०	१३	१	२३	३८	२०	११	०८	०८	२३	५	२२	३६	११	१२	५२	१२	२०	०	००	२४
२५	०	११	१६	००	३	०१	५१	२९	०	००	२०	११	१	०१	११	४७	८	२३	४२	०६	१	२४	२१	०३	११	०८	१४	३१	५	२२	३३	०१	१३	११	१३	१६	१	३०	२५
२६	०	१२	१४	२५	३	१३	४४	२४	०	०१	०६	३९	१	०१	५७	४३	८	२३	४३	४७	१	२५	०२	२८	११	०८	२०	४७	५	२२	२९	५०	१३	३०	१४	१४	२	२६	२६
२७	०	१३	१२	४८	३	२५	४१	३२	०	०१	५२	०४	१	०२	३९	५२	८	२३	४५	२१	१	२५	४३	२१	११	०८	२७	१३	५	२२	२६	३९	१३	४९	१४	५७	३	२०	२७
२८	०	१४	११	०९	४	०७	४८	२७	०	०२	३७	२७	१	०३	१४	४३	८	२३	४६	३४	१	२६	२३	११	११	०८	३३	४८	५	२२	२३	२८	१४	०९	१५	१२	४	११	२८
२९	०	१५	०९	२८	४	२०	०७	३७	०	०३	२२	४७	१	०३	४३	२५	८	२३	४७	४७	१	२७	०२	०३	११	०८	४०	१९	५	२२	२०	१७	१४	२८	१५	५८	५	०४	२९
३०	०	१६	०७	४६	५	०२	४४	३९	०	०४	०८	०४	१	०४	०८	१७	८	२३	४८	४९	१	२७	३९	३३	११	०८	४६	४३	५	२२	१७	०६	१४	४६	१६	५०	५	४९	३०
मई	०	१७	०६	०२	५	१५	४०	२८	०	०४	५३	१६	१	०४	२६	१५	८	२३	४९	३७	१	२८	१५	२५	११	०८	५३	१२	५	२२	१३	५५	१५	०६	१७	५५	६	०६	मई
२	०	१८	०४	१६	५	२८	५९	२९	०	०५	३८	२४	१	०४	३९	२३	८	२३	५०	१२	१	२८	४९	५६	११	०८	५९	३२	५	२२	१०	४४	१५	२५	१८	५१	६	४९	२
३	०	१९	०२	२८	६	१२	३९	२७	०	०६	२३	२८	१	०४	४८	२५	८	२३	५०	३३	१	२९	२३	२५	११	०९	०६	१०	५	२२	०७	३३	१५	४२	१९	०७	७	४८	३
४	०	२०	००	३८	६	२६	३९	३१	०	०७	०८	३०	१	०४	४९	२७	८	२३	५०	४३	१	२९	५५	४७	११	०९	१२	३५	५	२२	०४	२३	१५	५९	१९	५५	८	४५	४
५	०	२०	५८	४६	७	११	०४	२८	०	०७	५३	२९	१	०४	४६	३८	८	२३	५०	४६	२	००	२६	२९	११	०९	१८	३२	५	२२	०१	१२	१६	१४	२०	४१	९	४२	५
६	०	२१	५६	५२	७	२५	२१	१७	०	०८	३८	२५	१	०४	३९	२५	८	२३	५०	४३	२	००	५५	१३	११	०९	२४	२८	५	२१	५८	०१	१६	३१	२१	३८	१०	३७	६
७	०	२२	५४	५५	८	०९	५२	२०	०	०९	२३	१८	१	०४	२७	३५	८	२३	५०	३५	२	०१	२२	२८	११	०९	३०	२१	५	२१	५४	५०	१६	५०	२२	३४	११	३१	७
८	०	२३	५२	५५	८	२४	२२	१९	०	१०	०८	०८	१	०४	१०	३७	८	२३	४९	५८	२	०१	४८	४९	११	०९	३६	२३	५	२१	५१	३९	१७	०५	२३	४४	१२	३०	८
९	०	२४	५०	५३	९	०८	४६	२३	०	१०	५२	५४	१	०३	४९	४२	८	२३	४९	०९	२	०२	१२	४८	११	०९	४२	२०	५	२१	४८	२८	१७	२१	उ.न.		१३	२८	९
१०	०	२५	४८	४९	९	२३	०१	२७	०	११	३७	३६	१	०३	२४	३८	८	२३	४८	२०	२	०२	३४	२१	११	०९	४८	१९	५	२१	४५	१७	१७	३८	०	०७	१४	२९	१०
११	०	२६	४६	४३	१०	०७	०३	४३	०	१२	२२	१३	१	०२	५५	४३	८	२३	४७	२३	२	०२	५५	२७	११	०९	५४	३७	५	२१	४२	०७	१७	५४	१	०३	१५	२६	११
१२	०	२७	४४	३६	१०	२०	५३	२९	०	१३	०६	४६	१	०२	२४	३८	८	२३	४५	५८	२	०३	१३	२९	११	१०	०१	१५	५	२१	३८	५६	१८	११	१	४८	१६	०९	१२
१३	०	२८	४२	२९	११	०४	२९	३१	०	१३	५१	१५	१	०१	५२	३४	८	२३	४४	१९	२	०३	३०	३२	११	१०	०६	५३	५	२१	३५	४५	१८	२४	२	५०	१६	४४	१३

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १४ मई से १५ जून, ९६ तक) अयनांश १ जून (२३° ।४८' ।३१'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १४ मई से १५ जून, ९६ तक) अयनांश १ जून (२३° ।४८' ।३१'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध (वक्री)				बृहस्पति (वक्री)				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
मई	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	मई
१४	०	२९	४०	२१	११	१७	५३	२१	०	१४	३५	४२	१	०१	१७	२८	८	२३	४२	२१	२	०३	४५	२१	११	१०	१२	१४	५	२१	३२	३४	१८	३८	३	४६	१७	०१	१४
१५	१	००	३८	१२	०	०१	०४	१३	०	१५	२०	०७	१	००	४२	३७	८	२३	४०	२६	२	०३	५८	२५	११	१०	१७	४५	५	२१	२९	२३	१८	५२	४	४२	१७	४९	१५
१६	१	०१	३६	०२	०	१४	०३	२५	०	१६	०४	३०	१	००	०७	३२	८	२३	३८	१८	२	०४	०८	३३	११	१०	२३	१७	५	२१	२६	१२	१९	०७	५	४४	१८	०९	१६
१७	१	०२	३३	५२	०	२६	५०	२७	०	१६	४८	५१	०	२९	३१	३५	८	२३	३६	०७	२	०४	१६	३८	११	१०	२८	४१	५	२१	२३	०२	१९	१९	६	३२	१८	५१	१७
१८	१	०३	३१	४१	१	०९	२५	२३	०	१७	३३	१०	०	२८	५७	२१	८	२३	३३	५२	२	०४	२३	४१	११	१०	३४	१९	५	२१	१९	५१	१९	३३	७	२४	१९	३१	१८
१९	१	०४	२९	३०	१	२१	४८	२१	०	१८	१७	२७	०	२८	२५	४६	८	२३	३१	२२	२	०४	२७	४२	११	१०	३९	४३	५	२१	१६	४०	१९	४७	८	११	२०	४२	१९
२०	१	०५	२७	१७	२	०४	०१	३१	०	१९	०१	४२	०	२७	५४	४२	८	२३	२८	३७	२	०४	२९	३५	११	१०	४५	१८	५	२१	१३	२९	१९	५७	९	१५	२१	३२	२०
२१	१	०६	२५	०३	२	१६	०५	४१	०	१९	४५	५४	०	२७	२६	३९	८	२३	२५	४७	२	०४	२८	१२	११	१०	५०	५०	५	२१	१०	१८	२०	१०	१०	०२	२२	२३	२१
२२	१	०७	२२	४७	२	२८	०१	२०	०	२०	३०	०३	०	२७	०१	३६	८	२३	२२	३४	२	०४	२५	२३	११	१०	५६	१३	५	२१	०७	०७	२०	२४	१०	४९	२३	०५	२२
२३	१	०८	२०	३०	३	०९	५३	१३	०	२१	१४	१०	०	२६	४०	३२	८	२३	१९	०७	२	०४	२०	२७	११	११	०४	११	५	२१	०३	५६	२०	३४	११	१९	२३	५६	२३
२४	१	०९	१८	१२	३	२१	४६	२७	०	२१	५८	१५	०	२६	२२	२८	८	२३	१५	२८	२	०४	१२	२८	११	११	०६	५९	५	२१	००	४६	२०	४६	१२	१४	--		२४
२५	१	१०	१५	५३	४	०३	४१	३१	०	२२	४२	१७	०	२६	०८	३१	८	२३	११	३१	२	०४	०२	३१	११	११	११	१४	५	२०	५७	३५	२०	५८	१३	०७	१	३७	२५
२६	१	११	१३	३२	४	१५	४५	११	०	२३	२६	१६	०	२५	५८	२९	८	२३	०७	३४	२	०३	५०	२९	११	११	१६	२१	५	२०	५४	२४	२१	०७	१४	०३	२	३३	२६
२७	१	१२	११	०९	४	२८	०३	२५	०	२४	१०	१२	०	२५	५२	२३	८	२३	०३	३१	२	०३	३४	२१	११	११	२१	२७	५	२०	५१	१३	२१	१६	१४	५१	३	२३	२७
२८	१	१३	०८	४८	५	१०	३९	१७	०	२४	५४	०५	०	२५	५१	४३	८	२२	५९	२४	२	०३	१६	४३	११	११	२५	२५	५	२०	४८	०२	२१	२८	१५	४९	४	११	२८
२९	१	१४	०६	१८	५	२३	३७	२१	०	२५	३७	५४	०	२५	५४	२५	८	२२	५५	१५	२	०२	५७	११	११	११	३०	२३	५	२०	४४	५१	२१	३६	१६	४६	५	१५	२९
३०	१	१५	०३	५१	६	०७	०१	३१	०	२६	२१	४०	०	२६	०१	२९	८	२२	५१	०५	२	०२	३५	०४	११	११	३४	२८	५	२०	४१	४१	२१	४५	१७	३९	६	१६	३०
३१	१	१६	०१	२२	६	२०	५२	३२	०	२७	०५	२३	०	२६	१४	३३	८	२२	४६	४६	२	०२	११	०१	११	११	३९	३१	५	२०	३८	३०	२१	५५	१८	३७	७	१४	३१
जून	१	१६	५८	५२	७	०५	०९	२७	०	२७	४९	०३	०	२६	२९	४७	८	२२	४२	२५	२	०१	४५	१३	११	११	४३	४३	५	२०	३५	१९	२२	०४	१९	२०	७	५२	जून
२	१	१७.	५६	२१	७	१९	४६	२५	०	२८	३२	४०	०	२६	५१	२५	८	२२	३७	५३	२	०१	१६	२३	११	११	४८	१९	५	२०	३२	०८	२२	१२	२०	१३	८	४५	२
३	१	१८	५३	४९	८	०४	३८	२३	०	२९	१६	१४	०	२७	१६	३७	८	२२	३२	५९	२	००	४५	२५	११	११	५२	४७	५	२०	२८	५७	२२	१९	२१	१६	९	३९	३
४	१	१९	५१	१६	८	१९	३५	२५	०	२९	५९	४५	०	२७	४५	२९	८	२२	२७	५६	२	००	१४	२४	११	११	५६	५१	५	२०	२५	४६	२२	२६	२२	१९	१०	३५	४
५	१	२०	४८	४२	९	०४	२९	३४	१	००	४३	१४	०	२८	११	३१	८	२२	२१	३७	१	२९	४०	२७	११	१२	००	५३	५	२०	२२	३५	२२	३१	२३	२४	११	३१	५
६	१	२१	४६	०७	९	१९	११	२८	१	०१	२६	४०	०	२८	५७	४१	८	२२	१५	५८	१	२९	०६	१५	११	१२	०५	१७	५	२०	१९	२५	२२	३८	--		१२	२८	६
७	१	२२	४३	३१	१०	०३	३७	२३	१	०२	१०	०३	०	२९	३९	३९	८	२२	०९	५५	१	२८	३१	२३	११	१२	०९	२५	५	२०	१६	१४	२२	४५	०	४१	१३	२९	७
८	१	२३	४०	५५	१०	१७	४२	११	१	०२	५३	२३	१	००	२५	३७	८	२२	०३	५२	१	२७	५५	२८	११	१२	१३	२१	५	२०	१३	०३	२२	५०	१	२३	१४	२६	८
९	१	२४	३८	१८	११	०१	२५	४७	१	०३	३६	४०	१	०१	१५	३५	८	२१	५७	४५	१	२७	१८	३१	११	१२	१७	३३	५	२०	०९	५२	२२	५५	२	२७	१५	०२	९
१०	१	२५	३५	४१	११	१४	५२	२१	१	०४	१९	३०	१	०२	०९	२८	८	२१	५१	३४	१	२६	४०	४९	११	१२	२१	३६	५	२०	०६	४१	२३	०१	३	२९	१५	४९	१०
११	१	२६	३३	०६	११	२८	००	२७	१	०५	०२	४१	१	०३	०६	१५	८	२१	४५	२१	१	२६	०२	१४	११	१२	२४	३१	५	२०	०३	३१	२३	०५	४	३५	१६	२२	११
१२	१	२७	३०	२६	०	१०	५३	१३	१	०५	४५	४९	१	०४	०६	२७	८	२१	३९	०६	१	२५	२५	०१	११	१२	२८	४३	५	२०	००	२०	२३	१०	५	२९	१७	१७	१२
१३	१	२८	२७	४६	०	२३	३३	२९	१	०६	२८	५४	१	०५	१०	३१	८	२१	३२	५०	१	२४	४७	४७	११	१२	३१	४५	५	१९	५७	०९	२३	१३	६	२२	१८	११	१३
१४	१	२९	२५	०५	१	०६	०२	१७	१	०७	११	५५	१	०६	१८	२८	८	२१	२६	३३	१	२४	१०	१८	११	१२	३४	४३	५	१९	५३	५८	२३	१६	७	१३	१९	३१	१४
१५	२	००	२२	२३	१	१८	२२	२५	१	०७	५४	५२	१	०७	२९	३३	८	२१	२०	१४	१	२३	३४	२५	११	१२	३८	४१	५	१९	५०	४७	२३	१९	७	५२	२०	५५	१५

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १६ जून से १८ जुलाई, ९६ तक) अयनांश १ जुलाई (२३° ४८' ३४'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति (वक्री)			
जून	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
१६	२	०१	१९	४१	२	००	३३	३२	१	०८	३७	४५	१	०८	४३	४०	८	२१	१३	५३
१७	२	०२	१६	५८	२	१२	३८	२७	१	०९	२०	३४	१	१०	००	०६	८	२१	०७	२३
१८	२	०३	१४	१५	२	२४	३६	२६	१	१०	०३	२०	१	११	२१	३७	८	२१	००	१०
१९	२	०४	११	३१	३	०६	२९	३४	१	१०	४६	०२	१	१२	४५	४३	८	२०	५२	५२
२०	२	०५	०८	४६	३	१८	२०	२८	१	११	२८	४१	१	१४	१३	२७	८	२०	४५	३१
२१	२	०६	०६	०१	४	००	१०	४३	१	१२	११	१६	१	१५	४३	३१	८	२०	३८	०८
२२	२	०७	०३	१५	४	१२	०५	३७	१	१२	५३	४७	१	१७	१७	३५	८	२०	३०	४३
२३	२	०८	००	२८	४	२४	०७	३१	१	१३	३५	०४	१	१८	५३	३७	८	२०	२३	१४
२४	२	०८	५७	४१	५	०६	२२	२९	१	१४	१७	२७	१	२०	३३	२९	८	२०	१५	३५
२५	२	०९	५४	५४	५	१८	५४	४३	१	१४	५९	४६	१	२२	१६	३४	८	२०	०८	२०
२६	२	१०	५२	०६	६	०१	५०	२१	१	१५	४२	०१	१	२४	०१	३७	८	२०	०१	०३
२७	२	११	४९	१८	६	१५	१२	१४	१	१६	२४	१२	१	२५	५०	३६	८	१९	५३	३६
२८	२	१२	४६	२९	६	२९	०५	०३	१	१७	०६	२०	१	२७	४२	२५	८	१९	४६	१२
२९	२	१३	४३	४०	७	१३	२५	२७	१	१७	४८	२४	१	२९	३६	२७	८	१९	३८	४७
३०	२	१४	४०	५१	७	२८	१०	३३	१	१८	३०	२५	२	०१	३३	२८	८	१९	३१	२०
जुला.	२	१५	३८	०२	८	१३	१४	२९	१	१९	१२	२२	२	०३	३२	३१	८	१९	२३	५१
२	२	१६	३५	१३	८	२८	३०	३५	१	१९	५४	१५	२	०५	३३	२५	८	१९	१६	२८
३	२	१७	३२	२४	९	१३	४३	२१	१	२०	३६	०५	२	०७	३६	३२	८	१९	०८	३७
४	२	१८	२९	३५	९	२८	४३	२३	१	२१	१७	५१	२	०९	४१	२८	८	१९	००	५२
५	२	१९	२६	४६	१०	१३	२४	२७	१	२१	५९	३२	२	११	४८	३५	८	१८	५३	०८
६	२	२०	२३	५७	१०	२७	४०	२९	१	२२	४१	०९	२	१३	५६	४२	८	१८	४५	२५
७	२	२१	२१	०८	११	११	२९	३१	१	२३	२२	४२	२	१६	०५	४९	८	१८	३७	४९
८	२	२२	१८	१९	११	२४	५३	१८	१	२४	०४	११	२	१८	१४	२९	८	१८	३०	२७
९	२	२३	१५	३१	०	०७	५६	२५	१	२४	४५	३६	२	२०	२४	२७	८	१८	२२	५६
१०	२	२४	१२	४३	०	२०	४०	२९	१	२५	२६	५५	२	२२	३४	२३	८	१८	१४	५३
११	२	२५	०९	५५	१	०३	०९	१७	१	२६	०८	०९	२	२४	४३	२८	८	१८	०७	०८
१२	२	२६	०७	०७	१	१५	२६	२१	१	२६	४९	१९	२	२६	५३	२७	८	१७	५९	५५
१३	२	२७	०४	१९	१	२७	३५	४३	१	२७	३०	२५	२	२९	०१	२५	८	१७	५१	५८
१४	२	२८	०१	३१	२	०९	३६	१७	१	२८	११	२८	३	०१	०९	४१	८	१७	४४	१५
१५	२	२८	५८	४४	२	२१	३३	२५	१	२८	५२	२८	३	०३	१५	३२	८	१७	३६	३६
१६	२	२९	५५	२७	३	०३	२७	२९	१	२९	३३	२५	३	०५	२०	३४	८	१७	२९	०७
१७	३	००	५३	११	३	१५	१८	३४	२	००	१४	१८	३	०७	२४	३३	८	१७	२२	०६
१८	३	०१	५०	२५	३	२७	०९	२३	२	००	५५	०७	३	०९	२६	२९	८	१७	१५	०१

ता०	शुक्र (वक्री)				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
जून	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	जून
१६	१	२३	००	१७	११	१२	४१	५२	५	१९	४७	३६	२३	२१	८	२७	२१	३५	१६
१७	१	२२	२७	२२	११	१२	४५	१९	५	१९	४४	२५	२३	२३	९	०५	२२	२९	१७
१८	१	२१	५५	३७	११	१२	४८	३५	५	१९	४१	१५	२३	२४	९	४८	२३	३१	१८
१९	१	२१	२४	३९	११	१२	५१	३७	५	१९	३८	०४	२३	२५	१०	२०	-	-	१९
२०	१	२०	५४	१८	११	१२	५३	५७	५	१९	३४	५३	२३	२५	१०	५९	०	१९	२०
२१	१	२०	२७	१५	११	१२	५६	४३	५	१९	३१	४२	२३	२६	११	३३	१	१७	२१
२२	१	२०	१२	११	११	१२	५९	४१	५	१९	२८	३१	२३	२६	१२	०९	२	०८	२२
२३	१	१९	४०	२७	११	१३	०२	३१	५	१९	२५	२०	२३	२५	१२	४१	२	५०	२३
२४	१	१९	१९	३५	११	१३	०४	४७	५	१९	२२	१०	२३	२४	१३	२२	३	०६	२४
२५	१	१९	००	२४	११	१३	०६	५३	५	१९	१८	५९	२३	२३	१४	२१	३	५१	२५
२६	१	१८	४४	३१	११	१३	०८	५८	५	१९	१५	४८	२३	२१	१५	२२	४	२६	२६
२७	१	१८	३०	२८	११	१३	११	१५	५	१९	१२	३७	२३	१९	१६	२०	५	०९	२७
२८	१	१८	१९	३३	११	१३	१३	२३	५	१९	०९	२६	२३	१६	१७	२७	५	४५	२८
२९	१	१८	१०	२८	११	१३	१५	२७	५	१९	०६	१५	२३	१२	१८	०५	६	०२	२९
३०	१	१८	०३	४१	११	१३	१७	२२	५	१९	०३	०५	२३	०९	१८	४७	६	४६	३०
जुला.	१	१७	५९	३७	११	१३	१९	२३	५	१८	५९	५४	२३	०६	१९	३०	७	०१	जुला.
२	१	१७	५७	२२	११	१३	२०	५३	५	१८	५६	४३	२३	०३	२०	३३	७	५४	२
३	१	१७	५८	३१	११	१३	२२	२०	५	१८	५३	३२	२२	५८	२१	१७	८	४७	३
४	१	१८	०१	२२	११	१३	२४	२४	५	१८	५०	२१	२२	५२	२२	१९	९	४१	४
५	१	१८	०६	२४	११	१३	२५	४७	५	१८	४७	१०	२२	४६	२३	२४	१०	३७	५
६	१	१८	१३	२९	११	१३	२६	३४	५	१८	४४	००	२२	४०	उ.	न.	११	३२	६
७	१	१८	२२	३९	११	१३	२८	१९	५	१८	४०	४९	२२	३५	०	४३	१२	२८	७
८	१	१८	३४	३२	११	१३	२९	२९	५	१८	३७	३८	२२	२६	१	२३	१३	२३	८
९	१	१८	४८	२५	११	१३	३०	२०	५	१८	३४	२७	२२	२०	२	२७	१४	१२	९
१०	१	१९	०४	२२	११	१३	३१	१७	५	१८	३१	१६	२२	१३	३	२९	१५	२१	१०
११	१	१९	२१	१४	११	१३	३२	१९	५	१८	२८	०५	२२	०६	४	३१	१६	५१	११
१२	१	१९	४०	३८	११	१३	३३	०१	५	१८	२४	५४	२१	५८	५	२७	१७	३५	१२
१३	१	२०	०२	३७	११	१३	३३	३३	५	१८	२१	४४	२१	४९	६	१९	१८	३७	१३
१४	१	२०	२४	२९	११	१३	३४	०३	५	१८	१८	३३	२१	४०	७	१०	१९	२९	१४
१५	१	२०	४९	२८	११	१३	३४	४७	५	१८	१५	२२	२१	३०	७	५१	२०	१३	१५
१६	१	२१	१५	३७	११	१३	३५	१५	५	१८	१२	११	२१	२१	८	२७	२१	०२	१६
१७	१	२१	४३	१५	११	१३	३५	३२	५	१८	०९	००	२१	१०	९	१२	२२	४८	१७
१८	१	२२	१२	३२	११	१३	३५	३७	५	१८	०५	४९	२१	००	९	४७	२३	३९	१८

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १९ जुलाई से २० अगस्त, ९६ तक) अयनांश १ अगस्त (२३° ४८' ३७'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १९ जुलाई से २० अगस्त, ९६ तक) अयनांश १ अगस्त (२३° ।४८' ।३७'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति (वक्री)				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
जुला.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	जुला.
१९	३	०२	४७	४०	४	०१	०१	२१	२	०१	३५	५३	३	११	२८	२७	८	१७	०७	५६	१	२२	४३	३८	११	१३	३५	३३	५	१८	०२	३९	२०	५०	१०	१५	-	-	१९
२०	३	०३	४४	५५	४	२०	५७	२६	२	०२	१६	३८	३	१३	२७	३५	८	१७	००	५३	१	२३	१५	३३	११	१३	३५	२४	५	१७	५९	२८	२०	३८	१०	५९	०	२६	२०
२१	३	०४	४२	११	५	०३	०१	३७	२	०२	५७	१९	३	१५	२४	४३	८	१६	५४	१४	१	२३	४८	२१	११	१३	३५	०९	५	१७	५६	१७	२०	२७	११	२८	१	०४	२१
२२	३	०५	३९	२७	५	१५	१६	२४	२	०३	३७	५७	३	१७	२०	४५	८	१६	४७	११	१	२४	२३	२४	११	१३	३४	४५	५	१७	५३	०६	२०	१६	१२	१०	१	४२	२२
२३	३	०६	३६	४४	५	२७	४८	३२	२	०४	१८	३२	३	१९	१५	४५	८	१६	४०	३९	१	२४	५८	२७	११	१३	३४	१४	५	१७	४९	५५	२०	०३	१३	०९	२	१९	२३
२४	३	०७	३४	०१	६	१०	३९	२७	२	०४	५९	०५	३	२१	०८	३९	८	१६	३३	५२	१	२५	३५	३५	११	१३	३३	३९	५	१७	४६	४४	१९	५१	१४	१२	३	१६	२४
२५	३	०८	३१	१९	६	२३	५६	२६	२	०५	३९	३६	३	२२	५८	३७	८	१६	२७	१०	१	२६	१३	३५	११	१३	३३	०३	५	१७	४३	३४	१९	३८	१५	१४	४	०३	२५
२६	३	०९	२८	३८	७	०७	४१	२३	२	०६	२०	०५	३	२४	४८	३६	८	१६	२०	३५	१	२६	५३	१२	११	१३	३२	४१	५	१७	४०	२३	१९	२४	१६	१२	५	००	२६
२७	३	१०	२५	५७	७	२१	५६	२९	२	०७	००	३०	३	२६	३५	४१	८	१६	१३	५८	१	२७	३३	१५	११	१३	३१	३९	५	१७	३७	१२	१९	०८	१७	०९	५	५८	२७
२८	३	११	२३	१७	८	०६	३७	३१	२	०७	४०	५२	३	२८	२०	३५	८	१६	०७	३६	१	२८	१४	१७	११	१३	३०	३५	५	१७	३४	०१	१८	५८	१७	५३	६	४४	२८
२९	३	१२	२०	३८	८	२१	४०	१८	२	०८	२१	११	४	००	०४	२४	८	१६	०१	१८	१	२८	५७	१८	११	१३	२९	३३	५	१७	३०	५०	१८	४३	१८	४८	७	३१	२९
३०	३	१३	१८	००	९	०६	५७	४७	२	०९	०१	२८	४	०१	४६	२३	८	१५	५५	४७	१	२९	४१	३४	११	१३	२८	२९	५	१७	२७	३९	१८	२९	१९	३१	८	२६	३०
३१	३	१४	१५	२३	९	२२	१६	२७	२	०९	४१	४१	४	०३	२६	२७	८	१५	४९	३६	२	००	२५	१८	११	१३	२७	२७	५	१७	२४	२८	१८	१५	२०	२४	९	०९	३१
अग.	३	१५	१२	४७	१०	०७	२५	२८	२	१०	२१	५१	४	०५	०६	२९	८	१५	४३	११	२	०१	११	२३	११	१३	२६	२५	५	१७	२१	१८	१८	००	२१	०३	१०	०२	आग.
२	३	१६	१०	१२	१०	२२	१६	१९	२	११	०१	५७	४	०६	४३	३२	८	१५	३७	२८	२	०१	५६	३५	११	१३	२५	५०	५	१७	१८	०७	१७	४५	२१	४१	१०	५३	२
३	३	१७	०७	३८	११	०६	४३	३२	२	११	४२	००	४	०८	१८	३७	८	१५	३१	५९	२	०२	४३	१७	११	१३	२४	२३	५	१७	१४	५६	१७	३१	२२	१९	११	३६	३
४	३	१८	०५	०५	११	२०	४२	१७	२	१२	२२	०१	४	०९	५२	२९	८	१५	२६	३०	२	०३	३१	२५	११	१३	२२	२४	५	१७	११	४५	१७	१३	२२	५४	१२	१७	४
५	३	१९	०२	३३	०	०४	१३	२८	२	१३	०१	५७	४	११	२४	३५	८	१५	२१	२३	२	०४	१९	२८	११	१३	२०	२९	५	१७	०८	३४	१६	५७	२३	३७	१३	१०	५
६	३	२०	००	०२	०	१७	१८	२३	२	१३	४१	५०	४	१२	५४	३८	८	१५	१६	२१	२	०५	०८	२४	११	१३	१८	३१	५	१७	०५	२३	१६	४१	उ. न.		१४	०७	६
७	३	२०	५७	३२	१	००	०३	२४	२	१४	२१	३९	४	१४	२३	३९	८	१५	११	१८	२	०५	५८	२७	११	१३	१६	३३	५	१७	०२	१३	१६	२४	०	२७	१५	१०	७
८	३	२१	५५	०३	१	१२	२७	२०	२	१५	०१	२४	४	१५	४१	३७	८	१५	०६	१७	२	०६	४८	३३	११	१३	१४	३५	५	१६	५९	०२	१६	०७	१	१९	१६	१४	८
९	३	२२	५२	३५	१	२४	३१	१६	२	१५	४१	०७	४	१७	१५	३६	८	१५	०१	१९	२	०७	४०	२३	११	१३	१२	३७	५	१६	५५	५१	१५	५०	२	१५	१७	१५	९
१०	३	२३	५०	०८	२	०६	४२	४७	२	१६	२०	४७	४	१८	३८	३७	८	१४	५६	४०	२	०८	३२	३१	११	१३	१०	३९	५	१६	५२	४०	१५	३३	३	०९	१८	१७	१०
११	३	२४	४७	४२	२	१८	३८	४८	२	१७	००	२३	४	२०	००	३३	८	१४	५२	४१	२	०९	२५	२१	११	१३	०८	४३	५	१६	४९	२९	१५	१६	३	५९	१९	०९	११
१२	३	२५	४५	१७	३	००	३०	५७	२	१७	३९	५५	४	२१	११	२९	८	१४	४८	२९	२	१०	१८	२९	११	१३	०६	१३	५	१६	४६	१८	१४	५८	४	५५	२०	१०	१२
१३	३	२६	४३	५३	३	१२	२१	३९	२	१८	१९	२४	४	२२	३७	३२	८	१४	४४	२६	२	११	११	३१	११	१३	०३	४७	५	१६	४३	०८	१४	३९	५	४९	२१	२०	१३
१४	३	२७	४०	३०	३	२४	१३	४६	२	१८	५८	४९	४	२३	५३	१९	८	१४	४०	२३	२	१२	०६	४३	११	१३	०१	२५	५	१६	३९	५७	१४	२०	६	५१	२२	०९	१४
१५	३	२८	३८	०८	४	०६	०७	५५	२	१९	३८	१०	४	२५	०६	२५	८	१४	३६	४३	२	१३	००	२५	११	१२	५८	४३	५	१६	३६	४६	१४	०२	७	४९	२३	०६	१५
१६	३	२९	३५	४७	४	१८	०५	३९	२	२०	१७	२७	४	२६	११	२५	८	१४	३३	०६	२	१३	५६	२६	११	१२	५५	५०	५	१६	३३	३५	१३	४३	८	४१	-	-	१६
१७	४	००	३३	२८	५	००	०९	३१	२	२०	५६	३९	४	२७	२८	२९	८	१४	२९	३६	२	१४	५२	२८	११	१२	५३	३१	५	१६	३०	२४	१३	३०	९	३९	०	५	१७
१८	४	०१	३१	१०	५	१२	२०	१५	२	२१	३५	४६	४	२८	३५	३१	८	१४	२६	२९	२	१५	४८	२१	११	१२	५०	४४	५	१६	२७	१४	१३	०४	१०	३७	०	४३	१८
१९	४	०२	२८	५३	५	२४	४३	२१	२	२२	१४	४९	४	२९	४१	२५	८	१४	२३	०९	२	१६	४४	२९	११	१२	४७	४७	५	१६	२४	०३	१२	४५	११	३८	१	२६	१९
२०	४	०३	२६	३७	६	०७	११	२७	२	२२	५३	५०	५	००	४३	३१	८	१४	२०	०६	२	१७	४२	११	११	१२	४४	४९	५	१६	२०	५२	१२	२५	१२	४२	२	०३	२०

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २१ अगस्त से २२ सितंबर, ९६ तक) अयनांश १ सित. (२३° ।४८' ।४९'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति (वक्री)				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
अग.	रा.	अं.	क.°	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	अग.
२१	४	०४	२४	२२	६	२०	१४	१४	२	२३	३२	४६	५	०१	४४	२८	८	१४	१७	०३	२	१८	३९	२१	११	१२	४१	५१	५	१६	१७	४१	१२	०५	१३	४३	२	५६	२१
२२	४	०५	२२	०८	७	०३	२९	२७	२	२४	११	३८	५	०२	४१	२५	८	१४	१४	४४	२	१९	३७	२१	११	१२	३८	४०	५	१६	१४	३०	११	४५	१४	३१	३	२२	२२
२३	४	०६	१९	५६	७	१७	०७	४३	२	२४	५०	२६	५	०३	३६	३७	८	१४	१२	१५	२	२०	३६	२३	११	१२	३५	४६	५	१६	११	१९	११	२५	१५	२५	४	०८	२३
२४	४	०७	१७	४६	८	०१	०९	५२	२	२५	२९	०९	५	०४	२८	३२	८	१४	१०	०५	२	२१	३५	२५	११	१२	३२	२९	५	१६	०८	०८	११	०५	१६	२२	४	५९	२४
२५	४	०८	१५	३८	८	१५	३८	२३	२	२६	०७	४८	५	०५	१७	२८	८	१४	०८	०२	२	२२	३५	३७	११	१२	२८	३१	५	१६	०४	५८	१०	४४	१७	११	५	३२	२५
२६	४	०९	१३	३२	९	००	२८	५७	२	२६	४२	२२	५	०६	०१	१७	८	१४	०६	३८	२	२३	३४	१५	११	१२	२४	४१	५	१६	०१	४७	१०	२३	१७	५६	६	१०	२६
२७	४	१०	११	२८	९	१५	२९	२३	२	२७	२४	५२	५	०६	४३	२३	८	१४	०५	२५	२	२४	३४	१८	११	१२	२१	२८	५	१५	५८	३६	१०	०१	१८	०३	७	०५	२७
२८	४	११	०९	२५	१०	००	३४	४९	२	२८	०३	१७	५	०७	२१	२५	८	१४	०४	१५	२	२५	३५	३०	११	१२	१७	५४	५	१५	५५	२५	९	४१	१८	५३	७	५६	२८
२९	४	१२	०७	२३	१०	१५	४१	३१	२	२८	४१	३८	५	०७	५५	१३	८	१४	०३	०९	२	२६	३५	३२	११	१२	१४	२१	५	१५	५२	१४	९	१७	१९	४५	८	३८	२९
३०	४	१३	०५	२३	११	००	२८	३६	२	२९	१९	५६	५	०८	२५	१५	८	१४	०२	११	२	२७	३६	२७	११	१२	१०	३१	५	१५	४९	०४	८	५६	२०	३८	९	३२	३०
३१	४	१४	०३	२५	११	१५	०२	३८	२	२९	५८	११	५	०८	५०	२७	८	१४	०१	२२	२	२८	३८	२५	११	१२	०६	३४	५	१५	४५	५३	८	३७	२१	१०	१०	२५	३१
सित.	४	१५	०१	२८	११	२९	०६	३६	३	००	३६	२३	५	०९	१०	२९	८	१४	००	५७	२	२९	४०	२८	११	१२	०२	३५	५	१५	४२	४२	८	१५	२२	०६	११	२०	सित.
२	४	१५	५९	३३	०	१२	४५	३१	३	०१	१४	३२	५	०९	२६	१५	८	१४	००	३९	३	००	४२	३४	११	११	५८	३७	५	१५	३९	३१	७	५४	२२	५८	१२	१४	२
३	४	१६	५७	४०	०	२५	५७	२७	३	०१	५२	३७	५	०९	३६	२१	८	१४	००	३२	३	०१	४४	२२	११	११	५४	४१	५	१५	३६	२०	७	३१	२३	१५	१३	१०	३
४	४	१७	५५	४१	१	०८	४५	२३	३	०२	३०	३८	५	०९	४०	२८	८	१४	००	२९	३	०२	४७	१३	११	११	५०	३९	५	१५	३३	०९	७	१०	२३	५०	१४	०२	४
५	४	१८	५४	००	१	२१	१३	२३	३	०३	०८	३६	५	०९	३८	३४	८	१४	००	३३	३	०३	५०	३८	११	११	४६	३६	५	१५	२९	५८	६	४८	उ. न.		१४	५२	५
६	४	१९	५२	१३	२	०३	२५	२९	३	०३	४६	३०	५	०९	३१	२५	८	१४	००	४२	३	०४	५४	३२	११	११	४२	३७	५	१५	२६	४८	६	२६	०	०२	१५	४१	६
७	४	२०	५०	२८	२	१५	२६	३७	३	०४	२४	२१	५	०९	१७	२८	८	१४	०१	०६	३	०५	५७	२५	११	११	३८	३९	५	१५	२३	३७	६	०३	०	५१	१६	३७	७
८	४	२१	४८	४४	२	२७	२०	२४	३	०५	०२	४८	५	०८	५७	१७	८	१४	०१	५५	३	०७	०१	२७	११	११	३४	४१	५	१५	२०	२६	५	४०	१	४५	१७	३०	८
९	४	२२	४७	०१	३	०९	११	२७	३	०५	३४	५१	५	०८	२९	१५	८	१४	०२	४८	३	०८	०६	१८	११	११	३०	४३	५	१५	१७	१५	५	१७	२	३७	१८	२६	९
१०	४	२३	४५	१९	३	२१	०३	२३	३	०६	१७	२९	५	०७	५६	३९	८	१४	०४	०३	३	०९	१०	२५	११	११	२५	४८	५	१५	१४	०४	४	५५	३	३२	१९	२०	१०
११	४	२४	४३	३९	४	०२	५७	११	३	०६	५५	०३	५	०७	१७	४१	८	१४	०५	४१	३	१०	१५	३०	११	११	२१	०५	५	१५	१०	५३	४	३२	४	२६	२०	१७	११
१२	४	२५	४२	०१	४	१४	५७	२३	३	०७	३२	३४	५	०६	३०	३२	८	१४	०७	२६	३	११	२०	१५	११	११	१६	२८	५	१५	०७	४२	४	११	५	२१	२१	१५	१२
१३	४	२६	४०	२४	४	२७	०४	१७	३	०८	१०	०१	५	०५	३९	१२	८	१४	०९	१९	३	१२	२५	२९	११	११	१२	१३	५	१५	०४	३१	३	४६	६	१६	२२	१४	१३
१४	४	२७	३८	४९	५	०९	२०	२५	३	०८	४७	२५	५	०४	४४	०७	८	१४	११	१६	३	१३	३०	२७	११	११	०७	४८	५	१५	०१	२०	३	२३	७	११	२३	१०	१४
१५	४	२८	३७	०६	५	२१	४६	३३	३	०९	२४	४६	५	०३	४४	१५	८	१४	१३	१७	३	१४	३६	२४	११	११	०३	१५	५	१४	५८	०९	३	००	८	२१	२३	५३	१५
१६	४	२९	३५	३५	६	०४	२४	२६	३	१०	०२	०३	५	०२	४३	३१	८	१४	१५	२४	३	१५	४२	११	११	१०	५८	४३	५	१४	५४	५८	२	३७	९	२२	-	-	१६
१७	५	००	३४	०६	६	१७	१५	२१	३	१०	३१	१६	५	०१	४०	२८	८	१४	१७	४६	३	१६	४८	१५	११	१०	५४	१८	५	१४	५१	४७	२	१३	१०	२०	०	३१	१७
१८	५	०१	३२	३९	७	००	२३	१७	३	११	१६	२६	५	००	३७	३५	८	१४	२०	०६	३	१७	५४	१८	११	१०	४१	५१	५	१४	४८	३६	१	५१	११	१६	१	०७	१८
१९	५	०२	३१	१४	७	१३	४३	२५	३	११	५४	३४	४	२९	३६	३३	८	१४	२२	४४	३	१९	०१	२३	११	१०	४५	१३	५	१४	४५	२५	१	२७	१२	२३	१	५८	१९
२०	५	०३	२९	५१	७	२७	२२	२८	३	१२	३१	३९	४	२८	३९	३२	८	१४	२५	३३	३	२०	०८	१७	११	१०	४०	११	५	१४	४२	१४	१	०४	१३	२६	२	३९	२०
२१	५	०४	२८	३०	८	११	११	३०	३	१३	०८	४०	४	२७	४५	३१	८	१४	२८	४१	३	२१	१५	२५	११	१०	३५	४८	५	१४	३९	०३	०	४०	१४	०१	३	११	२१
२२	५	०५	२७	११	८	२५	३३	२४	३	१३	४५	३६	४	२६	५९	२८	८	१४	३२	००	३	२२	२२	३७	११	१०	३१	११	५	१४	३५	५२	०	१७	१४	५४	४	०१	२२

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २३ सितंबर से २५ अक्तूबर, ९६ तक) अयनांश १ अक्तू. (२३° ।४८' ।४४'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २३ सितंबर से २५ अक्तूबर, ९६ तक) अयनांश १ अक्तू. (२३° १८' १८'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
सित.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	सित.
२३	५	०६	२५	५४	९	१०	०१	२९	३	१४	२२	२७	४	२६	११	३१	८	१४	३५	३१	३	२३	२१	२३	११	१०	२६	२१	५	१४	३२	४१	०	०६	१५	४७	४	५१	२३
२४	५	०७	२४	३९	९	२४	४१	२७	३	१४	५१	१३	४	२५	४७	२५	८	१४	३९	२०	३	२४	३७	३५	११	१०	२२	२४	५	१४	२९	३१	०	२९	१६	४०	५	३२	२४
२५	५	०८	२३	२६	१०	०९	२५	३१	३	१५	३५	५३	४	२५	२५	१५	८	१४	४३	२३	३	२५	४५	४७	११	१०	१७	२३	५	१४	२६	२०	०	५३-	१७	२१	६	११	२५
२६	५	०९	२२	१५	१०	२४	०९	३४	३	१६	११	२६	४	२५	१४	२१	८	१४	४७	३६	३	२६	५२	५८	११	१०	१३	१६	५	१४	२३	०९	१	१६	१८	०७	६	५१	२६
२७	५	१०	२१	०६	११	०८	४४	३८	३	१६	४७	५१	४	२५	१२	५३	८	१४	५२	०१	३	२८	००	११	११	१०	०८	१७	५	१४	१९	५८	१	४०	१८	५४	७	३४	२७
२८	५	११	१९	५९	११	२३	०५	३१	३	१७	२४	०८	४	२५	२०	१४	८	१४	५६	३४	३	२९	०८	२३	११	१०	०३	५३	५	१४	१६	४७	२	०३	१९	३७	८	१७	२८
२९	५	१२	१८	५४	०	०७	०६	२९	३	१८	००	१६	४	२५	३७	२३	८	१५	०१	१५	४	००	१७	२७	११	०९	५९	२१	५	१४	१३	३६	२	२६	२०	३४	९	०२	२९
३०	५	१३	१७	५१	०	२०	४४	२५	३	१८	३६	१५	४	२६	०५	२५	८	१५	०६	०७	४	०१	२५	३२	११	०९	५४	१८	५	१४	१०	२५	२	५०	२१	३०	९	४८	३०
अक्तू.	५	१४	१६	५०	१	०३	५९	२६	३	१९	१२	०६	४	२६	४२	२७	८	१५	११	०८	४	०२	३४	४३	११	०९	४९	४५	५	१४	०७	१५	३	१३	२२	२८	१०	२८	अक्तू.
२	५	१५	१५	५१	१	१६	५९	३३	३	१९	४७	४६	४	२७	२८	३५	८	१५	१६	१७	४	०३	४३	१३	११	०९	४५	२७	५	१४	०४	०४	३	३७	२३	२३	११	१२	२
३	५	१६	१४	५४	१	२९	२३	३७	३	२०	२३	२२	४	२८	२३	२८	८	१५	२१	३६	४	०४	५२	२५	११	०९	४०	२३	५	१४	००	५३	३	५९	-	-	१२	०५	३
४	५	१७	१३	५९	२	११	३८	२९	३	२०	५८	५५	४	२९	२४	३१	८	१५	२७	०३	४	०६	०१	३८	११	०९	३५	०९	५	१३	५७	४२	४	२२	०	१५	१२	५९	४
५	५	१८	१३	०६	२	२३	४१	३१	३	२१	३४	२५	५	००	३२	२९	८	१५	३२	३८	४	०७	११	५१	११	०९	३०	४८	५	१३	५४	३१	४	४५	१	१८	१३	४१	५
६	५	१९	१२	१५	३	०५	३५	२८	३	२२	०९	५२	५	०१	४७	३७	८	१५	३८	१३	४	०८	२०	०४	११	०९	२६	२३	५	१३	५१	२०	५	०७	२	२३	१४	३५	६
७	५	२०	११	२६	३	१७	२६	२४	३	२२	४५	१७	५	०३	०७	४३	८	१५	४४	०२	४	०९	३०	२३	११	०९	२२	४१	५	१३	४८	१०	५	३१	३	३०	१५	३१	७
८	५	२१	१०	३९	३	२९	१८	३१	३	२३	२०	४०	५	०४	३१	४१	८	१५	४९	५१	४	१०	४०	२७	११	०९	१७	३८	५	१३	४४	५९	५	५४	४	०५	१६	२८	८
९	५	२२	०९	५५	४	११	१६	३५	३	२३	५६	०१	५	०५	५९	१८	८	१५	५६	०४	४	११	५०	४१	११	०९	१२	२७	५	१३	४१	४८	६	१७	४	५८	१७	२६	९
१०	५	२३	०९	१३	४	२३	२२	२९	३	२४	३१	२०	५	०७	३१	४३	८	१६	०२	१७	४	१३	००	३१	११	०९	०८	५३	५	१३	३८	४५	६	४०	५	४३	१८	२१	१०
११	५	२४	०८	३३	५	०४	५९	३०	३	२५	०६	३७	५	०९	०५	२५	८	१६	०८	३९	४	१४	११	२८	११	०९	०४	३४	५	१३	३५	३४	७	०३	६	३५	१९	२३	११
१२	५	२५	०७	५५	५	१८	१३	२४	३	२५	४१	४२	५	१०	४२	२७	८	१६	१५	१०	४	१५	२१	४१	११	०८	५९	४३	५	१३	३२	२४	७	२७	७	२६	२०	२२	१२
१३	५	२६	०७	१८	६	००	५८	२६	३	२६	१६	५५	५	१२	२१	२९	८	१६	२२	०१	४	१६	३२	३०	११	०८	५५	१२	५	१३	२९	१३	७	४८	८	१८	२१	१८	१३
१४	५	२७	०६	४३	६	१३	५५	३१	३	२६	५२	०६	५	१४	००	३१	८	१६	२९	०२	४	१७	४२	२२	११	०८	५०	३७	५	१३	२६	०२	८	११	८	५६	२२	११	१४
१५	५	२८	०६	१०	६	२७	०१	२९	३	२७	२७	१६	५	१५	५१	३५	८	१६	३६	०५	४	१८	५३	२७	११	०८	४६	२१	५	१३	२२	५१	८	३३	९	४०	२३	०७	१५
१६	५	२९	०५	३९	७	१०	३७	२७	३	२८	०२	२४	५	१७	२३	४१	८	१६	४३	२१	४	२०	०४	११	११	०८	४२	१५	५	१३	१९	४०	८	५५	१०	३४	२३	५१	१६
१७	६	००	०५	१०	७	२४	१७	२५	३	२८	३७	३०	५	१९	०६	३२	८	१६	५१	००	४	२१	१५	२४	११	०८	३७	५०	५	१३	१६	२९	९	१६	११	२८	-	-	१७
१८	६	०१	०४	४३	८	०८	०८	३४	३	२९	१२	३४	५	२०	४८	११	८	१६	५९	१८	४	२२	२६	१८	११	०८	३३	३१	५	१३	१३	१८	९	३८	१२	१४	०	४१	१८
१९	६	०२	०४	१८	८	२२	०८	२८	३	२९	४७	३६	५	२२	३१	३१	८	१७	०७	०६	४	२३	३७	२९	११	०८	२९	३७	५	१३	१०	०७	१०	००	१२	५१	१	४१	१९
२०	६	०३	०३	५५	९	०६	१६	२७	४	००	२२	३३	५	२४	१४	१५	८	१७	१४	५१	४	२४	४९	२७	११	०८	२५	३२	५	१३	०६	५७	१०	२१	१३	२१	२	२९	२०
२१	६	०४	०३	३४	९	२०	१९	२२	४	००	५७	२६	५	२५	५७	२१	८	१७	२२	५८	४	२६	००	३१	११	०८	२१	२७	५	१३	०३	४६	१०	४३	१३	५८	३	०९	२१
२२	६	०५	०३	१५	१०	०४	४६	३०	४	०१	३१	३६	५	२७	४०	३१	८	१७	३१	०३	४	२७	११	३३	११	०८	१७	२४	५	१३	००	३५	११	०४	१४	३३	३	५६	२२
२३	६	०६	०२	५८	१०	१९	०४	२९	४	०२	०५	५३	५	२९	२२	२१	८	१७	३९	१४	४	२८	२३	२२	११	०८	१३	१९	५	१२	५७	२४	११	२५	१५	१८	४	४१	२३
२४	६	०७	०२	४३	११	०३	१९	३५	४	०२	३९	५७	६	०१	०४	३२	८	१७	४७	३३	४	२९	३५	२९	११	०८	०९	४८	५	१२	५४	१३	११	४६	१५	५२	५	३०	२४
२५	६	०८	०२	३०	११	१७	२८	३७	४	०३	१३	४७	६	०२	४५	३७	८	१७	५६	०२	५	००	४७	३१	११	०८	०६	१७	५	१२	५१	०२	१२	०७	१६	४०	६	११	२५

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २६ अक्तूबर से २७ नवंबर, ९६ तक) अयनांश १ नवंबर (२३° ।४८' ।४७'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
अक्तू.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	अक्तू.
२६	६	०९	०२	११	०	०१	२९	२९	४	०३	४७	४४	६	०४	२७	३१	८	१८	०४	४०	५	०१	५१	२८	११	०८	०२	०३	५	१२	४७	५१	१२	२६	१७	३५	७	०६	२६
२७	६	१०	०२	१०	०	१५	१२	४३	४	०४	२१	३१	६	०६	०८	२९	८	१८	१३	२७	५	०३	११	२४	११	०७	५८	४९	५	१२	४४	४०	१२	४७	१८	४२	७	५६	२७
२८	६	११	०२	०३	०	२८	४१	२२	४	०४	५४	४८	६	०७	४८	४३	८	१८	२२	२५	५	०४	२३	२५	११	०७	५५	१३	५	१२	४१	३०	१३	०८	१९	३९	८	३१	२८
२९	६	१२	०१	[illegible]	१	११	५१	२१	४	०५	२९	२३	६	०९	२८	४१	८	१८	३१	३०	५	०५	३५	२३	११	०७	५१	१५	५	१२	३८	१९	१३	२७	२०	२७	९	०५	२९
३०	६	१३	०१	[illegible]	१	२४	४२	११	४	०६	०२	०३	६	११	०७	२९	८	१८	४०	४९	५	०६	४८	१५	११	०७	४८	२७	५	१२	३५	०८	१३	४७	२१	२०	९	५५	३०
३१	६	१४	०१	[illegible]	२	०७	१५	२३	४	०६	३४	११	६	१२	४६	३७	८	१८	५०	११	५	०८	००	१७	११	०७	४५	१८	५	१२	३१	५७	१४	०७	२२	१५	१०	३२	३१
नवं.	६	१५	०१	[illegible]	२	१९	३१	२५	४	०७	०८	२३	६	१४	२५	३१	८	१८	५९	५४	५	०९	१३	२५	११	०७	४२	०१	५	१२	२८	४६	१४	२७	२२	४९	११	२६	नवं.
२	६	१६	०१	[illegible]	३	०१	३३	२०	४	०७	४१	३५	६	१६	०३	२५	८	१९	०९	३३	५	१०	२५	२८	११	०७	३८	१५	५	१२	२५	३५	१४	४८	२३	०९	१२	२१	२
३	६	१७	०२	०३	३	१३	२१	३१	४	०८	१४	३७	६	१७	४०	४३	८	१९	१९	१८	५	११	३८	३१	११	०७	३५	०७	५	१२	२२	२४	१५	०५	२३	५१	१३	०५	३
४	६	१८	०२	१०	३	२५	२०	२७	४	०८	४६	४८	६	१९	१६	२८	८	१९	२९	७	५	१२	५१	२३	११	०७	३२	२३	५	१२	१९	१३	१५	२३	उ. न.		१३	५८	४
५	६	१९	०२	११	४	०७	१२	२१	४	०९	१९	४५	६	२०	५३	३५	८	१९	३८	५८	५	१४	०४	१९	११	०७	२९	३७	५	१२	१६	०३	१५	४३	०	३१	१४	४३	५
६	६	२०	०२	३०	४	१९	१०	२४	४	०९	५२	३३	६	२२	२९	३७	८	१९	४८	५६	५	१५	१७	२०	११	०७	२७	११	५	१२	१२	५२	१६	००	१	२१	१५	३५	६
७	६	२१	०२	४१	५	०१	११	२६	४	१०	२५	३७	६	२४	०६	३५	८	१९	५९	०५	५	१६	३०	२८	११	०७	२४	१२	५	१२	०९	४१	१६	१८	२	२९	१६	२६	७
८	६	२२	०२	५४	५	१३	४३	३१	४	१०	५७	३९	६	२५	४२	३२	८	२०	०९	२३	५	१७	४३	३१	११	०७	२१	४९	५	१२	०६	३०	१६	३५	३	२३	१७	१८	८
९	६	२३	०३	०९	५	२६	२५	२९	४	११	२९	४३	६	२७	१७	२९	८	२०	१९	५२	५	१८	५६	११	११	०७	१९	०५	५	१२	०३	१९	१६	५१	४	०३	१८	१३	९
१०	६	२४	०३	२६	६	०९	२७	२३	४	१२	०१	५२	६	२८	५१	२८	८	२०	३०	३५	५	२०	०९	१५	११	०७	१६	२८	५	१२	००	०८	१७	०१	४	५४	१९	०२	१०
११	६	२५	०३	४५	६	२२	४१	२७	४	१२	३३	५४	७	००	२५	३५	८	२०	४१	२०	५	२१	२२	११	११	०७	१४	३१	५	११	५६	५७	१७	३३	५	४५	१९	५४	११
१२	६	२६	०४	०६	७	०६	३०	२१	४	१३	०५	२३	७	०१	५१	३२	८	२०	५२	१०	५	२२	३६	२७	११	०७	१२	१५	५	११	५३	५६	१७	४४	६	४१	२०	४३	१२
१३	६	२७	०४	२१	७	२०	२६	२१	४	१३	३६	३६	७	०३	३३	२१	८	२१	०३	०३	५	२३	४९	३८	११	०७	०९	४७	५	११	५०	३६	१७	५९	७	३०	२१	३७	१३
१४	६	२८	०४	५३	८	०४	३३	३४	४	१४	०८	४३	७	०५	०७	२७	८	२१	१३	५१	५	२५	०३	३१	११	०७	०७	३८	५	११	४७	२५	१८	१६	८	२४	२२	३५	१४
१५	६	२९	०५	११	८	१८	४८	३७	४	१४	३९	४१	७	०६	४१	३४	८	२१	२४	४७	५	२६	१६	२७	११	०७	०५	३२	५	११	४४	१४	१८	३०	९	२५	२३	२९	१५
१६	७	००	०५	४७	९	०३	०४	३८	४	१५	१०	५३	७	०८	१४	२८	८	२१	३५	५७	५	२७	३०	४२	११	०७	०३	२७	५	११	४१	०३	१८	४५	१०	२३	-	-	१६
१७	७	०१	०६	१७	९	१७	१८	३४	४	१५	४२	१८	७	०९	४६	३१	८	२१	४६	५८	५	२८	४४	०४	११	०७	०२	३२	५	११	३७	५२	१८	५९	११	१७	०	०७	१७
१८	७	०२	०६	४८	१०	०१	२९	३५	४	१६	१२	१७	७	११	११	२५	८	२१	५८	०१	५	२९	५७	०१	११	०७	००	३०	५	११	३४	४१	१९	१४	१२	०७	१	५६	१८
१९	७	०३	०७	२०	१०	१५	३३	३८	४	१६	४३	३१	७	१२	५१	२७	८	२२	०९	११	६	०१	११	१०	११	०६	५९	३३	५	११	३१	३१	१९	२८	१२	४८	२	३७	१९
२०	७	०४	०७	५३	१०	२९	२९	५३	४	१७	१३	४२	७	१४	२३	२५	८	२२	२०	२४	६	०२	२५	१८	११	०६	५७	४०	५	११	२८	२०	१९	४०	१३	५४	३	२२	२०
२१	७	०५	०८	२७	११	१३	२०	३२	४	१७	४४	४१	७	१५	५५	३१	८	२२	३१	४४	६	०३	३९	३०	११	०६	५६	११	५	११	२५	०९	१९	५४	१४	३९	४	०६	२१
२२	७	०६	०९	०२	११	२७	०१	४३	४	१८	१४	५१	७	१७	२६	३४	८	२२	४३	१७	६	०४	५३	१७	११	०६	५६	०४	५	११	२१	५८	२०	०८	१५	०१	४	५६	२२
२३	७	०७	०९	३९	०	१०	३२	४१	४	१८	४४	४७	७	१८	५१	३७	८	२२	५५	०६	६	०६	०६	४८	११	०६	५२	५३	५	११	१८	४७	२०	२०	१५	४४	५	४२	२३
२४	७	०८	१०	१८	०	२३	५६	५३	४	१९	१४	३८	७	२०	२९	३५	८	२३	०६	५७	६	०७	२१	०३	११	०६	५१	४५	५	११	१५	३६	२०	३३	१६	४२	६	३०	२४
२५	७	०९	१०	५९	१	०७	०५	२७	४	१९	४४	२६	७	२२	००	२१	८	२३	१८	४१	६	०८	३५	४३	११	०६	५०	५८	५	११	१२	२५	२०	४५	१७	२१	७	११	२५
२६	७	१०	११	४१	१	२०	०१	३४	४	२०	१४	११	७	२३	३०	३५	८	२३	३०	४४	६	०९	४९	४१	११	०६	५०	१३	५	११	०९	१४	२०	५७	१८	२५	८	०३	२६
२७	७	११	१२	२५	२	०२	४३	३९	४	२०	४३	४८	७	२५	०९	२९	८	२३	४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २८ नवंबर से ३१ दिसंबर, ९६ तक) अयनांश १ दिसंबर (२३° ।४८' ।५१'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. उ.	चं. अ.	ता.

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० २८ नवंबर से ३१ दिसंबर, ९६ तक) अयनांश १ दिसंबर (२३° ।४८′ ।५१″) चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
नव.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	नवं.
२८	७	१२	१३	१०	२	१५	१०	४३	४	२१	१२	२३	७	२६	३१	२७	८	२३	५४	४६	६	१२	१७	३७	११	०६	४९	१०	५	११	०२	५३	२१	१९	२०	४१	९	४२	२८
२९	७	१३	१३	५७	२	२७	२३	०६	४	२१	४१	५२	७	२८	००	४३	८	२४	०७	०१	६	१३	३२	३३	११	०६	४८	५४	५	१०	५९	४२	२१	२७	२१	४३	१०	३२	२९
३०	७	१४	१४	४५	३	०९	२५	०७	४	२२	१०	१७	७	२९	२९	१२	८	२४	१९	१८	६	१४	४६	४८	११	०६	४८	४३	५	१०	५६	३१	२१	३८	२२	३७	११	०९	३०
दिस.	७	१५	१५	३४	३	२१	१८	२३	४	२२	३९	३८	८	००	५८	३५	८	२४	३१	३९	६	१६	००	४५	११	०६	४८	३५	५	१०	५३	२०	२१	४९	२३	१९	१२	०२	दिस.
२	७	१६	१६	२४	४	०३	०८	१५	४	२३	०७	५३	८	०२	२७	३१	८	२४	४४	०२	६	१७	१४	४९	११	०६	४७	३०	५	१०	५०	०९	२१	५९	-	-	१२	५७	२
३	७	१७	१७	१५	४	१४	५८	०९	४	२३	३५	१५	८	०३	५८	३६	८	२४	५६	३१	६	१८	२९	१७	११	०६	४७	२७	५	१०	४६	५८	२२	०७	०	२३	१३	४९	३
४	७	१८	१८	०७	४	२६	५४	१०	४	२४	०३	३७	८	०५	२२	२८	८	२५	०९	०३	६	१९	४४	२३	११	०६	४७	३१	५	१०	४३	४७	२२	१५	१	२०	१४	४०	४
५	७	१९	१९	००	५	०९	०२	१५	४	२४	३१	२८	८	०६	४८	४३	८	२५	२१	४०	६	२०	५८	४७	११	०६	४७	४८	५	१०	४०	३६	२२	२३	२	२१	१५	३३	५
६	७	२०	१९	५४	५	२१	२६	१३	४	२४	५९	१८	८	०८	१४	४१	८	२५	३४	२३	६	२२	१२	५१	११	०६	४८	०३	५	१०	३७	२५	२२	३०	३	२३	१६	२४	६
७	७	२१	२०	५९	६	०४	१२	११	४	२५	२६	५०	८	०९	३६	४३	८	२५	४७	११	६	२३	२७	१३	११	०६	४८	२९	५	१०	३४	१४	२२	३७	४	२२	१७	१९	७
८	७	२२	२१	५५	६	१७	२३	२८	४	२५	५३	५२	८	११	०२	२३	८	२६	००	०४	६	२४	४१	४६	११	०६	४८	५१	५	१०	३१	०४	२२	४३	५	२१	१८	१४	८
९	७	२३	२२	४२	७	००	५९	३४	४	२६	२०	४६	८	१२	२४	१७	८	२६	१३	०१	६	२५	५६	२१	११	०६	४९	३३	५	१०	२७	५३	२२	४९	६	१९	१९	११	९
१०	७	२४	२३	४०	७	१५	००	०५	४	२६	४७	२१	८	१३	४४	२५	८	२६	२६	०२	६	२७	११	१०	११	०६	५०	१५	५	१०	२४	४२	२२	५५	७	१७	२०	०५	१०
११	७	२५	२४	३९	७	२९	२१	०९	४	२७	१४	४१	८	१५	०२	१८	८	२६	३९	०३	६	२८	२५	४७	११	०६	५०	४८	५	१०	२१	३१	२३	०१	८	१६	२०	५८	११
१२	७	२६	२५	३९	८	१३	५७	११	४	२७	४०	२१	८	१६	१८	२९	८	२६	५२	०८	६	२९	४०	१०	११	०६	५१	२९	५	१०	१८	२०	२३	०६	९	१५	२१	४५	१२
१३	७	२७	२६	३९	८	२८	४०	२२	४	२८	०६	४१	८	१७	३२	३७	८	२७	०५	१५	७	००	५५	२१	११	०६	५२	१३	५	१०	१५	०९	२३	०९	१०	०३	२२	३९	१३
१४	७	२८	२७	४१	९	१३	२२	२७	४	२८	३२	१५	८	१८	४२	१५	८	२७	१८	२५	७	०२	१०	१४	११	०६	५३	२५	५	१०	११	५८	२३	१२	१०	४४	२३	३३	१४
१५	७	२९	२८	४४	९	२७	५६	३९	४	२८	५७	५०	८	१९	५१	४३	८	२७	३१	३८	७	०३	२५	२३	११	०६	५४	४८	५	१०	०८	४७	२३	१६	११	२९	-	-	१५
१६	८	००	२९	४९	१०	१२	१७	४३	४	२९	२३	२२	८	२०	५३	५१	८	२७	४४	५३	७	०४	४०	२७	११	०६	५६	१७	५	१०	०५	३७	२३	१९	११	५९	०	११	१६
१७	८	०१	३०	५४	१०	२६	२३	१५	४	२९	४८	३७	८	२१	५१	२९	८	२७	५८	१२	७	०५	५४	५०	११	०६	५७	५४	५	१०	०२	२६	२३	२१	१२	२९	१	११	१७
१८	८	०२	३१	५९	११	१०	१४	२८	५	००	१२	५७	८	२२	४४	३३	८	२८	११	३३	७	०७	०९	२३	११	०६	५९	४१	५	०९	५९	१५	२३	२३	१३	०७	२	०४	१८
१९	८	०३	३३	०५	११	२३	५०	२१	५	००	३७	३८	८	२३	३१	४३	८	२८	२४	५५	७	०८	२४	२१	११	०७	०१	२९	५	०९	५६	०४	२३	२५	१३	४४	२	५७	१९
२०	८	०४	३४	११	०	०७	१२	२५	५	०१	०१	४५	८	२४	१२	३९	८	२८	३८	१८	७	०९	३९	११	११	०७	०३	१३	५	०९	५२	५३	२३	२५	१४	१७	३	४५	२०
२१	८	०५	३५	१७	०	२०	२२	२७	५	०१	२४	४३	८	२४	४३	४८	८	२८	५१	४१	७	१०	५४	२७	११	०७	०४	५७	५	०९	४९	४२	२३	२६	१४	५९	४	३७	२१
२२	८	०६	३६	२३	१	०३	२०	२८	५	०१	४८	२७	८	२५	०७	५१	८	२९	०५	०८	७	१२	०९	२९	११	०७	०६	४७	५	०९	४६	३१	२३	२६	१५	४२	५	३०	२२
२३	८	०७	३७	२९	१	१६	०९	३२	५	०२	११	२५	८	२५	२१	५२	८	२९	१८	३३	७	१३	२४	२७	११	०७	०८	४९	५	०९	४३	२१	२३	२६	१६	४२	६	१७	२३
२४	८	०८	३८	३६	१	२८	४६	१७	५	०२	३४	२३	८	२५	२५	५१	८	२९	३१	५९	७	१४	३९	२२	११	०७	११	०३	५	०९	४०	१०	२३	२५	१७	३३	७	०६	२४
२५	८	०९	३९	४३	२	११	१३	२८	५	०२	५६	३२	८	२५	१७	५०	८	२९	४५	३४	७	१५	५३	१९	११	०७	१३	२३	५	०९	३६	५९	२३	२४	१८	३९	७	५८	२५
२६	८	१०	४०	५१	२	२३	२९	३२	५	०३	१९	४२	८	२४	५७	४३	८	२९	५९	०९	७	१७	०८	१७	११	०७	१५	४७	५	०९	३३	४८	२३	२२	१९	५९	८	४२	२६
२७	८	११	४१	५९	३	०५	३६	३३	५	०३	४१	४९	८	२४	२६	३९	९	००	१२	५१	७	१८	२३	१५	११	०७	१८	१५	५	०९	३०	३७	२३	२०	२०	४६	९	३४	२७
२८	८	१२	४३	०७	३	१७	३४	१३	५	०४	०२	३२	८	२३	४४	३७	९	००	२७	३३	७	१९	३८	१३	११	०७	२०	४१	५	०९	२७	२६	२३	१७	२१	३४	१०	२९	२८
२९	८	१३	४४	१५	३	२९	२५	१९	५	०४	२३	३१	८	२२	५१	३२	९	००	४०	१६	७	२०	५३	१६	११	०७	२३	११	५	०९	२४	१५	२३	१३	२२	२०	११	१६	२९
३०	८	१४	४५	२४	४	११	१३	२७	५	०४	४४	४२	८	२१	४६	३५	९	००	५३	५९	७	२२	०८	२३	११	०७	२५	५०	५	०९	२१	०४	२३	०९	२३	१७	१२	०९	३०
३१	८	१५	४६	३३	४	२३	०९	३१	५	०५	०५	४३	८	२०	३४	३०	९	०१	०७	४२	७	२३	२३	२७	११	०७	२८	३३	५	०९	१७	५३	२३	०५	उ.	न.	१२	४९	३१

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० १ जनवरी से २ फरवरी, ९७ तक) अयनांश १ जनवरी (२३° ।४८' ।५६'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
जन.९७	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	जन.९७
१	८	१६	४७	४२	५	०४	५४	३५	५	०५	२५	१५	८	१९	१६	२५	९	०१	२१	२७	७	२४	३७	५२	११	०७	३०	५५	५	०९	१४	४३	२३	०१	०	२३	१३	११	१
२	८	१७	४८	५१	५	१६	५८	२६	५	०५	४४	१७	८	१७	५६	३७	९	०१	३४	१३	७	२५	५३	०८	११	०७	३३	५३	५	०९	११	३२	२२	५५	१	३२	१३	५२	२
३	८	१८	५०	००	५	२९	११	२२	५	०६	०३	२३	८	१६	३४	३१	९	०१	४८	०६	७	२७	०८	२२	११	०७	३७	०१	५	०९	०८	२१	२२	४९	२	४३	१४	४५	३
४	८	१९	५१	०९	६	१२	०१	२३	५	०६	२२	२८	८	१५	१४	३५	९	०२	०२	०७	७	२८	२३	२३	११	०७	४०	२९	५	०९	०५	१०	२२	४४	३	५४	१५	३४	४
५	८	२०	५२	१८	६	२५	०९	१५	५	०६	४१	४४	८	१४	०१	३८	९	०२	१६	१०	७	२९	३८	१५	११	०७	४३	४३	५	०९	०१	५१	२२	३७	५	०४	१६	२७	५
६	८	२१	५३	२७	७	०८	४६	३७	५	०६	५९	३९	८	१२	५१	३४	९	०२	३०	१८	८	००	५३	२१	११	०७	४७	११	५	०९	५८	४९	२२	३०	६	१६	१७	२२	६
७	८	२२	५४	३६	७	२२	५३	३९	५	०७	१७	४२	८	११	५१	३५	९	०२	४४	२९	८	०२	०८	२५	११	०७	५०	३२	५	०८	५५	३८	२२	२३	७	११	१८	११	७
८	८	२३	५५	४४	८	०७	२६	३१	५	०७	३४	३२	८	१०	५९	२५	९	०२	५८	४१	८	०३	२३	२७	११	०७	५४	२३	५	०८	५२	२७	२२	१३	८	०३	१९	२०	८
९	८	२४	५६	५२	८	२२	२०	२८	५	०७	५१	२८	८	१०	१७	३७	९	०३	१२	४१	८	०४	३८	१७	११	०७	५८	२६	५	०८	४९	१६	२२	०१	८	५१	२०	१८	९
१०	८	२५	५८	००	९	०७	२५	१५	५	०८	०८	३२	८	०९	४६	११	९	०३	२७	०३	८	०५	५३	३३	११	०८	०१	५७	५	०८	४६	०५	२१	५१	९	२१	२१	१६	१०
११	८	२६	५९	०८	९	२२	३२	२३	५	०८	२४	४३	८	०९	२४	५१	९	०३	४१	०५	८	०७	०८	३७	११	०८	०५	४०	५	०८	४२	५४	२१	५०	१०	२०	२२	१५	११
१२	८	२८	००	१६	१०	०७	२९	२८	५	०८	३९	३६	८	०९	११	४३	९	०३	५५	०९	८	०८	२३	३९	११	०८	०९	३७	५	०८	३९	४३	२१	४२	१०	४६	२३	११	१२
१३	८	२९	०१	२४	१०	२२	११	२७	५	०८	५४	३७	८	०९	०८	२९	९	०४	०९	१५	८	०९	३८	२६	११	०८	१३	४९	५	०८	३६	३३	२१	३०	११	०९	-	-	१३
१४	९	००	०२	३२	११	०६	३२	१५	५	०९	०९	३८	८	०९	१३	४३	९	०४	२३	२१	८	१०	५३	३१	११	०८	१८	४७	५	०८	३३	२२	२१	२०	११	५०	०	०६	१४
१५	९	०१	०३	३९	११	२०	३०	२४	५	०९	२३	३१	८	०९	२७	४०	९	०४	३७	२८	८	१२	०९	१०	११	०८	२२	५३	५	०८	३०	११	२१	०९	१२	०७	०	५८	१५
१६	९	०२	०४	४६	०	०४	०७	१७	५	०९	३७	२१	८	०९	४७	३१	९	०४	५१	३१	८	१३	२४	४१	११	०८	२६	५७	५	०८	२७	००	२०	५८	१२	५०	१	५०	१६
१७	९	०३	०५	४२	०	१७	२३	१८	५	०९	५०	२९	८	१०	१४	४२	९	०५	०५	३७	८	१४	३९	५७	११	०८	३१	१४	५	०८	२३	४९	२०	४६	१३	३५	२	४३	१७
१८	९	०४	०६	५८	१	००	२१	२९	५	१०	०२	३४	८	१०	४७	३८	९	०५	१९	४३	८	१५	५५	१५	११	०८	३५	५१	५	०८	२०	३८	२०	३४	१४	०९	३	३६	१८
१९	९	०५	०८	०३	१	१३	०५	४१	५	१०	१४	३६	८	११	२५	३५	९	०५	३३	५३	८	१७	१०	२३	११	०८	४०	२५	५	०८	१७	२७	२०	२२	१४	५१	४	३०	१९
२०	९	०६	०९	०७	१	२५	३६	२५	५	१०	२६	३८	८	१२	०९	३३	९	०५	४८	०५	८	१८	२५	२९	११	०८	४४	२७	५	०८	१४	१७	२०	०९	१५	१२	५	२४	२०
२१	९	०७	१०	११	२	०७	५८	१७	५	१०	३७	३७	८	१२	५६	२५	९	०६	०२	१४	८	१९	४०	३१	११	०८	४९	१८	५	०८	११	०६	१९	५६	१६	०६	६	२०	२१
२२	९	०८	११	१४	२	२०	१०	२८	५	१०	४७	४२	८	१३	४८	२७	९	०६	१६	२१	८	२०	५५	२७	११	०८	५३	४३	५	०८	०७	५५	१९	४३	१६	५६	७	०९	२२
२३	९	०९	१२	१६	३	०२	१६	२४	५	१०	५६	४३	८	१४	४४	२९	९	०६	३०	२९	८	२२	१०	२३	११	०८	५८	२०	५	०८	०४	४४	१९	२८	१७	५४	७	५६	२३
२४	९	१०	१३	१८	३	१४	१३	२८	५	११	०५	४९	८	१५	४२	३२	९	०६	४४	३२	८	२३	२५	२८	११	०९	०३	३२	५	०८	०१	३३	१९	१४	१८	४६	८	४१	२४
२५	९	११	१४	११	३	२६	०६	२७	५	११	१४	५२	८	१६	४४	२५	९	०६	५८	३७	८	२४	४०	३२	११	०९	०८	४३	५	०७	५८	२२	१९	००	१९	३३	९	२९	२५
२६	९	१२	१५	११	४	०७	५५	३४	५	११	२२	४८	८	१७	४८	२३	९	०७	१२	४५	८	२५	५५	३७	११	०९	१४	५०	५	०७	५५	११	१८	४४	२०	२५	१०	०७	२६
२७	९	१३	१६	११	४	१९	४३	२८	५	११	२९	३२	८	१८	५४	४३	९	०७	२६	४८	८	२७	१०	२३	११	०९	१९	३१	५	०७	५२	००	१८	२९	२१	१६	१०	५८	२७
२८	९	१४	१७	१८	५	०१	३२	२५	५	११	३६	१४	८	२०	०२	५७	९	०७	४०	५३	८	२८	२५	३८	११	०९	२४	४२	५	०७	४७	५०	१८	१४	२२	१७	११	४०	२८
२९	९	१५	१८	१५	५	१३	२७	३१	५	११	४२	२८	८	२१	१३	५२	९	०७	५५	०५	८	२९	४०	३९	११	०९	२९	५१	५	०७	४४	३९	१७	५६	२३	०३	१२	३३	२९
३०	९	१६	१९	११	५	२५	३१	२१	५	११	४८	३४	८	२२	२६	४९	९	०८	०९	११	९	००	५६	०३	११	०९	३५	२१	५	०७	४१	२८	१७	४१	२३	५६	१३	२८	३०
३१	९	१७	२०	०६	६	०७	४१	३४	५	११	५२	४१	८	२३	४०	४३	९	०८	२३	१३	९	०२	११	२२	११	०९	४०	४३	५	०७	३८	१७	१७	२६	उ.	न.	१४	२२	३१
फर.	९	१८	२१	००	६	२०	३१	२८	५	११	५६	१०	८	२४	५६	३७	९	०८	३७	१५	९	०३	२७	३०	११	०९	४६	२५	५	०७	३५	०६	१७	०९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	फर.

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० ३ फरवरी से ७ मार्च, ९७ तक) अयनांश १ फरवरी (२३° ।४९' ।००'') अयनांश १ मार्च (२३° ।४९' ।०३'')

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	फर.

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० ३ फरवरी से ७ मार्च, ९७ तक) अयनांश १ फरवरी (२३° १८' १००'') अयनांश १ मार्च (२३° १८' १०३'')

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
फर.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	फर.
३	९	२०	२२	४५	७	१६	५८	२८	५	१२	०२	११	८	२७	३२	२५	९	०९	०५	९	९	०५	५७	३१	११	०९	५७	५४	५	०७	२८	४४	१६	३५	३	४४	१७	०१	३
४	९	२१	२३	३६	८	००	५७	३१	५	१२	०४	१४	८	२८	५२	४२	९	०९	११	७	९	०७	१२	२१	११	१०	०३	२६	५	०७	२५	३४	१६	१६	४	३४	१७	५७	४
५	९	२२	२४	२५	८	१५	२४	४३	५	१२	०५	३१	९	००	१३	३२	९	०९	३३	५	९	०८	२७	२४	११	१०	०९	२७	५	०७	२२	२३	१५	५७	५	३६	१८	५०	५
६	९	२३	२५	१३	९	००	१७	१८	५	१२	०५	२७	९	०१	३५	२९	९	०९	४७	३१	९	०९	४२	२५	११	१०	१५	२८	५	०७	१९	१२	१५	४०	६	४५	१९	४२	६
७	९	२४	२६	००	९	१५	२६	२१	५	१२	०५	१८	९	०२	५९	२७	९	१०	०१	०२	९	१०	५७	३०	११	१०	२१	३०	५	०७	१६	०१	१५	२१	७	३५	२०	३४	७
८	९	२५	२६	४६	१०	००	४३	२३	५	१२	०४	४३	९	०४	२३	१८	९	१०	१४	५३	९	१२	१२	२८	११	१०	२७	५३	५	०७	१२	५०	१५	०१	८	२४	२१	२९	८
९	९	२६	२७	३१	१०	१५	५६	११	५	१२	०२	५०	९	०५	४१	२३	९	१०	२८	४१	९	१३	२७	३०	११	१०	३३	३७	५	०७	०९	३९	१४	४३	९	३७	२२	२२	९
१०	९	२७	२८	१५	११	००	५६	२२	५	११	५९	११	९	०७	१६	४२	९	१०	४२	३२	९	१४	४२	३१	११	१०	३९	३१	५	०७	०६	२८	१४	२४	१०	१०	२३	१६	१०
११	९	२८	२८	५८	११	१५	३५	१३	५	११	५६	२३	९	०८	४४	३१	९	१०	५६	२१	९	१५	५७	३७	११	१०	४६	४३	५	०७	०३	१७	१४	०५	१०	५३	-	-	११
१२	९	२९	२९	४०	११	२९	४९	२८	५	११	५१	४३	९	१०	१२	३५	९	११	१०	१३	९	१७	१२	२८	११	१०	५२	४८	५	०७	००	०७	१३	४७	११	३५	०	११	१२
१३	१०	००	३०	२१	०	१३	३७	११	५	११	४६	२२	९	११	४२	२८	९	११	२४	२५	९	१८	२७	३२	११	१०	५९	०७	५	०६	५६	५६	१३	२५	१२	०६	१	०४	१३
१४	१०	०१	३१	००	०	२६	५९	१३	५	११	४१	४३	९	१३	१२	३८	९	११	३७	५३	९	१९	४२	१५	११	११	०५	२०	५	०६	५३	४५	१३	०३	१३	०२	१	५६	१४
१५	१०	०२	३१	३७	१	०९	५८	१५	५	११	३५	४८	९	१४	४३	४२	९	११	५१	३९	९	२०	५७	११	११	११	१२	०८	५	०६	५०	३४	१२	४६	१३	५६	२	०७	१५
१६	१०	०३	३२	१२	१	२२	३५	२८	५	११	२७	४७	९	१६	१५	३८	९	१२	०४	४१	९	२२	१३	२३	११	११	१७	३७	५	०६	४७	२३	१२	२३	१४	२४	२	५४	१६
१७	१०	०४	३२	४५	२	०५	०२	३७	५	११	१९	३५	९	१७	४१	२२	९	१२	१८	३२	९	२३	२८	११	११	११	२३	३१	५	०६	४४	१३	१२	००	१५	०४	३	१०	१७
१८	१०	०५	३३	१७	२	१७	१३	३२	५	११	१०	२९	९	१९	२३	२५	९	१२	३२	२३	९	२४	४३	३४	११	११	३०	४७	५	०६	४१	०२	११	४०	१५	५८	३	५४	१८
१९	१०	०६	३३	४८	२	२९	१५	३१	५	११	००	२७	९	२०	५७	१३	९	१२	४६	१०	९	२५	५८	२८	११	११	३७	११	५	०६	३७	५१	११	२०	१६	३४	४	४१	१९
२०	१०	०७	३४	१८	३	११	११	२९	५	१०	५०	३६	९	२२	३३	४१	९	१२	५९	५३	९	२७	१३	४०	११	११	४४	२३	५	०६	३४	४०	१०	५८	१७	०१	५	१३	२०
२१	१०	०८	३४	४७	३	२३	०२	२७	५	१०	३९	४१	९	२४	१०	३२	९	१३	१३	४१	९	२८	२८	१८	११	११	५०	२५	५	०६	३१	२९	१०	३७	१७	५१	५	५१	२१
२२	१०	०९	३५	१४	४	०४	५१	२५	५	१०	२७	४६	९	२५	४८	१७	९	१३	२६	३२	९	२९	४३	२७	११	११	५६	२९	५	०६	२८	१८	१०	१५	१८	३७	६	३२	२२
२३	१०	१०	३५	३९	४	१६	४१	२४	५	१०	१५	४१	९	२७	२६	४८	९	१३	३९	३५	१०	००	५८	१३	११	१२	०३	३१	५	०६	२५	०७	९	५२	१९	३०	७	४३	२३
२४	१०	११	३६	०२	४	२८	३२	२८	५	१०	०१	३५	९	२९	०५	४९	९	१३	५२	२३	१०	०२	१३	२१	११	१२	१०	३३	५	०६	२१	५७	९	३०	२०	२४	८	४५	२४
२५	१०	१२	३६	२३	५	१०	२७	२३	५	०९	३७	२७	१०	००	४६	२३	९	१४	०६	०३	१०	०३	२८	१९	११	१२	१७	२८	५	०६	१८	४६	९	०१	२१	११	९	४६	२५
२६	१०	१३	३६	४२	५	२२	२८	१८	५	०९	३२	२५	१०	०२	२८	३१	९	१४	१९	२१	१०	०४	४३	२३	११	१२	२४	३५	५	०६	१५	३५	८	४६	२२	१६	१०	४१	२६
२७	१०	१४	३६	५९	६	०४	३१	२५	५	०९	१६	१७	१०	०४	१०	२८	९	१४	३२	२९	१०	०५	५८	२८	११	१२	३१	३६	५	०६	१२	२४	८	३१	२३	११	११	३८	२७
२८	१०	१५	३७	१४	६	१७	०२	१८	५	०९	००	२३	१०	०५	५३	४१	९	१४	४५	३१	१०	०७	१३	३१	११	१२	३८	३९	५	०६	०९	१३	८	०२	उ. न.		१२	३२	२८
मार्च	१०	१६	३७	२७	६	२९	४२	१७	५	०८	४३	२५	१०	०७	३८	३९	९	१४	५८	३५	१०	०८	२७	३७	११	१२	४५	४३	५	०६	०६	०३	७	३९	०	१३	१३	२१	मार्च
२	१०	१७	३७	३८	७	१२	४१	२३	५	०८	२५	२८	१०	०९	२३	३५	९	१५	११	३८	१०	०९	४२	३०	११	१२	५२	३९	५	०६	०२	५२	७	१७	१	२१	१४	१८	२
३	१०	१८	३७	४८	७	२६	०४	२९	५	०८	०७	१७	१०	११	१०	३७	९	१५	२४	३९	१०	१०	५७	२९	११	१२	५९	४५	५	०५	५९	४१	६	५३	२	२२	१५	०५	३
४	१०	१९	३७	५६	८	०९	५१	१८	५	०७	४९	२१	१०	१२	५८	२३	९	१५	३७	३४	१०	१२	१२	३४	११	१३	०६	४१	५	०५	५६	३०	६	३०	३	१८	१५	५१	४
५	१०	२०	३८	०२	८	२४	०४	४०	५	०७	२१	३१	१०	१४	४७	४१	९	१५	५०	२९	१०	१३	२७	२९	११	१३	१४	५३	५	०५	५३	१९	६	०७	४	१०	१६	२१	५
६	१०	२१	३८	०७	९	०८	४०	२३	५	०७	०१	३१	१०	१६	३६	१८	९	१६	०३	३५	१०	१४	४२	३०	११	१३	२१	२०	५	०५	५०	०८	५	४४	४	५५	१६	५७	६
७	१०	२२	३८	११	९	२३	३६	१८	५	०६	४१	३७	१०	१८	२७	२७	९	१६	१६	४३	१०	१५	५७	३१	११	१३	२८	२९	५	०५	४७	५८	५	२१	५	११	१७	३७	७

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टै० टा० (ता० ८ मार्च से १० अप्रैल, ९७ तक) अयनांश १ अप्रैल (२३° ।४९' ।०७'') चन्द्रोदयास्त भा० स्टै० टा० जालन्धर

ता०	सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				बुध				बृहस्पति				शुक्र				शनि				राहु				सू. क्रां.		चं. उ.		चं. अ.		ता.
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	घं.	मि.	घं.	मि.	मार्च
८	१०	२३	३८	१३	१०	०८	४३	३१	५	०६	२८	३५	१०	२०	२०	३५	९	१६	२९	१७	१०	१७	१२	२७	११	१३	३५	३७	५	०५	४४	४७	४	५७	५	५७	१८	२३	८
९	१०	२४	३८	१३	१०	२३	५३	१६	५	०६	०६	३१	१०	२२	१३	४४	९	१६	४२	२२	१०	१८	२७	२५	११	१३	४२	३४	५	०५	४१	३६	४	३४	६	४१	१९	०३	९
१०	१०	२५	३८	११	११	०८	५६	२३	५	०५	४४	२८	१०	२४	०७	३२	९	१६	५४	२९	१०	१९	४२	१०	११	१३	५०	०४	५	०५	३८	२५	४	१०	७	४३	१९	५३	१०
११	१०	२६	३८	०८	११	२३	४४	१७	५	०५	२२	२३	१०	२६	०२	२९	९	१७	०७	३५	१०	२०	५६	४८	११	१३	५७	५१	५	०५	३५	१४	३	४७	८	३१	२०	०५	११
१२	१०	२७	३८	०३	०	०८	१०	२८	५	०४	५९	११	१०	२७	५८	२८	९	१७	१९	३१	१०	२२	११	०५	११	१४	०४	५०	५	०५	३२	०३	३	२३	९	०७	२०	४९	१२
१३	१०	२८	३७	५६	०	२२	१०	३२	५	०४	३७	३९	१०	२९	५५	३५	९	१७	३१	४२	१०	२३	२६	३१	११	१४	१२	१३	५	०५	२८	५२	२	५९	९	५१	२१	०५	१३
१४	१०	२९	३७	४७	१	०५	४२	२५	५	०४	१४	३४	११	०१	५३	२९	९	१७	४४	०३	१०	२४	४१	२८	११	१४	१९	३३	५	०५	२५	४२	२	३५	१०	०३	२१	५२	१४
१५	११	००	३७	३६	१	१८	४९	२७	५	०३	५१	३१	११	०३	५१	२५	९	१७	५६	२८	१०	२५	५६	२७	११	१४	२६	३७	५	०५	२२	३१	२	१३	१०	४९	२२	४८	१५
१६	११	०१	३७	२३	२	०१	३३	२५	५	०३	२७	४५	११	०५	५०	३८	९	१८	०८	४३	१०	२७	११	२८	११	१४	३३	२१	५	०५	१९	२०	१	४९	११	२५	२३	३९	१६
१७	११	०२	३७	०८	२	१३	५७	१८	५	०३	०४	४३	११	०७	४९	४२	९	१८	२०	२५	१०	२८	२६	३१	११	१४	४०	५०	५	०५	१६	०९	१	२५	१२	२८	-	-	१७
१८	११	०३	३६	५१	२	२६	०६	३०	५	०२	४०	४८	११	०९	४९	३९	९	१८	३२	२७	१०	२९	४१	२७	११	१४	४८	२४	५	०५	१२	५८	१	००	१३	२९	०	४८	१८
१९	११	०४	३६	३२	३	०८	०४	१५	५	०२	१६	३७	११	११	४९	३७	९	१८	४४	३१	११	००	५५	२९	११	१४	५५	२७	५	०५	०९	४७	०	३७	१४	२७	१	३९	१९
२०	११	०५	३६	११	३	१९	५६	२९	५	०१	४३	३५	११	१३	४८	३१	९	१८	५६	३५	११	०२	१०	३१	११	१५	०३	२९	५	०५	०६	३७	०	१२-	१५	१३	२	२१	२०
२१	११	०६	३५	५८	४	०१	४४	१९	५	०१	३०	३१	११	१५	४७	२८	९	१९	०८	३७	११	०३	२५	१५	११	१५	१०	३१	५	०५	०३	२६	०	११+	१६	११	३	२८	२१
२२	११	०७	३५	२३	४	१३	३३	२७	५	०१	०७	२९	११	१७	४५	३४	९	१९	१९	३८	११	०४	३९	४७	११	१५	१७	३३	५	०५	००	१५	०	३४+	१७	२३	४	३७	२२
२३	११	०८	३४	५६	४	२५	२४	२४	५	००	४३	२३	११	१९	४३	३७	९	१९	३१	४३	११	०५	५३	१५	११	१५	२४	३८	५	०४	५७	०४	०	५८	१८	३७	५	२९	२३
२४	११	०९	३४	२७	५	०७	२२	१९	५	००	२०	१७	११	२१	३८	३१	९	१९	४२	४५	११	०७	०८	२८	११	१५	३२	३७	५	०४	५३	५३	१	२१	१९	२८	६	१५	२४
२५	११	१०	३३	५६	५	१९	२७	१५	४	२९	५७	३१	११	२३	३२	२९	९	१९	५३	३३	११	०८	२२	१३	११	१५	४०	२६	५	०४	५०	४२	१	४५	२०	१५	७	०३	२५
२६	११	११	३३	२३	६	०१	४१	१८	४	२९	३५	२५	११	२५	२४	३७	९	२०	०५	३१	११	०९	३७	१५	११	१५	४८	४१	५	०४	४७	३१	२	०८	२१	०७	७	५१	२६
२७	११	१२	३२	४८	६	१४	०६	२३	४	२९	१३	२७	११	२७	१२	३५	९	२०	१६	२७	११	१०	५२	२१	११	१५	५५	३२	५	०४	४४	२१	२	३२	२१	५३	८	३२	२७
२८	११	१३	३२	११	६	२६	४३	१७	४	२८	५१	२८	११	२८	५८	२९	९	२०	२७	३४	११	१२	०६	२८	११	१६	०३	४५	५	०४	४१	१०	२	५५	२२	२७	९	४१	२८
२९	११	१४	३१	३२	७	०९	३५	२२	४	२८	३०	३१	०	००	४०	३२	९	२०	३९	२८	११	१३	२१	२०	११	१६	११	४८	५	०४	३७	५९	३	१८	२३	०४	१०	४२	२९
३०	११	१५	३०	५१	७	२२	४२	२९	४	२८	०९	२७	०	०२	१९	२३	९	२०	५०	२५	११	१४	३६	२५	११	१६	१९	४३	५	०४	३४	४८	३	४१	२३	४७	११	३१	३०
३१	११	१६	३०	०८	८	०६	२४	२३	४	२७	४९	२५	०	०३	५३	१९	९	२१	००	३९	११	१५	५१	२३	११	१६	२६	४१	५	०४	३१	३७	४	०५	उ. न.		१२	२७	३१
अप्रै.	११	१७	२९	२३	८	१९	४८	२१	४	२७	२९	१३	०	०५	२१	२३	९	२१	११	३३	११	१७	०६	५५	११	१६	३४	३०	५	०४	२८	२७	४	२८	०	३९	१३	३१	अप्रै.
२	११	१८	२८	३५	९	०३	४८	१८	४	२७	१०	११	०	०६	४६	२५	९	२१	२२	४१	११	१८	२०	४३	११	१६	४२	१४	५	०४	२५	१६	४	५२	१	२४	१४	३८	२
३	११	१९	२७	४४	९	१८	०६	१५	४	२६	५१	०९	०	०८	०४	३८	९	२१	३२	५०	११	१९	३४	११	११	१६	४९	२७	५	०४	२२	०५	५	१५	२	११	१५	४७	३
४	११	२०	२६	५१	१०	०२	४०	२८	४	२६	३२	२३	०	०९	१८	४१	९	२१	४३	०३	११	२०	४८	४०	११	१६	५६	५१	५	०४	१८	५४	५	३८	३	२१	१६	५७	४
५	११	२१	२५	५६	१०	१७	२५	२७	४	२६	१४	१८	०	१०	२५	४५	९	२१	५३	१८	११	२२	०२	१३	११	१७	०४	२१	५	०४	१५	४३	५	५९	४	२१	१७	०३	५
६	११	२२	२४	५९	११	०२	१५	२३	४	२५	५७	०२	०	११	२६	४८	९	२२	०३	३४	११	२३	१७	२५	११	१७	११	४९	५	०४	१२	३२	५	२३	५	२३	१८	०५	६
७	११	२३	२४	००	११	१७	०४	३१	४	२५	४०	३२	०	१२	२२	५३	९	२२	१३	४९	११	२४	३१	३०	११	१७	११	१०	५	०४	०९	२२	६	४६	६	११	१९	०७	७
८	११	२४	२२	५९	०	०१	४३	१५	४	२५	२४	४७	०	१३	११	५९	९	२२	२४	०२	११	२५	४५	२८	११	१७	२६	४६	५	०४	०६	११	७	०८	६	५८	२०	०६	८
९	११	२५	२१	५६	०	१६	०७	२८	४	२५	०९	४८	०	१३	५३	४७	९	२२	३४	१३	११	२७	००	३७	११	[illegible]	३४	१३	५	०४	०३	००	७	३१	७	३९	२१	०२	९

यूरेनस, नैपचून, प्लूटो—ग्रहों के निरयण स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच (भारतीय स्टै० टा०)

यूरेनस, नैपचून, प्लूटो—ग्रहों के निरयण स्पष्ट प्रातः साढ़े पाँच (भारतीय स्टै० टा०)

ता०	यूरेनस	नेपचून	प्लूटो (व)
मार्च	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.
२०	९ १९ १६६	९ १३ १३०	७ १९ १२७
२३	९ १९ १५३	९ १३ १३३	७ १९ १२६
२६	९ १९ १५९	९ १३ १३८	७ १९ १२४
२९	९ १२० १०५	९ १३ १४१	७ १९ १२२
अप्रै.	९ १२० १११	९ १३ १४४	७ १९ १०९
३	९ १२० १९५	९ १३ १४५	७ १९ १०६
६	९ १२० १२०	९ १३ १४७	७ १९ १०३
९	९ १२० १२४	९ १३ १५०	७ १९ १००
१२	९ १२० १२८	९ १३ १५२	७ १८ १५६
१५	९ १२० १३२	९ १३ १५३	७ १८ १५२
१८	९ १२० १३५	९ १३ १५४	७ १८ १४९
२१	९ १२० १३८	९ १३ १५६	७ १८ १४५
२४	९ १२० १४०	९ १३ १५६	७ १८ १४१
२७	९ १२० १४३	९ १३ १५७	७ १८ १३८
३०	९ १२० १४४	९ १३ १५७	७ १८ १३५
मई	९ १२० १४५	९ १३ १५७	७ १८ १३२
३	९ १२० १४५	९ १३ १५७	७ १८ १२८
६	९ १२० १४६	९ १३ १५६	७ १८ १२३
९	९ १२० १४६	९ १३ १५५	७ १८ १९८
१२	९ १२० १४६	९ १३ १५४	७ १८ १९३
१५	९ १२० १४५	९ १३ १५३	७ १८ १०८
१८	९ १२० १४४	९ १३ १५१	७ १८ १०३
२१	९ १२० १४२	९ १३ १४९	७ १७ १५८
२४	९ १२० १४०	९ १३ १४६	७ १७ १५३
२७	९ १२० १३८	९ १३ १४४	७ १७ १४९
३०	९ १२० १३५	९ १३ १४१	७ १७ १४५
जून	९ १२० १३३	९ १३ १४०	७ १७ १४१
३	९ १२० १३०	९ १३ १३८	७ १७ १३६
६	९ १२० १२७	९ १३ १३४	७ १७ १३१

जून	यूरेनस	नैपचून (व)	प्लूटो (व)
९	९ १२० १२२	९ १३ १३१	७ १७ १२७
१२	९ १२० १९८	९ १३ १२७	७ १७ १२२
१५	९ १२० १९३	९ १३ १२४	७ १७ १९७
१८	९ १२० १०८	९ १३ १२०	७ १७ १९३
२१	९ १२० १०३	९ १३ १९६	७ १७ १०८
२४	९ १९ १५७	९ १३ १९१	७ १७ १०४
२७	९ १९ १५१	९ १३ १०७	७ १७ १०२
३०	९ १९ १४५	९ १३ १०२	७ १७ १००
जुला.	९ १९ १४३	९ १३ १९	७ १६ १५७
३	९ १९ १३९	९ १२ १५८	७ १६ १५४
६	९ १९ १३२	९ १२ १५४	७ १६ १५०
९	९ १९ १२६	९ १२ १४८	७ १६ १४७
१२	९ १९ १९८	९ १२ १४४	७ १६ १४४
१५	९ १९ १९१	९ १२ १३९	७ १६ १४१
१८	९ १९ १०५	९ १२ १३४	७ १६ १३९
२१	९ १८ १५७	९ १२ १३०	७ १६ १३७
२४	९ १८ १५०	९ १२ १२५	७ १६ १३५
२७	९ १८ १४३	९ १२ १२०	७ १६ १३४
३०	९ १८ १३६	९ १२ १९६	७ १६ १३३
अग.	९ १८ १३१	९ १२ १९२	७ १६ १३२
३	९ १८ १२६	९ १२ १०९	७ १६ १३१
६	९ १८ १९९	९ १२ १०५	७ १६ १३०
९	९ १८ १९२	९ १२ १००	७ १६ १३०
१२	९ १८ १०६	९ १९ १५६	७ १६ १३०+
१५	९ १०७ १५९	९ १९ १५०	७ १६ १३१
१८	९ १७ १५२	९ १९ १४६	७ १६ १३२
२१	९ १७ १४६	९ १९ १४२	७ १६ १३३
२४	९ १७ १४०	९ १९ १३८	७ १६ १३४
२७	९ १७ १३४	९ १९ १३५	७ १६ १३५

अग.	यूरेनस (व)	नैपचून	प्लूटो
३०	९ १७ १२९	९ १९ १३१	७ १६ १३६
सितं.	९ १७ १२५	९ १९ १२९	७ १६ १३८
३	९ १७ १२२	९ १९ १२७	७ १६ १४१
६	९ १७ १९७	९ १९ १२४	७ १६ १४४
९	९ १७ १९२	९ १९ १२२	७ १६ १४६
१२	९ १७ १०८	९ १९ १२०	७ १६ १४८
१५	९ १७ १०५	९ १९ १९८	७ १६ १५२
१८	९ १७ १०१	९ १९ १९६	७ १६ १५७
२१	९ १६ १५८	९ १९ १९४	७ १७ १०१
२४	९ १६ १५६	९ १९ १९३	७ १७ १०६
२७	९ १६ १५३	९ १९ १९२	७ १७ १०९
३०	९ १६ १५२	९ १९ १९१	७ १७ १९२
अक्तू.	९ १६ १५२	९ १९ १९१	७ १७ १९६
३	९ १६ १५०	९ १९ १९१	७ १७ १२१
६	९ १६ १५०	९ १९ १९०	७ १७ १२६
९	९ १६ १४९	९ १९ १९०	७ १७ १३१
१२	९ १६ १४९	९ १९ १९१	७ १७ १३७
१५	९ १६ १५०	९ १९ १९१	७ १७ १४३
१८	९ १६ १५१	९ १९ १९२	७ १७ १४९
२१	९ १६ १५३	९ १९ १९४	७ १७ १५५
२४	९ १६ १५५	९ १९ १९५	७ १८ १०२
२७	९ १६ १५७	९ १९ १९७	७ १८ १०८
३०	९ १७ १००	९ १९ १९९	७ १८ १९३
नव.	९ १७ १०२	९ १९ १२०	७ १८ १९८
३	९ १०७ १०४	९ १९ १२२	७ १८ १२४
६	९ १७ १०८	९ १९ १२५	७ १८ १३१
९	९ १७ १९४	९ १९ १२८	७ १८ १३८
१२	९ १७ १९७	९ १९ १३२	७ १८ १४५
१५	९ १७ १२२	९ १९ १३५	७ १८ १५३
१८	९ १७ १२८	९ १९ १३९	७ १९ १००

नवं.	यूरेनस	नैपचून	प्लूटो
२१	९ १७ १३४	९ १९ १४४	७ १९ १०७
२४	९ १७ १४०	९ १९ १४९	७ १९ १९४
२७	९ १७ १४७	९ १९ १५३	७ १९ १९९
३०	९ १७ १५४	९ १९ १५८	७ १९ १२३
दिसं.	९ १७ १५७	९ १९ १५९	७ १९ १२८
३	९ १८ १०२	९ १२ १०३	७ १९ १३५
६	९ १०८ १०९	९ १२ १०८	७ १९ १४३
९	९ १८ १९७	९ १२ १९४	७ १९ १४९
१२	९ १८ १२६	९ १२ १९९	७ १९ १५६
१५	९ १८ १३४	९ १२ १२५	७ १२० १०३
१८	९ १८ १४३	९ १२ १३१	७ १२० १९०
२१	९ १८ १५२	९ १२ १३८	७ १२० १९६
२४	९ १९ १०१	९ १२ १४४	७ १२० १२३
२७	९ १९ १९१	९ १२ १५१	७ १२० १३७
३०	९ १९ १२०	९ १२ १५७	७ १२० १३१
जन (९७)	९ १९ १२७	९ १३ १००	७ १२० १३६
३	९ १९ १३३	९ १३ १०५	७ १२० १४२
६	९ १९ १४३	९ १३ १९२	७ १२० १४८
९	९ १९ १५४	९ १३ १९८	७ १२० १५३
१२	९ १२० १०४	९ १३ १२५	७ १२० १५९
१५	९ १२० १९४	९ १३ १३२	७ १२१ १०४
१८	९ १२० १२४	९ १३ १३८	७ १२१ १०९
२१	९ १२० १३५	९ १३ १४६	७ १२१ १९३
२४	९ १२० १४६	९ १३ १५२	७ १२१ १९८
२७	९ १२० १५७	९ १३ १५९	७ १२१ १२१
३०	९ १२१ १०७	९ १४ १०६	७ १२१ १२४
फर.	९ १२१ १९४	९ १४ १९०	७ १२१ १२७
३	९ १२१ १२१	९ १४ १९५	७ १२१ १३०
६	९ १२१ १३२	९ १४ १२१	७ १२१ १३३
९	९ १२१ १४२	९ १४ १२८	७ १२१ १३५

फर०	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
१२	९।११।५२	९।४।३४	७।११।३८
१५	९।१२।०२	९।४।४०	७।११।४१
१८	९।१२।१२	९।४।४६	७।११।४३
२१	९।१२।२२	९।४।५२	७।११।४४
२४	९।१२।३१	९।४।५८	७।११।४५
२७	९।१२।४१	९।५।०४	७।११।४६
मार्च	९।१२।४७	९।५।०८	७।११।४७
३	९।१२।५३	९।५।११	७।११।४७
६	९।१३।०२	९।५।१६	७।११।४८
९	९।१३।१०	९।५।२१	७।११।४८
१२	९।१३।१९	९।५।२७	७।११।४८
१५	९।१३।२८	९।५।३१	७।११।४७
१८	९।१३।३५	९।५।३५	७।११।४६
२१	९।१३।४२	९।५।३९	७।११।४५
२४	९।१३।५०	९।५।४४	७।११।४४
२७	९।१३।५७	९।५।४७	७।११।४२
३०	९।१४।०३	९।५।५०	७।११।४०
अप्रै.	९।१४।०७	९।५।५३	७।११।३८
३	९।१४।११	९।५।५४	७।११।३६
६	९।१४।१६	९।५।५६	७।११।३४
९	९।१४।२१	९।५।५९	७।११।३१
१२	९।१४।२७	९।६।०१	७।११।२८
१५	९।१४।३१	९।६।०३	७।११।२०
१८	९।१४।३५	९।६।०४	७।११।२३

चन्द्रमा की क्रांति (DELLINATION) २०५३

(जिस स्थान पर (+) का चिन्ह हो वहाँ उत्तर तथा जहाँ (—) हो वहाँ दक्षिणक्रांति समझें)

ता. मास.	चं. क्रां.	ता. मास.	चं. क्रां.	ता. मास.	चं. क्रां.	ता. मास.	चं. क्रां.
१९ मार्च	०।५२	२५ जून	−५।०५	१ अक्तू.	१५।४३	७ जन.	१७।५७
२२ मार्च	+११।१२	२८ जून	१५।२३	४ अक्तू.	१८।०२	१० जन.	१५।३६
२५ मार्च	१७।५६	१ जुलाई	१८।१६	७ अक्तू.	१३।०८	१३ जन.	४।१७
२८ मार्च	१७।०१	४ जुलाई	१३।३६	१० अक्तू.	३।११	१६ जन.	+८।३६
३१ मार्च	९।३५	७ जुलाई	+२।४०	१३ अक्तू.	−८।१०	१९ जन.	१६।५४
१ अप्रै.	६।०४	१० जुलाई	+१३।३६	१६ अक्तू.	१६।४२	२२ जन.	१७।४८
४ अप्रै.	−५।५५	१३ जुलाई	१८।२९	१९ अक्तू.	१७।१९	२५ जन.	११।४३
७ अप्रै.	१५।५३	१६ जुलाई	१५।५७	२२ अक्तू.	८।५०	२८ जन.	१।२९
१० अप्रै.	१८।०२	१९ जुलाई	७।३४	२५ अक्तू.	+४।११	३१ जन.	−९।२९
१३ अप्रै.	१०।३६	२२ जुलाई	३।४४	२८ अक्तू.	१४।५०	१ फर.	१२।४०
१६ अप्रै.	२।०१	२५ जुलाई	१४।११	३१ अक्तू.	१८।५०	४ फर.	१८।१२
१९ अप्रै.	१३।१०	२८ जुलाई	१८।२७	१ नवं.	१७।३६	७ फर.	१४।०६
२२ अप्रै.	१८।२३	३१ जुलाई	१२।०६	४ नवं.	११।२२	१० फर.	१।४३
२५ अप्रै.	१५।५४	१ अग.	६।०४	७ नवं.	०।५४	१३ फर.	+१०।५६
२८ अप्रै.	७।२४	४ अग.	+५।११	१० नवं.	−१०।२९	१६ फर.	१७।४१
१ मई	४।२४	७ अग.	१५।१६	१३ नवं.	१७।४८	१९ फर.	१६।४६
४ मई	१५।०५	१० अग.	१८।२४	१६ नवं.	१६।०२	२२ फर.	९।२७
७ मई	१८।११	१३ अग.	१४।११	१९ नवं.	५।५१	२५ फर.	−१।१४
१० मई	११।२९	१६ अग.	४।५७	२२ नवं.	+६।५९	२८ फर.	११।४३
१३ मई	+०।५०	१९ अग.	−६।२८	२५ नवं.	१६।१७	१ मार्च.	१४।२८
१६ मई	१२।२२	२२ अग.	१५।४५	२८ नवं.	१८।०५	४ मार्च.	१८।०८
१९मई	१८।१६	२५ अग.	१७।५६	१ दिसं.	१२।३३	७ मार्च.	१२।१७
२२ मई	१६।३७	२८ अग.	९।५८	४ दिसं.	२।२८	१० मार्च.	+०।४५
२५ मई	८।४३	३१ अग.	+३।२७	७ दिसं.	−८।५७	१३ मार्च.	१२।५३
२८ मई	−२।४३	१ सित.	७।४१	१० दिसं.	१७।११	१६ मार्च.	१८।०४
३१ मई	१३।५३	४ सित.	१६।३०	१३ दिसं.	१६।५१	१९ मार्च.	१५।२४
१ जून	१६।३१	७ सित.	१७।५३	१६ दिसं.	७।०३	२२ मार्च.	७।०१
४ जून	१७।४३	१० सित.	१२।२१	१९ दिसं.	५।५०	२५ मार्च.	−४।०१
७ जून	८।४१	१३ सित.	२।११	२२ दिसं.	१५।३६	२८ मार्च.	१३।५२
१० जून	+३।५८	१६ सित.	−९।०८	२५ दिसं.	१८।२१	३१ मार्च.	१८।०१
१३ जून	१४।२५	१९ सित.	१७।०४	२८ दिसं.	१३।३६	१ अप्रै.	१७।३१
१६ जून	१८।३६	२२ सित.	१६।५५	३१ दिसं.	३।५७	४ अप्रै.	१०।०२
१९ जून	१५।२२	२५ सित.	७।३०	१ जन.	+०।१२	७ अप्रै.	+३।१७
२२ जून	६।२९	२८ सित.	+५।५३	४ जन.	१०।५०	१० अप्रै.	१४।३४

सन् १९९६-९७ ई० में अंशकलात्मक युतियाँ

१ जनवरी	बुध-यूरेनस	(मकर)
१३ जनवरी	मंग-बुध	(मकरे)
१६ जनवरी	सूर्य नैपच्यून	(मकरे)
१७ जनवरी	बुध-यूरेनस	(मकरे)
१८ जनवरी	सूर्य-बुध	(मकरे)
२१ जनवरी	बुध-नैपच्यून	(मकरे)
२१ जनवरी	सूर्य-यूरेनस	(मकरे)
२ फरवरी	शुक्र-शनि	(कुंभे)
५ मार्च	सूर्य मंग	(कुंभे)
१७ मार्च	सूर्य-शनि	(मीने)
२२ मार्च	मंगल-शनि	(मीने)
२३ मार्च	बुध शनि	(मीने)
२४ मार्च	मंगल-बुध	(मीने)
६ अप्रैल	सूर्य-केतु	(मीने)
१५ अप्रैल	मंगल-केतु	(मीने)
२९ मई	मंगल-बुध	(मेषे)
१० जून	सूर्य-शुक्र	(वृष)
१५ जून	मंगल-बुध	(वृष)
२९ जून	मंगल-शुक्र	(वृषे)
११ जुलाई	सूर्य-बुध	(मिथुने)
३ सितंबर	मंगल-शुक्र	(कर्के)
१७ सितंबर	सूर्य-बुध	(कन्या)
३० सितंबर	सूर्य-राहु	(कन्या)
१३ अक्तूबर	बुध-राहु	(कन्या)
२ नवंबर	सूर्य-बुध	(तुला)
३ नवंबर	शुक्र-राहु	(कन्या)
१६ नवंबर	बुध-प्लूटो	(वृश्चिक)
२४ नवंबर	सूर्य-प्लूटो	(वृश्चिक)
२ जनवरी (९७)	सूर्य-बुध	(धनु)
९ जनवरी	गुरु-नैप.	(मकरे)
१२ जनवरी	मंग- राहु	(कन्या)
१६ जनवरी	शनि-केतु	(मीने)
१७ जनवरी	सूर्य-नैप.	(मकरे)
२४ जनवरी	सूर्य-हर्षल	(मकरे)
६ फरवरी	गुरु-शुक्र	(मकरे)
७ फरवरी	शुक्र-हर्ष	(मकरे)
१३ फरवरी	गुरु-हर्ष	(मकरे)
२ मार्च	बुध-शुक्र	(कुंभे)
११ मार्च	सूर्य-बुध	(कुंभे)
३०/३१ मार्च	सूर्य-शनि	(मीने)
२ अप्रै	सूर्य-शुक्र	(मीने)

शुभ विवाह मुहूर्त विक्रमी सम्वत् २०५३

शुभ विवाह मुहूर्त्त विक्रमी सम्वत् २०५३

समय शुद्धि विचार—

ग्रहण शूल नक्षत्र—३/४ अप्रैल को ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण हस्त नक्षत्र में लगने से यह नक्षत्र तीन मास तक विवाहादि कार्यों में निषिद्ध रहेगा।
शुक्रास्त—७ जून (प्रवि. २५ ज्येष्ठ) से १४ जून (१ आषाढ़) तक शुक्रास्त रहेगा।
आषाढ़ अधिमास—१६ जून (प्रवि. ३ आषाढ़) से १५ जुलाई तक आषाढ़ अधिक मास रहेगा।
श्राद्ध काल—२७ सित. (प्रवि. १२ आश्विन) से १२ अक्तूबर तक श्राद्ध हैं।
भीष्म पंचक—२१ नवंबर से २५ नवंबर प्रातः ९:४१ तक भीष्म पंचक रहेंगे।
पौष मास—१५ दिसबंर से १२ जनवरी (९७) तक सूर्य धनु राशिस्थ संचार करेगा।
गुर्वस्त—८ जनवरी (९७) से २ फरवरी, ९७ तक गुर्वस्त रहेगा।
गुरू बाल्यत्व—३, ४ फरवरी (९७) को गुरू बाल्यत्व दोष।
शुक्रास्त (९७")—२१ फर. (प्रवि. १० फाल्गु.) से संवत के अन्त (७ अप्रैल' ९७) तक शुक्रास्त रहेगा।
चैत्र मास—१४ मार्च से सूर्य मीन राशि में संचार करेगा। अत एव इन तारीखों में विवाहादि शुभ मुहूर्त नहीं लगाए गए॥
नोट—अक्षांश भेद के कारण गुरू-शुक्रस्तोदय में एक/दो दिन के अंतर की सम्भावना रहती है।

नीचे १ लता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ जामित्र, ६ पंचक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह, ९ क्रांति साम्य, १० दग्धातिथि—इसी क्रम-संख्यानुसार लतादि दस गुण दोषों की गणना की गई है। ऽ (आड़ी) चिन्ह क्रमानुसार दोष के प्रतीक हैं। जबकि सीधी (।) रखाएँ दोषाभाव की सूचक है। जहाँ पर पात, युति, वेध, दग्ध तिथि, शुक्र-मंगल षष्टाष्टमादि दोष अथवा भद्रादि दोषों के परिहार वाक्य मिल जाते हैं, वहाँ पर उन मुहूर्तों को ग्रहणीय मुहूर्तों में लगा दिया गया है।

रात्रि भद्रा परिहार—दिवस से प्रारम्भ होकर भद्रा यदि रात्रि को आ जावे, अथवा रात्रि से प्रारंभ होकर दिन में आ जावे तो वह भद्रा अरिष्टकर न होकर कल्याण कारिणी हो जाती है। रात्रि भद्रा यदन्हि स्यात् दिवा भद्रा निशि। न तत्र भद्रा दोष स्यात् —, सा भद्रा भद्रदायिनी॥ पीयूषधारा"।

—निवेदक : पं. पन्ना लाल ज्यो. गणितकर्त्ता

वैशाख मासे

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
वैशा. शुक्ल ३	शनौ	८ वैशाख	२० अप्रैल	रोहिणी	। । ऽ शु. । । । । । । ।	रा. ल. १०, ११ अक्षया ३, (शुक्र युति परिहार)
वैशा. शुक्ल ४	रवौ	९ वैशाख	२१ अप्रैल	रोहिणी	। । ऽ शु. । । । । । । ।	दि. ल. ३, (गु. रा. दान) ४ (शुक्र युति परिहार)
वैशा. शुक्ल ४	रवौ	९ वैशाख	२१ अप्रैल	मृगे	। । । । । ऽ रा ऽ ऽ । । ।	रा. ल. १०., ११ (रात्रौ भद्रा परिहार)
वैशा. शुक्ल ५	चंद्रे	१० वैशाख	२२ अप्रैल	मृगे	। । । । । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ४, गोधू., रा. ल. ११ (रात २.५६ तक)
वैशा. शुक्ल ९	शनि	१५ वैशाख	२७ अप्रैल	मघा	। । । । । । ऽ । ऽ । ।	रा. ल. ११ (चं. दा.) (गणितेन क्रांति साम्याभाव)
वैशा. शुक्ल १०	रवि	१६ वैशाख	२८ अप्रैल	मघा	। । । । । । ऽ । ऽ । ।	दि. ल. ३ (राहु, गुरु दान), ४ (गणितेन क्रां. साम्याभाव)
वैशा. शुक्ल १३	बुधे	१९ वैशाख	१ मई	चित्रा	। । । । ऽ । । । । । ।	रा. ल. ९ (गुरू केंद्रे), १० (मकर)
वैशा. शुक्ल १४	गुरौ	२० वैशाख	२ मई	चित्रा	। । । । ऽ । । । । । ।	दि. ल. ३ (रा. गु. दान), ४, ५
वैशा. शुक्ल १४	गुरौ	२० वैशाख	२ मई	स्वाति	। । । । ऽ मं. । । ऽ । । ।	रा. ल. ९ (शुक्र छठे परि., गुरु केंद्रे), १०, ११ (रात्रौ भद्रा परिहार)

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
वैशा. शुक्ल १५	शुक्रे	२१ वैशाख	३ मई	स्वाति	I I I I S मं. S I S I I	दि. ल. ३ (राहु गु. दा.), ४, ५
ज्येष्ठ कृष्ण ३	चंद्रे	२४ वैशाख	६ मई	मूले	I I I I S शु. I I S I I	दि. ल. ५ (दुपं. १.१५ उपरांत) रा. ल. ११
ज्येष्ठ कृष्ण ४	भौमे	२५ वैशाख	७ मई	मूले	I I I I S I I S I I	दि. ल. ३ (रा. गु. दान), ४ (कर्क लग्न दिन ११.१७ तक)
ज्येष्ठ कृष्ण ६	बुधे	२६ वैशाख	८ मई	उषा	S S I S शु. I I I I S S	दि. ल. ५ दग्धा परि रा. ल. ११ रात्रौ भद्रा परि रात्रौ २.०५ उप दग्धति अभाव, शुक्रवेधऽभाव
ज्येष्ठ कृष्ण ७	गुरौ	२७ वैशाख	९ मई	श्रवणे	I I I I I I I I I I	रा. ल. ११ (कुम्भ लग्न)
ज्येष्ठ कृष्ण ८	शुक्रे	२८ वैशाख	१० मई	धनिष्ठा	I I I I I I I S I I	दि. ल. ४ (चं. दा.) (आवश्यके, क्षय नक्षत्र विचार)

ज्येष्ठ मासे

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
ज्ये. शुक्ल १/२	शनौ	५ ज्येष्ठ	१८ मई	रोहिणी	S मं. I I I I I I S अ I I	दि. ल. ३ (रा. गु. दा) ४, ५, रा. ल. ११ चं. दा.
ज्ये. शुक्ल २	रवौ	६ ज्येष्ठ	१९ मई	मृगे	I I S शु. I I I S I I I	दि. ल. ३ (रा. गु. दा.), ४, ५, गोधूली, रा. ल. ११ (शुक्र युति परिहार)
ज्ये. शुक्ल ३	चंद्रे	७ ज्येष्ठ	२० मई	मृगे	I I S शु. I I I S I I I	दि. ल. ४ (चं. दा.) ल. १०.४६ तक, (शुक्र युति)
ज्ये. शुक्ल ७	शुक्रे	११ ज्येष्ठ	२४ मई	मघा	I I I I I S S S I I	रात्रि धनु व मकरे मृत्यु पं. दोषः, रा. ल. ११ (कुंभे मृत्यु पं. अभाव)
ज्ये. शुक्ल ७/८	शनौ	१२ ज्येष्ठ	२५ मई	मघा	I I I I I S अ S S I I	रा. ल. ११ (चं. दा.)
ज्ये. शुक्ल ११	बुधे	१६ ज्येष्ठ	२९ मई	चित्रा	I I I I S के S S I I I	दि. ल. ४ (प्रातः १०.२६ के बाद), ५, रात्रि लग्न कुम्भ (११)
ज्ये. शुक्ल १२	गुरौ	१७ ज्येष्ठ	३० मई	स्वाति	S सू. I I I I S चौ I I I I	दि. ल. ३ (गु. दा.), ४, ५, गोधू., रात्रि लग्न ११
ज्ये. शुक्ल १५	शनौ	१९ ज्येष्ठ	१ जून	अनु.	I I I S बु. I I I S I I	लग्न गोधू., रा. ल. ११
प्र. आ. कृष्ण १	रवौ	२० ज्येष्ठ	२ जून	मूला	I S I I S शु. I I I I I	रा. ल. ११
प्र. आ. कृष्ण २	चन्द्रे	२१ ज्येष्ठ	३ जून	मूला	I S I I S शु. S I I I I	दिवौ ३ लग्ने मृत्यु पंचक दोषः दि. ल. ५ (सिंह लग्ने मृत्युबाणऽभावः)

७ जून से १४ जून तक शुक्रास्त रहेगा तथा १६ जून से १५ जुलाई तक अधिक आषाढ़ मास होगा।

श्रावण मासे

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
आषा. शुक्ल ३	गुरौ	३ श्रावण	१८ जुलाई	मघा	I I I I I I I I I I	ल. गोधू., रा. ल. ११ (चं. दा.)
आषा. शुक्ल ७	भौमे	८ श्रावण	२३ जुलाई	चित्रा	I I I I S के I S S I I	दि. ल. ५ (सिंह)
आ. शुक्ल ७/८	भौमे	८ श्रावण	२३ जुलाई	स्वाति	I S मा. I I I I I S I I	रा. ल. १ (मेषे चंद्र दान)
आषा. शुक्ल ८	बुधे	९ श्रावण	२४ जुलाई	स्वाति	I S मा I I I S रो I S I I	दि. ल. ५, गोधू. रा. ल. ११ (कुंभ)
आषा. शुक्ल ९	गुरौ	१० श्रावण	२५ जुलाई	अनु.	I I I I I I I S S I	रा. ल. १ (चं. पू.) (गणितेन क्रां. साम्याभाव)
आषा. शुक्ल १०	शुक्रे	११ श्रावण	२६ जुलाई	अनु.	I I I I I S I S S I	दि. ल. ५ (मृत्युबाण दोष सायं ६.४३ पर)
आषा. शुक्ल ११	शनौ	१२ श्रावण	२७ जुलाई	मूला	S सू. I I I S शु. S I I I I	रा. ल. ११, १ (कुंभ व मेष)

पक्ष तिथि | वार | प्रविष्टे | ता. अंग्रेज़ी | नक्षत्र | लतादि दस दोष | लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
आषा. शुक्ल १३	रवौ	१३ श्रावण	२८ जुलाई	मूला	ऽ ऽ वै । । ऽ शु. । । । । ।	दि. ल. ५ (सिंह)
आषा. शुक्ल १५	भौमे	१५ श्रावण	३० जुलाई	श्रवण	। । । ऽ बु. ऽ । । ऽ । ।	रा. ल. १ (पादेन बुध वेधाभाव)
श्राव. कृष्ण १	बुधे	१६ श्रावण	३१ जुलाई	धनिष्ठा	। । । । । ऽ चौ ऽ । । ।	दि. ल. ७, रा. ल. १ (मेष)
श्राव. कृष्ण ७	चन्द्र	२१ श्रावण	५ अगस्त	अश्विनी	ऽ शु. । । । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ७ (च. दां) (लग्ने मृत्यु पंचक दोषाभाव)
श्राव. कृष्ण १०	गुरौ	२४ श्रावण	८ अगस्त	रोहिणी	। । । । । ऽ । ऽ । ।	दि. ल. ५, रा. ल. १ (रात्रौ भद्रा परिहार)
श्राव. कृष्ण ११	शुक्रे	२५ श्रावण	९ अगस्त	मृगे	ऽ बु. । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५, रा. ल. १ (मेष)
भाद्रपद मासे						
श्राव. शुक्ल ३	शनौ	२ भादों	१७ अगस्त	उफा.	। । ऽ बु । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ७, गोधू. (लग्ने मृत्यु पंचक दोषऽभाव)
श्राव. शुक्ल ४	रवौ	३ भादों	१८ अगस्त	चित्रा	। । । । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	रा. ल. ४ (कर्क)
श्राव. शुक्ल ५	चंद्रे	४ भादों	१९ अगस्त	चित्रा	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ७, गोधू., रा. ल. १, ४ (चं. दा.)
श्राव. शुक्ल५/६	चन्द्रे	४ भादों	१९ अगस्त	स्वाति	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ४ (कर्क)
श्राव. शुक्ल ६	भौमे	५ भादों	२० अगस्त	स्वाति	। । । । । ऽ । । । ।	लग्न गोधू., रा. ल. ४ (कर्क)
श्राव. शुक्ल ७	बुधे	६ भादों	२१ अगस्त	अनु	। । । । । । । ऽ । ।	रा. ल. ४ (ता. २२ की प्रातः ५.१४ उप. रात्रौ भद्रा परिहारः)
श्राव. शुक्ल ८	गुरौ	७ भादों	२२ अगस्त	अनु	। । । । । ऽ चौ । ऽ । ।	दि. ल. ७, रा. ल. ४.
श्राव. शुक्ल ११	रवौ	१० भादों	२५ अगस्त	उषा	ऽ सू. । । । ऽ मं. । । । । ।	रा. ल. ४ (चं. दा.) २६ ता. की प्रातः ४.४३ उपरांत
श्राव. शुक्ल १२	चन्द्रे	११ भादों	२६ अगस्त	उषा	ऽ सू. । । । ऽ मं. । । । । ।	दि. ल. ७, गोधूलि च
श्राव. शुक्ल १३	भौमे	१२ भादों	२७ अगस्त	धनिष्ठा	। । । । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	रा. ल. १, ४ (कर्क लग्न २८ ता. की प्रातः ४.३५ तक)
भाद्र कृष्ण ३	शनौ	१६ भादों	३१ अगस्त	रेवती	।ऽ गं ।ऽ बु. ऽ रा. ऽ चौं । । । ।	रा. ल. मेष, (पादेन बुध वेध अभाव)
भाद्र कृष्ण ७	बुधे	२० भादों	४ सितंबर	रोहिणी	ऽ शु. ऽ । । । । । । । ।	दिन लग्न ८, रा. ल. १, ३ (मिथुने गुरू दान)
भाद्र कृष्ण ८	गुरौ	२१ भादों	५ सितंबर	मृगे	। । । । । ऽ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८, रा. ल. १, (लग्ने मृत्यु बाण दोषाभाव)
भाद्र कृष्ण ९	शुक्रे	२२ भादों	६ सितंबर	मृगे	। । । । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ७ (तुला)
भाद्र शुक्ल १	शुक्रे	२९ भादों	१३ सितंबर	उफा	। । ऽ सू. बु. । । । ऽ । । ।	दि. ल. ७, ८, रा. ल. ३ गुरु दान (युति दोष परिहारः)
आश्विन मासे						
भाद्र शुक्ल ४	भौमे	२ आश्विन	१७ सितंबर	स्वाति	। ऽ वै । । । । । । । ।	दि. ल. ७ (चंद्र लग्ने-चिन्तनीय)
भाद्र शुक्ल ५	बुधे	३ आश्विन	१८ सितंबर	अनु.	। । । । । ऽ अ । । । ।	रा. ल. १, २, ३, ५ (मेष-मिथुने चन्द्र षडाष्ट-परिहार)

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेजी	नक्षत्र	लत्तादि दश दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
भाद्र शुक्ल ६	गुरौ	४ आश्विन	१९ सितंबर	अनु.	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ७ (मिथुन)
भाद्र शुक्ल ८	शुक्रे	५ आश्विन	२० सितंबर	मूले	। । । । । ऽ नृ । ऽ । ऽ	रा. ल. १ (दग्धा तिथि परिहार)
भाद्र शुक्ल ९	शनौ	६ आश्विन	२१ सितंबर	मूले	। । । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ७ (प्रातः ८.५४ तक)
भाद्र शुक्ल १०	रवौ	७ आश्विन	२२ सितंबर	उ. षा.	ऽ रा. । । । । ऽ चौ । ऽ । ।	दि. ल. ७, ८ रा. ल. १ (मेष)
भाद्र शुक्ल ११	चन्द्रे	८ आश्विन	२३ सितंबर	श्रवणे	। । । । ऽ मं । । । । ।	दि. ल. ७ (प्रातः ९.४२ उपरांत), ८, रात्रि लग्न १ (मेष)
भाद्र शुक्ल १२	भौमे	९ आश्विन	२४ सितंबर	धनि.	ऽ सू. । । ऽ शु. ऽ ऽ रो ऽ । । ।	दि. ल. ७, ८ गोधू. रा. ल. १, ३ (गु. दान)
२७ सितबंर से १२ अक्तूबर तक श्राद्ध रहेंगे						
आ. शुक्ल १/२	रवि	२८ आश्विन	१३ अक्तूबर	स्वाती	। । । । । । । । । ।	रा. ल. १ (चं. दा), ३, ५ (मिथुने गुरु परिहार)
आश्वि. शुक्ल २	चन्द्रे	२९ आश्विन	१४ अक्तूबर	स्वाती	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ८, ९ (भौम ८ वें परिहार)

कार्तिक मासे (पर्वतीय क्षेत्रेषु केवलम्)

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेजी	नक्षत्र	लत्तादि दश दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
आश्वि. शुक्ल ५	गुरौ	२ कार्तिक	१७ अक्तूबर	मूले	। । । । । ऽ । । । ।	रा. ल. ३ (चंद्र गुरु दान) (मिथुन लग्ने मृत्यु बाण दोषऽभाव)
आश्वि. शुक्ल ६	शुक्रे	३ कार्तिक	१८ अक्तूबर	मूले	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (वृश्चिक)
आश्वि. शुक्ल ७	शनौ	४ कार्तिक	१९ अक्तूबर	उषा	ऽ रा । । । । । । ऽ । ।	रा. ल. ४ (कर्के चंद्र दान)
आश्वि. शुक्ल ८	रवौ	५ कार्तिक	२० अक्तूबर	उषा	ऽ रा । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ८, ९ (धनु लग्न ११.५३ तक)
आश्वि. शुक्ल ९	चन्द्रे	६ कार्तिक	२१ अक्तूबर	धनिष्ठा	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८, (प्रातः १०.३६ उपरांत), ९, रा. ल. ३ मिथुन लग्न (रात्रि ९.३९ के बाद)
आश्वि. शु. ११	भौमे	७ कार्तिक	२२ अक्तूबर	धनिष्ठा	। । । । । । ऽ ऽ ऽ ।	दि. ल. ८ (दिने ८ बजकर ४२ मिनट तक)
आश्वि. शु. १४	शुक्रे	१० कार्तिक	२५ अक्तूबर	रेवती	। ऽ हर्ष । ऽ शु ऽ रा । । । । ।	दि. ल. ८, ९, रा. ल. ३ (गु. दा.), ४ (पादेन शुक्र वेधाभावः)
आश्वि. शु. १५	शनि	११ कार्तिक	२६ अक्तूबर	अश्वि.	। । । ऽ बु । ऽ व ऽ । ।	दि. ल. ९ रा. ल. ३, ४ (गु. दा.)
कार्ति. कृष्ण ३	भौमे	१४ कार्तिक	२९ अक्तूबर	रोहिणी	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ३ (गु. दा.), ४ (कर्क)
कार्ति. कृष्ण ४	बुधे	१५ कार्तिक	३० अक्तूबर	मृगे	। । । । । । ऽ परि ऽ । ।	दि. ल. ८, रा. ल. ४ (कर्क लग्न)
कार्ति. कृष्ण ९	चन्द्रे	२० कार्तिक	४ नवंबर	मघा	ऽ बु । ऽ मं. । । ऽ । ऽ । ।	रा. ल. ३, ४ (भौम युति परिहारः)
कार्ति. कृ.१०/११	बुधे	२२ कार्तिक	६ नवंबर	उफा	ऽ मं. ऽ वै. । । । । ऽ ऽ । ।	रा. ल. ३, ४ (च. दा.) (मिथुन लग्न रात्रि ८.२१ के बाद)
कार्ति. कृष्ण ११	गुरौ	२३ कार्तिक	७ नवंबर	उफा	ऽ मं. ऽ वै. । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८, ९ रा. ल. ३ (गु. दा.)
कार्ति. शुक्ल १	भौमे	२८ कार्तिक	१२ नवंबर	अनु.	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ९, रा. ल. ४ (कर्क लग्न रात ११.०३ बजे तक)
कार्ति. शुक्ल ३	बुधे	२९ कार्तिक	१३ नवंबर	मूले	। । । । । ऽ । । । ।	रा. ल. ४ (कर्क) (कर्क लग्ने मृ. पंचक दोषाभावः)

मार्गशीर्ष मासे

मार्गशीर्ष मासे

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण (घंटा मिंटों में)
कार्ति. शुक्ल ६	शनौ	२ मार्ग	१६ नवंबर	उषा	ऽ रा ऽ गं । । । । । । ।	दिवस लग्न ९ (धनु)
कार्ति. शुक्ल ६	शनौ	२ मार्ग	१६ नवंबर	श्रवणे	। । । । । ऽ । ऽ । ।	रा. ल. ४ (च. दा.), ७ (लग्ने मृत्यु पंचकाभाव:)
कार्ति. शुक्ल ७	रवि	३ मार्ग	१७ नवंबर	श्रवणे	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ९ (धनु)
कार्ति. शुक्ल ७	रवि	३ मार्ग	१७ नवंबर	धनि.	। । । । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	लग्न गोधूलि, रा. ल. ७ (रात्रौ भद्रा परिहार)
कार्ति. शुक्ल ८	चन्द्रे	४ मार्ग	१८ नवंबर	धनि.	। । । । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (धनु)
(२१ नवंबर से २५ नवंबर प्रात: ९.४१ तक भीष्मपंचक)						
कार्ति. शुक्ल १५	चन्द्रे	११ मार्ग	२५ नवंबर	रोहि.	। । । । ऽ सू ऽ । । । ।	रा. ल. ४ (कर्क) (रात्रौ भीष्मपंचकाभाव:)
मार्ग कृष्ण १/२	भौमे	१२ मार्ग	२६ नवंबर	मृगे	। । । । ऽ बु ऽ अ ऽ । । ।	रा. ल. ४, ७ (कर्क, तुला)
मार्ग कृष्ण २	बुधे	१३ मार्ग	२७ नवंबर	मृगे	। । । । ऽ ऽ अ ऽ । । ।	दि. ल. ९ (चन्द्र ७वें दानम्)
मार्ग कृष्ण ६	रवि	१७ मार्ग	१ दिसंबर	मघा	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ७ (तुला लग्नम्)
मार्ग कृष्ण ७	चंद्रे	१८ मार्ग	२ दिसंबर	मघा	। ऽ वै । । । ऽ रो ऽ । । ।	दि. ल. ९, गोधू., रा. ल. ४ (कर्क)
मार्ग कृष्ण ८	भौमे	१९ मार्ग	३ दिसंबर	उफा	। । । । । । ऽ ऽ । ।	रा. ल. ७ (तारीख ४ दिस. की प्रात: ५ बजकर ४ मिनट के बाद)
मार्ग कृष्ण ९	बुधे	२० मार्ग	४ दिसंबर	उफा	ऽ शु. । । । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ९, गोधू., रा. ल. ४, ७ (तुलायां लग्ने दग्धा विचार)
मार्ग कृष्ण ११	शुक्रे	२२ मार्ग	६ दिसंबर	चित्रा	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (प्रात: ९.१० उप), रा. ल. ४ (कर्क)
मार्ग कृष्ण १२	शनि	२३ मार्ग	७ दिसंबर	चित्रा	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (धनु)
मार्ग कृष्ण १२	शनि	२३ मार्ग	७ दिसंबर	स्वा.	। । । । । ऽ वृ. । ऽ । ।	ल. गोधूली, रा. ल. ४
मार्ग शुक्ल १/२	बुधे	२७ मार्ग	११ दिसंबर	मूले	। ऽ शू । । । ऽ रो । । । ।	रा. ल. ७ (तुला लग्न ता. १२ दिसं. की प्रात: ४.३१ तक)
मार्ग शुक्ल २	गुरौ	२८ मार्ग	१२ दिसंबर	उषा	ऽ रा । ऽ गु. । । । । । । ।	रा. ल. ७ (पादेन गुरू युति अभाव:)
मार्ग शुक्ल ३	शुक्रे	२९ मार्ग	१३ दिसंबर	उषा	ऽ रा. ।ऽ गु. । । ऽ । । । ।	दि. ल. ९, गोधू रा. ल. ४ (च. दा) (पादेन गुरू युत्यभाव:)
मार्ग शुक्ल ३/४	शुक्रे	२९ मार्ग	१३ दिसंबर	उषा	। । । । । ऽ । ऽ । ।	रा. ल. ७ (रात्रौ भद्रा परिहार)

[ता. १५ दिसंबर से १२ जन. ९७ ई. तक सूर्य धनु राशिस्थ—रहेगा] माघ मासे विवाह मुहूर्त अभाव: । गुर्वस्त—८ जन-९६ से २ फरवरी ९७ तक गुर्वस्त ३/४ फरवरी को गुरू बाल्यत्व दोष:

फाल्गुण मासे (सन् १९९७ ई०)

पक्ष तिथि	वार	प्रविष्टे	ता. अंग्रेज़ी	नक्षत्र	लतादि दस दोष	लग्न मुहूर्त दान-पूजादि विवरण
माघ शुक्ल ८	शुक्रे	३ फागुन	१४ फरवरी	रोहिणी	। । । । । ऽ अ ऽ । । ।	रा. ल. १० (ता. १५ फरवरी की प्रात: ५.३५ के बाद)
माघ शुक्ल ९	शनि	४ फागुन	१५ फरवरी	रोहिणी	। । । । । ऽ अ ऽ । । ।	दि. ल. १ (श. दा.), गोधू., रा. ल. ८ (च. दा), १० (मकर)
माघ शुक्ल १०	रवि	५ फागुन	१६ फरवरी	मृग	। ऽ वे । । । ऽ । ऽ । ।	दि. ल. १ (श. दा.), २, गोधू., रा. ल. ७, ९ (चंद्र दान)

शुक्रास्त ता. २१ फरवरी (१० फाल्गु.) से सम्वत् के अन्त तक शुक्रास्त रहेगा ॥

त्रिबल शुद्धि पर आधारित मेषादि राशियों के विवाह मुहूर्त्त वि० संवत् २०५३ (१९९६-९७ ई०)

नीचे वर और कन्या की राशियों के अनुसार पृथक-पृथक विवाह मुहूर्त दिए जा रहे है। वर और कन्या की जन्म कुण्डलियों के मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह विशेष तौर पर शुभ होगा। उदाहरणार्थ मेष राशि के लड़के की कन्या राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त सितंबर में देखना हो, तो दोनों राशियों में सितंबर की २४ तारीख में समानता मिलती है, इस प्रकार सितंबर की २४ तारीख दोनों के विवाह हेतु विशेषतः शुभ होगी। यद्यपि विशेष विवाह मुहूर्त हेतु एवं और अधिक सूक्ष्मता के लिए गत पृष्ठों में दिए गए विवाह मुहूर्तों के गुण दोषों का भी विवेचन करने के पश्चात् निर्णय करना उचित होगा। वर्तमान परिस्थितियों में जबकि लड़कियों का विवाह १८ वर्षायु के बाद बालिग होने पर ही करते हैं, अतएवं गुरु शुद्धि को गम्भीरता पूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को नेष्ट न समझते हुए पूज्य गुरु के रूप में ही स्वीकार कर लेना चाहिए उक्तं च—**दशवर्ष व्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धि विवर्जिता। तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धि पाणिग्रहो मतः॥ व्यास॥**

ध्यान रहे, लड़के को १, २, ५, ७वें ९वें सूर्य पूज्य, ४, ८, व १२वें सूर्य त्याज्य होता है। तथा कन्या को १, ३, ६ व १० वें गुरु साधारणतः पूज्य होगा २, ५, ७, ९, ११वें गुरु विशेष शुभ। अद्यकाले परिस्थितिवश उन्हें ४, ८, व १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। हमारे मतानुसार मंगल हेतु कन्या द्वारा भी प्रसंगवश ४, ८, १२वें सूर्य-चन्द्र का दान व पूजा करवा लेना शुभ एवं कल्याणकारी होगी। पं० पन्ना लाल ज्यो० पंचांगकर्त्ता।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य कन्या के लिए पूज्य गुरू आदि।	कन्या (लड़की)
मेष राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८, **मई** की १, २, ३, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, **जून** की २, ३, **अगस्त** की १७, १८, १९, २०, २५, २६, २७, ३१ (चं. पू.), सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, २०, २१, २२, २३, २४, **अक्तूबर** को १३, १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५-२६ (चं. पू.), २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १३], **फरवरी (९७)** की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मेष राशि के लड़कों को वैशाख, ज्येष्ठ, भादों, कार्तिक मासों में सूर्य की पूजा होगी। श्राव. व मार्ग मासों में मु. निषिद्ध होंगे। मेष राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरु विशेष शुभ तदुपरान्त गुरु की साधारण पूजा रहेगी।	मेष राशि— अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८, मई की १, २, ३, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, जून की २, ३, जुलाई की १८, २३, २४, २७, २८, ३०, ३१, अगस्त की ५ (चं. पू.), ८, ९, १७, १८, १९, २०, २५, २६, २७, ३१ (चं. पू.), सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५-२६ (चं. पू.), २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १३] नवंबर की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १, २, ३, ४, ६, ७, ११, १२, १३, फर. (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
वृष राशि—मई की १८, १९, २०, २४-२५ (चं. पू.) २९, ३०, **जून** की १, **जुलाई** की १८, (चं. पू.), २३, २४, २५, २६, ३०, ३१, **अगस्त** की ५ (चं. दा.), ८, ९, **सितंबर** की १७, १८, १९, २२, (रा. ल.), २३, २४, **अक्तूबर** की १३, १४ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की २०, २१, २२, २५, २६, २९, ३०, **नवं.** की ४-५ (चं. दा.), ६, ७, १२] **पुनश्च नवंबर** की १६, १७, १८, २५, २६, २७ **दिसम्बर** की १-२ (चं. दा.), ३, ४, ६, ७, १३ ता. **फरवरी (९७)** की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	वृष राशि के लड़कों को ज्येष्ठ आषाढ़, आश्विन, मार्ग एवं माघ मासों में सूर्य की पूजा होगी। वैशा. व भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। **वृष राशि की कन्या** को २६ दिसं. तक गुरु पूज्य होगा। इसके पश्चात् शुभ॥	वृष राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८ (चं. पू.), मई की १, २, ३, ८, (रा. लग्न) ९, १०, १८, १९, २०, २४-२५ (चं. पू.) २९, ३०, जून की १, जुलाई की १८, (चं. दा.), २३, २४, २५, २६, ३०, ३१, अगस्त की ५ (चं. दा.), ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, ३१ सितं. की ४, ५, ६, १३, १७, १८, १९, २२, (रा. ल.), २३, २४, अक्तूबर की १३, १४ [कार्तिक मास में अक्तू. की २०, २१, २२, २५, २६, (चं. दा.) २९, ३०, नवं. की ४, ५ ६, ७] नवंबर में १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसम्बर की १-२ (चं. पू.), ३, ४, ६, ७, १३, फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
मिथुन राशि—अप्रैल की २०-२१ (चं. दा.), २७, २८, **मई** की १ (चं. दा.) २, ३, ६, ७, ८ (ल. २.५३ तक), **जुलाई** की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३१ (रा. ल.), **अगस्त** की ५, ८-९ (चं. पू.) १७, १८, १९, २०, २१, २२, ३१, **सितंबर** की ४-५ (चं. पू.), ६, १३, (चं. दा.) [कार्तिक मासे, **अक्तूबर** की १७, १८, २१ (रा. ल.), २२, २५, २६, २९-३० (चं. पू.), **नवं.** की ४, ५, ६, ७, १२, १३] पुनश्च **नवंबर** की १६ (दि. ल.), १८, २५-२६ (चं. दा.), २७, **दिसंबर** की १, २, ३, ४-५ (चं. दा.), ७, ११, १२, **फरवरी** (१९९७) की १४-१५ (चं. दा.), १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मिथुन राशि के लड़कों को ज्ये. आश्विन एवं माघ मासों में विवाह मुहूर्तों का निषेध होगा। आषा. श्राव. कार्तिक व. फाल्गुण मासों में सूर्य पूज्य होगा। मिथुन राशि की कन्या को २७ दिसं. के बाद गुरु पूज्य रहेगा।	मिथुन राशि—अप्रैल की २०, २१ २७, २८, मई की १ (चं. दा.) २, ३, ६, ७, ८ (ल. २.५३ तक), १८, १९, (चं. पू.), २०, २४, २५. २९, ३०, जून की १, २, ३ जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३१ (रा. ल.), अग. की ५, ८-९ (चं. दा.) १७, १८, १९, २०, २१, २२, ३१, सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, १८, १९, २२ (दि. ल.), २४, (रा. ल) अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे, अक्तू. की १७, १८, २१ (रा. ल.), २२, २५, २६, २९, ३० (चं. पू.) नवं. की ४, ५, ६, ७, १२, १३] पुनश्च नवं. की १६ (दि. ल.), १८, २५-२६ (चं. दा.), २७, दिसंबर की १, २, ३, ४-५ (चं. दा.), ७, ११, १२, फरवरी (९७) की १४-१५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।

वर (लड़का)		कन्या (लड़की)

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य कन्या के लिए पूज्य गुरू आदि।	कन्या (लड़की)
कर्क राशि— अप्रैल की ता. २०, २१,२२ (चं. दा.), २७, २८, मई की १, २-३ (चं. दा.), ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९-२० (चं.दा.), २४, २५, २९, ३० (चं. दा.), जून की १, २, ३ जुलाई की १८, २३, (चं. दा.), २५, २६, २७, २८, ३०, ३१ (दि. ल.), अगस्त की ५, ८, ९, १७, १८, १९-२० (चं. पू.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१, सितंबर की ४, ५, ६, (चं. पू.), १३, १७ (चं. पू.), १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, (दि. ल.) अक्तू. की १३-१४ (चं. दा.), नवंबर की १६, १७, २५, २६-२७ (चं. दा.) , दिसंबर की १, २, ३, ४, ६, ७ (चं. दा.), ११, १२, १३ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	कर्क राशि के लड़कों को आषा. कार्तिक व फाल्गुण में विवाह का निषेध है। श्राव. भादों व मार्गशीर्ष मासों में सूर्य पूज्य होगा। कर्क राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू की साधारण पूजा रहेगी। तत्पश्चात् शुभ।	कर्क राशि— अप्रैल की ता. २०, २१,२२ (चं. पू.), २७, २८, मई की १, २-३ (चं. पू.), ६, ७, ८, ९, १८, १९-२० (चं.पू.), २४, २५, २९, ३० जून की १, २, ३ जुला. की १८, २३, (चं. पू.), २५, २६, २७, २८, ३०, ३१ (दि. ल.), अगस्त की ५, ८, ९, १७, १८, १९-२० (चं. पू.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१, सितं. की ४, ५, ६, १३, १७ (चं. पू.), १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, (दि. ल.) अक्तू. की १३-१४ (चं. पू.), [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१ (दि. ल.), २५, २६, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १२, १३] पुनश्च नवंबर की १६, १७, २५, २६-२७ (चं. पू.) दिसं. की १, २, ३, ४, ६, ७ (चं. पू.), ११, १२, १३ फरवरी ९७ की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होगी।
सिंह राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८, मई की १, २, ३, ६, ७, ८, ९ १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, जून की १ (चं. दा.), २, ३, अगस्त की १७, १८, १९, २०, २१ २२, (चं. दा.) २५, २६, २७, सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, १८-१९ (चं. दा.), २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मास में, अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २६, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १२ (चं. पू.), १३] फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	सिंह राशि के लड़कों की श्राव. मार्ग मास विवाह में त्याज्य होंगे भा. आश्वि. व फाल्गु. में सूर्य पूज्य होगा। सिंह राशि की कन्या को २७ दिसं. के बाद गुरू की साधारण पूजा रहेगी।	सिंह राशि—अप्रै. की २०, २१, २२, २७, २८, मई की १, २, ३, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, जून की १ (चं. पू.), २, ३, जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६ (चं. दा.), २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१—२२, (चं. पू.) २५, २६, २७, सितं. की ४, ५, ६, १३, १७, १८-१९ (चं. पू.), २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २६, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १२ (चं. पू.), १३] नवंबर की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १, २, ३, ४, ६, ७, ११, १२, १३, फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
कन्या राशि—मई की १८, १९, २०, २४-२५ (चं. पू.) २९, ३०, जून की १, २-३ (चं. दा.), जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७-२८ (चं. दा.) ३०, ३१, अगस्त की ८, ९, सितंबर की १७, १८, १९, २०-२१ (चं. दा.), २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १७-१८-१९ (चं. दा.), २०, २१, २२, २५, २९, ३०, नवं. की ४-५-६, (चं. दा.), ७, १२, १३] पुनश्च नवं. की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १-२-३ (चं. दा.) ४, ६, ७, ११, १२, १३, फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	कन्या राशि के वर को विवाहादि कार्यों में वैशाख, भादों एवं पौष मास त्याज्य होंगे तथा ज्येष्ट, आश्विन, कार्तिक एवं माघ मासों में सूर्य पूज्य रहेगा। कन्या राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू की पूजा तथा ता. २७ दिसं. के बाद गुरू शुभ होगा।	कन्या राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, २७-२८ (चं. पू.), मई की १, २, ३, ६-७ (चं.पू.), ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४-२५ (चं. पू.) २९, ३०, जून की १, २-३ (चं. दा.), जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २७, सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, १८, १९, २०-२१ (चं. दा.), २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १७—१८—१९ (चं. पू.), २०, २१, २२, २५, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, (चं. दा.), ७, १२, १३] नवंबर की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १-२-३ (चं. दा.) ४, ६, ७, ११-१२, (चं.दा.) १३, फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
तुला राशि—अप्रैल की २२ (रा. ल.), २७, २८, मई की १ (चं. दा.), २, ३, ६, ७, ८, ९-१० (चं. दा.), जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३०-३१ (चं. दा.), अगस्त की ५, ९ (रा. ल.) १७—१८—१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २५-२६-२७ (चं. पू.)३१, सितंबर की ६, १३, (चं. दा.) [कार्तिक मासे, अक्तू. की १७, १८, १९-२० (चं. दा.), २१, २२, २५, २६, ३० (रा. ल.), नवं. की ४, ५, ६—७ (चं. दा.), १२, १३], नवंबर की १६, १७, १८ (चं. दा.), २६ (रा. ल. ७), २७, दिसंबर की १, २, ३-४ (चं. दा.), ६, ७, ११, १२-१३ (चं. दा.), फरवरी (१९९७) की १६ (रा. ल.) तारीखें ग्रहणीय होंगी।	तुला राशि वाले लड़कों को वैशा. आषा. मार्ग व फाल्गुण मासों में सूर्य पूज्य तथा ज्येष्ट, आश्वि. व माघ मासों में वि. मुहूर्त त्याज्य होंगे। तुला राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू की साधारण तथा २७ दिसं. के बाद गुरू की विशेष पूजा रहेगी।	तुला राशि—अप्रैल की २२ (रा. ल.), २७, २८, मई की १ (चं. दा.), २, ३, ६, ७, ८, ९-१० (चं. दा.), १९ (रा. ल.) २०, २४, २५, २९, ३०, जून की १, २, ३, जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३०-३१ (चं. दा.), अगस्त की ५, ९ (रा. ल.) १७—१८—१९ (चं.पू.), २०, २१, २२, २५, २६-२७ (चं. पू.) ३१, सितंबर की ६, १३, १७, १८, १९, २०, २२-२३ (चं. दा.), २४, अक्तू. की १३, १४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०-२१(चं. दा.) २२, २५, २६, ३० (रा. ल.), नवं की ४, ५, ६, ७, १२, १३] नवंबर की १६, १७, १८ (चं. पू.) २६ (रा. ल. ७), २७, दिसंबर की १, २, ३-४ (चं. पू.), ६, ७, ११, १२-१३ (चं. दा.), फरवरी (९७) की १६ (रा. ल.) तारीखें ग्रहणीय होंगी।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य कन्या के लिए पूज्य गुरू आदि।	कन्या (लड़की)
वृश्चिक राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, (दि. ल.), २७, २८, मई की १, २-३ (चं. दा.), ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९ (दि. ल.), २४, २५, २९-३० (चं. पू.), जून की १, २, ३, जुलाई की १८, २३-२४ (चं. पू.), २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, अगस्त की ५, ८, ९ (दि. ल.), १७, १८, १९-२० (चं. दा.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१, (चं. पू.) सितंबर की ४, ५, १३, १७ (चं. दा.), १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३-१४, (चं. दा.) नवंबर की १६, १७, १८, (चं. दा.), २५, २६ (रा. ल. ४) दिसंबर की १, २, ३, ४, ६, ७ (चं. दा.), ११, १२, १३ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	वृश्चिक राशि के लड़के को आषा. कार्तिक, फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। श्राव, ज्येष्ठ व मार्गशीर्ष मासों में सूर्य पूज्य रहेगा। वृश्चिक राशि की कन्या को २७ दिसंबर के बाद गुरू साधारणत: पूज्य होगा।	**वृश्चिक राशि**—अप्रैल की २०, २१, २२, (दि. ल.), २७, २८, मई की १, २-३ (चं. दा.), ६, ७, ८, ९, १८, १९ (दि. ल.), २४, २५, २९-३० (चं. पू.), जून की १, २, ३, जुलाई की १८, २३-२४ (चं. पू.), २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, अगस्त की ५, ८, ९ (दि. ल.), १७, १८, १९, २० (चं. दा.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१, (चं. दा.), सितंबर की ४, ५, १३, १७ १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, अक्तू. की १३-१४, (चं. दा.) [कार्तिक मास में अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२ (चं. दा.) २५, २६, २९, ३० (दि. ल.), नवं. की ४, ५, ६, ७, १२, १३] नवं. की १६, १७, १८, २५, २६ (रा. ल. ४) दिसं. की १, २, ३, ४, ६, ७ (चं. पू.), ११, १२, १३ फरवरी (९७) की १४, १५, १६ (दि. ल.) तारीखें ग्रहणीय।
धनु राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८, मई १, २, ३, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, जून की १ (चं. दा.), २, ३, अगस्त की १७, १८, १९, २०, २१, २२ (चं. दा.), २५, २६, २७, ३१, सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, १८-१९ (चं. दा.), २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मास में अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १२, १३] ईसवी १९९७ में फरवरी की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	धनु राशि के लड़कों को श्रावण, मार्ग मासों में विवाह त्याज्य हैं। तथा वैशाख, आषाढ़, भादों व माघ मासों में सूर्य पूज्य रहेगा। धनु राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू साधारण पूज्य तथा उसके बाद गुरू शुभ होगा।	**धनु राशि**—अप्रैल की २०, २१, २२, २७, २८, मई की १, २, ३, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३० जून की १ (चं. दा.), २, ३, जुलाई की १८, २३, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१, अगस्त की ५, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २२ (चं. दा.), २५, २६, २७, ३१, (चं. पू.) सितंबर की ४, ५, ६, १३, १७, १८-१९ (चं. दा.), २०, २१, २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, (चं. पू.) २६, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १२, (चं. दा.) १३] नवं. की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १, २, ३, ४, ६, ७, ११, १२, १३, फरवरी (९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
मकर राशि—मई की १८, १९, २०, २९, ३०, जून की १, २-३ (चं. दा.) जुलाई की २३, २४, २५, २६, २७-२८ (चं. पू.) ३०, ३१, अगस्त की ५ (चं. पू.), ८, ९, सितंबर की १७, १८, १९, २०-२१ (चं. पू.), २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७-१८ (चं. पू.), १९, २०, २१, २२, २५, २६ (चं. पू.), २९, ३०, नवंबर की ७, १२, १३ (चं. पू.)] नवं. की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसंबर की ४ (रा. ल.), ६, ७, ११ (चं. पू.), १२, १३, ई. १९९७ में फरवरी की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मकर राशि के लड़कों को वैशा. व भाद्रपद त्याज्य होंगे। तथा ज्ये., श्राव., आश्विन व माघ में सूर्य की पूजा रहेगी। मकर राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू की विशेष पूजा रहेगी।	**मकर राशि**— अप्रैल की २०, २१, २२, मई की १, २, ३, ६-७ (चं. पू.) ८, ९, १०, १८, १९, २०, २९, ३०, जून की १, २-३ (चं. पू.) जुलाई की २३, २४, २६, २७-२८ (चं. पू.) ३०, ३१ अगस्त की ५, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, ३१, सितंबर की ४, ५, ६, १३, (दि. ल. ८, रा. ल. ३), १७, १८, १९, २०, २१ २२, २३, २४, अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७-१८, १९, २०, २१, २२, २६ २९, ३०, नवं. की ७, १२, १३ (चं. पू.)] नवं. की १६, १७, १८, २५, २६, २७, दिसं. की ४ (रा. ल.), ६, ७, ११ (चं. पू.), १२, १३, ई. १९९७ में फरवरी की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।
कुम्भ राशि—अप्रैल की २०-२१-२२ (चं. दा.), २७, २८ मई की २, ३, ६, ७, ८—९, (चं. पू.) १० (क्षय में), जुलाई की १८, २३, २४, २५, २६, २७, २८, ३०-३१ (चं. दा.) अगस्त की ५, ८-९ (चं. दा.), १९, (रा. ल.), २०, २१, २२, २५, २६-२७ (चं. पू.), ३१ सितंबर की ४-५ (चं. पू.) ६, १३, [दि. ल. ७] [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९-२०-२१ (चं. दा.) २२, २५, २६, २९, ३० (चं. पू.), नवं. की ५, ६, १२, १३] नवंबर की १६-१७ (चं. पू.), १८, २५-२६ (चं. दा.), २७, दिसंबर की १, २, ३, ४ (दि. ल.), ६ (ल. ४ रात्रि ९.३७ उप.), ७, ११, १२, १३ (चं. पू.), फरवरी (१९९७) की १४, १५, १६ (चं. दा.) तारीखें ग्रहणीय होंगी।	कुम्भ राशि के लड़कों को ज्ये. आश्विन व माघ मास में विवाह निषेध रहेगा। भादों कार्ति. व फाल्गु. में सूर्य पूज्य होगा। कुम्भ राशि की कन्या को २७ दिसंबर के बाद गुरू पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि**—अप्रैल की २०-२१-२२ (चं. दा.), २७, २८, मई की २, ३, ६, ७, ८—९ (चं. दा.), १८-१९ (चं. दा.) २०, २४, २५, २९ (रा. ल.), ३०, जून की १, २, ३ जुलाई की १८, २३, २४, २६, २७, २८, ३०-३१ (चं. दा.), अगस्त की ५, ८, ९ (चं. दा.), १९, २०, २१, २२, २५, २६, २७, ३१, सितं. की ४, ५ ६, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२-२३-२४ (चं.दा.), अक्तूबर की १३, १४, [कार्तिक मास में अक्तू. की १७, १८, १९-२०, २१, २२, २५, २६, २९, ३० नवं. की ५, ६, १२, १३] नवंबर की १६-१७ (चं. दा.), १८, २५, २६, २७, दिसंबर की १, २, ३, ४, ६ (ल. रात्रि ९.३७ उप.), ७ ११, १२, १३ (चं. दा.), फरवरी (१९९७) की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य कन्या के लिए पूज्य गुरू आदि।	कन्या (लड़की)
[illegible]	मीन राशि के लड़के को आषा.	मीन राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, (चं. दा.), २७, २८, मई की १, ६, ७, ८,

की १४, १५, १६ (चं. दा.) तारीखें ग्रहणीय होंगी।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य कन्या के लिए पूज्य गुरू आदि।	कन्या (लड़की)
मीन राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, (चं. दा.), २७, २८, मई की १, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९-२० (चं. दा.), २४, २५, २९ (दि. ल.), जून की १, २, ३, जुलाई की १८, २३ (दि. ल. ९.२६ तक), २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. ५, ८, ९ (चं. दा.), १७, १८, १९, (दि. ल.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१ (चं. दा.), सितंबर की ४, ५-६ (चं. दा.), १३ १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, (चं. दा.), नवंबर की १६, १७, १८, (चं. पू.), २५, २६-२७ (चं.दा.) दिसं. की १, २, ३, ४, ६ (दि. ल.), ११, १२, १३, तारीखें ग्रहणीय होंगी।	मीन राशि के लड़के को आषा, कार्तिक व फाल्गु. मास त्याज्य तथा वैशाख, श्रावण, आश्वि. व मार्ग मासों में सूर्य की पूजा रहेगी। मीन राशि की कन्या को २६ दिसं. तक गुरू की साधारण पूजा होगी॥ तत्पश्चात्-शुभ॥	मीन राशि—अप्रैल की २०, २१, २२, (चं. दा.), २७, २८, मई की १, ६, ७, ८, ९, १०, १८, १९-२०, २४, २५, २९ (दि. ल.), जून की १, २, ३, जुलाई की १८, २३ (दि. ल. ९.२६ तक), २६, २७, २८, ३०, ३१, अग. की ५, ८, ९ १७, १८, १९, (दि. ल.), २१, २२, २५, २६, २७, ३१ (चं. दा.), सितंबर की ४, ५-६ (चं. द.), १३ १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, (चं. पू.) [कार्तिक मास में अक्तू. की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २६, २९, ३० नवं. की ४, ५, ६, ७, १२)] नवंबर की १६, १७, १८, २५, २६-२७ (चं.दा.), दिसं. की १, २, ३, ४, ६ ११, १२, १३, ईसवी १९९७ में फरवरी की १४, १५, १६ तारीखें ग्रहणीय होंगी।

पृष्ठ 13 का शेष भाग।

अनिष्ट राहु की शान्ति के लिए तिल, तैल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, गोमेद, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा तथा कृष्ण पुष्प आदि वस्तुओं का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मंत्र का १९ हज़ार संख्या में जप करना शुभकारी होगा।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥

केतु की अनिष्ट शान्ति के लिए दान-लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कंबल, कस्तूरी तैल, सप्तप्रकार के अनाज से बनी दाल, कुष्ठाश्रम अथवा अन्य विद्यालय में भोजनादि का दान तथा लसहनिया धारण करना कल्याणकारी रहता है।प

केतु का बीज मंत्र ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः" का १७००० की संख्या में जाप करना तथा केतु यंत्र रखने से भी विशेष लाभ होने की संभावना हो जाती है।

शुभ चिंतक : पंडित पन्नालाल ज्योतिषी, जालंधर—144008

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधियां

(१) खांसी—काकड़सिंगी, अतीतस, मुलहठी। ये तीनों चीज़ें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद में मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाएगी।

(२) घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिन्दूर छह माशे, मुरदासंख छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

(३) स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण की दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

(४) रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में मिलाकर पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

(५) उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट हो जाते हैं।

जड़ी बूटियों से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति

हमारे परम दयालु महर्षियों, ने (जो लोग बहुमूल्य रत्नों को धारण करने से असमर्थ है—उनके) ग्रह दोषों की शान्ति के लिये जड़ी बूटी को धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें—

सूर्य पीड़ाकारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबी डोरे में रविवार को धारण करें। चन्द्र पीड़ाकारक हो तो खिन्न की जड़ सफेद डोरे में सोमवार को, मंगल पीड़ाकारक हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में मंगलवार को, बुध पीड़ाकारक हो तो विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को। गुरु पीड़ाकारक हो तो नारंगी या केले की जड़ पीले डोरे में गुरुवार को, शुक्र पीड़ाकारक हो तो सर्पोंखा की जड़ सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। शनि पीड़ाकारक हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करें। राहु पीड़ाकारक हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। केतु पीड़ाकारक हो तो असगन्ध की जड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

नव ग्रह पीड़ा निवारक यन्त्र

८ ॐ ह्रीं राहवे नमः	१ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	६ ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३ ॐ ह्रीं भौमाय नमः	५ ॐ ह्रीं गुरवे नमः	७ ॐ ह्रीं शनये नमः
४ ॐ ह्रीं बुधाय नमः	९ ॐ ह्रीं केतवे नमः	२ ॐ सौं सोमाय नमः

उपर्युक्त यंत्र को नवग्रह स्तोत्र के पाठ उपरान्त अष्टगन्ध से एवं भोजपत्र सप्त या अष्ट धातु की प्लेट पर खुदवा कर शुभ मुहूर्त कालीन दानपूर्वक अपने पास रखने से नवग्रह जनित नेष्टफल दूर हो जाता है।

चैत्र प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, दीपावली की रात, अयनकाल, ग्रहणकाल, सायनसंक्रांतिकाल, पूर्णिमा, गुरुपुष्यायोग, त्रिपुष्कर आदि योग भी शुभ मुहूर्त काल माने जाते हैं।

शुभ चिंतक पं० पन्ना लाल ज्योतिषी
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर
दूरभाष : 57959

नोट—हमारे कार्यालय से सभी ग्रहों के ताम्र यंत्र मिलते हैं। मूल्य प्रत्येक १५१ रुपये। नवग्रह यंत्र—251 रुपए।

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त २०५३ विक्रमी

मुण्डन संस्कार—

विशेष नोट—मुण्डन संस्कार का शुभ कार्य मंगलवार के दिन यद्यपि निषेध माना जाता है। परन्तु ज्योति निर्बन्ध के वचनानुसार आवश्यक परिस्थितिवश रविवार को ग्रहण कर सकते हैं यथा—

पापग्रहाणां वारादौ विप्राणां शुभदं रवेः।
क्षत्रियाणां क्षमासूनोविट् शूद्राणां शनौशुभम्॥
(ज्योतिनिबंध)

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
वै. शु ५ चन्द्रे	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृगशिरे	ल. ३-४-५, अभिजित
वै. शु ६/७ बुधे	२४ अप्रै.	१२ वैशा.	पुर्न	ल. ३, ५, अभिजित
वै. शु ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्ये	ल ३,४,(दुपै. १२.५८ तक)
वै. शु १३ बुधे	१ मई	१९ वैशा.	हस्ते	ल ४,५ अभि (हर्षण योग)
वै. शु. १५ शुक्रे	३ मई	२१ वैशा.	स्वाती	ल. ३, ५, अभि
ज्ये. कृ. ७ गुरौ	९ मई	२७ वैशा.	श्रवण	मुहू. दुपै. १३.५५ बजे (उप.)
ज्ये. शु २ रवौ	१९ मई	६ ज्येष्ठ	रोह	मु. ल ३ प्रातः (८.३१ के पश्चात्) + ४,५
ज्ये. शु. ३ चंद्रे	२० मई	७ ज्येष्ठ	मृगे	ल ३, ४ (प्रा. १०.४६ तक)
ज्ये. शु. ५ बुधे	२२ मई	९ ज्येष्ठ	पुर्न	ल ३, ४, ५, अभि. गंड योग
ज्ये. शु. ६ गुरौ	२३ मई	१० ज्येष्ठ	पुष्ये	ल. मु. ३, ४, ५, अभि.
ज्ये. शु. ११ बुधे	२९ मई	१६ ज्ये.	चित्रा	मुहू. १०.२६ उपरांत
ज्ये. शु. १२ गुरौ	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	ल ३, ५ अभि
आ. शुक्ल १ रवौ	२ जून	२० ज्ये.	ज्येष्ठा	ल ४ अभि
१६ जून से आषाढ़ अधिमास प्रारम्भ				
माघ शु. २ रवि	९ फर.	२८ माघ	शते	दि. ल. २ (दुपै. १२.०२ तक)
माघ शु. १० रवि	१६ फर.	५ फागु.	मृगे	ल. २, अभि (वैधृति योग, आवश्यके)
माघ शु. ११ चन्द्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृगे	मुहूर्त ८.४५ तक

गृहारम्भ (गृह निर्माण) मुहूर्त्त २०५३

(वृष चक्र रहित)

निम्न मुहूर्तों में १, ५, ७, ९, १०, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि शयन (सुप्त भूमि) का विचार किया गया है

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
वैशा. शु. ६ बुधे	२४ अप्रै.	१२ वैशा.	पुर्न	मु. ल. ३, ५ अभिजित्
वै. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुर्न	दि ल. ०२ (आवश्यके)
वै. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्य	ल. ३, ४ (दुपै. १२.५८ तक)
वै. शु. १३ बुधे	१ मई	१९ वैशा.	हस्ते	मु. ४, ५, अभिजित्
ज्ये. कृ. ६ बुधे	८ मई	२६ वैशा.	उ. षा.	मु. ३ (प्रातः ९.२० उप.), ५
ज्ये. कृ. ७ गुरौ	९ मई	२७ वैशा.	श्रवण	मु. दुपै. १२.५५ उप. (भद्रोत्तरे)
ज्ये. शु. १० चंद्रे	२७ मई	१४ ज्ये.	उ. फा.	दि. ल. ४ (प्रातः ९.५८ उप.), ५
ज्ये. शु. ११ बुधे	२९ मई	१६ ज्ये.	चित्रा	दि मु. ल ४, ५ (व्यतीपात)
ज्ये. शु. १२ गुरौ	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	दि. मु. ल. ५
आ. शु. २ बुधे	१७ जुला.	२ श्राव	पुष्ये	मुहूर्त प्रातः ८।१७ तक
आ. शु. १० शुक्रे	२६ जुला.	११ श्राव	अनु	दि. ल ५ (चं. पू.), मु. अभि.
श्रा. कृ. १ बुध	३१ जुला.	१६ श्राव	धनि	मुहू. अभिजत्
श्रा. कृ. २ गुरौ	१ अग.	१७ श्राव	शत	दि मुहू. ल ५ (सिंह)
श्रा. कृ. ११ शनौ	३ अग.	१९ श्राव	उ. भा.	मु. ल. अभिजित्
श्रा. कृ. ११ शुक्रे	९ अग.	२५ श्राव	मृगे	मु. ल. ५ (व्याघात योग)
श्रा. कृ. १३ चंद्रे	१२ अग.	२८ श्राव.	पुर्न	ल. ५ (प्रातः ८.१७ तक, भ. पूर्वे)
(भाद्रपद मास मध्यम माना जाता है)				
श्रा. शु. ३ शनौ	१७ अग.	२ भादों	उ. फा.	दि. मु. ७ (तुला)
श्रा. शु. ५ चंद्रे	१९ अग.	४ भादों	चित्रा	दि मु. ७
श्रा. शु. १२ चंद्रे	२६ अग.	११ भादों	उ. षा.	दि मुहूर्त ७
श्रा. शु. १५ बुधे	२८ अग.	१३ भादों	धनि	मु. दुपै. १३-१४ उपरांत
भा. कृ. ३ शनौ	३१ अग.	१६ भादों	उभा/रेव	दि मु. (१४-३२ के उप.)
भा. कृ. १२ चन्द्रे	९ सितं.	२५ भादों	पुष्ये	मु. ल. ७,८

(शेष पृष्ठ संख्या १०९ पर देखें)

नूतन गृह प्रवेश संवत् २०५३

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
वैशा. शु. ५ चन्द्रे	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृग	मु. ल. ३, ५, अभिजित्
वै. शु. ६/७ बुधे	२४ अप्रै.	१२ वैशा.	पुर्न	मु. ल. ३, ५ अभिजित्
वैशा. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्य	मु. ३, ४ (दुपै. १२.५८ तक)
वैशा. शु. १३ बुधे	१ मई	१९ वैशा.	हस्ते	मु. ल ४, ५ अभिजित्
वै. शु. १५ शुक्रे	३ मई	२१ वैशा.	स्वा.	मु. ल. ४,५ अभिजित्
ज्ये. शु. ३ चन्द्रे	२० मई	७ ज्ये.	मृगे	मु. ल. ३,४ (प्रातः १०.४६)
ज्ये. शु. १० चन्द्रे	२७ मई	१४ ज्ये.	उ. फा.	मु. ल. ४ (प्रातः ९.५८ उप.), ५
ज्ये. शु. १२ गुरौ	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	दि. ल. ५ (सिंह)
का. शु. १५ चन्द्रे	२५ नवं.	११ मार्ग	रोहिणी	मु. दुपै. १०.५३ उप.
मार्ग कृ. २ बुधे	२७ नवं.	१३ मार्ग	मृगे	दि. ल. ९ धनु.
मार्ग कृ. ५ शनौ	३० नवं.	१६ मार्ग	पुष्ये	मु. अभिजित्
मार्ग कृ. १० गुरौ	५ दिसं.	२१ मार्ग	हस्त	ल. ९ दिने
मार्ग कृ. ११ शुक्रे	६ दिसं.	२२ मार्ग	ह. चित्रा	मु. ल. ९
मार्ग कृ. १२ शनि	७ दिसं.	२३ मार्ग	चि. स्वा.	मु. ल. ९
मार्ग शु. ३ शुक्रे	१३ दिसं.	२९ मार्ग	उषा	दि मु. ल. ९ (धनु)
माघ. शु. ३ चन्द्रे	१० फर.	२१ माघ	उ.भा.	मु. प्रातः ९.२८ उप. ल. २ वृष
माघ शु. ११ चन्द्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृगे	मुहूर्त प्रातः ८.४५ तक

प्राचीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त २०५३ वि.

प्राचीन गृह प्रवेश मुहूर्तों के लिए ऊपर लिखे नवनिर्मित गृह प्रवेश के मुहूर्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
ज्ये. कृष्ण ७ गुरौ	९ मई	२७ वैशा.	श्रवणे	मु. दुपै. १२.५५ उप.
आ. कृष्ण २ चन्द्रे	२ जून	२१ ज्ये.	मूला	ल. ३, ५
आ. कृष्ण ५ बुधे	५ जून	२३ ज्ये.	उ.षा.	दुपै. १२.५८ उप. शु. वा.
आ. शु. २ बुधे	१७ जुला.	२ श्राव.	पुष्ये	मु. ल. ५ चं. दा. अभि.
आ. शु. १० शुक्रे	२६ जुला.	११ श्राव	अनु.	मु. ल. ५ (चं. दा.)
श्रा. कृ. १ बुधे	३१ जुला.	१६ श्राव	श्रवणे	मु. ल. अभि
श्रा. कृ. २ गुरौ	१ अग.	१७ श्राव	शत	मु. ल. ५

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
श्रा. कृ. ३ शनै	३ अग.	१९ श्राव.	उ.भा.	अभिजित

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
ज्ये. शु. १२ गुरु	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	मु. ल. ३, ५ अभिजित
ज्ये. शु. १५ शनि	१ जून	१९ ज्ये.	अनु.	मुहूर्त दुपै ३.४४ उपरांत

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त २०५३ वि.

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
श्रा. कृ. ३ शनै	३ अग.	१९ श्राव.	उ. भा	अभिजित
श्रा. कृ. ११ शुक्रे	९ अग.	२५ श्राव.	मृगे	मु. ल. ५
श्रा. शु. ३ शनौ	१७ अग.	२ भादों	उ. फा	मु. ल. ७
श्रा. शु. ५ चन्द्रे	१९ अग.	४ भादों	चित्रा	दि. ल. ७
श्रा. शु. १२ चन्द्रे	२६ अग.	११ भादों	उ.षा.	दि. ल. ७
श्रा. शु. १५ बुधे	२८ अग.	१३ भादों	धनि	दि. ल. ८ (दुपै. १.१५ उप. (भद्रोत्तरे) चं. दा.
श्रा. कृ. १ गुरौ	२९ अग.	१४ भादों	शत	दि. ल. ७, ८ (चं. दा.)
भा. कृ. ३ शनौ	३१ अग.	१६ भादों	उभारेव	मु. १४.३२ उप.—भद्रोत्तरे
भा. कृ. १२ चंद्रे	९ सित.	२५ भादों	पुष्ये	मु. ल. ७, ८
भा. शु. २ शनौ	१४ सित.	३ भादों	हस्त	मु. ल. ८
माघ शु. १२ बुधे	१९फर.९७	८ फागु.	पुर्न	ल. मु. २

विपणि (दुकानादि) शुरु करने का मुहूर्त्त

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
वैशा. कृ. १२ चंद्र	१५ अप्रै.	३ वैशा.	पू. भा.	मुहू. ल. ३, अभिजित
वैशा. शु. ४ चंद्र	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृग	मुहू. ल. ३,४,५, अभिजित
वैशा. शु. ७ गुरु	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्य	ल. ३, ४ (दुपै. १२.५८ तक)
वैशा. शु. ८ शुक्र	२६ अप्रै.	१४ वैशा.	पुष्य	मुहू. ल. ३, अभिजित
वै. शु. १३ बुध	१ मई	१९ वैशा.	हस्त	मु. ल. ४, ५, अभिजित
वै. शु. १५ शुक्र	३ मई	२१ वैशा.	स्वाती	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. कृ. २ रवि	५ मई	२३ वैशा.	अनु	मुहू. लग्न २, ४, ५
ज्ये. कृ. ३ चंद्र	६ मई	२४ वैशा.	मूला	मुहू. लग्न ३, ५
ज्ये. कृ. ६ बुध	८ मई	२६ वैशा.	उ. षा.	मु. प्रातः ९.२० उप. ५ (सिंह)
ज्ये. कृ. ७ गुरु	९ मई	२७ वैशा.	श्रव	मु. दुपै. १२.५५ के उपरांत
ज्ये. कृ. १० रवि	१२ मई	३० वैशा.	पू. भा.	मुहूर्त प्रातः ७.२४ तक
ज्ये. शु. २ रवि	१९ मई	६ ज्ये.	रोह/मृग	मुहू. ल. ३ (प्रातः ८.३१ के बाद), ४, ५
ज्ये. शु. ३ चंद्र	२० मई	७ ज्ये.	मृग	ल. ३, ४ (प्रातः १०.४६ तक)
ज्ये. शु. ६ गुरु	२३ मई	१० ज्ये.	पुष्य	ल. मु. ३, ४, ५ अभिजित
ज्ये. शु. ९ चंद्र	२७ मई	१४ ज्ये.	उ. फा	मुहूर्त प्रातः ९.५८ के उपरांत
ज्ये. शु. ११ बुध	२९ मई	१६ ज्ये.	चित्रा	मुहू. प्रातः १०.२६ उपरांत

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
ज्ये. शु. १२ गुरु	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	मु. ल. ३, ५ अभिजित
ज्ये. शु. १५ शनि	१ जून	१९ ज्ये.	अनु	मुहूर्त दुपै ३.४४ उपरांत
आषा. कृ. २ चंद्र	३ जून	२१ ज्ये.	मूला	मु. ल. ३, ५
आषा कृ. ४ बुध	५ जून	२३ ज्ये.	उ. षा.	मु. दुपै. १२.५८ उप. (शुक्र वार्धक्य विचार)
का. शु. ६ शनि	१६ नवं.	२ मार्ग.	उ. षा.	मुहूर्त ९, अभिजित
का. शु. ७ रवि	१७ नवं.	३ मार्ग	श्रव	मुहूर्त ९, अभिजित
का. शु. ८ चंद्र	१८ नवं.	४ मार्ग	धनि.	मु. ल. ९, अभिजित
का. शु. १० बुध	२० नवं.	६ मार्ग.	पू. भा.	मु. ल. ९ (धनु)
मार्ग कृ. २ बुध	२७ नवं.	१३ मार्ग.	मृग	दि. मु. ल. ७
मार्ग कृ. ५ शनि	३० नवं.	१६ मार्ग	पुष्य	मुहूर्त अभिजित
मार्ग कृ. १० गुरु	५ दिसं.	२१ मार्ग	हस्त	लग्न ९ (धनु)
मार्ग कृ. १२ शनि	७ दिसं.	२३ मार्ग.	चित्रा	मु. ल. ९ (धनु)
मार्ग शु. ३ शुक्र	१३ दिसं.	२९ मार्ग.	उ. षा.	मु. ल. ९ (धनु)
सन् १९९७ ई० में				
माघ शु. ३ चंद्र	१० फर.	२९ माघ.	पू. भा.	मु. ल. २
माघ शु. १० रवि	१६ फर.	५ फागु.	मृग	मुहू. लग्न २ (वृष)
माघ शु. ११ चंद्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृगे.	मु. प्रातः ८.४५ तक

वधू प्रवेश संवत् २०५३ विक्रमी

विवाह दिन से २, ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १४ एवं १६ दिनों की मध्यावधि में और स्थिर लग्न में वधु प्रवेश करवाना शुभ होता है। ध्यान रहे, यदि विवाह-मास के भीतर ही उक्त दिनों में वधू प्रवेश न हो सके, तभी वधु प्रवेश मुहूर्त चिन्तनीय है, अन्यथा नहीं।

विशेष रूप में गुरू शुक्रास्त, अधिकमास, वधु-चन्द्र निर्बलत्व, भद्रा, जन्म मास, व्यतिपातादि अनिष्ट योगों में वधुप्रवेश त्याज्य है। नव-निर्मित भवन में भी वधु प्रवेश करवाना वर्जित कहा गया है। सोम, बुध, गुरू एवं शुक्रवारों में, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों में एवं विवाहोक्त नक्षत्रों में वधू-प्रवेश करवाना शुभ होता है।

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त २०५३ वि.

विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचमादि विषय महीनों या वर्षों में स्त्री व पुरुष के गोचर वश क्रम करके, गुरू व चन्द्र बलत्व में द्विरागमन शुभ रहता है। सम्मुख शुक्र व दक्षिण शुक्र का नवविवाहित, गर्भिणी तथा नवजात बालक द्वारा यात्रा का विशेष निषेध माना जाता है।

यदि गमन विवाह दिन से १६ दिन के भीतर ही हो तो तो शुक्र सम्मुखादि दोष विचारणीय नहीं होगा। नीचे मुकलावा सम्बन्धी कुछ प्रमुख मुहूर्त लिख रहें हैं—

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
वैशा. शु. ५ चन्द्रे	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृगे	मु. ल. ३, ५ अभि.
वैशा. शु. ६ बुधे	२४ अप्रै	१२ वैशा.	पुर्न	मु. ल. ३, ५ अभि.
वैशा. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्ये	मु. ल. ३, ४ दुपै. १२.५८ तक
वैशा. शु. १३ बुधे	१ मई	१९ वैशा.	हस्ते	मु. ५, अभि.
वै. शु. १५ शुक्रे	३ मई	२१ वैशा.	स्वा.	मु. ३, ५ अभिजित
ज्ये. कृ. ६ बुधे	८ मई	२६ वैशा.	उ. षा.	मु. ३ (९.२० उप.), ५
ज्ये. कृ. ७ गुरु	९ मई	२७ वैशा.	श्रवणे	मु. दुपै. १२.५५ उप.
का. शु. १० बुधे	२० नवं.	६ मार्ग.	उ. भा.	अभिजित, मु. दुपै. १२.९ उप.
का. शु. ११ गुरौ	२१ नवं.	७ मार्ग.	रेव.	दुपै. १२.३८ उपरांत
का. शु. १५ चंद्रे	२५ नवं.	११ मार्ग.	रोह.	मु. दुपै. १०.५३ उप.
मार्ग कृ. २ बुधे	२७ नवं.	१३ मार्ग.	मृगे	मु. दि. ल. ९ (धनु)
मार्ग कृ. १० गुरौ	५ दिसं.	२१ मार्ग.	हस्ते	ल. मु. ९ (धनु)
मार्ग कृ. ११ शुक्रे	७ दिसं.	२३ मार्ग.	चि. स्वा.	मु. ल. ९ (धनु)
मार्ग. शु. ३ शुक्रे	१३ दिसं.	२९ मार्ग	उ. षा.	मु. ल. ९ (धनु)
(सन् ईसवी १९९७ में)				
माघ शु. ११ चंद्रे	१७फर.९७	६ फागु.	मृगे	मुहूर्त प्रातः ८.४५ तक

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त २०५३ वि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
चैत्र शु. १ बुधे	२० मार्च	७ चैत्र	उ.भा	मु. ल १, अभि स्वयं सिद्ध
चैत्र शु. २ गुरौ	२१ मार्च	८ चैत्र	रेव	मु. ल. १, अभि
चै. शु ३ शुक्रे	२२ मार्च	९ चैत्र	अश्वि.	अभिजित
चै. शु ६ चंद्रे	२५ मार्च	१२ चैत्र	रोह	मु. ल १,३ अभि
चै. शु. १० शुक्रे	२९ मार्च	१६ चैत्र	पुष्य	मु. ल १, ३ अभि
वैशा. कृ. २ शुक्रे	५ अप्रै.	२३ चैत्र	चित्रा	मु. ल १, ३ अभि
वै. शु ५ चन्द्रे	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृगे	मु. ल ३, ४, ५
वैशा. शु. ६ बुधे	२४ अप्रै.	१२ वैशा.	पुर्न	मु. ल ३, ५ अभि
वै. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पु./पुष्य	ल. २, ३ दुपै. १२.५८ तक
वै. शु. ११ चंद्रे	२९ अप्रै.	१७ वैशा.	पू. फा.	ल मु. प्रातः ७.३१ तक
ज्ये. कृ. २ रवि	५ मई	२३ वैशा.	अनु.	मु. ल ४, ५
ज्ये. शु. २ रवि	१९ मई	६ ज्ये.	रोहिणी	मु. ल ३, ५
ज्ये. शु ३ चंद्रे	२० मई	७ ज्येष्ठ	रोहिणी	मु. ल ३, ५
ज्ये. शु. ६ गुरौ	२३ मई	१० ज्ये.	पुष्य	मु. ल ३, ५
ज्ये. शु ११ बुधे	२९ मई	१६ ज्ये.	चित्रा	मु. प्रातः १०.२६ उप
ज्ये. शु. १२ गुरौ	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	मु. ल ३, ५
आ. कृ. २ चंद्रे	३ जून	२१ ज्ये.	मूला	मु. ल ३, ५
माघ शु. २ रवि	९ फर.	२८ माघ	शते	दि. मु. ११ अभि
माघ शु. ३ चंद्रे	१० फर.	२९ माघ	पू. भा.	मु. ११, अभि.
माघ शु. १० रवि	१६ फर.	५ फागु.	मृगे.	मु. ल. २
माघ शु. ११ चंद्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृ. आर्द्रा	मु. ल. २

देव प्रतिष्ठा (मन्दिर निर्माण) मुहूर्त्त २०५३ विक्रमी

(जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुँआ आदि में भी ग्राह्य)

पक्ष तिथि, वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त लग्न (घंटा मिंट)
चैत्र शु. १ बुधे	२० मार्च	७ चैत्र	उ. भा.	मु. ल. १, ३ ब्रह्मा, विष्णु
चैत्र शु. ९ गुरौ	२८ मार्च	१५ चैत्र	पुर्न	ल. ३, ४ (श्री राम) दुर्गा
वै. कृ. २० शुक्रे	५ अप्रैल	२३ चैत्र	चित्रा	मु. ३ (श्री दुर्गा-लक्ष्मी)
वै. कृ. ८ गुरौ	११ अप्रै.	२९ चैत्र	उ. षा.	मु. ल. १, अभि, शिव. दुर्गा
वै. शु. ५ चंद्रे	२२ अप्रै.	१० वैशा.	मृगे	मु. ल. ३, ४, ५ अभिजित्
वै. शु. ५ भौमे	२३ अप्रै.	११ वैशा.	आर्द्रा	मु. ल. ३, ५ अभि श्री हनुमान
वै. शु. ६ बुधे	२४ अप्रै.	१२ वैशा.	पुर्न	ल. ३, ५ अभि.
वै. शु. ७ गुरौ	२५ अप्रै.	१३ वैशा.	पुष्ये	ल. ३, ४ दु. १२.५८ तक
वै. शु. १२ भौमे	३० अप्रै.	१८ वैशा.	उ. फा.	ल. ३, ५ अभि. श्री हनुमान
वै. शु. १३ बुधे	१ मई	१९ वैशा.	हस्ते	ल. ४, ५ अभि (शिव)
वै. शु. १५ शुक्रे	३ मई	२१ वैशा.	स्वाती	ल. ३, ५ अभि
ज्ये. कृ. २ रवि.	५ मई	२३ वैशा.	अनु.	ल. ३, ५ अभि (चं. दा.)
ज्ये. कृ. ६ बुधे	८ मई	२६ वैशा.	उ. षा.	ल. ३, ५ अभि
ज्ये. कृ. ८ शुक्रे	१० मई	२८ वैशा.	धनि.	ल. अभि. श्रीलक्ष्मी
ज्ये. शु. २ रवि	१९ मई	६ ज्ये.	रोहिणी	मु. ल. ८.३१ उप, ४, ५
ज्ये. शु. ३ चन्द्रे	२० मई	७ ज्ये.	मृगे.	ल. ३, ४ (प्रातः १०.४६ तक)
ज्ये. शु. ५ बुधे	२२ मई	९ ज्ये.	पुर्न	ल. ३, ५ अभि
ज्ये. शु. ६ गुरौ	२३ मई	१० ज्ये.	पुष्ये	ल. ३, ५ अभि
ज्ये. शु. १२ गुरौ	३० मई	१७ ज्ये.	स्वा.	दि. ल. ५, अभि, विष्णु
सन् १९९७ ई० में				
माघ शु. २ रवि	९ फर.	२८ माघ	शत	मु. ल. ११, २ विष्णु
माघ शु. ३ रवि	१० फर.	२९ माघ	उ. भा.	मुहूर्त प्रातः ९.२८ उप.
माघ शु. १० रवि	१६ फर.	५ फागु.	मृगे	मु. ल. २, अभि
माघ शु. ११ चंद्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृगे.	मुहर्त प्रातः ८ ।४५ तक

बड़े पैमाने में व्यापार शुरू करने का मुहूर्त्त

विशाल पैमाने में व्यापार शुरू करने के हेतु यद्यपि विपाणि के समान ही मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु अधिक उन्नत क्षेत्र में व्यवसाय प्रारंभ करने हेतु उन्हीं मुहूर्त्तों में से निम्नंकित मुहूर्त्तों का चुनाव कर सकते हैं—

शुभ ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, माघ एवं फाल्गुन सौर मांस

शुभ ग्राह्य वार—बुध, गुरू, शुक्र एवं शनिवार

शुभ नक्षत्र—पुष्य, तीनों उत्तरा ३, हस्त, चित्रा

विशेष—व्यापार प्रारम्भ करने वाले जातक की जन्मपत्री में ग्रहों की दशा अन्तर दशा एवं गोचर ग्रहों की स्थिति आदि का भी विचार कर लेना संगत होगा।

आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त

ग्राह्य वार—रविवार, मंगलवार एवं गुरूवार

ग्राह्य नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगे, हस्त, चित्रा, स्वा. अनु., अभिजित्, श्रवण

पांच स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

(१) माघ शुक्ल पंचमी (बसन्त ५) (२) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (३) अक्षया तृतीया (४) विजयादशमी (५) कार्तिक कृष्ण अमा. (दीपमाला काल)

ये पाँच स्वयं सिद्ध शुद्ध मूहूर्त्त कहलाते हैं। विवाहादि सुनिश्चित मुहूर्त्तों के अतिरिक्त अन्य शुभ कार्यों का सम्पादन किया जा सकता है।

दोषयुक्त अशुद्ध विवाह मुहूर्त संवत् २०५३ वि०

भूमि, खरीदने (क्रय) करने का मुहूर्त्त

दोषयुक्त अशुद्ध विवाह मुहूर्त संवत् २०५३ वि०

[विशेष दोषयुक्त मुहूर्त जिनके परिहार उपलब्ध नहीं]

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
१५ अप्रै.	चंद्रे	उभा	शनि युति-राहु वेध
२९ अप्रै.	चंद्रे	उफा	केतु वेध
३० अप्रै.	भौमे	हस्ते	राहु युति; शनि वेध
१ मई	बुधे	हस्ते	राहु युति शनि वेध
४ मई	शनि	अनु	सूर्य वेध
५ मई	रवि	अनु	सूर्य वेध
९ मई	गुरौ	उषा	भद्रा व्याप्ति
१२ मई	रवि	उभा	श. युति, रा. वेध
१३ मई	चंद्रे	उभा	श. युति रा. वेध
२६ मई	रवि	उफा	केतु वेध
२७ मई	चंद्रे	उफा	केतु वेध
२७ मई	चंद्रे	हस्त	राहु यु श वे.
२८ मई	मंग	हस्त	राहु युति ग्रहण शु.
४ जून	मंग	उषा	दग्धा ति. शुक्र वा.
५ जून	बुध	उषा	द. ति शुक्र वा.
७ जून से १४ जून तक शुक्रास्त १६ जून से १५ जुला. तक अधिमास			
१९ जुला.	शुक्र	मघा	लग्नाभाव
२० जुला.	शनि	उफा	केतुवेध
२१ जुला.	रवि	उफा	केतुवेध
२१ जुला.	रवि	हस्त	रा. यु. श. वेध
२२ जुला.	चंद्रे	हस्त	राहु युति श. वे.
२२ जुला.	चंद्रे	चित्रा	लग्नाभाव
२९ जुला.	चंद्र	उषा	शुक्र वेध
२ अग.	शुक्र	उभा	शनियुति
३ अग.	शनि	उभा	शनि युति
३ अग.	शनि	रेवती	केतु युति
४ अग.	रवि	रेवती	केतु युति
४ अग.	रवि	अश्वि	मृत्युपंच, लऽभाव
७ अग.	बुध	रोहिणी	लग्नाभाव
८ .अग.	गुरू	मृगे	लग्नाभाव
१५ अग.	गुरू	मघा	मासान्त
१७ अग.	शनि	हस्त	राहुयुति श. वे
१८ अग.	रवि	हस्त	रा. यु. श. वेध
२३ अग.	शुक्र	मूला	मं. शु. वेध
२४ अग.	शनि	मूला	मं. शु. वेध
२६ अग.	चन्द्र	श्रवण	सूर्य वेध
२७ अग.	मंग	श्रवणे	सूर्य वेध
२८ अग.	बुध	धनि	भद्रा दो. अति.
३० अग.	शुक्र	उ.भा.	शनि. यु. रा. वे.
३१ अग.	शनि	उभा	श. यु., रा. वे.
१ सितं.	रवि.	अश्वि	सूर्य वेध
२ सितं.	चंद्र	अश्वि	सूर्य वेध
५ सितं.	गुरू	रोहिणी	लग्नाभाव
१४ सितं.	शनि	हस्त	राहु यु. शनि वेध
१५ सितं.	रवि.	ह./चि.	मासान्त
१६ सितं.	चंद्र	स्वा.	संक्रान्ति
२६ सितं.	बृह	उभा	शनि यु. रा. वे.
२७ सितंबर से १२ अक्तूबर तक श्राद्ध			
१५ अक्तू.	मंग.	अनु.	मासान्त
२० अक्तू.	रवि	श्रवणे	भौम वेध
२१ अक्तू.	चंद्र	श्रवणे	भौम वेध
२४ अक्तू.	गुरू	उभा	श. यु. रा. वेध
२५ अक्तू.	शुक्र	अश्वि.	लग्नाभाव
२८ अक्तू.	चंद्र	रोहणी	लग्नाभाव
२९ अक्तू.	मंग.	मृग	लग्नाभाव
७/८ नवं.	बृ. शु.	हस्त	राहु यु. शुक्र वेध
२० नवं.	बुध	उभा	शनि यु. रा. वेध
२१ नवंबर से २५ नवंबर प्रातः (९.४१) तक —भीष्म पंचक			
२६ नवं.	मंग	रोहिणी	दि. लग्नाभाव
५ दिसं.	बृह.	हस्ते	राहु यु. केतु वेध
६ दिसं.	शुक्र	हस्त	रा. युति के. वेध
१५ दिसंबर से सूर्य धनु राशिस्थ ८ जनवरी, ९७ से २ फरवरी, ९७ तक गुर्वस्त			
१० फर.	चंद्रे	उ.भा.	शनि युति भौम वेध
११ फर.	मंग	रेव	मासान्त दोष
१७ फर.	चंद्र	मृग	लग्नाभाव
२१ फरवरी से शुक्रास्त रहेगा।			

भूमि, खरीदने (क्रय) करने का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमिक्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्णपक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियाँ।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शताभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

(पृष्ठ १०६ का शेष भाग)

गृहारम्भ (गृह निर्माण) २०५३

वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्तकाल
शनौ	१६ नवं	२ मार्ग	उषा	मु. ल. ९ अभि.
बुधे	२० नवं	६ मार्ग	उभा	मु. दुपै १२.९ उप.
चंद्रे	२५ नवं	११ मार्ग	रोह.	मु. प्रातः १०.५३ उप.
बुधे	२७ नवं	१३ मार्ग	मृग	मु. ल. ९, अभि
शनि	३० नवं	१६ मार्ग	पुष्ये	मु. ल. ९ अभि
शुक्रे	६ दिसं.	२२ मार्ग	हस्त	ल. ९, अभि.
शनि	७ दिसं.	२३ मार्ग	चित्रा	ल. ९, अभि
शुक्रे	१३दिसं.	२९ मार्ग	उषा	ल. ९, अभि
(स. ई. १९९७ में)				
चंद्रे	१० फर.	२९ माघ	उभा.	मु.ल. २ (प्रा. ९.२८ उप.)
चंद्रे	१७ फर.	६ फागु.	मृगे	मु. प्रातः ८.४५ तक

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "व्रत और त्यौहार" एवं सप्तवार कथा मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—"**एहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर**" स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेंहू, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र "**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**" की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेंहू और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते है। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**' बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। मंगल देवता का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा का पाठ तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र "**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**" का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारंभ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवतीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए। तथा गुरू के बीज मंत्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डू, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिणा सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित होकर गुरू गायत्री मंत्र अथवा गुरू के बीज मंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं

सः गुरवे नमः" का यथाशक्ति पाठ करें। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समिध, मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री-द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ ... पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ... ७ बार धागे को लपेटने के

बीज मंत्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः" को कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए। | मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु के गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं

सः गुरवे नमः" का यथाशक्ति पाठ करें। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समिध, मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री-द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"ॐ द्रां द्रीं द्रौं स : शुक्राय नमः" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करें। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र, काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहू की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा कम्बल, जौ आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहू के बीजमंत्र **'ओं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम :।।'**का पाठ करना श्रेयकर होता है

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **"ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नम :"** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

शुभ चिंतक— पं० पन्ना लाल ज्यो० जालन्धर।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय या मुहूर्त पर आरंभ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृक्ष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चि	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि	मिथुन	मेष

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** मे पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता या सास के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि धर्म, परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, दूसरे चरण में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियां तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला धनवान एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, तीसरे **चरण** में धन का नाश तथा **चौथे चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधि पूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूला नक्षत्र फल का अन्य प्रकार—

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। प्रथम भाग हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, तीसरे में बहनोई की हानि, चौथे में पितामह (दादा) की हानि, पांचवें में माता को अरिष्ट छठे में मौसी को अरिष्ट, सातवें अंश में मामा की हानि, आठवें में चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमें** में सबके लिए अनिष्टकर, दसवें अंश में पशु का नाश, ग्यारहवें में नौकर का नाश होता है। **बारहवें** अंश में स्वयं जातक का नाश होता है। तेरहवें अंश में हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, चौदहवें अंश में जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर पन्द्रहवें में हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ ।४५ है। ४ ।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८ । ३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ । ४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, दूसरे में मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, तीसरे में जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ** में जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

अनिष्ट निवारक नवग्रह यन्त्र और उनको धारण करने की विधि

या ताम्र के तावीज में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रुमाल एवं लाल ... पास रखे। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स:

अनिष्ट निवारक नवग्रह यन्त्र और उनको धारण करने की विधि

संसार में प्रत्येक मनुष्य को अपने पूर्व जन्म में तथा वर्तमान जन्म में किए गए कर्मों एवं नव ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ (सुख-दुखादि) फलों की प्राप्ति होती है। जिस पुरुष/स्त्री की जन्म राशि या प्रसिद्ध राशि पर सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहे हों, उन्हें तदनुसार सम्बन्धित ग्रह यंत्र को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने, चान्दी अथवा तांबे के तावीज़ में रखकर गले में धारण करें अथवा पुरुष दाहिनी भुजा में तथा स्त्री बाईं भुजा में धारण करें। इन यंत्रों को सोना, चांदी अथवा ताम्बे के लाकेट अथवा प्लेट पर खुदवा कर उस पर सम्बन्धित ग्रह की पूजा शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक धारण करने से ग्रह जनित अनिष्ट प्रभाव का निवारण होकर सब प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।

अष्टगंध—केशर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन आगर-तगर तथा कुमकुम।

सूर्य का यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यंत्र

८	३	१०
९	१०	५
४	११	६

बुध का यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु का यंत्र

१०	५	१२
११	९	६
६	१३	८

शुक्र का यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि का यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

सूर्यादि ग्रहों के यंत्र-धारण विधि

सूर्य यन्त्र—जन्म पत्री में सूर्य की स्थिति अशुभ हो अथवा विंशोतरी दशा में सूर्य की अशुभ दशा लगी हो, गोचर स्थिति भी अशुभ हो, तो सूर्य यंत्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन (यदि कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र भी हो तो भी अच्छा है) उपर्युक्त विधि अनुसार अष्टगन्ध से लिखकर सोने या ताम्र के तावीज में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रुमाल एवं लाल (गुलाबी) डोरी में लपेट कर अपने पास रखें। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर **"ओं ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** इस मंत्र की एक माला ७ हजार बार जाप करना कल्याणकारी होगा।

चन्द्र यन्त्र—आपकी राशि को जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो चन्द्र यन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार विशेषकर रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में सांय काल को उपर्युक्त विधि अनुसार चांदी का यंत्र धारण करें अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर चांदी के तावीज़ में रखकर सफेद डोरी में धारण करें। यंत्र धारण करने से पूर्व उस पर **ओं सों सोमाय नमः** या **"ओं श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमासे नमः"** इस मंत्र का ११००० पाठ पूरा कर लेना शुभ होगा।

मंगल यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में मंगल ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के मंगलवार को मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा नक्षत्र कालीन **"ओं क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः"** मंत्र को दस हजार संख्या में जाप एवं पूजा के पश्चात् ताम्बे का यन्त्र (प्लेट, लाकेट आदि) धारण करना श्रेयकर रहता है। ताम्र यंत्र के अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध पर यंत्र लिखकर ताम्बे के तावीज धारण कर सकते हैं।

बुध यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में बुध के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र के समय सोने या चांदी की प्लेट, अंगुठी या लाकेट पर खुदवा कर हरे रुमाल में बुध यंत्र धारण करें। धारण करने से पूर्व इस पर बुध के बीज मंत्र का ९००० की संख्या में पाठ करना शुभ होगा।

गुरु यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में गुरु के अरिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समय या किसी अन्य शुभ मुहूर्त पर सोने, चांदी या ताम्बे की प्लेट अथवा लाकेट या अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर गुरु का बीजमंत्र **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः** पढ़ते हुए पीले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

शुक्र यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में शुक्र ग्रह के अनिष्ट के निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा या भरणी नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहुर्त में चांदी की प्लेट या लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर शुक्र का बीज मंत्र **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** पढ़ते हुए श्वेत चन्दन और श्री गंगा जल के ३ छींटे देते हुए गुलाबी रुमाल में लपेटकर अपना पास रखें।

शनि यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में शनि ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहुर्त में सोने या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगुठी पर यंत्र खुदवा कर, शनि के बीज मंत्र **ॐ शं शनैश्चराय नमः** मंत्र की ३ माला का जाप करके यथाशक्ति दान के उपरान्त काले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखें।

राहु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्मकुण्डली में राहु के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वाती या शतभिषा नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी अथवा सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी में यन्त्र खुदवा कर राहु के बीज मंत्र **ओं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** की कम-से-कम तीन माला का जाप करके दान पूर्वक धूम्र वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

केतु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल पक्ष के मंगलवार या रविवार को अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र में अथवा किसी शुभ मुहूर्त कालीन चांदी या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट या अंगूठी में यंत्र को खुदवाकर केतु के बीज मंत्र **ओं स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** की तीन माला का जाप करके दान पूर्वक लहसुनिया जैसे वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से नेष्ट फल दूर हो जाता है।

अक्षांश-रेखांश सारिणी और सूर्योदयास्त ज्ञान

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश (latitude), रेखांश (longitude), एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२ ।३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३ ।११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२ ।३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिनट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°.३०' रेखांश से **पश्चिम** में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अंतर) ऋण (—) लिखा जाता है, तथा जो भा० नगर ८२°.३०' के पूर्व में पड़ेगे, वहां का स्टै० अंतर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

आगामी पृष्ठों पर लिखे गए प्राय यः सभी नगर ८२°.३० पू० रेखांश से पश्चिम में स्थित होने के कारण, उनका रेखांतर (स्टैण्डर्ड अंतर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर का अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिन्ट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान का सूर्योदयस्त प्राप्त हो जायेगा।

शुभ चिंतक—**पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी**

अक्षांश-रेखांश का उपयोग सूर्योदयास्त, दिनमान आदि के जानकारी के अतिरिक्त लग्न स्पष्ट करने के लिए भी विशेष महत्त्व रखता है। लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम अपने अभीष्ट स्थान का अक्षांश-रेखांश का ज्ञान होना आवश्यक होता है। **ध्यान रहे,** लग्न स्पष्ट करने के लिए लगभग उसी **अक्षांश-सारिणी** का प्रयोग करना चाहिए जो अक्षांश आपके अभीष्ट (desired) नगर का है। अन्यथा गम्भीर त्रुटि होने की सम्भावना हो जाती है। अर्थात् यदि बच्चे का जन्म देहली मेरठ आदि का हो, तो आपके २९ अक्षांश वाली सारिणी का प्रयोग करना चाहिए, न कि ३१ ।३० अक्षांश पर आधारित जालन्धर, लुधियाना हेतु इस वर्ष २९, ३० ।३०, ३१ ।३० तथा ३३द्व ।१० अक्षांशों का सारिणियां दी गई है जो कि श्रीनगर (काश्मीर) से लेकर उत्तर-प्रदेश के अधिकांश नगरों तक के लग्न स्पष्ट करने के लिए उपोयगी सिद्ध होंगी। इनके अतिरिक्त प्रस्तुत सवंत २०५१ में हमने ५१ ।३० अक्षांश पर आधारित लंदन आदि विदेशी नगरों की लग्न सारिणी भी मुद्रित की है, जोकि इगलैंड (United Kingdom) में स्थित अधिकांशतया मुख्य नगरों के लिए उपयोगी रहेगी। ध्यान रहे, इगलैण्ड आदि विदेशी नगरो का लग्न स्पष्ट करने से पूर्व सूर्यादि स्पष्ट भी ब्रिटिश स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार ग्रहण करना चाहिए॥

शुभ चितक— **पं० पन्ना लाल ज्यो०**

जम्मू-कश्मीर के मुख्य शहरों के अक्षांश-रेखांश व स्टैंडर्ड अन्तर

नीचे लिखे नगर ८२ (१/२) रेखांश से पश्चिम दिशा में होने से सभी नगरों का स्टै० अन्तर ऋण (–) होगा। परन्तु भा० स्टै० टाईम में सूर्योदयास्त जानने के लिए दै० मध्यम सूर्योदयास्त में जमा (+) किया करें।

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै० अंतर	नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै० अंतर
अनंतनाग	३३ ।४३	७५ ।१७	–२८ ।५२	पुँछ	३३ ।५१	७४ ।०८	–३३ ।२८
अखनूर	३२ ।५४	७४ ।४८	–३० ।४८	पहलगाँव	३४ ।०१	७५ ।२४	–२८ ।२४
अवंतीपुर	३३ ।५६	७५ ।०३	–२९ ।४८	पदम	३३ ।२८	७६ ।५४	–२२ ।२४
श्री अमरनाथ गुफा	३४ ।१३	७५ ।३३	–२७ ।४८	परिपंजाल	३३ ।३६	७४ ।२२	–३२ ।३२
ऊधमपुर	३२ ।५५	७५ ।०७	–२९ ।३२	बारामूला	३४ ।१०	७४ ।३०	–३२ ।००
उड़ी	३४ ।०४	७४ ।०२	–३३ ।५२	बटोत	३३ ।१०	७५ ।०६	–२९ ।३६
कठुआ	३२ ।१७	७५ ।३६	–२७ ।४४	श्री वैष्णो देवी	३३ ।०३	७४ ।५६	–३० ।१६
कारगिल	३४ ।३०	७६ ।१३	–२५ ।०८	बूलर	३४ ।२०	७४ ।३७	–३१ ।२२
केरन	३४ ।४०	७३ ।५९	–३४ ।०४	बड़गाम	३४ ।००	७४ ।४४	–३१ ।०४
किश्तवाड़	३३ ।१९	७५ ।४८	–२६ ।४८	बनिहाल	३२ ।३२	७५ ।१९	–२८ ।४४
कोटली	३३ ।३०	७३ ।५७	–३४ ।१२	बसौली	३२ ।३२	७५ ।५१	–२६ ।३६
कटरा	३३ ।०१	७४ ।५८	–३३ ।०८	भद्रवाह	३३ ।०४	७५ ।५०	–२६ ।४०
कुलगाम	३३ ।४२	७५ ।०२	–२९ ।५२	मार्तण्ड	३३ ।४८	७५ ।१८	–२८ ।४८
खरताक्षो	३४ ।५३	७६ ।१०	–२५ ।२०	मिनीमर्ग	३४ ।४९	७५ ।०२	–२९ ।५२
खपालू	३५ ।१०	७६ ।२०	–२४ ।४०	मुजफराबाद	३४ ।२२	७३ ।३१	–३५ ।५६
गुलमर्ग	३४ ।०५	७४ ।२५	–३२ ।२०	मीरपुर	३३ ।३१	७३ ।५७	–३४ ।१२
गिलगित	३५ ।५५	७४ ।२२	–३२ ।३२	मनावर	३२ ।५०	७४ ।२५	–३२ ।२०
गुरयास	३४ ।३८	७४ ।५६	–३० ।१६	रामनगर	३२ ।५२	७५ ।२२	–२८ ।३२
चिलास	३५ ।२७	७४ ।०६	–३३ ।३६	रियासी	३३ ।०४	७४ ।५३	–३० ।२८
चुशूल	३३ ।३५	७८ ।३९	–१५ ।२४	राजौरी	३३ ।२३	७४ ।१८	–३२ ।४८
छम्ब	३२ ।५१	७४ ।२३	–३२ ।२८	रामबन	३३ ।१४	७५ ।१५	–२९ ।००
जम्मू	३२ ।४३	७४ ।५४	–३० ।२४	लेह (लद्दाख)	३४ ।१०	७७ ।४०	–१९ ।२०
जंगला	३३ ।४०	७७ ।००	–२२ ।००	लद्दाख रेंज	३२ ।००	८० ।००	–१० ।००
जांस्कार	३३ ।३०	७७ ।००	–२२ ।००	श्रीनगर	३४ ।०६	७४ ।५१	–३० ।३६
जस्मेरगढ़	३२ ।१८	७५ ।०५	–२९ ।४०	साम्बा	३२ ।३३	७५ ।०७	–२९ ।३२
डोडा	३३ ।११	७५ ।३४	–२७ ।४४	सोपूर	३४ ।१९	७४ ।३०	–३२ ।००
दरास	३४ ।२२	७५ ।५०	–२६ ।४०	सोना मार्ग	३४ ।१९	७५ ।२०	–२८ ।४०
नतांशहर	३२ ।२८	७४ ।४६	–३० ।५६	सोन्दर	३३ ।२९	७५ ।५७	–२६ ।१२
नौशेरा	३३ ।१३	७४ ।१७	–३२ ।५२	शेर क़िला	३६ ।०५	७४ ।०३	–३३ ।४८
नगिर	३६ ।१७	७४ ।४५	–३१ ।००				

पंजाब के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश व स्टैण्डर्ड अंतर

भारतीय स्टै० टाईम भारत-मध्य-रेखा बिन्दु ८२° ।३०' पूर्व रेखांश पर आधारित [illegible] देशान्तर ऋण (–) लिखा जाता है, परन्तु स्वानिक मध्यम सूर्योदयास्त

हिमाचल प्रदेश के मुख्य शहरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अंतर

चूंकि नीचे लिखे सभी शहर भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम के केन्द्र रेखांश ८२ (१/२°) से पश्चिम में है। अतएव सभी नगरों का स्टैण्डर्ड टाइम में अंतर ऋण (–) में दिया गया है। परन्तु निम्न नगरों का सूर्योदयास्त जानने के लिए मध्यम सूर्योदयास्त में स्टैडर्ड अन्तर ऋण (–) को बजाए जमा (+) करना होगा।

ज़िला कांगड़ा

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
कांगड़ा	३२ ।०५	७६ ।१८	–२४ ।४८
चामुण्डा देवी	३२ ।०८	७६ ।२०	–२४ ।४०
धर्मशाला	३२ ।१६	७६ ।२३	–२४ ।२८
नूरपुर	३२ ।१८	७५ ।५६	–२६ ।१६
मगवाल	३२ ।०३	७६ ।०५	–२५ ।४०
कोटला	३२ ।१७	७६ ।०२	–२५ ।५२
अदौरा	३२ ।०६	७५ ।४१	–२७ ।१६
शाहपुर	३२ ।१४	७६ ।१२	–२५ ।१२
नगरोटा	३२ ।०७	७६ ।२३	–२४ ।२८
देहरा गोपी पुर	३१ ।५५	७६ ।१४	–२५ ।०४
आलमपुर	३१ ।५४	७६ ।३०	–२४ ।००
ज्वाली	३२ ।०६	७६ ।०१	–२५ ।५६
नगरोटा बगवा	३२ ।०६	७६ ।२४	–२४ ।२८
ढलियारा	३१ ।५२	७६ ।११	–२५ ।१६
ज्वालामुखी	३१ ।५३	७६ ।२०	–२४ ।४०
पालमपुर	३२ ।०६	७६ ।३३	–२३ ।४८
पपरौला	३२ ।०४	७६ ।३४	–२३ ।४४
बैजनाथ	३२ ।०३	७६ ।३६	–२३ ।३६
डमटाल	३२ ।१३	७५ ।४१	–२७ ।१६
जस्सूर	३२ ।१७	७५ ।५५	–२६ ।२०
गर्ली (परागपुर)	३१ ।४८	७६ ।१८	–२४ ।४८

ज़िला हमीरपुर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
हमीरपुर	३१ ।४२	७६ ।३०	–२४ ।००
नादौन	३१ ।४७	७६ ।२२	–२४ ।३२
बरसर (भोटा)	३१ ।३४	७६ ।२८	–२४ ।०८
सुजानपुर टीहरी	३१ ।५०	७६ ।३१	–२३ ।५६
धनेटा	३१ ।३८	७६ ।२९	–२४ ।०४

ज़िला ऊना

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
ऊना	३१ ।३२	७६ ।१८	–२४ ।४८
बसौली	३१ ।३४	७६ ।२३	–२४ ।२८
संतोख गढ़	३१ ।२१	७६ ।२०	–२४ ।४०
बगाना तै०	३१ ।३३	७६ ।२७	–२४ ।१६
मैहत पुर	३१ ।२२	७६ ।१७	–२४ ।५२
गगरेट	३१ ।४१	७६ ।०३	–२५ ।४८
अम्ब	३१ ।४३	७६ ।०६	–२५ ।३६
मुबारक पुर	३१ ।४४	७५ ।५९	–२६ ।०४
भरवाई	३१ ।४७	७६ ।०६	–२५ ।३६
दौलत पुर	३१ ।४६	७५ ।५८	–२६ ।०८
चितपूर्णी	३१ ।४७	७६ ।०४	–२५ ।४४

ज़िला बिलासपुर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
बिलासपुर	३१ ।१९	७६ ।५०	–२२ ।४०
घुमारवी	३१ ।३०	७६ ।४१	–२३ ।१६
भाखड़ा	३१ ।२०	७६ ।३०	–२४ ।००
नैना देवी	३१ ।१९	७६ ।३१	–२३ ।५६

ज़िला मण्डी

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
मण्डी	३१ ।४३	७६ ।५८	–२२ ।०८
जोगिन्दर नगर	३१ ।५८	७६ ।४५	–२३ ।००
सरका घाट	३१ ।४३	७६ ।२२	–२४ ।३२
सुन्दर नगर	३१ ।३३	७६ ।५४	–२२ ।२४
डैहर	३१ ।२९	७६ ।५२	–२२ ।२२
बड़ागांव	३१ ।२०	७७ ।१५	–२१ ।००
करसोग	३१ ।२३	७७ ।१४	–२१ ।०४
ततापानी	३१ ।१४	७७ ।१०	–२१ ।२०
चचयोट	३१ ।३६	७७ ।०४	–२१ ।४४
पण्डोह	३१ ।४१	७७ ।०७	–२१ ।३२

ज़िला कुल्लू

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
कुल्लू	३१ ।५८	७७ ।१०	–२१ ।२०
नगर	३२ ।१०	७७ ।२०	–२० ।४०
मनाली	३२ ।१७	७७ ।१९	–२० ।४४
बजार	३१ ।४०	७७ ।२०	–२० ।४०
खाजियार	३२ ।३१	७६ ।०३	–२५ ।४०
भुतर	३१ ।५४	७७ ।०९	–२१ ।२४
मनीकरण	३२ ।०१	७७ ।२०	–२० ।४०
अनी	३१ ।२८	७७ ।१२	–२१ ।१२
निरमण्ड	३१ ।२८	७७ ।३४	–१९ ।४४

ज़िला शिमला

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
शिमला	३१ ।०६	७७ ।१३	–२१ ।०८
जतोग	३१ ।०९	७७ ।०८	–२१ ।२८
तारा देवी	३१ ।०४	७७ ।१०	–२१ ।२०
चायल	३१ ।०३	७७ ।१४	–२१ ।०४
कुफरी	३१ ।०७	७७ ।१४	–२१ ।०४
नारकण्डा	३१ ।१५	७७ ।२८	–२० ।०८
कुमार सेन	३१ ।१८	७७ ।३७	–१९ ।३२
मशोबरा	३१ ।०७	७७ ।१४	–२१ ।०४
थियोग	३१ ।०८	७७ ।३३	–१९ ।४८
कोटखाई	३१ ।०८	७७ ।३६	–१९ ।३६
रामपुर बुशैहर	३१ ।२८	७७ ।३९	–१९ ।२४
महासू	३१ ।०५	७७ ।१३	–२१ ।०८
रोहड़ू	३१ ।१२	७७ ।४४	–१९ ।०४
जुब्बल	३१ ।०७	७७ ।३८	–१९ ।२८
हाटकोटी	३१ ।०९	७७ ।४४	–१९ ।०४

ज़िला सोलन

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
सोलन	३० ।५५	७७ ।०९	–२१ ।२४
कंडाघाट	३० ।५७	७७ ।०८	–२१ ।२८
सपाटू	३० ।५६	७७ ।०१	–२१ ।५६
डगशई	३० ।५३	७७ ।०६	–२१ ।३६
परवानू	३० ।५२	७७ ।०५	–२१ ।४०
धर्मपुर	३० ।५४	७७ ।०४	–२१ ।४४
कसौली	३० ।५४	७७ ।०२	–२१ ।५२
अर्की	३१ ।०९	७६ ।५९	–२२ ।०४
नालागढ़	३० ।५७	७६ ।२२	–२४ ।३२
कुनिहार	३० ।५८	७७ ।१०	–२१ ।२०

ज़िला चम्बा

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
चम्बा	३२ ।३०	७६ ।१०	–२५ ।२०
बनीखेत	३२ ।३२	७५ ।५८	–२६ ।०८
बकलोह	३२ ।२७	७५ ।५९	–२६ ।०४
डलहौजी	३२ ।३१	७६ ।००	–२६ ।००
शेरपुर	३२ ।३४	७५ ।५९	–२६ ।०४
हरिपुर	३२ ।३९	७६ ।११	–२५ ।१६
टीसा	३२ ।४८	७६ ।१२	–२५ ।१२

ज़िला सिरमौर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
नाहन	३० ।३३	७७ ।२१	–२० ।३६
पौंटा साहिब	३० ।२९	७७ ।३८	–१९ ।२८
राजगढ़	३० ।५२	७७ ।२४	–२० ।२४
ददाहू	३० ।३५	७७ ।२८	–२० ।०८
पच्छाद	३१ ।४७	७७ ।०८	–२१ ।२८
त्रिलोकनाथ	३२ ।४३	७६ ।३९	–२३ ।२४

ज़िला किन्नौर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
किन्नौर	३१ ।३२	७८ ।२०	–१६ ।४०
कल्पा	३१ ।३४	७८ ।१६	–१६ ।५६
लाहौल स्पिति	३२ ।३१	७७ ।०१	–२१ ।५६
केलांग	३२ ।३८	७७ ।०५	–२१ ।४०

हरियाणा के प्रमुख नगरों के अक्षांश-रेखांश व स्टैंडर्ड अंतर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै० अंतर	नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै० अंतर
अम्बाला	३० ।२१	७६ ।५२	- २२ ।३२	फतेहबाद	२९ ।३१	७५ ।३०	- २८ ।००
अलीपुर	२९ ।१०	७५ ।५२	- २६ ।३२	फरीदाबाद	२८ ।२५	७७ ।२२	- २० ।३२
करनाल	२९ ।४२	७७ ।०२	- २१ ।५२	बल्लभगढ़	२८ ।२२	७७ ।२०	- २० ।४०
कलानौर	२८ ।५२	७६ ।२३	- २४ ।२८	बहादुरगढ़	२८ ।४२	७६ ।५५	- २२ ।३०
कालका	३० ।४९	७६ ।५७	- २२ ।१२	भादसों	२९ ।५६	७६ ।५६	- २२ ।०८
कुरुक्षेत्र	२९ ।५९	७६ ।४८	- २२ ।४८	भिवानी	२८ ।४६	७६ ।१८	- २४ ।४८
कैथल	२९ ।४८	७६ ।२६	- २४ ।१६	मनसादेवी	३० ।४४	७६ ।५२	- २२ ।३२
केसरी	३० ।१५	७६ ।५३	—२६ ।२८	महेन्द्रगढ़	२८ ।१६	७६ ।१०	- २५ ।२०
गुड़गांव	२८ ।२९	७७ ।०४	- २१ ।४४	माहम	२८ ।५८	७६ ।१९	- २४ ।४४
गोहाना	२९ ।०९	७६ ।४१	- २३ ।१६	मोहाना	२९ ।०४	७६ ।५०	- २२ ।४०
जगाधरी	३० ।१०	७७ ।१६	- २० ।५६	यमुनानगर	३० ।०८	७७ ।१६	- २० ।५६
जाखल	२९ ।४९	७५ ।४९	- २६ ।४४	रैना	२९ ।२८	७४ ।५४	- ३० ।२४
जीन्द	२९ ।१९	७६ ।२१	- २४ ।३६	रादौर	३० ।०२	७७ ।०६	- २१ ।३६
टोहाना	२९ ।४३	७५ ।५३	- २६ ।२८	रिवाड़ी	२८ ।१२	७६ ।४०	- २३ ।२०
थानेसर	२९ ।५८	७६ ।५६	- २२ ।१६	रोड़ी	२९ ।४४	७५ ।१७	- २८ ।५२
दादरी	२८ ।३३	७७ ।३२	- १९ ।५२	रोहतक	२८ ।५४	७६ ।३८	- २३ ।२८
नरवाना	२९ ।३६	७६ ।०८	- २५ ।२८	लाडवा	२९ ।५९	७७ ।०५	- २१ ।४०
नारनौल	२८ ।०२	७६ ।१४	- २५ ।०४	लोहारु	२८ ।१६	७५ ।४५	- २७ ।००
नारायणगढ	३० ।३०	७७ ।०९	- २१ ।२४	शाहाबाद	३० ।१०	७६ ।५५	- २२ ।२०
नीलोखेड़ी	२९ ।५२	७६ ।५४	- २२ ।२४	सिरसा	२९ ।३२	७५ ।०७	- २९ ।३२
पंचकूला	३० ।४५	७६ ।५३	- २२ ।२८	सोनीपत	२८ ।५८	७६ ।५९	- २२ ।०४
पटौदी	२८ ।१९	७६ ।४८	- २२ ।४८	हसनपुर	२७ ।५९	७७ ।२९	- २० ।०४
पलवल	२८ ।१०	७७ ।१९	- २० ।४४	हांसी	२९ ।०६	७६ ।००	- २६ ।००
पानीपत	२९ ।२३	७७ ।०१	- २१ ।५६	हिसार	२९ ।१०	७५ ।४६	- २६ ।५६
पिंजौर	३० ।४९	७६ ।५५	- २२ ।२०				
पिपली	२९ ।५९	७६ ।५२	- २२ ।३२				
पिहोवा	२९ ।५६	७६ ।३६	- २३ ।३६				

दिल्ली राज्य के अक्षांश रेखांश व स्टैण्डर्ड अंतर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै. अंतर
देहली	२८ ।३९	७७ ।१२	—२१ ।१२
नई देहली	२८ ।१२	७७ ।३८	—२१ ।१२
कुतुब मीनार (मैहरौली)	२८ ।३३	७७ ।१०	—२१ ।२०
ओखला	२९ ।३६	७७ ।१९	—२० ।४४
कालका जी	२९ ।३५	७७ ।१६	—२० ।५६
गोबिंद पुरी	२८ ।३४	७७ ।१६	—२० ।५६
नज़फगढ़	२८ ।३७	७७ ।०१	—२१ ।५६
निज़ामुद्दीन	२८ ।३६	७७ ।१८	—२० ।४८
बसंत बिहार	२८ ।३५	७७ ।०९	—२१ ।२४
करोल बाग	२८ ।३८	७७ ।१२	—२१ ।१२
ग्रेटर कैलाश	२८ ।३४	७७ ।१५	—२१ ।००
पालम	२८ ।३५	७७ ।०६	—२१ ।३६
बादली	२८ ।४५	७७ ।१०	—२१ ।२०
आदर्श नगर	२८ ।४३	७७ ।११	—२१ ।१६
आज़ादपुर	२८ ।४२	७७ ।११	—२१ ।१६
पंजाबी बाग	२८ ।३९	७७ ।०८	—२१ ।२८
राजौरी गार्डन	२८ ।३८	७७ ।०८	—२१ ।२८
माडल टाऊन	२८ ।४२	७७ ।११	—२१ ।१६
शकूर बस्ती	२८ ।४०	७७ ।०८	—२१ ।२८
सब्ज़ी मण्डी	२८ ।४०	७७ ।१२	—२१ ।१२
बदरपुर	२८ ।३३	७७ ।२१	—२० ।४०
सफदरजंग	२८ ।३८	७७ ।१२	—२१ ।१२

हिमाचल प्रदेश के मुख्य शहरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अंतर

चूंकि नीचे लिखे सभी शहर भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम के केन्द्र रेखांश ८२ (१/२°) से पश्चिम में है । अतएव सभी नगरों का स्टैण्डर्ड टाइम में अंतर ऋण (–) में दिया गया है । ...

हिमाचल प्रदेश के मुख्य शहरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अंतर

चूंकि नीचे लिखे सभी शहर भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम के केन्द्र रेखांश ८२ (१/२°) से पश्चिम में है। अतएव सभी नगरों का स्टैण्डर्ड टाइम में अंतर ऋण (—) में दिया गया है। परन्तु निम्न नगरों का सूर्योदयास्त जानने के लिए मध्यम सूर्योदयास्त में स्टैंडर्ड अन्तर ऋण (—) की बजाए जमा (+) करना होगा।

ज़िला कांगड़ा

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
कांगड़ा	३२ ।०५	७६ ।१८	—२४ ।४८
चामुण्डा देवी	३२ ।०८	७६ ।२०	—२४ ।४०
धर्मशाला	३२ ।१६	७६ ।२३	—२४ ।२८
नूरपुर	३२ ।१८	७५ ।५६	—२६ ।१६
मंगवाल	३२ ।०३	७६ ।०५	—२५ ।४०
कोटला	३२ ।१७	७६ ।०२	—२५ ।५२
अटौरा	३२ ।०६	७५ ।४१	—२७ ।१६
शाहपुर	३२ ।१४	७६ ।१२	—२५ ।१२
नगरोटा	३२ ।०७	७६ ।२३	—२४ ।२८
देहरा गोपी पुर	३१ ।५५	७६ ।१४	—२५ ।०४
आलमपुर	३१ ।५४	७६ ।३०	—२४ ।००
ज्वाली	३२ ।०६	७६ ।०१	—२५ ।५६
नगरोटा बगवा	३२ ।०६	७६ ।२४	—२४ ।२८
ढलियारा	३१ ।५२	७६ ।११	—२५ ।१६
ज्वालामुखी	३१ ।५३	७६ ।२०	—२४ ।४०
पालमपुर	३२ ।०६	७६ ।३३	—२३ ।४८
पपरौला	३२ ।०४	७६ ।३४	—२३ ।४४
बैजनाथ	३२ ।०३	७६ ।३६	—२३ ।३६
हमटाल	३२ ।१३	७५ ।४१	—२७ ।१६
जस्सूर	३२ ।१७	७५ ।५५	—२६ ।२०
गल्सी (पथ्रगपुर)	३१ ।४८	७६ ।१८	—२४ ।४८

ज़िला हमीरपुर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
हमीरपुर	३१ ।४२	७६ ।३०	—२४ ।००
नादौन	३१ ।४७	७६ ।२२	—२४ ।३२
बरसर (भोरंज)	३१ ।३४	७६ ।२८	—२४ ।०८
सुजानपुर टीहरी	३१ ।५०	७६ ।३१	—२३ ।५६
धनेटा	३१ ।३८	७६ ।२९	—२४ ।०४

ज़िला ऊना

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
ऊना	३१ ।३२	७६ ।१८	—२४ ।४८
बसौली	३१ ।३४	७६ ।२३	—२४ ।२८
संतोख गढ़	३१ ।२१	७६ ।२०	—२४ ।४०
बगाना तै०	३१ ।३३	७६ ।२७	—२४ ।१६
मैहत पुर	३१ ।२२	७६ ।१७	—२४ ।५२
मगरोट	३१ ।४१	७६ ।०३	—२५ ।४८
अम्ब	३१ ।४३	७६ ।०६	—२५ ।३६
मुबारक पुर	३१ ।४४	७५ ।५९	—२६ ।०४
भरवाई	३१ ।४७	७६ ।०६	—२५ ।३६
दौलत पुर	३१ ।४६	७५ ।५८	—२६ ।०८
चिंतपूरणी	३१ ।४७	७६ ।०४	—२५ ।४४

ज़िला बिलासपुर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
बिलासपुर	३१ ।१९	७६ ।५०	—२२ ।४०
घुमारवीं	३१ ।३०	७६ ।४१	—२३ ।१६
भाखड़ा	३१ ।२०	७६ ।३०	—२४ ।००
नैना देवी	३१ ।१९	७६ ।३१	—२३ ।५६

ज़िला मण्डी

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
मण्डी	३१ ।४३	७६ ।५८	—२२ ।०८
जोगिन्दर नगर	३१ ।५८	७६ ।४५	—२३ ।००
सरका घाट	३१ ।४३	७६ ।२२	—२४ ।३२
सुन्दर नगर	३१ ।३३	७६ ।५४	—२२ ।२४
डैहर	३१ ।२९	७६ ।५२	—२२ ।२२
बड़ागांव	३१ ।२०	७७ ।१५	—२१ ।००
करसोग	३१ ।२३	७७ ।१४	—२१ ।०४
ततापानी	३१ ।१४	७७ ।१०	—२१ ।२०
चचयोट	३१ ।३६	७७ ।०४	—२१ ।४४
पण्डोह	३१ ।४१	७७ ।०७	—२१ ।३२

ज़िला कुल्लू

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
कुल्लू	३१ ।५८	७७ ।१०	—२१ ।२०
नगर	३२ ।१०	७७ ।२०	—२० ।४०
मनाली	३२ ।१७	७७ ।१९	—२० ।४४
बंजार	३१ ।४०	७७ ।२०	—२० ।४०
खाजियार	३२ ।३१	७६ ।०३	—२५ ।४०
भुतर	३१ ।५४	७७ ।०९	—२१ ।२४
मनीकरण	३२ ।०१	७७ ।२०	—२० ।४०
अनी	३१ ।२८	७७ ।१२	—२१ ।१२
निरमण्ड	३१ ।२८	७७ ।३४	—१९ ।४४

ज़िला शिमला

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
शिमला	३१ ।०६	७७ ।१३	—२१ ।०८
जतोग	३१ ।०९	७७ ।०८	—२१ ।२८
तारा देवी	३१ ।०४	७७ ।१०	—२१ ।२०
चायल	३१ ।०३	७७ ।१४	—२१ ।०४
कुफरी	३१ ।०७	७७ ।१४	—२१ ।०४
नारकण्डा	३१ ।१५	७७ ।२८	—२० ।०८
कुमार सेन	३१ ।१८	७७ ।३७	—१९ ।३२
मशोबरा	३१ ।०७	७७ ।१४	—२१ ।०४
थियोग	३१ ।०८	७७ ।३३	—१९ ।४८
कोटखाई	३१ ।०८	७७ ।३६	—१९ ।३६
रामपुर बुशैहर	३१ ।२८	७७ ।३९	—१९ ।२४
महासू	३१ ।०५	७७ ।१३	—२१ ।०८
रोहडू	३१ ।१२	७७ ।४४	—१९ ।०४
जुब्बल	३१ ।०७	७७ ।३८	—१९ ।२८
हाटकोटी	३१ ।०९	७७ ।४४	—१९ ।०४

ज़िला सोलन

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
सोलन	३० ।५५	७७ ।०९	—२१ ।२४
कंडाघाट	३० ।५७	७७ ।०८	—२१ ।२८
सपाटू	३० ।५६	७७ ।०१	—२१ ।५६
डगशाई	३० ।५३	७७ ।०६	—२१ ।३६
परवानू	३० ।५२	७७ ।०५	—२१ ।४०
धर्मपुर	३० ।५४	७७ ।०४	—२१ ।४४
कसौली	३० ।५४	७७ ।०२	—२१ ।५२
अर्की	३१ ।०९	७६ ।५९	—२२ ।०४
नालागढ़	३० ।५७	७६ ।२२	—२४ ।३२
कुनिहार	३० ।५८	७७ ।१०	—२१ ।२०

ज़िला चम्बा

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
चम्बा	३२ ।३०	७६ ।१०	—२५ ।२०
बनीखेत	३२ ।३२	७५ ।५८	—२६ ।०८
बकलोह	३२ ।२७	७५ ।५९	—२६ ।०४
डलहौजी	३२ ।३१	७६ ।००	—२६ ।००
शेरपुर	३२ ।३४	७५ ।५९	—२६ ।०४
हरिपुर	३२ ।३९	७६ ।११	—२५ ।१६
टीसा	३२ ।४८	७६ ।१२	—२५ ।१२

ज़िला सिरमौर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
नाहन	३० ।३३	७७ ।२१	—२० ।३६
पौंटा साहिब	३० ।२९	७७ ।३८	—१९ ।२८
राजगढ़	३० ।५२	७७ ।२४	—२० ।२४
ददाहू	३० ।३५	७७ ।२८	—२० ।०८
पच्छाद	३१ ।४७	७७ ।०८	—२१ ।२८
त्रिलोकनाथ	३२ ।४३	७६ ।३९	—२३ ।२४

ज़िला किन्नौर

नाम शहर	अक्षांश	रेखांश	स्टै-अंतर-
किन्नौर	३१ ।३२	७८ ।२०	—१६ ।४०
कल्पा	३१ ।३४	७८ ।१६	—१६ ।५६
लाहौल स्पिति	३२ ।३१	७७ ।०१	—२१ ।५६
केलांग	३२ ।३८	७७ ।०५	—२१ ।४०

लग्नसारणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

जिस शहर में लग्न स्पष्ट करना हो सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना लें। इसके लिये उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। (अपने नगर का शुद्ध एवं सूक्ष्म सूर्योदय काल जानने के लिए हमारे पंचांग के आगामी पृष्ठों में दी गई अक्षांश सारणियों) का प्रयोग करें। आगे विभिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां दी जा रही हैं जो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल व जम्मु के कुछ प्रदेशों के लिए उपयुक्त हैं। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्टकाल का सूर्यस्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्नसारणी में उस राशि के सामने और उपलब्ध अंशों के कोष्टक के नीचे जितने घड़ी पल हों, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न जानने के घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण – मान लीजिए, विक्रमी संवत २०४७ मध्ये, होशियारपुर में वैशाः शुक्ल प्रतिपदा, प्रविष्टे १४ वैसाख, तदनुसार २६ अप्रैल १९९० ई० को दोपहर २ बजकर ७ मिनट पर उत्पन्न किसी काल्पनिक बालक का लग्न-स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात्-इष्ट २० घड़ी, ४५ पल बनेगा। तथा इसी इष्टकाल का सूर्यस्पष्ट ०।१२।७।१५ निकलता है। होशियारपुर का अक्षांश ३१।३२ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१।३० की लग्न सारणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारणी में सूर्य-स्पष्ट की राशि अर्थात मेष राशि के सामने और १२ अंश के नीचे कोष्ठक में हमें ४।९ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घट्यादि २०।४५ में जमा कर देने से कुल जोड़ २४।५४ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारणी में निकटवर्ती संख्या २४।४७ सिंह (४) राशि के सामने और १० अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड २४।५४ से केवल ७ पल कम पड़ती है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ७ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्ट कालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात – ६० कला का अंतर पड़ता है, तो १ पल के पीछे ५ कला का अंतर पड़ेगा, एवं न ७ पलों के पीछे ३५ कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्ट काल (२०।४५ घट्यादि) पर ४ गत राशि अर्थात सिंह लग्न १० अंश, ३५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा।

और अधिक सूक्ष्म रूप से लग्न स्पष्ट जानने के लिए हमारे ज्योतिष कार्यलय से प्रकाशित "ज्योतिष तत्त्व" का अध्ययन करें।

तथापि २६ अप्रैल १९९० को दुपहर २ घं. ७ मिंट पर उत्पन्न जातक का लग्न एव तद्समय ग्रहस्पष्ट अनुसार कुण्डली में ग्रहस्थापन इस प्रकार से होगा।

लग्न स्पष्ट
४।१०।३५।०

प्लूटो ७
६
४ क
५
वृ ३
८
२
९ पृ न
११ शु मे.
स् १ च बु
ग १० श.
१२

पंचांग दिवाकर से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय ज्ञान

विश्व में प्रत्येक स्थान पर एक समय पर सूर्योदय नहीं होता। किसी स्थान का लग्न व इष्ट्यादि बनाने के लिए वहाँ का सूर्योदय का ज्ञान अति आवश्यक है। प्रायः बहुत से लोग अभीष्ट स्थान का सूर्योदय निकालते समय पंचांग में मुद्रित जालन्धर के सूर्योदय काल में केवल रेखान्तर संस्कार करके ही वहाँ का सूर्योदय काल निकाल लेते हैं, जो कि प्रायः स्थूल रहता है। अतः पाठकों की सुविधा के लिए पंचांग दिवाकर में भिन्न-२ अक्षांशों का मध्यम स्थानीय सूर्योदय काल (लोकल मीन टाईम) दिया जा रहा है। इसमें चरान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं। इस में केवल अभिष्ट स्थान का देशान्तर संस्कार ही युक्त-वियुक्त करने से, उस अन्येतर अक्षांश (स्थान) का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड टाईम से निकल आएगा।

जिस शहर का आपको सूर्योदय काल निकालना है। पंचांग दिवाकर में उस शहर का अक्षांश देखो फिर पंचांग दिवाकर पृष्ठ में पृष्ठों पर दिए गए अभीष्ट अक्षांश के नीचे और जिस अंग्रेज़ी तारीख का आपको सूर्योदय निकालना हो उस तारीख के सामने अभीष्ट शहर का मध्यम सूर्योदय काल दिया हुआ है। फिर उस शहर का देशांतर संस्कार दिया हुआ है। उसे + चिन्ह हो तो धन और – चिन्ह हो तो ऋण करने से अभीष्ट शहर का सूर्योदय काल स्टैंडर्ड टाईम में आ जाएगा। इनमें शास्त्रीय संस्कार हेतु २ मिनट और जमा कर लेने चाहिएं।

उदाहरण – जैसे आपको देहली में ८ मार्च का सूर्योदय निकालना है। पंचांग पर देहली का आक्षांश २८।३९ दिया हुआ है। मध्यम सूर्योदय सारणी ८ मार्च के सामने और ३० के नीचे ६।१९ मध्यकालीन सूर्योदय दिया हुआ है। चूंकि देहली का अक्षांश ३० से लगभग डेढ़ अंश कम है अतः इसी तारीख को यदि १० अंश पर ४ मिन्ट का अन्तर पड़ा है तो डेढ़ अंश के होने पर केवल ३६ सैकण्ड का अन्तर रहेगा। जो कि ६।१९ से कम करने पर ६।१८।२४ होगा इसमें पृष्ठ ८९ पर ही लिखे देहली देशान्तर + २१'१८ होने से मध्यम सूर्यकाल में जमा करने से कुल ६ घण्टे ३९ मिन्ट ३२ सैकण्ड अर्थात = ६ बजकर ४० मिन्ट पर सूर्योदय निकल आएगा (३० से अधिक सैकण्ड होने पर १ मिन्ट बढ़ा लेना चाहिए)।

पंचांग परिवर्तन करना

'पंचांग दिवाकर' में तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी-पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से है। यदि आपको जालन्धर के अतिरिक्त किसी अन्य नगर का तिथ्यादि समाप्तिकाल जानना हो तो आप इस पंचांग में निर्दिष्ट अक्षांश रेखांश सारिणी में प्रतिपादित जालंधर से अपने नगर के देशान्तर को (जोकि मिनटों में दिए गए हैं) घड़ी पलादि बनाकर चिन्हानुसार कम या जमा कर लेवें। स्थूलमान से यह आपके नगर का तिथ्यादि होगा। **उदाहरणार्थ** – यदि आपको दिल्ली का तिथि नक्षत्रादि का मान जानना हो तो आपको अक्षांश सारणी में दिल्ली के आगे (जालंधर से रेखांतर) आठ मिनट प्राप्त हुए। जमा चिन्ह होने के कारण आपको जालंधर के तिथि, नक्षत्रादि मान में आठ मिनट अथवा २० पल जमा कर लेने पर, दिल्ली का तिथ्यादि मान प्राप्त हो जायेगा। जैसे पूर्णिमा ४६।५६ घट्यादि में २० पल युक्त करने पर हमें पूर्णिमा तिथि का समाप्तिकाल ४७।१६ घट्यादि होगा।

अक्षांश १९° पलभा ४ ।७ ।५५

बंबई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	०५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीनं	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

उत्तर पलभा १५ ।०५ ।५० लग्न सारिणी लंदन (अक्षांश ५१ ।३०) चरखण्ड, १५१ ।१२० ।५१

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	घ	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
०	प	३८	४२	४६	५१	५५	५९	३	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५४	०	६	१२	१८
वृष	घ	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
१	प	२४	३०	३६	४२	४८	५५	०	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६	३५	४४	५३	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४
मिथुन	घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४
२	प	३३	४२	५२	१	११	१९	२८	३८	५०	२	१५	२७	४०	५२	५	१७	३०	४२	५५	७	२०	३२	४५	५८	१०	२३	३५	४८	०	१३
कर्क	घ	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०
३	प	२५	३८	५०	३	१५	२७	३९	५१	५	१९	३२	४७	१	१५	२९	४३	५३	११	२५	३९	५३	७	२१	३५	४९	३	१७	३१	४५	५९
सिंह	घ	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
४	प	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	५१	९	२३	३७	५१	५	१४	३४	४७	०	१४	२९	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९	३४	३९	५२	६
कन्या	घ	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
५	प	२०	३४	४९	३	१८	३२	४६	०	१४	२८	४२	५७	११	२५	३९	५३	०७	२१	३५	४९	०४	१८	३२	४६	०१	१४	२९	४४	५८	१२
तुला	घ	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२
६	प	२७	४७	५६	१०	२५	३९	५४	९	२३	३७	५१	५	१४	३३	४७	१	१५	२९	४३	५७	११	२५	३९	५३	७	२७	३५	४९	०३	१७
वृश्चि.	घ	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
७	प	३१	४५	५९	१३	२७	४०	५४	९	२१	३४	४६	५९	११	२४	३६	४९	१	१४	२६	३९	५१	४	१६	२४	४१	५४	६	१९	३१	४४
धनु	घ	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३
८	प	५६	९	२१	३४	४६	५६	१०	२२	३७	४०	४९	५८	७	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	४	१८	२२	३२	४१
मकर	घ	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
९	प	५०	५९	८	१७	२७	३६	४५	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	५
कुम्भ	घ	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
१०	प	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५७	१	६	१०	१४	१८	२३	२७	३१	३५	४०	४४	४८	५३	५७	१	५	९	१४	१९	२२	२६
मीन	घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
११	प	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	५९	४	८	१२	१७	२१	२५	२९	३४

उपरोक्त लग्न सारिणी विदेशी नगरों जैसे लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहे, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट ग्रहण करना चाहिए। (श्री S.S. Sharma, Birmingham द्वारा प्रेषित साभार)

अक्षांश २३° पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, होशंगाबाद आदि नगरों लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	३६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५६	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांशा २७° पलभा ६।६।५०

जयपुर, अयोध्या, आगरा, लखनऊ, कानपुर, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव फैजाबाद, फर्रुखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	५	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	२१	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	०१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	०३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	१२	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।३० उत्तर पलभा (७।२१।१४)

अमृतसर, जालन्धर, कांगड़ा, गुरदासपुर, धर्मशाला, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशियारपुर, चम्बा, मण्डी, फिरोज़पुर, लुधियाना, फगवाड़ा आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३
वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९
मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४
कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	००	११	२२	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२१	३३
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	३३	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१८	३०	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८
वृश्चि.	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३७	४९	०१	१२	२२	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५४	०६	१७
धनु	घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३३	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४५	५२	५९	६	१३	१९	२६	३३	४०	४७	५४	००	७	१४	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	००	०	००	००	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४०

लग्न सारणी अक्षांश २९ उ० पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, रोहतक, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाजियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष	घ	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३	प	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिंह	घ	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
४	प	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
कन्या	घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तुला	घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	प	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृश्चिक	घ	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	प	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु	घ	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८	प	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
मकर	घ	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कुम्भ	घ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	[illegible]	[illegible]
मीन	घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारिणी (३०° ।३०')

पलभा ७ ।००

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, देहरादून, नाभा, पटियाला, रोपड़, फाज़िल्का, फरीदकोट इत्यादि ।

अंश		००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	घ.	०२	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६
०	प.	४५	५२	५९	०५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	०६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१
वृष	घ.	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
१	प.	३९	४७	५५	०३	११	१९	२८	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१५
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	२५	३५	४५	५६	०५	१५	२५	३७	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	३०	४२	५४	०५	१६	२७	३९	५०
कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	प.	०२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२१	३३	४५	५७	०९	२१	३३	४५
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५७	०८	२०	३२	४४	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०७	१८	३०	४२	५४	०५	१७	२९	४१	५२	०४	१६	२७	३९	५१	०३	१४	२६	३८
कन्या	घ.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	५०	०१	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
तुला	घ.	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	४२	५३	०५	१७	२६	३९	५२	०५	१७	२९	४०	५२	०४	१७	२८	४०	५१	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७
वृश्चि.	घ.	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	३९	५०	०२	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१९	३०	४२	५४	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४
धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	२६	३७	४९	००	१३	२३	३४	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५४	०४	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२३
मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	३३	४३	५३	०३	१३	२३	३३	४१	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	०६	१४	२२	३०	३८
कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	प.	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	०१	०८	१५	२२	२९	३६	४३	४९	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	०५	१२
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२
११	प.	१९	२६	३३	३९	४६	५३	००	०७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	०४	१०	१७	२४	३१	३८

लग्न सारिणी (आक्षांश ३३° ।१०)

पलभा ८ ।०१

जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डल्हौज़ी आदि ।

अंश		००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	घ.	०२	०२	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६
०	प.	३८	४५	५२	५८	०४	११	१८	२६	३४	४१	४९	५७	०५	१३	२०	२८	३६	४४	५२	५९	०७	१५	२३	३१	३८	४६	५४	०१	१०	१७
वृष	घ.	०६	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१	प.	२५	३३	४४	४९	५६	०४	१२	२२	३२	४१	५१	०१	११	२१	३१	४०	५०	००	१०	२०	३०	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३८	४८	५८
मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
२	प.	०८	१८	२८	३८	४७	५७	०७	१९	३०	४२	५४	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४८	००	१२	२३	३४
कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
३	प.	४७	५८	०९	२१	३३	४४	५६	०८	२०	३२	४५	५७	०९	२१	३३	४५	५७	०९	२२	३४	४५	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५
सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	४७	५९	११	२४	३६	४७	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	२६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६
कन्या	घ.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
५	प.	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६
तुला	घ.	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०
६	प.	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२६	३८	५०	०२	१४	२६	३८	५१	०३	१५	२७	३९
वृश्चि.	घ.	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
७	प.	५१	०३	१५	२८	४०	५२	०४	१६	२७	३९	५१	०२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	०८	२०	३२
धनु	घ.	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१
८	प.	४३	५४	०६	१८	३१	४१	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२१	३१	४१	५२	०१	११	२०	३०	४०	५०	००	१०	१९	२९	३९
मकर	घ.	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	४९	५९	०९	१८	२८	३८	४८	५८	०४	११	१९	२७	३४	४३	५०	५८	०६	१४	२२	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१६	२४	३२	४०	४७
कुम्भ	घ.	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	५५	०३	११	१९	२६	३४	४२	४९	५५	०२	०८	१५	२२	२८	३५	४१	४८	५५	०१	०८	१४	२१	२८	३४	४१	४७	५४	०१	०७	१३
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२
११	प.	२०	२७	३४	४०	४७	५३	००	०७	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	५९	०६	१३	१९	२६	३२	३९	४६	५२	५९	०५	१२	१९	२५	३२

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट

दशमलग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ ।२९९ ।३२३

दशमलग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ ।२९९ ।३२३

अंश	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
मेष	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
१	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
वृष	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	३३	३४	४५
२	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
मिथुन	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
कर्क	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
४	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३
सिंह	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
५	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
कन्या	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	१०	१९	१५	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३
६	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
तुला	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
७	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
वृश्चिक	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
धनु	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
९	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
मकर	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
१०	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
कुम्भ	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
११	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
मीन	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल है। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बुध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि,मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली दृग्बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**—लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो योगफल मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मेष्टकाल २० ।४५ घट्यादि है तथा जालंधर **लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (० ।१२ ।७) द्वारा प्राप्तांक ४ ।९ है, और लग्न सष्ट ४ ।१० ।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४ ।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगांकों को **दशम लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम भाव स्पष्ट** १ ।८ ।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४वे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुन: जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि,** और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।**

—पं. पन्ना लाल ज्यो. एम. ए.

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (+) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर ८२½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (−) का चिन्ह लगा है। वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। जालन्धर के रेखांश से रेखांतर मिनटों सैंकिंडों में है, जो पंचांग परिवर्तनादि कार्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। कृपया ध्यान दें, कि विभिन्न अक्षांशों पर सूर्योदयास्त का अन्तर वर्षभर एक जैसा नहीं रहता। नीचे लिखे नगरों का देशांतर जालन्धर से स्थूल रुपेण ही ग्रहण करें। —गणितकर्त्ता —पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टे. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
अमृतसर	पंजा.	३१ ।३७	७४ ।५५	+ ३० ।२०	+ २
अलीगढ़	उ. प्र.	२७ ।५४	७८ ।०६	+ १७ ।३६	—११
अलीपुर	बंगाल	२२ ।३२	८८ ।२४	—२३ ।३६	—५२
अलाहाबाद	उ. प्र.	२५ ।२८	८१ ।५४	+ ०२ ।२४	—२६
अहमदाबाद	गुज.	२३ ।०३	७२ ।४०	+ ३९ ।२०	+ ११
अहमदनगर	महा.	१९ ।०५	७४ ।४८	+ ३० ।४८	+ ०२
अजमेर	राज.	२६ ।२७	७४ ।४२	+ ३१ ।१२	+ २१
अलमोड़ा	उ. प्र.	२९ ।३७	७९ ।४०	+ ११ ।२०	—१७
अलवर	राज.	२७ ।३४	७६ ।३८	+ २३ ।२८	—०५
अमरावती	महा.	२० ।५६	७७ ।४८	+ १८ ।४८	—१०
अम्बाला	हर.	३० ।२१	७६ ।५२	+ २२ ।३२	—०६
अंबिकापुर	म. प्र.	२३ ।१०	८३ ।१५	— ०३ ।००	—३२
अमेठी	उ. प्र.	२६ ।०८	८१ ।५०	+ ०२ ।४०	—२६
आनन्दपुर	पंजा	३१ ।१५	७६ ।३२	+ २३ ।५२	—०५
अनन्तनाग	काश.	३३ ।४३	७५ ।१७	+ २८ ।५२	—०१
अनूपगढ़	राज.	२९ ।०७	७३ ।०६	+ ३७ ।३६	+ ०९
आज़मगढ़	उ. प्र.	२६ ।०३	८३ ।१३	— ०२ ।५२	—३२
अयोध्या	उ. प्र.	२६ ।४८	८२ ।१४	+ ०१ ।०४	—२८
अबोहर	पंजा.	३० ।०८	७४ ।१२	+ ३३ ।१२	+ ०४
आसनसोल	बंगा.	२३ ।४२	८७ ।०१	— १८ ।०४	—४७
आगरा	उ. प्र.	२७ ।१०	७८ ।०५	+ १७ ।४०	—११
आबू	राज.	२४ ।४०	७२ ।४५	+ ३९ ।००	+ १०
इटावा	उ. प्र.	२६ ।४७	७९ ।०२	+ १३ ।५२	—१५
इम्फाल	मणि.	२४ ।४४	९३ ।५८	—४५ ।५२	—७४
इन्दौर	म.प्र.	२२ ।४४	७५ ।५०	+ २६ ।४०	—०२
इटारसी	म. प्र.	२२ ।३०	७७ ।५५	+ १८ ।२०	—१०
उदयपुर	राज.	२७ ।४२	७५ ।३३	+ २७ ।४८	—०१
उज्जैन	म. प्र.	२३ ।०९	७५ ।४३	+ २७ ।०८	—०२
उन्नाव	उ. प्र.	२६ ।४८	८० ।४३	+ ०७ ।०८	—२२
कला	हि. प्र.	[illegible]	[illegible]	+ २४ ।४८	—०४

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टे. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
ऊधमपुर	ज. का.	३२ ।५५	७५ ।०७	+ २९ ।३२	+ ०१
औरंगाबाद	महा.	१९ ।५३	७५ ।२३	+ २८ ।२८	—०१
कटक	उड़ी.	२० ।२८	८५ ।५४	—१३ ।३६	—४६
कच्छ	गुज.	२२ ।३५	६९ ।४०	+ ५१ ।२०	+ २३
कठुआ	ज. का.	३२ ।१७	७५ ।३६	+ २७ ।३६	—०१
कटनी	म. प्र.	२३ ।४७	८० ।२७	+ ०८ ।१२	—२१
करनाल	हरि.	२९ ।४२	७७ ।०२	+ २१ ।५२	—०७
कलकत्ता	बंगाल	२२ ।३४	८८ ।२४	— २३ ।३६	—५२
कपूरथला	पंजाब	३१ ।२३	७५ ।२५	+ २८ ।२०	—½
कांगड़ा	हि. प्र.	३२ ।०५	७६ ।१८	+ २४ ।४८	—०४
कानपुर	उ. प्र.	२६ ।२८	८० ।२४	+ ०८ ।२४	—२०
कालका	हरि.	३० ।४९	७६ ।५७	+ २२ ।१२	—३
कुल्लू	हि. प्र.	३१ ।५८	७७ ।१०	+ २१ ।२०	—७
कुरुक्षेत्र	हरि.	२९ ।५९	७६ ।४८	+ २२ ।४८	—०६
करतारपुर	पंजा.	३१ ।२७	७५ ।३२	+ २७ ।५२	—०१
कैथल	हर.	२९ ।४८	७६ ।२६	+ २४ ।१६	—०४
कोल्हापुर	महा.	१६ ।४२	७४ ।१६	+ ३२ ।५६	+ ०४
कोटखाई	हि. प्र.	३१ ।०८	७७ ।३६	+ १९ ।३६	—०९
कन्नौज	उ. प्र.	२७ ।०३	७९ ।५८	+ ०९ ।२८	—१९
कोटा	राज.	२५ ।१०	७५ ।५२	+ २६ ।३२	—०२
खत्रा	पंजा..	३० ।४२	७६ ।१३	+ २५ ।०८	—४
खुरजा	उ. प्र.	२८ ।१५	७७ ।५०	+ १८ ।४०	—१०
खण्डवा	म. प्र.	२१ ।५०	७८ ।०७	+ २४ ।२८	—११
गढ़वाल	उ. प्र.	३० ।१५	७९ ।३०	+ १२ ।००	—१७
गया	विहार	२४ ।४९	८५ ।०१	— १० ।०४	—३९
ग्वालियर	म. प्र.	२६ ।१४	७८ ।१०	+ १७ ।२०	—११
गिलगित	ज. का.	३५ ।५५	७४ ।२२	+ ३२ ।३२	+ ०४
गुरदासपुर	पंजा.	३२ ।०३	७५ ।२७	+ २८ ।१२	—०१
गुड़गांव	हर.	२८ ।२९	७७ ।०४	+ २१ ।४४	—०७
गोरखपुर	उ. प्र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टे. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
गंगानगर	राज.	२९ ।४९	७३ ।५०	+ ३४ ।४०	+ ०६
गोंडा	उ. प्र.	२७ ।२८	८२ ।०१	+ ०१ ।५६	—२७
गढ़शंकर	पंजा.	३१ ।१३	७६ ।११	+ २५ ।१६	—०४
गाजियाबाद	उ. प्र.	२८ ।४०	७७ ।२८	+ २० ।०८	—०९
गुलमर्ग	ज. का.	३४ ।१५	७४ ।२५	+ ३२ ।२०	—०४
गुजरांवाला	पाक.	३२ ।१०	७४ ।१४	+ ३३ ।०४	+ ०४
गोवा	भारत	१५ ।२७	७३ ।५९	+ ३४ ।०४	+ ०५
गोलकुण्डा	हैदरा.	१७ ।४७	८२ ।२०	+ ० ।३९	—२९
चम्बा	हि. प्र.	३२ ।३०	७६ ।१०	+ २५ ।२०	—०३
चित्तौड़गढ़	राज.	२४ ।५४	७४ ।४२	+ ३१ ।१२	+ ०२
चंडीगढ़	के. प्र.	३० ।४४	७६ ।५३	+ २२ ।२८	—०६
चन्दौसी	उ. प्र.	२८ ।२७	७८ ।४९	+ १४ ।४४	—१४
चिरापूञ्जी	आसा.	२५ ।१७	९१ ।४७	— ३७ ।०८	—६५
जालंधर	पंजाब	३१ ।१९	७५ ।२४	+ २८ ।२४	+ ००
जम्मू	ज. का.	३२ ।४३	७४ ।५४	+ ३० ।२४	+ ०२
जौनपुर	उ. प्र.	२५ ।४६	८२ ।४४	—०० ।५६	—३०
जैसलमेर	राज.	२६ ।५५	७० ।५४	+ ४६ ।२४	+ १८
जयपुर	राज.	२६ ।५५	७५ ।५२	+ २६ ।३२	—०२
जीन्द	हरिया.	२९ ।१९	७६ ।२१	+ २४ ।३६	—०४
जण्डियाला	पंजाब	३१ ।५१	७५ ।३७	+ २७ ।३२	— ०१
जमशेदपुर	बिहा.	२२ ।५०	८६ ।१०	—१४ ।४०	— ४३
जामनगर	गुज.	२२ ।२७	७० ।०५	+ ४९ ।४०	—२१
जोगिन्द्रनगर	हि. प्र.	३१ ।५८	७६ ।४५	+ २३ ।००	— ०६
जोध पुर	राज.	२६ ।१८	७३ ।०४	+ ३७ ।४४	—०९
जबलपुर	म. प्र.	२३ ।१०	७९ ।५९	+ १० ।०४	+ १९
जलगांव	गुज.	२२ ।२७	७५ ।४०	+ २७ ।२०	+ ०२
झांसी	म. प्र.	२५ ।२७	७८ ।३७	+ १५ ।३२	+ १३
झरिया	बिहा.	२३ ।५०	८६ ।३३	—२६ ।१२	— ४५
झंग	पाक.	३१ ।२८	७१ ।१९	+ ४४ ।४४	—१६
टाटा नगर	बिहार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टे. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
डलहौजी	हि. प्र.	३२ ।३१	७६ ।००	+ २६ ।००	— ०३
फाजिल्का	पंजा.	३० ।२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
राजकोट	गुज.	२२ ।१८	७० ।५६	+ ४६ ।१६	+ १७

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टै. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
डलहौजी	हि. प्र.	३२।३१	७६।००	+ २६।००	— ०३
डिब्रूगढ़	आसा.	२७।२९	९४।५८	—४९।५२	+ ७९
तिरुपति	आ. प्र.	१३।४०	७९।२०	+ १२।४०	+ १६
दिल्ली	के. प्र.	२८।३९	७७।१२	+ २१।१२	—०८
देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।०४	+ १७।४४	+ ११
दसूहा	पंजा.	३१।४९	७५।३९	+ २७।२४	+ ०२
दार्जिलिंग	बंगाल	२७।०३	८८।१८	—२३।१२	— ५२
दीनानगर	पंजा.	३२।०८	७५।३१	+ २७।५६	+ ०१
दुर्गापुर	बंगाल	२३।३०	८७।२०	—१९।२०	—४८
द्वारिका	गुज.	२२।१४	६९।०१	— ५३।५६	—२५
धनबाद	बिहा.	२३।४७	८६।३०	—१६।००	—४५
धर्मशाला	हि. प्र.	३२।१६	७६।२३	+ २४।२८	—०४
नागौर	राज.	२७।११	७३।४०	+ ३५।२०	+ ०६
नाभा	पंजा.	३०।२५	७६।०९	+ २५।२४	—०३
नागपुर	म. प्र	२१।०९	७९।०९	+ १३।२४	—१५
नाहन	हि. प्र.	३०।३३	७७।२१	+ २०।३६	—०८
नैनीताल	उ. प्र.	२९।२३	७९।३०	+ १२।००	—१७
नालागढ़	हि. प्र.	३०।५७	७६।२२	+ २४।३२	— ०४
नवलगढ़	राज.	२२।५१	७५।१८	+ २८।४८	+ ०४
नासिक	महा.	२०।०२	७३।५०	+ ३४।४०	+ ०६
नंगल	पंजा.	३१।२३	७६।२३	+ २४।२८	—०४
नवांशहर	पंजा.	३१।०७	७६।०८	+ २५।२८	—०३
पठानकोट	पंजा.	३२।१७	७५।४२	+ २७।१२	—०२
पटियाला	पंजाब	३०।२०	७६।२५	+ २४।२०	—०४
पानीपत	हरिय.	२९।२३	७७।०१	+ २१।५६	—०७
प्रतापगढ़	राज.	२४।०२	७४।४०	+ ३१।२०	+ ०३
पटना	बिहा.	२५।३७	८५।१३	—१०।५२	—४०
पीलीभीत	उ. प्र.	२८।३८	७९।५१	+ १०।३६	—१८
पोरबन्दर	गुज.	२१।३७	६९।४९	+ ५०।४४	— २२
पुंछ	ज. का.	३३।५१	७४।०८	+ ३३।२८	+ ०५
पूना	महा.	१८।३१	७३।५५	+ २४।२०	+ ०६
प्रयाग	उ. प्र.	२५।३०	८१।५६	+ ०२।१६	— २७
फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।४०	+ ११।२०	—१७
फगवाड़ा	पंजा.	३१।१३	७५।४७	+ २६।५२	—११½
फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।१२	+ ०१।१२	—२८
फरीदाबाद	हरिया.	२८।२५	७७।२२	+ २०।३२	—०८
फरीदकोट	पंजा.	३०।४०	७४।५७	+ ३०।१२	+ ०१
फतेहाबाद	हरिया.	२९।३१	७५।३०	+ २८।००	—०१

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टै. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
फाजिल्का	पंजा.	३०।२४	७४।०४	+ ३३।४४	+ ०५
फिरोजपुर	पंजा.	३०।५५	७४।४०	+ ३१।२०	+ ०२
बटाला	पंजा.	३१।४९	७५।१४	+ २९।०४	+ १
बम्बई	महा.	१८।५७	७२।५४	+ ३८।२४	+ १०
बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३२	+ ४१।५२	—१७
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३८	+ १९।२८	—०९
बरेली	उ. प्र.	२८।२२	७९।२७	+ १२।१२	—१७
बड़ौदा	गुज.	२२।००	७३।१४	+ ३७।०४	— ०८
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	+ १७।१६	—१२
बीकानेर	राज.	२८।०१	७३।२२	+ ३६।३२	+ ०८
बिलासपुर	हि. प्र.	३१।१९	७६।५०	+ २२।४०	—०७
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५४	+ १८।२४	—१०
बनारस	उ. प्र.	२५।२०	८३।००	—०२।००	—३१
भटिंडा	पंजाब	३०।११	७५।००	+ ३०।००	—०२
भरतपुर	राज.	२७।१५	७७।३०	+ २०।००	—०८
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।३६	+ १९।३६	—०९
भिवानी	हर.	२८।४६	७६।१८	+ २४।४८	—०४
मलेरकोटला	पंजा.	३०।३१	७५।५९	+ २६।०४	+ ०३
मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	+ २२।०८	—०६
मेरठ	उ. प्र.	२९।०१	७७।४५	+ १९।००	—०९
मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	—००।२८	—२९
मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५१	७८।४९	+ १४।४४	—१४
मुगलसराय	उ. प्र.	२५।१७	८३।११	—०२।४४	—३२
मंसूरी	उ. प्र.	३०।२७	७८।०६	+ १७।३६	—११
मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	+ १९।१६	—१०
मुलतान	पाक.	३०।११	७१।२९	+ ४४।०४	+ १५
मैसूर	कर्ना.	१२।१८	७६।४२	+ २३।१२	— ०६
मोगा	पंजा.	३०।४८	७५।१०	+ २९।२०	+ ०१
मद्रास	दक्षि.	१३।०४	८०।१७	+ ०८।५२	—२०
रामपुर	उ. प्र.	२८।४८	७९।०५	+ १३।४०	—१५
रामपुर बुशै.	हि.प्र.	३१।२८	७७।३९	+ १९।२४	—०८
रतलाम	म. प्र.	२३।३१	७५।०७	+ २९।३२	+ ०१
रायबरेली	उ. प्र.	२६।१४	८१।१६	+ ०८।५६	—२४
रांची	बिहा.	२३।२३	८५।२३	—११।३२	—४०
रिवाड़ी	हर.	२८।१२	७६।४०	+ २३।२०	—०५
रोहतक	हर.	२८।५४	७६।३८	+ २३।२८	—०५
रोपड़	पंजा.	३०।५७	७६।३२	+ २३।५२	—०५
रावलपिंडी	पाक.	३३।३६	७३।०४	+ ३७।४४	+ ०९

नाम नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश	स्टै. अंतर	देशान्तर
		अ. क.	अ. क.	मि. सैं.	मिनट
राजकोट	गुज.	२२।१८	७०।५६	+ ४६।१६	+ १७
रामेश्वरम्	दक्षि.	९।१७	७९।२२	+ १२।३२	—५१
रायपुर	म. प्र.	२१।१५	८१।४१	+ १३।१६	—३२
लुधियाना	पंजा.	३०।५५	७५।५४	+ २६।२४	—२
लखनऊ	यू. पी.	२६।५५	८०।५९	+ ६।०४	—२३
लद्दाख (रैंज)	काश.	३२।००	८०।००	+ १०।००	—१९
लायलपुर	पाक.	३१।४४	७३।०५	+ ३७।४०	+ ०९
लाहौर	पाक.	३१।३५	७४।१८	+ ३२।४८	+ ०४
वृन्दावन	उ. प्र.	२७।३३	७७।४४	+ १९।०४	—१०
श्रीनगर	काश.	३४।०६	७४।५१	+ ३०।३६	+ २
श्री गंगानगर	राज.	२९।४९	७३।५०	+ ३४।४०	+ ०६
शिमला	हि. प्र.	३१।०६	७७।१३	+ २१।०८	—७१⁄२
शाहबाद	हर	३०।१०	७६।५५	+ २२।२०	—०६
शाहदरा	दिल्ली	२८।४०	७७।२०	+ २०।४०	—०८
शाहजहांपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	+ १०।१२	—१९
शोलापुर	महा.	१७।४०	७५।५६	+ २६।१६	+ ०३
शिलांग	आसा.	२५।३४	९१।५६	—३७।४४	—६६⁄३२
सीतापुर	उ. प्र.	२७।२६	८०।४३	+ ०७।०८	—२१
सहारनपुर	उ. प्र.	२९।५८	७७।२३	+ २०।२८	—०८
संगरूर	पंजा.	३०।१२	७५।५३	+ २६।२८	+ ०२
सरहिन्द	पंजा.	३०।३८	७६।२९	+ २४।०४	+ ०५
सोलन	हि. प्र.	३०।५५	७७।०९	+ २१।२४	—०७
सोनीपत	महा.	१९।०६	७६।३०	+ २४।००	—०४
सुलतानपुर	पंजा.	३१।५८	७७।०७	+ २१।३२	— ०७
सूरत	गुज.	२१।१२	७२।५२	+ ३८।३२	+ १०
सुंदरनगर	हि. प्र.	३१।३३	७६।५४	+ २२।२४	—०६
सरकाघाट	हि. प्र.	३१।४३	७६।२२	+ २४।३२	—०४
सागर	म. प्र.	२३।५०	७८।४५	+ १३।४८	—१५
होशियारपुर	पंजा.	३१।३२	७५।५७	+ २६।१२	—०३
हांसी	हर.	२९।०६	७६।००	+ २६।००	—०३
हनुमानगढ़	राज.	२९।३५	७४।२१	+ ३२।३६	+ ०४
हमीरपुर	हि. प्र.	३१।४२	७६।३०	+ २४।००	—०४
हरिद्वार	उ. प्र.	२९।५८	७८।१३	+ १७।०८	—११
हिसार	हर.	२९।१०	७५।४६	+ २६।५६	—०२
हैदराबाद	आ. प्र.	१७।२०	७८।३०	+ १६।००	—१३
हाथरस	उ. प्र.	२७।३६	७८।०६	+ १७।३६	—११
हावड़ा	बंगा.	२२।३५	८८।२३	—२३।३२	+ ५२
त्रिपुरा	बंगा.	२३।४५	९१।३०	—३६।००	— ६५

विश्व के मुख्य देशों का भारतीय स्टै. टाईम से स्टैंडर्ड अन्तर

नीचे लिखे गए (−) चिन्ह वाले देशों का समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले देशों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इग्लैंड (लंदन) के आगे −(५।३० घण्टे मिंट) लिखे है, इसका भाव यह हुआ कि यदि भारत में दोपहर के बारह १२ बजे होंगे तो उस वक्त इग्लैण्ड में प्रातः के ६।३० (साढ़े छः) बजे होंगे। इसी भांति न्यूयार्क (अमरीका) के आगे −(१०।३० घ.० मिंट) होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहाँ साढ़े दस घंटे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ ११।३० बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय पर अलग-अलग स्टैंडर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टन टाईम (Eastern Time), सैंट्रल टाईम (Central Time) माउन्टेन टाईम, पैसेफिक टाइम इत्यादि। यह सब स्टै० टाईम अलग-अलग रेखाओं पर आधारित होते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम ७५° रेखांश सैंट्रल टाईम ९० रेखांश पर माउन्टेन टाईम १०५ पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनाडा में किसी नगर का भारत से वास्तविक स्टैंडर्ड अन्तर जानने के लिए वहाँ के स्थानिक निर्धारक स्टै० रेखांशादि का ज्ञान होना आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमेरिका, कैनाडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time या Summer Time) का अवलोकन किया जाता है जोकि प्रायः अप्रैल के अंतिम रविवार से अक्तूबर के अंतिम रविवार तक होता है। इन दिनों देश की घड़िया एक घण्टा आगे कर दी जाती है। अतएव इस अवधि में उपरोक्त देशों के स्टै० टाईम से एक घण्टे का अन्तर पड़ जाएगा।

नाम देश	अक्षांश	रेखांश	अन्तर घ.मि.
*अमेरिका			
न्यूयार्क	४०।४३ उ.	७४।०१ प.	−(१०।३०)
वाशिंगटन	३८।५५ उ.	७७।०४ प.	−(१०।३०)
कोलम्बस	३२।२८ उ.	८४।५९ प.	−(१०।३०)
न्यूजर्सी	४०।४३ उ.	७४।०९ प.	−(१०।३०)
आक्सफोर्ड	३४।२२ उ.	८९।३२ प.	−(११।३०)
कोलम्बिया	३८।५७ उ.	९२।२० प.	−(११।३०)
शिकागो	४१।५३ उ.	८७।३८ प.	−(११।३०)
मैक्सीको	१९।२६ उ.	९९।०७ प.	−(११।३०)
लासएंजलस	३४।०३ उ.	११८।१७ प.	−(१२।३०)
सानफ्रांसिस्को	३७।४८ उ.	१२२।२५ प.	−(१३।३०)
कैलीफोर्निया	४०।०० उ.	१२०।०० प.	−(१३।३०)
अंगोला (लुआंडा)	८।५० द.	१३।१४ प.	−(४।३०)
अफगानिस्तान (काबुल)	३४।३० उ.	६९।१८ प.	−(१।००)
अल्जीरिया (अल्जीयर्स)	३६।५० उ.	३।०० प.	−(४।३०)
अर्जन्टीना (ब्यूनेस)	३४।३५ द.	५८।२१ प.	−(८।३०)
आस्ट्रिया (वीयाना)	४८।१२ उ.	१६।२२ प.	−(४।३०)
आयरलैण्ड (डब्लिन)	५३।२३ उ.	६।२० प.	−(५।३०)
आस्ट्रेलिया (कैन्बरा)	३५।१७ द.	१४९।१८ प.	+(४।३०)
आस्ट्रेलिया द. (डर्बिन)	१२।३० द.	१३१।०० प.	+(४।००)
इंडोनेशिया (जकार्ता)	६।१० द.	१०६।४८ प.	+(१।३०)
इंगलैंड (लन्दन)	५१।३० उ.	००।१४ प.	−(५।३०)
(बर्मिंघम)	५२।३० उ.	१।५० प.	−(५।३०)
साउथैम्पटन	५०।५४ उ.	१।२४ प.	−(५।३०)
आक्सफोर्ड	५१।४६ उ.	१।१५ प.	−(५।३०)
मानचेस्टर	५३।२८ उ.	२।१२ प.	−(५।३०)
इटली (रोम)	४१।५५ उ.	१२।२८ प.	−(४।३०)
इराक (बगदाद)	३३।१८ उ.	४४।३० प.	−(२।३०)
ईरान (तेहरान)	३५।४० उ.	५१।५६ प.	−(२।००)
इसरायल (जेरुसलम)	३१।४६ उ.	३५।१४ प.	−(३।३०)
इथोपिया (एडिस)	९।०२ उ.	३८।४६ प.	−(२।३०)
ईजिप्ट मिस्र (काहिरा)	३०।०८ उ.	३१।३४ प.	−(३।३०)
ओमान (मस्कट)	२३।३६ उ.	५८।३६ प.	−(१।३०)
कम्बोडिया (कम्पूचिया)	११।३५ उ.	१०४।५७ प.	+(१।३०)
कीनिया (नैरोबी)	१।२० द.	३६।४९ प.	−(२।३०)
कैनडा (टोरंटो)	४३।३९ उ.	७९।२३ प.	−(१०।३०)

नाम देश	अक्षांश	रेखांश	अन्तर घ.मि.
मौंट्रियाल	४५।३० उ.	७३।३४ प.	−(१०।३०)
ओटावा	४५।२५ उ.	७५।४२ प.	−(१०।३०)
विक्टोरिया	७१।०० उ.	११२।०० प.	−(१२।३०)
वैनकोवर	४९।१७ उ.	१२३।०५ प.	−१३।३०)
कालगेरी	५१।०३ उ.	११४।०३ प.	−१३।३०)
कोलंबिया (बगोटा)	४।४५ उ.	७४।२१ प.	−(१०।३०)
कुवैत (कुवैत)	२९।३० उ.	४८।०२ प.	−(२।३०)
कोरिया (द.) (सियोल)	३७।३४ उ.	१२६।५८ पू.	+(३।३०)
कोरिया (उ.) (पियांगयांग)	३८।५५ उ.	१२५।४४ पू.	+३।३०
क्यूबा, कोरिया (हवाना)	२२।५७ उ.	८२।१४ प.	−(१०।३०)
ग्रीस (अथीस)	३८।१० उ.	२३।५५ पू.	−(३।३०)
चीन (पीकिंग)	३९।५५ उ.	११६।२५ पू.	+(२।३०)
चैकोस्लवाकिया (प्राग)	५०।०५ उ.	१४।२५ पू.	−(४।३०)
जर्मनी (पू.) बर्लिन	५२।३२ उ.	१३।२५ पू.	−(४।३०)
जर्मनी (प.) बोन	५०।४३ उ.	७।०४ पू.	−(४।३०)
जांबिया गणतंत्र (लुसाका)	१७।३० द.	२४।०० पू.	−(३।३०)
जापान (टोकियो)	३५।४२ उ.	१३९।४६ पू.	+३।३०
जार्डन (अम्मन)	३१।५७ उ.	३५।५६ पू.	−३।३०
तन्जानियां (दारेस्लाम)	६।५० द.	३९।१७ पू.	−(२।३०)
डैन्मार्क (कोपनहेगन)	५५।४० उ.	१२।३० पू.	−(४।३०)
टर्की (आकारा)	३९।५७ उ.	३२।५४ पू.	−(३।३०)
थाईलैण्ड (बैंकाक)	१३।४३ उ.	१००।३१ पू.	+(१।३०)
दक्षिणी अफ्रीका (प्रिटोरिया)	२५।४५ द.	२८।१५ पू.	−(३।३०)
नाइजीरिया (लागोस)	६।२५ उ.	३।२७ पू.	(−४।३०)
न्यूजीलैंड (वैलिंगटन)	४१।१६ द.	१७४।४७ पू.	+(६।३०)
नेपाल (काठमाण्डु)	२७।४२ उ.	८५।१९ पू.	+(०।००)
नीदरलैंड (एमस्टरडम)	५२।२३ उ.	४।५३ प.	−(४।३०)
नौर्वे (ओस्लो)	५९।५४ उ.	१०।४५ पू.	−(४।३०)
कतर (अरब)	२५।२९ उ.	५१।१० पू.	−(२।३०)
पाकिस्तान (इस्लामाबाद)	३३।४० उ.	७३।०४ पू.	−(०।३०)
पुर्तगाल (लिस्बन)	३८।४४ उ.	९।०९ प.	−(४।३०)
पोलैण्ड (वार्सा)	५२।१२ उ.	२१।०० प.	−(४।३०)
फ्रांस (पेरिस),	४८।५० उ.	२।२० पू.	−(४।३०)
फिजी (फिजी)	१८।०० द.	१७५।०० पू.	+(६।३०)
फिनलैंड (हैल्सिंकी)	६०।०९ उ.	२४।५७ प.	−(३।३०)
फिलीपाइन्स (मनीला)	१४।३० उ.	१२१।३० प.	+(२।३०)

नाम देश	अक्षांश	रेखांश	अन्तर घ.मि.
बल्गेरिया (सोफिया)	४२।४० उ.	२३।२० पू.	−(३।३०)
बर्मा (रंगून)	१६।४५ उ.	९६।१३ पू.	+(१।००)
बहरीन (अरब)	२६।०० उ.	५०।३५ पू.	−(२।३०)
बंगलादेश (ढाका)	२३।४२ उ.	९०।२५ पू.	+(०।३०)
ब्राजील (रायोडी जैनरो)	२२।५५ द.	४३।१२ प.	−(८।३०)
बैल्जियम (ब्रसेल्स)	५०।५२ उ.	४।२२ पू.	−(४।३०)
भूटान (थिंपू)	२७।३२ उ.	८९।५३ पू.	+(००)
मलेशिया (कुआलमपुर)	३।०७ उ.	१०१।४० पू.	+(२।००)
मंगोलिया (बातौर)	४७।५९ उ.	१०६।५२ पू.	+(१।३०)
मैक्सीको (मैक्सिको)	१९।२४	९९।१२ पू.	−(११।३०)
मारीशस (पोर्टलुइस)			−(१।३०)
मस्कट ओमान (See Oman)			−(१।३०)
युगाण्डा (कम्पाला)	०।१८ उ.	३२।३५ पू.	−(२।३०)
युगोस्लाविया (बेलग्रेड)	४४।५० उ.	२०।३० पू.	−(४।३०)
रूस (मास्को)	५५।४५ उ.	३७।३७ पू.	−(२।३०)
रोडेशिया (सेल्सबरी)	१७।५४ द.	३१।३० पू.	−(३।३०)
रोमानिया (बुखारेस्ट)	४८।००	२५।३० पू.	−(३।३०)
लाओस (लुआंग)	१९।५५ उ.	१०२।०५ पू.	+१।३०
लीबिया (ट्रिपोली)	३२।४५ उ.	१३।१५ पू.	−(३।३०)
लैबनान (बैरूत)	३३।५० उ.	३५।२५ पू.	−(३।३०)
उत्तर वियतनाम (हनोई)	२१।०२ उ.	१०५।२२ पू.	+(१।३०)
दक्षिण वियतनाम (हनोई)			+(२।३०)
श्रीलंका (कोलम्बो)	६।५६ उ.	७९।५१ पू.	(०।००)
संयुक्त अरब (अमिरात)			−(१।३०)
सऊदी अरब (मक्का)	२१।२५ उ.	३९।५४ पू.	−(२।३०)
सिंगापुर (सिंगापुर)	१।१६ उ.	१०३।४७ पू.	+(२।००)
साइप्रस (निकोसिया)	३५।१० उ.	३३।२३ पू.	−(३।३०)
सीरिया (दमास्कस)	३३।३० उ.	३६।१४ पू.	−(३।३०)
सूडान (खार्टोम)	१५।३५ उ.	३२।३५ पू.	−(३।३०)
स्पेन (जिब्राल्टर)	३६।११ उ.	५।२२ प.	−(४।३०)
स्वीडन (स्टाकहोम)	५९।२० उ.	१८।०० पू.	−(४।३०)
स्विट्जरलैंड (बर्न)	४६।५५ उ.	७।३० पू.	−(४।३०)
सिक्किम	२७।२९ उ.	८८।३० पू.	+(०।००)
हंगरी (बुडापेस्ट)	४७।२९ उ.	१९।०३ पू.	−(४।३०)
हांगकांग (हांगकांग)	२२।११ उ.	११४।१२ प.	+(२।३०)
हालैण्ड (एमस्टरडम)	५२।२१ उ.	४।५३	−(४।३०)

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लड़के या लड़की की जन्म कुण्डली में यदि पहले, चौथे, सातवें आठवें या बारहवें भाव में मंगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि वर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि--

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोश शान्त हो जाता है--

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते।।

(२) बली गुरू शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कु. में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कु. में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता--

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत्।

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हो तो भौम दोष नहीं रहता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्युने मृगे कर्किचाष्टौ दोषो न विद्यते।।

(५) न मंगली चन्द्रे भृगु न मंगली पश्यति यस्य जीव।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मंगल-राहु योगो।।

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मंगल-गुरू की युति हो या गुरू पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक से)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोष नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति।।

--अर्थात् वर की कु. में छठे भाव में मंगल, सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो ना विद्यते।।

--अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हो तो भौम दोष का विचार नहीं करना चाहिए।

(१०) वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता। शुभचिन्तक पन्नालाल ज्यो, एम.ए.

विवाह सम्बन्धी प्रश्न

(i) यदि प्रश्न कुण्डली में भाग्येश सप्तम स्थान में और सप्तमेश भाग्य स्थान में हो। अथवा सप्तमेश शुक्र भाग्य स्थान में हो, या भाग्येश शुक्र सप्तम, दूसरे, चतुर्थ, या लग्न में निर्दोष होकर बैठा हो तो विवाह अवश्य होता है।

(ii) प्रश्न लग्न से सम स्थान (२,४,६,८,१०,१२) में शनि हो तो वर को लाभ नहीं होगा। इसके विपरीत विषम स्थान में शनि हो तो स्त्री को वर लाभ होगा।

(iii) यदि प्रश्न लग्न से तीसरे, पाँचवें, छठे, सातवें अथवा ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो और उसके ऊपर गुरु, सूर्य या बुध की दृष्टि हो तो विवाह अवश्य होगा।

(iv) अथवा पाँचवें, नवें और केन्द्र स्थानों में शुभ ग्रह हों तो भी विवाह अवश्य होगा--ऐसा कहना चाहिए।

(v) यदि प्रश्न कु. में शुक्र चन्द्रमा पापी ग्रहों से युक्त होकर सप्तम भाव में शनि से दृष्ट हों, सप्तमेश नीचास्त हो या चन्द्रमा पाप युक्त १,४,५,८,९,१२वें) भाव में बैठा हो तो विवाह नहीं होता अथवा अनेक बाधाओं के पश्चात् होता है।

गर्भ से लड़का होगा या लड़की

(i) प्रश्नकाल में यदि शनि लग्न को छोड़ कर विषम स्थान (३,५,७,९,११) में बली होकर स्थित हो तो गर्भवती स्त्री को पुत्र उत्पन्न होगा और निर्बली होकर समस्थान (२,४,६,८,१०) में स्थित हो तो कन्या उत्पन्न होती है।

(ii) प्रश्न कुण्डली में यदि (१,३,५,७,९) वें स्थान पर पुरुष ग्रह बलवान होकर स्थित हों, तो पुत्र-लाभ और स्त्री ग्रहों के बलवान होने पर कन्या का जन्म होता है। इन स्थानों में शनि विशेषतः पुत्र-दायक होता है।

(iii) लग्नमेश व पंचमेश, पुरुष राशियों पर पुत्र कारक और स्त्री राशियों पर कन्या दायक होते हैं। यदि लग्नेश पुरुष राशि में बैठ कर पंचम भाव को देखता हो या पचंमस्थ राहु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो भी गर्भवती की पुत्रोत्पन्न होता है।

हस्त रेखाओं एवं चिन्हों द्वारा भविष्य ज्ञान

हाथ की रेखाएं किसी भी पुरुष एवं स्त्री के अन्तर्मन की भावनाओं, व्यक्तित्व, एवं प्रवृत्तियों की प्रबल सूचक होती हैं। जिस प्रकार एक कुशल हकीम या डाक्टर शारीरिक चिन्ह देखकर रोगजान लेता है, उसी भांति एक अनुभवी हस्तरेखा विशेषज्ञ हाथ की लकीरों और चिन्हों द्वारा किसी मनुष्य की आन्तरिक अभिरुचियों तथा जीवन के कार्य–व्यवहारों के भूत, भविष्य और वर्तमान को जान सकता है। मनुष्य के दोनों हाथ एक दूसरे से पृथक होते हैं। अतः स्त्री या पुरुष के दोनों हाथों का सूक्ष्म एवं तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् ही फल कहना चाहिये।

रेखाएं सदा एक सामान नहीं बनी रहती, बल्कि समय, अवस्था एवं वातावरणादि के प्रभाव–स्वरूप उनमें परिवर्तन होता रहता है। अतः मनोवैज्ञानक दृष्टिकोण अपनाकर सर्वांगरूपेण विश्लेषण के उपरान्त ही भविष्य फल कहना चाहिये। अन्यथा गलत होने की संभावना बनी रहेगी। किसी भी रेखा का स्पष्ट, सुन्दर दीर्घ व चमकदार होना शुभ माना गया है जबकि धुंधली, अस्पष्ट या टूटी हुई रेखाएंविपरीत–फल प्रदान करती हैं। हाथ में पाई जाने वाली मुख्य रेखाएं इस प्रकार हैं–

जीवन रेखा (Life line), मस्तक रेखा (Head line), हृदय रेखा (Heart line), भाग्य रेखा, सूर्य रेखा, विवाह रेखा, स्वास्थ्य रेखा आदि अनेक मुख्य एवं गौण रेखाएं मिलती हैं।

जीवन रेखा (Life Line). यह रेखा अंगूठे और तर्जनी के मध्य से निकलकर शुक्र पर्वत को घेरती हुई मणिबन्ध की ओर जाती है। कार्तिकेय(भारतीय मतानुसार) इसका उद्गम मणिबंध की ओर से होकर तर्जनी और अंगूठे के मध्य भाग में समाप्ति होती है। परन्तु दोनों मतों से इस रेखा द्वारा मनुष्य की आयु का मान, दैहिक सुख, रोग एवं जीवन शक्ति का ज्ञान किया जाता है। स्वस्थ दीर्घायु जीवन के लिए इस रेखा का स्पष्ट, गहरी, बिनाकटी व भली प्रकार विस्तार लिए हुये होना आवश्यक है। स्वाभाविक हल्का लाल अथवा गुलाबी रंग शुभत्व एवं अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करता है। यदि दोनों हाथों में जीवन रेखा एक ही स्थान पर अचानक समाप्त हो जाए, तो आकस्मिक मृत्यु भय स्पष्ट होता है। उस काल में आकस्मिक गंभीर व्याधि या दुर्घटना भी हो सकती है। यदि हथेली में अन्य शुभ चिन्ह विद्यमान हों तो उस अवस्था में मृत्यु नहीं होगी, बल्कि मृत्यु तुल्य कष्ट होगा।

यदि जीवन रेखा के साथ–साथ कोई दूसरी समान रेखा चलती दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, उच्च पदाधिकारी, शौभाग्य शाली और राज सुख प्राप्त करता है।

यदि शुक्र पर्वत्तन से निकल कर बहुत सी लघु रेखाएं जीवन रेखा को काटें तो जिस स्थान पर काटें उस उस आयु मे कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति नाजुक मिजाज और शीघ क्रोधित हो जाने वाला होगा।

यदि जीवन रेखा जंजीरनुमा छोटे–छोटे टुकड़ों से विक्षत हो और हथेली कोमल हो तो ऐसे व्यक्ति या स्त्री का स्वास्थ्य खराब रहता है। यदि आगे चल कर सुन्दर, स्पष्ट हो जाये तो स्वास्थ्य पुनः ठीक हो जाता है।

यदि यह रेखा प्रारम्भ में ही दो तीन भागों में(बहुजिह्वा) बंटी हो अथवा इस रेखा पर किसी प्रकार के द्वीप, नक्षत्र या तिलादि का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित और अपव्ययी होता है।

मस्तिक रेखा- यह रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे तथा जीवन रेखा के ऊपर से निकल कर चन्द्र अथवा राहु क्षेत्र की ओर जाती है। इससे मनुष्य के मस्तिष्क बुद्धि एवं विचार शक्ति का ज्ञान किया जाता है। यदि यह रेखा हथेली में स्पष्ट, बलवान सुन्दर और लम्बी हो तो जातक धनवान, विद्वान् विचारशील और बुद्धिमान होता है। उसे मातृ सुख अच्छा मिलता है।

यदि मस्तिष्क रेखा का उद्गम गुरू के पर्वत से होता हुआ, इसका मेल जीवन रेखा से हो जाये तो ऐसा व्यक्ति कुशल शासक होता है तथा उसमें अधिकार प्राप्त करने की इच्छा होगी वह अवसरवादी, सतर्क, और बुद्धिमान होते हैं।

यदि किसी हाथ में मस्तिष्क रेखा छोटी हो, तो उस व्यक्ति में बुद्धि की कमी होती है। यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत की ओर झुकी हो तो मनुष्य कला, काव्य लेखन और साहित्यिक क्षेत्र में विशेष रूचि रखता है। यदि यह रेखा अधिक ज्यादा झुकी हुई हो तो व्यक्ति व्यवहारिक कम और कल्पनाशील अधिक होता है। यदि मस्तिष्क रेखा को छोटी–छोटी रेखाएं काटें तो व्यक्ति सिर दर्द से पीड़ित रहता है व मानसिक अशांति बनी रहती है। यदि यह रेखा टूटी हुई न हो जातक के सिर में चोट लगती है अथवा मस्तिष्क विकार होता है। मस्तिष्क रेखा पर तारे या यव का चिन्ह दोनों हथेलियों में हो तो आकस्मिक दुर्घटना के कारण मृत्यु होती है।

यदि मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा से कुछ हट कर प्रारम्भ होती हो तो वह व्यक्ति स्वतन्त्र प्रकृति का होता है। सत्यनिष्ठ और स्वाभिमानी स्वभाव होता है परन्तु ऐसा व्यक्ति कभी–कभी जल्दबाजी में अपना महान अनिष्ट कर बैठता है। मस्तिष्क रेखा का झुकाव जिस क्षेत्र की ओर हो उस क्षेत्र के विशेष गुण व्यक्ति में आ जाते हैं। मस्तिष्क रेखा टेढ़ी मेढ़ी, श्रृंखला युक्त एवं बिन्दु आदि चिन्ह से युक्त हो तो मस्तिष्क दुर्बल होता है और मानसिक अशांति बनी रहती है।

हृदय रेखा- यह रेखा मस्तिष्क रेखा के ऊपर बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ हो कर गुरु क्षेत्र के नीचे तक पहुचती है। यह रेखा हृदय की संवेदनाओं और प्रेम सम्बन्धों की प्रतीक है। यदि यह रेखा स्पष्ट, सुन्दर और बाधा रहित हो तो ऐसे स्त्री व पुरुष आदर्श प्रेमी हुआ करते हैं। जिससे प्रेम करें तो दिलो जान से चाहते हैं। यदि यह रेखा श्रृंखला युक्त और अशुभ चिन्हों से युक्त हो तो वह व्यक्ति स्वार्थी और प्रेम भावनाओं के प्रति उदासीन रहता है। परन्तु अनुचित प्रेम सम्बन्ध रखने की प्रवृति होती है।

हृदय रेखा को यदि छोटी–छोटी आड़ी रेखाएं काटती हों तो प्रेम में निराशा उत्पन्न होती है। प्रेम सम्बन्ध स्थिर नहीं रह पाता। हृदय रेखा पर लाल रंग का दाग हो तो रक्तचाप Blood Preasure से उत्पन्न मूर्छा होती है।

यदि यह रेखा बुध क्षेत्र से निकल कर शनि क्षेत्र के नीचे समाप्त हो जाये तो ऐसे जातक प्रेम के क्षेत्र में विश्वसनीय नहीं होते। उनका प्रेम स्वार्थमय व वासना पूर्ण होता है। यदि यह रेखा गुरू के क्षेत्र पर तर्जनी एवं मध्यमा अंगुली के मध्य में समाप्त हो तो जातक सहृदय तथा न्याय प्रिय होता है। समाज में प्रतिष्ठित एवं उच्चपदासीन होता है। (अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "हस्त रेखा विज्ञान" की पुस्तक मंगा कर पढ़ें।) पं. पन्ना लाल ज्यो. जालन्धर।

हस्त रेखा एवं चिन्हों द्वारा भविष्य ज्ञान

यदि द्वीप का चिन्ह विवाह रेखा के प्रारम्भ में हो तो विवाह के प्रारम्भ में अगर मध्य ... मे हो तो अन्तिम काल में दुःख व कलह होता है।

हस्त रेखा एवं चिन्हों द्वारा भविष्य ज्ञान

जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, एवं हृदय रेखा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई थी। अब नीचे हाथ में पाई जाने वाली अन्य मुख्य रेखाओं के बारे में संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं। अधिक ज्ञान के लिए हमारे कार्यालय से बृहद् हस्त रेखा विज्ञान की पुस्तक मंगवा सकते हैं। पं० पन्ना लाल जालन्धर।

भाग्य रेखा—यह रेखा मणिबंध या उसके पास से हथेली के मध्य से निकल कर प्रायः मध्यमा की ओर जाती है। कभी-कभी तर्जनी या अनामिका की ओर अग्रसर होती है। इसको ऊर्ध्व रेखा, प्रारब्ध रेखा, धन रेखा भी कहते हैं। इसके सम्बन्ध में कहा है—

सोर्ध्वं रेखा विशेषेण राज्य लाभकारी भवेत्।
खंडिता दुष्ट फलदा क्षीणा क्षीण-फलप्रदा॥

यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खंडित न हो तो मनुष्य भाग्यशाली, धनवान तथा उसे राज्य लाभ होता है, यदि खण्डित हो तो धन प्राप्ति में अनेक प्रकार की बाधाएं एवं कार्य परिवर्तन के संकेत हैं। इस रेखा के अभाव में सूर्य रेखा, जीवन रेखाओं आदि की स्थिति का अनुशीलन करना चाहिए। हमारे आचार्यों ने इसके ५ भेद कहे हैं।

१. यदि **भाग्य रेखा** मणिबन्ध से निकल कर अंगूठे के मूल तक जाती हो तो ऐसा व्यक्ति राजसुख भोगने वाला, सेनापति, धनवान्, एवं मध्यम आयु पाने वाला होता है।

२. यदि तर्जनी मूल की ओर जाति हो तो राजा या राजमन्त्री या उच्च पदाधिकारी होता है।

३. यदि मध्यमा मूल की ओर जाती हो तो राजा के समान कीर्ति वाला या अनेक मनुष्यों का अधिकारी या सेनापति, नेता, पुत्र-पौत्रादिक युक्त धनवान होता। ऐसा व्यक्ति हीन कुल में भी जन्म लेकर असाधारण उन्नति करता है।

४. यदि यह रेखा अनामिका की ओर जाती हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छा धनवान, वाहन आदि से युक्त और राजनीति, विशारद एवं सुखी होता है।

५. यदि कनिष्ठिका की ओर जाती हो तो ऐसा व्यक्ति विद्वान्, यशस्वी होता है। उसका निवास अन्य स्थान पर होता है।

विवाह रेखा—सबसे छोटी अंगुली के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर हथेली के बाहरी भाग से निकल कर बुध पर्वत पर जाने वाली रेखा को विवाह रेखा कहते हैं। पाश्चात्य विद्वान् इसे विवाह रेखा न कह कर प्रेम रेखा भी कहते हैं। (१) यदि विवाह रेखा हृदय रेखा के समीप हो तो विवाह जल्दी होता है! यदि विवाह रेखा कनिष्ठका अंगुली के समीप हो विवाह विलम्ब से होता है।

(२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह व्यभिचार का सूचक होता है अथवा व्यक्ति का वैवाहिक-जीवन कष्ट पूर्ण होता है। पति-पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद तक हो जाते हैं। यदि द्वीप का चिन्ह विवाह रेखा के प्रारम्भ में हो तो विवाह के प्रारम्भ में अगर मध्य में हो तो मध्य काल में और अन्त मे हो तो अन्तिम काल में दुःख व कलह होता है। अगर विवाह-रेखा सुन्दर, अच्छी और दोष-रहित हो तो जातक का विवाहित जीवन सानन्द रहता है। यदि विवाह रेखा मध्य में कटी हुई हो अथवा क्रास या अशुभ लक्षणों से युक्त हो तो उस रेखा का फल अनिष्ट होता है।
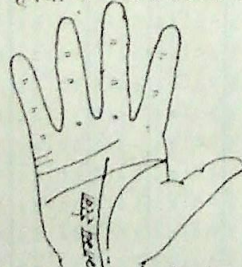
(३) यदि विवाह रेखा कुछ दूर सीधी जाकर हृदय रेखा की ओर मुड़ जाये तो व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु व्यक्ति से पहले होगी। अगर स्त्री के हाथ में इस प्रकार की रेखा हो तो उसके पति की मृत्यु पहले होगी।

(४) यदि विवाह रेखा दो शाखाओं में बंट जाए तो पति-पत्नी में झगड़ा होता है। विवाह रेखा में छोटे-छोटे बहुत से द्वीप हों तो व्यक्ति को वैवाहिक-सुख प्राप्त नहीं होता है। यदि विवाह रेखा के दो भाग हो जायें तो सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।

(५) विवाह रेखा स्पष्ट, गहरी और सुन्दर होने पर स्त्री-सुख या पति सुख अच्छा रहता है तथा चौड़ी, खण्डित और अशुभ लक्षणों से युक्त होने पर स्त्री-सुख या पति सुख कम मिलता है।

सूर्य रेखा—इस का उद्गम स्थान चन्द्र पर्वत, भाग्य रेखा से, हथेली के मध्य भाग्य, मस्तक रेखा या हृदय रेखा, कहीं से भी हो सकता है इसे पुण्य रेखा, विद्या रेखा या धन या यश रेखा भी कहते हैं। दीर्घ स्पष्ट एवं अखण्डित होने पर मनुष्य विद्वान् विद्या में पूर्ण सफलता, उत्साही व प्रतिष्ठित होता है। कहीं खण्डित हो तो अपयश की द्योतक है

(१) यदि यह रेखा मणिबंध से सूर्य पर्वत तक लम्बी, सुस्पष्ट एवं बिना कटी फटी हो तो जातक बड़ा भाग्यवान्, विद्वान् और समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

(२) यदि सूर्य रेखा चन्द्र पर्वत से निकल कर सूर्य पर्वत पर पहुंचे तो व्यक्ति में कल्पना शक्ति अधिक होती है। उसका भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है। शुक्र पर्वत से निकलने वाली सूर्य रेखा हो तो जातक प्रेमी (या प्रेमिका) अथवा ससुराल से विशेष धन लाभ मिलता है।

(३) यदि सूर्य रेखा सूर्य क्षेत्र पर ही समाप्त हुई हो और वहां पर अनेक छोटी-छोटी खड़ी रेखाएं हों तो व्यक्ति अनेक योग्यताओं को रखते हुए भी, किसी एक काम में पूर्ण ध्यानस्थ न होने के कारण किसी एक क्षेत्र में सफलता नहीं प्राप्त कर सकता।

(४) यदि सूर्य रेखा हाथ में पुष्ट दोहरी स्थिति में हो तो जातक एक से अधिक (अनेक) साधनों से धनोपार्जन करता है।

(५) यदि रेखा के अन्त में सूर्य पर्वत पर त्रिशूल का चिन्ह बना हो तो वह जातक उच्चपदासीन, धनवान् एवं प्रतिष्ठित होता है। देखें चित्र (१) पर

हिमाचल प्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त
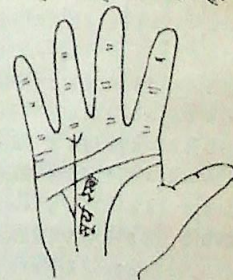
जालन्धर के सूर्योदयास्त में से २ मिनट घटाने से होश्यारपुर का एवं १-१/२ मिनट जमा करने से अमृतसर का सूर्योदयास्त निकलेगा कुल्लू-मण्डी के सूर्योदयास्त में ३ मिनट जमा करने से नंगल ऊना इत्यादि स्थानों का, १-१/२ मिनट जमा करने से जोगिन्द्रनगर का, और २ मिनट जमा करने से हमीरपुर का सूर्योदयास्त होगा। कांगड़ा के सूर्योदयास्त में २ मिनट जोड़ने से डल्हौजी का और १ मिनट कम करने से पालमपुर का सूर्योदयास्त होगा। शिमला के सूर्योदयास्त में डेढ मिनट कम करने से कोट खाई का और साढे तीन मिनट जमा करने से नालागढ़ का सूर्योदयास्त होगा।

ता अप्रै	देहली उद	देहली अस्त	जम्मू उधपुर उद	जम्मू उधपुर अस्त	शिमला सोलन उद	शिमला सोलन अस्त	कांगड़ा धर्म उद	कांगड़ा धर्म अस्त	मंडी कुल्लू उद	मंडी कुल्लू अस्त	बंबई उद
१अ	६।१४	१८।३८	६।२२	१८।४७	६।११	१८।३०	६।१५	१८।३७	६।११	१८।४०	६।३५
५	६।१०	१८।३८	६।१६	१८।५१	६। ६	१८।४२	६।१०	१८।४०	६। ६	१८।४३	६।३१
९	६। ६	१८।३९	६।११	१८।५४	६। १	१८।४५	६। ६	१८।४३	६। २	१८।४६	६।२७
१३	६। १	१८।४१	६। ८	१८।५६	५।५७	१८।५७	६। २	१८।४७	५।५८	१८।४८	६।२४
१७	५।५७	१८।४३	६। ४	१८।५८	५।५३	१८।४९	५।५१	१८।५१	५।५४	१८।५०	६।२१
२१	५।५१	१८।४७	५।५९	१९। ०	५।४९	१८।५२	५।५५	१८।५५	५।४९	१९।५३	६।१८
२५	५।४७	१८।४८	५।५४	१९। ४	५।४४	१८।५५	५।५१	१८।५८	५।४५	१८।४६	६।१५
२९	५।४४	१९।५०	५।५०	१९। ७	५।४१	१८।५८	५।४६	१९। २	५।४२	१८।५१	६।१३
३म	५।४१	१८।५३	५।४६	१९। ९	५।३७	१९।००	५।४०	१९। ५	५।३८	१९। १	६।१०
७	५।३१	१८।५५	५।४४	१९।१०	५।३३	१९। ३	५।३५	१९। ७	५।३४	१९। ५	६। ८
११	५।३७	१८।५८	५।४०	१९।१३	५।३०	१९। ६	५।३३	१९।११	६।३१	१९। ८	६। ७
१५	५।३२	११। ०	५।३७	१९।१५	५।२७	१९। ८	५।३१	१९।११	५।२८	१९।१०	६। ५
१९	५।३१	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।२४	१९।११	५।२९	१९।१३	५।२५	१९।१३	६। ३
२३	५।२७	१९। ५	५।३१	१९।२२	५।२३	१९।१३	६।२६	१९।१६	५।२३	१९।१५	६। २
२७	५।२६	१९। ७	५।२९	१९।२५	५।२०	१९।१५	५।२४	१६।१६	५।२०	१९।१७	६। १
३१	५।२५	१९। ८	५।२७	१९।२८	५।१९	१९।१८	५।२१	१९।२२	५।१९	१९।२०	६। १
५जू	५।२४	१९।११	५।२६	१९।३०	५।१८	१९।२१	५।२०	१९।२४	५।१९	१९।२३	६। १
९	५।२५	१९।१५	५।२६	१९।३२	५।१८	१९।२२	५।१९	१९।२५	५।१८	१९।२३	६। १
१३	५।२४	१९।१६	५।२६	१९।३४	५।१८	१९।२४	५।१९	१९।२६	५।१८	१९।२६	६। १
१७	५।२४	१९।१७	५।२६	१९।३५	५।१८	१९।२६	५।१८	१९।२६	६।१९	१९।२८	६। १
२१	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।१९	१९।२७	५।१९	१२।२८	५।१९	१९।२९	६। २
२५	५।२५	१९।१८	५।२७	१९।३७	५।१९	१९।२८	५।२०	१९।३०	५।२०	१९।३०	६। ३
२९	५।२६	१९।१८	५।२९	१९।३७	५।२०	१९।२९	५।२२	१९।३०	५।२१	१९।३१	६। ४
३ज	५।२९	१९।२०	५।३१	१९।३७	५।२२	१९।२९	५।२३	१९।२९	५।२५	१९।३१	६। ५
७	५।३०	१९।११	५।३३	१९।३६	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।३०	६। ६
११	५।३२	१९।१७	५।३४	१९।३६	५।२६	१९।२६	५।२६	१९।२७	५।२६	१९।२८	६। ७
१५	५।३५	१९।१६	५।३६	१९।३५	५।२८	१९।२५	५।२८	१९।२६	५।२८	१९।२७	६। ९
१९	५।३७	१९।१५	५।३९	१९।३३	५।३०	१९।२४	५।३०	१९।२५	५।३२	१९।२६	६।१०

ता जुल	देहली उद	देहली अस्त	जम्मू उधपुर उद	जम्मू उधपुर अस्त	शिमला सो० उद	शिमला सो० अस्त	कांगड़ा धर्मशा उद	कांगड़ा धर्मशा अस्त	मंडी-कुल्लू उद	मंडी-कुल्लू अस्त	बंबई उद
२३	५।३९	१९।१४	५।४२	१९।३०	५।३२	१९।२२	५।३३	१९।२४	५।३३	१९।२४	६।११
२७	५।४१	१९।१२	५।४५	१९।२७	५।३४	१९।२०	५।३५	१९।२२	५।३४	१९।२२	६।१२
३१	५।४३	१९।१०	५।४७	१९।२५	५।३७	१९।१९	५।३८	१९।२५	५।३७	१९।२१	६।१३
४अ	५।४५	१९। ७	५।४९	१९।२३	५।४०	१९।१३	५।४१	१९।१६	५।४१	१९।१४	६।१४
८	५।४७	१९। ४	५।५२	१९।१८	५।४१	१९। ७	५।४२	१९।१३	५।४३	१९। ९	६।१५
१२	५।४९	१९। ०	५।५५	१९।१५	५।४५	१९। ४	५।४६	१९। ९	५।४५	१९। ६	६।१७
१६	५।५२	१८।५६	५।५८	१९।१०	५।४९	१८।५४	५।५०	१९। ५	५।५०	१८।५९	६।१८
२०	५।५४	१८।५३	६। २	१९। ६	५।५३	१८।५८	५।५४	१९। १	५।५३	१८।५६	६।१९
२४	५।५७	१८।४९	६। ४	१९। २	५।५६	१८।४०	५।५८	१८।५६	५।५७	१८।५१	६।२०
२८	६।५८	१८।४५	६। ७	१८।५८	५।५९	१८।४५	६। १	१८।५२	६। ०	१८।४५	६।२१
सि	६। १	१८।४१	३।१०	१८।५३	६। २	१८।४२	६। ५	१८।४८	६। ३	१८।४४	६।२२
५	६। २	१८।३८	६।१२	१८।४९	६।०५	१८।३८	६। ८	१८।४४	६। ६	१८।४०	६।२३
९	६। ५	१८।३२	६।१५	१८।४४	६।०६	१८।३४	६।१०	१८।४०	६। ८	१८।३५	६।२४
१३	६। ४	१८।२७	६।१७	१८।३९	६।०९	१८।२८	६।१३	१८।३५	६।११	१८।२६	६।२५
१७	६। ९	१८।२२	६।१९	१८।३३	६।१३	१८।२३	६।१७	१८।३०	६।१५	१८।२४	६।२६
२१	६।११	१८।१७	६।२१	१८।२८	६।१५	१८।१८	६।१९	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।२७
२५	६।१३	१८।१२	६।२३	१८।२२	६।१६	१८।१४	६।२०	१८।२२	६।१८	१८।१६	६।२८
२९	६।१५	१८। ७	६।२५	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२२	१८।१७	६।२०	१८।१२	६।२९
३अ	६।१७	१८। ३	६।२८	१८।१२	६।१६	१८। ३	६।२३	१८।१३	६।२०	१८। ५	६।३०
७	६।१९	१७।५८	६।३०	१८।०७	६।२०	१७।५७	६।२४	१७। ६	६।२१	१७।५९	६।३१
११	६।२२	१७।५४	६।३३	१८। २	६।२२	१७।५४	६।२६	१८। ४	६।२३	१७।५६	६।३२
१५	६।२४	१७।४९	६।३५	१७।५७	६।२५	१७।५०	६।२९	१७।५५	६।२६	१७।५२	६।३३
१९	६।२६	१७।४५	६।३८	१७।५३	६।३०	१७।४५	६।३४	१७।५०	६।३१	१७।४७	६।३४
२३	६।२८	१७।४१	६।४१	१७।४९	६।३८	१७।४०	६।३६	१७।४७	६।३३	१७।४२	६।३५
२७	६।३०	१७।३८	६।४४	१७।४५	६।३४	१७।३२	६।३९	१७।४२	६।३५	१७।३३	६।३७
३१	६।३३	१७।३४	६।४७	१७।५१	६।३९	१७।२७	६।४३	१७।३७	६।४०	१७।२९	६।३८
४न	६।३६	१७।३१	६।५०	१७।३७	६।४२	१७।२२	६।४६	१७।३३	६।४८	१७।२६	६।४०
८	६।३९	१७।२८	६।५४	१७।३४	६।४४	१७।२१	६।४६	१७।३०	६।४५	१७।२२	६।४२

हिमाचलप्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त

ता देहली | जम्मू | शिमला सो कांगड़ा धर्म | मंडी कुल्लू बंबई

विश्व के प्रमुख शहरों के सूर्योदय

ति० कलकत्ता बनारस लन्दन न्यूयार्क | ति० कलकत्ता बनारस लन्दन न्यूयार्क

हिमाचलप्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त

ता	देहली		जम्मू		शिमला सो		कांगड़ा धर्म		मंडी कुल्लू		बम्बई
नव	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद
१२	६।४३	१७।२५	६।५८	१७।३१	६।४८	१७।२०	६।५३	१७।२७	६।४९	१७।२२	६।४८
१६	६।४६	१७।२७	७। २	१७।२८	६।५१	१७।१९	६।५७	१७।२४	६।५३	१७।२१	६।४६
२०	६।४९	१७।२५	७। ६	१७।२८	६।५४	१७।१९	७।००	१७।२३	६।५६	१७।२१	६।४८
२४	६।५२	१७।२४	७। ९	१७।२८	६।५६	१७।१८	७। ४	१७।२२	६।५९	१७।२०	६।५१
२८	६।५५	१७।२३	७।१२	१७।२८	७। ०	१७।२८	७। ७	१७।२१	७। ३	१७।२०	६।५३
२द	६।५७	१७।२३	७।१५	१७।२७	७। ३	१७।१७	७।१०	१७।२०	७। ६	१७।१९	६।५५
६	७। १	१७।२४	७।१८	१७।२७	७। ६	१७।१७	७।१२	१७।२०	७। ९	१७।१९	६।५८
१०	७। ४	१७।२०	७।२२	१७।२६	७। ९	१७।१६	७।१५	१७।१९	७।११	१७।१८	७। १
१४	७। ७	१७।२१	७।२४	१७।२७	७।१३	१७।१८	७।१९	१७।१९	७।१५	१७।१९	७। ३
१८	७।१९	१७।२२	७।२६	१७।२८	७।१५	१७।२०	७।२१	१७।२०	७।१७	१७।२२	७। ५
२२	७।११	१७।२३	७।२७	१७।३०	७।१६	१७।२३	७।२२	१७।२३	७।१८	१७।२३	७। ७
२६	७।१३	१७।२६	७।२९	१७।३२	७।१७	१७।२४	७।२३	१७।२६	७।१९	१७।२५	७। ६
३०	७।१४	१७।२८	७।२८	१८।३४	७।२०	१७।२७	७।२६	१७।२९	७।२२	१७।२७	७।११
३ज	७।१६	१७।३१	७।३२	१७।३६	७।२१	१७।३०	७।२७	१७।३२	७।२३	१७।३०	७।१२
७	७।१८	१७।३४	७।३३	१७।३८	७।२०	१७।३३	७।२७	१७।३५	७।२२	१७।३२	७।१३
११	७।१६	१७।३७	७।३३	१७।४२	७।२०	१७।३७	७।२६	१७।३९	७।२२	१७।३६	७।१४
१५	७।१६	१७।४१	७।३३	१७।५६	७।२०	१७।४०	७।२६	१७।४३	७।२३	१७।४१	७।१५
१९	७।१५	१७।४४	७।३२	१७।५०	७।२०	१७।४३	७।२६	१७।४६	७।२३	१७।४४	७।१४
२३	७।१४	१७।४७	७।३१	१७।५४	७।१९	१७।४८	७।२५	१७।५०	७।२२	१७।५१	७।१४
२७	७।१०	१७।५१	७।३०	१७।५८	७।१७	१७।५१	७।३३	१७।५३	७।१९	१७।५२	७।१३
३१	७।१२	१७।५३	७।२७	१८।००	७।१५	१७।५३	७।२१	१७।५७	७।१६	१७।५४	७।१२
४फ	७। ९	१७।५८	७।२४	१८।०४	७।१३	१७।५७	७।२८	१८।०१	७।१४	१७।५८	७।११
८	७। ७	१८।०१	७।२०	१८।०९	७।१०	१८।००	७।२५	१८। ५	७।११	१८।०१	७।१९
१२	७। ३	४८।०४	७।१७	१८।१२	७। ७	१८। ३	७।१२	१८।०९	७।०८	१८।०५	७।५७
१५	७। ०	१८।०७	७।१३	१८।१५	७। ५	१८। ७	७।१०	१८।१३	७।०६	१८।०९	७। ४
२०	६।५६	१८।१०	७।१०	१८।१६	७।००	१८।१२	७।०५	१८।१७	७।०१	१८।१३	७। २
२५	६।५२	१८।१२	७।०६	१८।२३	६।५५	१८।१६	७।००	१८।२०	६।५७	१८।१५	७। ०
२८	६।४९	१८।१५	७।०१	१८।२७	६।४९	१८।२०	६।५३	१८।२१	६।५०	१८।२०	६। ७
४मे	६।४४	१८।१७	६।५६	१८।३०	६।४३	१८।२३	६।४७	१८।२३	६।४४	१८।२३	६।५५
८	६।४०	१८।२०	६।५१	१८।२२	६।३८	१८।२७	६।४३	१८।२४	६।४१	१८।२८	६।५३
१२	६।३४	१८।२३	६।४७	१८।३५	६।२६	१८।२९	६।३८	१८।२५	६।३७	१८।३०	६।५०
१६	६।३२	१८।२५	६।४३	१८।३८	६।२८	१८।३१	६।३२	१८।२६	६।२९	१८।३२	६।४७
२०	६।२८	१७।२७	६।३९	१८।४०	६।२६	१८।३६	६।२८	१८।२७	६।२७	१८।३३	६।४४
२३	६।२४	१८।२८	६।३४	१९।४३	६।२३	१८।३४	६।२५	१८।२८	६।२४	१८।३४	६।३१

विश्व के प्रमुख शहरों के सूर्योदय

ति॰	कलकत्ता	बनारस	लण्डन	न्यूयार्क	ति॰	कलकत्ता	बनारस	लंडन	न्यूयार्क
जन॰	सू.उ.	सू.उ.	सू.उ.	सू.उ.	३०	४।५९	५।१४	३।४५	४।२५
१	६।१९	६।४६	८।६	७।२१	जुन	५।१	५।१७	३।५०	४।३०
५	६।२१	६।४८	८।६	७।२१	१०	५।३	५।१९	३।५५	४।३३
१०	६।२२	६।४९	८।४	७।२१	१५	५ ४	५।२१	४।००	४।३६
१५	६।२३	६।५०	८।१	७।२०	२०	५।७	५।२३	४।६	४।४०
२०	६।२२	६।४९	७।५७	७।१८	२५	५।९	५।२६	४।१३	४।४४
२५	६।२१	६।४७	७।५०	७।१५	३०	५।११	५।२९	४।२०	४।५०
३०	६।१९	६।४५	७।४३	७।१०	अ५	५।१४	५।३२	४।२७	४।५५
फ५	६।१७	६।४३	७।३५	७।४	१०	५।१५	५।३३	४।३६	५।००
१०	६।१५	६।४१	७ २६	६।५९	१५	५।१७	५।३७	४।४४	५।५
१५	६।१२	६।३८	७।१७	६।५३	२०	५।१९	५।३९	४।५२	५।१०
२०	६।९	६।३४	७।७	६।४२	२५	५।२१	५।४०	५।००	५।१४
२५	६।५	६।३०	६।५८	६।३८	३०	५।२२	५।४१	५।०८	५।२०
मा५	६।१	६।२६	६।३८	६।२५	सि५	५।२४	५।४५	५।१८	५।२६
१०	५।५१	६।२१	६।२७	६।१७	१०	५।२७	५।४६	५।२६	५।३१
१५	५।५०	६।१७	६।१५	६।८	१५	५।२७	५।४८	५।३१	५।३६
२०	५।४६	६।१०	६।४	६।००	२०	५।२८	५।५०	५।४२	५।४१
२५	५।४०	६।२	५।५२	५।५२	२५	५।३०	५।५२	५।५०	५।४६
३०	५।३४	५।५६	५।४१	५।४४	३०	५।३२	५।५४	५।५८	५।५१
अ५	५।२९	५।४९	५।२७	५।३५	५अ	५।३३	५।५७	६।७	५।५६
१०	५।२३	५।४२	५।१५	५।२६	१०	५।३५	५।५८	६।१४	६।२
१५	५।२०	५।३८	५।५	५.१८	१५	५।३७	५।५९	६।२३	६।७
२०	५।१६	५।३४	४।५४	५।१२	२०	५।४०	६।०१	६।३२	६।१२
२५	५।११	५।३०	४।४३	५।४	२५	५।४२	६।०४	६।४१	६।१८
३०	५।८	५।२६	४।३४	४।५६	३०	५।४४	६।०८	६।४९	६।२३
५मई	५।४	५।२१	४।२५	४।४९	न५	५।४६	६।११	७।००	६।३०
१०	५।१	५।१९	४।१७	४।४३	१०	५।४९	६।१५	७।०९	६।३७
१५	४।५९	५।१५	४।७	४।३८	१५	५।५२	६।१८	७।१८	६।४३
२०	४।५७	५।१३	४।००	४।३४	२०	५।५५	६।२१	७।२६	६।५०
२५	४।५५	५।११	३।५५	४।३०	२५	५।५८	६।२४	७।३४	६।५४
३०	४।५४	५।१०	३।५०	४।२६	३०	६।०१	६।२८	७।४२	७।००
जून	४।५२	५।९	३।४६	४।२५	दि५	६।०४	६।३१	७।४९	७।५
१०	४।५२	५।९	३।४३	४।२४	१०	६।०८	६।३४	७।५५	७।१०
१५	४।५३	५।१०	३।४२	४।२३	१५	६।११	६।३८	८।००	७।१४

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	वर्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा.पद.		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	वर्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमांश, ४ नवनांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश ग्रह शुभ हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु आगे षड्वर्ग सारिणी दी जा रही है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण— मान लें लग्न स्पष्ट ५।४।२९।२५ यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९।२५ है। सारणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अतः हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेंगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा ४ चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् कर्क लग्न, द्रेष्काण ६ कन्या, सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, मंगल, शनि, शुक्र, शुभ ग्रहों में से २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त श्रेष्ठ हुआ। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८।३।६।११।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करें। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करें-

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही आता है। होरा लग्न विषम राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त, उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। होरा लग्न में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदुभाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरबार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी नीच कार्यों में प्रवृत्त सुख विहीन

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। द्रेष्काणपति शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। द्रेष्काणपति चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। द्रेष्काणेश शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांशफल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमांश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। सप्तमांश लग्नपति पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली संतान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, बुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। सप्तमांश लग्नपति लग्न से ७।८।१२वें स्थान में पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। द्वितीय नवांश हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, षष्ठ में स्त्री के वशीभूत, नपुंसक अपव्ययी व प्रमोदी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवम नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य कुशल व धनधान्य से युक्त होता है।

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशीश	गण	नाड़ी	हंसक्र (तत्त्व)	देवता	कितने तारे	पंचशलाका वेध
अश्विनी	चु.चे.चो.ला	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	दक्ष	३	पू.फा
भरणी	ली.लू.ले.लो	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मानव	मध्य	अग्नि	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ.इ.उ.ए.	मे.१वृष३	क्ष.१वै.३	चतुष्पद	छाग	वानर	मं.१शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१पृ.३	अग्नि	६	वि
रोहिणी	ओ.वा.वी.वू.	वृष	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	शु.	मानव	अन्त्य	पृथ्वी	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिरा	वे.वो.का.की	वृ.२मि.२	वै.२शू.२	च.२न.२	सर्प	नकुल	शु.२बु२	देव	मध्य	पृ.२वा.२	चन्द्र	३	उषा
आर्द्रा	कु.घ.ङ.छ.	मिथुन	शूद्र	नर	श्वान	मृग	बुध	मानव	आदि	वायु	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के.को.हा.ही	मि.३क.१	शू.३ब्रा.१	न.३ज.१	मार्जा.	मूषक	बु.३चं.१	देव	आदि	वा.३ज.१	अदिति	४	मूला
पुष्य	हु.हे.हो.डा.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	छाग	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	गुरु	३	ज्ये
आश्लेषा	डी.डू.डे.डो.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	सर्प	५	धनि
मघा	म.मी.मू.मे.	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो.टा.टी.टू.	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	सूर्य	मानव	मध्य	अग्नि	भग	२	अश्वि
उ.फा.	टे.टो.पा.पी.	सि.१क.३	क्ष.१वै.३	च.१न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१बु.३	मानव	आदि	अ.१पृ.३	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू.ष.ण.ठ.	कन्या	वैश्य	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे.पो.रा.री.	क.२तु.२	वै.२शू.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२वा.२	त्वष्ट	१	पूभा
स्वाती	रू.रे.रो.ता.	तुला	शूद्र	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	वायु	१	शत
विशाखा	ती.तू.ते.तो.	तु.३वृ.१	शू.३ब्रा.१	न.३की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ज.१	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	न.नी.नू.ने.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मित्र	४	भर
ज्येष्ठ	यो.या.यी.यू.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये.यो.भा.भी.	धनु	क्षत्रिय	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू.ध.फ.ढ.	धनु	क्षत्रिय	न।।च३।।	वानर	मेष	गुरु	मानव	मध्य	अग्नि	जल	३	आ
उत्तराषा.	भे.भो.ज.जी.	ध.१म.३	क्ष.१वै.३	चतु.	नकुल	सर्प	गु.१श.३	मानव	अन्त्य	अ.१पृ.३	विश्वे	२	मू
श्रवण	खी.खू.खे.खो.	मकर	वैश्य	च१।।ज२।।	वानर	मेष	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	ग.गी.गू.गे.	म.२कुं.२	वै.२शू.२	ज.२न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२वा.२	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो.स.सी.सू.	कुम्भ	शूद्र	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	वरुण	१००	स्वा
पू.भा.	से.सो.द.दी.	कुं.३मी.१	शू.३ब्रा.१	न.३ज.१	सिंह	गज	श.३गु.१	मानव	आदि	वा३ज.१	अजैक	२	चित्रा
उ.भा.	दू.थ.झ.ञ.	मीन	ब्राह्मण	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मानव	मध्य	जल	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे.दो.च.ची	मीन	ब्राह्मण	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (विचारणीय वर्ग से पञ्चम वर्ग वैरी समझना)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र-

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
१।२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	राशि

ग्रह मैत्री चक्र

सू.	चं	मं.	बुध	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं मं बृ	सू बु	सू चं बृ	सू शु	सू चं मं	बु श	शु बु	मित्राणि
बुधः	मं बृ शु श	शु श	मं बृ श	श	मं बृ	बृ	समाः
शु श	० ०	बु	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं	शत्रव
मे १०	वृष ३	मं २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०	उच्चांश
तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०	नीचांश

मित्र नवपंचम ज्ञानचक्र						शत्रु नवपंचम ज्ञानचक्र					
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक ज्ञानचक्र						शत्रुषडाष्टक ज्ञानचक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश ज्ञानचक्र						शत्रुद्विर्द्वादश ज्ञानचक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

तारा ज्ञान चक्र

२।५।७।१२।१४।१६।२१।२३।२५ एतत्संख्याकास्तारानांशुभदः

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र—

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

वर-कन्या मेलापक सारिणी

वर-कन्या मेलापक सारिणी

कन्या राशि	वर → / कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्व.	भर.	कृत. १	कृत. ३	रोह.	मृग. २	मृग. २	आर्द्रा	पुन. ३	पुन. १	पुष्य	श्ले.	मघा	पूफा.	उफा. १	उफा. ३	हस्त	चि. २
मेष	अश्वि	२८ ८	३३	२८	१८ २	२३॥ २	२२॥ २	२६	१६॥ ८	१७॥ ८	२२॥ ८	३०॥	२७	२१ ९	२४ ९	१५ ८९	१०॥ ७८	१० ४७८	१३ ७
	भर	३३	२८ ८	२९ ६	१८ २६	२६॥ २	१७॥ २८	१७॥ ८	२६	२६	३०॥	२३॥ ८	२७॥ ६	१९ ६९	१७ ८९	२४ ९	२१ ७	१९ ७	६ ६७८
	कृति १	२६॥	२८ ६	२८ ८	१८ २८	१० ६७	१६॥ २	१९॥	१९॥ ६	१९॥	२७॥	२६॥	२३॥ ८	१५॥ ८९	१९ ६९	२० ६९	१५ ६७	१५ ७	१८॥ ७
वृष	कृति ३	१९ २	१९ २६	१९ २८	२८ ८	१८॥ ६८	२६॥	१७ २	१७ २६	१७ २	२१	२३	१९ ८	१९ ८	२२ ६	२२ ६	२० ६९	१८ ९	२३ ९
	रोह	२३॥ २	२३॥ २	११ २६८	२० ६८	२८ ८	३६	२६॥ २	२३ २	२२ २	२६	२७	१३ ६८	१०॥ ६८	२७॥	२७	२५॥ ९	२५॥ ९	१८॥ ६९
	मृग २	२३॥ २	१७॥ २८	१८॥ २	२७	३५	२८॥ ८	१८॥ २८	२३॥ २	२२॥ २	२६	१९ ८	२१	१९॥	१५॥ ८	२७॥	२३ ९	२५॥ ९	११॥ ८९
मिथुन	मृग २	२७	१८ ८	२१॥	१९॥ २	२६॥ २	२० २८	२८ ८	३३	३१॥	१९॥ २	११॥ २८	१७॥ २	२३	१९॥ ८	२८॥	३१॥	३४	२० ८
	आर्द्रा	१८॥ ८	२६॥	२१॥ ६	१९ २६	२७॥ २	२५॥ २	३४	२८ ८	२५ ८	१२ २८	२०॥ २	१२॥ २६	२१॥ ६	२७॥	२०॥ ८	२७॥ ८	२७॥ ८	२७ ६
	पुन. ३	१८॥ ८	२५॥	२१॥	१९ २	२२ २	२३ २	३१॥	२४ ८	२८ ८	१४ २८	२१ ९	१५॥ २	२१॥ ४	२५॥ ४	१९॥ ८	२३॥ ८	२७॥ ८	२६॥
कर्क	पुन १	२१॥ ८	२८॥	२७॥	२१	२४	२५	१७॥ २	१० २८	१३ २८	२८ ८	३४	२८॥	१६॥ २४	२०॥ ४२	१७॥ २८	१६॥	१७॥ ८	१९॥
	पुष्य	२९॥	२०॥ ८	२६॥	२३	२५	१८ ८	१०॥ २८	१८॥ २	२४ २	३४	२८ ८	२९	१८॥ २	१७॥ २८	२३॥ २	२५॥	२५॥	११॥ ८
	श्ले.	२५	२३ ६	२१॥ ८	१९ ८	१२ ६८	१९	१३ २	१२ २६	१५ २	२८	२८॥	२८ ८	१५ २४८	१५॥ २४६	१७॥ २६	२०॥ ६	२०	२६
सिंह	मघा	१९ ९	१९ ६९	१५॥ ८९	१६॥ ८	११ ६८	१७॥	२०॥	२०॥ ६	१९॥ ४	१६॥ २४	१८॥ २	१६ २४८	२८	३० ६	२६॥	१७॥ २६	१७॥ २	१९॥ २
	पूफा	२५ ९	१८ ८९	१९ ६९	२० ६	२३॥	१५॥ ८	१८॥ ८	२६॥	२५॥ ४	२२॥ २४	१६॥ २८	१६॥ २४६	३० ६	२८ ८	३४	२४ २	२०॥ २	५॥ २६८
	उफा १	१६॥ ८९	२६ ९	२१ ६९	२१ ६	२६	२५॥	२८॥	१९॥ ८	१९॥ ८	१६॥ २८	२५॥ २	१८॥ २६	२६॥ ६	३४	२८ ८	१७ २८	१६॥ २८	१७॥ २४६
कन्या	उफा ३	११ ८७	२१ ७	१६ ६७	२०॥ ६९	२५॥ ९	२७॥ ९	३१॥	२३॥ ८	२३॥ ८	१७॥ ८	२७॥	२०॥ ६	१५॥ २६	२३ २	१७ २८	२८॥ ८	२७ ८	२७॥ ४६
	हस्त	११ ४७८	१८॥ ७	१७॥ ७	२०॥ ९	२३॥ ९	२७॥ ९	३२	२२॥ ८	२३ ८	१८ ८	२६॥	२१॥	१६ २	२०॥ २	१५ २८	२६ ८	२८ ८	२८
	चित्रा २	१२॥	४॥ ६७८	१८॥ ७	२३ ९	१८॥ ६९	१७॥ ८९	१८ ८	२६ ६	२७॥	१९॥	११॥ ८	२५॥	२१ २	६॥ २६८	१३॥ २४६	२७॥ ४६	२७	२८ ८

कन्या राशि	वर → / कन्या नक्षत्र ↓	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
		चि. २	स्वा.	विश. ३	विश. १	अनु.	ज्ये.	मूला	पूषा	उषा १	उषा ३	श्रव	धनि २	धनि २	शत.	पूभा ३	पूभा. १	उभा.	रेव.
मेष	अश्वि	२२	२७॥ ४	२२	१८॥ ७	२५॥ ७	१५ ७८	१३ ८९	२७॥ ९	२३ ९	२५	२६	२०	२०	१५ ८	१६ ८	१७॥ २८	२३॥ २	२६ २
	भर	१३॥ ६८	२८	२१ ६	१८॥ ६७	१७॥ ७८	१९॥ ६७	२० ६९	१८ ८९	२५॥ ९	२७॥	२६	१० ४६८	९॥ ४६८	२० ६	२४ ४	२२॥ २४	१६॥ २८	२५॥ २
	कृति १	२७॥	१४ ८	१९ ८	१६॥ ७८	१९॥ ७	२५॥ ७	२५ ९	१९ ४६९	११॥ ६७९	१३॥ ६८	१४ ४८	२५	२७॥	२५॥	१८॥ ६	१७॥ २६	१९॥ २६	११ २८
वृष	कृति ३	२२ ७	९ ७८	१४ ७८	२१॥ ८	२७॥	३०॥	२२ ७	१५ ४६७	७ ६७८	१२ ६८९	१०॥ ४८९	२७॥ ९	२९	३०	२३ ६	२० ६	२२ ६	१३ ८
	रोह	१७॥ ६७	१५ ७८	८ ६७८	१७॥	२९॥	२३॥ ६	१३॥ ६७	१९॥ ७	११ ४७८	१६ ४८९	१८ ८९	१९ ६९	२७॥ ६	२४ ६	२९	२६	२७	१९ ८
	मृग २	१०॥ ७८	२७॥ ७	१७ ७	२३॥	२१॥ ८	२७॥	१७॥ ७	१०॥ ७८	१६॥ ४७	२१॥ ४९	२६ ९	१२ ८९	१९ ८	२६	२८	२५	१८ ८	२७
मिथुन	मृग २	१३ ८९	२७ ९	१९॥ ९	१३ ७	१३ ७८	१४ ७	२३	१९ ८	२५ ४	१९॥ १४७	२४ ७	१० ७८	१२ ८९	२१ ९	२२॥	२४	१७ ८	२६
	आर्द्रा	२० ६९	२७ ९	२० ६९	१३॥ ६७	१९ ४७	५ ६६	१५ ६८	२८	२७	२१॥ ७	२२॥ ७	१७ ६७	१९ ४९	१२ ६८	१७ ९८९	१८॥ ८	२६	२६
	पुन. ३	१९॥ ९	२७ ९	२१ ९	१७॥ ७	२०॥ ७	६ ७८	१४ ८	२७	२७	२१॥ ७	२२॥ ७	१६॥ ७	१८॥ ९	१३ ८९	१६ ८९	१७॥ ८	२६॥	२६
कर्क	पुन १	१९	२६॥	२०॥	१९ ९	२५ ९	१०॥ ९	७॥ ७८	२०॥ ७	२०॥ ७	२६	२७	२१	१२ ७	५॥ ७८	९॥ ७८	१६ ७९	२५ ९	२७॥ ६
	पुष्य	११ ८	२५	२०॥	१९ ९	१७ ४९	२०॥ ९	१७॥ ७	१२॥ ४७८	२०॥ ७	२६	२७ ४	१३ ८	४ ७८	१३ ७	१७॥ ७	२६ ९	१८ ८९	२६ ९
	श्ले.	२५॥	११॥ ८	१६॥ ८	१५॥ ८९	२० ९	२६ ९	२२॥ ७	१६ ६७	७॥ ६७८	१३ ६८	१३ ८	२६	१७ ७	१८ ७	११ ६७	१७॥ ६९	२० ६९	१२ ८९
सिंह	मघा	२३॥	१०॥ ८	१५॥ ८	२५ ८	२७॥	३२	२४ ९	१९ ६९	८॥ ६८७	३॥ ६७८	७॥ ७८	१८॥ ७	२३॥	२७॥	१८॥ ६	१८॥ ६७	१८॥ ६७	१२ ७८
	पूफा	९॥ ६८	२७॥	१८॥ ६	२३॥ ६	२२॥ ८	२७॥ ६	२० ६९	१७ ८९	२४ ९	१९॥ ७	१८॥ ७	५॥ ६७८	९॥ ६८	१०॥ ६	२३॥	२३॥ ७	१६॥ ७८	२७॥ ७
	उफा १	१७॥ ४६	२५॥	१६॥ ४६	२२॥ ४६	३०॥	१६॥ ६८	९ ६८९	२५ ९	२५ ९	२० ७	२० ७	११॥ ६७	१७॥ ६	१०॥ ६८	१५॥ ८	१५॥ ७८	२६॥ ७	२७॥ ७
कन्या	उफा ३	१६॥ २४६	२५॥ २	१६॥ २४६	१८ ४६	२६	१२ ६८	१४ ६८	२९॥	२९॥	२४ ९	२४ ९	१५॥ ६९	१६॥ ६७	९॥ ७८	१७॥ ७८	१७ ८	२८	२६
	हस्त	२० २	२६॥ २	१८॥ २	२०	२६	१३॥ ८	१५ ८	२७	२८॥	२३ ९	२४ ९	१८ ९	१८ ७	१०॥ ४७८	१३॥ ७८	१६ ८	२६	२६
	चित्रा २	१९ २८	१२ २	२५॥ २	२७	११ ८	२५	२७ ४	१३ ६८	२१ ६	१५॥ ६९	१८ ७	१५ ८९	१६ ७८	२४ ७	१७॥ ६७	१९ ६	१० ४६८	१९

मेलापक सारणी देखने की रीति–ऊपर वर कन्या मेलापक सारिणी दी जाती है। कन्या के नक्षत्र बाईं ओर है और वर के नक्षत्र ऊपर दिए हुए हैं। वर के नक्षत्र के नीचे और कन्या के नक्षत्र के सामने जो कोष्टक है वहां गुणों की संख्या दी हुई है। बस वही गुण दोनों के मिलापक सारिणी के हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी (कोष्टक) में प्रायः कोई संख्या भी है। विवरण नीचे लिखे अनुसार जान लेना। वर्ण दोष की जगह (१) द्विर्द्वादश दोष की जगह (२) योनिवैर की जगह (४) गण दोष की जगह (६) भकूटषडाष्टक

दोष की जगह (७) नाडी दोष की जगह (८) और नव पंचम की जगह (९) यह अंक दिये हुये हैं। जिस कोष्टक में गुणों के नीचे आप को इन में से जोनसा अंक मिले वह दोष उस मेलापक में है। जिन गुणों के नीचे कोई अंक न हो वह निर्दोष उदाहरण :—जैसे वर का नाम वृश्चिक राशि विशाखा नक्षत्र के ४ थे चरण में है और कन्या का नाम मेषराशि भरणी नक्षत्र में हो तो भरणी के सामने और विशाखा के ४ थे चरण के नीचे १८।। गुण हैं और इन के नीचे ६, ७ को दोष दिए हुए हैं अर्थात् गण दोष और भकूट षडाष्टकदोष है। यदि भकूट दोष न हो तो, २० गुण मिलने पर मध्यम और इन से अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इस के ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए शुभ भकूट में १६ गुण से कम न हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो, विवाह के लिए विचार न करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है एक नक्षत्र में पाद भेद हो तो नाडी दोष नहीं माना जाता। १८ गुण से कम हो तो मिलान उत्तम नहीं है १८ से २५ तक मध्यम और २६ से ऊपर उत्तमोतम समझना चाहिएं।

पं० —पन्ना लाल ज्यो.

वर	नक्षत्र ↗	—मेष—			—वृष—			—मिथुन—			—कर्क—			—सिंह—			—कन्या—			—तुला—			—वृश्चिक—			—धन—			—मकर—			—कुम्भ—			—मीन—		
कन्या	नक्षत्र	अश.	भर.	कृत्ति १	कृति ३	रोह.	मृग. २	मृग २	आर्द्रा	पुन. ३	पुन. १	पुष्य	श्ले	मघ	पूफा	उफा. १	उफा. ३	हस्त	चि. २	चित्रा २	स्वा.	विश. ३	विश. १	अनु	ज्ये.	मूला	पूषा	उषा १	उषा ३	श्रव	ध. २	धनि २	शत	पूभा ३	पूभा. १	उभा.	रेव
	चित्रा २	२२	१४ ६८	२८	२३॥ ७	१८॥ ६७	१०॥ ७८	१२ ८९	२० ६९	१८॥ ९	१९॥	११ ८	२४॥	२७॥	१०॥ ६८	१७॥ ४६	१७॥ ४६	२० २	२० २८	२८ ८	२७	३३॥	२३॥ २	६॥ २८	२०॥ २	२७	१३ ६८	२१ ६	२३॥ ६	२५	२३॥ ८	१९ ८९	२६ ९	१८॥ ६९	१२ ६७	३ ६८७	१२॥ ७
तुला	स्वा.	२८॥ ४	२९॥	१७॥ ८	१२॥ ७८	१५॥ ७८	२६ ७	२७ ९	२६॥ ९	२७॥ ९	२८	२७	१३॥ ८	१३॥ ८	२७॥	२५॥	२५॥ २	२७॥ २	२१ २	२८	२८ ८	२० ७	१० २८	२३॥ २	१८॥ २	२३	२७	१९ ८	२१॥ ८	२२॥ ८	२६	२१ ९	२२ ७९	२५ ९	१८॥ ७	१९ ७	१२ ७८
	विशा ३	२१॥	२२ ६	२० ८	१५ ७८	९ ६७८	१७ ७	१८॥ ९	२० ६९	२० ९	२०॥	२०॥	१७ ८	१६॥ ८	१८॥ ६	१७॥ ४६	१७॥ २४६	१८॥ २	२६ २	३३॥	१९ ८	२८ ८	१६ २८	१६ २	२१॥ २	२७॥	२१ ६	१३ ६८	१५॥ ६८	१५॥ ८	२९॥	२४ ९	२६ ९	२० ६९	१३॥ ६७	१२॥ ४६	४ ७७८
	विश १	१६॥ ७	१६॥ ६७	१७॥ ७८	१९॥ ८	१३॥ ६८	२१॥	११ ७	१२॥ ६७	१३॥ ७	१८ ९	१८ ९	१७॥ ८९	२७॥ ८	२२॥ ६	२१॥ ६	१८ ४६	१८	२६	२१॥ ८	७ २८	१५ २८	२८ ८	२७	३१॥ ७	२१॥ २	१५॥ २६	७॥ २६८	११ ६८	११ ८	२५	२४	२६॥	१९॥ ६	१९ ६९	१८ ६९	९॥ ४८९
वृश्चि.	अनु	२३॥ ६	१७॥ ७८	१८॥ ७	२३॥	२७॥	२०॥ ८	१० ७८	१५ ४७	१९॥ ७	२५ ९	१७ ८९	२० ९	२७॥	२०॥ ८	२८॥	२४	२५	११ ८	६॥ २८	२०॥ १२	१६ २	२८	२८ ८	३१	१५॥ २४	१३॥ २८	२१॥ २	२५	२६	१२ ८	११ ८	२०	२७॥	२४ ९	१८ ८९	२६ ९
	ज्ये.	१० १८	१७॥ ६७	२३॥ ७	२८॥	२२॥ ६	२९॥	१२ ७	२ ४८७	४ ७८	९॥ ८९	२० ९	२५ ९	३१	२३॥ ६	१५॥ ६८	११ ६८	११ ८	२४	१९॥ १२	१७॥ १२६	१९॥ २	३१॥	३०	२८ ८	१४ २४८	१६॥ २६	१६॥ २६	२० ६	२०	२५	२४	१७ ८	१० ६८	९॥ ६८९	२० ६९	२० ९
	मूला	११॥ ८९	१९ ६९	२५ ९	१९॥ ७	१३ ६७	१२॥ ७	२१	१४ ६८	१२ ८	७॥ ७८	१८॥ ७	२३॥ ७	२४ ९	१८ ६९	१९॥ ६८९	१३	१३ ८	२६	२६	२१	२६	२२॥ २	१६॥ २४	१६ २४८	२८ ८	२८ ६	१५॥ ६	१३॥ २६	१७॥ २	१९॥ २	२८॥	२१॥ ८	१७॥ ६८	१६॥ ६८	२७॥ ६	२६
धनु	पूषा	२६ ९	१९ ८९	१९ ६४९	१३॥ ४६७	१९ ७	११ ७८	१९ ८	२७	२७	२२॥ ७	१७॥ ४७८	१६॥ ६	१९ ६९	१७ ८९	२५ ९	२८॥	२७	१२ ६८	१२ ६८	२७	२० ६	१६॥ २६	१५॥ २८	१८ २६	२७ ६	२८ ८	३४	२२ २	२२॥ २	५॥ २६८	१७॥ ६८	२३॥ ६	२८॥	२९॥	२२॥ ८	३०॥
	उषा १	२४ ९	२५॥ ९	११॥ ६८९	६ ७८	१० ४८	१६॥ ४७	२५ ४	२६	२७	२२॥ ७	२२॥ ७	८॥ ६७८	८॥ ६७९	२४ ९	२५ ९	२८॥	२८॥	२०	२०	१९	१२ ६	८॥ १६	२३॥ ८	१८॥ ६८	२५ २६८	३५ २	२८ २६	१८	१५	१७॥ ८	२२॥ २८	२३॥ २८	२८॥ २८१	२९॥ ६	३०॥ ६	२२॥
	उषा ३	२७	२८॥	१७॥ ६८	१२ ६८९	१६ ४८९	२२॥ ४९	१९॥ ४७	२७॥ ७	२१॥ ७	२८	२८	१४ ६८	५॥ ६७८	२० ७	२१ ७	२४ ९	२५ ९	१५॥ ६९	२२॥ ६१	२१॥ ८	१७॥ ६८	१२ ६८	२७	२१ ६	१७॥ २६	२४ २	१७ २८	२८ ८	२७ ८	२५॥ ६	१५॥ २६	१६॥ २६	२१॥ २	२९॥	३०॥	२२॥ ८
मकर	श्रव	२८	२७	१७॥ ४८	१२ ४८९	१७ ८९	२६ ९	२३ ७	१९॥ ७	२१॥ ७	२८	२८ ४	१४ ८	५॥ ७८	१८॥ ७	२० ७	२२ ९	२७॥ ९	१९ ९	२४ १	२१॥ ८	१७॥ ८	१२ ८	२७	२१	१४ ४	२२॥ २	१५ २८	२६ ८	२८ ८	२७ ०	१७ २	१८ २	२०॥ २	२८॥	२९॥	२३॥ ८
	धनि २	२०	११ ४६८	२६	२३॥ ९	१८ ६९	११ ८९	८ ७८	१६ ६७	१७॥ ७	२१	१३ ८	२७	१८॥ ७	७॥ ६७८	१०॥ ६७	१५॥ ९	१८ ९	१५ ८९	२४ १८	२४	२८॥	२६	१२ ८	२६	२०॥ २	६॥ २६८	१७॥ २६	२५॥ ६	२७	२८ ८	१८ ८	२३॥ २	१९॥ ६	२५॥ ६	१५ ६८	२२॥ ४६
	धनि २	१९॥	१०॥ ४७८	२५॥	३०	२५॥ ६	१९॥ ८	११ ८९	१९ ६९	१८ ९	१२ ७	४ ७८	९ ७	२७॥	१७॥ ६८	१८॥ ६	१७॥ ६७	१९ ७	१७ ७८	१८ ८९	२० ९	२७॥ ९	२५	११ ८	२५	२९॥	१५॥ ६८	२३॥ ६	१६॥ २६	१८ २	१८ २८	२८ ८	३३	२७॥ ६	१७ २६	६॥ २६८	१३॥ २४
कुम्भ	शत	१७॥ ८	२०॥ ६	२६॥	३१	२५ ६	२६॥	२० ९	१२ ६८	१२ ८९	६॥ ७८	१३ ७	१९॥ ७	२५॥	१९॥	११॥ ६८	१०॥ ६७८	१०॥ ७	२५ ७	२६ ९	२१ ९	२६ ९	२६॥	२०	१८ ८	२२॥ ८	२७॥ ६	२७॥ ६	१७ ६७	१७॥ ६७	२४ २	३३	२८ ८	१९ ६८	८ ६८	१६॥ २६	१५॥ २
	पूभा ३	१७॥ ८	२७॥ ४	१९॥ ६	२७॥ ६	३०	३०	२३॥ ९	१७ ८९	१७ ८९	११॥ ८९	१९॥ ७	१३ ६७	१८॥ ६	२७॥	१६॥ ८	१५॥ ७८	१५॥ ७८	१९॥ ६७	१८॥ ६९	२६ ९	२० ६९	२०॥ ६	२६॥	११ ६८	१५ ६८	२९॥	२९॥	२२॥ २	२२॥ २	१८॥ २६	२८॥ ६	१९ ६८	२८ ८	१६॥ २८	२२ २	१९॥ २४
	पूभा १	१७॥ २८	२१॥ २४	१६॥ २६	१९ ६	२६	२६	२४	१८॥ ८	१८॥ ८	१७ ८९	२५ २	१८॥ ६९	१६॥ ६७	२२॥ ७	१७॥ ७८	१६ ८	१६ ८	१८ ६	११ ६७	२८॥ ७	१२॥ ६७	१९ ६९	२५ ९	९॥ ६८९	१४ ६८	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२७॥ ६	१६ २६	७ २६८	१५ २८	२८ ८	३३	३०॥ ४
मीन	उभा	२३॥ २	१५॥ २८	१८॥ २६	२१ ६	२६	१८ ८	१७ ८	२५	२६॥	२६ ९	१९ ८९	२० ६९	१७॥ ६९	१७ ७८१	२५॥ ७	२७	२६	९ ४६८	२॥ ४६८	१९ ७	११॥ ४६७	१८ ६९	१८ ८९	२० ६९	२३॥ ६	२१॥ ८	२९॥	२१॥	२९॥	१७॥ १८	५॥ २३८	१६ २६	२१॥ २	३३	२८ ८	३४
	रेव	२५ २	२३॥ २	१०॥ २८	१४ ६८	१७ ८	२६	२४	२४	२५	२७॥	२६	१३	१३	२२॥	२२॥	२४	२५	१९	१२॥	१०॥	४	१०॥	२६	२१	२८॥	२८॥	२८॥	१९॥	२१॥	२२॥	१३॥	१४॥	१५	२२॥	१३	२८

किसी स्थान में शनि पड़ा हो तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता | ३० दिन तक जन्ममास

एषाँ परिहारवाक्यानि

न वर्गो न गणो न योनिर्द्विर्द्वाशके नैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नवपंचमे वा राशीश मैत्री शुभदा विवाहे।।
नाडीदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्।।
एकनक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा।।
रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्ये श्रवण पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षभेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते।।
ज्योतिष्चिन्तामणि

मरणे-पितृ मातृश्च सग्राह्यो नव पंचमे।
वरस्य पंचमे कन्या कन्यायां नवमो वरः।।

वर और कन्या की राशियों के स्वामी एक हों वा दोनों के स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर्णादि ७ कुटों का दोष नहीं रहता। इसी तरह नाड़ी दोष में यदि वर और कन्या का नक्षत्र भिन्न २ हो किन्तु राशि एक हो, अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न २ हो तो नाड़ी दोष नहीं होता। यदि दोनों की एक राशि और एक ही नक्षत्र हो तो विवाह शुभ नहीं होता, किन्तु एक नक्षत्र में भिन्न २ चरण होने से अत्यावश्यक स्थितियों में विवाह शुभ हो जाता है।

ग्रह मेलापक विचार

वर और कन्या की कुंडली में मिलान उत्तम होना आवश्यक है। क्योंकि उत्तम मिलान से द्रव्य पुत्र, पति पत्नी का सुख प्राप्त होगा। वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।२।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक होता है। यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

जैसे कहा है—लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
वरः पत्नीं विनाशाय कन्या पतिविनाशिनी।

परिहार—यदि वर की कुण्डली में पूर्वोक्त स्थानों पर मंगल हो और कन्या की जन्म कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। इसी प्रकार एक कुण्डली में मंगल हो और दूसरी की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ा हो तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है।

अतः फिर भी वर कन्या के लग्न, लग्नेश, सप्तम सप्तमेश, अष्टम अष्टमेश, पंचम भाव तथा स्त्री कारक शुक्र इन योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योनों का विचार कर ज्योतिषी-कुण्डली का मिलान करें।

वर वरण में मुहूर्त विचार

(चंडेश्वर) कृ. पूर्वा ३. और विवाह नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ वार भद्रादि दोष रहित शुभ समय में वर. का वरण कन्या के भ्राता से अथवा ब्राहमण के द्वारा करना चाहिए।

कन्यावरण में मुहूर्त विचार

(चिंतामणी) कन्या का वरण अश्वि.कृ. पूर्वा ३ अनु. उषा श्र. ध निष्टा और विवाह के नक्षत्रों में तथा शुभ तिथि, शुभ वार और शुभ समय में वस्त्र आभूषण फल और मिष्टान्नादि से कन्या का वरण करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त विचार

विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषा, मार्ग, माघ फाल्गुण के महिनों को ग्रहण किया है किन्तु कई एक आचार्यों ने चैत्र और पौष इन दोनों महीनों को त्या कर शेष १० महीनों को ग्रहण किया है। इसलिए (भद्रदेश) पंजाब में अति प्राचीन काल से श्रा. भादों. अश्वि. महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आती है। पर्वतीय प्रदेशों में कार्तिक महीने में भी विवाह होते हैं। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में सूर्य चं बु. बृ. शु. शुभ वारों में मं. श. वार मध्यम कहे हैं। रो. मृ मघा उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. मू. रे. इन नक्षत्रों में, वर को सूर्य और चन्द्रमा का बल देख कर विषम वर्षों में और कन्या को गुरु और चन्द्रमा का बल देखकर सम वर्षों में विवाह संस्कार करना शुभ कहा है। कन्या की अवस्था यदि १६ वर्ष से अधिक हो तो गुरु का बल देखना जरूरी नहीं। (वसिष्ठ)।

पहिले गर्भ के लिए जन्म मासादिकों का निषेधः

(नारदः) न जन्ममासे न जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा आद्यागर्भे सुतस्यार्थ दुहितुर्नो करग्रहः।। जन्मदिन से लेकर ३० दिन तक जन्ममास कहलाता है। जन्ममास तिथि और जन्म नक्षत्र में पहिले गर्भ के पुत्र वा कन्या का विवाह न करे। अत्यावश्यक में विवाह करना हो तो वसिष्ठ के मत से जन्मदिन छोड़ दे, अत्रि जी के मत से जन्म दिन से ३ दिन छोड़कर जन्ममास में विवाह कर लेवे। गर्ग जी के मत से ५ दिन छोड़े और भृगु जी के मत से जन्म मास में पक्ष भर छोड़ कर विवाह कर लेवें।

ज्येष्ठ महीने में विवाह का विचार

जहाँ पर लड़का जेठा हो, कन्या जेठी हो और ज्येष्ठ का महीना हो, इस को तीन जेठ कहते हैं। यह तीन जेठ विवाह में सर्वथा वर्जित कहे हैं। और जहाँ पर जेठा लड़का और ज्येष्ठ का महीना अथवा जेठी लड़की और ज्येष्ठ का महीना हो, इस को दो ज्येष्ठ कहते हैं, यह दो ज्येष्ठ विवाह में मध्यम कहे हैं और जहां लड़का और लड़की जेठ न हों केवल ज्येष्ठ का महीना हो तो यह एक जेठ विवाह में उत्तम कहा है। इसी तरह लड़का और लड़की जेठे हों किन्तु जेठ का महीना हो तो दोनों का विवाह भी न करे। **(वराह)** द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेको ज्येष्ठः शुभा वह। ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम्।

(गर्गः) ज्येष्ठायाः, कन्याकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्य वै मिथः विवाहो नै वकर्तव्यो यदि स्यान्निधनं तयोः। जब तक कृतिका नक्षत्र में सूर्य है, तब तक ज्येष्ठ महीने का निषेध होता है। **(भारद्वाजः)**

ज्येष्ठ के महीने की तरह मार्गशीर्ष महीने में भी आद्यगर्भ का विवाह न करें। **(भारद्वाजः)**

विवाह में विशेष विषयों पर विचार

पुत्र के विवाह के उपरांत अपनी कन्या या अपने त्रिपुरुष कुल की कन्या का विवाह ६ महीने तक न करे, अर्थात् लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। इसी तरह विवाह के पीछे मुण्डन या यज्ञोपवीत ६ महीने तक न करे। (नारदः) दो सगे भाइयों का विवाह दो सगी बहिनों से विवाह न करे (वसिष्ठ) पुत्रिका द्वयमेकस्मै न दद्यात् कदाचन। जिस वर को अपनी कन्या देवे, उनकी बहिन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे। **(नारदः)** उद्वाहोनैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम्। दो सगे भाइयों का विवाह ६ महीने के भीतर न करे (वसिष्ठः) विवाहश्चैकजन्यां षण्मासाभ्यन्तरे यदि।

असंशयात्त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत् ।। दो सगे भाइयों का अथवा दो सगी बहिनों का एक संस्कार ६ महीने में करे, (वृद्धमनु:) भिन्न माता के उदर से उत्पन्न हुए २ अथवा यमल भाई या बहिनों का एक कर्म द्वारभेद और मंडपभेद आचार्यभेद से हो सकता है। इसी तरह भेद के हो जानेसे ६ महीने के भीतर हो सकता है। मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृ कर्म न करे, अथवा वर्ष जैसे माघ फाल्गुन में विवाह किया हो तो वैसाख में मुण्डन व यज्ञोपवीत करने से दोष नहीं होता, बड़े मंगल कर्म के उपरान्त लघुमंगल कर्म न करे। वह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी के पुरुषों के लिए ही कहा है। चौथी पीढ़ी के पुरुषों को दोष नहीं होता।

विवाह में त्रिबिक्रम मत् से लग्न का विचार

(त्रिविक्रमसंहितायां) त्याज्या लग्नेऽब्धयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः। रंध्रेचंद्रादयः पंच सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ।। विवाह लग्न का निश्चय करना हो तो लग्न में श. सू. चं. मं. न हों तथा लग्न से ६ठे स्थान में शु. चं. और लग्न का स्वामी न हो, लग्न से ८वें च. मं. बु. शु. नहीं होने चाहियें और लग्न से ७वें स्थान में कोई ग्रह न हो, तो विवाह लग्न शुद्ध होता है, किन्तु चन्द्र और गुरु ७वें होने से समान फल करते हैं।

छटे शुक्र तथा अष्टम मंगल का विचार

विवाह लग्न से छटे स्थान में शुक्र तथा ८वें स्थान में मंगल यदि शत्रुराशिगत वा नीचराशिगत हो या मंगल अस्तगत हो तो भौम दोष नहीं होता। **(कश्यप)** नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा भृगुषट्कं स्थितो दोषे नास्त्यत्र न संशयः ।। अस्तगतेस्तंगे नीचगेभौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते ।। इसी तरह ६, ८, और १२वें स्थानगत चन्द्रमा का नीच और नीचांशक में होने से दोष नहीं होता। नीचानीचांशगश्चन्द्रोनाशुभोष्टारि रिष्फगः।

लग्न में कर्तरी दोष का विचार

लग्न से १२वें स्थान में मार्गी क्रूर ग्रह हो और लग्न से दूसरे स्थान में वक्री क्रूर ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। कर्तरी दोष युक्त लग्न को सर्वथा त्याग देवे। किन्तु कर्तरी ग्रह यदि शत्रु राशि या नीच राशिगत तथा अस्तंगत हो तो कर्तरी दोष नहीं होता (उक्तंच) पापयो: कर्तरीकर्त्रो: शत्रु नीचगृहस्थयो: यदा चास्तंगयोर्वापि कर्तरी नैव दोषदो ।। क्रूर: कर्तरी संयुक्त लग्न चन्द्रं च न त्यजेत्। केन्द्र त्रिकोण संस्थेषु गुरु भार्गव न-चिन्तयेत् ।। शुभे धनस्थैरथवांत्यगे गुरौ न कर्तरी स्यादिति भार्गवो विदु:।

गोधूली लग्न में ग्रहों का विचार

जिस दिन गोधूलि लग्न का विचार करना हो उस दिन गोधूलि लग्न से २।३ और ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा होना चाहिये तथा गोधूलि लग्न से ८वें स्थान में श. बु. बृ. और शुक्र नहीं होने चाहिये, इसी तरह छटे स्थान में चन्द्रमा भी न हो तो गोधूलि लग्न शुद्ध होता है।

गोधूली लग्न विचार

मार्ग, पौष, माघ और फाल्गुन महीनों में संध्या के समय सूर्य गोलक के समान दृष्टिगोचर होने पर जो लग्न होता है, वह गोधूलि लग्न होता है। इसी प्रकार चैत्र, वैसाख ज्येष्ट और आषाढ़ महीनों में सूर्य आधा अस्त हो जाने पर जो लग्न हो उसको गोधूलि लग्न कहते हैं। वैसे ही श्रावण भाद्रपद आश्विन और कार्तिक महीनों में सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाने पर जो लग्न होगा वह गोधूली लग्न कहलाता है।

कुल देवता स्थापन मूहूर्त—अश्वि. रोह. पुष्य. उफा. हस्त. चि. स्वा. अनु. उषा. उभा. रे. इन नक्षत्रों में चं. बुध बृ. शु. वारों में और शुभ तिथियों में और स्थिर लग्न में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ होता है।

विवाहे तैल संख्या चक्रम्

वर और कन्या की राशि द्वारा नीचे लिखे चक्र से तैल संख्या जाने।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७	तैलसंख्या

वधू प्रवेश मुहूर्त विचार

विवाह दिन से २।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१४।१६ इन दिनों में और स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ होता है उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता, यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न कर सके तो विषम दिनों में विषम महीनों में और विषम वर्ष में, अश्वि. रो. मृ. पुष्य ह. चित्रा. स्वा. अनु. मूला. उत्तरा ३ श्रवण. ध-रे-इन नक्षत्रों में चंद्र. बुध बृ. शु. शनि वारों में २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, ५।८।११ लग्नों में लग्न से ४।८। स्थान शुद्ध होने पर भद्रा व्यतिपातादि दोषरहित समय में और बलीचन्द्र के समय वधू प्रवेश शुभ कहा है।

द्विरागमनम्

विवाह से विषम महीनों वर्षों में.वै मार्ग. फा. महीनों में अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ अनु. मू. श्र.ध.श.रे. नक्षत्रों में चं.बृ.शु. वारों में शुभ होता है। बृ.श. मध्यम है, रिक्तारहित तिथियों में और २।३।५।११ लग्नों में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ कहा है। सन्मुख और दाहिने शुक्र का इसमें दोष होता है। रेवती नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा रहने से सन्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता, विवाहादि उत्सव में तीर्थयात्रा में अथवा दुर्भिक्षादि उपद्रव में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता।

शुक्रास्ते वर्ज्य कर्माणि

बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा व्रतारम्भ व्रतोद्यापन महादान सोमयाग, अष्टकश्राद्ध, गोदान, नवान्नेष्टि, प्याऊ, प्रथम श्रावणीकर्म नीलवृषभत्याग, जातकर्म, नामकर्म, मुण्डन संस्कार, देवता-स्थापन, दीक्षा-यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देव-दर्शन, सन्यास अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्यप्रयोग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, नृपदर्शन, इन कर्मों को शुक्र के अस्त में, गुरुके अस्त में और मलमास में नहीं करना चाहिए।

नगर निवासे शुभ विचार

७ नक्षत्र मस्तक पर, ७ नक्षत्र पृष्ट पर, फिर ७ नक्षत्र हृदय पर और ७ नक्षत्र पादों पर रखे, यदि अपना नक्षत्र मष्तक पर पड़े तो धनी मानी, पीठ पर पड़ने से हीनता और धन हानि, हृदय पर सुखसम्पत्ति, तथा पादों पर पडे तो भ्रमणाशील रहता है।

भूमे: शुभाशुभ विचार—नींव खोदते समय यदि काली ईंटे देखने में आवें तो शुभ जानो, हड्डी अथवा केशादि तथा कोयलादि देखने में आवें तो शुभ नहीं होता है।

अथ विवाह संस्कार

दुकान खोलने (या व्यवसाय शुरू करने) के दिन वाले

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्म वर्णाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, वही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण और **ऋषि ऋण** इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर हैं, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि-मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है जिसके अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किए बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता और बालक योग्य वर्ण के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण मिलान करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम और कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवे यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवें या दोनों का जन्म नाम लेवे। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए।

जन्म राशि विचार

कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते।
अन्यानि शुभ कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥

ज्येष्ठ लड़के-लड़की के जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म दिवस पर विवाह करना शुभ नहीं—

'न जन्म मासे जन्मवर्क्षे न जन्म दिवसेऽपि वा।
आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा कर ग्रह॥

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥

विवाहादि कार्यों में त्रिबल शुद्धि

ग्रहबल	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।९	२।५।७।९।११
पूज्य	१।२।५।७।९	——	१।३।६।१०
निंद्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

परिहार वश, ४ एवं १२वें चन्द्र ग्रहणीय तथा वर्तमान काले परिस्थितिवश ४ एवं १२वें गुरु भी विशेष निंदनीय नहीं माना जाता है। एवं च गुरु यदि उच्च (कर्क), मित्र (१, ५, ८) और स्वराशिगत हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य माना जाता है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे पाँचवें और नौवें हो तो १३ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय है क्योंकि लिखा है—कुमारस्योपनयने विवाहेष्वऽपि रवि बलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः १।२।५।७।९ पूज्यः ४।८।१२ निंद्यः २।५।९ त्रयोदशाहात्परतः शुभः॥ अन्येच अनिष्ठ स्थानगे सूर्ये शुभराशिः, पुरोभवेत्। त्रयोदश दिनं दिनानि त्यक्त्वा शेषस्यं शुभमादिशेत्॥

वर-कन्या को तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त

वर या कन्या जिसको तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्रबल देख लेना चाहिए (अर्थात् उसकी राशि से अभीष्ट दिन चन्द्र ४ या ८वें नहीं होना चाहिए)। मेषादि राशि वालों के लिए नीचे लिखे चक्र में निर्दिष्ट संख्यक विवाह दिनों से पूर्व तैल-लापन (चढ़ाना) आदि मंगल कार्य करने चाहिएं।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	७	६	५	५	५	५	५	५	७

उदाहरणार्थ, मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तैल चढ़ाना चाहिए।

दुकान खोलने (या व्यवसाय शुरू करने) के दिन वाले नक्षत्र को सूर्यगत नक्षत्र से शुरू करके गिनें, यदि प्रथम २ नक्षत्रों में आवे तो सौख्य आगामी २ नक्षत्रों में पड़े, तो हानि....इसी प्रकार से शुभाशुभ फल जानें।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२		४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	हानि	धन	हानि	सुख	श्रेष्ठ	लाभ	हानि	लाभ

नौकरी का मुहूर्त—अश्वि मृग पुष्य. ह. चि. ऽनु. रे. नक्षत्रों में रिक्ता रहित तिथियों में सू. बु. वृ. शु. वारों में शुभ लग्न १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशियों के स्वामी और योनि से मित्रता हो।

वहीपत्रारम्भः मुहूर्त—अश्वि रोह मृग पुन. पुष्य उत्तरा ३. हस्त, चित्रा, ऽनु. श्रव, रेव, नक्षत्रों में, रिक्ता रहित तिथियों में सू. चं. बु. वृ. शु. वारों में चर और द्विस्वभाव लग्न में १२वें आठवें पाप ग्रह हों केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तो वही पत्र आरंभ करना शुभ रहता है।

हलप्रवाहणम्—अश्वि रोहि. मृग. पुन. पुष्य. उत्तरी ३. हस्त. चित्रा. स्वा. विशा अनु. मूला. श्रव धनि. शत रेवती नक्षत्रों में २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथियों में चन्द्र. बुध. वृह. शुक्रवारों में २।३।५।७।९।१२ लग्नों में व्यतिपात पर्व रहित समय में शुभ है।

बीज बीजने का मुहूर्त—अ. रो. मृ. पुन. पुष्य, मघा, उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. ऽतु. मूला. धनि. रे. नक्षत्रों में चन्द्र. बुध. वृह. शुक्रवारों में. २।३।५।७।१०।११।१३ इन तिथियों में, शुभ लग्नों में शुभ है।

राहु भाद् बीज वपन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	५	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

खेती काटने का मुहूर्त—भ. कृ. मृ. आर्द्रा, पुष्य, अश्ले. मघा. पूर्वा ३. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. ज्ये. मूला. श्रव. धनि. नक्षत्रों में शुभ वासर शुभ लग्न में शुभ है।

खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोह. मघा. पूफा. उफा. अनु. ज्ये. मू. श्र. नक्षत्रों में, चन्द्र, बुध, बृह, शुक्र, वारों में २।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५। तिथियों में शुभ लग्न में कण मर्दन श्रेष्ठ है।

अनाज को घर लाने का मुहूर्त

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा-३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रों में चं. वृ. शु. वारों में २।३।५।७।१०।११।१३।१५। तिथियों में शुभ लग्न में शुभ है।

नवान्न ग्रहण करने का मुहूर्त

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में शुभवारों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३। तिथियों में, शुभवार शुभ लग्न में शुभ है।

अनाज बेचने का मुहूर्त

कृत. रोह. उत्तरा ३. चित्रा. विशा. अनु. ज्ये. मूला. नक्षत्रों में २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में, शुभवार शुभ लग्न में शुभ है।

अनाज खरीदने का मुहूर्त

रोह. धनि. शत. उत्तरा-३. नक्षत्रों में चन्द्र. बु. वृ. शु. वारों में २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में शुभ लग्न में अन्न का क्रय करना शुभ है।

बीज संग्रह मुहूर्त

अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य. मघा. उ ३, ह. चि. विशा. नक्षत्रों में चं. बु. वृ. शु. वारों में शुभ तिथि शुभ लग्न में शुभ है।

मुकद्दमा आदि में अर्जी देने का मुहूर्त

भर. मूला. आर्द्रा. श्ले. मघा. ज्ये. नक्षत्रों में श. मं. वारों में ४।९।१४। तिथियों में क्रूर चन्द्र में शुभ है।

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इस दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों के मुख में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के होमार्थ समिधा

दधि (दही), क्षीर, घृतादि से सिक्त चरू शाकल्याहुति सूर्यादि मंत्रों के साथ सम्बद्ध ग्रह मंत्र के अन्त में आठ/आठ की संख्या में आहुतियां देवें। घी से स्निग्ध **तिल, जौ, चावल, शक्कर** के मिश्रण को **शाकल्प** कहते हैं। इसमें आवश्यकतानुसार हवन सामग्री अलग से मिला ली जाती है।

सूर्य के लिए **आक** (अर्क), **चन्द्रमा** के लिए **पलाश**, मंगल की **खदिर**, **बुध** के लिए **अपामार्ग**, **गुरु** के लिए **पीप्पल** (अश्वत्थ), **शुक्र** के लिए **उदुम्बर** (गूलर), **शनि** के लिए **शमी**, **राहु** की **दूर्वा** तथा **केतु** ग्रह के लिए **कुशा** के द्वारा होम/हवन करना कल्याणकारी रहता है। यदि किसी कारण वश नवग्रहों से सम्बन्धित अलग-अलग काष्ठ न मिले, तो वे केवल **पलाश** से काम चलाया जा सकता है।

नवग्रहों के होमार्थ (हवन) मंत्र

सूर्य मन्त्र

अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति युवनानि पश्यन् ॥ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१ ॥

चन्द्रमा मन्त्र

पलाश समिधा के साथ—"ओं इमं देवाऽसपत्नं Ω सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते ज्यानराज्ययायेन्द्र स्येन्द्राय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्र मस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

खैर की लकड़ी से—भौम मन्त्र

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सिजिन्वति॥ ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥

बुध मंत्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामायं च। अस्मित्सधस्थे अध्युत्तर—स्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र

ॐ बृहस्पतये अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम॥

शुक्र मन्त्र—

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापति ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान Ω शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, इदं न मम।

शनि मन्त्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम॥

राहु मन्त्र

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मंत्र

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथा। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे इदं न मम॥

यन्त्र-मंत्र साधन मुहूर्त

शुभ तिथि—१ (कृष्ण) , २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) ।

शुभ वार—रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण।

जन केन्द्रों में शुभ ग्रह, ३, ६, ११ वें पाप ग्रह तथा ८, १२ वां भाव विशुद्ध हो। सूर्य-चन्द्र ग्रहण में विशेष शुभ है।

भूमी सुप्तज्ञानम्

संक्रान्तिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमं ९ जोय । दस १० इक्कीस २१ चौबीस वें घट दिन पृथ्वीसोय ।

आवश्यक त्याज्य घटिका

पंचमेवारा ५ घट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका । नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िकाः एक विंशे यम १४ श्चैव. चतुर्विशेदश१०नाड़िका।घटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी । इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसको द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर८का भाग दे तो ग्राम की काकिणी होगी । इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए । ग्राम के निवास को जानकर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें ।

गृहारम्भ मुहूर्त विचार

वै, श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गु. महीनेगृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कातिक मास मध्यम हैं २।३।५।७।१०।११ ।१२।१३। इन तिथियों में चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध. श. रे. नक्षत्रों में २।३। ५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११वें स्थानों में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है ।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें ।

सूर्यभात् वृषवास्तु चक्र

शीर्ष	अग्रपादे	पृष्ठपादे	पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाश	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि. रो.मृ. पुष्य. हस्त.स्वा. श्रव.उत्तरा३इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली [दलीज] स्थापन करना शुभ है ।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	ऊद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठा

अश्वि. मृग. पु. पुष्य. चि. स्वा. अनु. अभि. श्रव. ध. श. रेव. एषुभेषु, २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु. चन्द्र, शुक्र दृश्येः शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या । तत्स्वामीनक्षत्रे तिथि-मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने । कुम्भे ब्रह्मा । कन्यायां विष्णु । मिथुन रुद्रः । सिंहे सूर्यः मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्यः । मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी । वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवाना प्रतिष्ठा कार्या ।

कूप चक्र—नक्षत्र वारो तिथि-संयुक्ता वेदाहृतं तद् गणकेनकार्यम् । एकावशिष्टं च जलंहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलंचस्वर्गं । त्रिशुन्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः ।

ईशान्ये पुष्टि.	पूर्वे ऐश्वर्यम्	आग्नेये पुत्रनाशः
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाशः	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभः	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उसका फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें । जैसे घर की उत्तर दिशा में ऐश्वर्य इत्यादि ।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु जल	खंडित जल	स्वादु जल	क्षय जल	स्वादु जल	क्षार जल	शिला	मिष्ट जलं	क्षार जलं

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन ३ राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश से ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है । इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन ३ राशि की स्थिति वश उपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उसमें खात करना शुभ है ।

खात चक्रम्

ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेये	ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणाः
खाताशुभ	खातःशुभ	खातःशुभ	खातःशुभ	खातःशुभ

नूतनगृह प्रवेश

वै-ज्ये. माघ फाल्गुण महीनों में रो, रे, चि, अनु उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में च बु, बृ. . श, शु वारों में अपने जन्म लग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो । उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचया ३।६।१०।११, स्थिर लग्न में लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १।२।५।७।९।१० स्थानों में शुभ और ३।६।११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होता है पुरातन गृहप्रवेशमें श्रा, का, मार्ग, मासेषु ह, अश्वि, पुष्य म, श्र, ध, [illegible] चापि शुभः । आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयः ।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुद	कंठ
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	ऊद्वेग	लाभ	कलह	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

विपणि मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुष्य-उत्तरा ३. ह. चि. अनु. रेव. एषु मेष, लग्न चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः ३।११।१० स्थितैः.

संस्कार प्रकरण

सीमांत मुहूर्त विचार

यह सीमांत संस्कार गर्भाधान से छटे और आठवें महीने में होते है, उस महिने का स्वामी बलवान् होना चाहिए। गर्भ से लेकर १० महिने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी है, पहिले महिने का स्वामी शुक्र, दूसरे का भौम, ३ गुरु, ४ सूर्य, ५ चंद्र, ६ शनि, ७ बुध, ८वें का लग्नेशः, ९ चन्द्र और १०वें महिने का स्वामी सूर्य होता है २।३।५।७।१०।१२।१३।१५ इन तिथियों में तथा मृ, पुन, पुष्य, ह. मू. श्र. नक्षत्रों में मृ, मं, ब, वारों में २।३।५।७।९।११ लग्नों और लग्न से केन्द्रत्रिकोण स्थान में (१।४।७।१० ९।१५) मे शुक्रग्रह तथा ३।६।११ स्थान मे पापग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इन स्थानो में चन्द्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्ध हो जन्म लग्न और जन्मराशि से ९वां लग्न न हो तो यह मुहूर्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र केअस्त का दोष इस में नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त—पचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृतिरिक्ता तिथि को त्याग कर शुभ तिथिवार में अमृग. स पुनः, पुष्य, हस्तमुला रे व नक्षत्रों मे स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभतिथ, रवि, मं ग गुरुवार अश्वि, रो. मृग तीनों उत्तरा हस्त, स्वा, ऽनु, रेव इन नक्षत्रों में वैधृति, व्यतिपात रहित दिन मे प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकरण मुहूर्त विचार

(नारद के वचन में) यह नामकरण सूतक के अन्त में अपनी २ कुलपरम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सूतकांत मे न हो सके तो गुरु शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पूर्वोन्ह के समय, च.बु.बृ.शु वारों मे २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में अश्वि. रो मृ पुन. पुष्य. उत्तरा ३ह. चि. स्वा. अनु श्र.ध.श.रे. नक्षत्रो मे स्थिर लग्न २।५।८।११ में लग्न से १।४।७।४।९।१० स्थान मे शुभ ग्रह ३।६।११।१२ स्थाना मे पापग्रह तथा ९वा १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने काम कान मे शास्त्र विधि द्वारा नामकरण संस्कार करे, यह जातकर्म सम्पूर्ण व्यवहारों का कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होने से व्यतिपात वैधृति, संक्रांति भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महिने से निकलने लग जाते है उसके प्रत्येक महिने का फल नीचे लिखे चक्र से जान लें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं नाश	भ्रातृहानि	भगिनीहानि	मातृ हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहानि	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्त	फल

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महिने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में चं०, बु० बृ० शु० वारों में अश्वि०, रो० मृ० पुन० पुष्य, उत्तरा० ३, ह०, चित्रा स्वा०, अनु० श्र० रे०, नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दसवा स्थान शुद्ध होने पर और ७वां ८वां ९वां स्थान क्रम से शु० मं० और बुध से रहित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चन्द्रमा हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न हो पूर्वान्ह के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखें, बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े, उसी से बालक की आजीविका जानें।

कर्णवेध :—चातुर्मास (अषाढ़ शु० ११ से कार्तिक शुदि ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४ ९।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें अथवा १६वें दिन अथवा ६ ७।९वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि० मृ. पु पुष्य ह०चि.अनु. अभि, श्र. ध. रे नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर वृश्चि., धन, मीन, लग्न में और लग्न में गुरु हो तो कर्ण छेदन श्रेष्ट होता है।

चूड़ाकरण

यह चूड़ा करण संस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सब वर्षों मे होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते हैं अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते है। २।३।५।१०।११ तिथियों में चं. बु. बृ. शु. वारों में अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में २।३।४।६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म, लग्न और जन्म राशि से ९वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान मे शुभ ग्रह और ३।६।११ वें पापग्रह हों ६।९।१२ वे चन्द्रमा न हो, जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हों। भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महिने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण कर लेवें। बालक जेठा हो तो जेठ के महीने मे चूड़ाकरण न करें।

(वशिष्ट के वचन से)

अक्षरारम्भः

पांचवें वर्ष में और उत्तरायण मे बालक से गणेश विष्णु लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।६।१०।११।१२ तिथियों मे चं. बु. बृ. शु. वारों में, अश्वि आर्द्रा. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. नक्षत्रों मे २।३।५।७।९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवां स्थान शुद्ध होने पर भद्रादि दोष रहित समय में, अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भ

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११।१२ तिथियों में सू. बृ. शु. वारों में अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य. आश्ले. पू ३ ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. नक्षत्रों में २।३।६।९ लग्नों में से ९वां स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपादि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम्

उपनयन संस्कार हो जाने से मनुष्य श्रौत स्मार्त कर्मों का अधिकारी हो जाता है, इस संस्कार के हो जाने से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के कालकहे हैं। ब्राहमणों को ५वें ९वें १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६ठे ११वें और २२वें वर्षों में वैश्यों को ८वें १२वें और २४वें वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै वै. ज्ये आषा. देवशयनी से पूर्व जानें। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्णपक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू. च. बु. बृ. शु. वारों में, अश्वि. मृ. रो. आर्द्रा पुन. पुष्य. आश्ले. पू ३ उत्तरा ३ हस्त चि. स्वा. ऽनु. मू. श्र. ध. श. रे, नक्षत्रों में, २।३।४।५।७।९।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों च. बृ. श. और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो,

चन्द्र स्पष्ट द्वारा विंशोत्तरीदशा का भोग्यकाल जानना | चंद्र स्पष्ट अंश कला | सिंह मेष या धन वर्ष मा दि | वृष कन्या मकर वर्ष मा दि | मिथुन तुला कुम्भ मा दि | कर्क वृश्चिक मीन

चन्द्र स्पष्ट द्वारा विंशोतरीदशा का भोग्यकाल जानना

अपने चन्द्र-स्पष्ट पर आधारित सूर्य-चन्द्रादि दशाओं का भोग्यकाल (वर्ष-मास-दिनादि में) दिया गया है २,३ कलाओं पर की भोग्य दशा जो न हो, आगामी पृष्ठ देखें ध्यान रहे, चन्द्रस्पष्ट पर आधारित दशा-अन्तर्दशा भयात-भभोग द्वारा निकाली दशा में अधिक सूक्ष्म होती है

चंद्र स्पष्ट अंश कला	सिंह मेष या धनु वर्ष मा दि	वृष कन्या मकर वर्ष मा दि	मिथुन तुला कुंभ वर्ष मा दि	कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मा दि
०० ००	केतु०७ ०० ००	सूर्य०४ ०६ ००	मंग०३ ०६ ००	गुरु०४ ०० ००
०० २०	०६ ०९ २७	०४ ०४ ०६	०३ ०३ २७	०३ ०७ ०६
०० ४०	०६ ०७ २४	०४ ०२ १२	०३ ०१ २४	०३ ०२ १२
०१ ००	०६ ०५ २१	०४ ०० १८	०२ ११ २१	०२ ०९ १८
०१ २०	०६ ०३ १८	०३ १० २४	०२ ०९ १८	०२ ०४ २४
०१ ४०	०६ ०१ १५	०३ ०९ ००	०२ ०७ १५	०२ ०० ००
०२ ००	०५ ११ १२	०३ ०७ ०६	०२ ०५ १२	०१ ०७ ०६
०२ २०	०५ ०९ ०९	०३ ०५ १२	०२ ०३ ०९	०१ ०२ १२
०२ ४०	०५ ०७ ०६	०३ ०३ १८	०२ ०१ ०६	०० ०९ १८
०३ ००	०५ ०५ ०३	०३ ०१ २४	०१ ११ ०३	०० ०४ २४
०३ २०	०५ ०३ ००	०३ ०० ००	०१ ०९ ००	शनि१९ ०० ००
०३ ४०	०५ ०० २७	०२ १० ०६	०१ ०६ २७	१८ ०६ ०९
०४ ००	०४ १० २४	०२ ०८ १२	०१ ०४ २४	१८ ०० १८
०४ २०	०४ ०८ २१	०२ ०६ १८	०१ ०२ २७	१७ ०६ २७
०४ ४०	०४ ०६ १८	०२ ०४ २४	०१ ०० १८	१७ ०१ ०६
०५ ००	०४ ०४ १५	०२ ०३ ००	०० १० १५	१६ ०७ १५
०५ २०	०४ ०२ १२	०२ ०१ ०६	०० ०८ १२	१६ ०१ २४
०५ ४०	०४ ०० ०९	०१ ११ १२	०० ०६ ०९	१५ ०८ ०३
०६ ००	०३ १० ०६	०१ ०९ १८	०० ०४ ०६	१५ ०२ १२
०६ २०	०३ ०८ ०३	०१ ०७ २४	०० ०२ ०३	१४ ०८ २१
०६ ४०	०३ ०६ ००	०१ ०६ ००	राहु१८ ०० ००	१४ ०३ ००
०७ ००	०३ ०३ २७	०१ ०४ ०६	१७ ०६ १८	१३ ०९ ०९
०७ २०	०३ ०१ २४	०१ ०२ १२	१७ ०१ ०६	१३ ०३ १८
०७ ४०	०२ ११ २१	०१ ०० १८	१६ ०७ २४	१२ ०९ २७
०८ ००	०२ ०९ १८	०० १० २४	१६ ०२ १२	१२ ०४ ०६
०८ २०	०२ ०७ १५	०० ०९ ००	१५ ०९ ००	११ १० १५
०८ ४०	०२ ०५ १२	०० ०७ ०६	१५ ०३ १८	११ ०४ २४
०९ ००	०२ ०३ ०९	०० ०५ १२	१४ १० ०६	१० ११ ०३
०९ २०	०२ ०१ ०६	०० ०३ १८	१४ ०४ २४	१० ०५ १२
०९ ४०	०१ ११ ०३	०० ०१ २४	१३ ११ १२	०९ ११ २१
१० ००	०१ ०९ ००	चंद्र१० ०० ००	१३ ०६ ००	०९ ०६ ००
१० २०	०१ ०६ २७	०९ ०९ ००	१३ ०० १८	०९ ०० ०९
१० ४०	०१ ०४ २४	०९ ०६ ००	१२ ०७ ०६	०८ ०६ १८
११ ००	०१ ०२ २१	०९ ०३ ००	१२ ०१ २४	०८ ०० २७
११ २०	०१ ०० १८	०९ ०० ००	११ ०८ १२	०७ ०७ ०६
११ ४०	०० १० १५	०८ ०९ ००	११ ०३ ००	०७ ०१ १५
१२ ००	०० ०८ १२	०८ ०६ ००	१० ०९ १८	०६ ०७ २४
१२ २०	०० ०६ ०९	०८ ०३ ००	१० ०४ ०६	०६ ०२ ०३
१२ ४०	केतु०० ०४ ०६	चंद्र०८ ०० ००	राहु०९ १० २४	शनि०५ ०८ १२
१३ ०)	०० ०२ ०३	०७ ०९ ००	०९ ०५ १२	०५ ०२ २१
१३ २०	शुक्र२० ०० ००	०७ ०६ ००	०९ ०० ००	०४ ०९ ००
१३ ४०	१९ ०६ ००	०७ ०३ ००	०८ ०६ १८	०४ ०३ ०९
१४ ००	१९ ०० ००	०७ ०० ००	०८ ०१ ०६	०३ ०९ १८
१४ २०	१८ ०६ ००	०६ ०९ ००	०७ ०७ २४	०३ ०३ २७
१४ ४०	१८ ०० ००	०६ ०६ ००	०७ ०२ १२	०२ १० ०६
१५ ००	१७ ०६ ००	०६ ०३ ००	०६ ०९ ००	०२ ०४ १५
१५ २०	१७ ०० ००	०६ ०० ००	०६ ०३ १८	०१ १० २४
१५ ४०	१६ ०६ ००	०५ ०९ ००	०५ १० ०६	०१ ०५ ०३
१६ ००	१६ ०० ००	०५ ०६ ००	०५ ०४ २४	०० ११ १२
१६ २०	१५ ०६ ००	०५ ०३ ००	०४ ११ १२	०० ०५ २१
१६ ४०	१५ ०० ००	०५ ०० ००	०४ ०६ ००	बुध१७ ०० ००
१७ ००	१४ ०६ ००	०४ ०९ ००	०४ ०० १८	१६ ०६ २७
१७ २०	१४ ०० ००	०४ ०६ ००	०३ ०७ ०६	१६ ०१ २४
१७ ४०	१३ ०६ ००	०४ ०३ ००	०३ ०१ २४	१५ ०८ २१
१८ ००	१३ ०० ००	०४ ०० ००	०२ ०८ १२	१५ ०३ ४८
१८ २०	१२ ०६ ००	०३ ०९ ००	०२ ०३ ००	१४ १० १५
१८ ४०	१२ ०० ००	०३ ०६ ००	०१ ०९ १८	१४ ०५ १२
१९ ००	११ ०६ ००	०३ ०३ ००	०१ ०४ ०६	१४ ०० ०९
१९ २०	११ ०० ००	०३ ०० ००	०० १० २४	१३ ०७ ०६
१९ ४०	१० ०६ ००	०२ ०९ ००	०० ०५ १२	१३ ०२ ०३
२० ००	१० ०० ००	०२ ०६ ००	गुरु१६ ०० ००	१२ ०९ ००
२० २०	०९ ०६ ००	०२ ०३ ००	१५ ०७ ०६	१२ ०३ २७
२० ४०	०९ ०० ००	०२ ०० ००	१५ ०२ १२	११ १० २४
२१ ००	०८ ०६ ००	०१ ०९ ००	१४ ०९ १८	११ ०५ २१
२१ २०	०८ ०० ००	०१ ०६ ००	१४ ०४ २४	११ ०० १८
२१ ४०	०७ ०६ ००	०१ ०३ ००	१४ ०० ००	१० ०७ १५
२२ ००	०७ ०० ००	०१ ०० ००	१३ ०७ ०६	१० ०२ १२
२२ २०	०६ ०६ ००	०० ०९ ००	१३ ०२ १२	०९ ०९ ०९
२२ ४०	०६ ०० ००	०० ०६ ००	१२ ०९ १८	०९ ०४ ०६
२३ ००	०५ ०६ ००	०० ०३ ००	१२ ०४ २४	०८ ११ ०३
२३ २०	०५ ०० ००	मंग०७ ०० ००	१२ ०० ००	०८ ०६ ००
२३ ४०	०४ ०६ ००	०६ ०९ २७	११ ०७ ०६	०८ ०० २७
२४ ००	०४ ०० ००	०६ ०७ २४	११ ०२ १२	०७ ०७ २४
२४ २०	०३ ०६ ००	०६ ०५ २१	१० ०९ १८	०७ ०२ २१
२४ ४०	०३ ०० ००	०६ ०३ १८	१० ०४ २४	०६ ०९ १८
२५ ००	०२ ०६ ००	०६ ०१ १५	१० ०० ००	०६ ०४ १५
२५ २०	०२ ०० ००	०५ ११ १२	०९ ०७ ०६	०५ ११ १२

चन्द्र स्पष्ट अंश कला	सिंह मेष या धनु वर्ष मा दि	वृष कन्या मकर वर्ष मा दि	मिथुन तुला कुंभ वर्ष मा दि	कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मा दि
२५ ४०	शुक्र०१ ०६ ००	मंग०५ ०९ ०९	गुरु०९ ०२ १२	बुध०५ ०६ ०९
२६ ००	०१ ०० ००	०५ ०७ ०६	०८ ०९ १८	०५ ०१ ०६
२६ २०	०० ०६ ००	०५ ०५ ०३	०८ ०४ २४	०४ ०८ ०३
२६ ४०	सूर्य०६ ०० ००	०५ ०३ ००	०८ ०० ००	०४ ०३ ००
२७ ००	०५ १० ०६	०५ ०० २७	०७ ०७ ०६	०३ ०९ २७
२७ २०	०५ ०८ १२	०४ १० २४	०७ ०२ १२	०३ ०४ २४
२७ ४०	०५ ०६ १८	०४ ०८ २१	०६ ०९ १८	०२ ११ २१
२८ ००	०५ ०४ २४	०४ ०६ १८	०६ ०४ २४	०२ ०६ १८
२८ २०	०५ ०३ ००	०४ ०४ १५	०६ ०० ००	०२ ०१ १५
२८ ४०	०५ ०१ ०६	०४ ०२ १२	०५ ०७ ०६	०१ ०८ १२
२९ ००	०४ ११ १२	०४ ०० ०९	गुरु०५ ०२ १२	०१ ०३ ०९
२९ २०	०४ ०९ १८	०३ १० ०६	०४ ०९ १८	०० १० ०६
२९ ४०	०४ ०७ २४	०३ ०८ ०३	०४ ०४ २४	०० ०५ ०३
३० ००	०४ ०० ००	०३ ०६ ००	०४ ०० ००	०० ०० ००

सारिणी (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं अनुसार दशाशेष

कला	केतु मा	केतु दि	शुक्र मा	शुक्र दि	रवि मा	रवि दि	चन्द्र मा	चन्द्र दि	मंगल मा	मंगल दि	राहु मा	राहु दि	गुरु मा	गुरु दि	शनि मा	शनि दि	बुध मा	बुध दि	कला
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	०	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०
११	१	०४	३	०९	१	००	१	२०	१	०४	२	२९	२	१९	३	०४	२	२४	११
१२	१	०७	३	१८	१	०२	१	२४	१	०७	३	०७	२	२६	३	१३	३	०२	१२
१३	१	११	३	२७	१	०५	१	२९	१	११	३	१६	३	०४	३	२१	३	०९	१३
१४	१	१४	४	०६	१	०८	२	०३	१	१४	३	२४	३	११	४	००	३	१७	१४
१५	१	१७	४	१५	१	११	२	०८	१	१७	४	०२	३	१८	४	०८	३	२५	१५
१६	१	२०	४	२४	१	१३	२	१२	१	२०	४	१०	३	२५	४	१७	४	०२	१६
१७	१	२३	५	०३	१	१६	२	१७	१	२३	४	१८	४	०२	४	२५	४	१०	१७
१८	१	२७	५	१२	१	१९	२	२१	१	२७	४	२६	४	१०	५	०४	४	१८	१८
१९	२	००	५	२१	१	२१	२	२६	२	००	५	०४	४	१७	५	१२	४	२५	१९
२०	२	०३	६	००	१	२४	३	००	२	०३	५	१२	४	२४	५	२१	५	०३	२०

"विभिन्न अक्षांश एवं नगरों का सूर्योदयास्त ज्ञान"

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न उत्तरीय अक्षांशों एवं उन पर आधारित नगरों का स्थानीय मध्यम सूर्योदय एवं अस्त लिख रहे हैं। इनमें यद्यपि चरान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं परन्तु स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदयास्त जानने के लिए अपने अभीष्ट (Required) नगर (अक्षांश) का रेखान्तर संस्कार युक्त-वियुक्त (जमा अथवा ऋण) करने से अमुक स्थान का दृष्यमान सूर्योदयास्त निकल आयेगा। जन्मपत्री आदि में जन्मेष्ट आदि निकालने के लिए सूर्योदयास्त की वास्तविक स्थिति प्राप्त करने के लिए किरण वक्री भवन (Refractional) संस्कार के ३/४ मिनट दृष्य सूर्योदय में जमा करने तथा दृष्य सूर्यास्त में घटा लेने से शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदयास्त निकल आएगा। सूर्योदयास्त अक्षांश भेद के अनुसार किए प्रत्येक मास की परिवर्तनशील सूर्य क्रान्ति के अनुसार न्यूनाधिक रूपेण कुछ सैकिण्ड का अन्तर पड़ता है।

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे इंग्लैड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के है।

शुभचिंतक पं. पन्नालाल गणितकर्ता

अक्षांश सू.क्रां	०° मि.सै.	१०° मि.सै.	२०° मि.सै	३०° मि.सै.	३५° मि.सै.	४०° मि.सै.	४५ मि.सै.
०°	३.०८	३.११	३.२०	३.३७	३.५०	४.०५	४.२६
५	३.०९	३.१२	३.२१	३.३८	३.५१	४.०७	४.२८
१०	३.११	३.१४	३.२४	३.४२	३.५५	४.१२	४.३४
१५	३.१५	३.१८	३.२८	३.४७	४.०२	४.२१	४.४६
२०	३.२०	३.२४	३.३५	३.५६	४.१३	४.३४	५.०४
२३.२७	३.२५	३.२९	३.४१	४.०५	४.२२	४.४७	५.२२

सर्व प्रकार के कष्टों से निवारण मंत्र

"ह्रीं ॐ दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता नमः श्रीं ॐ हुं फट् स्वाहा।"

भगवती देवी के सम्मुख ज्योति प्रज्वलित करके विधि पूर्वक श्री दुर्गा पूजन करते हुए उपरोक्त मंत्र का प्रतिदिन ११००० जाप करना चाहिए। इससे घोर विपत्ति एवं दुख दारिद्रय से छुटकारा मिल जाता

धन प्राप्ति के लिए एक अन्य बीज मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं नमः:—एकान्त में बैठकर इस मंत्र को २१ हजार बार पढ़े २१ बार दूध चावल की खीर का हवन करें जब तक कार्य सिद्ध न हो जाए, पृथ्वी पर सोये। दुग्ध पदार्थों का ही भक्षण करें। अवश्य सिद्धि होगी। अन्न का त्याग रखें।

धन-प्रदायक महालक्ष्मी-मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवनपालिन्यै महालक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्रयं नाशय प्रचुरं धनं देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ।

अक्षया तीज, रविपुष्य या दीपावली की रात्रि को १२५०० की संख्या में जप करे। भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करके इस मंत्र को जपे। इससे जीवन में कभी धन का अभाव नहीं होगा।

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर +या− करने से स्टै. टा. में सू.उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.	अक्षांश २०°उ.	अक्षांश २५°उ.	अक्षांश ३०°उ.	अक्षांश ३५°उ.	अक्षांश ४०°उ.	अक्षांश ४५°उ.	अक्षांश ५०°उ.	अक्षांश ५२°उ.	अक्षांश

अक्षया तीज, रविपुष्य या दीपावली की रात्रि को १२५०० की संख्या में जप करें। भगवती लक्ष्मी की ... इससे जीवन में कभी धन का अभाव नहीं होगा।

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर +या– करने से स्टै. टा. में सू.उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.		अक्षांश २०°उ.		अक्षांश २५°उ.		अक्षांश ३०°उ.		अक्षांश ३५°उ.		अक्षांश ४०°उ.		अक्षांश ४५°उ.		अक्षांश ५०°उ.		अक्षांश ५२°उ.		अक्षांश ५४°उ.	
ता. जन.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.
१ जन.	६।१७	१७।४९	६।३५	१७।३१	६।४५	१७।२१	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५८	७।२२	१६।४४	७।३९	१६।२८	७।५९	१६।०८	८।०८	१५।५८	८।१९	१५।४७
३ ,,	६।१८	१७।५१	६।३६	१७।३३	६।४६	१७।२४	६।५६	१७।१३	७।०८	१७।००	७।२२	१६।४६	७।३९	१६।३१	७।५९	१६।११	८।०८	१६।०१	८।१९	१५।५०
५ ,,	६।१८	१७।५२	६।३६	१७।३४	६।४६	१७।२५	६।५७	१७।१४	७।०९	१७।०२	७।२२	१६।४९	७।३८	१६।३३	७।५९	१६।१३	८।०८	१६।०४	८।१९	१५।५३
७ ,,	६।१९	१७।५३	६।३७	१७।३५	६।४७	१७।२७	६।५७	१७।१६	७।०९	१७।०४	७।२२	१६।५१	७।३८	१६।३५	७।५८	१६।१६	८।०७	१६।०७	८।१८	१५।५६
९ ,,	६।२०	१७।५४	६।३७	१७।३६	६।४७	१७।२८	६।५७	१७।१७	७।०९	१७।०५	७।२२	१६।५३	७।३८	१६।३७	७।५८	१६।१८	८।०६	१६।०९	८।१७	१५।५९
११ ,,	६।२०	१७।५५	६।३८	१७।३८	६।४७	१७।२९	६।५७	१७।१८	७।०९	१७।०७	७।२२	१६।५५	७।३७	१६।४०	७।५७	१६।२१	८।०५	१६।११	८।१५	१६।०२
१३ ,,	६।२१	१७।५६	६।३८	१७।३९	६।४७	१७।३०	६।५७	१७।२०	७।०८	१७।०९	७।२१	१६।५७	७।३७	१६।४२	७।५६	१६।२३	८।०४	१६।१४	८।१४	१६।०४
१५ ,,	६।२२	१७।५८	६।३८	१७।४०	६।४७	१७।३१	६।५७	१७।२२	७।०८	१७।११	७।२१	१६।५९	७।३६	१६।४४	७।५५	१६।२६	८।०३	१६।१७	८।१२	१६।०८
१७ ,,	६।२२	१७।५९	६।३८	१७।४१	६।४७	१७।३३	६।५७	१७।२४	७।०८	१७।१३	७।२०	१७।०१	७।३५	१६।४७	७।५४	१६।२९	८।०१	१६।२१	८।१०	१६।१२
१९ ,,	६।२३	१८।००	६।३८	१७।४२	६।४७	१७।३४	६।५६	१७।२५	७।०७	१७।१५	७।१९	१७।०३	७।३३	१६।५०	७।५२	१६।३२	७।५९	१६।२४	८।०८	१६।१५
२१ ,,	६।२३	१८।०१	६।३८	१७।४३	६।४७	१७।३५	६।५६	१७।२७	७।०६	१७।१७	७।१८	१७।०६	७।३२	१६।५२	७।५०	१६।३५	७।५७	१६।२७	८।०६	१६।१९
२३ ,,	६।२३	१८।०२	६।३८	१७।४४	६।४६	१७।३८	६।५५	१७।२९	७।०५	१७।१९	७।१७	१७।०८	७।३०	१६।५५	७।४८	१६।३९	७।५४	१६।३०	८।०४	१६।२३
२५ ,,	६।२३	१८।०३	६।३७	१७।४६	६।४६	१७।४०	६।५५	१७।३१	७।०४	१७।२१	७।१६	१७।१०	७।२९	१६।५८	७।४५	१६।४२	७।५२	१६।३४	८।००	१६।२७
२७ ,,	६।२३	१८।०४	६।३७	१७।४८	६।४५	१७।४२	६।५४	१७।३३	७।०३	१७।२३	७।१४	१७।१३	७।२७	१७।०१	७।४२	१६।४५	७।४९	१६।३८	७।५७	१६।३१
२९ ,,	६।२३	१८।०५	६।३७	१७।४९	६।४५	१७।४३	६।५३	१७।३४	७।०२	१७।२५	७।१३	१७।१५	७।२५	१७।०४	७।४०	१६।४८	७।४७	१६।४२	७।५४	१६।३५
३१ ,,	६।२३	१८।०५	६।३७	१७।५१	६।४४	१७।४४	६।५२	१७।३६	७।०१	१७।२७	७।११	१७।१८	७।२३	१७।०७	७।३७	१६।५२	७।४४	१६।४६	७।५१	१६।३९
२ फर.	६।२३	१८।०६	६।३६	१७।५२	६।४३	१७।४५	६।५०	१७।३७	६।५९	१७।२९	७।०९	१७।२०	७।२१	१७।०९	७।३४	१६।५६	७।४१	१६।५०	७।४८	१६।४३
४ ,,	६।२२	१८।०६	६।३५	१७।५३	६।४१	१७।४७	६।४९	१७।३९	६।५८	१७।३१	७।०७	१७।२३	७।१८	१७।१२	७।३२	१७।००	७।३८	१६।५४	७।४४	१६।४७
६ ,,	६।२२	१८।०७	६।३४	१७।५४	६।४०	१७।४९	६।४८	१७।४१	६।५६	१७।३३	७।०५	१७।२५	७।१६	१७।१५	७।२८	१७।०३	७।३४	१६।५७	७।४१	१६।५१
८ ,,	६।२२	१८।०७	६।३४	१७।५५	६।३९	१७।५०	६।४७	१७।४२	६।५४	१७।३५	७।०३	१७।२७	७।१३	१७।१७	७।२५	१७।०७	७।३१	१७।०१	७।३७	१६।५५
१० ,,	६।२१	१८।०८	६।३३	१७।५६	६।३८	१७।५०	६।४५	१७।४४	६।५२	१७।३७	७।०१	१७।३०	७।१०	१७।२०	७।२२	१७।१०	७।२७	१७।०५	७।३३	१६।५९
१२ ,,	६।२१	१८।०८	६।३२	१७।५७	६।३६	१७।५२	६।४४	१७।४६	६।५०	१७।३९	६।५८	१७।३२	७।०८	१७।२३	७।१८	१७।१३	७।२४	१७।०८	७।२९	१७।०३
१४ ,,	६।२०	१८।०८	६।३१	१७।५८	६।३६	१७।५३	६।४२	१७।४७	६।४८	१७।४१	६।५६	१७।३४	७।०५	१७।२६	७।१५	१७।१६	७।२०	१७।१२	७।२५	१७।०७
१६ ,,	६।२०	१८।०९	६।३०	१७।५९	६।३४	१७।५५	६।४०	१७।४९	६।४६	१७।४३	६।५३	१७।३६	७।०२	१७।२९	७।११	१७।२०	७।१६	१७।१५	७।२१	१७।११
१८ ,,	६।१९	१८।०९	६।२८	१८।००	६।३३	१७।५६	६।३८	१७।५०	६।४३	१७।४५	६।५१	१७।३९	६।५८	१७।३२	७।०८	१७।२३	७।१२	१७।१९	७।१७	१७।१५
२० ,,	६।१९	१८।०९	६।२७	१८।०१	६।३१	१७।५७	६।३६	१७।५२	६।४१	१७।४७	६।४८	१७।४२	६।५५	१७।३५	७।०४	१७।२६	७।०८	१७।२३	७।१२	१७।१९
२२ ,,	६।१८	१८।१०	६।२६	१८।०२	६।३०	१७।५८	६।३५	१७।५३	६।३९	१७।४९	६।४५	१७।४४	६।५२	१७।३८	७।००	१७।२९	७।०४	१७।२७	७।०८	१७।२३
२४ ,,	६।१७	१८।१०	६।२४	१८।०३	६।२७	१७।५९	६।३३	१७।५५	६।३६	१७।५१	६।४३	१७।४६	६।४९	१७।४१	६।५६	१७।३३	७।००	१७।३०	७।०३	१७।२७
२६ ,,	६।१६	१८।१०	६।२३	१८।०३	६।२६	१८।००	६।३०	१७।५६	६।३४	१७।५३	६।४०	१७।४८	६।४६	१७।४३	६।५२	१७।३६	६।५५	१७।३३	६।५९	१७।३१
२८ ,,	६।१५	१८।१०	६।२२	१८।०४	६।२४	१८।०१	६।२८	१७।५८	६।३२	१७।५४	६।३८	१७।५०	६।४२	१७।४५	६।४८	१७।३९	६।५१	१७।३६	६।५४	१७।३४
१ मार्च	६।१५	१८।१०	६।२०	१८।०५	६।२३	१८।०२	६।२६	१७।५९	६।३०	१७।५५	६।३४	१७।५२	६।३९	१७।४७	६।४४	१७।४२	६।४७	१७।३९	६।५०	१७।३८
३ ,,	६।१४	१८।११	६।१९	१८।०५	६।२२	१८।०३	६।२४	१८।००	६।२८	१७।५७	६।३१	१७।५४	६।३५	१७।४९	६।४०	१७।४५	६।४२	१७।४३	६।४५	१७।४१
५ ,,	६।१३	१८।११	६।१७	१८।०६	६।२०	१८।०४	६।२२	१८।०२	६।२४	१७।५९	६।२८	१७।५६	६।३२	१७।५२	६।३६	१७।४८	६।३८	१७।४७	६।४०	१७।४४
७ ,,	६।१२	१८।११	६।१५	१८।०७	६।१८	१८।०५	६।२०	१८।०३	६।२२	१८।०१	६।२५	१७।५८	६।२८	१७।५५	६।३२	१७।५१	६।३३	१७।५०	६।३५	१७।४८
९ ,,	६।११	१८।११	६।१४	१८।०८	६।१६	१८।०६	६।१८	१८।०४	६।२०	१८।०२	६।२२	१८।००	६।२६	१७।५८	६।२८	१७।५५	६।२९	१७।५४	६।३०	१७।५२
११ ,,	६।१०	१८।११	६।१२	१८।०८	६।१४	१८।०७	६।१५	१८।०५	६।१७	१८।०४	६।१९	१८।०३	६।२१	१८।००	६।२३	१७।५८	६।२४	१७।५७	६।२६	१७।५६
१३ ,,	६।०८	१८।११	६।१०	१८।०९	६।१२	१८।०८	६।१३	१८।०७	६।१४	१८।०६	६।१६	१८।०५	६।१७	१८।०३	६।१९	१८।०१	६।२०	१८।०१	६।२१	१८।००
१५ ,,	६।०७	१८।११	६।०९	१८।१०	६।१०	१८।०९	६।१०	१८।०८	६।११	१८।०७	६।१२	१८।०८	६।१३	१८।०७	६।१५	१८।०५	६।१५	१८।०४	६।१६	१८।०३
१७ ,,	६।०६	१८।११	६।०८	१८।१०	६।०८	१८।१०	६।०८	१८।०९	६।०९	१८।०९	६।०९	१८।०९	६।१०	१८।०८	६।१०	१८।०८	६।११	१८।०८	६।१२	१८।०७
१९ ,,	६।०५	१८।११	६।०५	१८।११	६।०६	१८।१०	६।०६	१८।१०	६।०६	१८।१०	६।०६	१८।११	६।०६	१८।१०	६।०६	१८।११	६।०६	१८।११	६।०६	१८।११
२१ ,,	६।०४	१८।११	६।०४	१८।११	६।०४	१८।११	६।०३	१८।१२	६।०२	१८।१२	६।०२	१८।१३	६।०२	१८।१३	६।०२	१८।१४	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१५

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.		अक्षांश २०°उ.		अक्षांश २५°उ.		अक्षांश ३०°उ.		अक्षांश ३५°उ.		अक्षांश ४०°उ.		अक्षांश ४५°उ.		अक्षांश ५०°उ.		अक्षांश ५२°उ.		अक्षांश ५४°उ.	
ता. मार्च	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.
२३ मार्च	६।०३	१८।११	६।०३	१८।१२	६।०२	१८।१२	६।०१	१८।१३	५।५९	१८।१४	५।५९	१८।१५	५।५८	१८।१६	५।५७	१८।१७	५।५७	१८।१८	५।५६	१८।१९
२५ ,,	६।०२	१८।११	६।०२	१८।१२	६।००	१८।१३	५।५८	१८।१४	५।५६	१८।१५	५।५६	१८।१७	५।५५	१८।१९	५।५३	१८।२१	५।५२	१८।२१	५।५१	१८।२२
२७ ,,	६।००	१८।११	६।००	१८।१२	५।५७	१८।१४	५।५६	१८।१५	५।५३	१८।१६	५।५३	१८।१९	५।५१	१८।२१	५।४८	१८।२४	५।४७	१८।२४	५।४६	१८।२६
२९ ,,	५।५९	१८।११	५।५९	१८।१३	५।५५	१८।१५	५।५३	१८।१७	५।५०	१८।१८	५।५०	१८।२१	५।४७	१८।२४	५।४४	१८।२७	५।४३	१८।२८	५।४१	१८।३०
३१ ,,	५।५८	१८।१०	५।५८	१८।१३	५।५३	१८।१६	५।५१	१८।१८	५।४६	१८।२०	५।४६	१८।२३	५।४३	१८।२६	५।४२	१८।३०	५।३९	१८।३१	५।३४	१८।३३
२ अप्रै.	५।५७	१८।१०	५।५३	१८।१४	५।५१	१८।१७	५।४९	१८।१९	५।४६	१८।२२	५।४३	१८।२५	५।४०	१८।२९	५।४०	१८।३३	५।३४	१८।३५	५।३१	१८।३७
४ ,,	५।५६	१८।१०	५।५१	१८।१४	५।४९	१८।१७	५।४६	१८।२०	५।४३	१८।२३	५।४०	१८।२७	५।३६	१८।३१	५।३६	१८।३६	५।२९	१८।३८	५।२६	१८।४१
६ ,,	५।५५	१८।१०	५।५०	१८।१५	५।४७	१८।१८	५।४४	१८।२१	५।४१	१८।२५	५।३७	१८।२९	५।३२	१८।३४	५।३२	१८।३९	५।२६	१८।४२	५।२२	१८।४५
८ ,,	५।५४	१८।१०	५।४८	१८।१६	५।४५	१८।१९	५।४२	१८।२२	५।३८	१८।२६	५।३४	१८।३१	५।२९	१८।३६	५।२९	१८।४२	५।१९	१८।४५	५।१७	१८।४८
१० ,,	५।५२	१८।१०	५।४६	१८।१७	५।४३	१८।२०	५।४०	१८।२४	५।३५	१८।२८	५।३१	१८।३३	५।२५	१८।३९	५।२५	१८।४६	५।१४	१८।४९	५।१२	१८।५२
१२ ,,	५।५१	१८।१०	५।४५	१८।१७	५।४१	१८।२१	५।३८	१८।२५	५।३३	१८।२९	५।२८	१८।३५	५।२१	१८।४१	५।२१	१८।४९	५।११	१८।५२	५।०७	१८।५६
१४ ,,	५।५०	१८।१०	५।४३	१८।१८	५।३९	१८।२२	५।३५	१८।२६	५।३०	१८।३१	५।२४	१८।३७	५।१८	१८।४४	५।१८	१८।५२	५।०६	१८।५६	५।०२	१९।००
१६ ,,	५।४९	१८।१०	५।४१	१८।१८	५।३७	१८।२३	५।३३	१८।२७	५।२७	१८।३२	५।२१	१८।३९	५।१४	१८।४६	५।१४	१८।५५	५।०२	१८।५९	४।५८	१९।०४
१८ ,,	५।४८	१८।१०	५।४०	१८।१९	५।३६	१८।२४	५।३०	१८।२९	५।२५	१८।३४	५।१८	१८।४१	५।१२	१८।४९	५।१२	१८।५८	४।५८	१९।०२	४।५३	१९।०७
२० ,,	५।४७	१८।११	५।३९	१८।१९	५।३४	१८।२४	५।२८	१८।३०	५।२२	१८।३६	५।१६	१८।४३	५।०८	१८।५१	५।०८	१९।०१	४।५३	१९।०४	४।४८	१९।११
२२ ,,	५।४६	१८।११	५।३७	१८।२०	५।३२	१८।२५	५।२६	१८।३१	५।२०	१८।३८	५।१३	१८।४५	५।०४	१८।५४	५।०४	१९।०४	४।४९	१९।०९	४।४४	१९।१५
२४ ,,	५।४५	१८।११	५।३६	१८।२०	५।३१	१८।२६	५।२४	१८।३२	५।१७	१८।३९	५।१०	१८।४७	५।०१	१८।५६	५।०१	१९।०७	४।४५	१९।१३	४।३९	१९।१८
२६ ,,	५।४५	१८।११	५।३४	१८।२१	५।२९	१८।२७	५।२२	१८।३४	५।१५	१८।४१	५।०८	१८।४९	४।५८	१८।५९	४।५८	१९।११	४।४१	१९।१६	४।३५	१९।२२
२८ ,,	५।४४	१८।११	५।३३	१८।२२	५।२७	१८।२८	५।२०	१८।३५	५।१३	१८।४३	५।०४	१८।५१	४।५४	१९।०१	४।५४	१९।१४	४।३७	१९।१९	४।३१	१९।२५
३० ,,	५।४३	१८।११	५।३२	१८।२३	५।२६	१८।२९	५।१८	१८।३६	५।११	१८।४४	५।०२	१८।५३	४।५१	१९।०४	४।५१	१९।१७	४।३३	१९।२३	४।२६	१९।२९
२ मई	५।४२	१८।१२	५।३०	१८।२३	५।२४	१८।३०	५।१६	१८।३८	५।०९	१८।४६	४।५९	१८।५५	४।४८	१९।०६	४।३५	१९।२०	४।२९	१९।२६	४।२२	१९।३३
४ ,,	५।४२	१८।१२	५।२९	१८।२४	५।२३	१८।३१	५।१५	१८।३९	५।०७	१८।४७	४।५७	१८।५७	४।४५	१९।०९	४।३२	१९।२३	४।२५	१९।२९	४।१८	१९।३७
६ ,,	५।४१	१८।१२	५।२८	१८।२५	५।२१	१८।३२	५।१३	१८।४०	५।०५	१८।४९	४।५४	१८।५९	४।४३	१९।११	४।२८	१९।२६	४।२२	१९।३२	४।१४	१९।४०
८ ,,	५।४०	१८।१२	५।२७	१८।२६	५।२०	१८।३३	५।१२	१८।४१	५।०३	१८।५१	४।५२	१९।०१	४।४०	१९।१४	४।२५	१९।२९	४।१८	१९।३६	४।१०	१९।४४
१० ,,	५।४०	१८।१३	५।२६	१८।२६	५।१९	१८।३४	५।११	१८।४२	५।०१	१८।५३	४।५०	१९।०३	४।३७	१९।१६	४।२०	१९।३२	४।१५	१९।३९	४।०६	१९।४७
१२ ,,	५।४०	१८।१३	५।२५	१८।२७	५।१८	१८।३५	५।०९	१८।४४	४।५९	१८।५४	४।४८	१९।०५	४।३५	१९।१९	४।१७	१९।३५	४।११	१९।४२	४।०३	१९।५१
१४ ,,	५।३९	१८।१४	५।२४	१८।२८	५।१७	१८।३६	५।०७	१८।४६	४।५७	१८।५६	४।४६	१९।०७	४।३२	१९।२१	४।१४	१९।३७	४।०८	१९।४५	३।५९	१९।५४
१६ ,,	५।३९	१८।१४	५।२४	१८।२९	५।१६	१८।३७	५।०६	१८।४७	४।५६	१८।५७	४।४४	१९।०९	४।३०	१९।२४	४।१२	१९।४०	४।०५	१९।४९	३।५६	१९।५८
१८ ,,	५।३८	१८।१४	५।२३	१८।३०	५।१५	१८।३८	५।०५	१८।४८	४।५४	१८।५९	४।४२	१९।११	४।२८	१९।२६	४।०९	१९।४३	४।०२	१९।५२	३।५३	२०।०१
२० ,,	५।३८	१८।१५	५।२२	१८।३१	५।१४	१८।३९	५।०४	१८।४९	४।५३	१९।००	४।४१	१९।१३	४।२६	१९।२८	४।०७	१९।४६	३।५९	१९।५५	३।५०	२०।०४
२२ ,,	५।३८	१८।१५	५।२२	१८।३१	५।१३	१८।४०	५।०३	१८।५०	४।५२	१९।०२	४।३९	१९।१५	४।२४	१९।३०	४।०४	१९।४८	३।५७	१९।५८	३।४७	२०।०७
२४ ,,	५।३८	१८।१६	५।२१	१८।३२	५।१२	१८।४१	५।०२	१८।५१	४।५१	१९।०३	४।३८	१९।१६	४।२२	१९।३२	४।०२	१९।५१	३।५४	२०।००	३।४४	२०।१०
२६ मई	५।३८	१८।१६	५।२१	१८।३३	५।११	१८।४२	५।०१	१८।५२	४।५०	१९।०५	४।३६	१९।१८	४।२१	१९।३४	४।०१	१९।५३	३।५२	२०।०३	३।४२	२०।१३
२८ ,,	५।३८	१८।१७	५।२०	१८।३४	५।११	१८।४३	५।००	१८।५४	४।४९	१९।०६	४।३५	१९।१९	४।१९	१९।३६	३।५९	१९।५६	३।५०	२०।०५	३।३९	२०।१६
३० ,,	५।३८	१८।१७	५।२०	१८।३४	५।११	१८।४४	५।००	१८।५५	४।४८	१९।०७	४।३४	१९।२०	४।१८	१९।३८	३।५८	१९।५८	३।४८	२०।०८	३।३७	२०।१८
१ जून	५।३८	१८।१८	५।२०	१८।३५	५।१०	१८।४५	४।५९	१८।५६	४।४७	१९।०८	४।३३	१९।२२	४।१७	१९।३९	३।५६	२०।००	३।४६	२०।१०	३।३५	२०।२१
३ ,,	५।३८	१८।१८	५।२०	१८।३६	५।१०	१८।४६	४।५९	१८।५७	४।४७	१९।०९	४।३२	१९।२४	४।१६	१९।४१	३।५५	२०।०२	३।४५	२०।१२	३।३३	२०।२३
५ ,,	५।३८	१८।१९	५।२०	१८।३७	५।१०	१८।४७	४।५८	१८।५८	४।४६	१९।१०	४।३२	१९।२५	४।१५	१९।४२	३।५३	२०।०४	३।४३	२०।१४	३।३२	२०।२६
७ ,,	५।३८	१८।१९	५।२०	१८।३७	५।१०	१८।४८	४।५८	१८।५९	४।४६	१९।११	४।३१	१९।२७	४।१४	१९।४४	३।५२	२०।०६	३।४२	२०।१६	३।३०	२०।२८
९ ,,	५।३९	१८।२०	५।२०	१८।३८	५।१०	१८।४९	४।५८	१९।००	४।४६	१९।१२	४।३१	१९।२८	४।१४	१९।४५	३।५२	२०।०७	३।४१	२०।१८	३।२९	२०।३०
११ ,,	५।३९	१८।२०	५।२०	१८।३९	५।१०	१८।५०	४।५८	१९।०१	४।४५	१९।१३	४।३०	१९।२९	४।१३	१९।४६	३।५१	२०।०८	३।४१	२०।२०	३।२८	२०।३१

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.		अक्षांश २०°उ.		अक्षांश २५°उ.		अक्षांश ३०°उ.		अक्षांश ३५°उ.		अक्षांश ४०°उ.		अक्षांश ४५°उ.		अक्षांश ५०°उ.		अक्षांश ५२°उ.		अक्षांश ५४°उ.	
ता. जून	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि	सू. अ घ. मि
१३ जून	५।३९	१८।२१	५।२०	१८।४०	५।१०	१८।५१	४।५८	१९।०१	४।४५	१९।१४	४।३०	१९।३०	४।१२	१९।४८	३।५०	२०।१०	३।४०	२०।२२	३।२७	२०।३४
१५ ,,	५।३९	१८।२१	५।२०	१८।४०	५।१०	१८।५१	४।५९	१९।०२	४।४५	१९।१५	४।३०	१९।३१	४।१२	१९।४९	३।५०	२०।११	३।३९	२०।२२	३।२७	२०।३५
१७ ,,	५।३९	१८।२२	५।२१	१८।४१	५।१०	१८।५१	४।५९	१९।०३	४।४६	१९।१६	४।३१	१९।३१	४।१३	१९।४९	३।५०	२०।१२	३।३९	२०।२३	३।२७	२०।३६
१९ ,,	५।४०	१८।२२	५।२१	१८।४१	५।११	१८।५२	४।५९	१९।०३	४।४६	१९।१६	४।३१	१९।३२	४।१३	१९।५०	३।५०	२०।१२	३।३९	२०।२३	३।२७	२०।३६
२१ ,,	५।४०	१८।२३	५।२२	१८।४२	५।११	१८।५२	५।००	१९।०४	४।४७	१९।१७	४।३१	१९।३२	४।१३	१९।५०	३।५१	२०।१३	३।४०	२०।२३	३।२७	२०।३६
२३ ,,	५।४१	१८।२३	५।२२	१८।४२	५।१२	१८।५३	५।००	१९।०४	४।४७	१९।१७	४।३३	१९।३३	४।१४	१९।५१	३।५२	२०।१३	३।४१	२०।२४	३।२७	२०।३६
२५ ,,	५।४१	१८।२४	५।२३	१८।४३	५।१२	१८।५३	५।०१	१९।०५	४।४८	१९।१७	४।३३	१९।३३	४।१५	१९।५१	३।५३	२०।१३	३।४१	२०।२४	३।२८	२०।३६
२७ ,,	५।४२	१८।२४	५।२३	१८।४३	५।१३	१८।५३	५।०१	१९।०५	४।४८	१९।१८	४।३४	१९।३३	४।१६	१९।५१	३।५४	२०।१३	३।४३	२०।२४	३।२९	२०।३६
२९ ,,	५।४२	१८।२४	५।२४	१८।४३	५।१३	१८।५३	५।००	१९।०५	४।४९	१९।१८	४।३४	१९।३३	४।१७	१९।५१	३।५४	२०।१३	३।४३	२०।२४	३।२९	२०।३६
१ जुला.	५।४२	१८।२४	५।२४	१८।४३	५।१४	१८।५३	५।००	१९।०५	४।४९	१९।१८	४।३४	१९।३२	४।१७	१९।५०	३।५४	२०।१२	३।४४	२०।२३	३।३२	२०।३६
३ ,,	५।४३	१८।२५	५।२४	१८।४३	५।१५	१८।५४	५।०३	१९।०५	४।५०	१९।१७	४।३५	१९।३२	४।१८	१९।५०	३।५६	२०।१२	३।४५	२०।२२	३।३२	२०।३५
५ ,,	५।४४	१८।२५	५।२५	१८।४३	५।१५	१८।५३	५।०४	१९।०५	४।५१	१९।१७	४।३७	१९।३१	४।१९	१९।४९	३।५८	२०।११	३।४७	२०।२१	३।३३	२०।३४
७ ,,	५।४४	१८।२५	५।२६	१८।४३	५।१६	१८।५३	५।०५	१९।०४	४।५२	१९।१७	४।३८	१९।३१	४।२०	१९।४९	४।००	२०।१०	३।४९	२०।२०	३।३५	२०।३३
९ ,,	५।४५	१९।२५	५।२७	१८।४३	५।१७	१८।५३	५।०६	१९।०४	४।५३	१९।१६	४।३९	१९।२१	४।२२	१९।४८	४।०२	२०।०९	३।५१	२०।१४	३।३७	२०।३२
११ ,,	५।४५	१८।२५	५।२७	१८।४३	५।१८	१८।५३	५।०७	१९।०४	४।५४	१९।१६	४।४०	१९।३०	४।२४	१९।४७	४।०४	२०।०७	३।५३	२०।१७	३।४०	२०।३०
१३ ,,	५।४६	१८।२५	५।२८	१८।४३	५।१९	१८।५३	५।०८	१९।०३	४।५६	१९।१५	४।४२	१९।२९	४।२५	१९।४५	४।०६	२०।०५	३।५५	२०।१६	३।४२	२०।२८
१५ ,,	५।४६	१८।२५	५।२९	१८।४३	५।२०	१८।५२	५।०९	१९।०२	४।५७	१९।१४	४।४३	१९।२८	४।२७	१९।४४	४।०८	२०।०४	३।५७	२०।१४	३।४४	२०।२६
१७ ,,	५।४७	१८।२५	५।२९	१८।४२	५।२१	१८।५२	५।१०	१९।०१	४।५८	१९।१३	४।४५	१९।२७	४।२९	१९।४२	४।१०	२०।०२	४।००	२०।१२	३।४७	२०।२४
१९ ,,	५।४७	१८।२५	५।३०	१८।४२	५।२२	१८।५१	५।११	१९।०१	४।५९	१९।१२	४।४६	१९।२५	४।३१	१९।४१	४।१२	२०।००	४।०३	२०।०९	३।५०	२०।२२
२१ ,,	५।४७	१८।२५	५।३१	१८।४१	५।२२	१८।५०	५।१२	१९।००	५।०१	१९।११	४।४८	१९।२४	४।३३	१९।३९	४।१४	२९।५७	४।०६	२०।०७	३।५२	२०।१९
२३ ,,	५।४७	१८।२५	५।३२	१८।४१	५।२३	१८।४९	५।१३	१८।५९	५।०२	१९।१०	४।५०	१९।२२	४।३५	१९।३७	४।१६	१९।५५	४।०८	२०।०४	३।५५	२०।१७
२५ ,,	५।४८	१८।२४	५।३२	१८।४०	५।२४	१८।४८	५।१४	१८।५८	५।०४	१९।०८	४।५१	१९।२१	४।३७	१९।३५	४।१९	१९।५३	४।११	२०।०१	३।५८	२०।१४
२७ ,,	५।४८	१८।२४	५।३३	१८।३९	५।२५	१८।४७	५।१५	१८।५७	५।०५	१९।०७	४।५३	१९।१९	४।३९	१९।३३	४।२२	१९।५०	४।१४	१९।५८	४।०१	२०।११
२९ ,,	५।४९	१८।२३	५।३४	१८।३८	५।२६	१८।४६	५।१७	१८।५५	५।०७	१९।०५	४।५५	१९।१७	४।४१	१९।३१	४।२४	१९।४७	४।१७	१९।५५	४।०४	२०।०७
३१ ,,	५।४९	१८।२३	५।३५	१८।३७	५।२७	१८।४५	५।१७	१८।५४	५।०८	१९।०४	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२८	४।२७	१९।४४	४।२०	१९।५२	४।०७	२०।०४
२ अग.	५।५०	१८।२२	५।३५	१८।३६	५।२८	१८।४४	५।१९	१८।५२	५।०९	१९।०२	४।५९	१९।१३	४।४६	१९।२५	४।३०	१९।४१	४।२३	१९।४८	४।११	२०।०१
४ ,,	५।५०	१८।२२	५।३६	१८।३५	५।२९	१८।४३	५।२०	१८।५१	५।११	१९।००	५।००	१९।११	४।४८	१९।२३	४।३३	१९।३८	४।२६	१९।४५	४।१४	१९।५७
६ ,,	५।५०	१८।२१	५।३६	१८।३४	५।३०	१८।४२	५।२२	१८।५०	५।१२	१८।५८	५।०२	१९।०८	४।५०	१९।२०	४।३६	१९।३४	४।२८	१९।४२	४।१८	१९।५३
८ ,,	५।५०	१८।२१	५।३७	१८।३३	५।३१	१८।४०	५।२३	१८।४८	५।१४	१८।५६	५।०४	१९।०६	४।५३	१९।१८	४।३९	१९।३१	४।३२	१९।३८	४।२१	१९।४९
१० ,,	५।५०	१८।२०	५।३८	१८।३२	५।३२	१८।३९	५।२४	१८।४६	५।१६	१८।५४	५।०६	१९।०३	४।५५	१९।१५	४।४२	१९।२८	४।३५	१९।३४	४।२५	१९।४५
१२ ,,	५।५१	१८।१९	५।३९	१८।३१	५।३३	१८।३७	५।२६	१८।४४	५।१७	१८।५२	५।०८	१९।०१	४।५७	१९।१२	४।४५	१९।२४	४।३८	१९।३०	४।२८	१९।४१
१४ ,,	५।५१	१८।१८	५।३९	१८।३०	५।३३	१८।३५	५।२७	१८।४२	५।१९	१८।४९	५।१०	१८।५८	५।००	१९।०८	४।४७	१९।२१	४।४२	१९।२६	४।३२	१९।३७
१६ ,,	५।५१	१८।१७	५।४०	१८।२८	५।३४	१८।३४	५।२८	१८।४०	५।२०	१८।४७	५।१२	१८।५६	५।०२	१९।०५	४।५१	१९।१७	४।४५	१९।२२	४।३५	१९।३२
१८ ,,	५।५१	१८।१६	५।४१	१८।२६	५।३५	१८।३२	५।२९	१८।३८	५।२२	१८।४५	५।१४	१८।५३	५।०४	१९।०२	४।५३	१९।१३	४।४८	१९।१८	४।३९	१९।२८
२० ,,	५।५१	१८।१५	५।४१	१८।२५	५।३६	१८।३०	५।३०	१८।३६	५।२३	१८।४३	५।१६	१८।५०	५।०७	१८।५९	४।५७	१९।०९	४।५१	१९।१४	४।४२	१९।२३
२२ ,,	५।५१	१८।१४	५।४२	१८।२३	५।३७	१८।२८	५।३२	१८।३४	५।२५	१८।४०	५।१८	१८।४७	५।०९	१८।५६	४।५९	१९।०५	४।५५	१०।१०	४।४६	१९।१९
२४ ,,	५।५१	१८।१३	५।४२	१८।२२	५।३८	१८।२७	५।३३	१८।३२	५।२६	१८।३७	५।१९	१८।४४	५।१२	१८।५२	५।०२	१९।०१	४।५८	१९।०६	४।४९	१९।१५
२६ ,,	५।५१	१८।१२	५।४३	१८।२०	५।३९	१८।२५	५।३४	१८।२९	५।२८	१८।३४	५।२१	१८।४१	५।१४	१८।४९	५।०५	१८।५७	५।०१	१९।०२	४।५३	१९।१०
२८ ,,	५।५१	१८।११	५।४३	१८।१९	५।३९	१८।२३	५।३५	१८।२७	५।२९	१८।३२	५।२३	१८।३८	५।१६	१८।४५	५।०८	१८।५३	५।०४	१८।५७	४।५७	१९।०५
३० ,,	५।५१	१८।१०	५।४४	१८।१७	५।४०	१८।२१	५।३६	१८।२५	५।३१	१८।२९	५।२५	१८।३५	५।१९	१८।४१	५।११	१८।४९	५।०८	१८।५३	५।००	१९।०१
१ सित.	५।५१	१९।०९	५।४४	१८।१५	५।४१	१८।१९	५।३७	१८।२३	५।३२	१८।२७	५।२७	१८।३२	५।२२	१८।३८	५।१४	१८।४५	५।११	१८।४८	५।०४	१९।५६

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.		अक्षांश २०°उ.		अक्षांश २५°उ.		अक्षांश ३०°उ.		अक्षांश ३५°उ.		अक्षांश ४०°उ.		अक्षांश ४५°उ.		अक्षांश ५०°उ.		अक्षांश ५२°उ.		अक्षांश ५४°उ.	
ता. मित	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.
३ सित	५।५१	१८।०८	५।४५	१८।१३	५।४२	१८।१७	५।३८	१८।२०	५।३४	१८।२४	५।२९	१८।२९	५।२४	१८।३४	५।१६	१८।४१	५।१४	१८।४३	५।११	१८।४७
५ ,,	५।५१	१८।०७	५।४६	१८।१२	५।४२	१८।१५	५।३९	१८।१८	५।३५	१८।२१	५।३१	१८।२६	५।२६	१८।३०	५।२०	१८।३६	५।१७	१८।३९	५।१५	१८।४२
७ ,,	५।५०	१८।०६	५।४६	१८।१०	५।४३	१८।१२	५।४०	१८।१५	५।३७	१८।१८	५।३३	१८।२३	५।२८	१८।२७	५।२३	१८।३१	५।२१	१८।३४	५।१८	१८।३७
९ ,,	५।५०	१८।०४	५।४६	१८।०८	५।४४	१८।१०	५।४१	१८।१३	५।३८	१८।१६	५।३५	१८।१९	५।३१	१८।२३	५।२६	१८।२७	५।२४	१८।२९	५।२२	१८।३२
११ ,,	५।५०	१८।०३	५।४६	१८।०७	५।४४	१८।०८	५।४२	१८।१०	५।३९	१८।१३	५।३७	१८।१६	५।३३	१८।१९	५।२९	१८।२३	५।२७	१८।२४	५।२५	१८।२७
१३ ,,	५।५०	५८।०२	५।४७	१८।०५	५।४५	१८।०६	५।४३	१८।०८	५।४१	१८।१०	५।३९	१८।१३	५।३६	१८।१५	५।३२	१८।१९	५।३०	१८।२०	५।२९	१८।२२
१५ ,,	५।५०	१८।००	५।४७	१८।०३	५।४६	१८।०४	५।४४	१८।०५	५।४२	१८।०७	५।४०	१८।१०	५।३८	१८।११	५।३४	१८।१४	५।३४	१८।१६	५।३२	१८।१७
१७ ,,	५।५०	१७।५९	५।४८	१८।०१	५।४७	१८।०२	५।४५	१८।०३	५।४४	१८।०४	५।४२	१८।०६	५।४१	१८।०८	५।३८	१८।१०	५।३७	१८।११	५।३६	१८।१२
१९ ,,	५।४९	१७।५८	५।४८	१७।५९	५।४७	१८।००	५।४६	१८।०१	५।४५	१८।०२	५।४४	१८।०३	५।४३	१८।०४	५।४१	१८।०६	५।४१	१८।०६	५।४०	१८।०७
२१ ,,	५।४९	१७।५७	५।४८	१७।५७	५।४८	१७।५८	५।४७	१७।५८	५।४७	१७।५९	५।४६	१७।५९	५।४५	१८।००	५।४४	१८।०१	५।४४	१८।०१	५।४३	१८।०२
२३ ,,	५।४९	१७।५५	५।४९	१७।५५	५।४९	१७।५५	५।४९	१७।५६	५।४८	१७।५६	५।४८	१७।५६	५।४८	१८।५६	५।४७	१८।५६	५।४७	१७।५६	५।४७	१७।५७
२५ ,,	५।४९	१७।५४	५।४९	१७।५४	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५२	५।५०	१७।५२	५।५०	१७।५२	५।५०	१७।५२
२७ ,,	५।४९	१७।५३	५।५०	१७।५२	५।५१	१७।५१	५।५१	१७।५०	५।५१	१७।५०	५।५२	१७।५०	५।५२	१७।४८	५।५३	१७।४७	५।५३	१७।४८	५।५४	१७।४७
२९ ,,	५।४९	१७।५२	५।५१	१७।५०	५।५१	१७।४९	५।५२	१७।४८	५।५३	१७।४७	५।५४	१७।४६	५।५५	१७।४५	५।५६	१७।४३	५।५७	१७।४३	५।५८	१७।४२
१ अक्तू	५।४९	१७।५१	५।५१	१७।४८	५।५२	१७।४७	५।५३	१७।४६	५।५४	१७।४४	५।५६	१७।४३	५।५७	१७।४१	५।५९	१७।३८	६।००	१७।३९	६।०१	१७।३७
३ ,,	५।४९	१७।४९	५।५१	१७।४६	५।५३	१७।४५	५।५४	१७।४३	५।५६	१७।४१	५।५८	१७।४०	६।००	१७।३७	६।०३	१७।३५	६।०३	१७।३४	६।०५	१७।३२
५ ,,	५।४८	१७।४८	५।५२	१७।४४	५।५४	१७।४३	५।५५	१७।४०	५।५७	१७।३८	६।००	१७।३७	६।०२	१७।३३	६।०६	१७।३०	६।०७	१७।२९	६।०८	१७।२७
७ ,,	५।४८	१७।४७	५।५२	१७।४३	५।५५	१७।४१	५।५७	१७।३८	५।५९	१७।३६	६।०२	१७।३३	६।०५	१७।३०	६।०९	१७।२६	६।१०	१७।२४	६।१२	१७।२२
९ ,,	५।४८	१७।४६	५।५३	१७।४२	५।५५	१७।३९	५।५८	१७।३६	६।०१	१७।३३	६।०४	१७।३०	६।०७	१७।२७	६।१२	१७।२२	६।१४	१७।१९	६।१६	१७।१७
११ ,,	५।४८	१७।४५	५।५३	१७।४०	५।५६	१७।३७	५।५९	१७।३४	६।०२	१७।३१	६।०६	१७।२७	६।१०	१७।२३	६।१५	१७।१८	६।१७	१७।१५	६।२०	१७।१३
१३ ,,	५।४८	१७।४४	५।५४	१७।३८	५।५७	१७।३५	६।००	१७।३१	६।०४	१७।२८	६।०८	१७।२४	६।१२	१७।२०	६।१८	१७।१४	६।२१	१७।११	६।२३	१७।०८
१५ अक्तू	५।४९	१७।४३	५।५५	१७।३७	५।५८	१७।३३	६।०२	१७।२९	६।०६	१७।२५	६।१०	१७।२१	६।१५	१७।१६	६।२१	१७।१०	६।२४	१७।०७	६।२७	१७।०३
१७ ,,	५।४९	१७।४२	५।५५	१७।३५	५।५९	१७।३१	६।०३	१७।२७	६।०७	१७।२३	६।१२	१७।१८	६।१८	१७।१२	६।२४	१७।०६	६।२८	१७।०२	६।३१	१६।५९
१९ ,,	५।४९	१७।४१	५।५६	१७।३४	६।००	१७।३०	६।०५	१७।२५	६।०९	१७।२०	६।१४	१७।१५	६।२०	१७।०९	६।२८	१७।०२	६।३१	१६।५८	६।३५	१६।५४
२१ ,,	५।४९	१७।४०	५।५७	१७।३२	६।०१	१७।२८	६।०६	१७।२३	६।११	१७।१८	६।१६	१७।१३	६।२३	१७।०५	६।३१	१६।५८	६।३५	१६।५४	६।३९	१६।४९
२३ ,,	५।४९	१७।३९	५।५८	१७।३१	६।०२	१७।२६	६।०७	१७।२१	६।१२	१७।१५	६।१८	१७।१०	६।२६	१७।०२	६।३४	१६।५४	६।३८	१६।५०	६।४३	१६।४५
२५ ,,	५।४९	१७।३९	५।५८	१७।२९	६।०३	१७।२४	६।०८	१७।१९	६।१४	१७।१३	६।२०	१७।०३	६।२८	१६।५९	६।३८	१६।५०	६।४२	१६।४६	६।४६	१६।४१
२७ ,,	५।५०	१७।३८	५।५९	१७।२८	६।०५	१७।२३	६।१०	१७।१७	६।१६	१७।११	६।२२	१७।०४	६।३१	१६।५६	६।४१	१६।४६	६।४६	१६।४२	६।५०	१६।३७
२९ ,,	५।५०	१७।३८	६।००	१७।२७	६।०६	१७।२१	६।१२	१७।१५	६।१८	१७।०९	६।२४	१७।०२	६।३४	१६।५३	६।४५	१६।४२	६।४९	१६।३८	६।५४	१६।३२
३१ ,,	५।५०	१७।३७	६।००	१७।२६	६।०७	१७।२०	६।१३	१७।१४	६।२०	१७।०७	६।२७	१६।५९	६।३७	१६।५०	६।४८	१६।३९	६।५२	१६।३४	६।५८	१६।२८
२ नव.	५।५१	१७।३७	६।०२	१७।२४	६।०८	१७।१९	६।१४	१७।१२	६।२२	१७।०५	६।३०	१६।५६	६।३९	१६।४७	६।५१	१६।३५	६।५६	१६।३०	७।०२	१६।२४
४ ,,	५।५१	१७।३६	६।०३	१७।२३	६।०९	१७।१८	६।१६	१७।११	६।२३	१७।०३	६।३२	१६।५४	६।४२	१६।४५	६।५४	१६।३२	७।००	१६।२७	७।०६	१६।२१
६ ,,	५।५२	१७।३६	६।०४	१७।२३	६।१०	१७।१७	६।१८	१७।०९	६।२५	१७।०१	६।३४	१६।५२	६।४५	१६।४२	६।५०	१६।२९	७।०३	१६।२३	७।१०	१६।१७
८ ,,	५।५२	१७।३५	६।०५	१७।२२	६।१२	१७।१६	६।१९	१७।०८	६।२७	१६।५९	६।३७	१६।५०	६।४८	१६।३९	७।०१	१६।२६	७।०७	१६।२०	७।१४	१६।१३
१० ,,	५।५३	१७।३५	६।०६	१७।२२	६।१३	१७।१५	६।२१	१७।०६	६।२९	१६।५७	६।३९	१६।४८	६।५०	१६।३७	७।०४	१६।२३	७।१०	१६।१७	७।१७	१६।०९
१२ ,,	५।५४	१७।३५	६।०७	१७।२१	६।१५	१७।१४	६।२२	१७।०५	६।३१	१६।५६	६।४१	१६।४७	६।५३	१६।३५	७।०७	१६।२०	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०६
१४ ,,	५।५४	१७।३५	६।०८	१७।२१	६।१६	१७।१३	६।२४	१७।०४	६।३३	१६।५५	६।४४	१६।४५	६।५६	१६।३३	७।११	१६।१७	७।१८	१६।११	७।२५	१६।०३
१६ ,,	५।५५	१७।३४	६।०९	१७।२०	६।१७	१७।१२	६।२६	१७।०३	६।३५	१६।५४	६।४६	१६।४३	६।५९	१६।३१	७।१४	१६।१५	७।२१	१६।०८	७।२९	१६।००
१८ ,,	५।५६	१७।३४	६।११	१७।२०	६।१८	१७।१२	६।२७	१७।०३	६।३७	१६।५३	६।४८	१६।४१	७।०१	१६।२९	७।१७	१६।१२	७।२५	१६।०५	७।३३	१५।५७
२० ,,	५।५७	१७।३५	६।१२	१७।१९	६।२०	१७।११	६।२९	१७।०२	६।३९	१६।५२	६।५१	१६।४०	७।०४	१६।२७	७।२०	१६।१०	७।२८	१६।०३	७।३६	१५।५४
२२ ,,	५।५८	१७।३५	६।१३	१७।१९	६।२१	१७।११	६।३१	१७।०१	६।४१	१६।५१	६।५३	१६।३९	७।०७	१६।२५	७।२३	१६।०८	७।३१	१६।००	७।४०	१५।५१

अक्षांश	अक्षांश १०°उ.		अक्षांश २०°उ.		अक्षांश २५°उ.		अक्षांश ३०°उ.		अक्षांश ३५°उ.		अक्षांश ४०°उ.		अक्षांश ४५°उ.		अक्षांश ५०°उ.		अक्षांश ५२°उ.		अक्षांश ५४°उ.	
ता. नव	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.
२४ नव	५।५८	१७।३५	६।१४	१७।१९	६।२३	१७।१०	६।३२	१७।०१	६।४३	१६।५०	६।५५	१६।३८	७।०९	१६।२४	७।२६	१६।०६	७।३५	१५।५८	७।४४	१५।४९
२६ ,,	५।५९	१७।३५	६।१५	१७।१९	६।२४	१७।१०	६।३४	१७।००	६।४५	१६।५०	६।५७	१६।३७	७।१२	१६।२२	७।२९	१६।०४	७।३८	१५।५६	७।४७	१५।४७
२८ ,,	६।००	१७।३६	६।१७	१७।१९	६।२६	१७।१०	६।३६	१७।००	६।४७	१६।४९	६।५९	१६।३६	७।१४	१६।२१	७।३२	१६।०३	७।४१	१५।५५	७।५०	१५।४५
३० ,,	६।०१	१७।३६	६।१८	१७।१९	६।२८	१७।१०	६।३७	१७।००	६।४९	१६।४९	७।०१	१६।३६	७।१७	१६।२१	७।३५	१६।०२	७।४४	१५।५३	७।५४	१५।४३
२ दि.	६।०२	१७।३७	६।१९	१७।१९	६।२९	१७।१०	६।३९	१७।००	६।५१	१६।४८	७।०३	१६।३५	७।१९	१६।२०	७।३८	१६।०१	७।४७	१५।५२	७।५७	१५।४२
४ ,,	६।०३	१७।३७	६।२१	१७।२०	६।३०	१७।१०	६।४१	१७।००	६।५२	१६।४८	७।०५	१६।३५	७।२१	१६।२०	७।४०	१६।००	७।४९	१५।५१	८।०१	१५।४१
६ ,,	६।०४	१७।३८	६।२२	१७।२०	६।३२	१७।१०	६।४२	१७।००	६।५४	१६।४८	७।०७	१६।३५	७।२३	१६।१९	७।४३	१५।५९	७।५२	१५।५०	८।०४	१५।३९
८ ,,	६।०५	१७।३८	६।२३	१७।२०	६।३३	१७।१०	६।४४	१७।००	६।५५	१६।४८	७।०९	१६।३५	७।२५	१६।१९	७।४५	१५।५९	७।५४	१५।५०	८।०६	१५।३९
१० ,,	६।०६	१७।३९	६।२४	१७।२१	६।३४	१७।११	६।४५	१७।००	६।५७	१६।४८	७।११	१६।३५	७।२७	१६।१८	७।४७	१५।५८	७।५७	१५।४९	८।०९	१५।३८
१२ ,,	६।०७	१७।४०	६।२५	१७।२२	६।३५	१७।११	६।४६	१७।०१	६।५८	१६।४८	७।१३	१६।३५	७।२९	१६।१७	७।४९	१५।५८	७।५९	१५।४८	८।११	१५।३७
१४ ,,	६।०८	१७।४१	६।२७	१७।२३	६।३७	१७।१२	६।४८	१७।०१	७।००	१६।४९	७।१४	१६।३५	७।३१	१६।१९	७।५१	१५।५८	८।०१	१५।४८	८।१३	१५।३७
१६ ,,	६।०९	१७।४२	६।२८	१७।२३	६।३८	१७।१३	६।४९	१७।०२	७।०१	१६।४९	७।१५	१६।३६	७।३२	१६।१९	७।५३	१५।५९	८।०३	१५।४८	८।१४	१५।३८
१८ ,,	६।१०	१७।४३	६।२९	१७।२४	६।३९	१७।१४	६।५०	१७।०३	७।०२	१६।५०	७।१७	१६।३६	७।३३	१६।२०	७।५४	१५।५९	८।०४	१५।४९	८।१६	१५।३८
२० ,,	६।११	१७।४४	६।३०	१७।२५	६।४०	१७।१५	६।५१	१७।०४	७।०४	१६।५१	७।१८	१६।३७	७।३५	१६।२१	७।५५	१६।००	८।०५	१५।५०	८।१७	१५।३९
२२ ,,	६।१३	१७।४५	६।३१	१७।२६	६।४१	१७।१६	६।५२	१७।०५	७।०५	१६।५२	७।१९	१६।३८	७।३६	१६।२१	७।५६	१६।००	८।०६	१५।५१	८।१८	१५।३९
२४ ,,	६।१३	१७।४६	६।३२	१७।२७	६।४२	१७।१७	६।५३	१७।०६	७।०६	१६।५४	७।२०	१६।३९	७।३७	१६।२३	७।५७	१६।०२	८।०७	१५।५२	८।१९	१५।४१
२६ ,,	६।१४	१७।४७	६।३३	१७।२८	६।४३	१७।१८	६।५४	१७।०७	७।०६	१६।५५	७।२१	१६।४१	७।३७	१६।२४	७।५८	१६।०३	८।०८	१५।५३	८।१९	१५।४२
२८ ,,	६।१५	१७।४८	६।३४	१७।२९	६।४४	१७।२०	६।५५	१७।०९	७।०७	१६।५६	७।२१	१६।४२	७।३८	१६।२५	७।५८	१६।०५	८।०८	१५।५५	८।१९	१५।४४
३० ,,	६।१६	१७।४९	६।३४	१७।३०	६।४५	१७।२०	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५७	७।२२	१६।४४	७।३८	१६।२६	७।५९	१६।०७	८।०८	१५।५७	८।१९	१५।४६
३१ ,,	६।१७	१७।५०	६।३४	१७।३१	६।४५	१७।२१	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५८	७।२२	१६।४४	७।३८	१६।२७	७।५९	१६।०८	८।०८	१५।५८	८।१९	१५।४७

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

१. अन्धाक नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति शीघ्र हो जाती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इसी बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र						मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोह.	पुष्य	उफा	पूषा	विशा	धनि	रेव शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृति	पुन	पूफा	स्वा	मूला	श्रव	उभा नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर	आर्द्रा	मघा	पूभा	चित्रा	ज्ये	अभि पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा	शतभिषा बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

मनुष्य शरीर में नक्षत्रों की स्थिति

मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों में २७ नक्षत्रों की अलग-अलग स्थिति की कल्पना की गई है। जैसे—

(१) **अश्विनी**—पाँव के ऊपरी भाग में (२) **भरणी**—पाँवों के तलवे में (३) **कृतिका**—शिर में, (४) **रोहिणी**—मस्तक में (५) **मृगशिर**—भौंहों में, (६) **आर्द्रा**—आँखों में, (७) **पुनर्वसु**—नाक में, (८) **पुष्य**—मुख में, (९) **आश्लेषा**—कानों में, (१०) **मघा**—ठोडी (होंटों) में, (११) **पूर्वा फाल्गुनी**—दाएँ हाथ में, (१२) **उत्तरा फाल्गुनी**—बाएँ हाथ में, (१३) **हस्त**—उंगलियों में, (१४) **चित्रा**—गर्दन में, (१५) **स्वाती**—छाती में, (१६) **विशाखा**—हृदय में, (१७) **अनुराधा**—उदर में, (१८) **ज्येष्ठा**—दाएं अमाशय में, (१९) **मूल**—बाईं कुक्षि में, (२०) **पूर्वाषाढ़ा**—पीठ में, (२१) **उत्तराषाढ़ा**—रीढ़ में, (२२) **श्रवण**—कमर में, (२३) **धनिष्ठ**—गुदा में, (२४) **शतभिषा**—दाईं जाँघ में, (२५) **पूर्वा भाद्रपद**—बाईं जाँघ में, (२६) **उत्तराभाद्रपद**—पिंडलियों में, (२७) **रेवती**—टखनों में निवास करता है। जन्मकालीन अथवा गोचरवश जब कोई क्रूर (पापी) ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता तब-तब तत् सम्बन्धी शरीरांग में कष्ट उत्पन्न होता है।

(ज्योतिष तत्त्व से)

अपने प्रश्न का फल स्वयं जानें

निम्नलिखित २६ प्रश्नों में से पृथक अपने प्रश्न को सोच ईश्वरस्मरण-पूर्वक आंख ऊपर सोच निम्नांकित चक्र में किसी अंक पर अंगुली रखें फिर उसी विषय के फलचक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवें ईश्वर इच्छा से वैसा ही फल मिलेगा।

1	5	8	10
11	2	6	9
14	12	3	7
16	15	13	4

• रोग छूटेगा ?

१. रोग छूटे, अल्पायु है।
२. सन्देह है, मृत्यु जप करो
३. मन्त्रजप से नीरोग होगा
४. आशा त्याग दो।
५. जीवदान दिया गया।
६. संसार से यात्रा करेगा।
७. रोग दूर हो जावेगा।
८. एक पक्ष में नीरोग होगा।
९. रोगी नीरोग होगा।
१०. सन्देह है बलिदान करो।
११. उपाय करो नीरोग होगा।
१२. मृत्युञ्जय जपो, स्वस्थ हो।
१३. यन्त्र मन्त्र से नीरोग हो।
१४. रोगी की मृत्यु होगी।
१५. रोगी रोग से छूटेगा।
१६. सन्देह है, मृत्युञ्जय जपो।

• आज कैसा रहेगा ?

१. आज प्रसन्नता होगी।
२. आज शुभ नहीं है।
३. क्लेश आने वाला है।
४. हानि होगी।
५. क्लेश होगा, सावधान
६. इच्छा के विरुद्ध ही होगा।
७. शत्रु तेरी हानि चाहता है।
८. आज उत्तम नहीं है।
९. आज शुभ नहीं है।
१०. आनन्द होगा।
११. शत्रु हानि चाहता है।
१२. इच्छा शीघ्र पूरी होगी।
१३. शत्रु के द्वार पर सिद्धि है।
१४. दुष्ट प्रारब्ध है। राम जपो।
१५. सुखमय-समय समीप है।
१६. दुःख का सामना होगा।

• नौकरी कब मिलेगी ?

१. बहुत देर से मिलेगी।
२. नहीं मिलेगी, क्लेश होगा
३. शीघ्र नौकरी मिलेगी।
४. खर्च करने से मिलेगी।
५. शीघ्र ही काम मिलेगा।
६. शत्रु काम नहीं बनने देंगे।
७. सहायता से मिलेगी।
८. नहीं, गृहक्लेश होगा।
९. नौकरी मिलने में देर है।
१०. विघ्न हों देर से मिलेगी।
११. काम उपाय से मिलेगा।
१२. खेती करो, लाभ मिलेगा।
१३. सट्टा व्यापार से लाभ है।
१४. शत्रु काम बिगाड़ देगा।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।
१६. क्लेश होगा, उपाय करो।

• परीक्षा, मुकद्दमे में क्या फल ?

१. देर से जीत जाओगे।
२. फेल हो जाओगे।
३. अपील करने से जीतोगे।
४. पंचायत फैसला करेगी।
५. खर्च द्वारा जीतोगे।
६. कष्ट अधिक, संधि करो।
७. हार है, यत्न से जीतोगे।
८. अल्पांकों पर पास होंगे।
९. खर्च अधिक जीत यत्न से।
१०. झगड़ा छोड़ो, काम करो।
११. अपील करो, जीतोगे।
१२. उपाय करो, सहो मत।
१३. खर्च परेशानी बाद जीत।
१४. योग्य साथ न देगा।
१५. पूरी जीत है निश्चिन्त रहो।
१६. हार होगी, परिश्रम छोड़ो।

• इच्छा पूर्ण होगी ?

१. इच्छा शीघ्र पूरी होगी।
२. अभी इच्छा न करो।
३. इच्छा पूरी होगी।
४. छोड़ो, क्लेश होगा।
५. मित्र द्वारा पूर्ण होगी।
६. अभी इच्छा व्यर्थ है।
७. नहीं, दुर्गापाठ सिद्ध है।
८. इच्छा पूरी होगी।
९. उपाय से सिद्धि होगी।
१०. अपनी इच्छा बदल दो।
११. इच्छानुसार सिद्धि होगी।
१२. इच्छा शीघ्र पूरी होगी।
१३. इस वृत्ति पर सन्तुष्ट रहो।
१४. आशा करनी व्यर्थ है।
१५. इच्छा पूरी होगी।
१६. इसी में सन्तोष रखो।

• कार्य कब होगा ?

१. १५ दिनफल पराधीन है।
२. ७ दिन सिद्धि न होगी।
३. २१ दिन में प्रारब्ध बढ़ेगा।
४. १ मास यन्त्र मन्त्र से सिद्ध हो।
५. डेढ़ मास में कार्य सिद्धि हो।
६. २ मास में कार्य सिद्धि हो।
७. ३ मास में आशा विरुद्ध फल।
८. ६ मास सुख में शीघ्र दुःख।
९. १ वर्ष उद्योग सफल हो।
१०. ६ मास सिद्धि नहीं कष्ट हो।
११. डेढ़ वर्ष अतिआनन्द हो।
१२. २ वर्ष में कार्य सिद्ध होगा।
१३. ३ वर्ष में क्लेश दूर हो।
१४. ४ वर्ष में कार्य सिद्ध हो।
१५. ६ वर्ष कार्य सिद्धि होगी।
१६. ४ वर्ष ईश्वर सहायक है।

• परदेशी लौटेगा ?

१. परदेशी नहीं लौटेगा।
२. लौटने में असमर्थ है।
३. अचानक लौट आवेगा।
४. स्वकर्म वश नहीं आता
५. सानन्द शीघ्र लौटेगा।
६. बहुत देर से लौटेगा।
७. धन लेकर लौटेगा।
८. लम्पटता वश नहीं आता
९. बीमार है देर से आवेगा।
१०. नहीं लौटे मन्त्र सिद्ध है।
११. आलस्य से नहीं आता।
१२. परदेशी शीघ्र लौटेगा।
१३. सानन्द शीघ्र लौटेगा।
१४. अभी स्नेह वश नहीं आता।
१५. आलस्य से नहीं आता।
१६. दर्शन दुर्लभ, उपाय करो।

• यात्रा में लाभ होगा ?

१. यात्रा में लाभ होगा।
२. यात्रा करना व्यर्थ है।
३. यात्रा लाभदायक है।
४. यात्रा में लाभ होगा।
५. धन वृद्धि की आशा है।
६. स्थान का त्याग न करो।
७. प्रसन्नता से यात्रा करो।
८. न जाओ, घर में आनन्द
९. निर्भय होकर यात्रा करो।
१०. यात्रा न करो, लाभ नहीं।
११. यात्रा में ईश दया करेंगे।
१२. यात्रा अच्छी नहीं।
१३. यात्रा सिद्ध होगी।
१४. अभी यात्रा न करो भय है।
१५. यात्रा में सन्देह नहीं है।
१६. दूर की यात्रा न करो।

• यह नौकर कैसा ?

१. पहले क्लेश फिर आनंद।
२. अत्यंत शोक से क्लेश होगा।
३. सम्बन्ध सिद्ध होगा।
४. इस सम्बंध में लाभ होगा।
५. इस में अति आनंद होगा।
६. अत्यन्त प्रेम होगा।
७. इस का सम्बंध सिद्ध है।
८. इस से सबंध न होगा।
९. प्रसन्नता से लाभ मिलेगा।
१०. अति लोभी, क्लेश होगा।
११. सम्बन्ध सिद्ध होगा।
१२. यह सबन्ध क्लेश देगा।
१३. इच्छा आनन्द नाशक है।
१४. वफादार नहीं क्लेश है।
१५. उस से सबंध न करो।
१६. इस से इच्छा सफल नहीं।

• सन्तान होगी ?

१. पारब्धी पुत्र होगा।
२. कन्या उत्पन्न होगी।
३. दीर्घायु पुत्र पैदा होगा।
४. दो कन्याएं उत्पन्न होंगी।
५. दो पुत्र पैदा होंगे।
६. सुन्दर दुखी कन्या हो।
७. बुद्धिमान पुत्र होगा।
८. नपुंसक उत्पन्न होगा।
९. उपाय से पुत्र होगा।
१०. भाग्यवती कन्या होगी।
११. सुन्दर पुत्र होगा।
१२. कुत्सित कन्या होगी।
१३. नीरोग पुत्र होगा।
१४. सुन्दर कन्या होगी।
१५. एकपुत्र एक कन्या होगी।
१६. सन्तान नहीं होगी।

• कैदी छूटेगा ?

१. खुशी से छूट जायेगा।
२. शत्रु से पीड़ित है।
३. क्लेश भोगकर छूटेगा।
४. कैदी की मृत्यु होगी।
५. क्लेश सह कर छूटेगा।
६. गजेन्द्रमोक्ष पाठ कराओ।
७. कैदी छूट जायेगा।
८. क्लेश में छूटना कठिन।
९. कैद से छूट जायेगा।
१०. चण्डी पाठ करो, छूटेगा।
११. सजा बढ़ जायेगी।
१२. शीघ्र ही छूट जायेगा।
१३. सफ़ारिश से छूटेगा।
१४. बहुत दिन कैद में रहेगा।
१५. यंत्र से कैदी छूटेगा।
१६. मृत्यु भय, चंडी पाठ करो।

• स्वप्न का फल क्या ?

१. मित्रों में आनन्द होगा।
२. शोक रहे चंडी पाठ करो।
३. अन्य पुरुष कृपा करेगा।
४. मित्रों में आनन्द होगा।
५. कार्य में देरी है।
६. शत्रु भय, चंडी पाठ करो।
७. शोक मृत्युञ्जय जपो।
८. शत्रुता से शीघ्र बचोगे।
९. आज प्रारम्भ अच्छा नहीं।
१०. हानि नहीं है।
११. कोई हानि नहीं है।
१२. कहीं से धन मिलेगा।
१३. विवाह की बातचीत हो।
१४. क्लेश के बाद आनन्द।
१५. शीघ्र ही आनन्द होगा।
१६. भय हो, सहस्रनाम जपो।

• व्यवहार में लाभ ?

१. बहुत लाभ होगा।
२. यात्रा में लाभ होगा।
३. उद्योग में लाभ प्राप्त हो।
४. धैर्य धरो, लाभ मिलेगा।
५. लाभ नहीं लक्ष्मी मंत्रजपो।
६. लाभ नहीं, श्रीसूक्त पढ़ो।
७. ईश्वर पर भरोसा रखो।
८. शीघ्र सिद्धि नहीं होगी।
९. स्वल्प लाभकी आशा है।
१०. लाभ नहीं, श्रीसूक्त जपो।
११. तुम्हारी इच्छा सफल है।
१२. इस उद्योग में हानि है।
१३. अचानक लाभ होगा।
१४. यात्रा में लाभ होगा।
१५. ईश्वर सहायता से लाभ हो।
१६. सट्टे धन लाभ होगा।

• चोरी मिलेगी ?

१. उत्तर में वस्तु मिलेगी।
२. राजद्वार से मिलेगी।
३. न मिलेगी, यत्न न करो।
४. दूसरे के द्वारा मिलेगी।
५. मिलेगी, चोर दंड भोगेगा।
६. चीज न मिले, क्लेश हो।
७. परिश्रम से माल मिलेगा।
८. माल देर से मिलेगा।
९. पूर्व में माल मिलेगा।
१०. राज सहाय से मिलेगी।
११. सुखपूर्वक माल मिलेगा।
१२. यत्न करो, माल पाओगे।
१३. अचानक माल मिलेगा।
१४. थोड़ा माल मिलेगा।
१५. दक्षिण से माल मिलेगा।
१६. गया माल न मिलेगा।

• मित्र अच्छा है ?

१. पहले स्नेह, फिर घटे।
२. हार्दिक मित्रता है।
३. चिर स्थायी नहीं।
४. मान प्रतिष्ठा करता है।
५. प्रतीक्षा से मित्र मिलेगा।
६. तुमसे स्नेह नहीं करता।
७. मित्रता शुद्ध है।
८. यह पुरुष बहुत स्नेही है।
९. मित्र चोट लगावेगा।
१०. मित्रता स्थायी है।
११. मित्रता छोड़ो, फंसोगे।
१२. मित्र डरता है।
१३. दूसरे से मित्रता है।
१४. शुद्ध नहीं, त्याग दो।
१५. यन्त्र मंत्र तंत्र से बनेगा।
१६. उपाय से मित्र बनेगा।

• स्त्री मिलेगी ?

१. क्रोधिनी स्त्री मिलेगी।
२. धनवान मित्र स्त्री मिले।
३. विवाह कुलीन से होगा।
४. अचानक द्रव्य मिलेगा।
५. कुरूप स्त्री मिलेगी।
६. स्त्री नहीं मिलेगी।
७. परदेशी मित्र स्त्री मिले।
८. निर्धन स्त्री मिलेगी।
९. यन्त्र से स्त्री वश करो।
१०. स्त्री जड़, परस्नेह करेगी।
११. स्त्री हित नहीं चाहती।
१२. धन खर्चो, स्त्री मिलेगी।
१३. सुन्दर कर्कशा स्त्री मिले।
१४. विवाह परदेश में होगा।
१५. इच्छानुसार स्त्री पाओगे।
१६. इच्छा पूरी न होगी।

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके फलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग का भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से ज्योतिष तत्त्व मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.हस्त.श्रवण				मृग.चित्रा.धनि.			
अन्तर्दशावर्षादि १८				अन्तर्दशावर्षादि १८				अन्तर्दशावर्षादि १८			
ग्रह	वर्ष	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	म	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा.स्वा.शत.				पुन.विशा.पू.भा.				पुष्य.अनु.उ.भा.५७			
अन्तर्दशावर्षादि १८				अन्तर्दशावर्षादि १८				अन्तर्दशावर्षादि १८			
ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले.ज्ये.रेवती				मघा.मूला.अश्वि				पू.फा.पू.षा.भर			
अन्तर्दशावर्षादि १८				अन्तर्दशावर्षादि ६०				अन्तर्दशावर्षादि ६०			
ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा	दि
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

अष्टोत्तरी दशा चक्र

दशा	वर्ष	नक्षत्र
सूर्य	६	आ.पुन. पुष्य. श्ले.
चन्द्र	१५	मघा पू.फा. उ.फा.
मंगल	८	ह. चि. स्वा. वि.
बुध	१७	अनु. ज्ये. मूल
शनि	१०	पू.षा. उ.षा. अभि. श्रव
गुरु	१९	धनि. शत. पू.भा.
राहु	१२	उ.भा. रे. अ. भ.
शुक्र	२१	कृ. रो. मृ.

अन्तरदशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक् २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दे (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवें अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	च.	मा	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	भ्रा.	४८	मं.
म.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स	८	०	म	१	१०
सि	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा	४	०
श्रवण आर्द्रा चित्रा			पुन स्वा धनि			पुष्य विशा शत			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा	९६	के
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
सि	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
म.	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
पि	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ	१३	१०
धा	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उ.भा. भर			पू.फा. मूला रेव कृत			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग.		

योगिनी तथा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार १+२+३+४+५+६+७+८=३६ वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएं अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचे तो पिंगला, ३ बचें तो धान्या एव च शेष ८ या ०बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचें। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पृष्ठ १६६ देखें।.... लेखक प० पन्ना लाल ज्यो० जालन्धर।

अन्तर्दशामासादि शुभदशा— म.धा.भ.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा. उ.म

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के है एक शुभ और दूसरा अशुभ । अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है वह ध्यान मे लाना चाहिये ।

शुभ ग्रह दशा फल— आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, आदि सुख ।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वास घात, द्रव्य हानि, रोग, कुटुम्बवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि ।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए ।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं ।

२. ग्रह शुभ या अशुभग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नही

३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ योग ।

४. महादशा का स्वामी और अंतर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु है या मित्र । और गोचर ग्रह, शुभ फलदायी है अथवा अशुभ फलदायी हैं ।

महादशा का स्वामी और अंतर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हो तो शुभ सम हो तो साधारण फल मिलता है । इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है ।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग, व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है ।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हो तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी संभव है । इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा ।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है ।

१, ४, ७, १०, यह केंद्र स्थान हैं ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११, यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं ।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं ।

दशा फल कहने से पहले ग्रहो के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिये । ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए । एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक ।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुक्र नैसगिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीणबली पापी होता है । तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं ।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है । त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है ।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वाभाविक पापग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वाभाविक शुभ यदि त्रिकोण पति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है । इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है तथा स्वाभाविक पापप्रद त्रिषडायपति हो तो अत्यंत पाप फलदायक होता है ।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केंद्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते । तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभाव अनुसार पाप फल नहीं देते । अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है । इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्रधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है ।

लग्न से द्वादशेश तथा द्वितीयेश दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं । इस से सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते । जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान मे रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान से स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं । भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है । यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उन में जो बली हो तद्नुरुप ही फल देता है ।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा—दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था वाले ग्रहोंकी दशाशुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है ।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान् होता है । तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेष कर मारकत्व दोष होता है । इन दोनों से न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है । अष्टमेश यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा ।

इसी प्रकार यदि पापी ग्रह केन्द्र पति हो तो उस का स्वाभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है । अतः केन्द्र पति हो कर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उस में शुभत्व आ जाता है । इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वाभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति हो कर त्रिषडायपति हो तो पापकारक हो जाता है ।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस जिस भाव में और जिस जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं ।

जैसे कहा है —यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतौ ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितां तमो ग्रहौ ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से सह वास न हो तो विशेष कर शुभ फलदायक होते हैं ।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शांत नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशिमे शक्त, अस्तंगत राशि में सुप्त अवस्था होती है ।

अवस्था फल-दीप्त अवस्था–सुस्वरूप, कांतिमानबुद्धिमान तीर्थों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला । स्वस्थ अवस्था–विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मिलकियत कमाने वाला व ज्योतिषी । हर्षित अवस्था–धर्मात्मा, सदाचारी । शांत अवस्था–तेजस्वी, शांत वाहन-युक्त । दीन अवस्था–बुद्धिहीन, परस्त्री आसक्त । पीड़ित-अवस्था–चितायुक्त, मानसिक दुख, रोगी । शक्त अवस्था–निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय । लुप्त अवस्था–अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित ।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है ।

॥ यात्रा-मुहूर्त विचार ॥

दिशा में विशेष समय का विचार

॥ यात्रा-मुहूर्त विचार ॥

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं । कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २।३।५।७।१०।११।१३इन तिथियों में अश्वि, मृ, पुन, पुष्य,, अनु, ह. श्र, ध, रे इन नक्षत्रों में तथा चौर,बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतिपात और मासांत दिनादि दोषरहित समय में, यात्रा करे यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिये ।

दिक्शूल ज्ञानचक्र

ईशाने बु	पूर्वे श. च	आग्नेये चं बृ.
उत्तरे बु मं	दिक्शूल	दक्षिणे बृ
वायव्ये. बु. मृ	पश्चिमे श. मृ	नैऋत्ये श. बृह

योगिनीवास ज्ञानचक्र

ईशाने ८।३०	पूर्वे १।९	आग्नेये ३।११
उत्तरे २।१०	योगिनी	दक्षिणे ५।१३
वायव्ये ७।१५	पश्चिमे ६।१४	नैऋत्ये ४।१२

कालपाश ज्ञानचक्र

ईशाने	पूर्वे शनि	आग्नेये शक्
उत्तरे सूर्य	कालपाश	दक्षिणे गुरु
वायव्ये चन्द्र	पश्चिमे मङ्गल	नैऋत्ये बुध

चन्द्रवास ज्ञानचक्र

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि	उत्तरे
मेष	वृष	मिथु.	कर्क
सिंह	क.	तुला	वृ.
धन	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रासमय दिक्शूल विचार

जिस दिशा मे दिक्शूल हो उस दिशा में यात्रा न करे । यदि अवश्य जाना हो तो उस वार के पदार्थ को भक्षन कर यात्रा करने से दिक्शूल दोष दूर हो जाता है सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्र वारे पयस्तथा । गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । दधि प्राश्यं शुक्रवारे गुरुवारे यवानपि । माषान् भक्त्वा मंदवारे गच्छेच्छूलं न दोषभाक् ।

योगिनीवास विचार

प्रतिपदादि तिथियों से चक्र में योगिनी का वास जाने और जाने वाली दिशा से यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ योगिनी हो तो अर्थसिद्धि और सुख प्राप्त होता है, यदि संमुख और दाहिनी तरफ योगिनी हो जाये तो कष्ट-प्राप्ति और धन की हानि होती है ।

कालपाश विचार

सूर्यादिवारों में जिस दिशा में काल का वास हो उसकी संमुख वाली दिशा में पाश रहता है किंतु रात में काल का वास दिन की दिशा से विपरीत दिशा में होता है (चिंतामणी) जानेवालो दिशा से काल का दाहिनी तरफ और पाश का बाईं तरफ होना शुभदायक होता है

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास संमुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है । यदि पीठ की ओर अथव बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है ।

भद्राफल—विवादे शस्त्रसंहारे भयार्ते राजदर्शने । रोगर्ते वैद्यगमने भद्रा श्रेष्टतम स्मृता ॥ **सूर्यवास फल** एक पहर रात के रहने से लेकर पहर दिन चढ़े तक सूर्य का वास पूर्व में होता है, फिर दोपहर तक दक्षिण में होता है । इसके पीछे एक पहर दिन रहने से पहर रात गई तक सूर्य का वास पश्चिम में रहता है, फिर एक पहर रात रहने तक उत्तर में वास होता है । यात्राके समय दाहिना और बायां सूर्य शुभ होता है । प्रवेशमें सम्मुख और पीछे सूर्य रहे तो शुभ होता है ।

दिशा में विशेष समय का विचार

(वसिष्ट) पूर्वाह्णेप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीमध्यं दिनं तथा । दक्षिणां चापरन्हे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ न तत्रांगारको ऽनिष्टिव्यतिपातो न वधृतिः । सिध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिण रविः ॥

दिन में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र	मङ्गला	बुध	बृह	शुक्	शनि	घटी
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	०३।४५
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	०७।३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रो.	११।२५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।१५
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०।००

रात्रि मे चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र.	मङ्गल	बुध	बृह.	शुक्	शनि	घटी शु.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	०३।४५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	०७।३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	११।१५
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२२।३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२६।१५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	३०।००

समय शूल ज्ञान—उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्ध रात्रि में उत्तर को और मध्यान्ह काल में दक्षिण को नही जाना चाहिये ।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल—करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष संक्रांतिदोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े यात्रा सफल होगी ।

पंचक वर्जित कर्म—पंचकों में खाट बनाना, प्रेत का दाह, प्रेत क्रिया, काष्ठ, घास आदि का लेना, दक्षिण दिशा में गमन इत्यादि कार्य नहीं करने चाहिये ।

स्वप्न देखने के शुभाशुभ फल विचार

ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि में स्वप्न केवल मनुष्य को ही प्रदान किए हैं। मनुष्य के वास्तविक जीवन में जो अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं हो पाती, वह एक स्वप्न द्वारा पूरी हो जाती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। जो स्वप्न रोग अथवा परेशानी की हालत में आते हैं, उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। स्वस्थ मन और शरीर की सामान्य स्थिति में देखे गए स्वप्नों के फल पर ही विचार करना चाहिए। अशुभ स्वप्न के कुप्रभाव के निवारण हेतु गायत्री मन्त्र का जाप, स्नानदानादि अनुष्ठानादि शुभ कर्मों का सम्पादन करने चाहिएं। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से **'स्वप्न ज्योतिष विज्ञान'** पुस्तक मँगवा कर पढ़े। **मूल्य–30 रुपए।**

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कमल देखना	धन प्राप्ति	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	तीर मारना	खुशी मिले	दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
अस्त्र देखना	दुःख निवारण	कंगन/कड़ा	धन हानि	चौंकीदार देखना	धनागमन	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि	दुश्मन देखना	हानिकारक
आम का वृक्ष	संतान प्राप्ति	कबाब खाना	विवाद/अपयश	चट्टाने देखना	कार्य पूर्ती	तेल देखना	परेशानी बढ़ेगी	दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
अपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	तपस्वी देखना	शांति मिले	दुकाना देखना (खाली)	धन हानि
अपमान देखना	चिंताएं दूर होना	कोयला देखना	झूठा आरोप लगे	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े	धुआँ देखना	कष्ट प्राप्ति
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कटा सिर देखना	चिंता, परेशानी	छींकना	कार्य बाधा	तोता देखना	कष्ट से छुटकारा	धूल देखना	यात्रा पड़े
अपनी शादी देखना	संकट आवे	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	छुरी देखना	संकट निवारण	तैरते देखना	आयु में वृद्धि	धोबी देखना	सफलता हो
अंधेरा देखना	दुख मिले	कुएं में गिरना	परेशानी बढ़े	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ताला बंद देखना	कार्यों में रुकावट	नहर देखना	कष्ट निवारण
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	काला नाग	राज्य सम्मान	जहाज़ देखना	यात्रा व स्त्री क्लेश	तालाब में नहाना	मान प्राप्ति	नल देखना	कार्य सिद्धि
आग गिरना	शुभ समाचार	कौवा बोलना	प्रिय से मिलाप	जहाड़ पर चढना	परिवर्तन हो	तलवार देखना	शत्रु पर विजय	नदी में गिरना	फ़िकर, चिंता
आलिंगन (स्त्री का)	धन लाभ	किला देखना	तरक्की पाना	जुआ खेलना	धन-हानि	ताश खेलना	पड़ोसी से मनमुटाव	नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
आकाश देखना	तरक्की होगी	कुत्ते का काटना	शत्रु का भय	जनाज़ा देखना	धन लाभ/तरक्की	तितली देखना	प्रेम संबंध में सफलता	नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
आवारा भटकना	नौकरी मिलना	कैंची देखना	स्त्री से कलह	जेब काटना	धन हानि	तीर्थ देखना	धार्मिक रुचि हो	नमाज पढ़ना	आत्मोन्नति
आँवला देखना	उदर रोग	कबूतर देखना	शुभ समाचार	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तोता देखना	धन लाभ	नाखुन काटना	रोग व दुख से मुक्ति
आत्महत्या देखना (करना)	दीर्घ आयु	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तेल/तेल की धार	अप्रिय घटना	नाग देखना	सुख प्राप्ति
आलू देखना	मुसीबत आना	खिलौना देखना	सुख-शान्ति	झरना देखना	खर्च अधिक	त्रिशूल देखना	सौभाग्य प्रतीक	न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
आग उड़ाना	परेशानी हो	खेत देखना	संकट	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	थूक देना	परेशानी बढ़े	पाखाना करना	कष्ट मिले
आकाश से गिरना	मान हानि, चिंता	खून करना	संकट आना	टिकिट लेना	हानि/संबंध टूटना	धन देखना (गाय)	धन प्राप्ति, कल्याण	प्यासा होना	कार्य बाधा हो
इंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	ठग मिलना	धन हानि	थप्पड़ खाना	शुभ	पहाड़ पर चढ़ना	धन व तरक्की हो
इमली का पेड़	स्वास्थ्य गिरावट	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	ठाकुर (ईश्वर)	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	दीवार में गिरना	धन हानि	पहाड़ से उतरना	हानि हो
ईंट देखना	घर ढहना	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	डर कर भागना	कष्ट से छूटे	दरवाज़ा बंद देखना	धन हानि	पतंग देखना	परेशानी बढ़े
ईमारत बनाना	धन लाभ-तरक्की	गर्भपात	गम्भीर रोग	डाकखाना	व्यापार में विस्तार	दरिया में नहाना	रोग नाश	पेड़ पर चढ़ना	मान व तरक्की हो
ईमली खाना (स्त्री)	पुत्र प्राप्ति	ग्रहण देखना	रोग व चिंता	डोली देखना	मुराद पूरी हो	दरिया में डूबना	कष्ट बढ़े	पपीता देखना	धन लाभ
इन्द्रिय देखना	संतान प्राप्ति	गुरु देखना	कार्य सफलता	डाकू देखना	धन हानि	दूध पीना	खुशी प्राप्ति	पानी में डूबना	परेशानी बढ़े
उल्लू देखना	रोग, शोक हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिंता	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही खाना	लाभ व तरक्की	पान खाना	प्रिय से मिलाप
उलटा लटकना	अपमान मिले	घोड़े पर चढ़ना	पदोन्नति	डाक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति	पत्थर देखना	कठिनाई पड़े
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	घाट बैठना/नहाना	तीर्थ यात्रा	डूबते देखना	अनिष्ट होगा	दवाई पीना	रोग नाश	पटाखा देखना	धन लाभ
ऊँट देखना	अंग घात	घूँघट देखना	नया कारोबार/पद	ढोलक बजाना	किसी से भेंट/मुलाकात	दौलत देखना	संतान सुख	पुल देखना	शुभ यात्रा हो
कन्या देखना	उन्नति/तीर्थ यात्रा	चाय पीना	सफलता	ताली बजाना	खुशी मिलेगी	दर्जी देखना	काम बिगड़ना	परीक्षा में (स्वयं को)	कठिनता से सफलता
कोढ़ी देखना	रोग सूचक	चोर देखना	धन हानि	तरबूज खाना	चिंता व परेशानी	दाँत गिरते देखना	स्वास्थ्य लाभ	पशु देखना	व्यापार में लाभ
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चावल खाना	शुभ समाचार	ताँगा देखना	झगड़ा हो	दाँत उखाड़ना	धन लाभ	पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
पुजारी देखना	धार्मिक रुचि बढ़े	रीछ देखना	
पूजन देखना	आत्मोन्नति, श्रद्धा भाव	रेत देखना	रोग सूचक

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चावल खाना	शुभ समाचार

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
पुजारी देखना	धार्मिक रुचि बढ़े	रीछ देखना	शुभ समाचार
पूजन देखना	आत्मोन्नति, श्रद्धा भाव	रेत देखना	रोग सूचक
प्रेत देखना	सौभाग्यवर्धक	रेत पर चलना	शत्रु से हानि
फव्वारा देखना	चिंता दूर हो	(स्वयं को) रोते देखना	खुशी मिले
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले	रोते हुए देखना	प्रसन्नता मिले
फाँसी देखना	जीवन में नया मोड़	रथ देखना	यात्रा पड़े
बर्फ गिरते देखना	धन हानि, रोग	रोगी देखना	दुख निवृत्ति
बारिश देखना	रोग व कलह	रोटी देखना	धन लाभ हो
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह	रिश्वत लेना	अपमान हो
बकरी देखना	शुभ समाचार, यात्रा लाभ	रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
बंदर देखना	रोग व चिंता हो	(स्वयं) रोगी होना	चिंता लगेगी
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ	लाटरी का टिकट	सौभाग्यप्रद
बूढ़ी स्त्री देखना	दुख प्राप्ति	लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
बारात देखना	चिंता परेशानी	वर्षा देखना	चिंता हानि
बिच्छू देखना	चिंता बढ़े	विष खाना	परेशानी बढ़े
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप	वृक्ष काटना	धन-हानि
बाग देखना	सुख मिले	वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
बंदूक देखना	संकट आवे	विदेशयात्रा देखना	पारिवारिक विवाद
बाढ़ देखना (घिर जाना)	धन की हानि	वाद-विवाद देखना	गहरी मैत्री
(स्वयं को) भूखा देखना	यात्रा लाभ	शेर देखना	शत्रु नाश
भिखारी देखना	यात्रा पढ़े	शिकार करना	इच्छा पूर्ण हो
भाषण देना/सुनना	वादविवाद	शीशा देखना	रोग नाश
भूकम्प देखना	उच्च पद/मान सम्मान	शत्रु देखना	सफलता हो
मुर्गी देखना	स्त्री से मिलाप	शव/शवयात्रा देखना	शुभ फल
मुर्दा हँसते देखना	फिक्र व चिंता	श्मशान घाट	दीर्घायु
मुर्दा रोते देखना	कष्ट से छुटकारा	शिकारी देखना	साहस वृद्धि
माली देखना	खुशी मिले	श्राद्ध देखना/करना	पितरों की प्रसन्नता
महल देखना	कष्ट से छुटकारा	सोना मिलना	कष्ट चिंता
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो	साँप देखना	भय, परेशानी
मिठाई खाना	मान व तरक्की	साँप गिरना	रोग व चिन्ता
मोर देखना	खुशी प्राप्ति	साँप का काटना	धन लाभ
मौत देखना	तरक्की हो	साईकल चलाना	कार्य सिद्धि
मुर्दे के साथ खाना	दुख दूर हो	साँप पकड़ना	शत्रु पर विजय
मिर्च खाना	लड़ाई हो	सुन्दरी देखना	धन लाभ
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति	सागर देखना	धन वृद्धि
मक्खन खाना/देखना	लम्बी यात्रा	स्वर्ग की यात्रा	लौकिक/पारलौकिक सुख
माँसाहार करना/देखना	शरीर अस्वस्थ	स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
यज्ञ देखना	सौभाग्यवर्धक	हवाई जहाज़ देखना	यात्रा में रुकावट
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ	हवालात देखना	मान-सम्मान
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो		

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
माथे के बायीं ओर	व्याकुलता में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बाँयी आँख पर	औरत से कलह रहे
दाहिनी आंख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बांये गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोत्तरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषय वासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
दाहिनी भुजा पर हो	मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसुली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
पेट के बीच में	स्वभाव डरपोक हो
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशांत रहे
दाहिनी भुजा पर हो	मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो
बाँयी भुजा पर हो	झगड़ालू हो
दाहिने हाथ की पीठ पर	धनवान हो
बाये हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बाये पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके 'महामृत्युञ्जय मन्त्र" का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण-लाभ
दाई भुजा	मान-सम्मान
बाई भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	कलह-क्लेश
बायीं पीठ	रोग-भय
दायीं पीठ	सुख-लाभ
दायें कंधे	विजय, सफलता
बायें कंधे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाई जाँघ	धन हानि
बाई जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बाँयें पाँव	रोग-क्लेश
पाँवों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

अवस्था	फल
रोते हुए	मनोरथ सिद्धि
हँसते हुए	भयानक घटना
सोते हुए	देरी से फल प्राप्त हो
जागते हुए	शीघ्र फल प्राप्त हो
भोजन करते हुए	फल प्राप्त न हो

अंगस्फुरण फल

सिर	पृथ्वी लाभ	बाहुमध्य	धनागम:
माथा	स्थान लाभ	कर (हाथ)	धन प्राप्ति
बामभुज	प्रिय प्राप्ति	छाती	विजय
नेत्र	प्रियदर्शन	पार्श्व	उत्तम प्रीति
भृकुटिया	लक्ष्मी दर्शन	नाभी	स्थान से यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	उदर पेट	कोष प्राप्ति:
नासा	गंध सुख	वृष्ण	पुत्र लाभ
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन	जानु (घुटना)	रिपु: (शत्रु) सन्धि
कण्ठ	भूषण प्राप्ति	जंघा	हानिप्रद
ग्रीवा	शत्रुभय	चरण से ऊपर	स्थान प्राप्ति
पीठ	पराजय	चरण के नीचे	लाभप्रद:
कन्धा	मित्र समागम	दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति	कण्टे	शत्रुनाश

।। अथ नक्षत्रकष्टावलीय ।।

नक्षत्र चरण	च १	च २	च ३	च ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	दि ०६	दि ११	दि १०	दि २०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनी तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन्न चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल धूपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐयमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ।।२।।	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृत्तिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कब्रोरयीणाम् ।।३।। अग्नये नमः ।।	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०६	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ।।४।। ॐ ब्रह्मणे नमः ।।	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य असगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप दशांग
मृगशिर ५	दि ०८	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअनन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदथ्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रसे नमः ।५।।	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवद्यमधुघृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐनमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमःबाहुभ्या मुतते नमः ।।६।। ॐ रुद्राय नमः ।।	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिर्जनित्वम् ।।७।। ॐ अदित्याय नमः।।	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐबृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋृतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ।। ॐ गुरवे नमः ।।	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।९।। ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविर्नैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम.
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ।।१०।। ॐ पितरेभ्ये नमः ।।	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविर्नैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल्गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्र पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ।।११।। ॐ भगाय नमः ।।	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐदेव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ।।१२।। ॐ अर्यमणे नमः ।।	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहत्पिवतु सोम्यं मध्वाय्युर्दधद्य पत्त च विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ।। ॐ सावित्रे नमः ।।	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०६	दि ०६	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ।।१४।। त्वष्ट्रेनमः ।। ॐ विश्व कर्मणे नमः ।।	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविर्नैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	च	च	च	च	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या		बलि द्रव्याणि

नक्षत्र चरण	च १	च २	च ३	च ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलि द्रव्याणि
स्वाती १५	दि ६०	दि १७	दि ३०	दि ००	अनेक तरह के रोग, ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्कान्न दान	५ हजार	ॐवायरन्नरदि बृधःसुमेधः श्वेतः सिशीतिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचकुः ।।१५।। ॐ वायवे नमः।।	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ।।१६।। ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः।।	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायश Ω सत ।।१८।।ॐ मित्राय नमः।।	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५६	दि ०६	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्र पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः।।	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०६	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निऋृति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐमातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदेवऋृतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐ निऋृतये नमः।।	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृत्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद वदुः स्वपन्य-सुवः ।।२०।। ॐ अद्भ्यो नमः।।	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐविश्वे अद्य मरुत विश्वऽउती विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं वाजो असे ।।२१।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।।	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐविष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ।।२२।। ॐ विष्णवे नमः।।	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरस नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वररक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः।।	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतामिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋृत सदन्य सि वरुण स्याऋृतमदन ससि वरुणस्यऋृतसदनमसि। ॐ वरुणाय नमः।।	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः विश्वे देवा ऋृता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु।। ॐ अजैकपदे नमः।।	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभाद्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय (सुवीर्याय ।।२६।।) ॐ अहिबुर्धाय नमः।।	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीड़ा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ओं पूषन् तव व्रते वय नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ।।२७।। ॐ पूष्णेनमः।।	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।

मगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शक्रवार ४।९।१४ तिथि-आर्द्रा-धनिष्ठा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि-भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोगका प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुख होता हैं और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्रमें हो, वह नक्षत्र, चन्द्र-नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।।

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले०	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

★ अथ बालकावली पूतना विधान ★

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरास्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे।।

जन्म		से	पूतना नाम	प्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा०० १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी की मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उब्ले चावल सफेद चंदन का लेप सफेद फूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ओं नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सेर भर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ओं नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ओं नमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडलिका २ आकाशयोगनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ओं नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुंचसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ओं सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे के पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ओं राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ओं नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिवे। सगृहाँ बलि मापञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आंखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ओं नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पुर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ओं नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ओं नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ओं नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ओं हुं फट स्वाहा।
ि १२	मा १२	व १२	१ अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आंखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ओं नमो नारायण प्रज्वल २ ताप हर२ शोषय२ मर्दय२हन दुष्टान् हुंफटस्वाहा

श्री केरल प्रश्न चक्रम्

काल होरा ज्ञान चक्र और उसका फल

समय	रवि	चं	मं	बु	बृ	शु	श
घ २॥	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
७॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
१०	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
१२॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
१५	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
१७॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
२०	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
२२॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
२५	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
२७॥	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
३०	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
३२॥	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
३५	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
३७॥	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
४०	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
४२॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
४५	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
४७॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
५०	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
५२॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
५५	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५७॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
६०	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र से देख लें। जैसे रविवार को पहली काल होरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसकेबाद ५ घड़ी तक शुक्रकी कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिये। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। वार से भी क्षण वार में ही प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों। तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) को अनुकूलता देकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता होती वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेंडर देने व नाकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्र की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**—युद्ध, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोपसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि मकान की नींव नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले बदेन्नद्यः रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गाः उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
अ इ उ ए	क ख ग घ	च छ ज झ	ट ठ ड ढ	त थ द ध	प फ ब भ	य र ल	श ष स	
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	व	ह	
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एकवर्ष	प्रवासी दिनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुण	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहिता	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्ने ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्ठगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय हानि प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षणं	न मोक्ष	मोक्षणं	न वोक्ष	मोक्षणं	बन्दी मोक्षामोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्षा अविधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धिभविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१००वर्ष	१ वर्ष	१००वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्ने आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धनलाभ प्रश्ने लाभालाभ
बिलम्ब	उत्तम	बिलम्ब	उत्तम	बिलम्ब	उत्तम	बिलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्ने भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

वर्षफल बनाने की सारणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते है। फिर वर्ष प्रवेश के दिन कालिक ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था** जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से **राहु**, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से **केतु**, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, मंगल के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरू** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन मुद्दा **दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरू ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १ ।५, चन्द्रमा २ ।४, मंगल १ ।८ ।१०, बुध ३ ।६, बृहस्पति १२ ।९ ।४, शुक्र २ ।७ ।१२, शनि १० ।११ ।७ —इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रह—स्त्री ग्रह लग्न से १ ।२ ।३ ।७ ।८ ।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४ ।५ ।६ ।१० ।११ ।१२ घरों मे ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रिका हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह है वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९
गुप्त मित्र	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११
प्रत्यक्ष शत्रु	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७
गुप्त शत्रु	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्तभावसे सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनते कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धनहानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मनमुटाव इत्यादि हैं।

।।वर्ष कुण्डली में लग्नादि १२ भावों के फल।।

॥वर्ष कुण्डली में लग्नादि १२ भावों के फल॥

ग्रह	लग्न १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	रोग भयं चिन्ता	शोक धन हानि	पराक्रम धन लाभ	हानि भय माता को कष्ट	रोगभय धन हानि	अल्प सुख शत्रु नाश	स्त्रीकष्ट पीड़ाभय	शोककष्ट शत्रु भय	भाग्य वृद्धि उन्नति	सुखधन लाभ	सुखधन लाभ	रोग पीड़ा अपव्यय
चंद्र	कफज्वर कार्यसिद्धि	नेत्र पीड़ा धन लाभ	धन लाभ खुशी	सुख प्राप्ति धन लाभ	लाभ सुख सुमति	शरीर पीड़ा व्यय	स्त्री सुख ज्वरादि भय	शरीर कष्ट	पुण्योदय धन लाभ	पदोन्नति जय प्राप्ति	यश धन लाभ	व्यय नेत्र पीड़ा
मंगल	शरीर कष्ट	कलह धन नाश	निरोग्य द्रव्यलाभ	व्यसन रोगभय	सन्तान कष्ट धन हानि	सुख शत्रु नाश	स्त्री कष्ट धन हानि	ज्वर व्रण	पुण्योदय यश	राज्यसेधन प्राप्ति	सुख लाभ	शत्रुभय कर्णपीड़ा
बुध	सुख धन लाभ	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख मान	सुख द्रव्य लाभ	पुत्र धन सुख प्राप्ति	रोग भय कलेश	धन लाभ सुख	व्यग्रता कफपीड़ा	धन लाभ कीर्ति	मान सुख	धन पुत्र लाभ	शत्रु रोग भय
गुरू	सुख यश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	जय सुख	सुख वाहन प्राप्ति	सुख पुत्र प्राप्ति	शत्रु रोग भय	सुख धन प्राप्ति	कठिन रोग भय	सुख भाग्यउन्नत	राज्यसेधन लाभ	शुभ धन लाभ	शोक रोगभय
शुक्र	मान धन लाभ	धन लाभ सुख	कीर्तिवर्धन धन	सुख धन लाभ	संतान सुख धन लाभ	कष्ट शत्रु भय	कलत्र सौख्यम	ज्वर पीड़ा	धर्मेतत्पर धनलाभ	मान जय लाभ	धन पुत्र लाभ	व्यय नेत्र पीड़ा
शनि	शत्रु भय शरीर कष्ट	पीड़ाभय विरोध	धन प्राप्ति जय	धन सुख नाश कष्ट	संतान कष्ट शरीर पीड़ा	धन प्राप्ति मतिनाश	स्त्रीकष्ट कलेश	दुख रोग भय	भाग्यवृद्धि शत्रुनाश	धन हानि पीड़ा	संतान कष्ट लाभ	कलेश चिन्ता
राहु	शिरोति कलह	शरीर पीड़ा	शत्रु नाश सुख	शरीर कष्ट दुःख	बुद्धिनाश धनरहित	शत्रु नाश अरोग्य	पीड़ा भय धन हानि	धनहानि रोगभय	धन धर्म में वृद्धि	वाहन नाश भय	पुत्रप्राप्ति लाभ	व्याधि भय
केतु	पीड़ा भय चिन्ता	कलेश धन हानि	आरोग्य धन लाभ	कष्ट राज्य भय	पीड़ाभय धन हानि	सुख धनलाभ	कलेश रोग	ज्वरपीड़ा भय	भाग्यवश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	पुत्र कष्ट लाभ	शोक भय
मुन्था	लाभ सुख शत्रुनाश	यश धन लाभ	कार्यपुष्टि धन लाभ	अंगपीड़ा विघ्न भय	धन लाभ सुख	रोग भय धन नाश	रोग भय धन हानि	कार्य हानि रोग भय	भाग्योदय शुभ कार्य	राज्यसुख धन लाभ	धन लाभ उन्नति	अपव्यय शरीर कष्ट

वर्ष कु. में अरिष्ट कारक योग

मुंथेश यदि अष्टमेश ग्रह से युक्त होकर क्रूर ग्रह के द्वारा दृष्ट हो, तो उस वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। परन्तु यदि गुरु, बुध, चंद्र या शुक्र आदि शुभ ग्रहों में से एक भी बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अनेक प्रकार के अरिष्टों का नाश होकर सुख की प्राप्ति होती है।

तरक्की एवं तबदीली के योग

वर्ष लग्नेश एकादश भाव में और एकादशेश लग्न में हो अथवा दोनों केन्द्र-त्रिकोण या एकादश भाव में शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो वर्ष में तरक्की व धन लाभ होगा।

नवम भाव में मुंथा हो और मुंथेश १, २, ३, ५, ९, १० या ११वें भाव में चर राशि में शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उस वर्ष तरक्की व तबदीली के योग बनते हैं।

वर्ष कु० में विवाह सुख विचार

सप्तमेश यदि बलवान होकर केन्द्र भावों में स्थित एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री सुख एवं धन धान्य की प्राप्ति होती है।

मुंथा या मुंथेश एवं सप्तमेश शुक्र, गुरु या चन्द्रमा युक्त (या दृष्ट) होकर केन्द्र-त्रिकोण भावों में पड़े, तो उस वर्ष विवाह योग एवं धन सम्पदा के लाभ के योग बनते हैं।

विदेश यात्रा योग

नवम भाव में मुंथा का आना और मुंथेश बारहवें भाव में पड़कर शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो शुभ विदेश यात्रा होती है। वर्ष ल. कु. के प्रथम, चतुर्थ एवं सप्तम भावों में यदि चर राशियां आ जाएं तथा इन भावों के साथ शुभ ग्रह सम्बन्ध करते हों, तो उस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बनते हैं।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

श्री यन्त्र - अष्ट ऊर्ध्व एवं अष्ट अधोमुखी शिव त्रिकोण युक्त ऊपर लिखित "श्री यंत्र" भगवती त्रिपुरा सुन्दरी का है। इस यन्त्र के नित्य दर्शन व धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्यादि द्वारा पूजन से दुख-दारिद्रय दूर होकर सुख सम्पत्ति एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

इस यंत्र की संरचना, अक्षया तीज, धन त्रयोदशी, दीपावली, बसंत पंचमी, गुरु पुष्य-रवि पुष्य द्वि एवं त्रिपुष्करादि शुभ योगों में श्री महालक्ष्मी के महायंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके करनी चाहिए। इसको चाँदी या स्वर्ण की पतरी पर बनवाना श्रेष्ठ रहता है। उसके अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध द्वारा लिखकर चाँदी के तावीज में धारण करें।

या देवी सर्व भूतेषु श्री लक्ष्मी रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
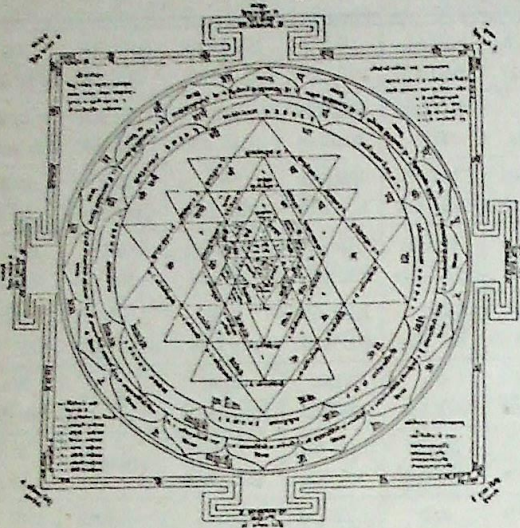
॥ श्रीयन्त्रम् ॥

संक्रान्ति से जन्म नक्षत्रानुसार शुभा-शुभ फल

जिस नक्षत्र में संक्रांति लगे, उस नक्षत्र से यदि प्रथम ३ नक्षत्रों में आपका जन्म नक्षत्र हो, तो उस मास में यात्रा हो, आगामी ६ में हो, तो सुख प्राप्ति, फिर आगे के ३ नक्षत्रों में हो तो दुख प्राप्ति, उसके बाद ६ नक्षत्रों में हो, वस्त्र प्राप्ति, फिर ३ में हो तो धन हानि एवं अंतिम ६ में हो तो उस मास धन लाभ होता है—

संक्रांति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक शुभा-शुभ चक्र

संक्रांति नक्षत्र से	प्रथम ३ नक्षत्र	आगे के ६ नक्षत्र	आगे के ३ नक्षत्र	आगामी ६ नक्षत्र	आगामी ३ नक्षत्र	अंतिम ६ नक्षत्र
फल	यात्रा पड़े	सुख, लाभ	दुखः हो	वस्त्र, लाभ	धन, हानि	धन, लाभ

नवीन वेधासिद्ध मतानुसार वर्ष सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल हैं, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५७ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८। ३० पल अथवा ३ मि० २० सैकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्द (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी २ एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। आगामी पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से 'वर्षफल चन्द्रिका' लेखक प० पन्ना लाल गणितकर्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि प्राचीन परम्परानुगामी प्राचीन सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

नवीन वर्षमान से वर्ष प्रवेशसारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

भाग्य देखने का चक्र

आप किसी को कहें कि वह ३१ के अन्दर का कोई अंक दिल में सोच ले और बतलायें कि वह अंक किस नम्बर के खाने में है। जिस नम्बर के खाने में वह अंक सोचा हुआ बताये उनके ऊपर के दायें कोने के (हिन्दसों) अंकों को जमा कर लो, बस उसका सोचा हुआ अंक निकल आयेगा और इस अंक पर उसके भाग्य का हाल बता दो।

उदाहरण--किसी मनुष्य ने अपने दिल में ३१ का अंक सोचा है। अब देखो कि यह ३१ का अंक खाना नं० १, २, ३, ४, ५ में मिलता है। अब इन खानों के ऊपर के दायें कोने के अंकों १, २, ४, ८, १६ को जोड़ो तो ३१ का अंक बनता है अतः प्रश्नकर्त्ता ने ३१ का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी, तुम अपना पुरुषार्थ रखो सफलता के चिन्ह पाए जाते हैं।

नं० १				नं० २				नं० ३				नं० ४				नं० ५			
७	५	३	१	७	६	३	२	३०	२९	२८	४	३०	१०	२८	८	२९	३०	३१	१६
१५	१३	११	९	१५	१४	११	१०	२२	२१	२०	२३	२६	२५	२४	३१	२६	२५	२४	२०
१७	१९	२१	२३	२३	२२	१९	१९	१५	१३	१२	१४	१४	१३	१२	२७	२१	२२	२३	२७
२५	२७	२९	३१	३१	३०	२७	२६	५	६	७	३१	२९	९	११	१५	१७	१८	१९	२७

(१) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुम को इस का ख्याल भी न होगा।

(२) भाग्योदय होने वाला है।

(३) किसी ऐसी जगह से तुम्हारी उम्मीद पूरी होगी जिसका तुमको ख्याल भी नहीं।

(४) जिस बात के लिए परेशान है, अब उसकी सफलता में और देर न होगी।

(५) तुम्हारे लिए खुशी का समय आने वाला है।

(६) घबराओ नहीं तुम्हारी बेहतरी का ज़रिया जल्दी निकलेगा।

(७) तुम्हारी मुश्किल जल्द ठीक हो जाएगी।

(८) तुम्हारे भाग्य में रुपया लिखा है किन्तु देर से मिलेगा।

(९) तुम्हारे सामने थोड़े दिनों में एक तजवीज रखी जाएगी इसे मान लेने से पहले आप को अच्छी तरह सोच लेना होगा।

(१०) इस समय तुम्हारा वक्त गड़बड़ में है, जल्दी समय ठीक हो जाएगा।

(११) तुम्हारे फिकर और ग़म का समय गुजर गया है अब तुम को आराम और खुशी मिलेगी।

(१२) तुम्हारा काम नियत समय पर ठीक हो जाएगा अतः दूसरों की सलाह मत लो।

(१३) तुम्हारी मुश्किल किसी तरीके से हल हो जाएगी।

(१४) जिस काम के लिए हैरान हो रहे हो उसकी सफलता में रुकावटें पैदा होंगी।

(१५) भाग्य की ठोकर तुम्हारे ख्याल को बदल देगी।

(१६) सबर करो अभी कुछ दिन और बाकी हैं।

(१७) जो समय तुम पर बीत रहा है आगे इसमें बेहतरी होगी विश्वास रखो।

(१८) परेशानी को दूर कर दो अब वह समय आ गया है कि तुमको आराम व खुशी मिलेगी।

(१९) पुरुषार्थ करते रहो लाभ अवश्य होगा।

(२०) तुम्हें यह जानकार खुश होना चाहिए तुम्हारे हलात किसी जरिए से ठीक होने वाले हैं।

(२१) तुम्हारे हालात अजीब चक्र में हैं यह तकरीबन एक मास तक ठीक हो जायेंगे।

(२२) तुम को जल्द ही खबर मिलेगी जो तुम्हारे हक में होगी।

(२३) तुम देर से परेशान हो तुम्हारा कारोबार थोड़े दिनों तक बनेगा जिससे तुमको लाभ होगा।

(२४) समय आने वाला है तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी।

(२५) किसी भी जरिए तुम्हारा काम ठीक हो जाएगा।

(२६) फिज़ूल बातों पर अपना समय और दिमाग खर्च न करो इज्जत व खुशी तुम्हारे साथ है।

(२७) भाग्य का सितारा अच्छा है, जिन हालातों से तुम डरते हो वह पैदा नहीं होंगे।

(२८) तुम अपने काम में लगे रहो जिन कामों में तुमको दखल नहीं, उनमें दखल न दें खुद ठीक हो जायेंगे।

(२९) तुम को यह पता है कि तुम्हारे दिन गरदिश में हैं तो तुम उस मार्ग पर क्यों चल रहे हो जिसमें तुम को नुक्सान हो।

(३०) जब तुम जानते हो कि तुम ठीक रास्ते पर हो तो ख्यालात पर पक्के रहो घबराओ नहीं।

(३१) यह मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी। अपना पुरुषार्थ जारी रखो सफलता के चिन्ह पाये जाते हैं।

ई० लग्न सारिणी (वैशाख मास) अप्रै०-मई स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

वैशाख	अप्रैल	मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चि.		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१३	७	४०	९	३४	११	४८	१४	०९	१६	२९	१८	५०	२१	११	२३	३१	०१	३५	३	१६	४	४१	६	०४
२	१४	७	३७	९	३०	११	४४	१४	०५	१६	२५	१८	४६	२१	०७	२३	२७	०१	३१	३	१२	४	३७	६	००
३	१५	७	३३	९	२६	११	४०	१४	०१	१६	२१	१८	४२	२१	०३	२३	२३	०१	२७	३	०८	४	३३	५	५६
४	१६	७	२९	९	२२	११	३६	१३	५७	१६	१७	१८	३८	२०	५९	२३	१९	०१	२३	३	०४	४	२९	५	५२
५	१७	७	२५	९	१९	११	३३	१३	५३	१६	१३	१८	३४	२०	५५	२३	१५	०१	१९	३	०१	४	२६	५	४८
६	१८	७	२१	९	१५	११	२९	१३	४९	१६	१०	१८	३१	२०	५२	२३	१२	०१	१६	२	५७	४	२२	५	४४
७	१९	७	१७	९	११	११	२५	१३	४५	१६	०६	१८	२७	२०	४८	२३	०८	०१	१२	२	५३	४	१८	५	४०
८	२०	७	१३	९	०७	११	२१	१३	४२	१६	०२	१८	२३	२०	४४	२३	०४	०१	०८	२	४९	४	१४	५	३६
९	२१	७	०९	९	०३	११	१७	१३	३८	१५	५८	१८	१९	२०	४०	२३	००	०१	०४	२	४५	४	१०	५	३२
१०	२२	७	०५	८	५९	११	१३	१३	३४	१५	५४	१८	१५	२०	३६	२२	५६	०१	००	२	४१	४	०६	५	२८
११	२३	७	०१	८	५५	११	०९	१३	३०	१५	५०	१८	११	२०	३२	२२	५२	२४	५६	२	३७	४	०२	५	२४
१२	२४	६	५७	८	५१	११	०५	१३	२६	१५	४६	१८	०७	२०	२८	२२	४८	२४	५२	२	३३	३	५८	५	२०
१३	२५	६	५३	८	४७	११	०१	१३	२२	१५	४२	१८	०३	२०	२४	२२	४४	२४	४८	२	२९	३	५४	५	१६
१४	२६	६	४९	८	४३	१०	५७	१३	१८	१५	३८	१७	५९	२०	२०	२२	४०	२४	४४	२	२५	३	५०	५	१२
१५	२७	६	४५	८	३९	१०	५४	१३	१४	१५	३४	१७	५५	२०	१६	२२	३६	२४	४०	२	२१	३	४६	५	०८
१६	२८	६	४१	८	३५	१०	५०	१३	१०	१५	३०	१७	५१	२०	१२	२२	३२	२४	३६	२	१७	३	४२	५	०४
१७	२९	६	३७	८	३१	१०	४६	१३	०६	१५	२६	१७	४७	२०	०८	२२	२८	२४	३२	२	१३	३	३८	५	००
१८	३०	६	३३	८	२७	१०	४२	१३	०२	१५	२२	१७	४३	२०	०४	२२	२४	२४	२८	२	०९	३	३४	४	५६
१९	मई	६	२९	८	२३	१०	३८	१२	५८	१५	१८	१७	३९	२०	००	२२	२०	२४	२४	२	०५	३	३०	४	५२
२०	२	६	२६	८	१९	१०	३४	१२	५४	१५	१४	१७	३५	१९	५६	२२	१७	२४	२०	२	०१	३	२६	४	४९
२१	३	६	२२	८	१५	१०	३०	१२	५१	१५	१०	१७	३२	१९	५३	२२	१३	२४	१७	१	५८	३	२३	४	४५
२२	४	६	१८	८	१२	१०	२६	१२	४७	१५	०७	१७	२८	१९	४९	२२	०९	२४	१३	१	५४	३	१९	४	४१
२३	५	६	१४	८	०८	१०	२२	१२	४३	१५	०३	१७	२४	१९	४५	२२	०५	२४	०९	१	५०	३	१५	४	३७
२४	६	६	१०	८	०४	१०	१८	१२	३९	१४	५९	१७	२०	१९	४१	२२	०१	२४	०५	१	४६	३	११	४	३३
२५	७	६	०६	८	००	१०	१४	१२	३५	१४	५५	१७	१६	१९	३७	२१	५७	२४	०१	१	४२	३	०७	४	२९
२६	८	६	०२	७	५६	१०	१०	१२	३१	१४	५१	१७	१२	१९	३३	२१	५३	२३	५७	१	३८	३	०३	४	२५
२७	९	५	५८	७	५२	१०	०६	१२	२७	१४	४७	१७	०८	१९	२९	२१	४९	२३	५३	१	३४	२	५९	४	२१
२८	१०	५	५४	७	४८	१०	०२	१२	२३	१४	४३	१७	०४	१९	२५	२१	४५	२३	४९	१	३०	२	५५	४	१७
२९	११	५	५०	७	४४	०९	५८	१२	१९	१४	३९	१७	००	१९	२१	२१	४१	२३	४५	१	२६	२	५१	४	१३
३०	१२	५	४६	७	४०	०९	५४	१२	१५	१४	३५	१६	५६	१९	१७	२१	३७	२३	४१	१	२२	२	४७	४	०९
३१	१३	५	४२	७	३६	०९	५०	१२	११	१४	३१	१६	५२	१९	१३	२१	३३	२३	३७	१	१८	२	४३	४	०५
ज्ये.	१४	५	३८	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

ई० लग्न सारिणी (ज्येष्ठ मास) मई-जून स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

ज्येष्ठ	मई	वृष		मिथु.		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चि.		धन		मकर		कुम्भ		मीन		मेष	
		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१४	७	३२	९	४६	१२	०७	१४	२७	१६	४८	१९	०९	२१	२९	२३	३३	०१	१४	२	३९	४	०१	५	३४
२	१५	७	२८	९	४२	१२	०३	१४	२३	१६	४४	१९	०५	२१	२५	२३	२९	०१	१०	२	३५	३	५७	५	३०
३	१६	७	२४	९	३८	११	५९	१४	१९	१६	४०	१९	०१	२१	२१	२३	२५	०१	०६	२	३१	३	५३	५	२६
४	१७	७	२०	९	३४	११	५५	१४	१५	१६	३६	१८	५७	२१	१७	२३	२१	०१	०२	२	२७	३	४९	५	२२
५	१८	७	१६	९	३०	११	५१	१४	११	१६	३२	१८	५३	२१	१३	२३	१७	२४	५८	२	२३	३	४५	५	१८
६	१९	७	१२	९	२६	११	४७	१४	०७	१६	२८	१८	४९	२१	०९	२३	१३	२४	५४	२	१९	३	४१	५	१४
७	२०	७	०८	९	२२	११	४३	१४	०३	१६	२४	१८	४५	२१	०५	२३	०९	२४	५०	२	१६	३	३७	५	१०
८	२१	७	०४	९	१८	११	३९	१३	५९	१६	२०	१८	४१	२१	०१	२३	०५	२४	४६	२	१२	३	३३	५	०६
९	२२	७	००	९	१४	११	३५	१३	५५	१६	१६	१८	३७	२०	५७	२३	०१	२४	४२	२	०८	३	२९	५	०२
१०	२३	६	५६	९	१०	११	३१	१३	५१	१६	१२	१८	३३	२०	५३	२२	५७	२४	३८	२	०४	३	२५	४	५८
११	२४	६	५२	९	०६	११	२८	१३	४७	१६	०९	१८	३०	२०	५०	२२	५४	२४	३५	२	००	३	२१	४	५४
१२	२५	६	४८	९	०२	११	२४	१३	४४	१६	०५	१८	२६	२०	४६	२२	५०	२४	३१	१	५६	३	१७	४	५०
१३	२६	६	४५	८	५९	११	२०	१३	४०	१६	०१	१८	२२	२०	४२	२२	४६	२४	२७	१	५२	३	१३	४	४६
१४	२७	६	४१	८	५५	११	१६	१३	३६	१५	५७	१८	१८	२०	३८	२२	४२	२४	२३	१	४८	३	०९	४	४२
१५	२८	६	३७	८	५१	११	१२	१३	३२	१५	५३	१८	१४	२०	३४	२२	३८	२४	१९	१	४४	३	०६	४	३८
१६	२९	६	३३	८	४७	११	०८	१३	२८	१५	४९	१८	१०	२०	३०	२२	३४	२४	१५	१	४०	३	०२	४	३५
१७	३०	६	२९	८	४३	११	०४	१३	२४	१५	४५	१८	०६	२०	२६	२२	३०	२४	११	१	३६	२	५८	४	३१
१८	३१	६	२५	८	३९	११	००	१३	२०	१५	४१	१८	०२	२०	२२	२२	२६	२४	०७	१	३२	२	५४	४	२७
१९	जून	६	२१	८	३५	१०	५६	१३	१६	१५	३७	१७	५८	२०	१८	२२	२२	२४	०३	१	२८	२	५०	४	२३
२०	२	६	१७	८	३१	१०	५२	१३	१२	१५	३३	१७	५४	२०	१४	२२	१८	२३	५९	१	२४	२	४६	४	१९
२१	३	६	१३	८	२७	१०	४८	१३	०८	१५	२९	१७	५०	२०	१०	२२	१४	२३	५५	१	२०	२	४२	४	१५
२२	४	६	०९	८	२३	१०	४४	१३	०४	१५	२५	१७	४६	२०	०६	२२	१०	२३	५१	१	१६	२	३८	४	११
२३	५	६	०५	८	१९	१०	४०	१३	००	१५	२१	१७	४२	२०	०२	२२	०६	२३	४७	१	१२	२	३४	४	०७
२४	६	६	०१	८	१५	१०	३६	१२	५६	१५	१७	१७	३८	१९	५८	२२	०२	२३	४३	१	०८	२	३०	४	०३
२५	७	५	५८	८	१२	१०	३३	१२	५२	१५	१३	१७	३४	१९	५४	२१	५८	२३	३९	१	०४	२	२६	४	००
२६	८	५	५४	८	०८	१०	२९	१२	४८	१५	०९	१७	३०	१९	५१	२१	५५	२३	३६	१	००	२	२२	३	५६
२७	९	५	५०	८	०४	१०	२५	१२	४४	१५	०६	१७	२७	१९	४७	२१	५१	२३	३२	०	५६	२	१८	३	५२
२८	१०	५	४६	८	००	१०	२१	१२	४१	१५	०२	१७	२३	१९	४३	२१	४७	२३	२८	०	५३	२	१४	३	४८
२९	११	५	४२	७	५६	१०	१७	१२	३७	१४	५८	१७	१९	१९	३९	२१	४३	२३	२४	०	४९	२	१०	३	४४
३०	१२	५	३८	७	५२	१०	१३	१२	३३	१४	५४	१७	१५	१९	३५	२१	३९	२३	२०	०	४५	२	०७	३	४०
३१	१३	५	३४	७	४८	१०	०९	१२	२९	१४	५०	१७	११	१९	३१	२१	३५	२३	१६	०	४१	२	०३	३	३६
आ.	१४	५	३०	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है। मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकों द्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल ज्यो.)

ई० लग्न सारिणी (श्रावण मास) जुलाई-अग० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

ई० लग्न सारिणी (आषाढ़ मास) जून-जुलाई स्टै० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

आषाढ़	जून	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१४	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ४६	१७ ०७	१९ २७	२१ ३१	२३ १२	२४ ३७	०१ ५९	३ ३२	५ २६
२	१५	७ ४०	१० ०१	१२ २१	१४ ४२	१७ ०३	१९ २३	२१ २७	२३ ०८	२४ ३३	०१ ५५	३ २८	५ २२
३	१६	७ ३६	०९ ५७	१२ १७	१४ ३८	१६ ५९	१९ १९	२१ २३	२३ ०४	२४ २९	०१ ५१	३ २४	५ १८
४	१७	७ ३२	०९ ५३	१२ १३	१४ ३४	१६ ५५	१९ १५	२१ १९	२३ ००	२४ २५	०१ ४७	३ २०	५ १४
५	१८	७ २८	०९ ४९	१२ ०९	१४ ३०	१६ ५१	१९ ११	२१ १५	२२ ५६	२४ २१	०१ ४३	३ १६	५ १०
६	१९	७ २४	०९ ४५	१२ ०५	१४ २६	१६ ४७	१९ ०७	२१ ११	२२ ५२	२४ १७	०१ ३९	३ १२	५ ०६
७	२०	७ २०	०९ ४१	१२ ०१	१४ २२	१६ ४३	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	२४ १३	०१ ३५	३ ०८	५ ०२
८	२१	७ १६	०९ ३७	११ ५७	१४ १८	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	२४ ०९	०१ ३१	३ ०४	४ ५८
९	२२	७ १२	०९ ३३	११ ५३	१४ १४	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	२४ ०५	०१ २७	३ ००	४ ५४
१०	२३	७ ०८	०९ २९	११ ४९	१४ १०	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	२४ ०१	०१ २३	२ ५६	४ ५०
११	२४	७ ०४	०९ २५	११ ४५	१४ ०६	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	०१ १९	२ ५२	४ ४६
१२	२५	७ ००	०९ २१	११ ४१	१४ ०२	१६ २३	१८ ४३	२० ४७	२२ २८	२३ ५३	०१ १५	२ ४८	४ ४२
१३	२६	६ ५६	०९ १७	११ ३७	१३ ५८	१६ १९	१८ ३९	२० ४३	२२ २४	२३ ४९	०१ ११	२ ४४	४ ३८
१४	२७	६ ५२	०९ १३	११ ३३	१३ ५४	१६ १५	१८ ३५	२० ३९	२२ २०	२३ ४५	०१ ०७	२ ४०	४ ३५
१५	२८	६ ४८	०९ ०९	११ २९	१३ ५०	१६ ११	१८ ३१	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	०१ ०३	२ ३६	४ ३१
१६	२९	६ ४४	०९ ०५	११ २५	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	२४ ५९	२ ३२	४ २७
१७	३०	६ ४०	०९ ०२	११ २२	१३ ४३	१६ ०४	१८ २४	२० २७	२२ ०९	२३ ३४	२४ ५६	२ २९	४ २३
१८	जुलाई	६ ३६	०८ ५८	११ १८	१३ ३९	१६ ००	१८ २०	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	२४ ५२	२ २५	४ १९
१९	२	६ ३२	०८ ५४	११ १४	१३ ३५	१५ ५६	१८ १६	२० २०	२२ ०१	२३ २६	२४ ४८	२ २१	४ १५
२०	३	६ २८	०८ ५०	११ १०	१३ ३१	१५ ५२	१८ १२	२० १६	२१ ५७	२३ २२	२४ ४४	२ १७	४ ११
२१	४	६ २४	०८ ४६	११ ०६	१३ २७	१५ ४८	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	२४ ४०	२ १३	४ ०७
२२	५	६ २१	०८ ४२	११ ०२	१३ २३	१५ ४४	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	२४ ३६	२ ०९	४ ०३
२३	६	६ १७	०८ ३८	१० ५८	१३ १९	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	२४ ३२	२ ०५	३ ५९
२४	७	६ १३	०८ ३४	१० ५४	१३ १५	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	२४ २८	२ ०१	३ ५५
२५	८	६ ०९	०८ ३१	१० ५०	१३ ११	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	२४ २५	१ ५७	३ ५१
२६	९	६ ०६	०८ २७	१० ४७	१३ ०८	१५ २९	१७ ४९	१९ ५३	२१ ३३	२२ ५८	२४ २१	१ ५४	३ ४८
२७	१०	६ ०२	०८ २३	१० ४३	१३ ०४	१५ २५	१७ ४५	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	२४ १७	१ ५०	३ ४४
२८	११	५ ५८	०८ १९	१० ३९	१३ ००	१५ २१	१७ ४१	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	२४ १३	१ ४६	३ ४०
२९	१२	५ ५४	०८ १५	१० ३५	१२ ५६	१५ १७	१७ ३७	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	२४ ०९	१ ४२	३ ३६
३०	१३	५ ५०	०८ ११	१० ३१	१२ ५२	१५ १३	१७ ३३	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	२४ ०५	१ ३८	३ ३२
३१	१४	५ ४६	०८ ०७	१० २७	१२ ४८	१५ ०९	१७ २९	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	२४ ००	१ ३४	३ २८
३२	१५	५ ४२	०८ ०३	१० २३	१२ ४४	१५ ०५	१७ २५	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २४
श्रा.	१६	५ ३८	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

ई० लग्न सारिणी (श्रावण मास) जुलाई-अग० स्टै० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

श्रावण	जुलाई	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१६	७ ५९	१० १९	१२ ४०	१५ ०१	१७ २१	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	०१ २६	३ २०	५ ३४
२	१७	७ ५५	१० १५	१२ ३६	१४ ५७	१७ १७	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	०१ २२	३ १६	५ ३०
३	१८	७ ५१	१० ११	१२ ३२	१४ ५३	१७ १३	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	०१ १८	३ १२	५ २६
४	१९	७ ४७	१० ०७	१२ २८	१४ ४९	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	०१ १४	३ ०८	५ २२
५	२०	७ ४३	१० ०३	१२ २४	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३७	०१ १०	३ ०४	५ १८
६	२१	७ ३९	०९ ५९	१२ २०	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३३	०१ ०६	३ ००	५ १४
७	२२	७ ३५	०९ ५५	१२ १६	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ २९	०१ ०२	२ ५६	५ १०
८	२३	७ ३१	०९ ५१	१२ १२	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २५	२४ ५८	२ ५२	५ ०६
९	२४	७ २७	०९ ४७	१२ ०८	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २१	२४ ५४	२ ४८	५ ०२
१०	२५	७ २३	०९ ४३	१२ ०४	१४ २५	१६ ४५	१८ ४९	२० ३०	२१ ५५	२३ १७	२४ ५०	२ ४४	४ ५८
११	२६	७ १९	०९ ३९	१२ ००	१४ २१	१६ ४१	१८ ४५	२० २६	२१ ५१	२३ १३	२४ ४६	२ ४०	४ ५४
१२	२७	७ १५	०९ ३५	११ ५६	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ ०९	२४ ४२	२ ३६	४ ५०
१३	२८	७ १२	०९ ३२	११ ५३	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०५	२४ ३८	२ ३२	४ ४६
१४	२९	७ ०८	०९ २८	११ ४९	१४ १०	१६ ३०	१८ ३३	२० १५	२१ ३९	२३ ०२	२४ ३४	२ २८	४ ४३
१५	३०	७ ०४	०९ २४	११ ४५	१४ ०६	१६ २६	१८ २९	२० ११	२१ ३५	२२ ५८	२४ ३०	२ २४	४ ३९
१६	३१	७ ००	०९ २०	११ ४१	१४ ०२	१६ २२	१८ २५	२० ०७	२१ ३१	२२ ५४	२४ २७	२ २०	४ ३५
१७	अग.	६ ५६	०९ १६	११ ३७	१३ ५८	१६ १८	१८ २१	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	२४ २३	२ १६	४ ३१
१८	२	६ ५२	०९ १२	११ ३३	१३ ५४	१६ १४	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४६	२४ १९	२ १२	४ २७
१९	३	६ ४८	०९ ०८	११ २९	१३ ५०	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४२	२४ १५	२ ०९	४ २३
२०	४	६ ४४	०९ ०४	११ २५	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३८	२४ ११	२ ०५	४ १९
२१	५	६ ४०	०९ ००	११ २१	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३४	२४ ०७	२ ०१	४ १५
२२	६	६ ३६	०८ ५६	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०३	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३०	२४ ०३	१ ५७	४ ११
२३	७	६ ३२	०८ ५२	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५९	१९ ३९	२१ ०४	२२ २६	२३ ५९	१ ५३	४ ०७
२४	८	६ २८	०८ ४८	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ००	२२ २२	२३ ५५	१ ४९	४ ०३
२५	९	६ २४	०८ ४४	११ ०५	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३१	२० ५६	२२ १८	२३ ५१	१ ४५	४ ००
२६	१०	६ २०	०८ ४१	११ ०२	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २७	२० ५२	२२ १४	२३ ४८	१ ४१	३ ५६
२७	११	६ १६	०८ ३७	१० ५८	१३ १८	१५ ३९	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
२८	१२	६ १२	०८ ३३	१० ५४	१३ १५	१५ ३५	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
२९	१३	६ ०८	०८ २९	१० ५०	१३ ११	१५ ३१	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३०	३ ४४
३०	१४	६ ०५	०८ २५	१० ४६	१३ ०७	१५ २७	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २६	३ ४०
३१	१५	६ ०१	०८ २१	१० ४२	१३ ०३	१५ २३	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २२	३ ३६
श्रा.	१६	५ ५७	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है। मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकोंद्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल ज्यो.)

वै० लग्न सारिणी (भाद्रपद मास) अग०-सित० स्टै० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

भाद्रपद	अगस्त	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चि. घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथु. घं.मि.	कर्क घं.मि.
१	१६	८ १७	१० ३८	१२ ५९	१५ १६	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	०१ १८	३ ३२	५ ५३
२	१७	८ १३	१० ३४	१२ ५५	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४७	२३ २०	०१ १४	३ २८	५ ४९
३	१८	८ ०९	१० ३०	१२ ५१	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४३	२३ १६	०१ १०	३ २४	५ ४५
४	१९	८ ०५	१० २६	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ३९	२३ १२	०१ ०६	३ २०	५ ४१
५	२०	८ ०१	१० २२	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३५	२३ ०८	०१ ०२	३ १६	५ ३७
६	२१	७ ५७	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३१	२३ ०४	२४ ५८	३ १२	५ ३३
७	२२	७ ५३	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २७	२३ ००	२४ ५४	३ ०८	५ २९
८	२३	७ ४९	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३६	२० ०१	२१ २३	२२ ५६	२४ ५०	३ ०४	५ २५
९	२४	७ ४५	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५२	२४ ४६	३ ००	५ २१
१०	२५	७ ४१	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४८	२४ ४२	२ ५६	५ १७
११	२६	७ ३७	०९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४४	२४ ३८	२ ५२	५ १३
१२	२७	७ ३३	०९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ०७	२२ ४०	२४ ३४	२ ४८	५ ०९
१३	२८	७ ३०	०९ ५०	१२ १२	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३६	२४ ३०	२ ४४	५ ०५
१४	२९	७ २६	०९ ४६	१२ ०९	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३८	२० ५९	२२ ३२	२४ २७	२ ४०	५ ०१
१५	३०	७ २२	०९ ४२	१२ ०५	१४ २३	१६ २७	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २८	२४ २३	२ ३६	४ ५७
१६	३१	७ १८	०९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २४	२४ १९	२ ३२	४ ५४
१७	सि.	७ १४	०९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २७	२० ४८	२२ २०	२४ १६	२ २८	४ ५०
१८	२	७ १०	०९ ३१	११ ५३	१४ १२	१६ १७	१७ ५७	१९ २३	२० ४४	२२ १७	२४ १२	२ २५	४ ४६
१९	३	७ ०६	०९ २७	११ ४९	१४ ०८	१६ १३	१७ ५३	१९ १९	२० ४०	२२ १४	२४ ०८	२ २१	४ ४३
२०	४	७ ०२	०९ २३	११ ४५	१४ ०४	१६ ०९	१७ ४९	१९ १५	२० ३६	२२ १०	२४ ०४	२ १८	४ ३९
२१	५	६ ५९	०९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ ०५	१७ ४५	१९ ११	२० ३२	२२ ०६	२४ ००	२ १४	४ ३५
२२	६	६ ५५	०९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ ०१	१७ ४२	१९ ०७	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३१
२३	७	६ ५१	०९ १२	११ ३३	१३ ५४	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २७
२४	८	६ ४७	०९ ०८	११ २९	१३ ५०	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २२	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
२५	९	६ ४४	०९ ०५	११ २६	१३ ४६	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५६	२० १८	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
२६	१०	६ ४०	०९ ०१	११ २२	१३ ४२	१५ ४६	१७ २६	१८ ५२	२० १४	२१ ४६	२३ ४१	१ ५४	४ १६
२७	११	६ ३६	०८ ५७	११ १८	१३ ३८	१५ ४२	१७ २३	१८ ४८	२० १०	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १२
२८	१२	६ ३२	०८ ५३	११ १४	१३ ३४	१५ ३८	१७ १९	१८ ४४	२० ०६	२१ ३९	२३ ३३	१ ४७	४ ०८
२९	१३	६ २८	०८ ४९	११ १०	१३ ३०	१५ ३४	१७ १५	१८ ४०	२० ०२	२१ ३५	२३ २९	१ ४३	४ ०४
३०	१४	६ २४	०८ ४५	११ ०६	१३ २६	१५ ३०	१७ ११	१८ ३६	१९ ५८	२१ ३१	२३ २५	१ ३९	४ ००
३१	१५	६ २०	०८ ४१	११ ०२	१३ २२	१५ २६	१७ ०७	१८ ३२	१९ ५४	२१ २७	२३ २१	१ ३५	३ ५६
आ.	१६	६ १६	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

वै० लग्न सारिणी (आश्विन मास) सित०-अक्तू० स्टै० टाइम समाप्तिकाल जालन्धर

आश्विन	सितम्बर	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चि. घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.
१	१६	८ ३७	१० ५८	१३ १८	१५ २२	१७ ०३	१८ २८	१९ ५०	२१ २३	२३ १७	०१ ३१	३ ५२	६ १२
२	१७	८ ३३	१० ५४	१३ १४	१५ १८	१६ ५९	१८ २४	१९ ४६	२१ १९	२३ १३	०१ २७	३ ४८	६ ०८
३	१८	८ २९	१० ५०	१३ १०	१५ १४	१६ ५५	१८ २०	१९ ४२	२१ १५	२३ ०९	०१ २३	३ ४४	६ ०४
४	१९	८ २५	१० ४६	१३ ०६	१५ १०	१६ ५१	१८ १६	१९ ३८	२१ ११	२३ ०५	०१ १९	३ ४०	६ ००
५	२०	८ २१	१० ४२	१३ ०२	१५ ०६	१६ ४७	१८ १२	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	०१ १५	३ ३६	५ ५६
६	२१	८ १७	१० ३८	१२ ५८	१५ ०२	१६ ४३	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	०१ ११	३ ३२	५ ५२
७	२२	८ १३	१० ३४	१२ ५४	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	०१ ०७	३ २८	५ ४८
८	२३	८ ०९	१० ३०	१२ ५०	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	०१ ०३	३ २४	५ ४४
९	२४	८ ०५	१० २६	१२ ४६	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	२४ ५९	३ २०	५ ४०
१०	२५	८ ०१	१० २२	१२ ४२	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	२४ ५५	३ १६	५ ३६
११	२६	७ ५७	१० १८	१२ ३८	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३७	२४ ५१	३ १२	५ ३२
१२	२७	७ ५३	१० १४	१२ ३४	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	२४ ४८	३ ०९	५ २९
१३	२८	७ ५०	१० ११	१२ ३१	१४ ३५	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	२४ ४४	३ ०५	५ २५
१४	२९	७ ४६	१० ०७	१२ २७	१४ ३१	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	२४ ४०	३ ०१	५ २१
१५	३०	७ ४२	१० ०३	१२ २३	१४ २७	१६ ०८	१७ ३३	१८ ५४	२० २७	२२ २३	२४ ३७	२ ५८	५ १८
१६	अक	७ ३८	०९ ५९	१२ १९	१४ २३	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५०	२० २३	२२ १९	२४ ३३	२ ५४	५ १४
१७	२	७ ३४	०९ ५५	१२ १५	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४७	२० २०	२२ १५	२४ २९	२ ५०	५ १०
१८	३	७ ३०	०९ ५१	१२ ११	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४३	२० १६	२२ ११	२४ २५	२ ४६	५ ०६
१९	४	७ २६	०९ ४७	१२ ०७	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	२४ २१	२ ४२	५ ०२
२०	५	७ २२	०९ ४३	१२ ०४	१४ ०८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	२४ १७	२ ३८	४ ५८
२१	६	७ १८	०९ ३९	१२ ००	१४ ०४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	२४ १३	२ ३४	४ ५४
२२	७	७ १४	०९ ३५	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	२४ ०९	२ ३०	४ ५०
२३	८	७ १०	०९ ३१	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	२४ ०५	२ २६	४ ४६
२४	९	७ ०६	०९ २७	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	२४ ०१	२ २२	४ ४२
२५	१०	७ ०२	०९ २३	११ ४४	१३ ४८	१५ २९	१६ ५४	१८ १६	१९ ४९	२१ ४३	२३ ५७	२ १८	४ ३८
२६	११	६ ५९	०९ २०	११ ४०	१३ ४५	१५ २५	१६ ५०	१८ १२	१९ ४५	२१ ३९	२३ ५३	२ १४	४ ३४
२७	१२	६ ५५	०९ १६	११ ३६	१३ ४०	१५ २१	१६ ४६	१८ ०८	१९ ४१	२१ ३५	२३ ४९	२ १०	४ ३०
२८	१३	६ ५१	०९ १२	११ ३२	१३ ३६	१५ १७	१६ ४२	१८ ०४	१९ ३७	२१ ३१	२३ ४५	२ ०६	४ २६
२९	१४	६ ४७	०९ ०८	११ २८	१३ ३२	१५ १३	१६ ३८	१८ ००	१९ ३३	२१ २७	२३ ४१	२ ०२	४ २२
३०	१५	६ ४३	०९ ०४	११ २४	१३ २८	१५ ०९	१६ ३४	१७ ५६	१९ २९	२१ २३	२३ ३७	१ ५८	४ १८
३१	१६	६ ३९	०९ ००	११ २०	१३ २४	१५ ०५	१६ ३०	१७ ५२	१९ २५	२१ १९	२३ ३३	१ ५४	४ १४
का.	१७	६ ३५	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है। मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकों द्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल ज्यो.)

वैं० लग्न सारिणी (कार्तिक मास) अक्टू०-नव० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

कार्तिक	अक्टूबर	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.
१	१७	८ ५७	११ १६	१३ २०	१५ ०१	१६ २६	१७ ४८	१९ २१	२१ १५	२३ २९	०१ ५०	४ १०	६ ३१
२	१८	८ ५३	११ १२	१३ १६	१४ ५७	१६ २२	१७ ४४	१९ १७	२१ ११	२३ २५	०१ ४६	४ ०६	६ २७
३	१९	८ ४९	११ ०८	१३ १२	१४ ५३	१६ १८	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	०१ ४२	४ ०२	६ २३
४	२०	८ ४५	११ ०४	१३ ०८	१४ ४९	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	०१ ३८	३ ५८	६ १९
५	२१	८ ४१	११ ००	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	०१ ३४	३ ५४	६ १५
६	२२	८ ३७	१० ५६	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	०१ ३०	३ ५०	६ ११
७	२३	८ ३३	१० ५२	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०५	०१ २६	३ ४६	६ ०७
८	२४	८ २९	१० ४८	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०१	०१ २२	३ ४२	६ ०३
९	२५	८ २६	१० ४५	१२ ४९	१४ ३०	१५ ५५	१७ १७	१८ ५०	२० ४४	२२ ५८	०१ १९	३ ३९	६ ००
१०	२६	८ २२	१० ४१	१२ ४५	१४ २६	१५ ५१	१७ १३	१८ ४६	२० ४०	२२ ५४	०१ १५	३ ३५	५ ५६
११	२७	८ १८	१० ३७	१२ ४१	१४ २२	१५ ४७	१७ ०९	१८ ४२	२० ३६	२२ ५०	०१ ११	३ ३१	५ ५२
१२	२८	८ १४	१० ३३	१२ ३७	१४ १८	१५ ४३	१७ ०५	१८ ३८	२० ३२	२२ ४६	०१ ०८	३ २७	५ ४८
१३	२९	८ १०	१० २९	१२ ३३	१४ १४	१५ ३९	१७ ०१	१८ ३४	२० २८	२२ ४२	०१ ०४	३ २३	५ ४४
१४	३०	८ ०६	१० २५	१२ २९	१४ १०	१५ ३५	१६ ५७	१८ ३०	२० २४	२२ ३८	०१ ००	३ १९	५ ४०
१५	३१	८ ०२	१० २१	१२ २५	१४ ०६	१५ ३१	१६ ५३	१८ २६	२० २०	२२ ३४	२४ ५६	३ १५	५ ३७
१६	नवं	७ ५८	१० १७	१२ २१	१४ ०२	१५ २७	१६ ४९	१८ २२	२० १६	२२ ३०	२४ ५२	३ १२	५ ३३
१७	२	७ ५४	१० १३	१२ १७	१३ ५८	१५ २३	१६ ४५	१८ १८	२० १२	२२ २६	२४ ४८	३ ०८	५ २९
१८	३	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	२४ ४५	३ ०४	५ २५
१९	४	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	२४ ४१	३ ००	५ २१
२०	५	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	२४ ३७	२ ५६	५ १७
२१	६	७ ३८	०९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	२४ ३३	२ ५२	५ १३
२२	७	७ ३५	०९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	२४ २९	२ ४९	५ १०
२३	८	७ ३१	०९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	२४ २५	२ ४५	५ ०६
२४	९	७ २७	०९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	२४ २१	२ ४१	५ ०२
२५	१०	७ २३	०९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४१	२१ ५५	२४ १७	२ ३७	४ ५८
२६	११	७ १९	०९ ३८	११ ४२	१३ २३	१४ ४८	१६ १०	१७ ४३	१९ ३७	२१ ५१	२४ १३	२ ३३	४ ५४
२७	१२	७ १५	०९ ३४	११ ३८	१३ १९	१४ ४४	१६ ०६	१७ ३९	१९ ३३	२१ ४७	२४ ०९	२ २९	४ ५०
२८	१३	७ ११	०९ ३०	११ ३४	१३ १५	१४ ४०	१६ ०२	१७ ३५	१९ २९	२१ ४३	२४ ०५	२ २५	४ ४६
२९	१४	७ ०७	०९ २६	११ ३०	१३ ११	१४ ३६	१५ ५८	१७ ३१	१९ २५	२१ ३९	२४ ०१	२ २१	४ ४२
३०	१५	७ ०३	०९ २२	११ २६	१३ ०७	१४ ३२	१५ ५४	१७ २७	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३८
३१	१६	६ ५९	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

वैं० लग्न सारिणी (मार्गशीर्ष मास) नव०-दिस० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

मार्ग०	नवंबर	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.
१	१६	९ १८	११ २२	१३ ०३	१४ २८	१५ ५०	१७ २३	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	०२ १३	४ ३४	६ ५५
२	१७	९ १४	११ १८	१२ ५९	१४ २४	१५ ४६	१७ १९	१९ १३	२१ २७	२३ ४९	०२ ०९	४ ३०	६ ५१
३	१८	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १६	१९ १०	२१ २४	२३ ४५	०२ ०५	४ २६	६ ४७
४	१९	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ १२	१९ ०६	२१ २०	२३ ४१	०२ ०१	४ २२	६ ४३
५	२०	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०८	१९ ०२	२१ १६	२३ ३७	०१ ५७	४ १८	६ ३९
६	२१	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०४	१८ ५८	२१ १२	२३ ३३	०१ ५३	४ १४	६ ३५
७	२२	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५४	२१ ०८	२३ २९	०१ ४९	४ १०	६ ३१
८	२३	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५०	२१ ०४	२३ २५	०१ ४५	४ ०६	६ २७
९	२४	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४६	२१ ००	२३ २१	०१ ४१	४ ०२	६ २३
१०	२५	८ ४३	१० ४७	१२ २८	१३ ५३	१५ १५	१६ ४८	१८ ४२	२० ५६	२३ १७	०१ ३७	३ ५८	६ १९
११	२६	८ ३९	१० ४३	१२ २४	१३ ४९	१५ ११	१६ ४४	१८ ३८	२० ५२	२३ १३	०१ ३३	३ ५४	६ १५
१२	२७	८ ३५	१० ३९	१२ २०	१३ ४५	१५ ०७	१६ ४०	१८ ३४	२० ४८	२३ ०९	०१ २९	३ ५०	६ ११
१३	२८	८ ३१	१० ३५	१२ १६	१३ ४१	१५ ०३	१६ ३६	१८ ३०	२० ४४	२३ ०५	०१ २५	३ ४६	६ ०७
१४	२९	८ २७	१० ३१	१२ १२	१३ ३७	१४ ५९	१६ ३२	१८ २६	२० ४०	२३ ०१	०१ २१	३ ४२	६ ०३
१५	३०	८ २३	१० २७	१२ ०८	१३ ३३	१४ ५५	१६ २८	१८ २२	२० ३६	२२ ५७	०१ १७	३ ३८	५ ५९
१६	दि.	८ १९	१० २३	१२ ०४	१३ २९	१४ ५१	१६ २४	१८ १८	२० ३२	२२ ५३	०१ १३	३ ३४	५ ५५
१७	२	८ १५	१० १९	१२ ००	१३ २५	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ४९	०१ ०९	३ ३०	५ ५१
१८	३	८ ११	१० १५	११ ५६	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४५	०१ ०५	३ २६	५ ४७
१९	४	८ ०७	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४१	०१ ०१	३ २२	५ ४३
२०	५	८ ०३	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १६	२२ ३७	२४ ५७	३ १८	५ ३९
२१	६	७ ५९	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १२	२२ ३३	२४ ५३	३ १४	५ ३५
२२	७	७ ५५	०९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०८	२२ २९	२४ ४९	३ १०	५ ३१
२३	८	७ ५१	०९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५०	२० ०४	२२ २५	२४ ४५	३ ०६	५ २७
२४	९	७ ४७	०९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४६	२० ००	२२ २१	२४ ४१	३ ०३	५ २४
२५	१०	७ ४३	०९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४२	१९ ५६	२२ १७	२४ ३७	२ ५९	५ २०
२६	११	७ ३९	०९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १३	२४ ३३	२ ५५	५ १६
२७	१२	७ ३५	०९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ ०९	२४ २९	२ ५१	५ १२
२८	१३	७ ३१	०९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०५	२४ २५	२ ४७	५ ०८
२९	१४	७ २८	०९ ३१	११ १२	१२ ३७	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०१	२४ २१	२ ४३	५ ०४
३०	१५	७ २४	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है। मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकों द्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल ज्यो.)

ई० लग्न सारिणी (पौष मास) दिस०-जन० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

पौष	दिसम्बर	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१५	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२१ ५७	२४ १७	०२ ३९	५ ००	७ २०
२	१६	९ २३	११ ०४	१२ २९	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५३	२४ १३	०२ ३५	४ ५६	७ १६
३	१७	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ४९	२४ ०९	०२ ३१	४ ५२	७ १२
४	१८	९ १५	१० ५६	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४५	२४ ०५	०२ २७	४ ४८	७ ०८
५	१९	९ ११	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४१	२४ ०१	०२ २३	४ ४४	७ ०४
६	२०	९ ०८	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	०२ १९	४ ४०	७ ००
७	२१	९ ०४	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	०२ १५	४ ३६	६ ५६
८	२२	९ ००	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ २९	२३ ४९	०२ ११	४ ३२	६ ५२
९	२३	८ ५६	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०४	२१ २५	२३ ४५	०२ ०७	४ २८	६ ४८
१०	२४	८ ५२	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ००	२१ २१	२३ ४१	०२ ०३	४ २४	६ ४४
११	२५	८ ४८	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४२	१८ ५६	२१ १७	२३ ३७	०१ ५९	४ २०	६ ४०
१२	२६	८ ४४	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३८	१८ ५२	२१ १३	२३ ३३	०१ ५५	४ १६	६ ३६
१३	२७	८ ४०	१० २०	११ ४५	१३ ०७	१४ ४०	१६ ३४	१८ ४८	२१ ०९	२३ २९	०१ ५१	४ १२	६ ३२
१४	२८	८ ३६	१० १६	११ ४१	१३ ०३	१४ ३६	१६ ३०	१८ ४४	२१ ०५	२३ २५	०१ ४७	४ ०८	६ २८
१५	२९	८ ३२	१० १२	११ ३७	१२ ५९	१४ ३२	१६ २६	१८ ४०	२१ ०१	२३ २१	०१ ४४	४ ०४	६ २४
१६	३०	८ २८	१० ०८	११ ३३	१२ ५५	१४ २८	१६ २२	१८ ३६	२० ५७	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ २०
१७	३१	८ २४	१० ०४	११ २९	१२ ५१	१४ २४	१६ १८	१८ ३२	२० ५३	२३ १३	०१ ३६	३ ५६	६ १६
१८	जन	८ २०	१० ००	११ २५	१२ ४७	१४ २०	१६ १४	१८ २८	२० ४९	२३ ०९	०१ ३२	३ ५२	६ १२
१९	२	८ १६	०९ ५६	११ २१	१२ ४३	१४ १६	१६ १०	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	०१ २८	३ ४८	६ ०८
२०	३	८ १२	०९ ५२	११ १७	१२ ३९	१४ १२	१६ ०६	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	०१ २४	३ ४४	६ ०४
२१	४	८ ०८	०९ ४८	११ १३	१२ ३५	१४ ०८	१६ ०२	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	०१ २०	३ ४०	६ ००
२२	५	८ ०४	०९ ४४	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३३	२२ ५३	०१ १६	३ ३६	५ ५६
२३	६	८ ००	०९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३०	२२ ५०	०१ १२	३ ३२	५ ५२
२४	७	७ ५६	०९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २६	२२ ४६	०१ ०८	३ २८	५ ४८
२५	८	७ ५२	०९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २२	२२ ४२	०१ ०४	३ २५	५ ४५
२६	९	७ ४८	०९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० १८	२२ ३८	०१ ००	३ २१	५ ४१
२७	१०	७ ४४	०९ २५	१० ५०	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १४	२२ ३४	२४ ५६	३ १७	५ ३७
२८	११	७ ४०	०९ २१	१० ४६	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १०	२२ ३०	२४ ५२	३ १३	५ ३३
२९	१२	७ ३६	०९ १७	१० ४२	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०६	२२ २६	२४ ४८	३ ०९	५ २९
३०	१३	७ ३२	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

ई० लग्न सारिणी (माघ मास) जन०-फर० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

माघ	जनवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१३	९ १३	१० ३८	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०२	२२ २२	२४ ४४	३ ०५	५ २५	७ २८
२	१४	९ ०९	१० ३४	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	२४ ४०	३ ०१	५ २१	७ २४
३	१५	९ ०५	१० ३०	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	२४ ३६	२ ५७	५ १७	७ २०
४	१६	९ ०१	१० २६	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	२४ ३२	२ ५३	५ १३	७ १६
५	१७	८ ५७	१० २२	११ ४४	१३ १७	१५ ११	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	२४ २८	२ ४९	५ ०९	७ १२
६	१८	८ ५३	१० १८	११ ४०	१३ १३	१५ ०७	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	२४ २४	२ ४५	५ ०५	७ ०८
७	१९	८ ५०	१० १५	११ ३६	१३ ०९	१५ ०३	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	२४ २०	२ ४१	५ ०१	७ ०४
८	२०	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ००	१७ १४	१९ ३४	२१ ५४	२४ १६	२ ३७	४ ५७	७ ००
९	२१	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५६	१७ १०	१९ ३०	२१ ५०	२४ १२	२ ३३	४ ५३	६ ५७
१०	२२	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ०६	१९ २६	२१ ४६	२४ ०८	२ २९	४ ४९	६ ५३
११	२३	८ ३४	०९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ ०२	१९ २२	२१ ४२	२४ ०४	२ २५	४ ४५	६ ४९
१२	२४	८ ३०	०९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ १८	२१ ३८	२४ ००	२ २१	४ ४१	६ ४५
१३	२५	८ २६	०९ ५१	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५५	१९ १५	२१ ३५	२३ ५७	२ १८	४ ३८	६ ४२
१४	२६	८ २२	०९ ४७	११ ०९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५१	१९ १२	२१ ३२	२३ ५३	२ १४	४ ३४	६ ३८
१५	२७	८ १८	०९ ४३	११ ०५	१२ ३८	१४ ३२	१६ ४७	१९ ०८	२१ २८	२३ ४९	२ १०	४ ३०	६ ३४
१६	२८	८ १५	०९ ४०	११ ०२	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ०४	२१ २४	२३ ४५	२ ०६	४ २६	६ ३०
१७	२९	८ ११	०९ ३६	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ ४१	२ ०२	४ २२	६ २६
१८	३०	८ ०७	०९ ३२	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ ३७	१ ५८	४ १८	६ २२
१९	३१	८ ०३	०९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ ३३	१ ५४	४ १४	६ १८
२०	फर	७ ५९	०९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ २९	१ ५०	४ १०	६ १४
२१	२	७ ५५	०९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ २५	१ ४६	४ ०६	६ १०
२२	३	७ ५१	०९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ १९	१८ ४०	२१ ००	२३ २१	१ ४२	४ ०२	६ ०६
२३	४	७ ४७	०९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०१	१६ १५	१८ ३६	२० ५६	२३ १७	१ ३८	३ ५८	६ ०२
२४	५	७ ४३	०९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३२	२० ५२	२३ १३	१ ३४	३ ५४	५ ५८
२५	६	७ ४०	०९ ०५	१० २७	१२ ००	१३ ५४	१६ ०८	१८ २९	२० ४९	२३ १०	१ ३१	३ ५१	५ ५५
२६	७	७ ३६	०९ ०१	१० २३	११ ५६	१३ ५०	१६ ०४	१८ २५	२० ४५	२३ ०६	१ २७	३ ४७	५ ५१
२७	८	७ ३२	०८ ५७	१० १९	११ ५२	१३ ४६	१६ ००	१८ २१	२० ४१	२३ ०२	१ २३	३ ४३	५ ४७
२८	९	७ २८	०८ ५३	१० १५	११ ४८	१३ ४२	१५ ५६	१८ १७	२० ३७	२२ ५८	१ १९	३ ३९	५ ४३
२९	१०	७ २४	०८ ४९	१० ११	११ ४४	१३ ३८	१५ ५२	१८ १३	२० ३३	२२ ५४	१ १५	३ ३५	५ ३९
३०	११	७ २०	०८ ४५	१० ०७	११ ४०	१३ ३४	१५ ४८	१८ ०९	२० २९	२२ ५०	१ ११	३ ३१	५ ३५
३१	१२	७ १६	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है। मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकों द्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल ज्यो.)

ई० लग्न सारिणी (फाल्गुण मास) फर०-मार्च स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

ई० लग्न सारिणी (चैत्र मास) मार्च-अप्रै० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

ई० लग्न सारिणी (फाल्गुन मास) फर०-मार्च स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

फाल्गुन	फरवरी	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१२	८ ४१	१० ०३	११ ३६	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०५	२० २५	२२ ४६	०१ ०७	३ २७	५ ३१	७ १२
२	१३	८ ३७	०९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ ४२	०१ ०३	३ २३	५ २७	७ ०८
३	१४	८ ३३	०९ ५६	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ ३८	२४ ५९	३ १९	५ २३	७ ०४
४	१५	८ २९	०९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५४	२० १३	२२ ३४	२४ ५५	३ १५	५ १९	७ ००
५	१६	८ २५	०९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५०	२० १०	२२ ३१	२४ ५२	३ १२	५ १६	६ ५७
६	१७	८ २१	०९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४६	२० ०६	२२ २७	२४ ४८	३ ०८	५ १२	६ ५३
७	१८	८ १७	०९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४२	२० ०२	२२ २३	२४ ४४	३ ०४	५ ०८	६ ४९
८	१९	८ १३	०९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ३८	१९ ५८	२२ १९	२४ ४०	३ ००	५ ०४	६ ४५
९	२०	८ ०९	०९ ३२	११ ०५	१२ ५९	१५ १३	१७ ३४	१९ ५४	२२ १५	२४ ३६	२ ५६	५ ००	६ ४१
१०	२१	८ ०५	०९ २८	११ ०१	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३०	१९ ५०	२२ ११	२४ ३२	२ ५२	४ ५६	६ ३७
११	२२	८ ०१	०९ २४	१० ५७	१२ ५१	१५ ०५	१७ २६	१९ ४६	२२ ०७	२४ २८	२ ४८	४ ५२	६ ३३
१२	२३	७ ५७	०९ २०	१० ५३	१२ ४७	१५ ०१	१७ २२	१९ ४२	२२ ०३	२४ २४	२ ४४	४ ४८	६ २९
१३	२४	७ ५४	०९ १६	१० ४९	१२ ४३	१४ ५७	१७ १८	१९ ३८	२१ ५९	२४ २०	२ ४०	४ ४४	६ २५
१४	२५	७ ५०	०९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	२४ १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
१५	२६	७ ४६	०९ ०८	१० ४१	१२ ३५	१४ ४९	१७ १०	१९ ३१	२१ ५२	२४ १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
१६	२७	७ ४२	०९ ०४	१० ३७	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०६	१९ २७	२१ ४८	२४ ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
१७	२८	७ ३८	०९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०२	१९ २३	२१ ४४	२४ ०५	२ २५	४ २९	६ १०
१८	मा.	७ ३४	०८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१६ ५९	१९ १९	२१ ४०	२४ ०१	२ २१	४ २५	६ ०६
१९	२	७ ३०	०८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५५	१९ १५	२१ ३६	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०२
२०	३	७ २६	०८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ २९	१६ ५१	१९ ११	२१ ३२	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५८
२१	४	७ २२	०८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ०७	२१ २८	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५४
२२	५	७ १९	०८ ४०	१० १३	१२ ०७	१४ २१	१६ ४३	१९ ०३	२१ २४	२३ ४५	२ ०५	४ ०९	५ ५०
२३	६	७ १५	०८ ३६	१० ०९	१२ ०३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ २०	२३ ४१	२ ०१	४ ०५	५ ४६
२४	७	७ ११	०८ ३२	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३५	१८ ५५	२१ १६	२३ ३७	१ ५७	४ ०१	५ ४२
२५	८	७ ०७	०८ २८	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३१	१८ ५१	२१ १२	२३ ३३	१ ५३	३ ५७	५ ३८
२६	९	७ ०३	०८ २४	०९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २७	१८ ४७	२१ ०८	२३ २९	१ ४९	३ ५३	५ ३४
२७	१०	६ ५९	०८ २०	०९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २३	१८ ४३	२१ ०४	२३ २५	१ ४५	३ ४९	५ ३०
२८	११	६ ५५	०८ १६	०९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १९	१८ ३९	२१ ००	२३ २१	१ ४१	३ ४५	५ २६
२९	१२	६ ५१	०८ १२	०९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १५	१८ ३५	२० ५६	२३ १७	१ ३७	३ ४१	५ २२
३०	१३	६ ४७	०८ ०८	०९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ ११	१८ ३१	२० ५२	२३ १३	१ ३३	३ ३७	५ १८
चैत	१४	६ ४३	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

ई० लग्न सारिणी (चैत्र मास) मार्च-अप्रै० स्टैं० टाइम समाप्ति काल जालन्धर

चैत	मार्च	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	१४	८ ०४	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ४८	२३ ०९	०१ २९	३ ३३	५ १४	६ ३९
२	१५	८ ००	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० ४४	२३ ०५	०१ २५	३ २९	५ १०	६ ३५
३	१६	७ ५६	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	०१ २१	३ २५	५ ०६	६ ३१
४	१७	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	०१ १७	३ २१	५ ०२	६ २७
५	१८	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० ३२	२२ ५३	०१ १३	३ १७	४ ५८	६ २३
६	१९	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४७	१८ ०७	२० २८	२२ ४९	०१ ०९	३ १३	४ ५४	६ १९
७	२०	७ ४१	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४३	१८ ०३	२० २४	२२ ४५	०१ ०५	३ ०९	४ ५०	६ १५
८	२१	७ ३७	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३९	१७ ५९	२० २०	२२ ४१	०१ ०१	३ ०५	४ ४६	६ ११
९	२२	७ ३४	९ ०७	११ ००	१३ १४	१५ ३५	१७ ५५	२० १६	२२ ३७	२४ ५७	३ ०१	४ ४२	६ ०७
१०	२३	७ ३०	९ ०३	१० ५७	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	२० १२	२२ ३३	२४ ५३	२ ५७	४ ३९	६ ०४
११	२४	७ २६	८ ५९	१० ५३	१३ ०७	१५ २७	१७ ४७	२० ०८	२२ २९	२४ ४९	२ ५३	४ ३५	६ ००
१२	२५	७ २२	८ ५५	१० ४९	१३ ०३	१५ २३	१७ ४३	२० ०४	२२ २५	२४ ४५	२ ४९	४ ३१	५ ५६
१३	२६	७ १८	८ ५१	१० ४५	१२ ५९	१५ १९	१७ ३९	२० ००	२२ २१	२४ ४१	२ ४५	४ २७	५ ५२
१४	२७	७ १४	८ ४७	१० ४१	१२ ५५	१५ १५	१७ ३५	१९ ५६	२२ १७	२४ ३७	२ ४१	४ २३	५ ४८
१५	२८	७ १०	८ ४३	१० ३७	१२ ५१	१५ ११	१७ ३१	१९ ५२	२२ १३	२४ ३३	२ ३७	४ १९	५ ४४
१६	२९	७ ०६	८ ३९	१० ३३	१२ ४७	१५ ०७	१७ २८	१९ ४९	२२ १०	२४ २९	२ ३३	४ १५	५ ४०
१७	३०	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०३	१७ २४	१९ ४५	२२ ०६	२४ २६	२ ३०	४ ११	५ ३६
१८	३१	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१४ ५९	१७ २०	१९ ४१	२२ ०२	२४ २२	२ २६	४ ०७	५ ३२
१९	अप्रै	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३५	१४ ५५	१७ १६	१९ ३७	२१ ५८	२४ १८	२ २२	४ ०३	५ २८
२०	२	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३१	१४ ५१	१७ १२	१९ ३३	२१ ५४	२४ १४	२ १८	३ ५९	५ २४
२१	३	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २७	१४ ४८	१७ ०८	१९ २९	२१ ५०	२४ १०	२ १४	३ ५५	५ २०
२२	४	६ ४२	८ १५	१० ०९	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ २५	२१ ४६	२४ ०६	२ १०	३ ५१	५ १६
२३	५	६ ३८	८ ११	१० ०५	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ २१	२१ ४२	२४ ०२	२ ०६	३ ४७	५ १२
२४	६	६ ३४	८ ०७	१० ०१	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ १७	२१ ३९	२३ ५९	२ ०२	३ ४४	५ ०९
२५	७	६ ३१	८ ०४	०९ ५८	१२ १२	१४ ३३	१६ ५३	१९ १४	२१ ३५	२३ ५५	१ ५९	३ ४०	५ ०५
२६	८	६ २७	८ ००	०९ ५४	१२ ०८	१४ २९	१६ ४९	१९ १०	२१ ३१	२३ ५१	१ ५५	३ ३६	५ ०१
२७	९	६ २३	७ ५६	०९ ५०	१२ ०४	१४ २५	१६ ४५	१९ ०६	२१ २७	२३ ४७	१ ५१	३ ३२	४ ५७
२८	१०	६ १९	७ ५२	०९ ४६	१२ ००	१४ २१	१६ ४१	१९ ०२	२१ २३	२३ ४३	१ ४७	३ २८	४ ५३
२९	११	६ १५	७ ४८	०९ ४२	११ ५६	१४ १७	१६ ३७	१८ ५८	२१ १९	२३ ३९	१ ४३	३ २४	४ ४९
३०	१२	६ ११	७ ४४	०९ ३८	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ५४	२१ १५	२३ ३५	१ ३९	३ २०	४ ४५
बैसा	१३	६ ०७	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

उपरोक्त दैनिक सारिणी देशी प्रविष्टों पर आधारित हैं। तदनुसार देखें। देशी प्रविष्टों एवं अंग्रेजी तारीखों के अनुक्रम में प्रतिवर्ष एकाध दिन का अन्तर पड़ सकता है।
मध्यान्ह १२ बजे के पश्चात् के समय को १३, १४, १५ एवं रात्रि १२ बजे के समय को क्रमशः २४, १, २, ३ आदि अंकों द्वारा दर्शाया गया है। (पं. पन्ना लाल व्वा.)

जालन्धर से भारत के अन्य शहरों का लग्न समाप्तिकाल

पंचांग दिवाकर के गत पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्नसारणी का समाप्तिकाल जालन्धर शहर के अक्षांश (३१।१६) पर आधारित है। किसी भी अन्येतर मेषादिलग्न का आरम्भ एवं समाप्तिकाल को जानने के लिए वहां के स्थानीय सूर्योदयकाल एवं उस स्थान के अक्षांश पर आधारित लग्नसारणी वांछित होती है। परन्तु यहां पर पाठकों की सुविधा के लिए स्थूल रूप से भारत के विभिन्न शहरों के लग्न समाप्तिकाल जानने के लिए संस्कार तालिका दी जा रही है। इसकी सहायता से आप अभीष्ट शहर का लग्नारम्भ या समाप्तिकाल जान सकते हैं। जैसे यदि आप देहली में १३ अप्रैल को वृश्चिक लग्न का समाप्तिकाल जानना चाहते हैं, तो आप देहली के आगे और वृश्चिक राशि के नीचे —११ मिनट लिखा है। आप १३ अप्रैल जालन्धर के लग्न समाप्तिकाल २३ घं० ३१ मि० में ११ मि० हीन करने पर १३ अप्रैल को देहली में रात्रि ११ बजकर २० मिनट पर वृश्चिक लग्न समाप्तिकाल ज्ञात हो जाएगा। अधिकांशतः नगरों के लग्नों का स्वोदयमान वहां पर के अक्षांशानुसार ही आंकलन किया गया है। परन्तु कुछ शहरों के लग्नमान का निर्धारण एकरूपता की दृष्टि से पोजीशनल अस्ट्रालोजी सेंटर कलकत्ता द्वारा प्रदत्त स्वीकृति प्राप्त संस्कार तालिका के आधार पर किया गया है। Vide Letter No. T००९०१/२६० dated १९-८-८५.

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
अमृतसर (३१°।३८′)	+२	+२	+२	+३	+४	+४	+५	+५	+५	+५	+५	+६
अम्बाला (३०°।२१′)	−४	−४	−४	−४	−४	−५	−५	−५	−५	−४	−३	−३
अनन्तनाग (३३°।४३′)	−४	−४	−३	±०	+३	+५	+८	+९	+८	+७	−४	±०
अजमेर (२६°।२७′)	+१२	+१५	+१५	+१२	+८	+२	−१	−३	−२	+२	+७	+११
अबोहर (३०°।०८′)	+५	+५	+५	+५	+५	+३	+३	+२	+२	+४	+६	+६
अहमदाबाद (२३°।०२′)	+२६	+३०	+३१	+२४	+१६	+१५	−२	−६	−४	+२	+११	+१८
इलाहाबाद (२५°।२८′)	−१४	−११	−१२	−१५	−२६	−२६	−३४	−३७	−३५	−३१	−२५	−२०
अलीगढ़ (२७°।२४′)	−५	−३	−३	−४	−६	−१०	−१०	−१२	−१२	−१०	−७	−४
अयोध्या (२६°।४८′)	−१७	−१५	−१५	−१७	−२०	−२५	−२८	−३०	−२९	−२५	−२०	−१६
अकोला (२०°।४२′)	+१३	+१९	+१७	+१०	+[illegible]	−१५	−१६	−२३	−२३	−१६	−५	+३
अलवर (२७°।३४′)	+३	+५	+५	+३	±०	−४	−६	−८	−७	−४	+१	+४
आगरा (२७°।१०′)	−३	−१	−१	−३	−६	−११	−१४	−१६	−१५	−११	−८	−४
इंदौर (२२°।४४′)	+१४	+१८	+१६	+११	+३	−८	−१४	−१६	−१७	−१०	−१	+७
उज्जैन (२३°।१९′)	+१४	+१८	+१७	+१२	+५	−४	−१०	−१२	−१३	−७	+२	+६
ऊना (३१°।२२′)	−४	−४	−४	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−३	−२	−३
ऊधमपुर (३२°।५५′)	−२	−२	−२	±०	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
कोटखाई (३१°।२८′)	−८	−८	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
करनाल (२९°।४२′)	−५	−४	−४	−४	−४	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−२
कालका (३०°।४०′)	−५	−५	−५	−४	−४	−६	−५	−५	−५	−३	−४	−५
कुरुक्षेत्र (२९°।५९′)	−४	−४	−४	−४	−४	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−२
करतार पुर (३१°।२७′)	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
कपूरथला (३१°।२३′)	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
काठमाण्डू (२७°।४२′)	−३२	−३०	−३०	−२६	−३६	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३२
कलकत्ता (२२°।३४′)	−३७	−३३	−३५	−४०	−४९	−५८	−६५	−७०	−६८	−६०	−५१	−४५
कानपुर (२६°।२८′)	−११	−८	−९	−१२	−१६	−२२	−२६	−२८	−२७	−२२	−१७	−१३
कांगड़ा (३२°।०५′)	−५	−५	−५	−४	−३	−३	−१	−१	−१	−१	−१	−३
कुल्लू (३१°।५८′)	−८	−८	−८	−७	−६	−६	−४	−४	−४	−४	−४	−५
कठुआ (३२°।४६′)	−३	−३	−३	−१	−१	−०	+२	+२	+२	+२	+२	+१
खन्ना (३०°।४२′)	−३	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२
ग्वालियर (२६°।१४′)	−२	+१	+१	−२	−६	−१३	−१७	−१९	−१८	−१४	−६	−५
गुरदासपुर (३२°।१३′)	−२	−२	−२	−१	±०	±०	+२	+२	+२	+२	+२	+१
गोरखपुर (२६°।४५′)	−२५	−२३	−२३	−२५	−२८	−३३	−३६	−३८	−३७	−३३	−२८	−२५
गुड़गांव (२८°।२७′)	±०	+१	+१	±०	−२	−६	−८	−१०	−९	−७	−४	−२
गोहाटी (२६°।११′)	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६५	−६४	−६०

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
गाजियाबाद (२८°।४०′)	−२	−१	−१	−२	−४	−८	−१०	−१२	−११	−९	−६	−१
गंगानगर (३०°।४९)	+७	+७	+७	+८	+८	+७	+७	+७	+७	+८	+८	+७
गया (२४°।५०)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४६	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़ (३०°।४४′)	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−५
जयपुर (२६°।५५′)	+७	+८	+८	+६	+३	−३	−७	−६	−८	−४	−१	+३
जम्मू (३२°४३)	−१	१	०	+२	+२	+६	+६	+६	+५	+४	+२	+१
जोधपुर (२६°।१८′)	+२०	+२२	+२२	+१९	+१५	+८	+४	+२	+३	+७	+१२	+१६
दिल्ली (२८°।३९′)	−१	±०	±०	−१	−३	−७	−९	−११	−१०	−८	−५	−३
देहरादून (३०°।१६′)	−९	−८	−८	−६	−६	−११	−१२	−१२	−१३	−११	−६	−६
धर्मशाला (३२°।२६′)	−५	−५	−५	−४	−३	−३	−१	−१	−१	−१	−१	−२
नाँहन (३०°।२३′)	−७	−७	−७	−६	−६	−७	−७	−७	−७	−६	−६	−७
नंगल (३०°।२३′)	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४
नैनीताल (२९°।२३′)	−१२	−११	−११	−१२	−१४	−१८	−१९	−२१	−२०	−१७	−१४	−११
नवलगढ़ (२७°।४५′)	+७	+६	+६	+८	+६	+३	+१	+२	−३	−०	+४	+४
नवांशहर (३१°।१७′)	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३	−३
नागपुर (२१°।१६′)	+३	+८	+८	+१	−८	−१६	−२७	−३२	−३१	−२२	−१२	−२
पटियाला (३०°।२०′)	−२	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−४	−४	−३	−२	−२
पानीपत (२९°।२३′)	−२	−१	−१	−२	−४	−६	−१०	−१२	−११	−८	−५	−२
पठानकोट (३२°।१७′)	−३	−३	−३	−२	−१	−१	+१	+१	+१	+१	+१	−१
पूना (१८°।३१′)	+२९	+३६	+३३	+२५	+१२	−२	−११	−१६	−१६	−७	+५	+१७
पटना (२५°।३७′)	−२६	−२५	−२६	−२९	−३४	−४१	−४५	−४७	−४६	−४१	−३६	−३२
पालमपुर (३२°।६′)	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−२	−२	−२	−२	−२	−४
फगवाड़ा (३१°।१३′)	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
फाजिल्का (३०°।२५′)	+६	+६	+६	+६	+६	+५	+५	+५	+५	+७	+७	+७
फिरोजपुर (३०°।५५′)	+४	+४	+४	+५	+५	+४	+५	+५	+५	+६	+६	+५
बठिण्डा (३०°।११′)	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+२	+४	+५	+५
बटाला (३१°।४९′)	±०	±०	±०	+१	+२	−२	+३	+३	+३	+३	+३	+२
वाराणसी (२५°।२०′)	−१८	−१३	−१५	−१९	−२५	−३३	−३८	−४१	−४०	−३५	−२८	−२५
बिलासपुर (३१°।१६)	−५	−५	−५	−४	−४	+५	−४	−४	−४	−३	−३	−४
बम्बई (१८°।५८′)	+३२	+३८	+३५	+२८	+१७	+३	−८	−१४	−११	−२	+१०	+२१
बंगलौर (१२°।५८′)	+२२	+३०	+२८	+१६	−१	−२१	−३६	−४४	−४०	−२७	−१०	+६
बरेली (२८°।२२′)	−११	−९	−९	−१०	−१२	+१६	−१८	−२०	−२०	−१८	−१४	−११
बीकानेर (२८°।१′)	+१४	+१६	+१६	+१५	+१३	+६	+८	+६	+६	+८	+१२	+१५
बड़ौदा (२२°।१८′)	+२६	+३०	+२६	+२३	+१६	+७	+२	−५	−५	+१	+११	+२१

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मि	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
भुवनेश्वर (२०°।८५')	—२२	—	—१८	—२५	—३६	—४९	—५८	—६३	—६१	—५३	—४२	—३२
भोपाल (२३°।११')	+७	+११	+१०	+५	—३	—१३	—१९	—२५	—२१	—१६	—८	—१
मेरठ (२९°।१')	—५	—४	—४	—५	—७	—११	—१३	—१५	—१४	—११	—८	—५
मुरादाबाद (२८°।५१')	—९	—८	—८	—९	—११	—१५	—१७	—१९	—१८	—१५	—१२	—६
मण्डी (३१°।४३')	—८	—८	—८	—८	—७	—७	—५	—५	—५	—५	—५	—६
मोगा (३०°।४८')	+१	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१	+१	+२	+३	+१
मथुरा (२७°।२८')	—२	±०	±०	—१	—४	—६	—१२	—१४	—१४	—१२	—७	—४
मद्रास (१३°।०४')	+११	+१९	+१७	+५	—१२	—३१	—४६	—५४	—५१	—३८	—२१	—५
मैसूर (२°।१८')	+२७	+३६	+३२	+२०	+२	—१७	—३३	—३२	—३८	—२४	—७	+१०
रोपड़ (३०°।५७')	—४	—४	—४	—३	—३	—४	—३	—३	—३	—२	—३	—३
रांची (२३°।३३')	—२५	—२१	—२३	—२८	—३६	—४६	—५२	—५७	—५५	—४८	—३६	—३१
लुधियाना (३०°।५५')	—२	—२	—२	—१	—१	—२	—२	—२	—२	—१	—१	—२
लाहौर (३१°।३२')	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३
लखनऊ (२६°।५५')	—१४	—१२	—१२	—१४	—१८	—२४	—२८	—३०	—२९	—२५	—२०	—१७
शिलांग (२५°।३४')	—५५	—४६	—५२	—५५	—६१	—६९	—७४	—७६	—७५	—७१	—६५	—६१
श्रीनगर (३४°।०६')	—२	—२	—१	+२	+५	+७	+१०	+११	+१०	+९	+६	+२
शिमला (३१°।०६')	—६	—६	—६	—५	—४	—५	—५	—५	—५	—५	—५	—६
सोनीपत (२९°।०३')	—२	—१	—१	—२	—४	—८	—१०	—१२	—१.१	—९	—६	—४
सुन्दरनगर (३१°।३२')	—६	—६	—६	—५	—४	—४	—४	—४	—४	—४	—४	—५
सूरत (२१°।१२')	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	—४	—६	—८	+१	+१३	+२१
सहारनपुर (२९°।५८')	—५	—५	—५	—५	—५	—७	—८	—९	—९	—७	—५	—५
हमीरपुर (३१°।४२')	—६	—६	—५	—५	—४	—४	—२	—२	—२	—२	—२	—४
हैदराबाद (१७°।२०')	+१२	+१८	+१६	+७	—६	—२१	—४०	—३९	—३६	—२५	—१२	—१
होशियारपुर (३१°।३६')	—३	—३	—३	—२	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—२
हांसी (२९°।०६')	+२	+४	+३	+२	+०	—४	—६	—८	—७	—४	—१	+२
हिसार (२९°।१०')	+३	+४	+४	+३	+१	—३	—५	—७	—६	—३	±०	+३
हरिद्वार (२९°।५०')	—८	—८	—७	—८	—८	—१०	—११	—११	—१२	—१०	—८	—८

विशेष नोट—पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय-काल में अन्तर को साथ-साथ उस स्थान के लग्नमान में भी न्यूनाधिक रूपेण अन्तर पड़ता है। पृथ्वी की प्रतिवर्ष अयनांशादि गति में परिवर्तन के कारण, उपरोक्त लग्नों के समाप्ति-काल में प्रतिवर्ष थोड़ी स्थूलता की सम्भावना हो जाती है। इसको अधिक सूक्ष्म बनाने के लिए प्रतिवर्ष एक-दो मिनट के वार्षिक संस्कार कर लेने चाहिएं। जैसे—मेषादि सभी लग्नों के समा० काल में सन १९८७ ई० में +१ मिनट का संस्कार, १९८८ में +२ मिनट का, १९८९ में +३ मिनट का, १९९० ई० में—१ मिनट के संस्कार की आवश्यकता रहेगी। इसके अतिरिक्त लीप साल (जब फरवरी २९ दिन का होता है) के संस्कार में एकाध मिनट का और अन्तर पड़ेगा।

उपरोक्त नगरों के अतिरिक्त, यदि कोई सज्जन किसी भी अन्य नगर का जालन्धर से लग्न-समाप्ति—काल ज्ञात करना चाहे, तो जवाबी पत्र भेजकर जानकारी प्राप्त कर सकता है। **निवेदक : पं० पन्ना लाल ज्यो एम. ए. निवेदक :**

ग्रहों के फल देने का समय-

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ—
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ।

सूर्य, मंगल—ये राशि के आदि भाग में फल देते हैं। गुरु, शुक्र राशि के मध्यभाग में (अर्थात् ११ से २० अंश तक) फल देते हैं। बुध सम्पूर्ण राशि में फल देता है। चन्द्रमा, शनि राशि के अन्तिम भाग में (अर्थात् २१ से ३० अंश तक) फल देते हैं।

ग्रहों का गोचर में विशेष फल—

सूर्यारसौम्यास्फुजितोऽक्षनाग—
सप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडी : ।
तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान्
गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ।।

गन्तव्य राशि (आगे की राशि) में जाने के दिन से पहले सूर्य ८ दिन, मंगल ८ दिन, बुध ७ दिन, शुक्र ७ दिन, चन्द्रमा ३ घटी, राहु-केतु ३ मास, शनि ६ मास, बृहस्पति २ मास पहले ही फल को देने लगते हैं।

जन्म दशा जानने की सरल विधि

कृतिका नक्षत्र से इष्टकालिक जन्म नक्षत्र तक गिनकर जो संख्या आवे, उसे ९ का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति का जन्म नक्षत्र चित्रा है। कृतिका से प्रारम्भ करके गिनने से चित्रा नक्षत्र का संख्या क्रम १२ आया। इसको ९ से भाग देने पर शेष ३ बचे। उपरोक्त क्रम से सूर्य से शुरू करके ३ की संख्या तक गिनने मंगल की दशा हुई। अतः चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले बालक को जन्मकालीन मंगल की दशा लगेगी। जन्म समय दशा का आरम्भ एवं समाप्ति काल जानने के लिए नक्षत्र की प्रभात एवं भभोग प्रणाली का प्रणयन करना चाहिए। इसके लिए हमारे कार्यालय से 'दशाफल दर्पण' मंगवा कर पढ़ें। **पचांग दिवाकर कार्यालय जालन्धर।**

माला योग—यदि कु० में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों स्थित हों, और शेष ग्रह इनसे भिन्न भावों में पड़े हों, तो माला योग होता है इस योग के होने से जातक धनवान वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पीटीशन आदि में प्रायः सफल रहता है।

शकट योग—जन्म कुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़े हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट अल्प-विद्या, ड्राईवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्रायः कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

अथ प्रसूतिलग्न-विचार

मेष लग्न—कृश शरीर, भूरी आंख, बाल अधिक, गोल चेहरा, सुन्दर, उष्ण प्रकृति, वात विकार, कठोर भाषण, मन की अनिश्चित स्थिति, क्रोधी, छोटा कद, माता का मुख पूर्व की ओर, मकान पुराना, स्त्रियें १, ५, या ७ पास हों, माता का वस्त्र लाल रंग का हो पहिले मीठा भोजन किया हो और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

वृष लग्न—गौर वर्ण, स्थूल शरीर, काले नेत्र, निष्कपटी स्थिर व शांत स्वभाव, गम्भीर, शीत प्रकृति, लम्बा चेहरा, वेदांत प्रिय, रक्त पित प्रकृति, स्त्रियें ३ या ५, माता का शिर दक्षिण की ओर, माता का वस्त्र सफेद और चांदी के भूषण, पहले शाकादि भोजन किया हो, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, वात श्लेष्म प्रकृति, भूरे नेत्र अल्प बाल, लम्बा चेहरा, विद्वान्, तीक्ष्ण विचार, शूर, अभिमानी द्रव्यवान् रोगयुक्त नेत्र, चंचल स्वभाव, स्त्रियें ३ व ५ माता का मुख पश्चिम की-ओर, स्तनों में दूध थोड़ा, पित पीड़ा, माता के दाहिने अंग में लसुन का चिन्ह, पहिले नमकीन भोजन किया हो, वस्त्र पुराना, मकान का दरवाजा पश्चिम की ओर, बालक दीर्घ, शब्द से रोया हो।

कर्क लग्न—स्थूल शरीर, गोल मुख, गौर वर्ण, बहुतबाल, तैरने में प्रवीण, दूरदर्शी, निस्वार्थी, लेखक, परिश्रमी, लोकनायक व हितवादी, कद लम्बा, कोमल शरीर, वात श्लेष्म प्रकृति नेत्र चंचल, माता पिता को कष्ट, माता का मुख उत्तर की ओर, पुराने वस्त्र, पहले कुछ थोड़ा भोजन किया हो, सोने का आभूषण हाथ में, स्त्रियें ३, ५ या ७ हों बालक ने शब्द देर से किया हो।

सिंह लग्न—रक्त वर्ण, गोल व लाल नेत्र, केश बहुत, चौड़ा चेहरा, अस्थिर मन, कठोर, कद छोटा, माता का मुख दक्षिण की ओर, रक्त वस्त्र सोने के आभूषण, कसैला, खट्टा भोजन किया हो, स्त्रियें ३, ५ या ७, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह और दीर्घ शब्द से रोया हो।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्य देह, ऊंचा मस्तक, गौरवर्ण, गोल चेहरा, चंचल वृत्ति, थोड़े बाल, स्वार्थी, पाप बुद्धि स्त्री प्रिय, कंठ और जंघा में चिन्ह हो, माता का मुख उत्तर की ओर, स्त्रियें ४ या ५, माता लाल वस्त्र से युक्त हों, पिता घर से बाहिर बालक थोड़े शब्द से रोया हो। आंखें सुन्दर हों।

तुला लग्न—साधारण चंचल प्रकृति, गौरवर्ण, लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ा नाक, थोड़े बाल, तीक्ष्ण बुद्धि, रोगी स्त्री अभिलाषी, व्यापार में निपुण, द्रव्य सम्पन्न, दुबला शरीर, माता पिता कष्ट में लड़ाई झगड़ा, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्त्रियां ३ या ४। एक कंवारी कन्या भी, कसाय भोजन किया हो, पुराना वस्त्र, बालक दीर्घशब्द रोवे।

वृश्चिक लग्न—ऊंचा कृश शरीर परन्तु मज़बूत, भूरे नेत्र, कपटी, स्वार्थ के लिए दूसरे का नुक्सान चाहने वाला, व्यवहार कुशल, स्वतन्त्र विचार, कपिल वर्ण, केश लम्बे माता ने भूषण पहिने हों, स्त्रियां ४ व ५ माता का सिर पूर्व को, माता पिता कष्ट में, पुराना रक्त वस्त्र, घर का दरवाजा उत्तर को बालक की पीठ पर चिन्ह, कंठ में पीड़ा, बालक देर से शब्द करे।

धन लग्न—स्थूल शरीर, गोल चेहरा, लम्बा नाक, लाल गौर वर्ण, स्थिर व शात स्वभाव, द्रव्य अभाव का दुःख, विद्वान्, वेदांत विषय प्रिय, आलसी, स्थिर बुद्धि, डरपोक ऊंचा मस्तक, विशाल नेत्र, माता का मुख उत्तर की ओर रक्त वस्त्र, चांदी के भूषण, स्त्रियें ३ व ५, नया मकान दरवाजा दक्षिण की ओर, पक्वान भोजन किया हो, बालक के हृदय पर चिन्ह और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मकर लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक ऊंचा मस्तक, द्वेषी, आलसी लोभी, विचार हीन, वात विकार, माता का सिर, दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियें ३, ४ या ६ पुराना घर, दरवाजा उत्तर की ओर बालक ने थोड़ा शब्द किया हो। टांगे पतली हों।

कुम्भ लग्न—साधारण कृश शरीर, होंठ मोटे, मस्तक लम्बा, चंचल, भूरे नेत्र, पित प्रकृति, मध्यम केश, उदार विद्या पूर्ण, शास्त्रीय विषय में प्रवीण, नेत्रों में रोग, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ६ स्त्रियें, शाक का भोजन किया हो, पिता घर में न हो और बालक ने थोड़ा रुदन किया हो।

मीन लग्न—स्थूल शरीर, गौर वर्ण, चपटी नाक, ऊंचा मस्तक, बादामी नेत्र, वा श्लेष्म प्रकृति, परोपकारी व दयालु, धर्मप्रिय गम्भीर द्रव्याभिलाषी, कीर्तिमान, माता का मुख उत्तर की ओर, पिता घर में पहिले २ स्त्रियां हों बाद में ३ व ५ स्त्रियां आई हों, पलंग का पाव टूटा हुआ हो बालक देर से रोवे।

पितृ परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय यदि लग्न को चन्द्रमा देखता हो और सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान पर चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो तो पिता घर में नहीं था परन्तु देश में ही है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे। परन्तु इन योगों में चन्द्रमा लग्नको न देखता हो।

सुख दुख के कारक ग्रह

गुरु शुक्र से सांपत्तिक स्थिति व द्रव्य लाभ का विचार शुक्र से प्रापंचिक सुख का, सूर्य चन्द्रमा के शारीरिक या मानसिक सुख का, गुरु से बुद्धि, विद्यां वा संतान का सूर्य गुरु और शनि से नौकरी, अधिकार राज सम्मान का विचार, बुद्ध शुक्र से व्यापार का देन लेन के धन्धे का और मंगल से साहस, पराक्रम व यश का विचार करें।

ग्रहों से रोग निदान ज्ञान

किन ग्रहों में कौन रोग होते हैं नीचे लिखेऽनुसार जानना। गुरु चन्द्र से कफ रोग, शुक्र चन्द्रमा से बात कफात्मक, शनि राहु, केतु से वात रोग, बुद्ध से त्रिदोष, सूर्य मंगल से पित्त रोग।

अंग पीड़ा ज्ञान

कुण्डली के द्वादश भावों से शरीर के किसी भाग में पीड़ा या रोग होना निश्चित है। प्रथम भाव से मुख, दांत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा, वा रोग होता है। द्वितीय भाव से दाहिने नेत्र में, तृतीय भाव से दाहिना कान, गर्दन हाथ में, चतुर्थ से पेट, गुर्दा पंचम से कमर के ऊपर का भाग, षष्ठ से गुह्य स्थान दाहिना पांव, सप्तम से पेट का मध्यभाग नाभी, अष्टम से गुह्य स्थान, पांव बांया, नवम से कमर के ऊपर का भाग, दशम से पेट, पीठ, रीढ़ की हड्डी, एकादश से बांया हाथ कान, गर्दन, और द्वादश भाव से बांई आंख और पैर के तलवे में रोग जानें।

बारह लग्न/राशियों का फल

नीचे प्रसिद्ध नाम राशि के आधार पर राशि का चारित्रिक वर्णन किया जा रहा है। किसी जातक की जन्म कुंडली की लग्न राशि, जन्म चन्द्र राशि एवं सूर्य राशि भी मेष ही हो उस पर मेष राशिगत विशेषताओं का प्रभाव अधिक पड़ेगा। यदि जन्म लग्न या चन्द्रादि राशि भिन्न हो तो फल में न्यूनाधिकता की सम्भावना हो जाएगी।

(१) मेष लग्न (राशि) —(Aries)

मेष राशि में उत्पन्न जातक/जातिका मध्यम कद वाला, उत्साहयुक्त एवं पुष्ट शरीर वाला होगा। इस राशि का स्वामी मंगल होने से जातक के मुख का रंग लाल (ताम्र वर्णन) अथवा गेहुआ वर्ण होगा। भरणी नक्षत्र होने से रंग गोरा एवं लालिमायुक्त होगा। बदन गठीला तथा बाल घुंघराले होंगे। इस राशि की महिलाओं के बाल प्राय: लम्बे और घने होते हैं। आंखें चंचल, सुन्दर एवं आकर्षक होती हैं। मेष राशि के जातक परोपकारी, कोमल स्वभाव, तेजस्वी, सुशील, स्त्री के चित्त को प्रसन्न करने वाला, साहसी, उद्यमी एवं परिश्रमी होगा। सतर्क बुद्धि और स्वतंत्र विचार रखेगा। स्मरण शक्ति तेज होगी।

मेष राशि चरसंज्ञक और अग्नि तत्व प्रधान होने के कारण जातक/जातिका भावुक प्रकृति वाला परिवर्तनशील तथा अस्थिर स्वभाव होगा। क्षणिक क्रोध हो जाने पर शीघ्र ही मान जाए। भ्रमणशील प्रकृति अर्थात् घूमने-फिरने का विशेष शौक रखे। जीवन में अपने परिश्रम एवं उद्यम के बल पर आय एवं धन प्राप्ति के साधन जुटा लेता है। बहन-भाई होने पर भी उनका सहयोग नहीं मिल पाता।

मंगल के कारण बड़े से बड़े शत्रु से टकराने से डरते नहीं तथा अपने निश्चय पर अडिग रहते हैं। नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होंगे। कठिन परिस्थितियों में भी परिश्रम करते रहना इनकी सफलता का मुख्य रहस्य है।

मेष राशि की स्त्री गृहस्थ जीवन को उज्जवल बनाने के लिए, व्यवसायिक क्षेत्र में कार्यरत रहना अधिक पसन्द करती है। स्त्रियों के अतिरिक्त पुरुष मित्र भी होते हैं। पति के पराधीन रहने की अपेक्षा संगिनी बनाना अधिक पसन्द करती है। सामाजिक स्तर से व्यवहारकुशल एवं पटु होगी। मेष राशि वाले पर गम्भीर रोगों का आक्रमण कम ही होता है। खेल-कूद, संगीत कला में विशेष शौक रहता है।

शुभ नग—मूंगा, पुखराज एवं मानक।

शुभ वार—मंगलवार, गुरुवार एवं रविवार

शुभ भाग्यांक—९ है।

(२) वृष लग्न (राशि)

इस राशि का स्वामी शुक्र है। वृष राशि वाला व्यक्ति अपने हठ पर दृढ़ रहता है। आराम पसन्द रहना यह अपना धर्म समझता है। यह व्यक्ति तेजस्वी, कष्ट को सहने वाला स्वाभिमानी, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, तेजस्वी, माता-पिता तथा गुरु का भक्त, आयुष्मान होता है। छोटे-छोटे कामों पर भी लम्बे-लम्बे विचार करता रहता है। बीमारी, झगड़ा और मुकद्मे आदि में बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। शत्रु अधिक होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति को आकस्मिक धन लाभ के अवसर भी मिलते हैं। यह लोग सुखमय तथा अधिकार पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। जीवन का पूर्वार्द्ध भाग दु:खमय किन्तु उत्तरार्द्ध सुखमय एवं उन्नतिशील होता है। इस राशि वाला व्यक्ति प्राय: बैंकिंग, तेल एवं इत्रादि व्यवसाय, भवन निर्माण विज्ञापन अथवा प्रचार सम्बन्धी कार्यों में लाभ प्राप्त कर क्रांतिकारी परिवर्तनों में आस्था रखने वाला होता है। कन्या, वृश्चिक राशि वालों से साझेदारी अथवा मित्रता शुभ सूचक होती है। भाग्योदय वर्ष २५, २८, ३६ एवं ४२ होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति उत्तेजक पदार्थों का सेवन कम करते हैं तथा कुछ व्यायाम सम्बन्धी अभ्यास करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी रहता है। इन्हें, स्त्री, पुत्र, वाहन, भूमि एवं गृह आदि का सुख पूर्ण रूप से मिलता है। इसके लिए ५,१३,२६,३७,४७वां वर्ष कुछ कष्टदायी होते हैं। वृष राशि वाली स्त्रियां बड़ी अच्छी गृहिणी सिद्ध होती हैं। उनके व्यवहार तथ्यात्मक होते हैं। यह उत्तरदायित्व को पूर्ण करने वाली होती है। वृष राशि के व्यक्ति को रहस्यों से प्रेम होता है। उसे परम्परागत विषयों की अपेक्षा नवीन विषयों के अध्ययन में विशेष रुचि होती है। वह जटिल प्रकृति का भी होता है। वृष राशि के जातक एक सफल माता-पिता बनते हैं, बच्चों के प्रति उनके मन में अत्यन्त प्रेम तथा समझदारी होती है। वृष राशि वालों को आलसी भी समझा जाता है परन्तु उनका आलस्य तभी तक रहता है जब तक वह गति में न हो जाएं। एक बार जब वह गति में आ जाएं तो अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेने के उपरान्त ही वह विश्राम करते हैं। इनके शरीर पर तिल अथवा लहसन के चिन्ह भी मिलते हैं।

भाग्यशाली मास—इस राशि वाले जातकों के लिए सौर मास, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्ग शीर्ष अथवा पौष शुभ रहते हैं। आश्विन, कार्तिक एवं माघ अशुभ हैं।

भाग्यशाली दिन—शुक्र, बुध, शनि और सोमवार के दिन जातक के लिए शुभ रहेंगे। गुरुवार का दिन जीवन साथी की ओर से शुभफली रहेगा। मंगलवार का दिन अधिक खर्चीला रहेगा। शुक्रवार का व्रत शुभकारी होगा।

शुभ रंग—गुलाबी, हरा और सफेद रंग के कपड़े पहनना शुभ रहेगा। लाल रंग शुभ नहीं है।

शुभ रत्न—इस राशि वालों के लिए हीरा अथवा सफेद मूंगा शुभ रहेगा।

(३) मिथुन लग्न (राशि)

मिथुन राशि का स्वामी बुध है। भारतीय मतानुसार १५ जून से १५ जुलाई तक के मध्य जन्म लेने वालों की राशि मिथुन मानी गई है। इस राशि का जातक प्राय: लम्बे कद, गौर वर्ण, सुन्दर बाल तथा बड़ी नाक वाला होता है। चेहरे से ही बुद्धिमानी ज्ञात हो जाती है। यदि चन्द्रमा बली हो तो रुपवान और स्वस्थ भी होता है। यह जातक मधुरभाषी, चतुर, दयालु, दृढ़ प्रतिज्ञ, विद्वान, धनी, प्रत्येक कार्य करने में समर्थ कुशाग्र बुद्धि, भोगी, विलासी, शान्त चित्त, मर्मज्ञ, सर्वप्रिय, अधिक भोजन करने वाला होता है। इसे आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। नरम स्वभाव होने के कारण इसे कमजोर समझा जाता है। दु:ख और सुख में सदा एक भाव रहता है। घरेलू झगड़ों में सदा चिंतातुर रहता है, फिर भी इनमें साहस तथा निर्दयता की मात्रा अधिक नहीं होती लेकिन संकट के समय वे अपने हितों की रक्षा करने में जुट जाते हैं। बुद्धि की प्रचुरता उन्हें अधिक उठने नहीं देती, वहां गिरने भी नहीं देती। ये कोई ऐब भी करते हैं तो अपने हाथ पैर बचाकर करते हैं और यदि अनिष्ट होता दिखाई देता है तो तुरन्त सम्भल जाते हैं। यह जातक विपरीत लिंग की ओर से विपत्तियों को निमंत्रित करते हैं। यह स्वयं निष्ठावान न होकर भी दूसरों की निष्ठा की परीक्षा करने का प्रयास करते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति मृत्यु से अधिक प्रेम को महत्व देते हैं। प्रेम के क्षेत्र में मिथुन राशि के लोग न्याय तथा संतुलन के पक्षपाती होते हैं। मिथुन राशि वाली स्त्रियां पुरुष पर हावी हो सकती हैं। मिथुन राशि के लोग सिंह, तुला तथा मेष राशि वालों के साथ खुश रहते हैं, कन्या एवं मीन राशि वालों के साथ उनका विरोध रहता है।

यह भ्रमण तथा परिवर्तन-प्रिय होते हैं। इस राशि के लोग विद्वान होने पर भी आर्थिक दृष्टि से हीन होते हैं। ये लोग व्यवसाय के स्थान पर नौकरी में ही कुछ सफल हो पाते हैं। इस राशि के लोगों को अनिद्रा, पेट की बीमारी, जीभ की बीमारी होती है। इस राशि वाले जातक साहित्य, वाणिज्य, गणित, सम्पादन, लेखन अथवा अध्ययन आदि व्यवसाय से लाभ प्राप्त करते हैं। भाग्योन्नति कारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६,४३ होते हैं।

शुभ मास—इस राशि वालों के लिए सौरमास ज्येष्ठ भाद्रपद, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन शुभ होते हैं। अंग्रेजी महीने जून, सितम्बर, दिसम्बर तथा मार्च अच्छे माने जाते हैं।

(४) कर्क लग्न (राशि)

इस राशि का स्वामी चन्द्रमा है। इस राशि में जन्म लेने वाले व्यक्ति कृश परन्तु शक्तिशाली शरीर वाला, कर्मठ, धर्मात्मा, शूरवीर, बुद्धिमान, अधिक बोलने वाले, महाक्रोधी, शिर रोगी, नवीन तथा जलज वस्तुओं में विशेष अभिरुचि रखने वाला, विलासी, भावुक मन, कल्पनाशील मस्तिष्क, समयानुसार काम करने वाला तथा स्त्री वर्ग से विशेष लाभ एवं हर्ष प्राप्त करने वाला होता है। इस राशि का जातक जलोत्पन्न वस्तुओं का व्यवसायी, डाक्टर, अनूठी वस्तुओं का संकलन कर्त्ता, इतिहासज्ञ, प्राध्यापक अथवा नाविक होता है। इस राशि के जातक को वृश्चिक, मकर एवं मीन लग्न वालों से प्रेम एवं मित्रता अथवा भागीदारी शुभ रहती है। इस राशि के जातक की स्मरण शक्ति अति तीव्र होती है। इन लोगों में असुरक्षा की भावना बनी रहती है। यह जातक जीवन में यथार्थता से दूर भटकते रहते हैं। कर्क लग्न वाले व्यक्ति गन्धर्व विद्या के भी बहुत शौकीन होते हैं। ये जातक अपनी माता को बहुत ही अधिक प्यार करते हैं। इनकी स्त्री पतिव्रता होती है परन्तु यह स्वयं पर स्त्रियों में अनुरक्त रहते हैं। इनके कई सन्तानें होती हैं मगर योग्य केवल एक ही होती है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने व्यापार तथा वंश की उन्नति करते हैं। ये ज्योतिष तथा गणित प्रेमी भी हो सकते हैं। कर्क राशि वालों को अपने जन्म स्थान से मोह होता है परन्तु चन्द्रमा उन्हें स्थान परिवर्तन के लिए विवश करता है। उन्हें आदर प्राप्ति की भी विशेष इच्छा रहती है। कर्क राशि की स्त्रियां प्रायः सुन्दर तथा एकान्त प्रिय होती हैं। इस राशि की स्त्री अपने बच्चों के लिए सर्वोत्तम भावना रखती है। कर्क राशि वाली स्त्री पिता की ओर अधिक आकृष्ट होती है।

इस राशि के जातक के जीवन में अक्सर उथल-पुथल होती है। यह जातक क्षण भर क्रोध में आकर शीघ्र शांत हो जाता है। इन्हें पैतृक सम्पत्ति कठिनता से प्राप्त होती है। जीवन के पहले हिस्से में अमन और सुख रहे। इसका कोई भाई-बहिन पूर्णायु न भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। स्त्री से क्लेश, गुप्त रूप से इसके शत्रु बने रहते हैं। मगर जीत इनकी ही होती है। २५ वर्ष तक इनकी जिन्दगी डांवाडोल रहती है। ५—१६—१८—२०—२४ वर्ष में कुछ कष्ट हो सकता है।

शुभ वर्ष—इस राशि के जातक के लिए १६—२२—२४—२५—२८—३२ वर्ष शुभ हैं।

शुभ दिन—इस राशि के लिए सोमवार शुभ रहेगा।

शुभ रंग—सफेद रंग इनके लिए शुभ रहेगा।

शुभ रत्न—मोती तथा चन्द्रकान्तमणि इनके लिए शुभ रहेगा।

(५) सिंह लग्न (राशि)

इस राशि का स्वामी सूर्य है। इस राशि वाला व्यक्ति पुष्ट शरीर वाला, बली भुजाएं, प्रभावशाली एवं आकर्षक, निर्भय, पराक्रमी, महत्वाकांक्षी, अपने पिता से भी उच्च स्तर का, निष्ठावान, प्रशासनिक अधिकारों का सदुपयोग करने में सफल, क्रीडा कला, अध्ययनशील, हठी, विश्वासपात्र, आडम्बरपूर्ण रहन-सहन एवं रईसी मिजाज वाले होते हैं। इस राशि वाला पुरुष अपने गुणों एवं पुरुषार्थ द्वारा हर काम में उन्नति प्राप्त कर लेता है। धर्मात्मा, दानी और परोसे पर काम करने वाला होता है। मामूली बातों को नफरत भरी निगाह से देखने वाला होता है और बड़े-बड़े कामों को करने में तत्पर हो जाता है, और उन्हें पूरे तौर पर कर लेता है। इस राशि वाले जातक को पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ होता है। सन्तान बहुत हो मगर सुख कम का हो। मित्रों का अभाव इन्हें नहीं खलता। इनमें उदारता एवं सहानुभूति की मात्रा पर्याप्त मात्रा में होती है। यह जातक अपने आश्रितों का अधिक ख्याल रखते हैं, दूसरों को सहारा देने में कभी पीछे नहीं हटते, वाहनादि सुखों से सम्पन्न, धनी एवं खर्चीले स्वभाव के होते हैं। इस राशि वाले जातक की पत्नी गुणवती स्थिर स्वभाव वाली तथा पति की आज्ञा का पालन करने वाली होती है। इस राशि के जातक को धनु, कुम्भ, मेष लग्न वालों से साझेदारी एवं मित्रता हितकर रहेगी। सिंह राशि का हृदय से विशिष्ट सम्बन्ध है। इसलिए इस राशि के लोगों में रोमांस, प्रेम तथा क्रियाशीलता अधिक पाई जाती है। सिंह राशि वाली स्त्रियां भी नाटकियता से अधिक प्रेम करती हैं। वे स्वयं को महत्त्व का केन्द्र समझकर जीवन-यापन करती है। सिंह राशि की स्त्रियां चुम्बकीय व्यक्तित्व वाली होती हैं। वह स्पष्टवादी, निडर व पुरुषार्थी होती हैं।

इस राशि के लोग मस्तिष्क से अधिक काम लेते हैं। अतः इनके लिए अधिक सोना आवश्यक है। इनकी सफलता के लिए आयु का कोई समय निश्चित नहीं होता। वह कभी भी प्राप्त हो सकती है।

शुभ दिन—रविवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार शुभ हैं।

शुभ मास—जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, अक्तूबर (पूर्वार्द्ध) इस राशि के जातक के लिए शुभ होंगे।

शुभ रत्न—इस राशि को मानक (Ruby) एवं मूंगा शुभ रत्न रहता है।

(६) कन्या राशि

इस राशि का स्वामी बुध है। कन्या राशि वालों का रूप बुध के तुल्य ही होता है। उनका शरीर न अधिक बड़ा और न अधिक छोटा होता है। ये जातक अति कोमल होते हैं, इनके शरीर अधिक पुष्ट नहीं होते। यहां तक कि वे कभी-कभी तो अत्यन्त ही कोमल हो जाते हैं। फिर भी वे चंचल अवश्य होते हैं। इन जातकों का शरीर अति सुन्दर—गठन, मधुरभाषी, गणितज्ञ, लज्जाशील, सहनशील, बुद्धिवादी अपने सभी कार्य गुप्त रखने वाले, वृद्धावस्था में भी पूर्ण युवक जैसे प्रतीत होते हैं। उनमें आत्म प्रदर्शन की भावना नहीं होती लेकिन आत्मविश्वास की कमी होती है। अपने मित्र बनाने में वे विवेक और बुद्धिमता से काम लेते हैं इसलिए मित्र अधिक नहीं होते लेकिन सब की सहानुभूति इनके साथ होती है। इस राशि के जातक की स्मरण शक्ति बहुत अधिक होती है। अपनी बुद्धि-ज्ञान के बल से ही जीवन की गहराइयों में पहुंच जाते हैं। ऐसा कोई विषय नहीं जिसको वह न समझ सकते हों। कन्या राशि वाले निरन्तर क्रियाशील बने रहते हैं क्योंकि वे अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी आत्म नियन्त्रण नहीं खोते। इस राशि के जातक पल-पल में विचार बदलते रहते हैं। कन्या राशि वाले बाहर से जितने शान्त तथा शीतल प्रतीत होते हैं अन्दर से उसके ठीक उतने ही विपरीत भी हो सकते हैं। रहस्यों, उलझनों, कठिनाइयों तथा चुनौतियों को स्वीकार करना और उन पर विजय प्राप्त करना कन्या राशि का स्वभाव है। कन्या राशि वालों का प्रेम परिवारिक रोमांस में सार्थक होता है। प्रेम के साथ उनके दिमाग में उत्तरदायित्व की भावना भी रहती है। कन्या राशि की स्त्रियां बैंक में धन तथा शरीर पर आभूषणों की इच्छुक होती हैं। उनका प्रेम पाने के लिए उन पर पूरा विश्वास करना आवश्यक है। कन्या राशि की स्त्रियां एक अच्छी गृहिणी एवं सहायिका के रूप में अत्यन्त सफल रहती हैं। दो कन्या राशि वालों में अनेक बातों की समानता होते हुए भी परस्पर संघर्ष बना रहता है। कन्या राशि वाले मेष राशि वालों से सशंकित रहते हैं। कन्या राशि वाला जातक अध्ययन का अत्यन्त शौक रखता है। इन लोगों को उत्तराधिकार में प्रथम तो कोई सम्पत्ति ही नहीं मिलती और यदि मिलती है तो वह झगड़े में ही मिलती है।

शुभ मास—इनके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर शुभ हैं।

शुभ दिन—शनिवार, शुक्रवार शुभ दिन हैं।

शुभ रंग—इस राशि का शुभ रंग हरा, नीला, संगतरी है।

शुभ रत्न—हीरा, पन्ना एवं हकीक शुभ रत्न हैं। इन्हें छोटी अंगुली में पहनना उत्तम है।

(७) तुला लग्न (राशि)

तुला राशि का स्वामी शुक्र है। इस राशि वाले जातक पतले शरीर वाले परन्तु बलिष्ठ भुजाओं वाले, पराक्रमी, मित्र प्रेमी, अकारण क्रोध करने वाले, व्यवसाय करने में चतुर, अल्प संततिवान, देव-पितृ पूजक, बहु-स्त्री भोगी, चतुर, बुद्धिमान, मिष्ठान—भोजन-प्रिय तथा वस्तु संग्रही होते हैं। इस राशि वाले जातक मीठा बोलने वाले, नीति करने में निपुण, हर कार्य को खूब अच्छी तरह नाप-तोल कर करते हैं। तुला राशि वाले जातक प्रायः बात प्रकृति के होते हैं। यह जातक जल से भय पाने वाले होते हैं। इन्हें शिर, उदर या चर्म रोग होने की सम्भावना रहती है। इस राशि के जातक प्रायः क्रांतिकारी, लेखक, ज्योतिषी, इंजीनियर, वायुयान सम्बन्धी अथवा अन्य तकनीकि कार्य करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस राशि के जातक न्याय को बड़ा महत्व देते हैं। धार्मिक परम्पराओं और समाज के रीति-रिवाजों का उल्लंघन नहीं करते हैं। नाक व नक्शा भी मध्यम स्तर का होता है। इनका शरीर निर्माण

है। सिंह राशि वाली स्त्रियां भी नाटकियता से अधिक प्रेम करती हैं। वे स्वयं को महत्व का केन्द्र समझकर ... समाज के रीति-रिवाजों का उल्लंघन नहीं करते हैं। नाक व नक्शा भी मध्यम ...

बड़ा संतुलित होता है। अगर पति की तुला राशि नहीं है, पत्नी की है तो वह भरसक अपना दाम्पत्य जीवन सन्तुलित रखने की चेष्टा करेगी और सतुलित परिवार होगा। तुला राशि वालों का दृष्टिकोण अति विशाल होता है। वे समानता के भाव में बहते रहते हैं। इन जातकों की दोस्ती सिंह, धनु तथा मकर राशि वालों से शुभ होती है। तुला राशि के लोगों की भावुकता प्रायः उन्हें धोखा दे जाती है। ऐसे जातकों को कभी-कभी आलोचना का शिकार भी होना पड़ता है। इस राशि के जातक अथवा जातिका को संगीत से प्रेम होता है। तुला राशि की स्त्रियां रोमांटिक तथा प्यार से प्यार करने वाली होती हैं। उन्हें खुशामद बहुत पसन्द होती है। इस राशि की स्त्रियां विवाह को गम्भीर विषय मानती हैं। समृद्ध तथा आयु वृद्ध तुला राशि की स्त्रियां सलीके तथा सुरूपता का प्रदर्शन भली-भांति कर सकती हैं। ये लोग सट्टे के काम में भी सफल हो सकते हैं। इस राशि के लोगों का भाग्योदय प्रायः जीवन के मध्य काल में होता है। इनके जीवन का अन्तिम भाग अच्छा बीतता है। इस राशि के जातक को पिता का सुख मिलता है। इस राशि के लोगों के पारिवारिक जीवन में उथल-पुथल होती रहती है। तुला राशि के लोग खर्चीले भी होते हैं। तुला लग्न वालों को गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। भाग्योन्नति कारक वर्ष २४, २५, ३२, ३३, ३५ होते हैं।

शुभ दिन—शुक्रवार आपके लिए अति शुभ होगा।

शुभ रंग—नीला रंग आपके लिए अति उत्तम है।

शुभ रत्न—हीरा-सफेद मूंगा पहनना आपके लिए शुभ रहेगा।

(८) वृश्चिक लग्न (राशि)

वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है। इस राशि के जातक का व्यक्तित्व आकर्षक, हाथ लम्बे, बड़े नेत्र, बड़ी छाती तथा मुख पर तिल आदि का चिन्ह लिए होते हैं। ये जातक प्रायः कर्म करने वाले, मादक पदार्थों में रुचि रखने वाले, पिता तथा गुरु के भक्त, मित्रों के सहयोगी, परस्त्री अथवा पर पुरुष में आसक्त, क्रोधी, तथा नास्तिक होते हैं। इस राशि वाली स्त्रियां कठोर होती हैं तथा इस राशि वाले पुरुषों की पत्नियां पतिव्रता होती हैं। ये जातक व्यवसाय में लाभ उठाते हैं। यह जातक भावुक प्रकृति के होते हैं। दूसरों की गलती को शीघ्र क्षमा नहीं करते। इनके मित्र भी ज्यादा होते हैं और शत्रु भी। ये जातक दूसरों को उन्नति करते देख उनसे ईर्ष्या महसूस करते हैं जिससे इनके मन में भी उन्नति की भावना जागृत होती है। वृश्चिक राशि वाले बिच्छु की तरह डंक मारते हैं। ऐसे जातकों से दुश्मनी नहीं लेनी चाहिए। ये जातक जब भी सामाजिक या राजनीतिक कार्य हाथ में लेते हैं तो अपनी अपार शक्ति के सहारे कार्य में तत्पर हो जाते हैं। ये जातक किसी न किसी कार्य में सदैव लगे रहते हैं। ऐसे जातकों के भीतर अनेक गुप्त शक्तियां छिपी रहती है परन्तु जब तक इन्हें उपयुक्त प्रेरणा नहीं मिल पाती, तब तक अपनी अभूतपूर्व शक्तियों के प्रति उदासीन बने रहते हैं। आप दूसरों के कार्य में दखल नहीं देते। आप केवल वहां ही रुचि रखते हैं, जहां आपका स्वार्थ होता है। आपकी इच्छा यह रहेगी कि किसी भी कार्य में जो आप कहें, दूसरे उसका अनुसरण करें, आप स्वयं को दूसरों से अधिक सफल तथा प्रसन्न रखने वाले होते हैं। ऐसे जातक में अपने धंधे के प्रति भारी लगन और कर्तव्य भावना होती है। इन्हीं गुणों के कारण वे उत्तम डाक्टर, सर्जन और अच्छे वक्ता बनते हैं। ऐसे जातक अपने जीवन साथी से अधिकतम तृप्ति पाने की आशा रखते हैं, उदासीन जीवन साथी से उनकी नहीं पटती। वृश्चिक जातिका के लिए आदर्श पति वृश्चिक जातक ही हो सकता है। वृश्चिक राशि के बच्चों के लालन-पालन में बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। वे दृढ़ व्यक्तित्व वाले और प्रायः जिद्दी भी होते हैं। ऐसे जातकों को प्रायः किडनी रोग, नाक और गले की बीमारियों का भय रहता है। ऐसे जातक विवेक से कार्य करने वाले एवं निज पुरुषार्थ द्वारा परिवार का पालन-पोषण करने वाले होते हैं। इस राशि के लोगों में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है। इसी भांति वे बड़ी लगन के साथ काम करते हैं।

शुभ मास—अप्रैल, जून, अगस्त, जनवरी, अक्तूबर, नवम्बर मास शुभ होते हैं।

शुभ दिन—रविवार, सोमवार, मंगलवार तथा वृहस्पतिवार शुभ दिन हैं।

शुभ रंग—पीला, लाल, संतरी रंग शुभ हैं।

शुभ रत्न—स्वास्थ्य की दृष्टि से मूंगा शुभ है परन्तु व्यवसाय क्षेत्र में सफलता हेतु Ruby (माणक्य) शुभ होता है।

(९) धनु लग्न (राशि)

धनु राशि का स्वामी बृहस्पति है। इस राशि वाले जातक अपने लक्ष्य की ओर सीधे, बिना रुके बढ़ने का प्रयास करते हैं। इस राशि वाले जातक के मुख, कान तथा दांत बड़े तथा पांवों के तलवे छोटे होते हैं। शरीर के किसी अंग में तिल आदि के चिन्ह पाये जाते हैं। धनु जातक मूल रूप से जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं। ऐसे जातकों को सभ्य समाज की चमक-दमक की अपेक्षा प्रकृति की गोद में अधिक आनन्द आता है। ऐसे जातक अपना सारा ध्यान उस क्षण कर रहे काम पर केन्द्रित रखते हैं और जब तक थककर चकनाचूर नहीं हो जाते, दूसरी ओर निगाह भी नहीं करते। ऐसे जातक तीव्र बुद्धि वाले होते हैं। राजनीतिक रूप में वे बार-बार अपनी नीतियों को बदलेंगे। धनु जातकों का व्यवहार आमतौर से विनम्र रहता है पर कभी-कभी परिस्थितिवश रूखे और उग्र भी हो सकते हैं। अतीन्द्रिय ज्ञान उनका एक और गुण है। यह प्रायः बहुत भाग्यशाली रहते हैं। ऐसे जातक अपने प्रकार के व्यवसाय करने वाले होते हैं। धनु जातिकाएं धनु जातकों से अधिक उदास होती हैं। उनमें आत्म त्याग की गहरी भावना और सम्मान तथा कर्तव्य के प्रति उच्च समझ होती है लेकिन जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत स्वतन्त्र होता है। उनमें अन्य गुण धनु जातकों के समान ही होते हैं। धनु जातकों की मित्रता बहुत गहरी होती है। इसमें उनकी मधुर मुस्कान का काफी योग रहता है। ये जातक बाल्यावस्था में धनी होते हैं। ये किसी आदर्श को लेकर झगड़ते हैं। व्यर्थ में यों ही झगड़ा मोल नहीं लेते। ऐसे जातक को घोड़े पर चढ़ना अति प्रिय होता है। इन्हें जब क्रोध आता है तो वह आग उगलने लगता है और असह्य हो जाता है। तलाक और अनेक विवाहों की घटनाएं भी इस राशि के जातकों में अधिक पाई जाती हैं। धनु जातक प्रायः कमर या साइटिका नस का दर्द से पीड़ित होते हैं। उन्हें मन और शरीर से अत्यधिक काम लेने और मादक द्रव्यों से बचना चाहिए तथा मन और शरीर को अधिक से अधिक ढीला छोड़ने का अभ्यास करना चाहिए। इनका प्रारम्भिक जीवन साधारण-सा होता है पर ४०-४५ वर्ष की आयु में स्थायित्व आ जाता है।

शुभ वर्ष—१६, ३२, ४६ वर्ष इनके जीवन में शुभ होंगे।

शुभ मास—मार्च, मई, जुलाई, अक्तूबर, दिसम्बर शुभ मास हैं।

शुभ दिन—रविवार, मंगलवार, बृहस्पति शुभ दिन हैं।

शुभ रत्न—इनके लिए पुखराज सुनहरा या पीला पहनना हितकर होगा।

(१०) मकर लग्न (राशि)

इस राशि का स्वामी शनि है। इस राशि के जातक प्रायः लम्बे कद, सुन्दर नेत्र एवं वात प्रकृति वाला, मननशील, आध्यात्मिक प्रवृत्ति का, त्यागी, धैर्यवान, अनेक विघ्न होते हुए भी परिश्रमी एवं कार्यशील, व्यापार, व्यवसाय, राजनीति में कुशल, आस्तिक तथा आदर्श विचारक होते हैं। इस लग्न वाले व्यक्ति जन्म स्थान छोड़ने के पश्चात् भी पुनः वहीं पहुंचने को लालायित रहते हैं। ये जातक कृषि अथवा खनिज पदार्थों एवं व्यवसाय-मंडलों से सम्बन्धित कार्यों में सफल हो सकते हैं। मकर जातकों में इतिहास और पुरानी वस्तुओं के प्रति विशेष रुचि देखी जाती है। मकर जातकों की प्रतिभा में विवाह के बाद ही निखार आता है। ऐसे जातकों के लिए निजी प्रतिष्ठा, सामाजिक स्थिति और पद का भारी महत्व होता है। वे प्रायः सतर्क और परम्परावादी होते हैं। ऐसे जातक मुसीबत में भी धैर्य से काम लेते हैं। किसी बाधा की परवाह नहीं करते। पुस्तकों से इन्हें अधिक प्रेम होता है और लग्न लग जाने पर उनको चौबिस घंटे तक पढ़ते ही रहते हैं। अपने इसी कार्य से वे अच्छे अनुसन्धानकर्त्ता या वैज्ञानिक बन सकते हैं। यह राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान होने से जातक विवेकशील मितव्ययी एवं अच्छी-बुरी बात को पहचानने वाला व्यक्ति होगा। कल्पनाशील व गम्भीर प्रकृति रहेगी। पर्याप्त परीक्षा के उपरान्त ही मित्रता के सम्बन्धों को पक्का करेंगे। मकर राशि वाले जातक प्रायः बड़े उत्साही होते हैं। यदि कोई इनकी हानि करता है तो ऐसा जातक बदले की भावना को कभी नहीं भूलता। ऐसे जातक खुले तौर पर अपने विचार प्रकट करते हैं चाहे उनसे किसी के

दिल पर चोट क्यों न पहुंचे। ऐसे जातक अपने अधीनस्थ आश्रितों से काम लेने में निपुण होते हैं तथा दूसरों के मनोभावों को झट समझ लेते हैं। इस राशि के जातकों को पारिवारिक जीवन मिश्रित होता है।

इस लग्न वाले जातकों का वायु-विकारों, पाचन की खराबी, मूत्र सम्बन्धी रोग तथा वृद्धावस्था में हृदय रोग होने की आशंका रहती है। अपनी झूठी-शान या बड़प्पन दिखाने के चक्र में प्रायः धनाभाव से घिरे रहते हैं। कामुकता भी अधिक होती है। अहंकारी स्वभाव के कारण जुबान पर इनकी लगाम नहीं होती। शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। इस राशि की जातिका धार्मिक विचारों वाली, सत्यप्रिय मितव्ययी तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाली होगी।

शुभ वर्ष—२५,२७,३३,३५, तथा ४२वें वर्ष आपके लिए शुभ रहेंगे।

शुभ दिन—शुक्र, शनि एवं बुध शुभ सोमवार अशुभ रहेगा एवं बाकि दिन मिश्रित फली रहेंगे।

शुभ रत्न—हीरा, श्वेत मोती, चांदी की अंगूठी में तथा नीलम शुभ फली होंगे।

शुभ रंग—नीला, काला तथा लाल रंग शुभ हैं।

(११) कुम्भ लग्न (राशि)

इस राशि का स्वामी शनि है। कुम्भ राशि के जातक मोटे शरीर वाले, मध्यम कद, काले केश वाले, तीव्र स्मरण शक्ति वाले होते हैं। ये जातक दयालु, धीर, दृढ़ प्रतिज्ञ, क्रोधी, सत्यवादी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले होते हैं। कुम्भ राशि वाले जातक दृढ़ इच्छा शक्ति वाले और हर बात में निश्चित मत रखने वाले होते हैं। वे दूसरों की बातों में सहज नहीं आते। ऐसे जातक संयम और गम्भीरता से समस्याओं, तनावों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं। कुम्भ जातक या जातिका मानवीय गुणों से भरपूर और अपने उद्देश्य के प्रति पूर्ण ईमानदार तथा प्रतिबद्ध होते हैं। वे अतिवादी नहीं होते। इस राशि वाले जातक झूठ भी बोल सकते हैं, बड़ों का अपमान भी खुले तौर से कर सकते हैं। कुम्भ जातक किसी भी परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढाल सकते हैं। वे मानव प्रकृति के असाधारण पारखी होते हैं। ऐसे जातक आर्थिक मामलों में सफल रहते हैं। किन्तु धन उनके लिए साध्य नहीं, साधन है। कुम्भ जातकों की मित्रता का आधार उनकी व्यक्तिगत परख होती है। फिर भी उनमें स्थायी सम्बन्धों की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। इस राशि के जातक फोटो ग्राफर, वैज्ञानिक, लेखक, मनोवैज्ञानिक, प्रकाशक सफलतापूर्वक बन सकते हैं। ऐसे जातक अगर उच्चाधिकारी के रूप में काम करें तो अपने से नीचे काम कर रहे कर्मचारियों से घुल-मिल कर भी उनसे दूर रहते हैं जिससे उनसे साथ घनिष्ट सम्बन्ध नहीं बनते। कुम्भ राशि वाली स्त्री सबसे मित्रता होने पर भी सबसे दूर रहती है क्योंकि यह स्वतन्त्रता से रहना पसन्द करती है। सुन्दर वेश-भूषा, हेयर स्टाइल तथा आकर्षक चाल-ढाल से हर जगह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। कुम्भ राशि के जातक छल-कपट से नफरत करते हैं और किसी से पैसा उधार लेना अच्छा नहीं समझते। यह यथार्थवादी होते हैं। ऐसे जातकों को घर से अधिक दूसरों के दुःख-सुख की चिन्ता रहती है। दूसरों का चरित्र तथा व्यक्तित्व भांपने में माहिर होते हैं। इस राशि के जातकों का स्वास्थ्य साधारणतः कमजोर रहता है, सीने की बीमारियां, बवासीर, चर्म आदि रोगों से ग्रस्त होते हैं पर अपने आत्मविश्वास के बल पर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं। इस राशि के जातकों का दाम्पत्य जीवन सुखदायक रहता है। स्वभाव से समझौतावादी होने के कारण प्रेम में सफल रहते हैं, बदनामी और अपमान से डरते हैं। संतान मध्यम होती है। कुल मिलाकर अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं।

शुभ मास—फरवरी, अप्रैल, जून सितम्बर मास शुभ रहेंगे।

शुभ वार—रवि, मंगल, वीरवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे।

शुभ रंग—नीला रंग पहनना हितकर होगा।

शुभ रत्न—नीलम पहनना आपके लिए शुभ रहेगा।

(१२) मीन लग्न (राशि)

मीन राशि का स्वामी बृहस्पति है। जैसे मीन का अर्थ मछली है ठीक उसी तरह इस राशि का जातक हरी घास, जलाशय तथा नदी या समुद्र के किनारे बैठना अधिक पसन्द करता है। मीन राशि के जातक रूपवान, सुन्दर दृष्टि वाले, सहज ही निरुत्साहित हो जाने वाले, सुन्दर स्वभाव वाले, अच्छी सन्तान वाले, चतुर, स्थिर बुद्धि, निष्कपट, सुगंध प्रिय, अतिकामी तथा उत्तम वाणी बोलने वाले होते हैं। मीन राशि के जातक अतिशय भावुक तथा उच्च कोटि के कवि और कलाकार भी हो सकते हैं। ऐसे जातकों की कल्पना शक्ति काफी विकसित होती है। ये मूलतः आदर्शवादी होते हैं और दुनिया में खो जाना चाहते हैं। मीन जातकों में घर में शान्ति और आराम से बैठे रहने की प्रकृति होती है। इसमें उनमें आलसीपन पनप सकता है। जल के प्रति उनका विशेष मोह होता है। द्विस्वभावी होने की वजह से सबसे दृढ़ और सबसे दुर्बल चरित्र उनमें मिल सकते हैं। कुछ भावनाओं में बहकर भोग विलास का मार्ग अपना लेते हैं। मीन जातकों में गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षण होता है। अज्ञात, दार्शनिक या रहस्यमय की खोज करना उन्हें पसन्द होता है। आर्थिक मामलों में मीन जातकों को बार-बार उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ सकता है। हंसी-मजाक इनको पसन्द नहीं होता। अपना हर काम ठीक समय पर करते हैं। इस राशि के जातक फेफड़े, बुखार, पेट में गैस आदि बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं पर शीघ्र लाभ प्राप्त कर लेते हैं। मीन राशि के जातक अपने जीवन का स्वयं निर्माण करते हैं। ऐसे जातक प्रायः हवाई सेना, डेयरी कार्य, स्टेनोग्राफर, कृषि, द्रव्य से सम्बन्धित कार्य, बैंकर या व्यापार का रोजगार अपनाते हैं। जहां तक प्रेम की बात है मीन जातक अत्यन्त भावुक और रूमानी होते हैं। वे रूप के लोभी भी होते हैं। मीन जातिका का बाह्य रूप पूर्णतः एक नारी का रूप होता है। उसकी यही विशेषता पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करती है। अन्दर से वह कठोर जीवन अपनाने में भी सक्षम हो सकती है। दीन-दुःखियों के प्रति उसका प्रेम उसके घर को संग्रहालय बना लेता है।

शुभ मास—जनवरी, फरवरी, जुलाई, अक्तूबर इस राशि के शुभ मास हैं।

शुभ दिन—बृहस्पतिवार तथा शनिवार शुभ दिन रहेंगे।

शुभ रंग—बैंगनी तथा हल्का जामुनी रंग प्रायः इस राशि के लिए शुभ माना गया है।

शुभ रत्न—इस राशि के जातकों को पुखराज धारण करना चाहिए।

बालक के जन्म-समय अरिष्ट योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग है, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो, और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु—मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे, या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो तथा अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हों, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह ६ठे, ७वें या १२वें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशीश पाप ग्रह से प्रयुक्त होकर अष्टम भाव में हो तो १ मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को २ मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २—३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त हो कर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हो तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न से राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा।

जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता पिता के अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए। यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या ८वें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकर होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुंडली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हों या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हो तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को भी कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि(वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

१ यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान हो कर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति

कुछ अन्य प्रमुख योग

रखने वाला, सब कार्यों में कुशल धनी तथा अनेक लोगों का पालन पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदययोग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्—भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुंडली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल-सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो काहलयोग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रबन्ध कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गड़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में, एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गड़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गड़ा हुआ धन मिलता है परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन—सुख योग

१. नवमेश लाभेश और दशमेश—ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा शुभ	पूर्व, उत्तर	पश्चिम, दक्षिण	दक्षिण, पूर्व	दक्षिण, पूर्व	उत्तर, पश्चिम	पूव, उत्तर	पश्चिम, दक्षिण
यात्रा	पश्चिम, दक्षिण	पूर्व, उत्तर	उत्तर, पश्चिम	उत्तर, पश्चिम	दक्षिणी, पूर्व	पश्चिम, दक्षिण	पूर्व, उत्तर
ज्ञान और विद्यासंबंधी	पढ़ना-पढ़ाना लिखनामध्यम रहे।	औषधी संबंधी पढ़ाई डाक्टरी विशेष शुभ रहेगी	शस्त्र विद्या वायुयानचलाना शुभ रहेगा	योगक्रियासा कृषि गणित संबंधी ज्ञान शुभ है	वेदरंभसंस्कृत पढ़ना हिन्दी साहित्यारम्भ शुभ हैं	कविता कला कौशल एवं अरबी भाषा पढ़ाका शुभ	अंग्रेजी फारसी उर्दू यावनीभाषा का ज्ञान शुभ है
व्यापार सम्बन्धी कार्य	अन्न, सोना, ताम्बा पाट, बारदाना कपड़ाकाकार्यशुभहै	औषधी, चांदी, दूध, दही, हलवाई तेल, घृत का व्यापार शुभ है	कोई भी कार्य व्यापार संबंधी नहीं आरम्भ करना चाहिए	शेयर मार्कीट जमीन जायदाद संबंधी कार्य शुभऔरअशुभ	प्रत्येककार्यरंभ मैंबृहस्पतिवार श्रेष्ठ है	कपड़ा रुई काष्ट इमारतोंका ठेका शुभ है	मशीनरी उड़द लोहे का व्यापार शुभ है चमड़े का कार्य करना अच्छा
नवीन वस्त्र पहिनाना	शुभ ही है	मध्यम है	अशुभ है	शुभ रहेगा	शुभ रहेगा	बहुत शुभ रहेगा	अशुभ है
हजामत बनवाना	मध्यम है	शुभ है	अशुभ है	बहुत शुभ	अशुभ है	शुभ है	मध्यम
तेल लगाना	अशुभ है	शुभ है	अशुभ है	बहुतशुभ है	अशुभ है	शुभ है	बहुत शुभ है
जूता पहिनाना	मध्यम है	शुभ है	अशुभ है	मध्यम है	शुभ है	शुभ है	मध्यम है
मुकद्दमा दायरकरना	अशुभ है	अशुभ है	शुभ है	शुभ है	अशुभ है	मध्यम है	शुभ है

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि	श्रेष्ठ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चेकोस्कूल बिठलाना	२-३-५-६-९-१० ११-१२	उत्तरायण से५-७ वर्ष में रवि वृ.शु.	आ.पु.श्र.स्वा. रे. पुन.चि.आ
दुकान खोलना	२-३-५-६-७-८ १०-११-१३	सू.चं.बु.वृ.शु.	चि.अनु.मृ.रे.उ.३. रो. ह. अ.पुष्य.
नया जेवर बनाना	२-३-५-७-१३	वृ. शु. रवि	ह.अ.श.पु. स्वा. श्र.ध.उ.३रो.मृ.
दरवाजा लगाना	२-३-५-७-१० ११-१३	चं. बु. वृ. शु.	उ. ३अ. रो.मृ. पुष्यह.स्वा. श्र.
सीनापिरोना सीखना	१-२-३-५-६-७ ११-१२-१३	सू. चं. बु वृ.शु.	अ.पुन.चि.अनु.ध.
घर बनाना	२-३-५-६-७ १०-११-१२ १३-१५-बदि १	वै.श्र.मार्ग मा. फा.चं.वृ शु.श	रो.म.चि.ह.स्वा. उ.३.अनु.ध.श.रे
नये घर में प्रवेश	शुभ तिथियां	वै. ज्ये श्र. आ अश्वि मा. फा. उत्तरायण में चं बु.वृ.श	उ३.अनु.रे.रो.मृ. चि।
कूप बावली बनाना	शुभ तिथियां	चं बु. वृ. शु.	अनु.ह.उ३.रो.ध. श.म पूषा.रे.पु.मृ
वस्तुपानका मुहूर्त	शुभ तिथियां	चं.बु.शु.मा. फा. वै. ज्ये.	अ.धश.मृ. मू. अनु. ह.चि.रे.स्वा. रो. अश्वि. उ३.

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि	श्रेष्ठ वार मास	शुभ नक्षत्र
हल चलाना बीज बोना	शुभ तिथियां	चं. बु. वृ. शु.	अ.पू.३चि.वि.ध. श सूर्यनक्षत्रसेदिन नक्षत्रतकगिनेपह. ले३हानि५वृद्धि ३ हानि५वृद्धि, ३ ह. ५वृ, ३हा, २ वृद्धि
अनाजभरना	२-३-५-७-१३	रवि. गुरु. शु.	अ.रो.पुन. पु. मू. चि.स्वा.अनु.श्र.ध श. ३उ रे
बीमारसे उठने का स्नान	४-९-१४	रवि. मंगल	अ,ह,चि,अनु,ध,श
पशुखरीदना	शुभ तिथियां	चं.बु.वृ.शु.श.	उ३,पूषा,पुनपु,रो वि,अ,
अर्जी दावा करना	४-९-१४	मंगल. शनि.	आ,भ,पूअ,श्ले,म ज्ये,वि,मू,पू३
नौकरी करना	२-३-५-६-७-१० ११-१२	रवि.बु.वृ.शु. स्वामी से राशि मैत्रीदेखकर	अ,मृ,चि,ह,पुष्य, अनु रे
नई बहू का घर में आना	शुभ तिथियां	चं. वृ. शु.	ह,चि,स्व,रो,मृ, पू,पुष्य,ध,मू,श्र, अनु, उ३,अ,रे,

द्वादश भावों का फल विचार

प्रथम भाव (लग्न) —शारीरिक गठन, रंग-रूप, गुण-शील, स्वभाव, आकृति, लघु-दीर्घादि, शारीरिक बल, स्वास्थ्य, सुख-दुख, आयु-प्रमाण, जाति, प्रारम्भिक जीवन एवं माता-पिता की देहादि का विचार प्रथम भाव से किया जाता है।

"सुखानि दुखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्य खलु सर्वमेतत्।"

द्वितीय भाव—'धन भाव' के अतिरिक्त इसे कोष मारक, कुटुम्बादि के नामों से भी पुकारा जाता है। क्योंकि शरीर (तनु) की रक्षा के लिए अन्न, वस्त्र, द्रव्य एवं कुटुम्ब की आवश्यकता रहती है। इसी कारण इसे धन भाव कहते हैं। इस भाव से मित्र, पुरुष, स्त्री, आमदन, वाणी, नेत्र, खाद्य पदार्थ, संचित धन, क्रय-विक्रय सम्पत्ति, कष्टादि का विचार भी किया जाता है।

तृतीय भाव—इसे सहज एवं पराक्रम, आपोक्लिम स्थान भी कहते हैं। इससे भाई-बहिन का सुख, अल्प यान, रेल-बसादि यात्राएं, पड़ोसी, उद्यम, साहस, बल, संगीत, पत्रकारिता, चाचादि निकट सम्बन्धी, हाथ, कान, सम्बन्धी रोग, कन्धे, भुजाएं आदि का विचार।

चतुर्थ भाव—इसे पाताल, केन्द्र और सुख भाव भी कहते हैं। इस भाव से माता, डिपलोमा, स्थायी सम्पत्ति, मकान, भूमि, सवारी सुख, चौपाए, ससुर, नानी, पेट, हृदय, गृहस्थ जीवन, लघु उद्योग, मानसिक संतोष, सुखादि का विचार किया जाता है।

पंचम भाव—इसको पणफर, सुत भाव, तनय भाव भी कहते हैं। इससे विद्या, बुद्धि, गर्भ, सन्तान, मंत्र साधना, सट्टा, लाटरी, यश-अपयश, हृदय, पीठ, कोख, तांत्रिक विद्या, आकस्मिक धन लाभ, पूर्व जन्म, गर्भाशय, मूत्राशय, पेटादि, प्रेम सम्बन्ध तथा मनोरंजन कार्य आदि का विचार किया जाता है।

"बुद्धि प्रबन्धात्मज विद्या विनये गर्भ स्थिति मन्त्र नीति संस्थाः।"

षष्ठ भाव—इसके रिपु आपोक्लिम, शत्रु भाव भी कहते हैं। इससे ऋण, रोग, शत्रु, मामा, मौसी, सेवक, अधीनस्थ कर्मचारी, ऊंट, भैंस, घोड़ आदि पशु, भय, युद्ध, सौतेली मां, अपयश, हानि, चिन्ताएं, विश्वासघात, चोट, घाव, कमर, उदर, आंत और नाभि आदि का विचार करते हैं।

सप्तम भाव—इसे स्त्री, जाया, कलत्र, केन्द्र—भावादि नामों से भी पुकारते हैं। इससे स्त्री सुख, पति-पत्नी सम्बन्ध, साझेदारी, विवाह-सुख, प्रवास, समझौते, प्रत्यक्ष—शत्रु, काम सम्बन्धी रोग, नाभि, कमर, व्यापार, अदालती विवाद, मारकत्वादि का विचार सप्तम भाव से किया जाता है।

अष्टम भाव—रन्ध्र, मृत्यु, आयु, पणफर आदि इसके अन्य नाम हैं। इससे जातक की आय, मृत्यु, आकस्मिक एवं गुप्त धन, स्त्री की ओर से धन प्राप्ति, तैरना, विषम मार्ग, गुदा रोग, युद्ध समय, शत्रु भय, प्रजनन इन्द्रिय, पतन, सजा, दुर्घटना, दुख बन्धन, वियोगादि विषय देखे जाते हैं।

नवम भाव—इसे भाग्य या धर्म स्थान भी कहते हैं। इससे धर्म, भक्ति भावना, तीर्थ यात्रा, दीर्घ यात्रा, स्थानान्तर या विदेश यात्रा, भाग्य, साला, भावज, दार्शनिक प्रवृत्तियां, व्यापार, प्रकाशन, पौत्र, यश, कीर्ति, सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन, भाग्योदय, पुनर्जन्म, प्याऊ, कुआं, मन्दिर, धर्मशाला आदि धार्मिक स्थल, जांघ तथा शरीर पर जांघादि का विचार करते हैं।

दशम भाव—इसे कर्म भाव, केन्द्र भाव भी कहते हैं। इससे पिता के सुख, व्यवसाय, कर्म क्षेत्र, राज्य प्रतिष्ठा, मंत्रीत्व, सार्वजनिक जीवन, सफलता, स्वामी, नौकरी, मान-सम्मान, ओहदा, उद्योग-धन्धा, वर्षादि, आकाशीय घटनाएं, विदेश गमन और घुटनों आदि का विचार किया जाता है।

एकादश भाव—इसको आय, पणफर लाभ स्थान भी कहते हैं। इस भाव से बड़े भाई, मित्र, सुख, लाभ, विभिन्न प्रकार के लाभ, सम्पत्ति, इच्छाएं, द्रव्य-लाभ, आभूषण, ऐश्वर्य की वस्तुएं, विद्या लाभ, सहयोगी, द्वितीय पत्नी, दामाद, कर्ण, पिंडलियां एवं पांवादि का विचार करते हैं।

द्वादश भाव—इसको व्यय भाव भी कहते हैं। इससे मोक्ष ज्ञान, प्रवास, व्यय अपव्यय, आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या, शैय्या सुख, गुप्त शत्रु, हानि, खर्च, आत्म-हत्या, षडयन्त्र, धोखाधड़ी, कैद, शयन सुख, राज दण्ड, चिकित्सालय, बायां नेत्र, पीड़ा, दुख एवं मरणोत्तर गति, पांव की अंगुलियां (पंजा) तथा तलवे आदि का विचार किया जाता है।

ज्योतिष सम्बन्धी अमूल्य पुस्तकें वी. पी. द्वारा मँगाइएँ

ज्योतिषी तत्त्व

(लेखक पं० पन्ना लाल ज्योतिषी)

इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान—सम्पूर्ण बड़ी जन्म पत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्गों बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।

(मूल्य ३५ रुपए)

वर्षफल चन्द्रिका

(नवीन संशोधित संस्करण)

इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय नवीन वेध सिद्ध सारिणी के अतिरिक्त लाल किताब के अनुसार वर्षफल बनाने तथा पुराणोक्त, तान्त्रिक व लाल किताब के उपायों का भी समावेश किया गया है। प्रश्नफल एवं गोचर फल कथन की रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर का ठीक-ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य ४५ रुपए)

विवाह पद्धति (भाषा-टीका)

व्याख्याकार पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण जिसमें ,पारकर गृह-सूत्रों के आधार पर वैदिक मंत्रों की हिन्दी टीका की गई है। विवाह कार्य में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली तथा कात्यायनी शांति, पति-पत्नी के ... कुम्भ विवाहादि विवाह सम्बन्धी महत्वपूर्ण ... समावेश किया गया है। जिसमें विवाहादि कार्य के नवीन कर्मकाण्डी विद्यार्थी के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है।

(मूल्य डाक व्यय सहित ३० रुपए)

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषा टीका)

श्री दुर्गा सप्तशती निश्चय ही धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों क्षेत्रों में मनोवांछित फल प्रदान करने वाली मन्दाकिनी है। प्रस्तुत पुस्तक में श्री दुर्गापाठ विधि, सप्तश्लोकी दुर्गा, देवी कवच, सिद्ध सम्पुट मन्त्रों आदि के साथ श्री दुर्गा हवन विधि भी दी गई है। अब नये संशोधित संस्करण में।

(मूल्य ५० रुपए)

ज्योतिष की दुर्लभ लाल किताब

अब हिन्दी संस्करण में उपलब्ध है। जिसमें फलादेश के साथ उपाय आदि भी विशद रूप में वर्णित हैं। (मूल्य डाक व्यय सहित ६०० रु०)

'भारतीय ज्योतिष'

ग्रहों के फलादेश सहित लाल किताब के अनुपम उपाय दिये गये है।

(डाक व्यय सहित १२० रुपए)

'शिव मन्त्रावली'

इस पुस्तक में प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों से दुर्लभ मन्त्र-यन्त्रों का संग्रह करके उनको लिखने की विधि व सिद्ध करने के उपाय, स्थान, समय विधि, विधान इत्यादि का सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

(मूल्य ५० रुपए)

पुस्तक	मूल्य
राशिफल (१९९६)	२० रुपए
तनुभाव प्रकाश	३० रुपए
मानसागरी (भा० टी०)	७५ रुपए
बृहज्योतिषसार (भा० टी०)	६५ रुपए
जातकभरणम् (भा० टी०)	७० रुपए
ज्योतिष रत्नाकर	१९० रुपए
भारतीय ज्योतिष	१४० रुपए
फलदीपिका	८५ रुपए
भारतीय फलित ज्योतिष	१०० रुपए
भृगु संहिता (बड़ी)	१३५ रुपए
भृगु संहिता (मध्यम)	१०० रुपए
भृगु संहिता (छोटी)	६० रुपए
ज्योतिष सर्वसंग्रह	३० रुपए
रत्न ज्योतिष विज्ञान	३५ रुपए
रत्न ज्योतिष	२५ रुपए
रत्न प्रदीप	९० रुपए
द्वादश फलादेश विज्ञान	४५ रुपए
नास्ट्रेडम की भविष्यवाणियां	४० रुपए
प्रश्न भास्कर	३० रुपए
प्रश्न चन्द्र प्रकाश	६० रुपए
प्रश्न ज्योतिष विज्ञान	४० रुपए
मूक प्रश्न विचार	३५ रुपए
ग्रह लाघव	५० रुपए
भाग्य दर्पण	६५ रुपए
स्वप्न संहिता	३५ रुपए
शकुन और स्वप्न	३५ रुपए
जैमिनी सूत्रम्	१२० रुपए
हस्तरेखा शास्त्र	६० रुपए
भाग्य का प्रतिबिम्ब	७५ रुपए
हस्तरेखाएँ बोलती हैं	६० रुपए
चमत्कारी चिन्तामणि	१२५ रुपए
मुहूर्त चिन्तामणि (भा. टी.)	५० रुपए
अंक ज्योतिष	३० रुपए
अंकों में छिपा भविष्य	६० रुपए
हस्त संजीवन	६० रुपए
ताजिक नीलकण्ठी	६० रुपए
होरा शास्त्र	१७५ रुपए
ज्योतिष और रोग	३५ रुपए
ज्योतिष और व्यवसाय चुनाव	३५ रुपए
आधुनिक ज्योतिष	६५ रुपए
शनि शमन	९० रुपए
कम्प्यूटर की तरह जन्मपत्री बनाएँ	६० रुपए
हस्त रेखा (कीरो)	१२० रुपए
जातक भूषणम्	११० रुपए
फलित विकास	८० रुपए
सुनहरी किताब	३० रुपए
अनिष्ट ग्रह उपाय	३५ रुपए
कष्ट निवारक टोटके	३० रुपए
भारतीय ज्योतिष	३० रुपए
भाग्य और जीवन	४० रुपए

ज्योतिष की दुर्लभ

लाल किताब

अब हिन्दी में उपलब्ध मूल्य डाक व्यय सहित ६०० रुपए

उर्दू की फोटोस्टेट (असली) मूल्य—१५०० रु०

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)

अड्डा होशियारपुर

जालन्धर शहर (पंजाब)

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ ५० रुपए अग्रिम राशि M.O. द्वारा भेजें।
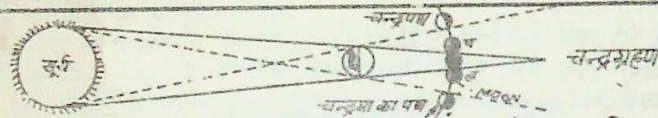
६००/-

आगामी वर्षों में सूर्य-एवं चंद्र ग्रहणों का विवरण

नीचे भारत में दृष्टिगोचर होने वाले आगामी २१ वर्षों के सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का विवरण—स्पर्शकाल, मध्य एवं मोक्षकाल सहित लिख रहे हैं। ग्रहणों का प्रारंभ एवं समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में केन्द्रिय मध्य भारत का सामान्य स्थूल समय ग्रहण किया गया है। अतएवं स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदय काल में भेद के कारण कहीं-कहीं कुछ मिनटों का अन्तर पड़ सकता है।

संवत्	ग्रहण विवरण	सन् ईसवी	स्पर्श	मध्य	मोक्ष काल
२०४७	ग्रस्तोदित चंद्रग्रहण	(६-८-१९९०)	६।१५	७।४४	९।११ रात्रि
२०४८	खण्ड चंद्रग्रहण	(२१-१२-१९९१)	३।२५	४।०५	४।४३ सायं
२०४९	खग्रास ,,	(९-१२-१९९२)	३।२७	५।१३	६।५६
२०५०	ग्रस्तोदित ,,	(४-६-१९९३)	४।४४	६।३५	८।२०
२०५२	,, चंद्रग्रहण	(१५-४-१९९५)	५।०७	५।४५	६।२४
२०५२	खग्रास सूर्यग्रहण	(२४-१०-१९९५)	७।२४	८।३२	९।४५
२०५३	,, चंद्रग्रहण	(३-४-१९९६)	३।२६	५।१५	७।०२
२०५३	ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण	(९-३-१९९७)	५।१२	५।५२	६।४०
२०५४	खग्रास चंद्रग्रहण	(१६-९-१९९७)	१०।४०	१२।२०	१।५९ रात्रि
२२०५६	खग्रास सूर्य ग्रहण	(११-८-१९९९)	१४।२०	१५।२५	१६।२०
२०५७	ग्रस्तोदित चंद्रग्रहण	(१६-७-२०००)	५।३०	७।२५	९।२३
२०५७	खग्रास ,,	(९-१-२००१)	१२।०५	१।४४	३।२२
२०५८	ग्रस्तोदय ,,	(५-७-२००१)	७।०६	८।२४	९।४३
२०६०	खण्ड सूर्यग्रहण	(३१-५-२००३)	७।३२	८।२४	८।३०
२०६०	ग्रस्तास्त चंद्रग्रहण	(९-११-२००३)	५।०२	६।४७	८।३४
२०६१	खग्रास ,,	(४-५-२००४)	१२।५७	१।५७	३।३७
२०६१	ग्रस्तास्त ,,	(२७-१०-२००४)	६।४५	८।३५	१०।२४
२०६२	खण्ड सूर्यग्रहण	(३-१०-२००५)	४।२३	५।०४	५।१५
२०६२	ग्रस्तोदय चंद्रग्रहण	(१७-१०-२००५)	४।२७	४।५०	५।१०
२०६२	सूर्य ग्रहण	(२९-०३-२००६)	४।२९	५।२२	६।०१
२०६३	खण्ड चंद्रग्रहण	(७-९-२००६)	१२-०२	१२।४९	१।३०
२०६३	खग्रास चंद्रग्रहण	(३-३-२००७)	३।००	४।५१	६।४०
२०६३	खण्ड सूर्यग्रहण	(१९-३-२००७)	९।१०	६।५९	७।४७
२०६४	ग्रस्तास्त चंद्रग्रहण	(२०-२-२००८)	७।१४	८।५८	१०।४६
२०६५	खग्रास सूर्यग्रहण	(१-८-२००८)	२।३३	३।२१	४।२४
२०६५	खण्ड चंद्रग्रहण	(१६-८-२००८)	१।२३	२।५४	४।२४
२०६६	ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण	(१०-९-२००९)	५।३४	६।२७	७।२४
२०६६	खण्ड चंद्रग्रहण	(३१-९-२००९)	१२।११	१२।४६	१३।२४
२०६६	सूर्यग्रहण	(१५-१-२०१०)	११।४२	१।१६	३।०८

नक्षत्रों के भोग्य राश्यांशादि

एक नक्षत्र का मान १३ अंश २० कला ही रहता है। २७ नक्षत्रों के नाम उनके निकटस्थ तारे या तारा-समूह के स्वरूप के अनुरूप ही रखे गए प्रतीत होते हैं—जैसे तारा का स्वरूप अश्वमुख सदृश होने के कारण 'अश्विनी' नक्षत्र नाम पड़ा। क्रमानुसार २७ नक्षत्रों के नाम तथा उनके द्वारा भोग्य राश्यंशादि इस प्रकार से हैं—

क्रम	नाम नक्षत्र	राशि अंश कला से	राशि अंश कला तक
१.	अश्विनी	० — ० — ० से	० — १३ — २० तक
२	भरणी	० — १३ — २० ,,	० — २६ — ४० तक
३.	कृतिका	० — २६ — ४० से	१ — १० — ०० तक
४.	रोहिणी	१ — १० — ० से	१ — २३ — २० ,,
५.	मृगशिर	१ — २३ — २० ,,	२ — ६ — ४० ,,
६.	आर्द्रा	२ — ०६ — ४० ,,	२ — २० — ० ,,
७.	पुनर्वसु	२ — २० — ० ,,	३ — ३ — २० ,,
८.	पुष्य	३ — ३ — २० से	३ — १६ — ४० ,,
९	आश्लेषा	३ — १६ — ४० ,,	४ — ०० — ० ,,
१०.	मघा	४ — ० — ० ,,	४ — १३ — २० ,,
११.	पूर्वाफाल्गुनी	४ — १३ — २० ,,	४ — २६ — ४० ,,
१२.	उत्तरा फाल्गुनी	४ — २६ — ४० से	५ — १० — ० ,,
१३.	हस्त	५ — १० — ०० से	५ — २३ — २० ,,
१४.	चित्रा	५ — २३ — २० से	६ — ६ — ४० ,,
१५.	स्वाती	६ — ६ — ४० ,,	६ — २० — ० ,,
१६.	विशाखा	६ — २० — ० ,,	७ — ३ — २० ,,
१७.	अनराधा	७ — ३ — २० ,,	७ — १६ — ४० ,,
१८.	ज्येष्ठा	७ — १६ — ४० ,,	८ — ० — ० ,,
१९.	मूला	८ — ० — ० ,,	८ — १३ — २० ,,
२०.	पूर्वाषाढ़ा	८ — १३ — २० ,,	८ — २६ — ४० ,,
२१.	उत्तराषाढ़ा	८ — २६ — ४० ,,	९ — १० — ० ,,
२२.	श्रवण	९ — १० — ० ,,	९ — २३ — २० ,,
२३.	धनिष्ठा	९ — २३ — २० ,,	१० — ६ — ४० ,,
२४.	शतभिषा	१० — ६ — ४० ,,	१० — २० — ० ,,
२५.	पूर्वाभाद्रपद	१० — २० — ०० ,,	११ — ३ — २० ,,
२६.	उत्तराभाद्रपद	११ — ३ — २० ,,	११ — १६ — ४० ,,
२७.	रेवती	११ — १६ — ४० ,,	१२ — ० — ० तक

ज्योतिष तत्त्व है

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो० तुलसी कृत रामायण (भाषा-टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्री राम चरित की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है।

सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत १५१ रुपए। आर्डर के साथ ५० रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य ८५ रुपए (डाक व्यय अलग)।

बाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य है। मूल्य १५०) रुपए। ये सभी ग्रंथ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध है। मूल्य १२० रुपए।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवान् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य ५१ रुपए डाक व्यय ८) रुपए अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद् भागवत पुराण के १२ स्कन्दों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के २४ अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्र से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र १६० रुपए आर्डर के साथ ५०) रुपए पशगी अवश्य भेजें। मध्यम सुखसागर—मूल्य ८० रुपए।

महाभारत भाषा

महर्षि वेदव्यास की अमूल्य सम्पूर्ण रचना १८ पर्वों का सरल हिन्दी रूपान्तर है। जिसमें राजा परीक्षित की कथा, कौरव पाण्डवों की वंशोत्पत्ति, भीष्म प्रतिज्ञा से लेकर महाभारत के भयंकर युद्ध का साङ्गोपाङ्ग वर्णन दिया गया है। मूल्य केवल १५१) रुपए।

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जो कि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शत चण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल ५० रुपए।

बड़ा भक्ति सागर

जिसमें नित्य कर्म पद्धति, ईश्वर प्रार्थना, स्तोत्र, चालीसे, सन्ध्या व आरतियों का अपूर्व संग्रह प्रस्तुत किया गया है। मूल्य ४० रुपए। भक्त माल (बड़ा)—१७५ रुपए (हिन्दी भाषा में) ग्लोज़।

श्रीमद्भगवत गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। १८ अध्याय वाली महात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रंथ आज ही मगवाएं मूल्य ६० रुपए। ३६ रुपए में भी उपलब्ध है।

चारों वेद (भा० टी०)

ऋग्वेद—४ खण्डों में, यजुर्वेद—१ खण्ड, अथर्ववेद—२ खण्ड, सामवेद—१ खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य सम्पूर्ण सैट—४०० रुपए।

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। मूल्य केवल १४१ रुपए। आर्डर के साथ २५) रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय १२ पृथक।

कुछ उपयोगी ग्रन्थ

ग्रन्थ	मूल्य	ग्रन्थ	मूल्य
योग वशिष्ठ	७५/-	महालक्ष्मी व्रत कथा (ग्लेज़)	१०/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	३५/-	विशाल हस्त सामुद्रिक	५०/-
वैशाख महात्म्य	२५/-	विशाल भृगु संहिता पद्धति	१३०/-
माघ महात्म्य	२५/-	ज्योतिष शास्त्र	३५/-
कार्तिक महात्म्य	२५/-	व्यापारिक तेजी मन्दी ज्ञान	३५/-
नित्य कर्म पाठमाला	३०/-	ज्योतिष सर्व संग्रह	३०/-
वसिष्ट हवन पद्धति	२५/-	असली आल्हाखण्ड	१०१/-
विवाहपद्धति देवीदयाल	२०/-	हमारे पूज्य तीर्थ	४०/-
सूर्य पुराण (भा. टी.)	५०/-	हस्त रेखा ज्ञान	३५
सूर्य उपासना (भाषा)	२५/-	तान्त्रिक साधना विधि	[illegible]
रामायण तर्ज राधेश्याम	५०/-	मन्त्र सिद्धि	[illegible]
श्री हरिवंश पुराण दो भागो	१००/-	वामन पुराण (भाषा)	[illegible]
मनुस्मृति	४०/-	देवी-देवता सिद्धि	[illegible]
कर्म काण्ड पद्धति	७०/-	सुनहरी किताब	[illegible]
कीर्तन भजन संग्रह	२५/-	लाल किताब (हिन्दी)	६००/-

M/O वी० पी० द्वारा मंगवाने का पता—

अपने आर्डर के साथ ५०/- रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ व पूरा लिखें।

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज), अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर

प्रश्न कुण्डली द्वारा फल विचार

(१) यदि कोई कुतूहलवश अथवा घमण्डवश प्रश्नोत्तर लेना चाहें तो ज्योतिषी को उसके प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिए। शुद्ध भाव से जिज्ञासावश किए गए प्रश्न का ही विचार करना चाहिए। यदि लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र (१,४,७,१०) में शनि, बुधास्त हो—या चन्द्रमा को मंगल, बुध पूर्ण दृष्टि से देख रहे हो तो प्रश्नकर्ता दुश्मन वाहा होगा।

(२) ज्योतिषी जी को स्वयं दूरदर्शी, सरस्वती देवी अथवा अपने इष्टदेव का उपासक, स्वस्थ मन और नीरोगी होना चाहिए।

(३) एक से अधिक प्रश्नों का उत्तर नहीं देना चाहिए यदि आवश्यक हो तो लग्न से पहला प्रश्न, चन्द्रमा से दूसरा, सूर्य से तीसरा, बृहस्पति से चौथे प्रश्न इत्यादि का विचार करें।

(४) प्रश्न लग्न अथवा जन्म लग्न—दोनों के सम्बन्ध में विद्वानों ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण नियम प्रतिपादित किया है कि—

यो यो भावः स्वामी दृष्टों युतो वा सोम्यैवां स्यात्तस्य तस्याऽस्ति वृद्धि।
पापैरेवंतस्य भावस्य हानि निर्देष्टव्यां पृच्छतो जन्मतो वा।

अर्थात्—जो जो भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह उसमें बैठे हो या उनकी दृष्टि हो, तो उस २ भाव की वृद्धि होगी। तथा पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उस भाव की हानि होगी।

(५) प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश तथा चन्द्रमा—इनका विशेष महत्व है। फल कथन से पूर्व इनका बलाबल आँकना अत्यन्त आवश्यक है।

चोरी हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

(i) यदि प्रश्न लग्न मे पूर्ण चन्द्रमा हो और उस पर गुरु या शुक्रादि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो गुम हुई वस्तु का शीघ्र लाभ लोगा।

(ii) अथवा अति बलवान (स्थानीय बल युक्त) शुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में हों तो भी नष्ट वस्तु की शीघ्र प्राप्ति होगी। (चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तक पूर्ण कहलाता है।)

(iii) यदि प्रश्नकाल में लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हो या चन्द्रमा और सप्तमेश दोनों अस्त गत हों तो चोर धन सहित पकड़ा जाता है।

(iv) यदि स्थिर राशि का लग्न हो अथवा किसी भी लग्न में स्थिर नवाँश हो अथवा लग्न में वर्गोतम नवाँश हो तो तुम हुई वस्तु उसी स्थान में है और वह अपने घर के आदमी (सेवकादि) ने ली है।

(v) यदि मेष, सिंह धन लग्न हो अथवा केन्द्र में सूर्य हो तो नष्ट वस्तु पूर्व दिशा में है। वृष, कन्या, मकर, प्रश्नकाल हो या मंगल केन्द्रगत हो तो वस्तु दक्षिण दिशा में, यदि कर्क वृश्चिक, मीन लग्न या बुध केन्द्र में हो तो वस्तु उत्तर दिशा में तथा मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न हो या शनि बलि अथवा केन्द्रगत हो तो वस्तु पश्चिम दिशा में होगी। यदि एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली होगा, वही दिशा जानना।

(vi) प्रश्न लग्न में चर राशियाँ (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो नष्ट वस्तु दूर चली गई समझें। यदि स्थिर राशि हो तो अभी गाँव मकानादि में ही मानें। यदि सप्तमेश या सप्तम भाग में राहु केतु, शनि आदि नीच ग्रह हों तो चोरी करने वाला कोई नीच जाति का, कृष्ण वर्ण का निर्जन स्थान में रहने वाला, दाढ़ी, मूंछ, व केशधारी होता है। सप्तमेश वक्री होने पर या अष्टम में सूर्य मंगल होने पर भी नष्ट वस्तु नहीं मिलती है।

इसके अतिरिक्त रोहिणी पुष्य उत्तराषाढ़ा, विशा पूर्वाषाढ़ा शत-अश्विनी इन नक्षत्रों में खोई वस्तु शीघ्र मिलती है। मृग, अश्ले, हस्त, अनु, उ.भा, पू.भा. नक्षत्रों में खोई वस्तु कष्ट से मिलती है। आर्द्रा ज्यौष्ठा आदि मध्य लोचन नक्षत्रों में खोई वस्तु कभी नहीं मिलती।

खोये हुए पशु का विचार

जब कोई व्यक्ति प्रश्न करे कि मेरा खोया हुआ पशु मिलेगा या नहीं तो पचाँग में देखें कि गुम के दिन सूर्य किस नक्षत्र पर था। सूर्य नक्षत्र से ९वाँ नक्षत्र तता खोया पशु वन में होता है। १० से तक खोया पशु मार्ग मे आ रहा है। १६ से २२ तक खोया पशु शीघ्र ही घर पर आना चाहता है। २१ से २७ नक्षत्र तक खोया पसु कभी वापिस नहीं मिलेगा—ऐसा कहना चाहिए।

धन लाभ प्रश्न विचार

१. धनेश यदि चन्द्रमा अथवा लग्नेश के साथ अपने स्थान में व उच्च का हो और शुभ ग्रह उसको देखते हों तो बहुत शीघ्र धन देता है, यदि धनेश लग्नेश और चन्द्रमा, नवम, पंचम, द्वितीय और लग्न में स्थित होकर।

२. आपस में एक साथ स्थित हों अथवा आपस में देखते हों तो यथा युक्त हों तो बहुत से धन को देते है और बलवान शुभ ग्रह पंचम केंद्र, नवम द्वितीय स्थानों में स्थित हों तो शीघ्र ही धन लाभ करते हैं, परन्तु पाप ग्रह के साथ न हों।

३. लग्न में शुभ ग्रह हो और पंचम में उच्च के ग्रह हों, ग्यारहवें भाव में उच्च का शुक्र हो तो भूमि, मकान आदि का लाभ करते हैं। लग्नेश अपने ग्रह का होकर लग्न से अपने से अपने स्वामी से दुष्ट हो तो राजा से धन की प्राप्ति होती है।

४. यदि लग्न में धनेश, चतुर्थेश शुभ ग्रह युक्त होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो धन को देते हैं। यदि लग्न में और चन्द्रमा लाभेश युक्त ग्यारहवें हों तो सुखपूर्वक धन का लाभ करते हैं।

५. बहुद द्रव्यलाभ होता है। यदि पूर्ण शुभ ग्रह केन्द्रों में हो तों शीघ्र ही धन देते हैं केंद्र। (१ ।४ ।७ ।१०) त्रिकोण (९ ।५) जाया (११ में पाप ग्रह हों तो बिना अधिकार के धन की हानि करते हैं।

६. शुभ ग्रहों से दृष्ट लाभेश जिस किसी भाव में स्थिर होकर लग्नेश धनेश के साथ इत्थसाल करता हो तो उसी भाव वाले मनुष्यों से धन का लाभ होता है, जैसे माता, पिता, भाई, स्त्री आदि के भाव में हो तो उन्हीं के द्वारा लाभ कहना और जो आठवें भाव में हो तो युद्ध झगड़ा बंधन से और ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र से और बारहवें भाव में हो तो खर्च करने से द्रव्य लाभ होता है।

गर्भ में पुत्र होगा या कन्या

१. विषम राशि या नवांश में सूर्य, गुरु हो तो पुत्र, समय राशि के नवमांश में शुक्र, चन्द्र, या मंगल हो तो कन्या॥

२. विषम राशि या नवांश में शनि हो तो पुत्र हो, सम राशि में हो तो कन्या॥

३. प्रश्न कुण्डली के सातवें घर में चन्द्र को छोड़कर शेष शुभ ग्रह विषम राशि में हो तो पुत्र सम राशि में अशुभ ग्रह हो तो कन्या होगी॥

४. प्रश्न समय [illegible] नाड़ी चले तो कन्या सूर्य नाड़ी चले तो पुत्र होगा। यदि दोनों स्वर चलें, तो गर्भ नष्ट होने का भय रहेगा।

ऐमबीडी
के युग में परीक्षाओं से क्या डरना
ऐमबीडी की पुस्तकें पढ़िए
और सच्चाई की स्वयं परख कीजिए
ऐमबीडी की पुस्तकें
सुनिश्चित, सर्वश्रेष्ठ तथा शानदार सफलता की प्रतीक हैं।
ऐमबीडी की पुस्तकें
हर पीढ़ी के लिए
शिशु से स्नातक तक।
ऐमबीडी की पुस्तकें
सभी परीक्षाओं के लिए
प्राइमरी से ऐम. ए. तक।
ऐमबीडी की पुस्तकें
सभी प्रतियोगिताओं के लिए
सभी विषयों के लिए
आर्टस, साईंस, कामर्स, भाषाएँ, ज्योतिष, सामाजिक, धार्मिक तथा निजी विषय।
ऐमबीडी की पुस्तकें
पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, बिहार, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा अखिल भारतीय शिक्षा प्रणाली व अन्य कई शिक्षा बोर्डों तथा यूनिवर्सिटियों के लिए
अपने शहर के स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से खरीदें।
MBD SCIENCE
MBD Super GUESS PAPERS
MBD HISTORY & GEOGRAPHY
MBD ENGLISH GUIDE
MBD HINDI GUIDE